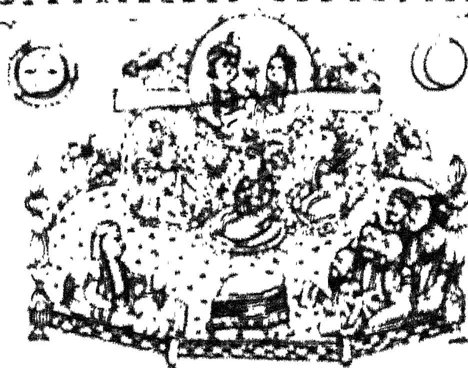
रामायण



तुलसीदास कृत सटीक

प्रथम भाग

बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड

जिसको श्री रामचरणाब्ज परागलुब्ध अयोध्यानिवासि करुणासिन्धु श्री महन्त रामचरण जीने जगकल्याण अर्थ भाषाटीका पद प्रतिरचिकर बेदकी ऋचाओंऔर प्रमाणिक श्लोकों से भूषित किया

श्री महाराज युगलानन्य स्वामि संग्रहीत श्री महाराज रघुनाथदासजी स्वामी महन्त रामविवाहघाट वा श्री जानकीवरशरण वा श्री परमहंस सीतारामशरणजी की आज्ञानुसार श्री सीतारामशरण [illegible] रघुवरदयालु की सम्मति से

दूसरीबार लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

मार्च सन १८८७ ई०

[illegible]

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् मार्च सन १८८७ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ हज़रतगंज के पते से ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
(अ)	इलाजुल्गुरबा मौ॰ हरूफ	(क)	कृष्णचालीसी
अथर्वण [illegible]	इन्द्रजाल	कायस्थकुल [illegible]	(ग)
अमरकोष प्रथम काण्ड	ईशावास्य वाजसनेय-	कायस्थ विनोद	गीतगोविन्द [illegible]
अमरकोष तीनों काण्ड	संहितोपनिषद्	कर्मविपाक संहिता	गंगालहरी
अवधयात्रा	इंडियनपिनलकोड	कृष्णबाललीला	गोपीचन्द भरथरी
अद्भुतरामायण	इतिहास तिमिरनाशक	कालिंजर माहात्म्य	गुरु मूर्तिस्मरण
[illegible]	[illegible]	कृष्णसागर	गीतरसिका
[illegible] शक्ति	(उ)	कृष्णशृंगार [illegible]	गुटिका पहिला खण्ड
अवतार कथा [illegible]	उमापति दिग्विजय	कैवल्य कल्पद्रुम	गुटिका दूसरा खण्ड
[illegible]	(ए)	कृष्णप्रिया	गुटिका तीसरा खण्ड
आनन्दामृतवर्षिणी	ऐक्ट १ सन १८७५ ई॰	कविकुल कल्पतरु	गर्गसंहिता
अद्वैतप्रकाश	ऐक्ट १२ सन १८८१ ई॰	कुराबलियागिरिधरदा-	गणेशपुराण सगुण का
अश्वमेधकथा	ऐक्ट १० सन १८७२ ई॰	कृष्णगीतावली	छपा [illegible]
अमरविनोद	ऐक्ट १४ सन १८८२ ई॰	क़िस्सा चहारदरवेश	गीतकामधेनु
औषधसंग्रह कल्पवल्ली	ऐक्ट १० सन १८८२ ई॰	क़िस्सा हातमताई	गोवर्द्धननाथ के प्राक-
अमृतसागर बड़ा	ऐक्ट १० सन १८[illegible] ई॰	क़िस्सा गुलसनोबर	ट्य की वार्त्ता
अमृतसागर छोटा	ऐक्ट १० सन १८६२ ई॰	क़िस्सा [illegible]	गोकर्णमाहात्म्य
अक्षरावली	ऐक्ट २० सन १८६६ ई॰	कवितंग	गुरु उपकार कथा व
आनंदरघुनन्दन नाटक	ऐक्ट २६ सन १८६७ ई॰	काशी भजनावली	भजन विनय प्रकाश
अथर्ववेदीय प्रश्नोपनि-	ऐक्ट मजमूआ अवधल-	काव्य [illegible]	गीतप्रकाश बसोंभा-
षद् इत्यादि	गान १८ सन १८६६ ई॰	किताबजंत्री	(च)
अवध का बयान	ऐक्ट १८ सन १८६९ ई॰	कठवल्ली उपनिषद	चाणक्यनीति
अपरोक्षानुभव	ऐक्ट २४ सन १८७० ई॰	केनोपनिषद	चित्रचन्द्रिका
(इ)	ऐक्ट १९ सन १८७३ ई॰	काव्यसंग्रह	चौरासी वार्त्तिक
इलाजुल्गुरबा		कवित्त [illegible]	

रामायणतुलसीदासकृत ॥

टीका रामचरणदासकृत ॥

काण्ड ॥

भूमिका ॥

इसमें महात्मा तुलसीदासने गुरु वन्दना, साधु असाधु गुणागुण लक्षण स्वभाव, निज दीनता, कवियों की वन्दना रामनाम निरूपण व ब्रह्मनिरूपण, सीतापति रामनामको सर्वोपरि, परम्परागत सर्वस्तुति, श्रीमद्रामायण माहात्म्य व प्रताप, श्रीसीता स्वरूप प्रभाव यथार्थ, श्रीरामचन्द्र की कीर्ति, मानसर रूपक, प्रयाग महिमा, श्रीराम लीलाद्भुत फल सतीमोह तथा सतीदेह त्याग व पुनर्जन्म, नारदोपदेश ते पार्वती तप, शिवसमाधि त्याग फल मदन दहन व रति वरदान, शिवपार्वती विवाह तथा स्वामिकार्तिक जन्म, व पार्वती प्रति शिवजीका रामचरित कथन, मनुशतरूपा तप तथा सीता रामदर्शन व वरदान, राजा भानुप्रताप दिग्विजय व एक तनु मुनिमिलाप, कपट मुनिकी पाखण्डता से राजा भानुप्रताप को शापप्राप्ति, रावण विजय, देवस्तुति व ब्रह्मवर वाणी, परम पुरुष का कौशल्या प्रति दर्शन देना, पुत्रार्थ दशरथ यज्ञ, रामचन्द्रादिकों की उत्पत्ति व बाललीला, विश्वामित्र जीका मख रक्षाहेतु राम व लक्ष्मण को लेजाना, मार्गमें रामजी का ताड़का वध, अहल्या शापोद्धार, तथा विश्वामित्र जीका राम लक्ष्मणजी को संगलेके जनकपुरागमन श्रीराम लक्ष्मणजी का जनकपुर व रंगभूमि देखने जाना, सुमन वाटिका में पुष्पार्थ राम लक्ष्मणजी का जाना तथा गिरिजा पूजनार्थ सीता जी का जाना व सीता को गिरिजासे वर प्राप्ति, श्री रामजी करके धनुष भंजन व सीताको जयमाल पहिराना तथा परशुराम व राम लक्ष्मण का वीरता के साथ सम्भाषण व राम लक्ष्मण की जय प्राप्ति, श्रीदशरथ महाराज का आनन्द पूर्वक चारों भ्राताओं का बरात साजके विवाह करना ऐसी अद्भुत कथायें भूषित की हैं ॥

रामायणतुलसीदासकृत

टीकारामचरणकृत बालकाण्ड का

सूचीपत्र ॥

*—

तरंग	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
	श्रीतुलसीदासजीकाश्रीसद्गुरुचरण कमलादि अनेकपूर्व प्रतापगण यथार्थ वर्णनकरना,		
२	तथा साधुगुण स्वभावलक्षण वर्णन करना,		१५
३	तथा खलगुण स्वभाव लक्षण वर्णन करना,	१५	३१
४	तथा निजनीचता वर्णन करना,	३२	३८
५	तथा मन वचन कर्म मुनियों की वन्दना करना,	३८	५४
६	तथा रामनाम निरूपण व ब्रह्मनिरूपण करना,	५४	८३
७	तथा श्रीसीतापति रामनामका सर्वोपरि वर्णन करना.	८३	८७
८	तथा पट्शरणागत सब तुलित वर्णन करना,	८८	९०
९	तथा श्रीमद्रामायण माहात्म्य प्रताप वर्णन करना.	९०	९४
१०	श्रीअवध स्वरूप प्रभाव यथार्थ वर्णन करना,	९४	१०३
११	श्रीरामचन्द्रजी कीर्ति वर्णन करना,	१०३	११५
१२	तथा श्रीरामचन्द्रकीर्ति मानसरूपक सविस्तारवर्णन करना,	११५	१२०
१३	तथा प्रयाग महिमा वर्णन करना,	१२१	१३२
१४	तथा श्रीरामलीला अद्भुत अरु सीतामोह वर्णन करना,	१३२	१४६
१५	सतीपरित्याग तथा पुनर्जन्महोना,	१४६	१५८
१६	नारदोपदेशते पार्वतीजीका तपकरना,	१५८	१६५
१७	शिवसमाधिका त्याग अरु मदन विजय पुनि शिवको मदन का विध्वंसकरना व रतिको वरदानदेना,	१६५	१६६
१८	शिवविवाह तथा स्वामिकार्तिक का जन्म होना,	१६६	१७६
१९	पार्वतीजीका महादेवजीसे राम चरित का प्रश्न करना तथा शिवजीका वर्णन करना,	१७०	१८६
२०	तथा श्रीशिवजी का राम चरित श्री पार्वतीजी को सुनाना,	१८६	१९४
२१	तथा	१९४	१९७
२२	तथा श्रीरामस्वरूप विग्रह किशोर द्विभुज धनुर्द्धर की सर्वोपरि वर्णन करना,	१९८	२११

इतिबालकाण्डसूचीपत्रम् ॥

रामायण तुलसीदास कृत ॥

टीका रामचरण कृत ॥

अयोध्याकाण्ड की

भूमिका ॥

जिसमें महात्मा तुलसीदास जीने दशरथ महाराजका रामयुवराज निमित मनोरथ, गुरु वशिष्ठ का युवराज निमित आशिष, मन्थरा को कैकेयी प्रतिशिक्षा, कैकेयी का कोप भवन में जाना, कैकेयी का राजासे रामवनवास, भरत युवराज ये दो वरमांगना, राम लक्ष्मण सीता का वनगमन, राम लक्ष्मण सीताका गंगातीर परगुहसे मिलाप, सनिषाद श्रीरामचन्द्रादिका प्रयागमें भरद्वाज मुनिसे मिलाप, यमुना पारहोके श्रीरामचन्द्रादि से तपस्वियों का मिलाप, वाल्मीकिमुनि अरु रामचन्द्रादि का संभाषण, श्रीरामचन्द्र के दर्शनार्थ सुर मुनि आगमन, तथा कोलकिरातागमन, सुमन्त मंत्री का अयोध्या जी में पलटना, सुमंत मन्त्रीसे राम लक्ष्मणादिका हालपाके भूपति दशरथका स्वर्गवास, दूत द्वारा भरत शत्रुघ्नागमन, भरतको सत्य शपथ व वेदोक्त विधिसे पितृक्रिया करनी, गुरु वशिष्ठादि को भरत प्रति शिक्षा, भरतका गुरु वशिष्ठ व सम्पूर्ण अयोध्यावासियों सहित राम दर्शनार्थ गमन, भरतादि का गंगातीर पर गुह मिलाप तथा भरद्वाज मिलाप व त्रिवेणी वरदान, भरतादि का रामचन्द्र से मिलाप, रामचन्द्र दर्शनार्थ जनकागमन, श्रीराम, भरत, गुरुवशिष्ठ, जनक परस्पर संभाषण, श्रीराम, भरत व अत्रिमुनि संभाषण श्रीरामसमीपसे शोकयुक्त द्वौसमाज का बिदा होना, संपूर्ण अयोध्यावासियों का शोक युक्त होके अयोध्याजी में आना, भरत करके श्रीरामपादुका सिंहासनस्थ करनी, तथा शत्रुघ्न को माताओं को सेवकाई में स्थित करना अरु मन्त्री को राज्य प्रबंध देके गुरु आज्ञानुसार सपत्नीक नियमसे स्थित होना ऐसी अद्भुत कथायें भूषित की हैं ॥

—⁕—

रामायणतुलसीदासकृत ॥

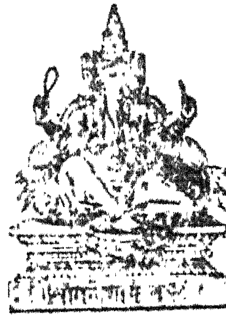
टीकारामचरणकृत अयोध्याकाण्ड का ॥

सूचीपत्र ॥

—※—

अथ अयोध्याकाण्ड

इत्ययोध्याकाण्डसूचीपत्रम् ॥



रामायणतुलसीकृत सटीक ॥



बालकाण्ड ॥

श्लोक ॥ वर्णानामर्थसंघानां रसानांछन्दसामपि ॥ मंगलानां चकर्त्तारौ वंदेवाणीविनायकौ १ भवानीशंकरौवंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥ याभ्यांविनानपश्यन्ति सिद्धाःस्वांतस्थमीश्वरम् २ वंदे बोधमयंनित्यं गुरुंशंकररूपिणं ॥ यमाश्रितोहिवक्रोऽपि चंद्रःसर्वत्र वंद्यते ३ सीतारामगुणग्राम पुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वंदेविशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ४ उद्भवस्थितिसंहारकारिणींक्लेशहारिणीं ॥ सर्वश्रेयस्करींसीतांनतो ऽहंरामवल्लभां ५ यन्मायावशवर्त्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुराः यत्सत्वादमृषैवभातिसकलंरज्जौयथाहेर्भ्रमः॥ यत्पादप्लवमेकमेवहिभवांभोधेस्तितीर्षावतांवन्दे ऽहंतमशेषकारणपरं रामाख्यमीशंहरिम् ६ नानापुराणनिगमागमसम्मतंयद्रामायणे निगदितंक्वचिदन्यतोऽपि ॥ स्वांतःसुखाय तुलसीरघुनाथगाथा भाषानिबन्धमतिमंजुलमातनोति ७ ॥

श्लोकार्थ ॥ ग्रंथके प्रथमश्लोकके आदिचरणमें मगनगन परयो है सो तीनिहूं अक्षर दीर्घहैं वर्णानां सो पिंगलके मतते उत्पन्नभयोहै ताको देवता महिजोभूमि दिव्यसुख को उत्पन्न करतहै पुनि श्लोकके दूसरे चरणमें यगनगनपरेउहै रसानां सोपिंगलके हृदयते है जलदेवता है पुनि भाषा जबकियो तब प्रथम सोरठा में भगनगनपरेउहै सोपिंगलके फणा ते भयोहै ताको देवता शशिहै सर्वबीजको पोषणकरतुहै तातेतुलसीकृत मंगलमयहै अब

श्रीमद्रामायण तौस्वाभाविकै सर्वमंगलमयहै ग्रंथके निर्विघ्नहेतुप्रथमहीबाणी जोहै सर-स्वती विनायकजोहैं गणेश तिनदोउनको गोसाईं तुलसीदासजू वंदना करतेहैं वर्ण जे हैं अक्षर अनेकमैत्रो संयुक्तातनको संग्रहकहीसमूह परस्परमिलाप ताकीकर्ताबाणीहै तिनअक्ष रनमेंअनेकप्रकारकेजेअर्थहैं तिनकेकर्तागणेशहैं रसजेहैंशृंगारइत्यादिक तिनकेकर्तासरस्वती हैं अरु अनेकप्रकारके जेछन्दहैं तिनकेकर्ता गणेशहैं ते दूौ सर्वमंगलके कर्त्ता हैं तौ दूौ अहंवन्दे किंतुवर्ण जो अक्षर अरुअर्थ तेहिकी मंगलकर्त्ताबाणीहै अरु रसछन्दके कर्ता गणेशहैं (१) द्वितीय-भवानीशंकरौवंदे श्रद्धास्वरूप श्रीभवानीहैं विश्वासकर्ता श्रीशंकर हैं तिन दोउनकी कृपाबिना सिद्धनको ईश्वर जो है परमात्मा स्वकही अपनेस्थितअंत-ष्करणमें नाहीं देखिपरतहै जेहि भवानी शंकरकी कृपाबिना ईश्वरविषे श्रद्धा बिश्वास नहींआवै ताते भवानीशंकरको नमस्कार करतहौं (२) पुनि गुरुको नमस्कार करतहौं कैसेहैंगुरु शंकररूपहैं नित्य हैं बोधकही ज्ञानमयहैं जिनशंकरके आश्रयह्वैकै बक्रकहीटेढ़ बालचंद्रमा जोहै द्वितीयाको सर्वत्रवंदनीयहै तैसेगुरुनकेशरणागतभयेसंते जोटेढ़होइ तो जगत्में वंदनीयहोतहै किंतुशंकरै सबजगत्के गुरुरूपहैं तिनहींको नमस्कार करतहौं (३) पुनि कवीश्वर जे बाल्मीकिहैं कपीश्वर जे हनुमान्जीहैं तिनको वंदनाकरतहौं श्रीसी-तारामजूके गुणग्रामजेहैं सो पुण्यारण्यकही पवित्रारण्यहैं ताके बिहारी अरुरचकहैं अरु परमरसिकहैं विशुद्धविज्ञानमय हैं ते दूौ अहंवंदे (४) अब श्रीमती श्रीजानकीजी को नमस्कारकरतहौं हैं श्रीमती जानकीजी अपनी भृकुटी की जो है अंश विलास माया ताते उद्भवस्थिति संहारकरतीहैं सर्वश्रेयकही अनेकप्रकारके जो हैं कल्याणगुण बात्सल्यइत्यादिक तिनकोकरतीहैं श्रीरामचंद्रजूकी वल्लभाकही अतिप्रियाहैं ते श्रीमती श्रीजानकी जू मेरेऊपर कृपाकरैं जाते मेरीमतिशुद्ध होइ तब श्रीसीतारामचरित समूह मेरे हृदय में आवैं किंतु उद्भवस्थितिसंहारसंतन के हृदय में योग वैराग्य ज्ञान भक्ति प्रेमापरा उत्पन्न करतीहैं पुनिातनहींमें संतोषशील करुणादयाइत्यादिकस्थितकरतीहैं पुनिकाम क्रोध लोभ मोह मदमान इत्यादिक जन्म मरण संहार करती हैं सर्वकल्याण करतीहैं जो रघुनाथजीको अतिप्रियहै सोईकरतीहैं तातेरामबल्लभा कही तिनश्रीजानकी जीके नतकही दीन ह्वैकै शरण हौं किंतु नमस्कार करतहौं (५) अबश्रीरामचंद्रको अव-रेवकरिकै नमस्कार करतहौं कैसे हैं श्रीरामचंद्र अशेष कारण ते परे हैं अशेष का-रण काको कहिये जेहि पुरुषकी इच्छाते मूलप्रकृति होतीहै पुनि ताहीते तीनों गुण अरुपांचौतत्व मिलिकै आठहूते ब्रह्माण्डरचना विस्तारहोतहै अनलोम करिकै पुनि प्रतिलोम करिकै प्रलय होतहै ब्रह्माण्डरचना पंचतत्वमें लीनहोतहै पांचौतत्व अहंकारमें लीनहोत हैं अहंकार महतत्वमें लीनहोतहैं महत्तत्व मूलप्रकृतिमें लीनहोतहै मूलप्रकृति पुरुषकोप्राप्तहोतहै ताको महाईश्वर कही पुनि जगत्कर्ताकही महाकारणकही जाको सहस्रशीर्षा पुरुषवेद प्रतिपादन करतेहैं। (सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् इतिश्रुतिः) संहितावेदका अंगहै सोऊ प्रतिपादन करती हैं जाके अंशते ब्रह्मा विष्णु शिव उत्पन्नहोतेहैं (सदाशिवसंहितायां श्लोक)निलयंपरमंदिव्यं महावैष्णवसंज्ञकं ॥ सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षःसहस्रपात् १ यन्निमेषाज्जगत्सर्वं लयीभूतव्यवस्थितम् ॥ यदंशेन समुद्भूताब्रह्मा

विष्णु महेश्वराः २ ताही पुरुषको अशेषकारण कही अशेषकही संपूर्णजो संसार है तेहिके कारणमहाईश्वरहैं ताते महाईश्वरको अशेषकारण कही अरुतिनहींको महाविष्णुकही सोराघवजूके दिव्यगुणरूपहैं (श्लोकएकअन्येचाध्यायेसौमित्रिवाक्यंवेदाग्प्रति) राघवस्य गुणोदिव्यो महाविष्णुस्स्वरूपवान् ॥ वासुदेवंघनीभूतं तनुतेजोमहाशिवः १ तिनमहा-ईश्वरकेपरे जोईशहै सो कौनईशहै आख्यकहीराम ऐसोनामहै जिनकोऐसेईश श्रीरामचंद्र हैंतहांप्रमाणहै (वाल्मीकीये सुन्दरकाण्डे श्लोकत्रयः) परंब्रह्मपरंतत्वंपरंज्ञानंपरंतपः॥ परंबीजंपरंचेत्रं परंकारणकारणं (पुनःवृहन्नाटके) एकोमहामोहभूतादिसृष्टिस्थितिध्वंस हेतुर्महाविष्णुरास्ते ॥ रामस्तुतज्ज्योतिपादाम्बुजातःपर कारणात्कार्य्यतोऽसौपरात्मा २ (पुनःश्रुतिः) यस्यांशेनैवब्रह्मा विष्णुमहेश्वराअपिजाता महाविष्णुर्यस्यदिव्य गुणाश्च-सएव कार्य्य कारणयोःपरः परमपुरुषोरामोदाशरथीबभूव ॥ पुनिहरिकही हरहीतिपा-पानि ॥ जिनश्रीरामचन्द्रके रामनाम उच्चारण करतसंते महापापजोहैं जन्ममरण सो नाशहोतहैं तातेहरिकही पुनिजिन श्रीरामचन्द्रकी मायाकेवश बर्तमानहै अखिलकहै अनन्त विश्वजोहै अनंतब्रह्मादिक देवताहैं अनंतअसुरहैं अनंतसिद्धमुनि चराचरजीव सर्वमायाकेवशहैं सोमायाकौनिहै त्रिगुणात्मिकाहै कारणरूपाहै तामायाकोकीन्हजो है त्रैगुण्यमयकार्य सोअसत्यहै भ्रमरूपहै जिनश्रीरामचन्द्रकी सत्यताते सत्यइव भासतहै जैसेरज्जुकहीजेवरीबिषे सर्पभासतहै पर बिना श्रीरामचन्द्रकीशरणभये यहभ्रमनहींमिटै जो कोटियत्न करै यहभ्रममृगतृष्णाइवहै परसमुद्रवत्है ऐसोजोहै संसारसागर ताकेपार जावेकोहै श्रीमद्रामचन्द्रजूकेचरणारविंदहीएकदृढ़जहाज तंश्रीरामचन्द्रं अहं नमामि (प्रमाणभगवद्गीतायां) दैवीह्येषागुणमयी मममाया दुरत्यया ॥ मामेवयेप्रपद्यन्ते मायामेतांतरंतिते (६) श्रीगोसाईंतुलसीदास कहतहैं कियह जोमैं भाषाकरतहौंसो नानापुराण अरु चारिहूवेद छहूशास्त्र अरु श्रीमद्रामायण जोहैशतकोटि अपरनिगदितं नामकथितं तिन सबनको सम्मत क्वचित् कही बिशेष लेत हौंतहां श्रीमद्रामायण बिशेषहीहै अपरको क्वचित् क्वचित् लेतहौं किंतुऔरौ लेतहौं उपनिषद् स्मृति संहिता उपपुराण अपरमुनिनको सम्मत सतसभाषासम्मतगुरुवाक्य निजअनुभव सबको सम्मत बिशेषलैकैभाषाप्रबन्ध करतहौं स्वकहेमेरो अन्तःकरण सुखानन्दको प्राप्तहोइआतनोति नामबिस्तारसमेत कैसोहै सबसम्मतमतिमंजुल कहे अतिउज्ज्वलहै (७) ॥

सो० जेहिसुमिरेसिधिहोय गणनायक करिवर बदन ॥
करहु अनुग्रह सोय बुद्धिराशि शुभगुणसदन १
मूक होहिं बाचाल पंगुचढ़ैं गिरिवर गहन ॥
जासु कृपा सुदयाल द्रवौसकलकलिमलदहन २
नील सरोरुह श्याम तरुणअरुणबारिजनयन ॥
करहु सो मम उरधाम सदा क्षीर सागर शयन ३

छन्द इन्दु समदेह उमा रमणाकरुणा अयन ॥
जाहि दीनपर नेह करहु कृपा मर्दन मयन ४
बन्दौं गुरुपद कंज कृपासिन्धु नररूप हरि ॥
महा मोह तम पुंज जासु बचनरबिकर निकर ५

सोरठार्थ॥ श्रीभगवत्पार्षदविष्वक्सेनके स्वरूपहैं श्रीरामाज्ञानुकूलसर्वमङ्गलकेभंडारी रामानुकूल सर्व मङ्गलदाताहैं ताते ग्रन्थनिर्विघ्न हेतु प्रथमहि श्रीगणेशजू को स्मरण करतहैं जेहिकेसुमिरते श्रीरामसिद्धी प्राप्तहोतीहैं अरुअष्टादशसिद्धी प्राप्तहोतीहैं आगे सिद्धिनको स्वरूप कहेंगे गणनायकअनेकहैं परहाथीको ऐसोहै बदनज्यहिको सो गणेश मेरेऊपर अनुग्रहकरो बुद्धिकी राशिहौ शुभ गुणकेसदनहौ (१) श्री गोसाईंतुलसीदास जीने दूसरेसोरठा में मूकपदकह्यो बाचालकह्यो पंगुकह्यो चढ़बकह्यो गिरिकह्यो वरकह्यो गहनकह्यो जासुकह्यो कृपाकह्यो सुदयालकह्यो द्रवौकह्यो सकलकह्यो कलिकह्यो मलकह्यो दहनकह्यो अब सबपदनको अर्थकहतहैं क्रमहीते मूककहोगूंगा मूकमेंचारि भेदहैं एक बचनमूक द्वितीयअज्ञानमूक तृतीयधर्ममूक चतुर्थज्ञानमूक जासुकहौजेहिपर-मेश्वरकी कृपानामदयालुताते वहैवचनमूकबेदबक्ताहू जातहै ताकोवाचअलकहै अलंकृत नाम शोभितहोतहै भक्तमालग्रन्थमें ज्ञानदेवजूभक्तभये तिनने भैंसिकेपाड़ाको वेदपढ़ाइ दयो श्रीरामचन्द्रकी कृपासुनते एकअज्ञानकहो बालमूकध्रुवप्रह्लाद इत्यादिकबालहो अवस्थामें श्रीरामचन्द्रकीकृपातेवेदतत्वके बक्ताभये धर्ममूककहो जोकेहूके कार्यके नि-मित्त केहूते कहनोपरै तब न कहै तेऊ भगवत्कृपाते परमार्थकहनेलगे ज्ञानमूककहो परमेश्वरके परमतत्व जानिकै मौनहू रहेहैं अन्यथानहींबोलतहैं जैसेदत्तात्रेय जड़भरत श्रीजनकादिकरामकृपाते परमार्थबोलतेहैं पुनिबधिरमूक यहीरीतिजानिये जोपरमार्थराम सम्बन्धनकहै ताहीकोमूककहिये अरु जैश्वासापरमार्थमेंकहै सोईवेदबक्ताहै अरुजैश्वासा केवललोकहिहेकहै, सोई महामूकहै यहिप्रकारबधिरजानिये श्रवणद्वारब्यवहारहूकै यही प्रकारते अपर इन्द्रिनको ब्यवहारजानिये अबपंगुकहीयेहैं पंगुकहोलंगरको तेतीनप्रकार केहैं एकपदकोपंगु एककर्मकोपंगु एकसुमतिकोपंगु जो श्रीरामचन्द्रकी कृपाकहो सुहृद-याहोइतौ वहैजो चरणपंगु है सोईपहार परदौरिकै चढ़िजाइबिना श्रमही गहन कहो गम्भीर अतिऊंचो अतिबिस्तर अतिअगमशैलपर चढ़िजाइ अथवा गहनबन संयुक्त बड़े पर्वतजेहैं पुनि कर्मपंगुकहो गीधशबरी कोल भिल्लइत्यादिक बनाइ कर्मकेपंगुरहेहैं जि-नस्वप्नेहुंसुकर्मनहींकीन्ह तेऊश्रीरामकृपाते परमपद महापर्वतरूप तापर चढ़िगये पुनि सुमतिपंगुकहो श्रीरामनामस्वरूपकोपाइकै मतिपंगुहोइगई काहूको नहींचलै न कर्मको न ज्ञानको न कोईदेवताको उपासनाको मति रामस्वरूपशैलपरचढ़िगई श्रीमद्रामचन्द्र जूकोकृपाकारिकै अचलहूइरहेहैं सो प्रभुमेरेऊपरद्रवै जैसेभूखेबालककोदेखिकै माताद्र-वतिहै सकलकहोसम्पूर्ण कलिकहेक्लेशमलकहो मनक्रमबचनकी मलीनता किंतुकलि-युगके मलकहो पापकलियुगहिको धर्महै चारिहूंयुगमें अथवा कलिकहो कलित कलितकहो

मिलित चारिहूयुगकेपाप दहनकह्यो जरायदेतहै जेहिजीवपर कृपाकह्यो शुद्धदया होइ जय श्रीमद्रामचंद्रद्रवहिं अपनी मतिके अनुसार दूसरेसोरठाको अर्थकियोहै(२) अवतीसरे सोरठाको अर्थकरतेहैं नीलकमलतद्वत्श्यामहै शरीर अरुलालकमलकीकलीजो प्रथमैविगसी है तद्वत्नेत्रहैं सो भगवान् मेरेहृदयमेंबसैं जोचीरसागरमें शयनकरतेहैं किंतुजैसे चीरसागरमें बसतेहौ तैसेबसौ अबतीनहूं सोरठा को एक अन्वय करिकै प्रतिलोमकरिकै कहतेहैं जोचीरशायीभगवान्हैं तिनकीकृपाते मूकबाचालहोयँ पंगुपर्वतपरचढ़ैं अरु जेहिके सुमिरेते गणेशादिक देवता अनेक सिद्धिनको प्राप्तहोते हैं जो कोईकहै कि श्री गुसाईं तुलसीदासजू श्रीमद्रामचन्द्रके उपासकहैं चीरशायी श्रीमन्नारायणको क्योंकहा मेरेहृदयमेंबासकरैं तहां यहतात्पर्यहै यहब्रह्मांडकोश जोहै तेहिमेंजो परमपुरुष परमात्मा जाको भूमापुरुषकहो सो अविद्याविद्या जोद्वै प्रकारकीमाया तेहितेपरेपुरुषहै सो कौन श्रीमद्रामचन्द्र सो केवलभक्तानुग्रहार्थ प्रकृतिमण्डलमें अवतीर्णभये तिनकोचरित अपरम्पारहै श्रुति स्मृति शेष शारदा शिवब्रह्मादिक देवता सिद्धमुनिसबकोश्रीमद्रामचरित्रसम्पूर्णजानिबेको अगमहै तहांचीरशायीजो भगवान्हैं सोश्रीरामचरित्र नीकोप्रकारसम्पूर्ण परम्परापूर्वक जानतेहैं क्यों जानिये श्रीमद्रामचन्द्रजूके द्वितीयविग्रहकातात्पर्यहै द्वितीय विग्रह को यह जोसंसारहै मायामें सोकार्य्यरूपहै चीरशायी श्रीमन्नारायण कारणरूपहैं श्रीमद्रामचन्द्र कार्यकारणतेपरेहैं क्यों जानिये श्रीमद्रामचन्द्रकेनिकट श्रीमतीजानकीजूहैं श्रीमल्लक्ष्मणजूअखंडएकरस विराजमानहैं जैसेश्रीरामचन्द्रके दूसरविग्रहचीरशायीश्रीमन्नारायणहैं तैसेश्रीजानकीजूके दूसरविग्रह श्रीलक्ष्मीजूहैं तैसेहीश्रीलक्ष्मणजूके दूसरविग्रह श्रीशेषजूहैं जिनकोअनंतभगवान्कह्यो तातेश्रीमद्रामचंद्रजू श्रीजानकीजू श्रीलक्ष्मणजूतीनिहू स्वरूपको चरित्र परमदिव्यतम अनंतऐसोजोचरित्रहै ताकोचीरशायीभगवान्लक्ष्मीशेष येतीनहूस्वरूपको चरित संपूर्णजानतेहैं काहेते अपनीकर्तब्यता अपनेको अच्छी तरह जानीजातीहै तातेगोसाईं तुलसीदासने कहाकि चीरशायीभगवान् मेरेहृदयमेंबसैं तब श्रीरामचरित्रमोकोआवै अथवाअभेदकरिकै कहा अरुग्रंथकर्ताको आशयलैकैतब अर्थ करनेको होतहै श्रीतुलसीदासजू श्रीमद्रामउपासकहैं ताते तुलसीकृत श्रीरामस्वरूपधनुर्द्धरपरात्परहैं औश्रीरामनामधामपरहै श्रीरामलीलापरहै तातेहमनेतीसरेसोरठाकोऐसो अर्थकियो तहांप्रमाणहै (वशिष्ठसंहितायांपंचश्लोकाः) रामस्यनाम रूपंचलीलाधामपरात्परं ॥ एतच्चतुष्टयंनित्यंसच्चिदानन्दविग्रहं १ (पुनःवृहन्नाटके) एकोमहामोह भूतादिसृष्टिस्थितिध्वंसहेतुर्महाविष्णुरास्ते ॥ रामस्तुतद्गीतपादाम्बुजातःपरः कारणात्कार्य्यतोऽसौपरात्मा २ (तिलक) एकःमहाविष्णुःआस्तेवर्ततेकिंभूतः महामोह भूतादिसृष्टिस्थितिध्वंसहेतुःमहामोहमूलाख्याप्रकृतिः साद्विधामायाअविद्याचतयोः कार्य्यंचमहाभूतादिपंचभूतप्रभृतिआदिपदेनतद्गुणाश्चउत्पत्तिपालननाशहेतुः सएव अतः कारणरूपः इत्यर्थः श्रीरामस्तुतद्गीतपादाम्बुजातः महाविष्णुमुखोच्चारित श्रुतिबहगीतचरणसरोजः कार्यकारणयोःपरःअसौगुणरूपसन्नपि परमात्मेत्यर्थः २ ॥ श्लोक ॥ सब्रह्मणस्तज्जगतोविधातुर्नारायणः कारणएकएव । जातस्ततोभातिससप्रपंचः प्रपंचमेतत्परितोविधत्ते ३ (तिलक) सब्रह्मणा इतिब्रह्मणाचेतनस्वरूपेण सर्वव्यापकेन तद्वयैनसेवत मानस्य

जगतः विधातु उत्पत्तिकर्तुः कारण रूपस्येवापि कार्यरूपस्य ब्रह्मादेः एक एवनारायणः क्षीरशायीकारणरूपः यतस्ततोनारायणात् सब्रह्माजातःसमुत्पन्नस्सन्सप्रपंचः प्रपंचेनजग द्व्यापारेणसबर्तमानः भातिदीप्तिमान् भवति स नैवप्रेरितस्मत्युतः एतत्प्रपंच परित स्सर्वशोभावेनविधत्ते करोतिअतोनारायणस्य कारणाप्रसिद्धि त्यर्थः ३ (वाल्मीकीये सुंदर कांडे) परंब्रह्मपरंतत्वंपरंज्ञानंपरंतपः।परंबीजंपरंक्षेत्रंपरंकारणकारणं ४ (पुनःश्रुतिः) यस्यां शेनैवब्रह्माविष्णुमहेश्वराअपिजाता महाविष्णुर्यस्यदिव्यगुणाश्चसएवकार्य्यकारणयोःपरः परमपुरुषो रामोदाशरथीबभूव ५ इत्यथर्वणउत्तरार्द्धे (३) यह मानस रामायणजोहै ताकेकर्ता शिवजूहैं सोशिवमेरेऊपरकृपाकरो कैसेहैंशिवजू कुन्दके पुष्पजोहैं तद्वत्शरीर उज्ज्वलहै कोमलसुगन्ध मकरंदमयहैं चन्द्रवत्उज्ज्वलप्रकाश शीतल अमृतमयहैं अखंड एकरसहैं ऐसेतनमनबचनते शिवजूके हृदयमानसतेउमग्यो श्रीमद्रामायण मानससोप्र- त्यक्षभयो उमाकेहेतुहित उमारमणतोहुईहैं परउमानामशुद्धआर्त जिज्ञासू तिनकेमन मेंशिवजू रामायणरमावतेभये तातेउमारमणकह्यो करुणाकेस्थानहैं दीनपर बड़ानेहहै दीनद्वैप्रकारके एकमायाके दीनहैं एकभगवान्केदीनहैं सोदोऊदीनता शिवजूकी कृपाते मिटिजायँ कैसेहैं शिवजू मयन मर्दन हैं ते शिवमेरे ऊपर सबप्रकारते कृपाकरो (४) अबश्रीमद्गुरुचरणकमल बन्दौंगुरुकह्यो जाकोआत्माब्रह्मपरब्रह्मशब्दब्रह्मकोबोधअच्छी प्रकारतेहोइ ताकोगुरुकह्यो गुकार अंधकार शिष्यबिषे बाचक है रुकारअंधकारकोदूरि करदेतहै तातेशिष्यको अज्ञानकह्यो अंधकार दूरिकरै ताकोगुरुकह्यो (प्रमाण) गुश- ब्दस्त्वंधकारस्य रुशब्दस्तंनिरोधकः। अन्धकारनिरोधत्व गुरुरित्यभिधीयते ॥ पुनिगुरुग- रिष्ठशब्दहै गरिष्ठकह्यो सर्वपूज्य है फेरिगुरुकैसेहैं कृपाकेसमुद्रहैं पुनिगुरु नररूप प्रत्यक्ष हरिहैं अथवा हरकहिये सूर्यअपनीकिरणिपंक्ति करिकै रात्रीकोदूरिकरतेहैं गुरु अपने बचनकिरणनते शिष्यके हृदय का अंधकार दूरिकरिदेतेहैं तौ गुरुचरणौंअहंवंदे (५) ॥

१ बन्दौंगुरुपदपद्मपरागा * * । सुरुचिसुबाससरसअनुरागा * १
अमियमूरिमयचूरणचारू * * । शमनसकलभवरुजपरिवारू २
सुकृतशम्भुतनविमलविभूती ** । मंजुल मंगल मोद प्रसूती * ३
जनमनमंजुमुकुरमलहरणी * । कियेतिलकगुणगणबशकरणी ४
श्रीगुरुपदनखमणिगणजोती * । सुमिरतदिव्यदृष्टिहियहोती ५
दलनमोहतमसोसुप्रकाशू * * । बड़भागयउरआवतजासू * * ६
उघरेंबिमलबिलोचनहीके * * । मिटैंदोषभवरुजरजनीके * ७
सूझहिंरामचरितमणिमानिक । गुप्तप्रकटजहंजोजेहिखानिक ८

दो० यथासुअंजनआंजिदृग । साधकसिद्धसुजान
कौतुकदेखहिं शैलवन भूतलभूरिनिधान १

१ श्रीमद्गुरुचरण कमलकी पराग कही रज ताको बन्दौं कैसीहै रज जामें

सुरुचिहै सुष्टुबासनाहै अरुअनुरागहै देखिये तो श्रीमद्गुरुनके चरणनमें कमलकोधर्म्म काकहैं। जिनचरणनमें रजकहूं ते लपटिगईहै तामें कमलकेधर्म्म बर्त्तमानहैं धर्मकाको कहो गुणस्वभाव क्रियासंयुक्तहोइ ताको धर्मकहो कमलनमेंमकरंद सो कृपाकहो जो सुगन्धकोमलता सोसुभावकहो जोपराग रंगसोगुणकहो तीनोंमिलें धर्मकहो श्रीमद्गुरुनके चरणरजबिषे सुरुचिहै सो मकरन्द जानिये जो सुष्टुबासनाहै सोसुगन्धजानिये जो सुष्टु अनुरागहै सो परागरंग जानिये ताते गुरुचरणरज सर्वधर्ममयहै सो रजबन्दौं (१) पुनिगुरुचरण रज कैसीहै अमृतमयमूरि ताकोचूर्णहै चारुकहो सुन्दरहै वैद्यकग्रन्थ में एक अमरमूरिकहीहै ताकोचूर्ण बनायके जो कोईखाय सोअमर होय देवतारूप होय अरुसर्वसिद्धी ताको प्राप्तहोहिं काहेते अमरमूरि अमृतसंयुक्तहै गुरुचरण रजचूर्णजोहै सो मोक्षअमृतमयहै ताको सेवन करै तौ भवकहो संसारताको रुजकहो रोग सोकौनहै जन्ममरण तेहिको परिवार कामक्रोध लोभ मोह मद मान मत्सर इत्यादिक अनेकनहैं जिनके बशह्वैके संसारमें जन्मतहैं अरु मरतहैं ऐसो जन्म मरण श्रीगुरुचरणरजचूर्णतेशमनकहो नाशहोतेहैं (२) पुनिगुरुचरणरजकैसीहै सुकृतजोहै सोशिवरूपहै तेहिके तनको निर्मल बिभूतिहै अरुमंजुलकहो निर्मल जोमंगल है मोदकहो आनंद तिनको उत्पन्नकरिबे को प्रसूतीनाम माता है पुनिविपर्यय भावकरि के अर्थसिद्धकरते हैं शिवजू चिताकीविभूति धारणकरते हैं सोविभूति महामलिन है जबशिव के अंगमेंलागी तब विमलभई अरुगुरु चरणरज विभूति कैसीहै शम्भु रूप जो सुकृतहै ताकेतन को निर्मल करतिहै कैसेजानिये जेहिसुकृतमें गुरु चरणरज नाहीं प्राप्तिहोइ सो सुकृत न कहो ताको कुकृत कहियेहै अरु मंगलकाकोकहिये जो बाह्यइन्द्रिनकी कर्तव्यतेसुख उत्पन्नहोइसो मंगलकहो अरु जो अंतःकरणके बिचारते सुखउत्पन्नहोइ ताकोमोदकहो तामें द्वैर भेदहैं एकउज्ज्वलमंगलमोद एकमलिनमंगलमोदहै जोशुद्धसात्विक भगवत्संबन्ध बाह्यकर्म है अरु अंतष्करणते रामतत्व बिचारजोहै तातेजोसुख उत्पन्नहै ताकोमंजुलमंगलमोदकहो जो बाहर भीतर इन्द्रिनकरिके परधन परनारि परनिंदा परजीवहिंसा परबिघ्न इत्यादिकजो कर्त्तव्यताको करिकै सुनिकै समुझिकै देखिकै मनमेंल्यायकै जोसुखउत्पन्नभयो है सोमलिनमंगलमोदकहिये तातेगुरुनके चरणारविंदकीरज मंजुलमंगल मोदप्रसूतीकहो माताहै जोअपने गर्भतेतुरंतपुत्र उत्पन्न करतुहै अरुजोगर्भको धारणकरै ताकोप्रसूतीकहो अरुमलिनमंगलमोद को नाशकरती है (३) पुनि गुरुचरणकमलरज कैसीहै जनकहो भगवद्दास अथवा जनकहो पूर्णप्राणी तिनको मनमुकुरकहो दर्पणहै ताको मलहरिकै मंजुलकरिदेतहै जोभालमेंतिलक करै तौसंपूर्ण उत्तमगुण बशहोतेहैं जैसेसिद्धजनबशीकरणतिलककरिकै सर्वजनको बशकरतेहैं तैसेगुरुनके चरणकीरज भालमेंतिलककरैतौसंपूर्ण शुभगुणबशहोतेहैं दूसरअर्थपुनि तिलककहो जैसेकोईराजन के तिलकहोत है तबसंपूर्ण प्रजा अरु सेना अरु भाई कुटुम्बादिकबशहोते हैं तैसेधर्मसर्वके ऊपर गुरुकेचरणरजको तिलककरै तौ अनेकनउत्तमगुण बशहोतेहैं (४) श्रीमद्गुरुचरणके नखजेहैं तेमणिगणकी ज्योतिहैं इहां श्रीपद क्योंकहा प्रथमहि रजकोवर्णन करिआयेहैं अबनखन को प्रभाव कह्यो चाहतेहैं तातेबीचमें श्रीपददयो दीपदेहरी न्यायहै पूर्वापरप्रकाशकहै श्री काको

कहिये श्री धन यश प्रताप ऐश्वर्य तेज प्रकाश स्वरूप शोभा तप योगवैराग्यज्ञानविज्ञानभक्ति इत्यादिकअनन्त दिव्यगुण संयुक्त श्रीकहिये जाविषेयेतेगुण बर्त्तमान होंहिं सो श्रीमान् है ताते श्रीमद्गुरुन के चरणारविंद की रज अरु चरण अंगुलिन के नख श्रीमान् हैं श्रीगुरुपद नखनको मणिगण प्रकाशको दृष्टान्त दीन्ह दीपावली प्रकाशको दृष्टांत क्यों नहीं दीन्ह दीपकाप्रकाश हिंसासहितहै मणिगण प्रकाश हिंसा उपाधि बर्जितहै दिव्यहै अपर कर्म धर्म हिंसा उपाधिसंयुक्त है तहां श्रीमद्गुरुचरणारविन्द नख मणिगण प्रकाशमय तिनके सुमिरे ते दिव्यदृष्टि होतीहै (५) श्रीमद्गुरुचरण नख सूर्यकरिकै कहतेहैं पुनिश्रीमद्गुरु चरणारविंद नखप्रकाशकैसेहैं जिनके ध्यानकियेते मोह दलनहोतेहैं मोह काको कहिये धन धाम दारा पुत्र पौत्रादिकमें अपनपौमानै ताकोमोहकही ऐसोजोहै मोह सो तमकही अंधकाररूपहै ताको नाशकरिबेको सोसु कही सूर्यस्वरूपहै श्रीमद्गुरुचरण नखऐसेहैं जाके उरमेंनखनको ध्यानआवै सोबड़भागीहै जो गुरुनको तन मन धन धर्म धाम धरणी समर्पणकरै निष्कपट ह्वैकै हृदयमें ध्यानआवैहै (६) जो श्रीगुरुचरणनख ध्यानआवै तौ हृदयके बिमलनेत्र खुलैं हृदयकेनेत्र कौनहैं ज्ञान वैराग्य सोखुलैं काहेते नखप्रकाश सूर्यस्वरूपहैं सूर्यनेत्रके देवताहैं ताते ज्ञान वैराग्य जो नेत्रहैं तिनके श्रीमद् गुरुचरण नख सूर्यदेवताहैं बिनादेवता इंद्रिय प्रकाश नहींकरतीहैं भवजोहै संसारताके जेहैं दोष दुःखते मिटिजातहैं रात्रिको दोष अंधकार दुःख चौर राक्षसादिक तामसी जीव सोई दुःखहै भवरात्रीके का दोषदुःखहै अज्ञानसो दोषहै अज्ञान काकोकही शरीराभिमान आत्माविस्मरण तामें दुःखकाहै कामादिकते मिटिजातहैं जब श्रीमद्गुरुचरण नख सूर्य हृदयमें उदयहोइ (७) पुनि जब हृदयकेनेत्र प्रकाशितभये तब सूझै नाम देखिपरैहै श्रीमद्रामचरित मणिमाणिक स्वरूपमणि काकोकही माणिक्य काकोकही तत्र दृष्टांत दिखावतेहैं मणि सर्वसंज्ञाहै परसर्पते उत्पन्नहोइ ताको बिशेष मणिसंज्ञाहै पर्वत ते उत्पन्नहोइ ताको माणिक्य कहैहैं अब दृष्टांत यहजो पंचभौतिक शरीरहै बिषय में सोसर्प जानिये तिनमें क्वचित् काहूके अनुभवते श्रीमद्रामचरित उत्पन्नभयो सो मणिकहिये अरु श्रुति स्मृतिसंहिता पुराण नाटक तंत्रादिक पर्वतनते उत्पन्न जोहोइ श्रीमद्रामचरित सो माणिक्यस्वरूपहै तिनमें जोगुप्तहै अरुजोप्रकटहै जहांतहां जैसी जोखानि श्रीमद्रामचरित की सो सकल देखिपरैहै अथवा रामचरित सबगुप्तही है सोसब प्रकटदेखै है जब श्रीमद्गुरु चरणारविंद नखसूर्य हृदयमें उदयहोइँ (८) ॥ दृष्टांत-दोहार्थ ॥ यथा नाम जैसे सुअंजन सुष्ठुअंजन आंजिकही दैकै दृगनाम नेत्रबिषे कौनजन साधकजनसिद्ध होइबेके निमित्त सिद्ध अंजनदेतेहैं सिद्धको प्राप्तभये सुजानभये दिव्यदृष्टिभई जबवेअनेक चरित देखतेहैं जो अनेकपर्वतमें चरितहोतेहैं जो अनेकबनमें चरितहोतेहैं जो भूमितलमण्डलमें चरितहोतेहैं सो निधाननाम स्थान स्थान संपूर्णचरित देखतेहैं अबदृष्टांत मुनि श्रीगोसाईं श्रीमद्गुरुचरणारबिन्द रजको अंजनकरिकै बर्णतेहैं इसअंजनको जो कोई हृदयके नेत्रमेंदेय तौ परमसुजानहोइ परमदिव्य दृष्टिहोइ श्रीमद्रामचंद्रके चरित अनेकप्रकारके वे देखतेहैं तहां पर्वतस्थाने श्रुति स्मृति शास्त्र पुराणादिक अनेकग्रंथ तिनमें जो श्रीरामचरित अनेकहैं सोदेखतेहैं बनकही संसार तामें जो

अनेक चरित करतहैं सो देखतेहैं भूतलकही संतसभा तामें श्रीमद्रामचंद्र के चरितअनंत होतेहैं सोदेखतेहैं जानते हैं श्रीमद्गुरुचरण अंजनदियेसंते (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे श्रीमद्गुरुचरणकमलरजनखमुनिप्रतापभाव यथार्थवर्णनंनामप्रथमस्तरंगः १ ॥

दो० द्वितियतरंगनिसतसभा गुणउपमाकरिभाषि ॥
रामचरणलक्षणकहे दैप्रयाग की शाषि १

२ गुरुपदरजमृदुमंजुलअंजन । नयनअमियदृगदोषबिभंजन * १
तेहिकरिबिमलबिबेकबिलोचन । बरणौंरामचरितभवमोचन २
बंदौंप्रथममहीसुरचरणा * । मोहजनितसंशयसबहरणा * ३
सुजनसमाजसकलगुणखानी * । करौंप्रणामसप्रेमसुबानी * ४
साधुचरितशुभसरिसकपासू * । निरसबिशदगुणमयफलजासू ५
जोसहिदुखपरछिद्रदुरावा * । बंदनीयजेहिजगयशपावा * ६
मुदमंगलमयसन्तसमाजू * । जोजगजंगमतीरथराजू * ७
रामभक्तिजहँसुरसरिधारा * । सरसैब्रह्मबिचारप्रचारा * ८
बिधिनिषेधमयकलिमलहरणी । कर्मकथारबिनन्दनिबरणी * ९
हरिहरकथाबिराजतबेनी * । सुनतसकलमुदमंगलदेनी * १०
बटबिश्वासअचलनिजधर्मा * । तीरथराजसमाजसुकर्मा * ११
सबहिंसुलभसबदिनसबदेशू * । सेवतसादरशमनकलेशू * १२
अकथअलौकिकतीरथराऊ * । देइसद्यफलप्रकटप्रभाऊ * १३

दो० सुनिसमुझैंजनमुदितमन मज्जहिंअतिअनुराग ।
लहहिंचारिफलअछततन साधुसमाजप्रयाग १

२ पुनि श्रीमद्गुरुपद रजमृदुलकही कोमल मंजुकही उज्ज्वल अंजन है अंजन के अनेकनामहैं गुरुपदरज कौन अंजन है एक अंजनको नयनामृतनामहै सो अंजन जो नेत्रमें देइ तौ नेत्रकोदोष तिमिरजाय फूलीमोतियाबिंदु इत्यादिक दोष नाशहोहिं मृदु मंजु क्योंकहा एक अंजनदिये प्रथमकरुवायहै आगे शीतलता ल्यावतहै अरु नयनामृत अंजनके दियेते बर्तमान परिणाम अमृतफल देतहै एक रस तहां श्रीमद्गुरुचरण रज अंजन जो हृदयके नेत्रमेंदेइ तौ अविवेक दोषनाशहोइ कोई दृगदोष बिभंजनपाठ कहतेहैं दृगकही दशौदिशा पांचज्ञानइन्द्रिय पांच कर्मइंद्रिय सोई दशौदिशाहैं तिन्हके जो दोष शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध इत्यादिक बिषयताते श्रीमद्गुरुचरण रजकरिकै दशौ इन्द्रिनको दृगबन्धनकरौ इन्द्रिनके देवता जोबिघ्नकर्त्तातिनको बांधिकै इन्द्रिन कोबिषयदोष रूपदूरिकरिकै बाह्यांतरशुद्धकरिकै तब श्रीमद्रामचन्द्रकेचरितबरणौं नाम कहौं (१)

श्री मद्गुरुचरण रज अंजनजोहै ताको हृदयके नेत्रजोहैं विवेकज्ञान तामें करिकै नाश दैकै तबविवेक निर्मलकरिकै तब श्रीरामचन्द्र के चरितबरणों कैसेहैं श्रीमद्रामचन्द्र के चरितजाके कहतसुनत समुभत भवजोहै संसारसो मोचनकही छूटिजाइनाशको प्राप्तहोइ (२) पुनिप्रथमही महीसुर जोब्राह्मणहैं तिनके चरणारबिन्द बंदतहौं कैसेहैं ब्राह्मणके चरणमोहतेज नितनाम उत्पन्नजोहै अनेकसंशय सोनाशहोइजाइहै सुमिरतसंते प्रथमतौ श्रीमद्गुरु चरणारबिन्दरज बर्णनकरि आये हैं अबब्राह्मणके चरणकमल वंदन प्रथमक्यों कहिजाते प्रथमब्राह्मणैहैं पिताम्ह जो ब्रह्माजूहैं तिनते उत्पन्नभये जोहैं ब्राह्मणप्रथमहिं सनकादिक नारद वशिष्ठादिकजेहैं ब्राह्मण तिनकेचरण संसारसागर तारनेको जहाज हैं ताते प्रथमकहा पुनिपदार्थ भिन्नकरि कै प्रथमकहा गुरुचरण भिन्नपदार्थहै ब्राह्मणचरण भिन्नपदार्थहै ताते प्रथमकहा अरु ब्राह्मणौ सुकर्म सुष्ठुधर्मके अधिष्ठाता हैं पुनि गोसाईं कहतेहैं कि मेरीकाव्य में प्रथमही मगनगन परेउहै अरु तेहिको देवता महि है पुनि महिको देवता ब्राह्मणहै ताते प्रथमकहा है (३) पुनिसुजन जन जोहैं सुष्ठुजनौतिनको जोहैसमाज सो कैसोहै श्रीमद्रामचन्द्रके मिलिबेके जेहैं अनन्तगुण दिव्यतर तिनगुणनको खानिहै तेहि समाजको नमस्कार करतहौं प्रेमसंयुक्त सुष्ठुबाणीते (४) पुनि साधुन को चरित कैसोहै जैसोकपासको चरितहै अबरूपक दृष्टान्तकरिकै कहतेहैं कपास कैसो है निरसहै जामें रसलेशहू नहींहै अरु विषदकही सुष्ठुउज्ज्वलहै अबरूपक दृष्टांत करिकै कहतेहैं साधुनकी समाजमें निरस पदकाहै शुद्धवैराग्य पुनिबिशद पदकौनहै उज्ज्वल बिशुद्धज्ञान अरु अनेक बिशदगुण कपासमेंहैं अरु अनेक बिशद गुणसाधुनमेंहैं सोईगुण दोउनमें फलहै अरु आगेकी चौपाईमें अंगसंयुक्त गुणनको स्वरूप कहते हैं (५) जो कपास अनेक दुःखसहिकै परायाछिद्र कहो इन्द्रिनकी निर्लज्जता ताकोदुरावत नाम छिपावतहै मर्यादेतहै कपास कौनदुःखसहतहै ओटब धुनब कातब तनब बिनब धोबीकर धोउब दरजी कर फारब सियब इत्यादि दुःख सहिकै पराया छिद्र दुरावत है साधुकौन दुःखसहिकै परावा छिद्रदुरावतहैं जिन संतनसंपूर्ण जगतको बन्दनीयकीन्हहै आपुबन्दनाको प्राप्तभयेहैं सर्वत्र अपने स्वामीको व्याप्तरूप देखते हैं ताते संपूर्ण जगत् को बन्दनीय कहो स्तुतियोग्य भयो तब तिनको कोऊ मानकरै वा अपमान करै वा

ाकरै वैकाहूके अवगुणनहीं देखतेहैं अरु अनेकमान अपमान दुःखसहते हैं सबको बड़ाईदेतेहैं ताते कपास अरु संत सर्व जगत्में बन्दनीयहैं सबजगत् तिनकी बन्दना करतेहै सर्वजगत्में दोऊजन समानहैं (६) पुनि संतनकी सभाकैसीहै मुद्मङ्गलमयहै पुनिकैसी है समाज संपूर्ण जगत् में तीर्थराज प्रयागरूपहै प्रयागस्थावररूपहै संतसमाज जंगमकहो चलता प्रयागरूपहै न्यूनाधिक्य रूपकालङ्कार कहतेहैं (७) सातचौपाईकी एकही अन्वयहै प्रयागविषे श्रीगंगाजूकी धाराहै अरु सरस्वतीकीधाराहै अरु यमुनाजूकी धारा है संतसमाज सो प्रयागरूप है तामें श्रीमद्रामचन्द्रकीभक्ति गंगारूप है अरु श्रीमद्रामचन्द्रको रूपअन्तर्यामी ब्रह्मताको जोबिचार प्रचारकहोउत्कर्षयुक्तबिचार अथवा ारकहो प्रचर अनुभव प्रत्यक्षब्रह्म बिचारजो है सोसरस्वतीजानिये (८)साधुनकी समाज जो कर्मकथाहै बिधिनिषेध संयुक्त कलिको जोहै मलमय कहोसमूह ताको नाशकरतहै

सो कर्मकथा रविनन्दनिकही यमुनाजूहै विधि निषेध काको कही विधिकही ग्रहण निषेधकहो त्यागको भगवत् भागवत्कर्मजो है ताको विधि कहिये संतनकी समाजविषे इनदोउन कर्मनको छोड़े और कर्मजो हैं ताको निषेधकहिये तातेसाधुनकी समाज में विधिजोहै सो यमुनाजूहैं प्रयागमें गङ्गा सरस्वती यमुना पृथक् २ शोभितहैं पुनिमिलिकै शोभितहैं संतसमाज जोहै प्रयागरूप तामें भक्तिकांड ज्ञानकांड कर्मकांड पृथक् २ शोभितहैं पुनिमिलिकै शोभितहैं (९) प्रयागमें गंगासरस्वती यमुना तीनों मिलितहैंत्रिवेणी कहिये अरु संतसभा विषेका बेनीहै हरिहर कथा जोहै सो बेनीहै बेनी काको कहिये दुइ तीन चारि पांच छः सात इत्यादिक अपर मिलिजाइं ताकी बेनीसंज्ञाहै अरु हरि भगवत् हर भागवत्की कथाअभेदहै तेहिकथामें भक्तिज्ञान सुकर्मतीनोंमिलिकै जहांएकताहै तहांसिद्धान्तहै कौन प्रयाग ते जानिये जहां मोहके बशसती जु जानकी जूको स्वरूप धारणकीनहै तबशिवजू सतीविषे जानकीरूप ग्रहण कीन्ह है सोविधिभयो सती स्वरूपको त्यागकियो सो निषेधभयो सो बिधि निषेधमें जो कर्महै सो यमुनास्थाने अरु जो बिचार कीन्हसो बिचार करिकै श्रीरामइच्छा को अपने अन्तःकरण में दृढ़ कीन अन्तःकरण शांतिरसको प्राप्तभयो सो ज्ञानहै अरु जोजानकीजूको स्वामिनी भाव कीन्ह सो भक्तिहै कर्म ज्ञान भक्ति यहां तीनोंमिलितहैं ताते हरिहर कथा बिराजतबेनी त्रिवेणी सेवन करतसंते सकल मुद मंगल देतहै हरिहर कथा सुनत संते सकल मुद मंगल देत है (१०) प्रयाग बिषे बट है सो अक्षय है अरु प्रयाग तीर्थराज कहावै है संतसमाज जो प्रयागहै तामें बिश्वास जो है सो बटहै बिश्वास काको कहिये यह जो संसार सागर है तेहिते मेरीरक्षाश्रीमद्रामचन्द्र करहिंगे सब प्रकार ते यह अचल बिश्वास है तत्र प्रमाण श्रीराममंत्रार्थे ॥ जानक्यासहदेवेश रघुनाथोजगद्गुरुः ॥ रक्षकः सर्वसिद्धांते वेदान्तेषुप्रगीयते १ बटतोअक्षयहै यहां निजधर्म कहो साधु धर्म जोहै सोई अक्षय है अचलहै पुनि प्रयागतो तीर्थ राजहै इहां समाज भरेकर जो स्वाभाविक सुकर्म जो शास्त्रनमें कहेहैं संतनके कर्मसो सम्मिश्र करिकै एक एक संतमें शुद्ध भगवत् कर्महै वाच्यांतर सोईभक्त राजपदहै अथवा तीर्थराजमें समाज जुटैहै संतसभा में सुकर्महै (११) अरु प्रयागक्षेत्र जोहै सो सबको सुलभनहीं है अरु मकरकेसूर्यभरि बड़ो माहात्म्यहैअरु सर्वदेशमें नहींहै अरु संतसमाज रूपोप्रयाग सबको सुलभहै अरु सर्व दिनमें एकरस सर्व देशमें प्राप्तहै ताते संतसमाज प्रयागते अधिकहै प्रयागमें कल्पवास कियेते सम्पूर्णक्लेशनाश होते है संतसमाज के सेवन कियेते जन्ममरणादि क्लेशनाश होतेहैं (१२) तीर्थराज प्रयाग जोहै ताकोमाहात्म्यवेदने कथन कियोहै कि यह जो प्रयागहै सो अर्थ धर्म काम मोक्ष देतहै अरु लौकिककही प्रत्यक्षहै यहनेत्रनते देखिपरैहै शरीरछूटे कालांतरमेंफल देतहै अरु संतसमाज प्रयाग जोहै सो अलौकिक कही परोक्षहै यह नेत्रनते नहीं देखि परैहै ज्ञाननेत्रनते देखिपरैहै अरु संतनको माहात्म्य वेदनहीं कहिसकैं अरु संत सभा चारिफलकेपर भक्तिदेतहै अरुफल लौकिककही प्रत्यक्षहै अरुसद्यकही तुरंत याहीतन में फलदेतहै (१३) ॥ दोहार्थ ॥ जनजोहै प्राणी प्रयागको माहात्म्य सुनतभये कि प्रयाग चारि फलदाताहै तब सुनिकै समुझिकै चलिकै मुदित मनते मज्जनकहीस्नान करतभये

जब शरीरछूटै तबफलको प्राप्त होहि अरु संतसमाज प्रयाग जोहै तहां जन कही दास जिज्ञासू जोहै संतसभामें जाइकै संतनके बचनसुनै कहीश्रवणपुनिसमुझबकही मनन पुनि मुदितमन कही निदध्यासन नित्य निरंतर अभ्यास पुनिअति अनुरागकही साक्षात्होइ ऐसी संतसमाजहै तहांयाही तनमें चारिहू फलको प्राप्तहोतेहैं चारिफल कौन हैं अर्थ धर्म काम मोक्ष पुनि सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य प्राप्तहोतेहैं प्रयाग रूपी समाज ता उपरांत भक्तिदेत है १ ॥

३ मज्जनफलदेखियततकाला। काकहोहिंपिकबकउमराला १
सुनिआश्चर्यकरैजनिकोई। सतसंगतिमहिमानहिंगोई * २
बालमीकिनारदघटयोनी *। निजनिजमुखनकहीनिजहोनी ३
जलचरथलचरनभचरनाना *। जेजड़चेतनजीवजहाना * ४
मतिकीरतिगतिभूतिभलाई *। जबजेहियतनजहांजेहिपाई ५
सोजानबसतसंगप्रभाऊ *। लोकहुवेदनआनउपाऊ * ६
बिनसतसंगविवेकनहोई *। रामकृपाबिनसुलभनसोई * ७
सतसंगतिमुदमंगलमूला *। सोइफलसिधिसबसाधनफूला ८
शठसुधरैंसतसंगतिपाई *। पारसपरसिकुधातुसुहाई * ९
बिधिबशसुजनकुसंगतिपरहीं फणिमणिसमनिजगुणअनुसरहीं १०
बिधिहरिहरकबिकोबिदबानी। कहतसाधुमहिमासकुचानी ११
सोमोसनकहिजातनकैसे। शाकबणिकमणिगुणगणजैसे १२

दो० बन्दौं सन्तसमान चित हितअनहित नहिंकोइ ॥
अंजलिगत शुभ सुमनजिमि समसुगन्धकरदोइ १
सन्तसरलचित जगतहित जानि स्वभाव सनेहु ॥
बालविनय सुनि करिकृपा रामचरण रतिदेहु २

३ प्रयागमें मज्जन कियेकर फल तुरंत नहीं देखाजाइ देहांतरमें अपने कर्त्तव्यको फल आपही देखतेहैं अरु संतसमाजप्रयागमें अनुरागरूप जो मज्जनहै ताकोफलतत्का-लकही बर्तमानकाल तुरंत याही तनमें अपनाको अरु सबको देखिपरै है तातै सत्संग को प्राप्तहोइकै काकजेहैं ते कोकिला होतेहैं बकुला जेहैं ते हंसहोतेहैं (१) यह सुनि जोकोई आश्चर्यकरै कि काकते कोकिला बकुला ते हंसकहांभये हैं तहांसत्संगकीमहिमा प्रसिद्धहै छिपीनहींहै सोकहतेहैं (२) वाल्मीकि नारद घटयोनिकही अगस्त्य जोसत्सं-गके प्रभावते जैसेमहत्वको प्राप्तभये हैं ते अपने २ मुखनते कहतभये श्री वाल्मीकि श्रीमद्रामचंद्र जूसों कहतभये श्रीनारद श्रीवेदब्यासजूसों कहते भये श्रीअगस्त्यजू श्री शिवजूसों कहते भये वाल्मीकिजू कहा जबश्रीरामचन्द्र आश्रममाहिं आये तब वाल्मीकि

कहतेहैं हे श्रीमद्रामचंद्रजू मैं प्रचेताको पुत्रहौं मोको पूर्वहीं किरात की संगतिपरि-गई तेहि दुष्ट दशामें केवल तुम्हारी कृपाते सप्तऋषिन की संगति भई अल्पकाल तेहि प्रभावते मोको हंसवत् बिवेकभयो तुम्हारो गुण मुक्तारूपहै तुम्हारो यश दुग्ध रूपहै सोतोग्रहतभयो यह जगत्में मानादिक कंकरी संबुकरूपहै देह जनित रागादिबिषय सो जलरूपहै सो समस्त त्यागभयो तेहीसत्संगके प्रभावते आपमिले मोको हे श्रीरामचंद्र आपसब जानतेहैं मैं ऐसेते ऐसोभयों पुनि नारदजू कबकहा जब कोई कालमें व्यास-जूके कछूशांति हृदयमें नहीं भई तब श्रीनारदजीकहा हेश्रीवेदव्यासजू पूर्वहीं मैंदासी पुत्ररह्यों जहांहमरहे तिसकेइहां साधुबहुत आवैं तिनकी मैंसेवाकरों तिनकोप्रसादअन्न जलबस्त्र करिकै शरीर पालन करों मेरोकाकवृत्तिरहै जैसैकोई पनवारामें शेषछोड़िदेइ ताकोकाकबिनिबिनि खाइहैं तैसे मैं करों तेई सत्संगके प्रभावते मैं भगवत्यश गानको अधिकारी भयों मेरी कोकिलावत् वाणी भई देखौतो सत्संगते मैं ऐसेते ऐसोभयों ताते हे श्रीवेदव्यासजू तुम सत्संग करिकै केवल भगवत् यश गावहु हृदयमें शांति ह्वै जायगी श्रीअगस्त्यजूने कबकहा एक समयमें शिवजू अगस्त्यजूके आश्रम में आये शिवजू कहा श्रीरामचंद्रजूके चरितकहौ तब अगस्त्यजू कहा हे श्रीमहादेव तुम तो ईश्वरहौ तुमसन मैं का कहौं मैंतो घटते उत्पन्नहौं पूर्वहीं कोई कालमें सूर्य जो हैं मित्राबरुण तिनने यज्ञ प्रारम्भ कीन्ह तहां देवता ऋषि मुनि सिद्ध अनेकन आये सब मिलिकै कलशस्थापन कियो कलश में सूर्य बीर्य स्थापन कियो जेतो सत्सभा रही तिनने कोई अपनी बल कोई बीर्य कोई तेज कोई प्रताप कोई धृति कोई शान्ति कोई संतोष कोई क्षमा कोई ज्ञान कोई वैराग्य कोई भक्ति कोई बिमल अनुराग कोईप्रेम इत्यादिकने योगध्यान समाधि अपनी शक्तिताही कलशमें स्थापन कियो पुनिसमस्तमुनि जो रहे महान भागवत् घटस्पर्श करिकै आशीर्वाद देतभये घटते बालकउत्पन्न ह्वैऐसे कह्यो तब मैं उत्पन्न भयों कोई कालपाइकै समुद्रको पानकरिगयों सो केवल श्रीराम प्रताप औ आपकी कृपाते आपसब जानतेहौ सत्संग प्रभावसे ऐसेते ऐसो भयों अबजो आज्ञाहोइ सो करौं हे श्रीमहादेवजू तब शिवजूकहा हे अगस्त्यजू श्रीरामचरित कहहु तातेप्रयाग क्षेत्रते अति अधिकतरहै संतसभा (३) जलके जीव थलकेजीव नभकेजीव नानाकही अनन्तजीव जड़ चेतनजीव जेते जहान कही संसारमें जेजीव हैं जड़ तृण तरु पाषाण इत्यादिक जे श्वासारहित तिनकी जड़ संज्ञाहै चेतन श्वासासंयुक्तजेतेजीव संसारमेंहैं जलचर ग्राह इत्यादिक थलचर गज इत्यादिक नभचर गीध इत्यादिक जड़सेत बांधतसंते पहाड़ वृक्ष तृण इत्यादिक तरे चेतन कोल भिल्ल मृग बानर ऋक्ष इत्यादिकतरे देव दानव मनुष्य इत्यादिक जेते हैं (४) इन सबनकी मति कीरति गतिकही मोक्ष भूति कही ऐश्वर्य भलाई इत्यादिक पदार्थजोहैं अनेक जो काहूजीवको प्राप्तभयोहै जबकहूं कौनिउयतनते जहां कहूं प्राप्तभयोहोइ (५) सो सत्संगहिके प्रभा-वते जानिये आन उपाय नहींहै लोकमें वेदमें सत्संग काको कहिये सत्की संगति असत्को त्याग सत्कहिये एकरस सर्वकालमें सो को है श्रीराम स्वरूप श्रीराम नाम श्रीरामधाम श्रीरामचरित श्रीरामदास इनमें एकहू की सङ्गतिकरै सो सत्संग कहिये सो

संसार तरिजाइ अरु इनमें जो एकहूकी संगतिकरै तो सबकी संगति ह्वै जाती है (६) बिना सत्संग बिवेक नहीं होताहै सत्संग काको कहिये जबमन मिलै बचनमिलै कर्म मिलै उपासनामिलै इष्टमिलै भजनमिलै रीतिरहस्य अच्छीप्रकार बिधिवत् विशेषमिलै ताको सत्संग कहियेहै सो सत्संग बिना श्रीरामचन्द्रकी कृपानहींमिलै अरु विशेषसत्संग यहीहै अपर सत्संग सामान्यहै अथवा अपनी ओरसे अपनो मन क्रम बचन जब सत्संग में मिलाइ देइ तब अपनौ संत ह्वैजाइहै किन्तु सत्कृपा करै तब सन्तहोय (७) सत्संगति जोहै मूलहै मूलकही जरहै मुदमंगलमय एकतरुहै अरु मोक्षकी अनेक साधनाहैं सो फूलहै अरु जो सत्संगको सिद्धान्त है सोईफल है पर बकला गुठलीरहित रसमय है केवल रसहीहै सो फलहै (८) शठजेहैं सुष्टुसंगति पाइकै सुधरि जातेहैं कैसे जैसे पारसके स्पर्शते लोहा सोना होताहै शठकाको कहिये जो अपनी हानि लाभ स्वार्थ परमार्थ नहीं समुझै अरु बिनासमुझै जो हठकरै सो शठ अरु जो लोहा पारसके बीचमें कागज प्रमाण कछू अन्तराइ होइ तो लोहा सोना न होइ तैसे जो सत्सङ्गमें नेकहू कपट राखै तो संतनके गुणनहीं प्राप्तहोहिं अरुजो सर्वप्रकार कपटको छोड़िकै लोक मर्यादा दूरकरिकै मिलै तो संतअपनी बरोबरि करदेतेहैं पारस अपनी बरोबरि नहीं करतहै (९) बिधिकही बिधाता अथवा बिधिकहो संस्कार तेहिके बश ह्वैकै सुजन कुसंगति में परै तो अपने गुणकोकैसे अनुसरब कहीबर्ततेहैं जैतेसर्पबिषे मणि अरु बिषदोऊ रहतहैं पर मणिजो सोसर्पके अवगुण जो बिष ताकोनहीं परसैहै तैसेही संसार सर्पहै असधुबिषहै बिषकेगुण खलकेगुण एकहीहैं साधुमणिहै मणिगुण साधुगुण एकहीहै तैसे सज्जन कुसंग के अवगुण नहीं परसैहैं पुनिदूसर अर्थसर्प अपनामणि प्रकटिकै वाहीके प्रकाशमें बिचरत है जब कोई बिजातीय आयोतब मणि लीलिलेतहै तैसेसाधु अपने गुणके प्रकाशमें बिचरते हैं जबकोई योगते कुसंगति प्राप्तभयो तबअपनेगुणको आवान्तरकरिकै मौन ह्वै रहतेहैं जैसो जहांतात्पर्य होतहै ताही अनुसार अपनेस्वभावते असाधु अरु साधुमणि अरु गुणबिष अरु अवगुण बर्ततेहैं मणिजेहैं विषके स्वभाव नहींग्रहण करैहैं तैसेगुणमान् पुरुषजे हैं ते अवगुणके स्वभावनहीं ग्रहण करतेहैं (१०) बिधि जो ब्रह्मा हैं हरि जो विष्णुहैं हर जो महादेवहैं कबिजो वाल्मीकि आदिक हैं कोबिदजे बृहस्पति आदिक हैं बाणी जो सरस्वतीहै अथवा ये जे सब महानहैं तिनकी बाणी जोहै सो साधुन की महिमा कहत सकुचातिहै (११) तिन साधुनकी महिमा मैं कैसे कहि सकौं जैसेशाक जो है पोति सो कांचकी होतीहै ताको बणिककही जो बेचिबेवारोहै अरु जोमणिमाणिक अमोलकरिकै जवाहिरन कहा तेहि मणिकै कीमति पोतिको बेचनहारो गरीब क्या जानै तैसे मोको संतनकी महिमा कहिबेको अगमहै यहगोसाईं तुलसीदासजूकहतेभये जो कोईकहै कि बिधि हरि हर ईश्वरहैं साधुतो जीवहै जीवकीमहिमा ईश्वर क्यों न कहै तहां ये जो ईश्वरहैं तिनकी बृत्तिकार्य हेतुगुणाभिमानी है अरु संत जेहैं तिनकी अकार्य गुणातीत

तातेकहतकै संकोचतेहैं अथवा विष्णु अपनोसपूत पुत्रजानिकै नहींकहते हैं (१२)

॥ ताते बन्दौं संतनको समचितहै जिनको न कोईहितहै न कोई अनहित जैसे दुइकरमें प्राप्तभयोहै शुभसुमन गुलाब इत्यादिक एकहाथ सों उतारतेहैं एक हाथ में

लेतेहैं परदोऊ करांजलिमें समसुगन्धहै तैसेसंतहैं अथवा संतनके सबहितै हैं अनहित कोईनहीं हैं जैसेफलमें सुगन्धहै कोई तोरै वारचाकारै (१) संतनको सरल चितहै सरल कही सबकेहितै चितमेंबसैहै स्वाभाविकै सनेहसंयुक्त ऐसे स्वभावसनेह संतन को जानिकै बंदौं मेरी बालककी ऐसीबुद्धिहै तोतरी विनयसुनिकै कृपाकरिकै श्रीरामचन्द्र में रतिदेहु जैसे बालककोकभी मातापिता लडुवा खवाये हैं पुनि कबहूं बालक के अन्तःकरण में इच्छाभईतो तोतरीवाणी सों लडुआको अडुवा कहतहै बारबार मांगैहै तब सुनिकैमाता पिता हर्षको प्राप्तहोतेहैं हंसिकै प्रसन्न ह्वैकै लाडुह्वो देतेहैं तैसेमोसों कछु बिपर्ययकहि तो हे संतजनहु तुममेरे मातापिताहौ स्वार्थपरमार्थहू का चमत्कारक कृपा करहु श्रीरामचरणरतिदेहु २ ॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेसाधुगुणस्वभावलक्षणवर्णनंनामद्वितीयस्तरङ्गस्समाप्तः २ ॥

दो० खलगुणतृतियतरंगमेंतंगदोषगुणजानि ।
रामचरणनिजनीचताअनुसंधानबखानि ।

४ बहुरिबन्दिखलगणसतभाये । जेबिनुकाजदाहिनेबांये * १
परहितहानिलाभजिनकेरे * । उजरेहर्षबिषादबसेरे * * २
हरिहरयशराकेशराहुसे * । परअकाजभटसहसबाहुसे * ३
जेपरदोषलखहिंसहसाखी * । परहितघृतजिनकेमनमाखी * ४
तेजकृशानुरोषमहिषेशा * । अघअवगुणधनधनीधनेशा * ५
उदयकेतुसमहितसबहीके * । कुम्भकरणसमसोवतनीके * ६
परअकाजलगितनपरिहरहीं * । जिमिहिमउपलकृषीदलगरहीं ७
बन्दौंखलयशशेषसरोषा * । सहसबदनबरणहिंपरदोषा * ८
पुनिप्रणवौंपृथुराजसमाना * । परअघसुनहिंसहसदशकाना * ९
हरिशक्रसमबिनवौंतेही * * । सन्ततसुरानीकहितजेही * १०
बचनबज्रजेहिसदापियारा * । सहसनयनपरदोषनिहारा * ११
दो० उदासीन अरिमीत हित सुनतजरहिंखलरीति ॥
जानुपानि युगजोरियश बिनतीकरौंसप्रीति १

४ बहुरि खलनके गणजेहैं तिनकी बन्दना करत हौं सत्भावकही यथार्थ गुण तिनके वर्णन करतहौं निन्दातेनाहीं वर्णत हौं कैसे हैं खल दाहिन कही सन्मुख हैं बिना कार्यहि बाम कही टेढ़ ह्वै जाते हैं (१) पुनि खल कैसे हैं पराये हितकी जो हानि देखते हैं सोई लाभ आपनो हितमानि लेते हैं अरु किसीको गृहग्राम देश भंडार उजरि जाते हैं तो हर्ष मानते हैं जो किसी की भलाई देखते हैं तो आपने [illegible]दय में हानि मानते हैं (२) हरि हरकर जोहै यश सोई राकेश है राका नाम पू[illegible]ासोको ईश पूर्णचन्द्रहै ताको ग्रासकरिबेको खल राहुरूपहै जहांहरिहरयश

होइ तहां खल गये तहां कछु उपाधि करते भये कोई शोचकी बातें कहते भये वा कथामें तर्ककरतेभये वा कोई विषयीकी बातकहतेभये तेहिकरिकै जे कथा एकहूदण्ड बन्दभई तो एकहीदण्ड ग्रहण जानिये अरु जो कथा उपनेत होइ तो सर्वग्रास ग्रहण जानिये अरु परावा अकाज करिबेको सहस्राबाहुकी समहैं खलन के तो हजार भुजा नहींहैं हजारभुजाकी उपमा क्यों दई परावा अकाज करिबे को हजारभुजाकी समान हर्ष बल पौरुष प्रबलता करतेहैं अथवा जो कोऊ उनके संमत में पर अकाजकरिबेको जातेहैं तिनकी भुजा सब उनहींकीहैं यहिप्रकारते खलनके सर्व प्रसंगरूप यथार्थ जानि लेव (३) जे खल पराये दोष हजारनेत्रकरिकै देखतहैं किन्तु पराये दोषको सहसासाखी भरतेहैं परहित जोहै सो घृतहै ता घृतके बिघ्नकरिबेको खल अपनेमनको माखीकरिकै मरिजातेहैं (४) जो खलनके ऐश्वर्य गुण बलकरिकै तेजहै सो अग्निसमहै सो तेजजीवन ते नहीं सहाजाइ ताते खलनके तेज रोष दोनों दुःखरूप हैं रोष महिषेशकहो यमके समहैं किंतु महिषासुरहै अघ कहो पाप अवगुण कहो अनेक कुलक्षण तिनके धनेश कहो कुबेरहैं (५) पुनि ऐश्वर्य रोष अवगुण तीनिहूं करिकै जो खलनको उदय भई तो जैसे केतु आकाश में उदय होत संते सर्वजीवनको भय उत्पन्न होतभई कि यह संवत में धौं का उपद्रवहोइ केतु प्रभाव ते उपद्रवभई दैवराजा अग्निरोग ग्रह चौर व्याघ्र इत्यादिक करिकै जीवनको पीड़ाभई ताते केतु अरु खल एकहीहै कुंभकरणकी सम जो सोवतैरहैं तो सर्वजीव सुखीरहैं खलन के सबप्रकार दरिद्ररूप निद्रा बनीरहै जाते सोवतैरहैं नाम सदापराये आश्रयरहैं (६) पुनि परावा अकाज करहिं अपने शरीर को त्यागिकै जैसे पाला अरु पत्थर कृषीको नाशकरै आप गलिजायहै (७) पुनि खल बंदौं शेषको ऐसो रोषहै शेषजी तो हजार मुखते श्रीरामनाम अहर्निश कहते हैं तैसे खल परावादोष निशिदिन कहतेहैं (८) पुनि खलबन्दौं राजापृथुकीसमान राजापृथु भगवानसे मांगिलीनहै कि जब मैं तुम्हारी कथासुनौं तब मोको दशहजार श्रवणको फल होइ तैसेही प्रीतिसे खल परावा अवगुण दशहजार श्रवणसम सुनतेहैं (९) पुनि शक्र कहो इन्द्रसम खलहैं इन्द्रको अमृतप्रियहै वा आपने देवताप्रियहैं वा आपनो ऐश्वर्य प्रियहै तीनहूं को एकही सुखहै अरु सन्ततकहो निरन्तर खलनको मदिरा प्रियहै वा जातिकुल कुटुम्ब मदप्रियहै अथवा ऐश्वर्य मद मोहप्रियहै (१०) इन्द्रको वज्र प्रियहै खलन के बचनै बज्रहैं इन्द्रहजार नेत्रनते अपने देवतनकोहित देखते हैं खल हजार नेत्रन करिकै परदोष देखतेहैं (११) दोहार्थ ॥ खल कैसेहैं उदासीन सबते रहतेहैं अरु सबके अरिहैं पुनि जेउनके मित्रहैं तिनहूंको हितकारहोत सुनहिं तो जरिजातेहैं यह खलनकी रीतिहीहै ऐसे लक्षण जिनमेंहोइं तेईखलहैं पुनिजे संसारते उदासीनहैं साधु जन तिनके तो अरिहैं पुनि उदासीनजेहैं मुनिजन तिनको अरि रावणहैतिनके मित्र जो शिवहैं शिवकोहित श्रीरामचंद्र हैं तिनको यश सुनतमात्र जरिजातेहैं यह खलन की रीतही है ताते जानु कहो जांघ पानि कहो हाथदोनों जोरिकै जैसेखलहैं तैसेही यथार्थ सप्रीतिसमेत विनती करतहौं जानुपानि क्योंकहाअतिप्रीतिते अथवा हास्यरसते बिनयकीन किन्तु गुसाईंकहतेहैं हे मन खलनको असजानुदोनोंकरजोरिबन्दनाकरु ॥

५ मैंअपनोदिशिकीन्हनिहोरा * । तेनिजओरनलाउबभोरा *१
बायसपालियअतिअनुरागा। होहिंनिरामिषकबहुंकिकागा २
बन्दोंसंतअसज्जनचरणा * । दुखप्रदउभयबीचकछुबरणा ३
बिछुरतएकप्राणहरिलेहीं * । मिलतएकदुखदारुणदेहीं ४
उपजहिंएकसंगजगमाहीं। जलजजोंकजिमिगुणबिलगाहीं ५
सुधासुरासमसाधुअसाधू * । जनकएकजगजलधिअगाधू ६
भलअनभलनिजनिजकरतूती। लहतसुयशअपलोकबिभूती ७
सुधासुधाकरसुरसरिसाधू । गरलअनलकलिमलसरिब्याधू ८
गुणअवगुणजानतसबकोई । जोजेहिभावनीकतेहिहोई ९
दो० भलो भलाईही लहै लहै निचाई नीच ॥
सुधासराहियअमरता गरलसराहियमीच १

५ मैं तो अपनी दिशिते अति प्रीतिते निहोरा कीन परते खल अपनी ओरते भोरकहो न भूलैंगे निंदा बिघ्न करिबे में न चूकैंगे (१) जैसे बायस कहो काग अति अनुरागते पालिये पर आमिष भक्षण न छोड़ैगा तैसे खलहैं इहां पुनरुक्ति न जानब (२) सन्त असन्तन दोनों के चरण बन्दैं। दुःखदाता दोऊ हैं पर कुछ बीच है (३) संत जेहैं ते बिछुरत के प्राण हरि लेते हैं खल मिलत सन्ते दारुण दुःख देते (४) सन्त अरु असन्त जगत्में एकही संग उपजतेहैं जैसे कमल अरु जोंक जलही में उपजैहैं खल जोंक इवहैं सन्त कमलहैं जगत् जलहै (५) सन्त सुधा रूपहैं खल मदिरा रूपहैं सुधा सुराके पिता एक समुद्रही है सन्त असन्तके पिता एक जगत्ही है (६) एकही संग दोऊ निज निज करतूतिते उपजत भये एक सन्त कहाये भले सुयश की बिभूतिको प्राप्तभये अरु एक मलिन करतूतिते खल कहाये अपयशकी बिभूतिको प्राप्त भये ताते कर्तब्यही सन्तहै कर्तब्यही असन्त है (७) सुधा जोहै सुधाकर जो है सुरसरी जोहै साधुजोहै ये चारि अपनी करतूतिते जगत् में पुज्यमान हैं अरु गरल जोहै अनल जो है अनलमें केवल दाहक अवगुण लेब अपरगुण है ताते एक देश लैलिया कलिमल सरि कही कर्मनाशा जोहै असाधु जोहै येते चारि अपनी करतूति ते जगत् में अपूज्यहैं क्रमते जानिलेब एक सुष्ठु गुण मयहै एक अवगुण मयहै (८) ताते गुण अरु अवगुण सब जानते हैं पर जाको जौन भावत है सो ते वाही को नीक मानि लियोहै (९) दोहार्थ ॥ पर जो भलोहै सो भले फलको देइगो अरु जो नीच है सो नीचई फलको देइगो जो महत् गुण है औ महत् अवगुण है इन सबको जो कोई अपने ज्ञानते गुणको अवगुण करिकै मानते हैं अवगुण को गुण करिकै मानते हैं पर ये सब अपने यथार्थ गुणको देतेहैं सुधाको जानि ग्रहण करै वा अजान ग्रहण करै सो

अमर पदै देइगो अरु विष को जानि ग्रहण करै वा अजान ग्रहण करै तौ मारिही डारैगो ताते दोनों सराहिबे योग्य हैं १॥

खलअघ ‍ ा। उभयअपारउदधिअवगाहा १
 ‍ *। संग्रहत्यागनबिनुपहिचाने २
पजाये *।
कहहिं ‍ हासपुराना। बिधिप्रपंचगुणअवगुणसाना ४
दुखसुखपापपुण्यदिनराती। साधुअसाधुसुजातिकुजाती ५
दानवदेवऊंचअरुनीचू **। अमियसजीवनमाहुरमीचू * ६
मायाब्रह्मजीवजगदीशा *। लक्षिअलक्षिरंकअवनीशा ७
काशीमगसुरसरिक्रमनाशा *। मरुमालवमहिदेवगवासा ८
स्वर्गनरकअनुरागबिरागा *। निगमागमगुणदोषबिभागा ९
० जड़ चेतन गुण दोषमय बिश्व कीनकरतार॥
सन्तहंसगुण गहहिंपय परिहरि बारिबिकार १

६ खलजोहैं अघ अवगुण समुद्रवत् ग्रहण किये हैं साधु जोहैं दया इत्यादिक शुभ गुण समुद्रवत् ग्रहण किये हैं ताते दोऊ अवगुण गुण के अवगाह कही अपार अगाध समुद्रहैं (१) जो कोई कहै कि तुमको किसीके गुण दोषते कौन प्रयोजन है सो सत्य है पर मैं याते कहतहौं कि गुण दोषको बिभाग मैं समुझा चाहत हौं काहे ते गुण दोष पहिंचाने बिनु संग्रह त्याग नहीं होतु है (२) अरु भले पोच गुण बिधि जो हैं ब्रह्मा तिनने उपजायेहैं अथवा भले पोचकै बिधि जोहैं सो कर्तार जो हैं भगवान् तिनने गुण अरु दोष उपजाये हैं गनि गुण कही विचारिकै वेदने बिलगाइ दिये हैं (३) वेद जो हैं अरु शास्त्र जोहैं अरु इतिहास भारत हरिवंश इत्यादिक अरु पुराण ये ते सब कहतेहैं कि बिधि जोहैं ब्रह्मा तेहिकर प्रपंच जोहै संसार तामें गुण अवगुण सानि रहेहैं अथवा प्रपंचह्वै बिधि जोहै तामें गुण अवगुण सनिरहे हैं (४) आगे दुइ चौपाई तक अक्षरार्थ जानिये (५-६) माया तहां ब्रह्म जीव तहां जगदीश मायाकही जो तीनिहूं गुणको स्फुरित करिकै परस्पर सर्व जीवन विषे मोहकी फांसकरि दियो है ब्रह्मके आश्रयहै अनेकब्यकार मय ह्वैगई सो माया जानिये अरु ब्रह्म निर्विकार अन्तर्यामी सर्व को साक्षी जेहि ब्रह्म के एक देश में माया सदा बिलास करती है तौनिगुणमय अरु ब्रह्म त्रिगुणातीत है पर मायाब्रह्म में मिलितहै ब्रह्ममाया मिलिकै अनेक ब्रह्माण्डहै जो ब्रह्म अनेक विश्वमें अंतर्यामीरूप विश्वको चैतन्यकिये है आपु एकरस मायामें सूत्रात्मकब्याप्तहै जैसे मणिमें सूत्र तहां (भगवद्गीतायां) सूत्रेमणि गणाइव जैसे फूलमें सुगन्धहै जैसेपदार्थमें स्वादु है पर फूलमेंसुगन्ध पदार्थमें स्वादु मिले है अरु भिन्नभी है ऐसेमाया ब्रह्महै पुनि जीवकही कार्य्यरूप जो प्रकृतिहै ताकोभोक्ता

अरु जीवतत्व एकहीहै व्यक्ति अनेकहै जैसे अन्न धान तत्वएकहै परन्तुरूप भिन्नहै ऐसे जीवहै कर्माधीन सुख दुःख हर्ष शोक पाप पुण्य स्वर्गनरक इत्यादिक भोक्ताहैईश्वर की कृपाते मोक्षहोतहै अरुईश्वरको अंशहै (गीताश्लोकाद्ध)ममैवांशोजीवलोके जीवभूत: सनातन: ॥ पुनि जगदीश कही जगत् के ईश ते कोहैं ब्रह्मा विष्णु शिवइत्यादिक सर्व विश्वके कार्य्य उत्पत्ति पालन प्रलयकर्त्ता गुणाभिमानी गुणनके वशनहींहै गुण तीनों तीनिहूं स्वरूप के वशहैं अरु जीवन को कर्म फल प्रदाताहै आपस्ववशहै संपूर्ण कर्मते रहितहै ईश्वरहै ते जगदीशहैं अथवा कोई असकहतेहैं कि ब्रह्म सोईचारिरूपहै ब्रह्मरूप सर्वसाक्षी ईश्वररूप प्रदाताजीव रूप भोक्तामाया इच्छाभूत भोग्य पुनि माया लक्षिकही प्रत्यक्ष ब्रह्म अलक्षिकही परोक्ष आढ्य रंककही दीन सोजीव अरुजगदीश कही जगदीश अथवा मायाब्रह्म मायावादी मायाको ब्रह्म मानते हैं जीवजगदीशा जीव जगदीशबादी जीवको जगदीश मानतेहैं यह अवगुण है कोई यथार्थ मानते हैं मायाको मायाब्रह्म को ब्रह्मजीव को जीव जगदीश को जगदीश मानतेहैं यहगुणहै पुनि कोई पदार्थ है लक्षि देखिबेमें आवै अलक्षि न देखिपरै किन्तु लक्षण अलक्षणपुनि रंक राजा यहअर्थहै जो कोईकहै किमायाब्रह्म जीवजगदीश येभी विधिके उपजायेहैं सोअर्थनहींहै विधिकही कर्त्तारको जो विधि विशेष ब्रह्माको कही तोएक कारण गुण अवगुणहै एक कार्य्य गुण अवगुणहै मायाब्रह्म जीवजगदीश कारणगुण अवगुणहै सोकर्त्तारअपुही चारिलीलारूप है अरु चारिहूको मिलिकै जो कार्य्य गुण अवगुणमेंहैतेहि प्रपंचको कर्त्तारब्रह्माहै चारिहूको कार्य कौनहै मायाको कार्य स्वर्गनरक मृत्युलोककीप्राप्ति ब्रह्मकोकार्य सबको चेतनकरैहै जीवको कार्य अहं मम हर्षशोक इत्यादिकजगदीशको कार्य उत्पत्ति पालन प्रलय इहां ब्रह्मा विष्णु महेशको एकही करिकै कहाहै तीनिहूंकेविधि नामकहेहैं सो जानब ताते माया ब्रह्मजीव जगदीश इनचारिहूंको कार्यहै तिनको कर्त्ताब्रह्माहै जो ये चारिहूब्रह्माके प्रपंचमेंहैं तो जैसे कोई क्षत्रीके ग्रममें कोई ब्राह्मणबस्योहै सोक्याब्राह्मणको कर्त्ताक्षत्रीहै सो नहींहै तैसे ब्रह्माको प्रपंच जोकार्यरूप गुण अवगुण मयहै तामें मायाब्रह्मजीव जगदीश एककारणरूप गुण अवगुण मयहैपर ब्रह्माके किये नहींहै परब्रह्मजोकर्त्तारहै सोइनको कर्त्ताहै अथवाकर्त्तारही अपनी इच्छाते चारिरूपहै (७) देखियेतो यह विश्वमें काशी पंच कोश मर्य्यादमोक्षदेतहै अरु मगह नरक देतुहैदोउनको सींवसमीपहीहै पुनि सुरसरि श्रीगंगा मोक्षदेतुहै अरु निकटही कर्मनाशा नदी नरक देतुहै मगहकर्मनाशा कैसेभयेहैं मैं सूक्ष्मकहतहौं राजा त्रिशंकुरहै सो श्रीवशिष्ठमुनि को शिष्यरहै अधर्मीरहै कोईकालमें वशिष्ठको अपमानकियो वशिष्ठ तो नहींबोले वशिष्ठके शिष्यनेत्रिशंकुको शापदियो राजा चाण्डालरूप ह्वैगयो तबराजा विश्वामित्र के पासजात भयो विश्वामित्र अपने तपके बलते सहितरथ स्वर्गको पठायो सो गुरुनके अपमानते ब्रह्मादिक देवतनते नजाइपायो तबबीचमें रह्यो रथसहित अधोमुख टँगिरह्यो ताके रथकीछाया जहांतक परी सो मगह भयो पश्चिम पूर्व चौबीस योजन पर्यन्त दक्षिण उत्तर सोरह योजन पर्यन्त अरु राजाके तनकोपसे विमुखद्वारह्वै बहतहै सो कर्मनाशा नदीही पापमयहैको जानै केतेकाल में निष्पाप ह्वैहैगो गुरुअपमानको यह फलहै शास्त्र कहेहै अरु जहां मारवाड़

निर्जलदेश अरु ताकोसींव मिलित मालवादेश जलमयहै अरु जेहिग्राममें महिदेव जो ब्राह्मण त.हीग्राम में नीचगवास कही चर्मकार आदिक सोभीरहतेहैं (८) सामान्यस्वर्ग कहते हैं-स्वर्गनरकअनुरागबिरागा॥ यह विश्वमें सबहै यमलोकभी है तामें चारिद्वारहै तहां उत्तर दरवाजेमें स्वर्ग भोगयहै सात्विक गुणहै जेपुरुष सकाम सात्विक कर्मकरते हैं ते वह स्वर्ग को प्राप्त होतेहैं जहां अनेक भोग हैं जब यह जीव स्वर्ग को जातहै तब देवीचंद्रमुखी किशोरी अवस्था निर्मल स्वरूप अनेक स्वर्णरत्नमय अलंकार सदाकिये अनेकप्रकार के बाजन वीणादिक दिव्यगान करत धूप दीप नैवेद्य कल्प वृक्षके दिये भोजन दिव्यवस्त्र अनेकरत्न थारन भरे कमल करन लिये आरती सजे ऐसी देवबधू देवकन्या तेहि पुरुषको षोड़श प्रकार पूजन करिकै आगेलेतीहैं अनेक रत्नमय महल तहांवास देतीहैं बनितादिक अनेक भोग पुरुष करतहै जब पुण्यचीण होय तब फेरि मृत्युलोक में जन्मलेतहैं(गीतायां)चीणेपुण्ये मृत्युलोकंविशन्ति ॥ आवागमन नहीं मिटेउ ताको स्वर्गकही पुनि यमलोकमें दक्षिणदरवाजे में अट्ठाइस नरकहैं ते कौन नरक तामिस्र, अंधतामिस्र, रौरव, महारौरव, कुंभीपाक, कालसूत्र, असिपत्र,शूकरमुख, अन्धकूप कृमिभोजन, संदंश, तप्तभूमि, वज्रकंटक, शाल्मली, वैतरणी, पूयोद, प्राणरोधन, बिषासन लालाभक्षण, सारमेयादन, अवीचिरयः, पानकर्दम, रक्षोगण भोजन,शूलप्रोत, दन्दशूक कूपनिरोधन, पर्यावर्त्तन, सूचीमुख येते अट्ठाईसनरक इनके स्वरूपफल उत्तर काण्ड में कहैंगे पश्चिम पूर्व दरवाजेमें सुखदुःख दोनोंहैं एकही ठौरहैं एकही जगहमें अनुरागहै अरु विराग भीहै देखिये तो महाराज ऋषभये देवभये तिनके एकसै पुत्र भये तिन में नव तो नवो खण्ड के राजाभये तिन में भरतजू परमहंस भये पुनि नव बिरक्त भये मह योगेश्वर भये सब ब्राह्मण भये अनुराग कहो विषय में प्रीति करना विराग कहिये ब्रह्मादिक को ऐश्वर्य ताको त्याग यह जो विश्वहै गुण अवगुणमय ताको विभाग कही भिन्न भिन्न गुण अवगुण जनाय दियोहै वेदन अरु शास्त्र ने ताते सब जानते हैं (६) दोहार्थ ॥ जड़ जो है चैतन्य जोहै दोनों गुण दोष मयहैं जड़ कही वृक्ष तृण जल पाषाण इत्यादिक जो न चलै तिनमें वृक्ष आंब चन्दन कटहर इत्यादिक उत्तम वृक्ष जे हैं ते गुणमय हैं बबूर इत्यादिक कंटक विष संयुक्त जे वृक्षहैं ते अवगुण मयहैं ऐसेही तृण इत्यादिक जानिये ऐसेही पाषाण इत्यादिकजानिये चैतन्य कही नर देव दानव पशु पक्षी कीट इत्यादिक जिनके श्वासा चलैं ते चैतन्य अरु श्वासा रहित हैं तिनकी जड़संज्ञाहै इन सबनमें अनेकन गुण मयहैं अनेकन अवगुण मयहैं यह विश्व अरु विश्व के कार्य सबको कर्तार कहो परमेश्वरै है तहां गुण दूध मयहै अवगुण जलमय है संतजन हंस रूपहैं गुण जोहै दूधरूप ताको ग्रहण करतेहैं बिकार जलरूप त्याग करते हैं १ ॥

७ असबिबेकजबदेइबिधाता ० । तबतजिदोषगुणहिंमनराता १
कालस्वभावकर्मबरिआई ० । भलेहुप्रकृतिबशचूकभलाई २
सोसुधारिहरिजनइमिलेहीं ० । दलिदुखदोषबिमलयशदेहीं ३

खलउकरहिंभलपायसुसगू० । मिटैनमलिनसुभावअभंगू ४
लखिसुबेष जगबंचकजेऊ० । बेष प्रताप पूजियत तेऊ ५
उघरै अन्तनहोहि निबाहू ० । कालनेमिजिमिरावणराहू ६
किये कुबेषसाधु सनमानू ० । जिमिजग जामवन्तहनुमानू ७
हानिकुसंग सुसंगतिलाहू ० । लोकहुवेद विदित सबकाहू ८
गगनचढ़ै रज पवनप्रसंगा *। कीचहिं मिलै नीचजलसंगा ९
साधुअसाधुसदनसुखसारी* । सुमिरहिंरामदेहिंगनिगारी १०
धूमकुसंगतिकारिख होई * ।लिखियपुराणमंजुमसिसोई ११
स्वइजलअनलअनिलसंघाता*।होइजलदजगजीवनदाता १२

दो० ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुयोग सुयोग ॥
सुलसरा लोग १
सम प्रकाश तम पाख दुहु नाम भेद विधिकीन ॥
शशिशोषकपोषकससुझिजगयशअपयशदीन २
जड़ चेतन जग जीव जत सकल राम मयजानि ॥
बन्दौं सबके पद कमल सदा जोरि युग पानि ३
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गन्धर्व ॥
बन्दौं किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व ४

७ हंसको ऐसो विवेक जो बिधाता देइ बिधाता कही परमेश्वर अथवा बिधाता कही ब्रह्मा आचार्य रूप सो विवेक देइ तब गुणको ग्रहणहोय अवगुण को त्यागहोइ (१) कालके बश स्वभावके बश कर्मके बश काल कही जेहि कालके विषे चन्द्रमा सूर्य देव दानव मनुष्य घरी पहर दिन मास बर्ष युग कल्प ये सब कालही में फिरते हैं उपजते हैं बिनशते हैं ऐसो प्रबल ताको काल कही अरु कई जन्मके संस्कार सूक्ष्म रूप जो शरीर में बर्त्तमान होतहैं अपनेको नहीं समुझिपरै ताको स्वभावकही अरु पूर्व संस्कार संयुक्त जो क्रियमान स्थूल रूपहै सो इंद्रिय द्वार ह्वैकै बर्त्तमान होत है ताको कर्म कही ये तीनहू प्रबल हैं जेहि पुरुष की भली प्रकृति कही भली रीति रहीहै अरु कभू काल कर्म स्वभाव की बरिआई कहो प्रबलताके बश ह्वैकै भलीरीति में चूकिगयो कुरीति ह्वैगई कहूं (२) शरीर की प्रकृति ते जो ब्यकार होइगयो ताको हरिजन सुधारि लेतेहैं इमि जो कहा ताको दृष्टान्त आगे की चौपाई में है अथवा याही चौपाई मेंहै सो सुधारि हरिजन इमि किमि जैसे हरि के जननते अनेक चूकपरी हैं ताको हरि चारिहू युगमें सुधारते आयेहैं तैसेअबहूं सुधारतेहैं अथवा हरिके जननते जब चूक परी तब आपहीते आप समुझि कै सुधारि लेते हैं अथवा सतगुरु उपदेश

करिकै सुधारि लेतेहैं इमि कहो जैसे परम्परा सुधारते चले आये हैं तैसे दोष जो भई चूक तेहिकरिकै जो भयोहै दुःख सो दुःख दलि कही नाशकरिकै बिमल यशको प्राप्त करतेहैं अरु बिमल यशको प्राप्त होते हैं (३) खलजोहैं खल काको कही जो नीक व्यकार समुझते हैं पर व्यकारही करैहैं किसूको उपदेश नहीं मानैं जैसे कोई जागतहै मुख मूंदिकै सोइ रहेउ है सो जगाये ते नहीं जागै ऐसे खलहैं तेऊभलाई सुन्दरि संगति पाइकै करत हैं फेरि जब खल खलनकी संगतिमें गये तब वै खलत्व को सुधारिकै जैसे आगे खल रहेउ है तैसेही करि दिये काहे ते वाके खलत्व स्वभाव जो अनेक जन्मके संचित अभंग रहेउ है ताते मलिन स्वभाव नहीं मिटेउ पाछेकी चौपाई में जो इमि पद कहेउ ताको दृष्टान्त यहां सिद्धि भयो इमि कही जिमि खलन को सुधारिकै खल करि लीन तिमि साधुते जो चूक परी ताको सुधारिकै साधु जन साधु करिलेते हैं (४) लखि सुवेष सुन्दर वेष बनायेहैं अरु जग बंचक कही जगत् उनको छलि लीनहै अथवा सबको आप छलत फिरते हैं तेऊ बेषकेप्रतापते जगत्में पूजे जाते हैं (५) पर अन्तमें उघरि जातेहैं जे पुरुष सुन्दर वेष बनायकै बंचकयो करतेहैं सो पाखण्ड अन्तमें खुलिजाताहै जैसे कालनेमि नामी राक्षस सो मार्गके मध्यमें हनुमान्जूके छलिबेको सुन्दर संन्यासवेष बनाइ कै बैठेउ जाइ जब लंकाते संजीवनी लेनेको जातेरहे तब कोई यत्नते हनुमान्जू जानिगये तब उसको मारिडारेउ पुनि रावण संन्यासीको वेष करिकै पंचबटीमें श्रीजानकीजूके निकट भय समेत जातभयो तब जानकीजू जानिलीन तब संन्यासीते राक्षस देखिपरेउ अन्तमें पुनि भगवान् जब क्षीर समुद्र मथनकीन तब चौदहरत्न निकसे लक्ष्मी, कौस्तुभमणि, शशि, कामधेनु, कल्पवृक्ष, ऐरावत, धन्वंतरि, रम्भानामेअप्सरा, अमृत, अश्व, मदिरा, बिष, शंख, धनुष१४तेहिमेंअमृतजब भगवान् देवतनको पारसि करनेलगे तब राहु देवतारूप ह्वैकै जाइबैठो अन्तमें ताको पाखण्ड खुलिगयो अथवा कैसो बंचकहोइ वेषके प्रतापते जगत् में पूजनीय होइहै अरु उघरहि अन्त न ताकी बंचकता अन्तहू में नहीं उघरै निबाह ह्वै जाइहै नाममोक्ष होइहै जैसे हनुमान्के मारेते अन्तकालमें कालनेमि मोक्षभयो श्रीरामचंद्रके मारे अन्त में रावण मोक्षभयो पुनि बिष्णुके चक्रकरिकै राहुको शीश छेदन भयो चक्रांकित भयो ताते अन्तमें मोक्षहोइगो (६) कियेकुवेष जो कदाचित् केवल अन्तष्करणते साधुता होइ अरु ऊपरते कुवेष कियेहोइ अरु साधुरीतिहोइ सो रघुनाथजीको बहुत प्रिय है जैसे जगत् में बिदित जामवन्त हनुमान् आदिक श्रीरामचंद्रजूके अनन्य भक्तहैं अरुजे प्रेमसंयुक्त निष्कपटभक्तहैं तिनकी का कहैं (७) हानिकुसंगदेखिये तोकुसंगतिमें हानिही देखिपरैहै अरुसुसंगतिमेंलाभही देखिपरैहै लोकहूमें वेदहूमें प्रसिद्धहै(८) गगनचढ़ रज देखिये तोसुसंगतिकुसंगतिकोप्रभावरजकही धूरिसोपवनकेप्रसंग करिकै आकाशको चढ़ि जातीहै पुनिकीचमें मिलिजातीहै नीचजोहैजल ताकेसंग करिकै नीचत्वकोप्राप्तभई धूरि कीचह्वैगई जलकोनीच क्योंकहा जेहिके संगकरिकै कोईनीचत्वको प्राप्तहोइ वाकोलेखे वह नीचहीहै अथवा जल नीचही को बहत है ताते ये द्वैप्रकार करिकै जलको नीच कहा (६) साधु असाधु दोऊने अपने घरमें कोईने सुवा पाल्यो कोईने शारिका पाल्यो

साधुके यहां श्रीराम श्रीराम कहतु है असीधु के यहां गारी देतु है देखिये तो सुसंग कुसंग करिकै पक्षिनकी प्रकृति बिगरि जाती है मनुष्यको स्वभाव क्यों न बदलैगो (१०) धूम जो है सो तृण लकड़ी कराडा इनको कुसंग पाइकै कारिख होत है वही धूम नेत्रनको दुःख देतहै पुनि तेलकी संगति पाइकै सुंदरि मसि बनती है तेहि मसि ते पुराण लिखे जातेहैं पुनि सोई कज्जल नेत्रनको शोभित करै है (११) सोई धुआं घृत शक्कर इत्यादिकनके संगते होम होतहै ताको धुआं जल अग्नि पवनके संगकरिकै मेघ होतहै सम्पूर्ण जगत्को जीवन होतहै अथवा अवरेव करिकै अर्थ सिद्धहोत है धूम सोई जल नाम उत्पन्न भयो अनल तेल कही लोन उत्तम शाकल्यके प्रसंग होइ कै पुनि अनिल कही पवनके प्रसंगते सो धूम मेघ भयो सम्पूर्ण जगत्को जीवन जल ताको दाता होतभयो है (श्लोक श्रीभगवद्गीतायां) अन्नाद्भवन्तिभूतानि पर्जन्यादन्न संभवः ॥ यज्ञाद्भवतिपर्जन्यो यज्ञःकर्मसमुद्भवः (१२) दोहार्थ ॥ ग्रह भेषज ग्रहनव आदित्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर, राहु, केतु, भेषज नाम औषध जल पवन पट इत्यादिक येते सुयोग पाइकै सुबस्तुहोतेहैं कुयोग पाइकैकुबस्तु होतेहैं देखिये तो चंद्रमा एकहीहै काहूके दूसर सम्मुख दाहिन मंगल दाताहै अरु काहू के आठवें पाछे बाम अमंगल दाताहै ऐसेही नवोग्रह जानिये औषध कोई कालमें गुण करैहै कोई कालमें नहीं गुण करैहै जल एकही कूप को कोई म्लेच्छ के पात्र में पर्‌यो कोई बैष्णवके पात्रमें पर्‌योहै पवन पुष्पके प्रसंग करिकै सुगंध मय बहत है विकारको प्रसंग पाइकै दुर्गंध बहतहै पट एकई थानते मुर्दा के कफन को गयो वाही थान ते ब्राह्मण बैष्णव के अङ्ग में लग्यो इत्यादिक अनेक दृष्टांत हैं (१) सम प्रकाश है अरु सम अंधकार है शुक्लपक्षमें अरु कृष्णपक्षमें दोउन में बराबर है शुक्लपक्षकी पूर्णमासी लेव कृष्णपक्षकी परिवा लेव दोनों प्रकाशमयहैं शुक्लपक्ष की परिवा कृष्ण पक्षकी अमावस दोऊ अंधकार मयहैं शुक्ल पक्षकी चतुर्दशी कृष्णपक्षकी द्वितीया दोउन में एक एक कला अंधकार पंद्रह पंद्रह कला प्रकाश है शुक्लपक्षकी त्रयोदशी कृष्णपक्षकी तृतीया दोउनमें प्रकाश तम बराबरहै येही प्रकार क्रमही ते शुक्लपक्षकी चढ़ाइ कृष्णपक्ष की उतारि आदि अंत ताईं प्रकाश अरु तम दोउन में बराबर जानिये कृष्ण कही कालारंग तामसगुण शुक्ल कही श्वेतरंग सात्विकगुण देखिये तो बिधाताने एकही मास में द्वै पक्ष कियोहै शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष एक मासमें काहे को कियो तहां प्रथमहिते पंद्रह दिन दिनप्रति चंद्रमाकी हानि करै है ताते बिधाताने कृष्ण पक्ष कह्यो है कुसंगति ते ऐसी हानि है अरु पंद्रह दिन दिन प्रति चंद्रमा बढ़ावैहै ताते शुक्लपक्ष कह्यो सुसंगति में ऐसी बृद्धिहै ताते जो कोई किसीकी हानि करैहै सो जगत्में अपयशको प्राप्त होत है जोकोई किसीके धर्मको बढ़ावतहै ताको बिधाता यह जगत्में सुयशको प्राप्त करत है ताको सुसंग कही (२) जड़ चेतन जगत्में जेते जीवहैं सकलमें अन्तर्यामी राममय जानिकै सबके पद कमल सदा दोऊ करजोरि कै बन्दौं (श्रीअध्यात्मरामायणेबशिष्ठ वाक्यं) यस्मिन्रमंतेमुनयोविद्यया ज्ञानबिक्लवे ॥ तंगुरुःप्राहरामेति रमणाद्रामइत्यपि (३) देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब किन्नर निशिचर मैं सबके पद बन्दौं मेरे

ऊपर कृपाकरौ देव बृहस्पति इत्यादिक दानव प्रह्लाद इत्यादिक नर वशिष्ठ विश्वामित्र जनक इत्यादिक नाग अनन्त जो शेष इत्यादिक खग कागभुशुण्ड जटायु गरुड़ इत्यादिक प्रेतराज धर्मराज इत्यादिक पितृ अर्यमा इत्यादिक गंधर्व तुम्बर इत्यादिक किन्नर शुक इत्यादिक निशिचरबिभीषण इत्यादिक एतेसमस्त मेरेऊपर कृपाकरहु ४ ॥

८ आकरचारिलक्ष चौरासी *। जाति जीव जलथलनभवासी १
सीयराममयसबजगजानी * । करौंप्रणाम जोरियुगपानी २
जानिकृपाकरिकिंकरमोहू *।सबमिलिकरहुछांड़िछलछोहू ३
निजबुधिबलभरोसम्वहिंनाहीं *।तातेबिनयकरौंसबपाहीं ४

सूझ न एकौ अंग उपाऊ *। मन मति रंक मनोरथ राऊ ६
७
क्षमिहहिंसज्जनमोरिढिठाई । सुनिहैं बाल बचन मनलाई ८
जोबालक कहतोतरिबाता । सुनिमनमुदितहोहिंपितुमाता ९
हंसिहैंकूरकुटिलकुबिचारी *। जे पर दूषण भूषण धारी १०
निजकबित्तकेहिलागुननीका सरसहोयअथवाअतिफीका ११
जेपरभणितसुनतहरषाहीं * । तेवर पुरुषबहुतजगनाहीं १२
जगबहुनर सरसरिसमभाई * ।जोनिजबाढ़िबढ़हिंजलपाई १३
सज्जनसकृतसिन्धुसमकोई * । देखिपूरबिधुबाढ़तजोई १४
दो० भाग छोट अभिलाष बड़ि करौं एक बिश्वास ॥
पैहैं सुख सुनि सुजन जन खल करिहैं उपहास १

८ आकर चारि अंडज अंडाते उत्पन्न हैं पुनि उद्भिज भुइं फोरिकै उपजते हैं तृण बृक्ष इत्यादिक पुनि जरायुज जराकही झोरी बांधि कै जन्मते हैं पशु मनुष्यइत्यादिक उष्मज बर्षा ऋतु में मसाडंसादिक ये चारि खानि हैं ताते चौरासीलक्ष योनि है स्थावर तृण बृक्ष इत्यादिक बीस लक्ष अरुजलके जीव नव लक्ष कूर्मसंज्ञा कछुआ मूस सर्प दीमक चींटी इत्यादिक जे भूमि खनिकै रहतेहैं ते ग्यारहलक्ष अरु बिहंग पतंग इत्यादिक नभचर दशलक्ष अरु पशु चौपाया इत्यादिक तीसलक्ष अरु बानर च लक्ष मनुष्य तन चारि खानिमें तो है पर चौरासीते न्यारोहै मनुष्य तन बिं कर्म करिकै चौरासी होतीहैं (धर्मशास्त्रेश्लोकद्वै) स्थावरंविंशतेर्लक्षंजलजंनवलक्षकं कूर्म्मश्चनवलक्षंचदशलक्षंचपक्षिणः १ त्रिंशलक्षंपशूनांचचतुर्लक्षंच बानरः ॥ ततःमनुष्यतां प्राप्यततःकर्माणिसाधयेत् २ ॥ (१) सीताराम मय सब जगत्को जानिकै प्रणाम करत

हो यह मय कही समूह तदात्मककों जैसे सूर्य प्रकाश मय है पावक तेजमयहै शशि शीतमयहै ऐसे अनेक दृष्टांतहैं तैसे श्रीसीताराम मय सब जगत्है जो कहौ कि पांच तत्व तीनगुणमय सब जगत्है तेहीमें श्री सीतारामजी हैं सो यह अर्थ असिद्ध है काहेते यह सब प्रपंच अविद्या मयहै ताको कारण प्रकृतिहै अरु श्री सीताराम कार्य्य कारण दोऊते परेहैं तहां (चौपाई) सीयराममयसबजगजानी ॥ ताको यह अर्थहै सो जानव अन्तर्यामी चैतन्यब्रह्म तेहिमय श्रीरामचंद्र हैं अरु ब्रह्मानन्द जोहै तेहिमय श्री सीताजूहैं ऐसेजानिकै दोनोंहाथजोरिकै प्रणाम करतहौं (सनत्कुमारसंहितायां)रामंसत्यं परंब्रह्मरामात्किंचिन्नविद्यते तस्माद्रामस्यरूपोयंसत्यं सत्यमिदंजगत्१ (ब्रह्मांडपुराणे) (श्री रामचंद्रवाक्यंवशिष्ठंप्रति)यथानेकेषुकुम्भेषुरविरेकोपिदृश्यते तथासर्वेषुभूतेषुचिंत्यनीयोऽस्म्य हंसदा२ तहांश्रीसीतारामएकहीहैं(प्रमाणंश्रुतिः) रामःसीताजानकीरामचंद्रोनित्याखण्डो येचपश्यंतिधीराः ३ जनकस्यराज्ञःसद्मनिसीतोत्पन्नातां सर्वपरा परानन्दमूर्तिंगायतिमुनयो पिदेवाश्चकारणकार्याभ्यामेवपरातथैवकारणकार्यैशक्तीयस्याः विधात्रीश्रीगौरीशांरैवकर्त्री सैवरामानन्दस्वरूपिणी जनकस्ययोगफलमिवभाति ४ इत्यथर्वणश्रुतिःउत्तरार्द्धे ॥ यहां तटस्थलक्षणाहै जगकहिकै जीवको लक्षकीनहै पाछे दोहामें कहाहै जड़चेतनजगजीव जतसम्पूर्णजगत्में जेते जीवहैं सबको मैंश्रीसीताराममय जानौहों ताते मोको आपनोकिङ्कर जानिकैमेरे ऊपर छल छांड़िकै छोहकरौ सबको सीताराममय कौन रीतिजानिकै किङ्कर होतेहैं अरुसबजीवमें छलकाहै जीवतत्वजोहै सोतौ सदाशुद्धहै जीवको अन्तर्यामी ब्रह्म है अरुब्रह्मानन्द परमानन्द जोहै यह आनन्दजीव ब्रह्मकेसंयोगमेंहै काहेते कि ब्रह्म अरु ब्रह्मानन्द अरु जीव ये जो तीनिहू तत्वहैं सो कभी भिन्न नहींहैं सर्वकालमें एकही संग मिलेहैं सच्चिदानन्द रूपहै तहां शुद्धजीव तत्व सत्रूपहै ब्रह्मचिद्रूपहै अरु दुःख सुखपाप पुण्य स्वर्ग नरक हानिलाभ निन्दा स्तुति मानापमान हर्ष शोक वर्णाश्रम संपूर्ण धर्मकर्म इत्यादिक एकहू नहीं संभवै सोई ब्रह्मा नन्द है सो आनन्द आनन्दरूपहै चिन्मय श्री रामचंद्रहैं आनन्दमय श्रीसीताजूहै सत्मयचिदानन्दहै अरु यह जो प्रपंचरूप जगत् है सो सच्चिदानन्द मिले येभी कारणरूप सत्यहै ताते सीताराममय सब जगत्को जानिकै दोऊकर जोरिकै प्रणामकरतहौं अरु जो काहूको प्रमाणदैकै कहतहौं कि स्त्रीवर्ग समस्त सीतामय है अरु पुरुष वर्ग सर्वराममयहै सो यह अर्थ व्यवहारिक है परमार्थिकनहीं है (२) सर्वजीव जो तुम सीताराममयहौ सोसब मिलि मेरे ऊपर आपनो किङ्करजानिकै कृपा करौ छल छोड़िकै छोहकरो जाते श्रीरामचरित में विघ्न न होइ जीवमें छलका है जीवस्वरूप पर स्वरूप भूलिगयो है वर्णाश्रम धर्म कर्म तामें अहं मम मानिलियो है मायाको आपनो मान्योहै ताते अनेक छल जीवको ढूड़गये हैं सो सब छल छोड़े जीव सीताराम मयहै सो मेरे ऊपर शुद्धरूप ह्वैकै कृपा करहु काहेते अन्तर्यामी ब्रह्म श्रीसीता रामचंद्रको रूपहै साक्षीभूत है अरु ब्रह्मानन्द श्रीसीताको रूपहै अरुजीव श्रीसीतारामको अंशरूपहै श्रीसीतारामस्वरूपहै अरु अंशीहै अरु सच्चिदानन्द बाचक पद है अरु श्रीसीताराम बाचयहै ताते सीताराममय कह्यो अथवा मैं तो सबको सीताराम मय देखौंहौं जो मेरे देखिबेमें कहूं सम बिषम ह्वै जाय सो मेरोछल छोड़ि कै छोह

करब जाते श्री सीताराम चरित मैं करतहौं जामें बिघ्न न होइ (३) मैं श्रीरामचरित करतहौं निजकही अपनी बुद्धिको बल ताको भरोसा मोको नहीं है ताते तुम सबन ते बिनय करतहौं। (४) अरु विशेष श्रीरामचंद्रको गुण कराचाहतहौं श्रीरामचंद्रके केते गुणहैं गाहा कहे समूह अथवा गाहा कहे ग्रहण करति है मेरी मति सो मति लघु है सो चरितको अवगाहा चाहति है नाम प्रवेश कीन चाहति है अथवा मेरीमति लघु कही छोटीहै अरु श्रीराम चरित अवगाहकहे अथाहहैं थाह पावने वाली मेरी मति नहीं है चौपाई के दोऊ चरण के अंतमें गाहापाठहै सो पुनि रुक्ति न जानब अर्थ भिन्नभिन्न है (५) अरु जहांतक काव्यके अंगहैं तिनके अनेक उपाय हैं सो मोको एकौनहीं सूझि परै अथवा अंक जो अक्षरमात्र तिनके जो अंगहैह्रस्व दीर्घ प्लुत अनुस्वार बिसर्ग इत्यादिक अक्षरन विषे अनेक अङ्गहैं तेहिको उच्चार काव्यन विषे इनको जहां जस चाहो तेहिकी बासना मेरे एकहू नहींहै काहेते मन अरु मति दोऊ रङ्कनाम कङ्गालहैं मनको चाहिये श्रीरामचरित मननकरै नाम बिचारत रहै अरु मतिको चाहिये जो मन मननकरै ताको धारणाकरै सो यह कृपामें दूनों दरिद्री हैं अरु दूनोंको मनोरथ राजा है मनोरथ नाम चाहना बड़ीहै (६) मति जेहिमतिते श्रीरामचरित ग्रहण करिबेकोहै सोमति तो नीचि है मान बड़ाई यश इत्यादिक को मतिग्रहण करि रहीहै ताते नीचिहै छाछी स्थाने कर्म सोभी नहीं मिलै अरु अन्तष्करणमें अच्छी रुचिहै कि श्रीरामचरित जो अमृतमय है सो मोको बहुत मिलै जैसेकोई कङ्गालहै जगत्में छाछी कही जो छाछनाम मठाको पात्रहै ताकोधोवन ताको छाछी कही सोऊनहींमिलै ऐसोदरिद्रीहै अरु चाहना अमृत की करैहै इतनी दीनता श्रीतुलसी दासजू क्योंकहते जहां यह रीतिको बचनआवै तहां नीचानुसंधान जानिये बिना नीचानुसंधान श्रीरामचंद्र शीघ्र नहीं द्रवहिं अरु कार्पण्य शरणागत हैं यह मुख्य है अथवा जैसे कोई बड़ा आदमी श्वेतबस्त्र ओढ़ेहै कहूं काले रङ्गकी छीट सी करमात्र परिगई ताके छुटाइबेको वह मनुष्य शीघ्र यत्न करिकै छुटाइ डारैहै तैसे जिन संतनकेमन सर्वथा उज्ज्वल ह्वैरहेहैं कहूं काल संस्कार के बश की निवारना आइ गईहै तब श्रीरामचंद्रसे यदि वा श्रीरामदासन ते अथवा सर्वजीवन ते नीचानुसंधान करिकै धोइ डारते हैं काहे ते नीच अनुसंधान जलरूपहै अरु जे आपुको ऊंचेमानि रहेहैं तेमृत्तिकाके धूहकी समानहैं ताते गुसाईं तुलसीदास नीचानुसंधान कीन है आपुतो सर्वथा उज्ज्वलहैं यह सर्ब को शिक्षा भागहै (७)येतीबड़ी ढिठाई मेरी मति को छाछी नहीं मिलै अरु चाहै अमृत यह मेरी ढिठाई आश्चर्य है पर सज्जन क्षमाकरिकै मेरीबालकको ऐसो बचनमानिकै मनलाइकै सुनहिंगे (८)जैसे बालक तोतरो बोलैहै ताको मातापिता आनन्द मानतेसुनतेहैं सो मेरीबाणी बिपर्यय सुनिकै मेरे मनोरथ सन्त पूर्ण करहिंगे जैसे कोई बडकङ्गालको बालक कभी किंचित्लड्डूखायोहै सोईमनमें बासना बनी है सोई तुतुरायकै एडडूरकरिकै मांगतहै तहां कोईराजा बालक को तोतरो बचन सुनिकै कोई दशबीश लड्डू मंगायदियोहै तैसे साधुजन जो मोसे न कहतबनैगो तबहूं रीझि कै मेरो मनोरथ पूर्णकरहिंगे अरु मेरी ढिठाई सज्जनक्षमा करहिंगे (९)अरु कूरजेहैं कुटिल जेहैं कुबिचारीजे हैं ते हंसहिंगे जे पराया दूषण जो है ताहीको भूषण धारणकियेहैं

कूरकही कठोर हृदय कुटिलकही टेढ़ेमन बचन कर्म कुविचारी कहे मलीन बिचार अथवा श्रीरामचंद्रको छोड़िके अपरदेव को सिद्धान्त करते हैं अथवा रात्रिदिन बिषयको बिचार करतेहैं ते सब कुबिचारी हंसिहैंगे (१०) निजकही अपनी कविताई सबको नीकी लगैहै सरसकही मीठीहोइ अथवा फीकीहोइ अपनी बाणी आपुआपुको सबको नीकी लगैहै (११) पुनि जो पराई भणित कही कबिताई सुन्दरि है अथवा नाहीं सुन्दरि है अरु रामयश संयुक्तहै ताको सुनिकै जो हर्षको पावै बरनाम श्रेष्ठ ऐसे पुरुष जग में बहुत नहींहैं (१२) अरु सर जो तालाब सरि जो नदी ये दोनों पराया कहे बर्षाको जल पाइकै बढ़त हैं ऐसे मनुष्य तो जगत्में बहुतहैं ग्रंथ चुम्बक जे यहां वहां की सीखिकै पण्डित कहावतेहैं हठकरिकै अपनी बाणी को भूषण करतेहैं पर बाणीको दूषणकरत फिरतेहैं ऐसे बहुतहैं (१३) अरु समुद्रकी समान सकृत सज्जनहैं सोकोटिनमें एकहैं चन्द्रमाको समुद्र बाढ़त है से जिनके अनुभव विद्या प्राप्ति भई है तेई समुद्रवत् हैं श्रीरामचंद्र को स्वरूप पूर्ण चंद्रवत् देखिकै हृदय के नेत्रनते ज्ञानरूप विद्या उमगतहैं बढ़त हैं (१४) दोहार्थ॥ जे कबि श्री रामचरित के बक्ता हैं तामें मेरो भागछोटो है अरु अभिलाष ऐसी बड़ी है कि महूं बराबर भागपाऊं यह आश्चर्य है पर एक विश्वास है कि श्रीराम चरितके बक्ता जे कबिहैं जैसे उनकी बाणी को सज्जन सुनते हैं तैसे मेरीबाणीको सुनिकै सुख पावहिंगे काहेते यामें राम यशहै अरु खल परिहार करहिंगे १॥

खलपरिहासहोइहितमोरा। काककहहिंकलकंठकठोरा १
हंसहिबकदादुरचातकही।हँसहिंमलिनखलबिमलबतकही २
कबितरसिकनरामपदनेहू *। तिनकहँसुखदहासरसयेहू ३
भाषाभणितमोरिमतिथोरी।* हँसबेयोगहँसेनहिंखोरी ४
प्रभुपदप्रीतिनसामुझिनीकी। तिनहिंकथासुनिलागहिफीकी ५
हरिहरपदरतिमतिनकुतर्की *। तिनकहँमधुरकथारघुबरकी ६
रामभक्तिभूषितजियजानी *। सुनिहैंसुजनसराहिसुबानी ७
कबिनहोउँनहिंचतुरप्रबीनू *। सकलकलासबबिद्याहीनू ८
आखरअर्थअलंकृतनाना *। छन्दप्रबन्धअनेकबिधाना ९
भावभेदरसभेदअपारा *। कवितदोषगुणबिबिधप्रकारा १०
कबितबिवेकएकनहिंमोरे। सत्यकहौंलिखिकागदकोरे ११

दो० भणितमोरिसब गुणरहित बिश्वबिदितगुण एक॥
सोबिचारि सुनिहैं सुमति जिनकेबिमलबिवेक १

९ पर खलन को परिहास मेरो हित होइगो काक जे हैं ते कलनाम कोकिला की बाणी को हंसते हैं कि कोकिला नहीं बोलै जानैहै मैं भलो बोलत हौं तब काकको ति-

रस्कारकरिकै कोकिला की वाणी सब सराहते हैं (१) अरु बक जे हैं ते हंसको हंसते हैं कि हंसमें अच्छी चाल नहीं है अच्छो विवेक नहीं है मेरी भली चालुहै मैं विवेकी बड़ो हौं अरु दादुर नाम मेढुक चातकको हंसतहै कि चातकमें नीकी बोली नहीं है अरु मेघ में बड़ी प्रीति नहीं है मेरी नीकी बोली है अरु मेरे प्रीति बड़ी है तैसे मलिन मन जे हैं खल ते बिमल वतकही कही श्रीराम सम्बन्ध वार्ता श्रीरामयश मिश्रित काव्य ताको खल हंसतई हैं यह खलनको स्वभावही परि गयोहै (२)जोभगवत् यशकी वार्ता को हंसतेहैं सो हंसब सुख दाता होइगो किनको जे कोई न तो कबित्तके रस को जानहिं न तो श्री राम पदमें नेह है तिनको हास्यरस सुख दाताहै अथवा जे कवित के रसिकहैं अरु श्रीरामचंद्रके पदमें नेह नहींहै तिनको हास्यरस सुखदाताहै (३) श्री गुसाईंजी कहतेहैं जो कोई मोको कहै कि तुम्हारी बनाई कथा बहुत बनी है अदोषहै जो दोषै सो खलहै तहां मैं अपनी काव्य को नहीं कहैहौं श्रीराम यश के सत् कबिजेहैं तिनकी कहतहौं उनकी अदोप वाणीहै अरु मेरी भणित कही जो भाषाहै सो एक तो भाषा करतहौं दूसरे मेरी मति थोरीहै ताते हंसबे योग्यहै हंसिते दूषण नहींहै (४) जिनको प्रभुके चरणबिषे प्रीतिनहींहै अरु नीकी समुझ नहींहै तिनप्राणिन को यहकथा सुनिकै फीकीलगैगी (५) अरुजिनके हरि जो भगवान् हर जो महादेवहैं उभय पदमें कुतर्क काहेते भगवत् भागवत् एकही जानते हैं तिनको श्री रघुनाथजी की कथा बहुत मधुर कही मीठी मधुर सुन्दरि कोमल सुगन्ध मय ऐसी मधुर उनको लागतीहै (श्रीभागवते) वैष्णवानांयथाशंभुः ॥ अथवा हरि हर को एकै जानतेहैं (प्रमाण) केशवो वा शिवो वा शिवोवाकेशवोवा ॥ अथवा हरिचरित जो है ताके करहे ताते हरिहरपद अतर्यहै जाको हरिहर पदमें प्रीतिहै ताको यह कथा मधुरहै (६) काहेते यहि कथामेंश्री रामचंद्रजूकी भक्ति भूषित है अरु हर राम भक्तराज है यह जानिकै अरु सन्त जननकी जो सुष्टुबाणीहै तेहि बाणीते सराहिकै सुनहिंगे अथवा मेरीवाणी को सराहिकै सुनहिंगे काहे ते श्री रामभक्ति भूषित जानिकै (७) काहेते न तो मैं कबि हौं न चतुर हौं न प्रवीण हौं सकल कही संपूर्ण जेकाव्य की कलाहैं अरु चौदही बिद्या के चौंसठि अंग इन सबन ते मैं हीन हौं मेरेअन्तः करणमें इन सबनकी बासना नहींहै मेरे श्री रामचंद्र के गुण गाइबे की बासनाहै अपर जो अनइच्छित होइ अथवा न होइ (कलाःशैवतंत्रोक्ताः) गीतंगान करना १ बाद्यंबाजनबजाना २ नृत्यंनाचना ३ नाट्यं नटकोनाचना ४ आलेख्यंलिखब ५ बिशेषी छेद्यं हीराको बेधना ६तंडुलकुसुमबलिबिकाराः चाउर कुसुमसुमास इनकेरंग निकारना ७ पुष्पास्तरणं फूलनको बिछौना ८ दशनबसनांगरागाः दांत बस्त्र अंगको राग मिस्सी इत्यादिक बस्त्र लालरङ्ग इत्यादिक ९ मणिभूमिकाकर्म मणिन करिकै भूमिरचना १० शयनरचना सेजको रचना ११ उदकावाद्यं जलतरङ्गके बाजा १२ उदकाबाद्याः जल ताड़न करना १३ चित्रयोगाः चितेरेको काम १४ माल्यग्रंथनबिकल्पाः मालाको पोहना १५ शेखरा पीडयोजनम् मस्तकके भूषणको विधान किरीट चंद्रिकादिक१६ नेपथ्य योगाः कटि बस्त्रमें धागाडारना १७ कर्णपत्रभंगाः कान में भूषण पहिरावना १८ गन्धयुक्तिः

फूलनकेसुगन्ध निकारना १९ भूषणयोजनम् भूषणको गूथना २० सेंद्रजाला. आंब इत्यादिक लगाइदेना २१ कौचुमारयोगाः बहुरूपक्रम नट इत्यादिक अनेक रूपधरे २२ हस्त लाघवं पटावाना इत्यादिमें शीघ्रता २३ भोज्यबिकाराः भोजन अनेक प्रकार बनाइवेकी सुघराई २४ पानकरसरागा सब योजन पीवे के रस अरु मातबे के रस इनको बनावना २५ शूचीवाणकर्म सुईको सियत्र अरु बाणको चलावना २६ सूत्रक्रीड़ा धागामें खिलौना को खेलना चकई इत्यादिक २७ वीणा डमरूवाद्यानि वीणा डमरूको बजाना २८ प्रहेलिका कहानी इत्यादिक वार्तामें प्रवीणता २९ प्रतिमाला जैसे कोई जन्तु बोली बोलै तैसी बोलना ३० दुर्वचकयोगा दुष्ट छल करना अथवा दुष्ट छलिन के सङ्ग मिलि चलनों ३१ पुस्तकवाचनं शुद्ध शीघ्र पुस्तक बांचना ३२ नाटिका ख्यायिका दर्शनं नटीको नाचब ताको हाव भाव दिखाना ३३ काव्य समस्या पूर्ण जो कोई कवित्त श्लोक की समस्या देइ ताको यथार्थ पूर्ण करि देना ३४ पट्टिका वेत्रवान् बिकल्पानेवर इत्यादिक अरु बेंत अरु रज्जु इनकी बिबिध रचना करना ३५ तर्क कर्माणि तर्क करि युक्ति करि कर्म करना ३६ तक्षणं बढ़ईको कर्म ३७ बास्तु विद्या थवईको कर्म ३८ रौप्यरत्न परीक्षा रूपा सोनादिक परखना ३९ धातुबाद सुनारको कर्म ४० मणि रागाकार ज्ञानम् मणिन को रङ्ग परखने को ज्ञान ४१ बृक्षायुर्वेदयोगः वृक्ष को आकार व छावने को प्रकार जानना ४२ मेष कुक्कुट लवायुद्ध बिधिः मेढ़ा मुर्गा बटेर का युद्ध बिधि जानना ४३ शुकशारिका प्रलापकं सुवाशारिका इत्यादिक पढ़ावना ४४ उत्सादनं बैरी को कोई यत्नते उच्चाटन कहो निकासि देना ४५ केशमार्जन कौशलं बारन को कंघी से धोवने में सुगन्धादि ते सुधारना ४६ अक्षर मुष्टिका कथनं जो मूठीमें कोई बस्तु लेइ ताको बताइ देना ४७ म्लेच्छितविकल्पाः म्लेच्छ भाषाको ज्ञान म्लेच्छनकेबिबिधपदार्थन को बनावना ४८ देश भाषा ज्ञान सर्व देशकी भाषा जानना ४९ पुष्पशकटिका निमित्त ज्ञानं फूलनके रथ इत्यादिक बनावना ५० यंत्रमात्रिका कठपुतरी नचावना ५१ धारण मात्रिका संवाचयम् कोई धारणा अरु बचनमें प्रबीणता ५२ मानसी काव्य क्रिया मानसी काव्य करना कहना नहीं पराये मनकी जानना ५३ अभिधानकोशा सबको नाम जानना ५४ छन्दोज्ञान पिङ्गल रीतिसे छन्दन की विधि जानना ५५ क्रिया बिकल्पाः अनेक उपाइ करिकै कार्य सिद्धि करना ५६ छलित योगा. अनेक छल जानै ५७ बस्त्र गोपनानि बस्त्रकी रक्षा करना ५८ द्यूत बिशेषः पांसा इत्यादिक खेलना ५९ आकर्ष क्रीड़ा खेलहूमें अपनी ओर घसीटनेकी क्रीड़ा ६० बालक्रीड़नकानि बालकन को खेल ६१ बैनायिकीनां विनय करिकै राजादिकन को प्रसन्न करै ६२ बैजयिकीनां विजय स्पष्ट करना अथवा बिद्यै देनेवाले जे देवता तिनके बश करिबेकी जो विद्या ६३ बैयासिकीनांच विद्याज्ञानम् व्यासादिकनके जे पुराण तेहि सबनकी विद्या में प्रवीणता ६४ इति चतुःषष्टिकलाः ॥ पुनि चौदह विद्या ब्रह्मज्ञान रसायन सप्तस्वर जानना वेदपढ़ना ज्योतिष शास्त्र व्याकरण धनुर्विद्या जलतरं बैद्यक कृषी कोक घोड़ादिक बाहन नट नृत्य चातुरी सम्बोधनं यथार्थ बोध सर्व बस्तुमें येती चौदह विद्या चौंसठि कला इन सबनकी वासना मेरे नहीं है (श्लोक) ब्रह्मज्ञानरसायनंस्वरधरंवेदंतथाज्ज्योतिषंव्या

करणं चधनुर्धरं जलतरं वैद्यं वकृष्यापरं ॥ कोकेबाहनबाजिनानंटनृतांसम्बोधनंचातुरी विद्या नाम चतुर्दशप्रतिदिनंकुर्वंतुनोमङ्गलम् (८) कबित्त विषे अक्षर मधुर परै अक्षर के आगे जो अक्षरपरै सो अक्षरके अर्थकी मित्रता लिहे होइ ताको अक्षर कही अर्थ कि अक्षर को फल सोई अर्थहै देशकाल समाज इनको धर्मलिहे अर्थधरै अथवा प्रयोजनको अर्थ कही अथवा जेहि पदार्थ को बर्णन करै सो अर्थहै पुनि अलंकार कही उपमेय उपमान धर्मबाचक ये चारि अलंकारके चरणहैं उपमेय कही श्री रामचन्द्र मुख उपमान कही जेहिकै उपमा देइ मुख चन्द्र तद्वत्है अथवा कमल इव है चन्द्रमा अरु कमल उपमान कही पुनि धर्म कहतेहैं गुण स्वभाव क्रिया तीनि मिलिकै धर्म है शशिमें श्वेतता सो गुण प्रकाश सो स्वभाव शीत सो क्रिया श्री रामचन्द्र के मुखकै निर्मलता सो गुण प्रकाश सो स्वभाव अति मधुर बोल सो क्रिया ताको धर्म कही जिमि तिमि यथा तथा इत्यादिक सो बाचकमुख जिमि चन्द्रमुख जनुकमल ऐसो जहांपरै ताको पूर्णोपमालंकार कही अरु यह चारिमें जै घटैं तितने लुप्तालंकार कही इत्यादिका लंकारके बहुत भेद हैं छन्द करिबेको प्रथमहिं आठ गणहैं दुइ प्रस्तारहैं एक मात्रा प्रस्तार है एक बर्ण प्रस्तारहै दोउनमें चारि खानिहैं एक बृत पुनि जाति पुनि दण्डक पुनि मुक्तक तामें प्रथम एक अक्षर गुरु कही दीर्घ ताको एक चरण ऐसे एक एक अक्षरके चारि चरण ताको श्रीछन्द कही इत्यादिक छन्द की जाति बानवे लाख सताइस हजार चारिसै बासठि छन्दहैं केवल मात्रा प्रस्तारमें इतने ते कछु अधिक बर्ण प्रस्तार में हैं यह मैं पिङ्गल ग्रंथमें प्रमाण पायोहै (दोहा) दुइ कलते बत्तीस लगि छन्द बानवे लाख । सहस सताइस चारिसै बासठि पिङ्गल भाख ॥ ताको कौन जानि सकै है येते छन्दन के जाति नामहैं पुनि प्रबंध कही बत्तीस मात्रा बत्तिस अक्षर के आगे जो मात्रा अक्षर बढ़त जाइ ताको दण्डक कही पुनि वाहीको प्रबंध कही पुनि बहुत छन्दको एक जगह करना पुनि बहुत अर्थको थोरे अक्षरनमें करै ताको प्रबंध कही अरु प्रबंध गान को कही ताछन्द प्रबंधके अनेक बिधान कही बिधिहैं को जानै है (९) काव्यन बिषे भाव हाव है भाव सात्विक तामें आठ भेदहैं पुनि हावके दश भेद हैं ते भावके अंग संगी हैं सो सब बिषयमें मिसु मात्र हैं श्री रामचंद्रकी भक्तिमें अर्थ सिद्धि है सो कहते हैं लाजते हर्षते जो अंग शिथिल ह्वैजाय ताको स्तम्भभाव कही १ पुनि हर्ष लाज भय कोप श्रम इत्यादि ते शरीर में पशेव चलै ताको स्वेद भाव कही २ पुनि हर्ष भयादिकन ते जो रोमांच ठाढ़ होइ ताको रोमांच भावकही ३ पुनि क्रोधते हर्षते मदते भीतिते भयतें बचन आन कहिबे को आनै कहि आवै ताको स्वर्भंग भाव कही ४ क्रोध भय लाज हर्ष ते जो देह थहराति नाम कांपै ताको कंप भाव कही ५ पुनि मोह कोह भय आदिकन ते शरीरमें और बर्ण होइजाइ ताको बिबर्ण भावकही ६ पुनि रूपाशक्त हर्ष दुःख भय आदिकते जो नेत्रनमें आंशु आवै ताको आशुभाव कही ७ पुनि हर्ष ते दुःख ते भयादिकनते इंद्रिनको निरोधन भयो नाम रोकिगयो ताको प्रलाप भावकही ८ यह आठभाव हैं पुनि दशहाव कही नायकको वेष नायका करै प्रिय भूषण प्रिय बचन ते जो लीलाकरै ताको लीलाहाव कही १ पुनि चालमें अरु नेत्रनते अरु बचनादिकनते

जो कछुक विशेष रस होइ ताको बिलास हाव कहो २ पुनि थोरेभूषण थोरे वस्त्रते जहां शोभा अधिकपाइये ताको बिच्छित्तिहाव कहो३पुनि उलटे भूषण उलटेवस्त्रपगको अलंकार शीशमें शीशको कटि पग में ताको बिभ्रम हाव कहो ४ पुनि हर्ष गर्व अभिलाष श्रम हास्यरोषभीति येते सातो जहां एकहीबार होहिं ताको किलकिंचित् हाव कहो ५ पुनि जो कोई बातन ते निरादर करैहै अरु मिलाप की चाहबनीहै ताको मोटाइत हाव कहो ६ पुनि ईहा नाम चेष्टा जहां दुःख संयुक्त सुखकी चेष्टा होइ परम ललित ताको कुट्टमित हाव कहो ७ पुनि जो अपने रूप गुण अभिमान ते अपने स्वामी को निरादर करै अथवा अभिमान ते कोई बड़ा होइ ताको निरादर करै ताको बिब्बोक हाव कहो ८ पुनि सकल बानिकन ते सब बनाव करिकै सब अंग बनि रहीहै ताको ललितहाव कहो ९ पुनि जो अच्छी अभिलाषा स्वामीकी सेवामें नहीं पूर्ण होइ ताको बिहितहाव कहो अथवा श्रीराम तत्वकी जिज्ञासा की अभिलाषा सदा बनीहै कभी पूर्ण नहीं है सो विहित हावकहो १० येते दशहाव कहो (श्लोक) भावाना मनुभावानांविभावानांचसंश्रयात् जायतेयः पदार्थस्तुतमाहुर्मुनयोरसं ॥ पुनि नव रसहैं शांत १ करुणा २ वीर ३ रौद्र ४ भयानक ५ विभत्स ६ हास्य ७ अद्भुत ८ शृंगार ९ येते नवरस पुनि तीनि मिलिकै बारह रसहैं तीनि कौन दास्य १ सख्य २ वात्सल्य ३ ये तीनहू रसनको रूप आगे कहैंगे ताते कवित्त विषे दोष गुण दूषण भूषण बिबिध प्रकार के हैं पुनि छंद प्रबंध भाव भेद रस अलंकार इत्यादिक कवित्त विषे छूटि जाय सोई अनेक दोष दूषण है अरु येते समस्त कवित्त में आवहिं सोई गुण भूषणहै (१०) ताते कवित्त के बिबेक जे अनेक प्रकार के हैं सो मेरे मन में एकहू बासना नहीं है कि मेरी काव्यमें काव्यन के लक्षण समस्त परैं यह बासना नहींहै काव्य लक्षण परैं किंतु न परैं यह सफेदे पर स्याही चढ़ाइकै कहत [illegible] अथवा कवित्त बिबेक एकनहीं है अनेक है अरु काव्य विषे [illegible] गुण दोष इत्यादिक अनेकहैं पिंगल ग्रंथ बिषे मात्रा प्रस्तार के छन्द कबित्त जेहैं तिनके प्रथम चरणमें जै मात्रा परैं सोचारिहू चरण में परैं अरु वर्ण प्रस्तार के कबित्तन में जो प्रथम चरण में जै अक्षर परैं सो चारिहू चरणमें परैं अरु जीभ रोचक पद होइ अरु अर्थ भाव भेद रस युक्ति उक्ति गण लघु दीर्घ छोट बड़ देश काल समाज सबको धर्म लिहे वर्णन करैं इत्यादिक अनेक बिबेकहैं पर मेरे इन सबन की एकहू वासना नहींहै सत्य कहौं लिखि सत्य पदार्थ सेर भरको सेरभरि मन भरेको मनभरि यथार्थ अर्थ कोरे कागदपर लिखिकै कहत हौं किंतु सत्य कहौं जे जैसी बोली त्रेता बिषे देश भाषा बोलते रहेहैं तैसो यथार्थ सत्य कहतहौं अरु महान् कवीश्वर जे भयेहैं तिनने काव्यकरि बिबेक बिचारिकै दे बाणी आपने अनुकूल कहेहैं पर बिशेष तो सत्यराम यशहै सो कोरे कागद पर लिखत हौं सब काव्यनकर आत्मा प्रकाश कर्ता अरुमेरे कबित्तके बिबेक एकहू नहींहै (११) दोहार्थ ॥ मोरि भणित सबगुण रहितहै परविश्वमें एक श्रीरामगुण बिदित है सोपहिलेमेंहै तेहि गुणन को सुनिकै जिनके बिमल बिबेकहै ते बिचारि लेहिंगे (९) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकांडेबिमलनीचानुसन्धानबर्णनंनामतृतीयस्तरङ्गस्समाप्तः३॥

दो० रामचरण निज नीचता अनुसंधान बखानि ॥
राम कृपा अनहेतु पर चौथ तरङ्गम जानि ४

१० यहिमहंरघुपतिनामउदारा । अतिपावनपुराणश्रुतिसारा १
मंगलभवनअमंगलहारी * * । उमासहितजेहिजपतपुरारी २
भणितविचित्रसुकविकृतजेऊ । रामनामबिनसोहनतेऊ * ३
बिधुबदनीसबभांतिसवांरी * । सोहनबसनबिनावरनारी * ४
सबगुणरहितकुकविकृतबानी । रामनामयशअंकितजानी ५
सादरकहहिंसुनहिंबुधताही । मधुकरसरससन्तगुणग्राही ६
यदपिकवितरसएकौनाहीं * । रामप्रतापप्रकटयहिं ७
स्वइभरोसमोरेमनआवा * । को न सुसंगबड़ाईपावा * ८
धूमौतजैसहजकरुवाई * * । अगरप्रसंगसुगंधबसाई * * ९
भणितभदेशवस्तुभलिबरणी । रामकथाजगमंगलकरणी १०

छं० मंगलकरणिकलिमलहरणि तुलसीकथारघुनाथकी ।
गतिकूरकबितासरितकीज्यों सरितपावनपाथकी * ॥
प्रभुसुयशसंगति भणितभलि होइहिसुजनमनभावनी ।
भवअंगभूतिमशानकी सुमिरत सुहावनिपावनी * ॥

दो० प्रियलागिहिअतिसबहिमम भणितरामयशसंग ॥
दारुबिचारु कि करैकोउ बन्दियमलयप्रसंग १
श्यामसुरभिपयबिशदअति गुणदकरहिंसबपान ॥
गिराग्रामसियरामयश गावहिंसुनहिंसुजान २

१० मेरी भणित यद्यपि सब गुण रहित है तदपि पर यहीमें श्रीरामनाम अतिशय उदारहै अति पावनहै श्रुति स्मृति पुराण समस्त ग्रंथनको सार भूतहै (१) पुनि श्रीराम नाम कैसोहै समस्त शुभ मङ्गलको भवनहै समस्त अमङ्गलको नाश कर्ताहै कैसे जानिये जाको पुरारि सहित उमा अहर्निश जपतेहैं सो नाम यहि में प्रसिद्ध है (२) अरु जो कोई कबि बिचित्र काव्य करैहै सब काव्यन के अंग पूर्ण धरे हैं अरु श्री राम नाम की बिशेषता नहीं परै तौ वह काव्य अशोभित है (३) कैसे जैसे कोई स्त्री चंद्रमुखी हेमांगी नख शिख लौं सुन्दरीहै अरु सब भूषण कनक मणिन के पहिरे है अरु एक बस्त्र नहीं पहिरेहै तौ महा अशोभित है तैसेही राम नाम बिनु काव्य है (४) देखिये तो जो कोई कुकबिहै अरु सबै गुण रहित है जिनकी वाणी छन्द प्रबंध

भाव भेद रस अलंकार इत्यादिक गहतहैं अरु कवन राम नाम रामयश आंका है (५) तेहि कवित्त को बुधजन सादर कहते हैं सुनते हैं अरु संतजन गुण को ग्रहण करतेहैं जैसे भ्रमर केवल सुगंध को ग्रहण करतहै फूल चाहै उत्तमहोइ वा निकृष्ट होइ (६) यद्यपि मेरी बाणी समस्त कवित्तके गुणन करिकै रहित है पर श्रीराम प्रताप यहिमें प्रकटहै (७) सोई मेरे मनमें दृढ़ भरोस आयोहै काहे ते सुष्ठु संगति ते किन ने नाहीं बड़ाई पायोहै सबही पायोहै (८) देखिये तो धूम जोहै सो सहजमें कड़वाई अगर चंदन शक्कर घृतादिकन के प्रसंगते त्यागिदेत है तैसे मेरी बाणी श्रीराम यशके प्रसंगते शोभित होइगी (९) मेरी बाणी तो भदेश कहे अच्छी नहींहै पर तत्व भलो बरण्योहै श्रीराम कथा संपूर्ण जगतकी मंगल करन हारीहै (१०) छन्दार्थ॥ श्रीरामचंद्र की कथा मंगलको करतिहै अमंगलको हरतिहै गुसाईं तुलसीदास कहते हैं कबित्तनकी गति कूर कहीं टेढ़ीहै जैसे नदी काहेते कि छन्दन विषे खण्डान्वय जो है अरु प्रसंग की अन्वय उलटि पलटि करिकै अर्थ सिद्ध है तहै सोई काव्य की टेढ़ाई है पर सलिल जोहै सो पाथ कहे जलके संयोगते पावनहै सब कोई जलको ग्रहण करते हैं नदी की क्रूरता ते कौन प्रयोजनहै पर जलके संयोग ते नदी शोभितहै पुनि जैसे भव जो महादेव हैं तिनके अङ्गमें चिताकी विभूति लगीहै सो अति अपावन है तेहि संयुक्त शिव को ध्यान करिबेमें आवत है तब ध्यानी पुरुषको अन्तःकरण पवित्र होत है तैसे श्रीरामचंद्रके यशके संगते मेरी वाणी पवित्र है संतनके मन भावनी होइगी (१) दोहार्थ॥ मेरी बाणी श्रीरामचंद्रके यशके संगते सबको प्रिय लागैगी जैसे दारु जो है काष्ठ ताको बिचार कोई नहीं करै काहे ते मलय जोहै चन्दन तेहिके प्रसंगते सब कोई बन्दते हैं तैसे मेरी भणित जानिये (१) पुनि जैसे कोई श्याम गऊ है ताको दूध श्वेत है पर तात्पर्य दूधही ते है गुणदायक है ताते सब कोई पीवत हैं तैसे मेरी गिरा जो है सो श्रीसीताराम जीके यशको ग्राम कहीं समूह जोहै तेहिके संग मेरी बाणी सुजान पुरुष जेहैं ते गावहिंगे सुनहिंगे काहे ते मेरी बाणी श्याम गऊहै श्रीराम यश दूध है सो उत्तम गुणदायक है (२)॥

११ मणिमाणिकमुक्ताछबिजैसी।अहिगिरिगजशिरसोहनतैसी १
नृपकिरीट तरुणीतनपाई। लहहिसकलशोभाअधिकाई २
तैसहिंसुकबिकबित्तबुधकहहीं।उपजहिंअनतअनतछबिलहहीं ३
भक्तिहेतुबिधिभवनबिहाई। सुमिरतशारदआवतिधाई ० ४
रामचरितसरबिनुअन्हवाये। सोश्रमजाइनकोटिउपाये ० ५
कीन्हेप्राकृतजनगुणगाना। शिरधुनिगिरालागिपछिताना ६
कबिकोबिदअसहृदयबिचारी।गावहिंहरियशकलिमलहारी ७
हृदयसिंधुमतिसीपसमाना। स्वातीशारदकहहिंसुजाना ८

जोबरखैबरबारिबिचारू ० । होहिंकबितमुक्तामनिचारू ० युक्ति बेधि पुनिपोहिये रामचरित बरताग ॥ सज्जनबिमलउर शोभाअति

११ जो किसी की काव्य नीकी बनीहै तो उसके यहां नहीं शोभित है अपर स्थान में शोभित होतुहै कैसे जैसे अहि गिरि गज में मणि माणिक मुक्ता उपजतुहैं पर तिनके मस्तक पर नहीं शोभित होतहै अपर स्थानमें शोभित होतहै पर मणि संज्ञा तो सबकी है तथापि क्रमालंकारते भिन्न होतहै सर्पके उपजत है सो मणि पर्वत में उपजै सो माणिक हाथीके उपजै सो मुक्ता पूर्वको अक्षर पूर्वमें मध्यको मध्य में परको परमें लागै सो क्रमालंकार कही (१) जे मणि माणिक मुक्ताहैं अहि गिरि गजके उपजतहैं पर राजनके किरीटमें अरु रानिनके तनमें शोभा पावत हैं (२) तैसे सुकबिन के कबित्त जे हैं ते बुध कही पण्डित जन कहतेहैं कि बिबेकिन की समाज में शोभा देतेहैं (३) पर ऐसे सुन्दर कवित्त कब बनैं जब शारदा प्रसन्न होइ शारदा कब प्रसन्न होइ जब श्रीरामयश कवि गावै क्यों जानिये जब कोई कवि काव्य करिबेकी इच्छा करतेहैं तब शारदाको प्रथम सुमिरण करतेहैं तब शारदा श्रीरामभक्ति हेतु अथवा अपनी भक्ति मानिकै ब्रह्माको लोक तजिकै दौरिकै आवतिहै (४) पर श्रीराम चरित सागर स्नान किहे बिना ब्रह्मलोकसे आगमन को जो श्रम भयोहै तो कोटिहू उपाय न मिट्यो (५) कब जब उहै कवि जौने शारदा को सुमिरण कियोहै पुनि श्रीराम यश छोड़िकै कोई प्राकृत मनुष्य राजा इत्यादिक अथवा प्राकृत देवता कोई प्राकृत कही प्रावृति जो माया ताके सदा बश होय ताको प्राकृत कही ताको गुणानुवाद गान कियो तब शारदा शिर धुनिकै अरु यह कहिकै पछिताइ लागी कि मैं केहि अपराधीके बुलाये ते आईहूं तब वह काव्य अशोभित भई काहे ते कि शारदा ते बड़ो एक श्रीरामचंद्रहैं और सब शारदा ते छोटेहैं तातें यह सर्व देशकी रीति है जो छोटेको बड़े से सम्बन्ध होइ तो वह बहुत प्रसन्न होय अरु जो बाते नीचहोय ताको सम्बन्ध होय तो वह बहुत खेद पावै है (६) कबि जो है कोबिद जो है पण्डित तेई हैं बिचारते हैं कि श्रीराम यश गये ते शारदा प्रसन्न होती है अरु हमारी रसना पवित्र होइगी काहेते हरि यश कलिमल हारीहै ताते हरि यशै गावते हैं (७) काहेते सुजान यह कहतेहैं कि कबिताको हृदय समुद्रहै अरु मतिसीपस्थाने कहते हैं शारदा स्वाती नक्षत्रहै (८) अरु सुन्दर बिचार वरबारिहै जब स्वाती बर्षै तब सीप में सुन्दर मुक्ता होते हैं तैसे जब शारदा बिचार बर बारि बर्षै तब कविता की सुमतिमें सुन्दर मुक्तारूप कबित होतेहैं (९) दोहार्थ ॥ मुक्ता तो सरागते बेधिकै धागा में पोहिकै कोई राजा पहिरतेहैं अति शोभा पावते हैं तैसे कबित्त जो मुक्ता रूप हैं ताको युक्ति से बेधिकै श्रीराम चरित बर नाम समेटिकै सोई धागा बनाइकै तामें मुक्ता रूप जो कबित्त सो कबि पोहि देहि तहां सन्त जन जिनके हृदय बिमल ह्वइ रहेहैं ते सज्जन पहिरहिं शोभा रूप अनुराग को प्राप्त होतेहैं युक्ति काकोकही जो ऐसो करै कहै न तो सत्यहोइ

न असत्यहोय पर सत्य विशेष भासै है अरु जामें कहै सो प्रसन्न होइ ताको युक्ति कही (लंकाकांडे-(दोहा) कह मारुत सुत सुनहु प्रभु शशि तुम्हार प्रियदास ॥ तव मूरति बिधु उरबसी सोइ श्यामता भास (१

कागाला । * करतबबायसबेषमराला १
चलतकुपंथवेदमगछांड़े * । कपटकलेवरकलिमलभांड़े २
* । किंकरकं हकामके
। धृगधरमध्वजधंधकधोरी * ४
जोअपनेअवगुणसबकहऊं । बाढ़ैकथापारनहिंलहऊं * ५
* । थोरेमहँजानिहैंसयाने *
निजबिरि बिरिह लाआरा । कोउनकथासुनिदेवहिखोरी ७
* । स्वहिंतेअधिकतेजड़मतिरंका ८
कबिनहोउँनहिंचतुरकहाऊं। ९
रघुपतिकेचरितअपारा । १०
जेहिमारुतगिरिमेरुउड़ाहीं । कह ११
तकदराई १२

० शारद शेष महेश विधि आगम निगम पुरान ॥
नेति नेति कहि जासुगुण करहिं निरन्तर गान १

१२ जो कोई कहै कि तुम्हारी काव्य मुक्तारूप बनी है तहां मैं तौ सत् कबिन की काव्यको कह्योहै अरु मैं तौ ऐसोहौं एक तौ जे यह कलिकालमें जन्म लीन्ह है जिन प्राणिन पुनि बेष तौ हंसको ऐसो किहेहैं अरु कर्तव्य तौ बायस कही काग को ऐसो है (१) पुनि वेदमार्ग छोड़िकै मन बच कर्मसे कुमार्ग चलते हैं कपटहि कलेवर नाम शरीर है बहुत का कहौं कलिमलके भांड़कही बर्तनहैं (२) पुनि कैसेहैं यहां अवरे-वते अर्थ है भक्त कहाय रामके अरु भक्तिते बंचकहैं बंचक कही छलीहैं कैसे जानिये श्रीराम भक्त कहावते हैं अरु किंकर ह्वै रहेहैं कंचनके अरु कोह काम के पुनि राम भक्त काहेको कहा याते कहा जो गुरुन करिकै पायो है परमेश्वर को नाम आयुध कंठी तिलक भगवत् संबेष नाम ऐसो पंच संस्कार युक्त परमेश्वर के कोई स्वरूप को भक्तहोइ तो वह प्राणीको शरीर महातीर्थ रूप भयोहै जो एकौ अवगुणकरै तो लाख होतहैं अरु उत्तम गुण करै तो एकके लाख होते हैं अरु जो बिना बैष्णव भये पाप पुण्य करै तो एकके शत होतहैं काहे ते सुक्षेत्र पाइकै बीज बढ़ैहै श्रीअयोध्या चित्र-कूट मथुरा वृन्दावन पुष्कर काशी प्रयाग इत्यादिकन में जैसो पाप पुण्य करै है तैसो बढ़ैहै ताते रामदासही को कहाहै काहे ते रामभक्त सुक्षेत्रहै अरु जो कोई आपहीते

बध बनाइकै गुण अवगुण कर ता वाहू पुनहो समान है देखौ तो जैसे एक सुखेत है अरु भल कमायो है जो वामें बबूर को बीज परै तो बहुत बाढ़ैहै अरु चन्दन को बीज परै तौ चन्दनैकी वृद्धि होइ इत्यादिक अनेक दृष्टांत हैं (३) ऐसे जे हैं तिनमें प्रथम

लोकहै जो पाछे कहि आये हैं तिनमें पुनि वे कैसेहैं धगधर्मध्वजी कही पाखण्डी हैं जे कोई लोकके दिखाइबेको किंचित् सुकर्म कछू किये हैं ताको कहत फिरते हैं कि हमने बहुत दान कियो है बहुत भजन करते हैं हम संसारके बिषय जीते हैं अरु हम सर्वब्रह्म देखतेहैं ऐसे अनेक झूठी बातें कहत फिरते हैं अरु जो कहते हैं तामें आरूढ़ता कहीं लेशहू नहींहै तिनको धर्मध्वजी कहिये तिनहूमें जो धग कही अति नीचहैं पुनि कैसे हैं धन्धक धोरी हैं धन्धा कही वृथा कर्तव्यता ताहीको धुरी हैं (४) यहां से पांच चौपाई तकका अर्थ अक्षरार्थै जानब (६) मेरे एक संदेह है काहेते कि कहां रघुपतिके चरित अपरम्पार निर्विकार हैं अरु कहां मेरी मति लघु पुनि संसारमें निरत नाम रतहै (१०) देखिये तो जेहि पवन के बेगते सुमेरु उड़िजाइ तहां रुईकी कौन चलीहै (११) श्रीरामचन्द्र की प्रभुताई अमितहै समुझत संते मेरी मति कथा करत संते कदराति है (१२) दोहार्थ ॥ श्रीरामचंद्र के चरित जे अमितहैं ताको निरन्तर गान करते हैं यामें एक श्वासहू को अन्तर नहीं परै अरु पार नहीं पावते हैं शारद शेष महेश विधि शास्त्र वेद स्मृति पुराण संहिता इत्यादि नेति नेति करिके गावते हैं तहां मेरी मतिकी का चली है (१) ॥

१३ **सबजानतप्रभुप्रभुतासोई । तदपिकहेबिनरहानकोई ＊ १**
तहांवेदअसकारणराखा । भजनप्रभावभांतिबहुभाखा ＊ २
एकअनीहअरूपअनामा । अजसच्चिदानन्दपरधामा ＊ ३
व्यापकविश्वरूपभगवाना । तेहिधरिदेहचरितकृतनाना ＊ ४
सोकेवलभक्तनहितलागी । परमकृपालुप्रणतअनुरागी ＊ ५
जेहिजनपरममताअतिछोहू । तेहिककरुणाकरिकीन्हनकोहू ६
गईबहोरगरीबनेवाजू ＊ ＊ । सरलसबलसाहेबरघुराजू ＊ ७
बुधबरणहिंहरियशअसजानी।करहिंपुनीतसफलनिजबानी ८
तेहिबलमैंरघुपतिगुणगाथा ＊ । कहिहौंनाइरामपदमाथा ९
तेहिमगचलतसुगममोहिंभाई१०

दो० अति अपारजे सरितवर जो नृप सेतु कराहिं ॥
चढ़िपिपीलिकापरमलघुबिनुश्रमपारहिजाहिं १

१३ जो कोई कहै कि पुनि क्यों कहते हौ तहां प्रभुकी प्रभुता सब जानतेहैं कि अपरम्पार है तदपि बिना कहे कोई नहीं रहा (१) काहेते तहां वेद यह कारण राखि

दीनहै कि भजनको प्रभाव बहु भांतिहै बहु रीति शोभित है अरु अनेक भावहै अनेक बाणी करिकैहै कैसे जानिये कोई सुनिबेको भजन कहतेहैं कोई गानहीको भजन कहतेहैं कोई स्मरणही को कहते हैं कोई पूजाहीको कहते हैं कोई दास्यभावको कहतेहैं कोई सख्यभावको कहतेहैं कोई आत्म वेदनको कहतेहैं कोई वेद पुराण स्तोत्र इत्यादिक पाठको कहते हैं कोई जाप्यको कहते हैं कोई ध्यान को कहते हैं कोई मानसी को कहते हैं कोई प्रेमको कहते हैं कोई लुएको कहते हैं कोई सात्विक कर्म यज्ञ इत्यादि करिकै भगवत् अर्पण करै सोई कहते हैं कोई शुभ अशुभ जो कर्म होइ संचित क्रियामाण प्रारब्ध बश होइ सो सब श्रीरामायेति समर्पयामि सो सब भजनहै तामें सामान्य विशेष है अरु अनेक वाणीतेभजनहै देवशाणीनागवाणी प्राकृतबाणी में वंगाला देशउड़ीसा देश तैलंग देश मारवाड़ देश पंजाबदेश ब्रजदेश श्रीअयोध्या देश ऐसीअनेक देश भाषा हैं ऐसे सर्वद्वीप सर्वखण्ड में हैं अपनी अपनी बाणी ते अनेक भांति ते सबै भजन करते हैं तैसे मैं भी अपनी बाणीते भजन करत हौं (२) परमात्मा परब्रह्म एक है अनीह कही ईहा कहे चेष्टा कबहीं हर्ष शोक कबहीं प्रसन्न उदासीन कबहीं मोट दूबर कबहीं बाल युवावृद्ध इत्यादिक अनेक भांति लघुदीर्घ सो चेष्टाते रहितहै अरूपकहे प्राकृत रूप रहित है दिव्य रूपहै नेत्रनकी बिषय रूपहै ताते प्राकृत नेत्र ताकी बिषयते रहित है ताते अरूप कही अनाम कही जाको नाम राशि लग्न नक्षत्र योग मुहूर्त सर्व क्रिया काल रहित है ताते अनाम कही पुनि जाके नामकी मिति नहीं पुनि जाकेनाम के प्रभाव को वेद नेतिनेति करिकै कहैहैं ताते अनाम कही अरु जो कही कि ब्रह्म जोहै रूप नाम करिकै रहितहै तो जहां रूपै नहींहै तहां नाम कैसे संभव है जो ऐसे कहिये तो श्रीराम तापिनी उपनिषद्है तामेंविरोध होत है (श्लोक) रमंतेयोगिनोऽनंते सत्यानंदे चिदात्मनि॥ इतिरामपदेन्यासौ परंब्रह्माभिधीयते १ ताते रूपहै तब तो नामकहा ताते रूप नाम परम दिव्य है त्रैगुण्य रहित है पुनि वह प्रभु कैसोहै अज है नाम अजन्माहै गर्भ में नहीं आवै पुनि सच्चिदानन्द है सत् कही एक रस सर्वकाल में अरु काल रहितहै असत् जो मायाहै ताके परेहै ताकोसत्कही पुनिचित् कही चैतन्य जामें जड़को अभावहै जाकी चैतन्य ताते जगत् चैतन्य है अरु सबको साक्षीभूत है वह सबकी गतिको जानैहै वाकी गतिको कोई नहीं जानै सो चित् कही आनन्द आनन्दै स्वरूपहै जहां प्राकृत दुःख सुख रहित सो आनन्द ताको सच्चिदानन्द कही परधाम कही पर स्वरूपहै किंतु परधाम सर्वोपरि धामहै जाको(३)कैसो है वह ब्रह्म व्यापक है बिश्वरूप भरेमें कैसे व्यापकहै जैसे सूर्य अपने स्वरूप करिकै एक है अपनेरूप महत् प्रकाश करिकै सब जगत्को प्रकाश कियेहै अरु जेते घटहोहिं कोटिन तामें लखिहै तैसे ब्रह्म जानिये (श्लोक ब्रह्माण्डपुराणे श्रीरामचन्द्रवाक्यं वशिष्ठंप्रति) यथानैकेषुकुम्भेषु रविरेकोपिदृश्यते ॥ तथासर्वेषुभूतेषु चिन्तनीयोस्म्यहंसदा १ ऐसे सर्व में व्याप्त है सबते परेहै सूर्यके दृष्टांत करिकै अथवा व्यापक रूपहै जाके आपरूपी है किन्तु ऐश्वर्य्य बर्णते हैं बिश्वरूप वहै व्यापक वहै भगवान् वहै भगवान् कहे षड्भाग युक्त ऐश्वर्य धर्म यश श्री बैराग्य मोक्ष षड्भाग संयुक्त ताको भगवान् कही सो भगवान् शब्द को अर्थ

आगे सतीके मोहके प्रसंगमें कहेंगे तई देह धारि नानाप्रकारके चरित करत भये जैसे देहधारी प्राकृतराजा चरितकरतहै तैसे वहै प्रभु अवतीर्णहैकै चरितकीन अरुजोकोईकहै कि देहरहित ब्रह्महै तेईभक्तनके केवल हितलागि देहधारणकरिकै अनेकचरित करिकै फेरि देहरहित व्यापक ब्रह्म ज्योंकेत्यों भये सो यहअर्थ गुसांईंको संमत नहींहै काहेते ग्रंथ को आदि अन्त मध्य सो विशेष सिद्धांत है (आदिबालकांडे श्लोकार्द्धः) यत्पाद्प्लवमेकमेवहिभवांभोधेस्तितीर्षावतां वन्देहंतमशेषकारणपरं रामाख्यमीशंहरिं (मध्यारण्यकांडे) सांद्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरंसुन्दरं पाणौबाणशरासनंकटिलसत्तूणीरभारंवरं) (अर्द्धश्लोकउत्तरकांडे) केकीकंठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं शोभाढ्यम्पीतवस्त्रं सरसिजनयनंसर्वदासुप्रसन्नम् ॥ ताते गुसांईंकोसिद्धांत आदि मध्य अन्त धनुर्धारी श्रीरामचन्द्र अपर काहूको मतहोइ सो होइ (४) सो भगवान् अवतीर्ण होइकै प्राकृत इवलीला कीन सो केवल भक्तानुग्रह अर्थ काहेते परम कृपालु हैं प्रणत जो शरण है तेहिपर बड़ा अनुराग नाम प्रीतिहै (५) पुनि कैसेहैं प्रभु जाकी शरण जीव एकहू बारभयो तापर अति ममता छोहकरतहैं ऐसी करुणा जापर कीन तेहिके ऊपर पुनि कबहूं नहीं कोपकीन जो बात कालकर्म स्वभाव बश अनेक चूकपरै सो देखि कै बिसारि देतेहैं ऐसे प्रभुहैं (६) पुनि प्रभु कैसेहैं गई बहोरहैं गरीब नेवाजहैं गई बहोर कही जो बस्तु जाइरही है योग भ्रष्ट भयोहै सो फेरि सिद्ध करि देत हैं किन्तु बिधाताने एकहू अंकनहीं लिख्यो है सो जो सुकृत श्रीराम शरणभयो ताकोअनेकपरम दिव्यगुणयोग बैराग्य ज्ञान मुक्ति भक्ति नवधा प्रेमापरा सबदेतेहैं अथवा गईबहोरकही जो रही है पुनि जात रहीहै सो कवनि बस्तु जात रही है अपनो स्वरूप निर्मल शुद्ध एक रस अखण्ड नित्य सो अपने अज्ञानते भूलि गयोहै सोईस्वरूप अज्ञान दूरि करिकै बहोरि देतेहैं ऐसे श्रीरामचन्द्र गई बहोरहैं जो बिधाता कहै कि मैं तौ लिखबै नहीं किया तुम क्यों देतेहौ अरु जो काम क्रोध लोभ इत्यादिक अनेक भटहैं अपने स्वरूप के प्राप्त होत संते बाधा करैं तौ ब्रह्मादिक देवता अरु माया सहित परिवार तिन सबन को तिरस्कार करिकै अपनो तत्व श्रीरामचन्द्र देते हैं जापर करुणा करहिं काहेते सबलहैं सबके ऊपर बर्त्तमान हैं सरल स्वभावही सबके साहब हैं ऐसे रघुराय हैं (७) ताते बुधजन कबिजन हरिको यशही वर्णते हैं काहेते गईबहोर जानिकै अरु अपनी बाणीको पुनीत कहे पवित्र अरु सफल करतेहैं (८) ताते गई बहोर श्रीरामचन्द्रजी को जानिकै तेही बलते मैंश्रीरघुवरके गुणनकी गाथाबरणौं श्रीरघुनाथजूके पदपंकजमें माथ नाय के श्रीरघुनाथ जी गईबहोर हैं मेरा मनोरथ अवश्य पूर्ण करहिंगे (९) अरु मुनिन श्रीरामचन्द्रकी कीर्ति प्रथम गाइराख्योहै तेहिमार्गमें मोको चलत सुगमभावत है (१०) दोहार्थ ॥ जैसे कोई अपार नदीहै तामें हाथी नहीं पारजाइ सकैहै तामें कोई राजा सेतुबांधतभयो तापर चढ़िकै चींटी पार बिना श्रमहीहोइ जातीहै (१) इतिश्री रामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने बालकांडेनिजनोचानुसंधान श्रीरामकृपावर्णनंनाम चतुर्थस्तरंगः ४ ॥

पंचतरंग मुनिवन्दि कवि अभिनिवेश मन कीन ॥
रामचरणसबमिलिकृपा करहुजो मोहिं लखिदीन ५

यहिप्रकारबलमनहिंदेखाई । करिहौंरघुपतिकथासुहाई १
सबआदिकबिपुङ्गवनाना । जिनसादरहरिचरितबखाना २
पाकमलबन्दौंतिनकेरे * । पुरवहुसकलमनोरथमेरे * ३
कलिकेकबिनकरौंपरनामा । जिनबरणोरघुपतिगुणग्रामा ४
जोप्राकृतकबिपरमसयाने । भाषाजिनहरिचरितबखाने * ५
भयेजेहहिंहोइहहिंजेआगे । प्रणवौंसबहिंकपटछलत्यागे ६
होहुप्रसन्नदेहुबरदानू * । साधुसमाजभणितसनमानू * ७
जोप्रबन्धबुधनहिंआदरहीं । सोश्रमबादिबालकबिकरहीं ८
कीरतिभणितभूतिभलिसोई । सुरसरिसमसबकरहितहोई ९
रामसुकीरतिभणितभदेशा । असमंजसअसमोहिंअंदेशा १०
तुम्हरीकृपासुलभसबमोरे । सियनिसोहावनिटाटपटोरे ११
करहुअनुग्रहअसजियजानी । बिमलयशहिअनुहरैसुबानी १२

१० सरलकबित कीरति बिमल सोआदरहिं सुजान ॥
सहज बैरबिसराइ रिपु जोसुनि करहिं बखान १
तिमोहिंमतिबलअतिथोरि॥
करहुकृपाहरियशकहौंपुनिपुनिसबहिंनिहोरि २
कबि कोबिद रघुबरचरित मानस मंजुमराल ॥
बालबिनयसुनिसुरुचिलखि मोपरहोहु कृपाल ३
० बन्दौं मुनि पद कंज रामायण जिन निर्मयो ।
सखर सकोमलमंजु दोष रहित दूषण सहित १
बन्दौं चारिउ वेद भव बारिद बोहित सरिस ॥
जिनहिंनसपनेहुखेद बरणतरघुपतिबिमदयश २
बन्दौं बिधिपद रेनु भवसागर जिन कीन्ह यह ॥
सन्त सुधा शशिधेनु प्रकटेखलबिष बारुणी ३
दो बिबुधबिप्रबुधग्रह चरण बन्दिकहौं करजोरि ॥
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि १

१४ जो महा मुनीश्वन हरिके कीर्तिगाईहै सोई बल अपने मनको दिखाइकै श्री रघुपतिकै कथा शोभायमान करिहों (१) श्रीवेदव्यासादि जे पुंगव कहीश्रेष्ठ कबिनानाकहे अनेक जिन आगेही भविष्य हरिके चरित बखाने हैं (२) तिन सबन के पद पंकज बन्दौं मेरे मनोरथ पुरवहु (३) पुनि कलि के कविन को बन्दौं जिन श्री रामचंद्र के गुणन के ग्राम संस्कृत करिकै बरण्योहै (४) अरु जो प्राकृत कबि हैं परम सयाने जिन श्रीराम चरितभाषा करिकै बरण्योहै (५) जे कबि भूत भविष्य बर्तमान भविष्यजे होहिंगे श्रीराम चरितके बक्ता तिन सबनको कपट छलछोड़िकै बन्दौं कपट कही श्रीरामचंद्र गुरुरामभक्त तिनको अवराधन करते हैं अरु अन्त:करण में और भेद भरोस कछुराखे कोई देवताको कोई धर्मको कोई कर्मको भरोस किन्तु लोकमेंमानबड़ाई मर्यादा इत्यादिककी बासना औरेनको धर्म कर्म मर्याद बचन कपटिडारे अपने बचनते खण्डन करै ताको कपट कही अरु लोकमें जो काहूसों भेद करिकै फेरफार करिदेय सो भी कपटहै अरु जो भगवत् यशको प्रबन्ध गान करिकै लोकमें पुजाइबेकी वासना करै ताकोछलकही अरु लोकमें जो अपने बचनकरिकैऔरकोव्यामोहितकरै किन्तुसुन्दरबचन कहै अरुअंत:करणमेंवाको बिघ्नताकै किंतु निन्दाकरै ताको छलकही(६) समस्तकपटछल छोड़िबन्दौं किन्तु श्री रामचंद्र के चरितकेजेकबि हैं ते सदा कपट छल त्यागेहैं ते सब मिलिकै प्रसन्नते वरदेहु जामें मेरीबाणी सन्तसभा में आदरहोइ इहां काव्य के यशकी बासना नहीं है जेहि तत्वको संतनके आदरहोइ सो मेरी बाणीमें आवै सो वरदेहु (७) जो प्रबन्ध बुधजननाहीं आदरकरैं सो बालबुधि कबिहै तिनको श्रममात्रहै उनको काव्य बालककोऐसो खेलहै बुधकही पण्डित जाकोअनात्मा आत्मा परमात्माको ज्ञान यथार्थ होइ समदर्शीहोइ ताको पण्डितकही (८) कीर्ति जो सबकोई सराहै भणितकहीबाणी जो सबको प्रियलागै काहूको बिरोध न आवै अरु बिभूति जो धन जो सबके कामआवै सोई सब भलोहै जैसे गंगाजी हैं नीच ऊंच ज्ञानी अज्ञानी पापी पुण्यात्मा सबकोहित करै हैं जो कीर्ति भणित बिभूति सबको हितकारी न होइ तौ कर्मनाशा समान है (९) श्री रामचंद्र कै कीर्ति सुष्ठुनाम उत्तम है अरु मेरी बाणी भदेश है ताते मेरे मनमें असमंजसहै काहेते श्रीरामचंद्र की कीर्ति योग्य मेरी बाणी होय तौ यह आश्चर्यहै ताते मेरे मनमें असमंजस नाम संदेह है अंदेशा नाम चिन्ता है कि जो संतजन मेरी बाणी को न ग्रहण करैं तौ बिना प्रबन्ध किहे भलहै पर मोसे बिनाकिहे नहीं रहाजायहै (१०) अब कछुक ब्यंग्यमें लाड़ जनावते हैं हे सन्तजनहु श्रीरामकीर्ति योग्य मेरी बाणीनहीं है पर तुम्हारी कृपाते मोको सबप्रकार सुलभहै काहेतेकिजो सुन्दररेशमहै ताकरिकै जो टाटको बनाइकै सियाजाय तौ टाटहूशोभा पावतहै तैसेमेरी बाणी तौ टाटहीरूपहै पर रामयश सुन्दररेशमहै ताते सियतहौं तुम्हारी कृपाते शोभितहोइगी (११) हे संतजनहु जो अपने जियमें जानौ कि जो यह तुलसीदासहै सो बड़ोअनारीहै देखौ तौ सुन्दर पाट टाटमें सियतहै जो आपन जानिकै यह नहीं नीकलागै तौ अनुग्रह करिकै पाट के अनुहारि पटदेहु श्रीरामयश बिमल अनुहरित मेरी बाणीहोइ (१२) दोहार्थ ॥ सरलकबित्त होइ अरु कीर्तिबिमल केवल श्रीरामयश परै सो कबित्त सुजान आदरकरतेहैं अरु जे बैरी

हैं तेऊ सहजहि बैरबिनारिकै बखानकरते हैं आदरकरते हैं सरल कवित ताको कही जाकबित्तमें बहुधा द्वित्व अक्षरपरें कठिन अक्षर न परें मात्रावर्ण चारिहू चरणमें बराबरिपरें अर्थसरलहोइ आशय बहुतहोय बहुधायुनि अवरेवपरें जा कवित्त में जीभरसपावे ताको सरलकही पुनि काव्यमें कठिनअक्षर अर्थपरेहै अरु जेहिके बांचिबे सुनिबे वारेजेहैं तिनको अर्थ नहीं भास्योहै ते बैरीदूषण करतेहैं अरुईर्षावाले अरु असत्कवि अरु मतवाद वारे ते रिपु खण्डन करतेहैं ताते कठिन अक्षर अर्थ नहींपरै अरु किसीके मतमें बिरोध नहीं परै केवल श्रीरामयश परै सो काव्य अदूष अखण्डितहै ताको सब बखानते हैं (१) आदर करतेहैं एते जे सहज बैरी रिपुहैं तेऊ ग्रहण करतेहैं सो विना बिमल मति ऐसो कवित नहीं बनै अरु मेरी मति थोरीहै जो संतजन कृपा करहु तो श्री रामयश कहौं वारवार निहोरतहौं (२) कबिकोबिद्जे हैं श्री रामयश मानसरहै ताही में जिनके मंजु हंसवत् बिहरतहैं ते तुम सबमेरी बाल बिनय सुनिकै मेरीसुरुचि देखिकै कृपा करहु काहेते तुम कृपाके स्थालहौ(३ सोरठार्थ॥) बन्दौंमुनिपदबंदना नमस्कार दण्डवत् प्रणामसबकहौ॥ तामें तीनिभेद हैं एकसहजैहै जैसेकोईअपनेसिम्बन्धीहै किंतु मिलापीहैचलतेबैठतेबंदनाकरिलियो अरु दूजो बचन अभिवेशहै जैसे कोई अपनेतेबड़ोहै राजा इत्यादिक ताके प्रणाम करत संते राजाको प्रताप ऐश्वर्य बाणीमें अभिनिवेश आइ जातहै अरु तीसरोस्वरूप अभि-निवेश बंदना है जैसे गुरुहैं किंतु अपनो इष्टहै तिनको नमस्कार करत संते तिनको स्वरूप प्रताप ऐश्वर्य सेवामन बचन कर्ममें अभिनिवेश होतहै तातेगुसाईं तुलसीदासजी स्वरूपाभिनिवेश बंदना करतेहैं जाते मुनिबाक्य श्रीमद्रामायण स्वरूपहृदयमें प्रवेश करैं अब श्लेषालंकार करिकै सोरठाको अर्थ करते हैं॥ सोरठार्थ॥ बन्दौं मुनिपदकंज कौन मुनि जिननें श्रीमद्रामायण निर्मितकीनहै नाम श्रीबाल्मीकिजी इहां चरणको बिशेषण नहींहै श्रीमद्रामायणको बिशेषणहै वाल्मीकि जो श्रीमद्रामायणकीन्ह सो रामायणकैसी है सखर खरदूषण नामजे राक्षस तिन संयुक्तहै पुनि सकोमलहै मंजुहै दोष रहित है (श्लोक) नमस्तस्मैकृत.येनपुण्या.रामायणीकथा॥ सदूषणापिनिर्दोषासखरापिसुकोमला १ जो कोई कहै कि रामायणजो है अमित तासु सतेमें खरदूषण की कथा है यामें बाल्मी अधिकता का भई तहांमुनि कबिनमें बाल्मीकि श्रेष्ठ हैं आदिकबि हैं श्री मद्रामायणके आचार्यहैं ताते कहा किन्तु जिनजिन मुनिन श्री मद्रामायण कीन्ह है तिन सबनके पदबन्दौं पुनि दूसरा अर्थ करतेहैं काव्यबिषे दोष दूषण परै बिनु नहीं रहै दोषकही जे मनभरि बस्तुहोय ताको हेरभरि बरणै कबिताको दोषकही अरु दूषणकहो सुन्दरगणनपरै अगनपरैं पुनि उपमेय उपमानकी उपमादेत संते बिरोधपरै अथवा रस न आवै जैसेकोऊ कहै कि येसंत कैसेहैं जैसे इंद्रहैं यह धर्मबिरोध उपमाहै सो दूषण कही अरु कोई कविनेभगवान्के करचरणकी ललामी जोहै सो बानरके चूतरकी उपमा दीनहै यहरसास्वाददूषण भयो इत्यादिक अनेक दोषदूषणहैं थोरावहुत दोष दूषण बिना काव्यहोतई नहीं जो कहौ कि बाल्मीकिकृत श्री मद्रामायण महाकाव्यहै तौ याहू में दोष दूषण होइगो सोसहीहै महा मुनिकृत रामायणमें खरनाम राक्षस जोहै खर ऐसो नाम सोईदोषहै काहते खरनाम गदहाकोहै ताते दोषकही अरुखर को भाई दूषणनाम

दूषणहैं ताते खरदूषण नाम जो रामायणमें है सोई नाममात्र शेषदूषण है नतु श्रीमद्रामायण दोषरहितहै सहित दूषण दोषरहितहै काहेते बाल्मीकिजू उपमेय उपमान धर्म बाचक यथार्थकहेहैं ताते दोष दूषण रहित है ताहीते सकोमलकहा पुनि मंजुकहा पुनि तीसर अर्थ सखरसकोमल मंजु सखरनाम उदारको उदार कहो जो जौनै मांगै सोई देइ जैसे कोईकल्पवृक्ष तरगयो अनेक उत्तमपदार्थकी बासना भई सो दियो पुनि भयकरिकै सिंहकी बासना भई तब सिंहप्राप्तभयो मारि डारेउ तहां कल्पतरु उदारतो भयो पर कठोर उदारता कोमल उदारता दोनों उसमें हैं अरु दोनों फल दियो तैसी उदार श्री मद्रामायण नहीं है सखर नाम उदार सकोमल उदार है मंजु नाम उज्ज्वल फल दाता है दोष दूषण रहित उदारता श्रीमद्रामायण है जो कहो कि जो कोई रामायण सुनै कहै अरु अर्थ धर्म कामको बासना करै तौ देइ कि न देइ नतु देइ पुनि उसमें तौ दोष दूषण भरे हैं ये तीनों बिषय मयहैं ताते मलिन है बंधन रूप है ताते दोष मय है कठोर है अरु तीनहूं में हर्ष शोक इत्यादि दूषण हैं सो सत्य है पर तहां मंजु कहे निर्मल अर्थ धर्म काम देति है श्रीराम सम्बन्ध तीनों दिव्यरूपदेति है दोष दूषण रहित तीनों फल दिव्य भोग भगवत् सम्बन्धमें कराइकै तदुपरांत वाही तन में परम पद देति है ऐसो उदार रामायण है यह प्रसिद्ध है (प्रमाण उत्तरकांडे) जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख सम्पति नाना बिधि पावहिं ॥ सुरदुर्लभ सुख करि जग माहीं। अन्तकाल रघुपति पुरजाहीं॥ पुनि चौथ अर्थ पुनि श्रीमद्रामायण कैसी है सखर कहे सखरस है जेहि बिषे सख के आगे जो रकार है सो दीप देहरी अक्षर जानब पूर्बापर दोनों अर्थ प्रकाश करतु हैं ताते सखर रस सखर कहे बहुत केवल रसमय फलहै जैसे सहतूत इत्यादिक फलबिना गुठुलू बकलाको फल है काहेते कि केवल श्री सीताराम चरितहै अरु अपर जो श्रुतिस्मृति पुराण इतिहास महाभारतादिक ते सब बकला बीजरस संयुक्त फलहैं काहे ते कि कर्मकांड ज्ञानकांड भक्ति कांड तीनिउ मिश्रित सब ग्रंथहैं कर्म छिलका स्थाने ज्ञान गुठुलीस्थाने भक्ति रसस्थाने भक्ति नवधा प्रेमा परामय श्रीमद्रामायण है केवल भक्ति रस रूप रामायण है पुनि रस दुइ प्रकारके हैं एक कोमल एक कठोर जैसे पक्कफल सहतूत सेव इत्यादि बाल युवा बृद्ध सबके खाबेमें आवैहैं अरु नारियर की गरी कठोर रस मय है जाके दांत होइ सो चाबै यह दृष्टांत है अब द्राष्टान्त कहते हैं भक्ति तीनि प्रकार की है एक कर्म मिश्रा भक्ति एक ज्ञान मिश्रा भक्ति एक केवल भक्ति प्रेम परा कर्म मिश्रा ज्ञान मिश्रा भक्ति कठोर रस गरी तुल्य है सबते न सधै अरु केवल भक्ति सबको अधिकार है केवल राम नाम कहना रामाश्रय रहना श्रीमद्रामायण बिचार अहर्निशकरना अपर सर्ब त्याग सोभक्ति सबको सुलभ है ताते सकोमल कहा पुनि मंजुकहे उज्ज्वल है अपर ग्रन्थमें तीनि गुण अपर देव मिश्रित भक्तिरस है रामायण त्रिगुणातीत अरु अपर देव रहित भक्ति रस है श्रीराम भक्ति स्वतंत्रा है स्वतः सिद्धि है तेहिमें श्रीमद्रामायण है सतसभा में रहतु है केवल श्रीराम लीला राम नाम राम रूप राम धाम मय रामायण है ताते मंजु कहा — दोष दूषण रहित है कर्म ज्ञान रहित है अथवा कोई अपर ग्रन्थ पढ़ै जो अशुद्ध

पाठ कर तो दोषहै औ जो अर्थ न करत बनै तो दूषण है अरु श्रीमद्रामायण पाठ करत अर्थ कहत सुनत चाहै बनै चाहै न बनै तामें एक अक्षर मोक्षदाताहै ताते दोष दूषण रहित है एक अक्षर उच्चारण मात्र करत संते महापाप नाश होत हैं एक पाप एक महा पाप पाप कहो गऊ बालक वृद्ध स्त्री ब्राह्मण इत्यादिकनको वध सो पापहै काहेते तीर्थ व्रत दान तप यज्ञादिक कियेते पाप नाश होते हैं सो पाप कहो अरु महा पाप कहो जन्म मरण सो नहीं मिटै जो कोटिन कर्मकरै अरु जो शतकोटि ऊपर अनन्त कोटि ऐसी जो रामायण है जो तामें एक अक्षर उच्चारण करै कोई होइ तो जन्म मरण जो महापाप सो नाश ह्वैकै परम गतिको प्राप्त होइहै तहां प्रमाण प्रसिद्ध (श्लोकएक) चरितंरघुनाथस्यशतकोटिप्रविस्तरम् ॥ एकैकमक्षरंपुंसांमहापातकनाशनम्१ अरु ऐसो कोई ग्रन्थमें नहीं कहा कि एक अक्षर उच्चारण किये ते महा पाप जो हैजन्म मरण सो नाश होइजाइ अरु श्री मद्रामायण के एक अक्षर उच्चारण किये ते मोक्ष होतहै अरु श्रीभगवद्गीता में कहाहै कि एक अक्षर जो उच्चारण अन्तकाल में होइ अरु भगवत् स्मरण करै तो मोक्ष होय (श्लोक) ॐमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिम् १ ताते यह जानिये कि श्री मद्रामायण अमित जो है ताके एक एक अक्षर ॐकारहू ते अधिक हैं ताते रामायण केवल रस रूपही है जाते मोक्षके हेतु दूसरे अक्षरकी अरु स्मरणकी सहाय नहीं लेतुहै ताते रस मयहै पुनि पंचम अर्थ करतेहैं सखरस सख नाम दूधको है (श्लोकार्द्ध) सखक्षीरःपयोदुग्धंगोरसंसर्पिहेतुकं (इतिविश्वकोषे) सख जो दूध ताको रस माखन तद्वत् कोमल पुनि मंजुहै पुनि माखन दुइ प्रकारको है एक गऊ को है अरु एक अजा नाम बकरी इत्यादिक तामसी योनि को माखन सो दोष दूषण युक्तहै काहेते अल्प छाछ मिश्रित है सो दूषणहै अरु भले आदमीके खाबे योग्य नहींहै सो दोषहै अरु गाईको माखन सबके खाबे में आवैहै ताते दोष रहित है पर थोरी छाछ मिलाहै ताते दूषण है जो उहै माखन बनाइबेमें आयोहै तो अति कोमल अति मंजु दोष दूषण रहित भयो गऊको बनायो माखन तद्वत् श्रीमद्रामायण है कामधेनु रूप ब्रह्माहैं चारिउ मुख स्तन हैं चारिहू मुखते चारिहू वेद प्रकटे सो दूध रूपहैं सनकादिक वत्सहैं श्री राम चरित माखन रूप बनावने हार श्री बाल्मीकि हैं कर्म छाछ निकारि डारेउ है ताते श्रीमद्रामायण शुद्ध शुक्ल कोमल माखन है खाने वारे संत जन जाते सदा एक रस शीतल है (श्लोकएक) स्वयम्भुकामधेनुश्चस्तनश्चचतुराननः ॥ वेददुग्धामलंशुक्लंरामायणरसोद्भुवं (इतिस्कन्दे) पुनि छठवां अर्थ सख श्री स कहो सम्यक् प्रकार सम्पूर्ण रसकोमल मंजुहै ख नाम आकाश तद्वत् निर्मल किंतु आकाशवत् ब्रह्म रसमय सकोमल नाम दयाल मंजुल नाम निर्मल त्रैगुण्य रहित दोष दूषण रहित ऐसो जो ब्रह्म तदात्मक रामायण है पुनि सप्तम अर्थ सख रसकहे सख्य रस शृंगार रसमय है रामायण काहे ते श्रीरामचन्द्र सबको सखा कीन्हहै कोलभिल्ल बानर ऋक्ष राक्षस चराचर जाको श्रीरामचन्द्र देखो जिनने श्रीरामचन्द्र को देखेउ तिन सबको सखा कीन्ह पर निर्हेतुक सकोमल श्रीरामचन्द्र ऐसे कोमल हैं अरु सबको कोमलकरि

दीन्ह सबकी कठोरता छूटगई (श्रीअयोध्याकांडे चौपाई) जासु निरखि मम सांपिनि बीछी । तजेउ सहज विष तामस तीछी ॥ पुनि कोई एकहूबार रामशरण भयो अरु जाको आपन कहा ताको दोष दूषण नहीं देखतेहैं ताते दोष दूषण रहित है (वाल्मीकीयेश्लोकाः) मित्रभावेनसम्प्राप्तंनत्यजेयंकथंचन ॥ दोषोयद्यपितस्यस्यात्सतामेतदगर्हितं १ (स्कन्दे)सकृदुच्चरितंयेनरामायणमनुत्तमम् ॥ भस्मीभवन्तुपापौघाःदूरादग्नेस्तुलद्वात् २ श्रीमद्रामायणस्यैवश्रवणं तत्कीर्तनाच्छुवे सद्यःपुनातिवैसर्वान्चिरकालंतथान्यतः॥३॥ (१) पुनि चारिउ वेद बन्दौं भव वारिधि कहे समुद्र ताके पार जावेको बोहित कहो जहाज रूप वेदहै जवनीरीति रघुवीरको विशदयश देव बर्णते हैं तैसेही वेदकी वाणी पर आरूढ़ होइकै श्रीरामचन्द्रको भजै ताको स्वप्नहुमें खेद नहींहै ताको संसार सागरते वेद पार करिदेते हैं ताते वेद जे हैं ते संसार सागर के जहाज हैं अथवा श्रीरामयश विशद वेद वर्णते हैं ताते वेदनको स्वप्नेहु खेदनहींहै (२) पुनि विधिपद रेणु बन्दौं जिनने संसार सागर कीन्ह सागरमें तो चौदहरत्न निकसेहैं तामें कछु नीकहैं कछु विकार रूपहैं संसार सागर में संतजन सुधा शशि धेनु इत्यादिक उत्तम पदार्थ प्रकटेहैं अरु खलजन विष मदिरा इत्यादिक विकार प्रकटे हैं (३) दोहार्थ ॥ पुनि विबुध जो देवता विप्र बुध पण्डित नवग्रह जो हैं सबके चरण कर जोरिकै बन्दौं मेरे सम्पूर्ण मनोरथ १ ॥

१५ पुनिबन्दें [illegible] मोहरच्चरिता * १
मज्जनपानपापहरएका * । कहतसुनतएकहरअविवेका * २
गुरुपितुमातुमहेशभवानी * । प्रणवौंदीनबन्धुदिनदानी * ३
सेवकस्वामिसखासियपीके । हितनिरुपधिसबविधितुलसीके ४
कलिबिलोकिजगहितहरगिरिजा । सावरमंत्रजालजिनसिरजा ५
अनमिल [illegible] * । प्रकटतप्रभाव
सोमहेशम [illegible] * * । करौंकथामुदमंगलमूल [illegible] * ७
[illegible] यपायपसाऊ । बरणौंरामचरितचितचाऊ ८
भणितमोरिशिवकृपाबिभाती । शशिसमाजमिलिमनहुसुराती ९
जोयहिकथहिसनेहसमेता । कहिहहिंसुनिहहिंसमुझिसचेता १०
[illegible] नुरागी * । कलिमलरहितसुमंगलभागी ११
हु सांचेहु मोहिंपर जोहरि गौरि पसाव ।
जोकहउँ सब भाषा भणितप्रभाव १

१५ पुनि शारद सुरसरिता बन्दौं दोनोंके पुनीत चरित हैं(१) गंगाजी स्नान,पानते पाप शारदा कहत सुनत अविवेक हरैहै (२) गुरुरूप शिक्षा करिबे को पितु मातु रूप

दीननके प्रिय बन्धुहैं दीन कहे उत्तम कालके दाताहैं ते महेश भवानी दुउ बन्दौं (३) पुनि सिय पियके सेवक हैं स्वामीहैं सखाहैं सदा तौ सेवकैहैं अरु जब श्रीरामचन्द्र नर नाट्य लीला करते हैं तब राम रुचिते स्वामीहोइ पुजावते हैं श्रीरामचन्द्र अपने अंश भूत ब्रह्मा विष्णु शिव हैं तहां सखाहैं पुनि दूसर अर्थ अवरेवते स्वामी सिय पियके सेवक सखा दोनोंहैं अरु गुसाईं कहते हैं कि इस प्रकार मेरे हित निरुपाधि करिवेको एक प्रिय महादेवही हैं (४) शिव बड़े दयालु हैं यह कलिकाल दुःखमय बिलोकि कै जगत् के हित हेतु शिव पार्वतीजी शावरमंत्र उत्पन्न कीन्ह (५) अनमिल अक्षर है जामें एको अक्षरन की मैत्री नहीं मिलै अरु कोई अर्थ भी नहींहै न कोई जाप्यहै न कोई पुरश्चरणहै केवल महेश प्रतापते तेहिमन्त्रते भूत पिशाचादि राक्षस देवमाया सर्प सिंह मंत्र तंत्र इत्यादिक अनेक शांति होते हैं (६) सो महेश मेरे ऊपर अनुकूल हैं तातेमुदमंगल मूल कथा करतहौं किन्तुअनुकूल होहिं(७) सुमिरि शिवा जोहैं पार्वती अरु शिव तिनके पदको पसाउ जो प्रसाद सो पाइकै अथवा शिवा शिवको सुमिरि कै पसाउ जो प्रसन्नता प्रसाद पाइकै रामचरितबरणौं चितचाउ कहं उत्सव संयुक्त पुनि चाउ चाह संयुक्त(८)भणित मोरि शिवजूकी कृपाते बिभाति नाम शोभितहै किमि जिमि शशि समाज नक्षत्रन संयुक्तपूर्णमासीको जोशशि तेहिमिलिकै जैसे रात्री शोभित है(९) जो प्राणी यह रामचरितको सनेह समेत सचेत ह्वैकै कहिहैं सुनिहैं समुझि हैं(१०)तेश्रीरामचरण के अवश्यकै अनुरागी होहिंगे अरु कलिके संपूर्ण मलते रहित होहिंगे यह ध्रुव कहे निश्चयहै (११) दोहार्थ ॥ ॥ जाग्रतहू सपनेहू में जो हरगौरिकी सांची प्रसन्नता मेरे ऊपर होइ तौ जौ मेरे मुखते जो वाणी निकसै ताको प्रभाव सत्य होइ ॥ १ ॥

१६ बन्दौंअवधपुरीअतिपावनि । सरयूसरिकलिकलुषनशावनि १
प्रणवौंपुरनरनारिबहोरी । ममताजिनपरप्रभुहिनथोरी * २
सियनिन्दकअघओघनशाये । लोकबिशोकबनाइबसाये ३
बन्दौंकौशल्यादिशिप्राची । कीरतिजासुसकलजगमाची ४
जहँप्रकटरघुपतिशशिचारू । विश्वसुखदखलकमलतुषारू ५
दशरथराउसहितसबरानी * । सुकृतिसुमूरतिमंगलखानी* ६
करौंप्रणामकर्ममनबानी * । करहुकृपासुतसेवकजानी * ७
जिनहिंबिरचिबड़भयउबिधाता। महिमाअवधिरामपितुमाता **८**
सो० बन्दौं अवध भुवाल सत्य प्रेम जेहिं राम पद ।
बिछुरतदीनदयाल प्रियतनतृणइवपरिहरेउ १

१६ बन्दौं श्री अयोध्यापुरी अतिशय पावनि पवित्र एक पवित्र एक अति पवित्र तामस राजस गुण रहित केवल सात्विक गुणयुक्त जो पदार्थ ताको पावन कही और काल कर्म गुण स्वभाव रहित गुणातीत ताको अति पावन कही ऐसी श्री अयोध्या

सरयूहै ताते अति पावनि कहा या दोउन के स्मरण मात्रते सम्पूर्ण कलिमल नाश होइहैं (१) बहुरि पुर नर नारि प्रणवौं जिनपर श्रीरामचन्द्रकी अति ममत्व है (२) श्रीसीता जूकी निन्दा अघ ओघ नाम समूह सो मिटाइकै विशोक नाम अखण्डकाल रहित एक रस ऐसे लोकमें आपनो स्वरूप बनाइकै बासदीन्ह जब सहित श्रीअयोध्या पर अयोध्याको गमन कीन तब अथवा बिशोक कहो काल रहित ऐसो लोक अपनी इच्छाते बनाइकै जा लोकमें रावणके परिवारको मोक्ष दीन्ह ताही लोकमें सिय निन्दक जो धोबी तालोकमें वासदीन्ह जब श्रीरामचन्द्र लंका जीति आये तब आधीराति सेवकनको आज्ञा दीन देखो तौ पुरीमें का बार्त्ता होती है तहां सब श्री रामचन्द्र की बिजय उदार कृपादिक यश गावते हैं तहां एक धोबी अपनी पत्नीसे श्री जानकीजीकी कुछ लघुता कहेउ सो पापको समूह ताको मेटिकै बिशोकमें बसायो कौन बिशोक लोक है श्रीअयोध्या बिरजापार सो अयोध्याके दक्षिण द्वार सांतानक पुरहै ताकी बन संज्ञा है जैसे अयोध्या प्रमोदबन है पुनि बृन्दाबन काशी आनन्दबन प्रयाग बद्रीबन ऐसेही सब पुरिनकी बन संज्ञा है तैसे सांतानक बन जो है सो अयोध्यै है तहां वास दीन्ह ऐसे श्रीरामचन्द्र हैं तहां (भार्गव पुराणे-नारायण वाक्यं नरंप्रति श्लोकः) इदमेव पुराप्रष्णावैकुंठनगरेर्हारं ॥ सर्वेश्वरीजगन्मातापप्रच्छकमलालया १ त्रिपाद्विभूतिवैकुंठे बिरजायापरेतटे ॥ यादेवानापुरायोध्याह्यमृतेतांनृतांपुरीं २ पुनि (सदाशिवसंहितायां) सांकेतदक्षिण द्वारे हनुमान्भक्तवत्सलः ॥ यत्रसंतानकंनामबनंदिव्यंहरेःप्रियं ३ ॥ अरु जो कोई कहतेहैं कि सत्यलोक जो ब्रह्माको है तापर संतानक लोक श्रीरामाज्ञा ते ब्रह्मै निर्माण कीन्हहै तहां श्रीअयोध्या वासिनको वास दीन्ह है पुनि ब्रह्मा के संग इनकी मोक्ष होइगी सो यह सामान्य वाक्यहै परमार्थिक नहीं है काहे ते श्रीअयोध्यावासी श्रीरामचन्द्रके नित्य पार्षद हैं क्षण भरि नहीं छोड़ते हैं जो कहो कि श्री रामचन्द्रके संग बनमें क्यों न गये तहां रामानुकूल हैं अरु यहां नैमित्य लीला प्रकरणमें क्षणमात्र अयोध्या नहीं छोड़तेहैं अन्यप्रमाण (श्लोकार्द्ध) अयोध्यांचपरित्यज्य पादमेकंनतिष्ठति ॥ साकेत नाम श्री अयोध्याको (३) बन्दौंकौशल्याजीप्राची दिशानाम पूर्वदिशाइव जाकी कीर्ति सकल जगमें छाइ रहीहै (४) श्री रामचन्द्र पूर्णचंद्र सदा एक रसते प्रकटे कमलइवखल तिनको पाला रूप ह्वैकै नाश कियो संपूर्ण विश्व के सुख दाता भये पर कौमुदी नाम चकोर संत जन तिनको विशेष सुख देते भये (५) अब श्री दशरथ महाराज सहित रनिवास कैसेहैं राजा रानी सकल सुकृतिकी मूर्ति हैं मङ्गल मोद की खानिहैं (६) तिनको प्रणाम मन बचन कर्मते करौं मेरे ऊपर कृपा करहु आपके पुत्र तिनको सेवक मोको जानिकै सुत सेवक क्यों कहा पुत्रको टहलू माता पिता को बहुत प्रिय होतहै (७) कैसेहैं श्री दशरथ कौशिल्याजी जिनको बिरचिकै नाम उपजाइ कै ब्रह्मा बड़ाई को प्राप्तभयो है काहे ते कि बड़ाई कीर्ति सुयश भुक्ति मुक्ति भक्ति इत्यादिकन की महिमा ताकी अवधि नाम मर्यादा श्रीरामचंद्र हैं पुनि परब्रह्म हैं जाको नारद शुक सनकादिक ब्रह्मा शिवादिक अहर्निश ध्यावते हैं ते दशरथके पुत्र पुनि ब्रह्माके पुत्र मनुसत रूपा स्वई दशरथ कौशल्या रूप हैं ते ब्रह्मा के उपजाये हैं ऐसे

दशरथ कौशिल्या जीने श्रीरामचंद्रको पुत्र कीन्ह कैसेहैं श्रीरामचंद्रजू महिमाकी अवधि हैं पुनि महिमा कही ब्रह्म, जीव, माया आदि अंत मध्य तिन सबनकी अवधि कही मर्याद श्रीरामचंद्र हैं ताते ब्रह्मा धन्यतम हैं (८) सोरठार्थ॥ राजा दशरथ को बन्दौं जिनका राम पर सत्य प्रेम श्रीरामचंद्र के बिरहमें राम राम ध्वनि करत सन्ते महाराज दशरथ जी तृण इव शरीरको त्यागिकै स्वर्गको प्राप्तभये तहां यह बड़ो आश्चर्य है कि अंतःकरण की वृत्ति श्रीरामचंद्र अरु बाणीमें राम राम ध्वनि अरु तेही दशा में शरीर को त्याग अरु स्वर्गकी प्राप्तिभई मोक्ष नहीं भई आश्चर्य है जो कोई कहै कि राजा सत्य वाक्यके धर्ममें बद्धभये ताते स्वर्ग भयो मोक्ष न भई यामें तौ शास्त्र बिरोध भयो काहे ते जाको जन्मभरि पापही करत बीत्योहै अरु अन्तकालमें कोई योग ते भगवत्स्मरण होइ किंतु नाम उच्चारण होइ तब वह प्राणी मोक्षको प्राप्त होत है यह सब शास्त्र कहतहैं (श्रीभगवद्गीतायां श्लोकद्वै) यंयंवापिस्मरन्भावंत्यजत्यन्तेकलेवरं॥ तन्तमेवैतिकौंतेयसदातद्भावभावितः १ (श्रीबाराहपुराणेशंकरवाक्यं) दैवाच्छूकरशावकेननिहतो म्लेच्छोजराजर्जुरो हारामेतिहतोऽस्मिभूमिपतितोजल्पंस्तनुंत्यक्तवान्॥ तीर्णोगोष्पदवद्भवार्णवमहो नाम्नःप्रभावत्पुनः किंचित्रंयदिरामनामरसिकास्तेयांतिरामास्पदम् २ देखिये तो ऐसो नाम सुमिरण है अरु तहां महाराज श्री दशरथ जू प्रीति संयुक्त राम नाम कहत संते श्री राम स्वरूप में चितकी वृत्ति अखण्ड लगी है अरु तेही दशामें शरीर त्याग दियोहै तहां विचारि देखो अंतकालमें राम नाम उच्चारण स्मरण कैसेहू होइ अधर्म किंतु धर्म किंतु पाप पुण्य इत्यादिक करकै नाम को प्रताप मंद परिजाइ नहीं मोक्ष देइ सो ऐसी कोई श्रुति स्मृति पुराण इत्यादिकन में यह बातैं नहीं हैं काहे ते जो सुमेरुतेहू भारी अधम अधर्म होइ तौ नाम स्मरण भस्म करिदेइ जैसे कोटिन मन बरूद होइ अरु कहूं एक अग्निको कणपरै सो उड़ाइ देइहै कहूं लेशहू मात्र नहीं रहै तैसे भगवान् को नामसुमिरण है अरु राजा श्रीदशरथ महाराज रामनामही सुमिरण कीन्ह्यो है (दोहा) राम रामकहिरामकहिरामरामकहिराम॥ रामबिरहतनत्यागिकैरावगयेसुरधाम॥ अरु जो दशरथ महाराजको सत्यप्रियहोतो तौबिश्वामित्र जबआये तबराजा अपनी इच्छाते हर्षिकै मुनिते कह्यो कि जोई मांगहु सोईदेउं तब मुनि श्री रामचंद्रको मांग्यो तब नाहीं करिगये तबबिहँसिकै वशिष्ठजी समझावते भये कि श्री जनकपुरमें इनको बिवाहहोइगो अरु येदोनों कुमार सदामुनिनके रक्षकहैं तब दशरथमहाराज हर्षिकै दीन्ह्योहै अरु जो कोई अन्धी अन्धा के शाप को कहै तहां स्वर्गको प्रयोजनै नहीं है शरीर छूटिबे को प्रयोजनहै परमिसुमाअहै काहेते किराजाने पूर्वही श्री रामचंद्रजीसे वर मांगिलियोहै कि मेरो जीवन तुम्हारे आधीनहोय तुम्हारे बिछुरत संतेमेरोशरीर छूटिजाय जैसेमणिबिनु सर्प जलबिनुमीनयहप्रसिद्ध है(प्रमाण)मणिबिनुफणिजिमिजलबिनुमीना॥ ममजीवनतिमितुमहिंअधीना१पुनि जोकोईकहै कि भरतजीकोराजाने ननिआउरको पठैदियो तब श्रीरामचंद्रको राज्य देनेलगे ताते भागवतापराधभयो ताते सब उपद्रव भयो अरु राजा स्वर्ग को गये मोक्ष न भई तहां यह कहना नहीं संभवैहै काहेते इहां लीला प्रकरण है तहां राजा

के पुत्रहैं भरतजी अरु राजाकी आज्ञानुकूलहैं अरु सब प्रकारते भरतजी निर्वासिक हैं तहां अपराध कहांहै अरु लौकिक में राजाहैं राजा अपनो कार्य्य राजनीतिसे करते आयेहैं अरुवैदिकमें दशरथ ऐसे भागवतहैं अपनेभागवत धर्मके सहित भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न श्री सीताराम जिनको सर्व ध्यावतेहैं तिनको पुत्रकीन्ह तहां अपराध कहां है इहां भागवतापराधको प्रयोजनै नहीं है अरु राजामें वाक्य सत्यधर्म जो रोपणकरै तौ बाल्मीकीयमें बिरोधपरैहै अरु श्री रामचंद्रके संकल्प में विरोध परैहै काहेते श्रीरामचंद्र ने निज मुखसे कहाहै वाल्मीकीयमें कि जो कोई जीवहोइ अरुएकहू बार भूलिहूकै मेरी शरणआवै बचन मात्र तौ मैं उसके तीनि हूं कालके अनेक दोष देखतै नहीं हूं अरु अभय सर्व भूतते करिदेउं पांचतत्व तीनिहू गुण काल कर्म स्वभाव इत्यादिक सर्वते अभय करिदेउं (श्रीबाल्मीकीये श्लोकद्वै) मित्रभावेनसंप्राप्तं नत्यजेयंकथंचन ॥ दोषोयद्यपि तस्यस्यात्सतामेतदगर्हितं १ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते ॥ अभयंसर्वभूतेभ्योददा म्येतद्व्रतंमम २ यह श्रीरामचंद्रको संकल्पहै अरु राजा श्री दशरथमहाराज श्रीरामहेतु त्रैलोक्य ब्रह्माकी बिभूतितेहि सबके राजा अरु ब्रह्माके पुत्रहैं ताते ब्रह्मै सर्वराज्य दीन सो त्यागिकै केते हजारनवर्ष तपकीन्ह भजन कीन्ह परमानन्यशरणागत भये उपाय शून्य अरु जीवनके कल्याण हेतु पुत्र परमात्मा राजा की भक्ति बश ह्वैकै सर्बोपरि परब्रह्म श्री रामचंद्र पुत्रभये अरु तिन राजासे कोजानै कवने योगते एक चूक परि गई सत्य में आरूढ़भये श्री रामचंद्रको छोड़िदीन तहां श्री रामचंद्रजो एकहू चूक नहीं माफकरैंगे तौ जो श्लोक कहिआये सो कैसे सिद्धि होहिगे अरु पुनि काहे को कोई जीव तरैगो काहेते कि जीवते सब अपराधही होतेजातेहैं अरु श्री रामचंद्रको सत्य संकल्पहै (अभयं सर्वभूतेभ्यो) तहां यह तौ तुमने सबकहा अब हम बूझतेहैं राजा स्वर्गको क्योंगये तहां यह अर्थहै राजा भागवत धर्ममें वद्धभये काहेते कि राजा वात्सल्य रसमें सदा रहेहैं पर कोई कोई समय में शांतरस श्रीरामरचाते श्री रामचंद्रको परब्रह्म जान्योहै (प्रमाण बालकांडे) जाकर नाम सुनत शुभ होई । मोरे गृह आयो प्रभु सोई (पुनि श्रीअयोध्या काण्डचौपाई) ॥ सुनहु तात तुमका मुनि कहहीं । रामचराचर नायक अहहीं ॥ ताते महाराज श्री दशरथजी यह जान्यो कि श्री रामचंद्र परमेश्वरहैं परमात्मा ब्रह्म सर्व्वोपरि सबके नियंता सबके स्वामीहैं स्वतंत्रहैं जिनकी गतिकोई नहींजानिसकै ते श्री रामचंद्र कैकेयीके वचन मिसु बन को चला चाहतेहैं बिशेष तहां अब मैं का करौं जो कहौं कि बनको न जाहु तौ उनका संकल्प भंगहोइ है तौमैं सर्व अधर्म को भाजन होउंगो अरु जो कहौं कि बनको जाहु तो सन्तनकी सभामें महारूखा कठोर कहाऊंगो अरु श्रीरामचंद्रके बिछुरत संते मैं अपने प्राणको त्यागदेउंगो यह मेरो संकल्प है ताते राजाने शरीरत्याग अंगीकार करिकै कछु नहीं कह्यो न जाइ कह्यो न रहै कह्यो अरु श्रीरामचंद्रजी राजाको विवेक वैराग्य ज्ञान अरु परम भागवत धर्म अरुस्नेह जलमीन वत् अरुप्रेमा पराभक्ति सबके जनाइबेके हेतु श्रीरामचंद्र अपना संकल्प बन गमन लीला करतेहैं कि जो कोई बिवेक बैराग्य भागवतधर्म स्नेह प्रेमापरा भक्ति इत्यादिक करि कै मेरी प्राप्ति की इच्छा राखै तौ महाराज श्री दशरथ मय देखिलेइ अरु अपना संकल्प

पूरा करना अरु राजाका संकल्प पूरा करना ताते यह रीतिसे श्रीरामचंद्र बनगमन कीन्ह है पुनि जो कहो कि राजाने शरीर क्यों छोड़्यो वह तो सब जानते रहैं तहां राजा को संकल्पहै कि रामचंद्रके वियोगते शरीर त्यागदेउंगो यह बिरही भक्ति कहावै है अतिदुर्लभहै अरु जब सुमन्त्रने कहा कि श्रीरामचंद्र मुनिवेषकरिकै प्रियानुजसहित बनगमन कीन्ह तब सदा वात्सल्य रसमें जोरहैं अरु ताही रसमें बिरहकी अग्निअति प्रज्ज्वलित उठी यह समुझिकै कि सीता राम लक्ष्मण अति कोमल तहां वन सब प्रकार ते कठोरसो प्रीतम कैसे सहैंगे अरुताही बिरहवें संकल्प राजाका प्राप्तभया ताते श्रीरामचंद्रके बिरहमें अति प्रियतन ताको तृणइव त्यागिदियो स्वर्गको प्राप्तभये अरु जो कहो कि श्रीराम विरह में अरु रामनाम कहत संते शरीर त्यागिकै स्वर्गको क्योंगये परमपदको क्यों न गये तहां श्री रामचंद्र की प्रेरणाते स्वर्ग को गये हैं काहेते श्रीरामचंद्र अपने मनमें यह विचारेउ कि राजा ने मेरे वात्सल्य रसके बिरह में शरीर त्यागोहै अरु मेरे राज्य तिलकको संकल्प कीन्ह्योहै अरु मैं अपने प्रिय जो हैं तिनका संकल्प पूर्ण जाते मेरो राज्याभिषेक देखिलेहिं ताते स्वर्गको जाहिं जाते ऊंचे बैठिकै देखहिं हम बालक कोमलहैं तैसी हमारी लीला देखहिं अरु हमारो राज्य देखहिं पुनि परम पद बिभूतिके संगही चलहिंगे यह श्रीरामचन्द्रकी प्रेरणा है विशेष ताते स्वर्गको गये यह बिशेष अर्थहै तहां प्रमाण है (ब्रह्मरामायणेब्रह्मणोवाक्यं नारदंप्रतिश्लोकः) युक्तो राजाधर्मतोधर्ममध्ये नीनोभूतःप्रेरितोराघवेन ॥ वात्सल्येऽसौरामचंद्रस्यबंधोस्त्यक्त्वादेहं स्वर्गलोकंजगाम १ ॥ पुनः (श्रीमन्महारामायणेशिववाक्यंपार्वतींप्रति) बड़ोभागवते धर्मराजा दशरथोमहान् ॥ यातुंस्थातुंचरामाय नोक्तिवांस्तत्रभक्तितःस्लीलादर्शयितुंस्वके नमहता रामेणवीरोद्भवा मुचचस्यस्यपितुर्महेंद्रसदृशो राज्याभिषेकंतथा ॥ गन्तव्यं ह्विमयास्वबांधवगणै राज्याद्बधामंस्थकं संचिन्तामृतमानरेननृपतेः स्वर्गेसुबासःकृतः ३ (पुनः वृहन्नाटके श्रीदशरथवाक्यं श्रीरामंप्रति) प्राजाह्वि यदमंगलंब्रजसखे स्नेहेनहीनंवचःतिष्ठति प्रभुतायथा रुचिकुरुष्वेसप्युदासीनता ॥ नोजीवामित्वयाबिनेतिबदनंसंभावितेवानवा तस्मात्विघ्नसमायथासमुचितंवक्तुंत्वयाप्रास्यतं ४ ॥ १ ॥

१७ बन्दौंपुरजनसहितबिदेहू । जिनहिंरामपदगूढ़सनेहू ॥ १
राखेयोगोई ॥ रामबिलोकतप्रकटेउसोई ॥ २
बन्दौंप्रथमभरतकेचरणा ॥ जासुनेमब्रतजाइनबरणा ॥ ३
॥ लुब्धमधुपइवतजैनपासू ॥ ४
बन्दौंलक्ष्मणपदजलजाता । शीतलसुभगभक्तसुखदाता ॥ ५
त दण्डसमानभयउयशजाका ॥ ६
शेषसहस्रशीशजगकारन ॥ सोअवतरेउभूमिभयटारन ॥ ७
सदासोसानुकूलरहुमोपर ॥ कृपासिंधुसौमित्रगुणाकर ॥ ८
रिपुसूदनपदकमलनमामी । शूरसुशीलभरतअनुगामी ॥ ९

महावीरप्रणवौंहनुमाना । रामजासुयशआपुबखाना ॥ १०

दो० बन्दौं पवनकुमार खल बनपावक ज्ञान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं रामशर चापधर १

१७ प्रणवौं सहित परिजन श्रीविदेह जीको विदेह कही जीवन्मुक्त जिनको स्नेह श्रीराम पदमें गूढ़है (१) गूढ़कही ढपोस्नेह काहे में ढपेउहै श्रीरामस्नेह रत्नरूप जो है तहां यग भगयुग मिले दिव्य संपुटहै योग नीचेको फालहै तामें रत्न हैं भोग ऊपर को फालहै जामें ढपि रह्योहै जब श्रीरामजी रत्नके गाहक आये तब श्रीजानकीजी देखिकै रामस्नेह रूप रत्न प्रकटेउ (२) पुनि बन्दौं प्रथम श्रीभरथजीके चरण बन्दनातौ बहुरि करि आयेहैं भरत के प्रथम क्योंकहा जब राजापुत्र हेतु यज्ञकीन्ह तब अग्नि जो पदार्थ दीन्हहै तामें श्रीरामचंद्र को छोड़िकै तीनिहूं भाइन में प्रथम भाग भरतजी हैं पुनि श्री भरतजू श्रीराम प्रेमकी मूर्त्तिहैं अरु प्रेम सब साधन में प्रथम है पुनि परेहैं किंतु तीनिहूं भाइन में जेठेहैं प्रथम भरतजू हैं ताते प्रथम कहा पुनि भरतजू कैसेहैं श्रीरामचंद्र बि-षयक नेमब्रत संयमप्रेम किसूके बर्णिबे योग्य नहींहैं (३) पुनि जैसे लोभी मधुकर कमल को रस दिनभरि पीवत संते संध्याभई कमल संपुट ह्वैगयो ताके भीतर रहिगयो जब भोरभयो तब कमल खुलि गयो जब अपर मधुकर कमलपर आये तब तिनको देखिकै पुनि रहिगयो यहिप्रकार कमल को छोड़ै नहीं तैसे भरत को मनहै श्रीराम-पद पंकजको नहीं तजै तिन भरतके पद पंकज बन्दौं (४) पुनि बन्दौं श्रीलक्ष्मण जीके पद पंकज कैसे हैं पदकञ्ज शीतल अमल भक्त सुखदाता पदमानन्द दाता पद पंकज हैं जिनके चरण शरणहोत संते संसारकी त्रयताप नाशहोइ जाइहै (५) पुनि श्री रामचंद्रकी कीर्त्ति बिमल पताकाहै अरु लक्ष्मणजीको यशदण्ड है तहां कीर्त्ति करुणा रसते उत्पन्नहै अरु यशबीर रसते है देखिये तो मेघनाद त्रैलोक्य बिजयी बीरता को श्रीलक्ष्मणजी बीररस रूपह्वैकै नाश करिदीन्ह त्रैलोक्य में यश पूरि रह्योहै तेहि मेघ-नाद को श्रीरामचंद्र करुणा करिकै परमपद दीन्ह कीर्त्ति त्रैलोक्य में फहराइ रहीहै अरु श्रीरामचंद्र तो सर्वरस पूर्णहैं पर करुणा शृंगार दोनोंरस स्वाभाविकै शोभितहैं अरु लक्ष्मणजू बीररस दास्यरस मयसदा हैं (६) पुनि शेष सहस्र शीश जो है सोई लक्ष्मण स्वरूप होत भयो भूभार उतारिकै फेरि शेषरूप ह्वैकै क्षीरसागर को गये जो यह अर्थ करिये तो लक्ष्मण स्वरूप में अनित्यता आवतीहै अरु लक्ष्मण स्वरूप नित्य है तहां प्रमाणहै जब सतीजू शिवको कहा नहीं मान्यो तब श्रीरघुनाथ जीकी परीक्षा लेबेको गईं तब अनेकन शिव अनेकन ब्रह्मादिक देवता देखे तहां एक २ रूपकी भिन्न भिन्न आकृति अंग देखे जैसे हजारन मनुष्य देखिये सबकी आकृति भिन्नै भिन्न देखियत है पुनि श्रीरामचंद्र सीता लक्ष्मण जीको अनेक देखे पर आकृति सब स्वरूप की एकही देखीअखण्ड एकरस तीनिहूंस्वरूप देखे तातेलक्ष्मण स्वरूप नित्यहै तहांप्रमाणहै वाल्मी-कि आध्यात्म रघुबंश काव्यअपर जो रामायणहैं तिनसबके अन्तमें जहां परधाम गमन बर्णन कीन्हहै तहांलक्ष्मण जीके तीनि स्वरूपकहे हैं एकशेषका स्वरूप सो श्रीसरयू में

प्रवेश कीन्ह निज स्थान को गये अरु एकस्वरूप चतुर्भुजरूप तहांइंद्ररथ लैआयो तापर आरूढ़ह्वैकै निजस्थानको गये अरु एक स्वरूप श्रीलक्ष्मणजी द्विभुज किशोर धनुष बाण लिये श्रीरामचंद्रकीसेवामें जैसे सदारहतेरहैं तैसे श्रीरामचंद्रसहित श्रीजानकीजी श्रीभरत शत्रुघ्नजी अरु समस्त पार्षदन संयुक्त परम दिव्य बिमानपर आरूढ़ ह्वै कै निजस्थानको प्राप्तभये तहां प्रमाणहै ब्रह्मरामायणे ब्रह्मणो वाक्यं नारदप्रति (पंचश्लोक) रामेनैवो द्भितोबीरो लक्ष्मणोबिदधत्स्वकः ॥ रूपञ्चायमहद्वैषलोकानांहितकाम्यया १ एकेनसरयू मध्ये प्रविवेशकृपानिधिः ॥ सहस्रशीर्षाभगवान्शेषरूपीरसाश्रयः २ रामानुजाश्चतुर्बाहुर्वि ष्णुःसर्बगुहाशयः ॥ ऐंद्ररथंसमारूह्यबैकुंठमगमद्विभुः ३ यानस्थोरघुनन्दनःपरपुरींप्रम्ना गमद्भ्रातृभिर्लोकानांशिरसिस्थितांमणिमयींनित्यैकलीलापदां ॥ सौमित्रिश्चतदा कलेन प्रथमंरामाज्ञयावर्त्ततेतेनैवक्रमकेनबंधुमिलितोरामिणसःकंगतः ४ श्रीमद्रामोपरंधाम भरतेन महात्मना ॥ लक्ष्मणेनसमंभ्राताशत्रुघ्नेनतथाययौ ५ ताते श्रीलक्ष्मणजी सबको कारणहैं चौपाईको अर्थ ऐसोहै काहेते शेषजी चीरसागरमें हैं अरु श्रीलक्ष्मण जी बिभूति में हैं नित्य स्वरूपहैं ताते शेषसहस्र शीर्ष जो हैं अरु संपूर्ण जगत् जो है तिन सबके कारण श्रीलक्ष्मणजीहैं ते अवतरेउ कहो अवतीर्ण भये अवतीर्ण कहो जैसे कोई ऊंचे महलते नीचेको उतरिआवै है ऐसे श्री लक्ष्मणजी के पद बन्दौं पुनिदूसर अर्थ शेषलक्ष्मणजी हैं शेषी रामचंद्रहैं शेषी कारणहै अरु शेष कार्यहै पुनि शेषी अंशीशेषअंशशेषी धर्मीशेष धर्मशेषीप्रकाशी शेष प्रकाश शेष शेषीके आश्रयहै तहां कार्य कारण शेषशेषी दोनों अखण्ड अनादिहैं नट बीजके न्याय करिकै अरु जैसे श्री रामचंद्र शेषीहैं अरु लक्ष्मण जी शेषी हैं तैसे लक्ष्मणजी शेषीहैं अरु सहस्रशीष जो सो शेषहैं ताते लक्ष्मणजी कारण हैं अरु शेषजी कार्य हैं देखिये तौ अपने कार्यहीको आज्ञादईजातीहै श्रीजानकीजीके स्वयम्बर में लक्ष्मणजी बोलतेभये (चौपाई) दिशिकुंजरहुकमठअहिकोला । धरहुधरणिधरिधीरन डोला ॥ इसी दिशा दिशिपाल पंचभूत तीनिगुण चंद्रसूर्य शेष इत्यादिकसमस्त श्रीलक्ष्मण जीकी आज्ञानुकूलहैं ताते लक्ष्मणजी सबके कारण हैं तहां प्रमाण है श्रीविष्णुपुराणे ब्रह्मणो वाक्यं (श्लोक) सौमित्रिलक्ष्मणश्चैवसृष्टिसंहारकारकः ॥ त्वमेवजलरूपेणत्वन्नधत्ते जगद्धितम् १ पंचभूतस्त्वमेवासिअग्निस्त्वंचप्रजापतिः शिवरूपेणसंहर्त्ताविष्णुरूपेणपालकः२ ममरूपेणसंसृष्टासर्वलोकस्थितिर्भवेत् मेघनादस्यसंहर्त्तासीताराधनतत्परः ३ अनेकमेकंजग दाश्रयंच चैतन्यरूपंजगदादिबीजं ॥ ब्रह्मेतरंब्रह्मबिदोवदंतितंलक्ष्मणंनौमिमहाप्रभावम् ४ ऐसे श्रीलक्ष्मण स्वरूप द्विभुज अखण्ड एकरस कालानवच्छिन्न किशोर मूर्ति श्रीसीताराम सेवामें तत्पर श्रीसीता राम इच्छासानुकूल सब सेव करतेहैं अरु अपनी इच्छा से सोभी करतेहैं ऐसेही तीनिहूं भाई जानिये इत्यर्थः (७) सो लक्ष्मण मेरे ऊपर सदानुकूल हैं किन्तु अनुकूल होहु काहेते कि कृपासिन्धु हौ सौमित्रनाम सुमित्रानन्दन कहो सुमित्रा के पुत्रहौ पुनि सुमिकहौ सुष्ठु सौम्य सम शीलहौ त्राकहौ रचकहौ सबके पुनि सुमित्र सुष्ठु मित्रहौ सबके अरु आको अकार लैकै आनन्ददाता सबकेहौ अरु तीनि गुणके परे हौ अरु सब गुणके खानिहौ (८) पुनि बंदौं शत्रुघ्न पदपंकज जिनने अकेलहीं एकहीं बार लवणासुर महाबीर मुनि महिदेव दुखदायी ताको नाशकरिदीन ऐसे शरत्व में

सुशील युद्धमें सावधान सब प्रकारते पुनि श्रीभरतजी रामानन्योपाय शून्यप्रपत्ति तिनकी सेवाते तत्पर सुशीलसेवक भरतजूके मन अनुरूप सेवकहैं अरुश्रीरामचंद्रको अति प्रियहैं (९) पुनिमहाबीर हनुमान्कोबन्दौं महावीर जिनने अकेलही रावण जो त्रैलोक्य बिजयी (दोहा) भुजबल बिश्वहिबशकरि राखेसि कोउ न स्वतंत्र। मगडलीक मणिरावण राज्यकरै निजमंत्र॥ ब्रह्माण्डमण्डलको स्वतंत्रराजा तेहिको मान मर्द्दनकरिकै तेहिको पुर अति दुर्गम गढ़लंका ताको भस्मकरिदीन एक पलमें जिनको यश श्री रामचंद्र आप बखान कीन्हहै (१०) पुनि सोरठार्थ॥ पवन कुमार बन्दौं खलओहैं बन तेहिके जराइबेको अग्नि हैं ज्ञानघनहैं जाको हृदयआगारहै तहांश्रीरामचंद्र धनुषबाणलिहे सदाबसतेहैं १॥

१८ कपिपतिऋक्षनिशाचरराजा। अंगदादिजेकीशसमाजा १
बन्दौंसबकेचरणसोहाये। अधमशरीरराममजिनपाये * २
*** ३**
हरे। ४
बिज्ञानबिशारद ५
गजनंदिनिजानकी।
ताकेयुगपदकमलमनाऊं। जासु ८
९
शायक। दायक १०
गिराअर्थ जलबीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न॥
बन्दौं सीतारामपद जिनहिं परम प्रिय खिन्न १

१८ पुनिकपि पति सुग्रीव जामवन्त बिभीषण अंगदादि जे बानरहैं (१) जामवंतादि ऋक्ष बिभीषणादि राक्षस जिनने अधम शरीर ते श्रीरामचंद्रको पायेहैं पर ये सब तौपार्षद हैं अपर जे अपर शरीरते श्री रामचंद्रको पायेहैं कोल भिल्ल शबरी गीध तरु पाषाण इत्यादिक तिनके सब पदकंज बन्दौं (२) पुनि रघुपति चरण के उपासक जे खग गरुड़ कागभुशुंडि इत्यादिक मृग गज इत्यादिक सुर बृहस्पति इत्यादि नर अनेक असुर प्रह्लाद बिभीषण इत्यादिक अपर जो कोई श्रीराम उपासक होहिं (३) तिन सबके पद कंज बन्दौं जे बिनु काम कही निष्काम श्रीराम के चेरे ह्वै रहेहैं (४) पुनि शुकदेव सनक सनंदन सनातन सनत्कुमार ये चारि ब्रह्माके पुत्र नारदादि अपर जे मुनीश बिज्ञानमें प्रवीण ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मारूढ़ ह्वैकै श्रीराम भक्त हैं (५) तिन सबके पद बन्दौं महिमें माथा नाइकै हे मुनीशहु श्रीराम जन जानिकै कृपा करहु किंतु आपन जन जानिकै कृपा करिकै श्रीराम भक्ति देहु (६) पुनि श्रीजनकसुता

श्रीजानकीजी अतिशय प्रिय करुणा निधान श्रीरामचंद्रको (७) तिन श्री जानकीजीके युग पद बन्दौं कमल तद्वत् युग कहे जे जानकी जीके पद बन्दे ते श्रीराम सहित जानकी प्रसन्न होतीहैं किंतु युग पद प्रेमापरा भक्ति दोऊ एकही बार होती हैं किंतु आरत प्रसन्न अरु दीप्त प्रपन्नदौ एकही बार प्राप्त होते हैं किंतु स्वस्वरूप परस्वरूप एक ही बार प्राप्त होइहैं पुनि लोक परलोक दोनोंके पालन हार युग चरण हैं ताते युग पद कहा सो बन्दौं जिन श्री जानकी जीकी कृपाते निर्मल मति प्राप्ति होइ (८) पुनि मन बचन कर्म करिकै श्रीरघुनाथ जीके पद बन्दौं कैसे चरण हैं सब लायक हैं अर्थ धर्म काम मुक्ति भुक्ति सबके दाता ऐसे पद बन्दौं (९) अरुण कंज इव नयन धनुष बाण लियेहैं काहेतु भक्त जन तिनके जो बिरोधीहैं तिनको नाश करिकै सुख देते हैं (१०) (दोहार्थ) गिरा अर्थ अरु जल तरङ्ग कहियत भिन्न परि अभिन्न है तैसे सीताराम को भिन्न कहियत हैं पर अभिन्न हैं एकही हैं तिनके पद बन्दौं जिन सीताराम को खिन्न जो है दीन जिनको संसार दुख रूप लाग्यो है हे श्रीसीताराम जी मैं तुम्हारी शरणहौं बहुत दुखितहौं ऐसे दीन श्रीसीताराम जीको परम प्रिय हैजो गिरा अर्थ जल बीचि इव सीतारामहैं येही अर्थ सिद्धि करिये तौ गिरा जो है बाणी तामें अर्थ उपाधि करिकै सिद्धि होतहै कोई कार्य पाइकै बाणीमें अर्थ निकसत है अरु पवन के योगते तरङ्ग उठतीहै अनि रुपाधिमें केवल बाणीहै अरु जलहै अरु जो कही श्रीराम-चंद्र जी बाणी जल स्थानेहै अरु श्री जानकी जी अर्थ तरङ्ग स्थाने कहो तौ नहीं बनै काहेते कि जानकी जी उपाधि करिकै सिद्धि होतीहैं तौ यह नहीं बनै अरु जो श्रीजा-नकी जीको बाणी जल कही श्रीरामचंद्रको अर्थ तरङ्ग कहिये तौ दुइ में एकहू नहीं बनै ऐसे कहे ते मत बिरोध उपासना बिरोध ग्रंथ कर्त्ताको आशयमें बिरोध होत है अरु श्रीसीताराम दोऊ मूर्त्ति सच्चिदानंद स्वरूप एकही हैं अरु दोऊ बिग्रह अनादि भिन्न हैं अखंडके एकरस नित्यहै (प्रमाण) रामस्सीताजानकीरामचंद्रो नित्याखंडोयेचपश्यंति धीराश्रुति ॥ अरु जो कहिये कि गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न सदा भिन्नै कहो कि अभिन्न कहो न कहो यह काकुअर्थ कहावै है तहां गिरा अर्थ जल बीचि कैसे भिन्न करहिंगे भिन्न होतई नहीं तहां यह अर्थ सिद्ध होतहै सीतानाम रामनाम ये जो द्वैपदहैं सो बंदतेहैं गुसाईजी सीता नाम अरु रामनाम ये दोऊ नाम सदा भिन्न हैं अरु दोनों नामकी तत्व अभिन्न है गिरा अर्थ जल तरङ्ग के दृष्टांत करिकै तहां यह अर्थ करते हैं पाछेकी चौपाईमें श्रीजानकी जीके श्री रघुनाथ जीके पद बन्दना करि आयेहैं अब आगे राम नाम कहिबे की भूमि बांधतेहैं ताते सीता शब्द अरु राम शब्द ये जो दोनों पदहैं तिनको बन्दिकै भिन्न कहते हैं अरु दोनों नाम के तत्व सो अभिन्न कहतेहैं गिरा नाम जो है अर्थ नाम जो है जल नाम जो है बीचि नाम जो है येते नाम अनादि वेद शास्त्र पुराण सब कहतई आवतेहैं ताते गिरा अर्थ जल बीचि येते नाम अनादि भिन्नहैं अरु गिरा अर्थ तत्व अभिन्न है एकही है तैसही जल तरङ्ग है तैसही सीताराम अरु राम नाम अनादि भिन्नहै अरु दोऊ नाम पद जो हैं सो तत्व रूप अभिन्न हैं कैसे जानिये सामवेदको महावाक्य तत्व मसीहै वेदको सिद्धांतहै सो राम शब्द ते

सिद्धि होत है अरु सीता शब्द सो सिद्धि होतहै रकार ततपद है अकार त्वं पद है हल मकार असिपदहै सीता शब्दमें तकार ततपदहै तकारमें जो दीर्घ अकारहै सो त्वं पद है पुनि तकारकी दीर्घ आकार लैकै अरु सी पद जो है ताते असी पद है ताते तत्व मसी ततपद त्वंपद असिपद सिद्धि होतहै कैसे होतहै तीनिबार सीता नाम लिखै कङ्कणाकार करिकै तब चित्रकाव्य होजाती है जेही मात्राते चाहै तेही मात्रा ते तत्व सिद्धि होत है जे पण्डित कवि होंहिंगे ते यह जानहिंगे पर द्वौ नाम तत्व रूपही हैं (१) पुनि प्रमाण है श्रीमन्महा रामायणे श्रीशिववाक्यं पार्वतीं प्रति (श्लोक ६) रकारस्तत्पदोज्ञेयस्त्वंपदोकारउच्यते ॥ मकारोसिपदंखंजंतत्वंअसिसुलोचने १ ब्रह्मेतितत्पदंबिद्धित्वंपदोजीवनिर्मलः ॥ ईश्वरोसिपदंप्रोक्तंततोमायाप्रवर्त्तते २ (ब्रह्मयामले शिव वाक्यं) रकारस्सर्वभूतानांव्याप्यंव्यापकमीश्वरः ॥ रकारोनिर्विकल्पश्च शुद्धब्रह्मसदाद्वयम्३(गुरुगीतायां) अखंडमण्डलाकारंव्याप्तं येनचराचरं ॥ तत्पदंदर्शितंयेनतस्मैश्रीगुरवेनमः ४ (महासुन्दरीतंत्रे) लिखितं त्रिबिधंसीताकंकणाकृतशोभितम् ॥ चित्रकाव्यं भवेतत्रजानातिकविपण्डितः ५ तकारंतत्पदं विद्धित्वंपदोकारउच्यते ॥ दीर्घताअसीप्रोक्तातत्वंअसिमहामुने ६ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकाण्डे मनबचनकर्मअभिनिवेशबन्दनाकृतेपंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

दो० रामचरण मन पान करु उठती षष्ठतरंग ॥
नाम निरूपण रामको निर्णय ब्रह्मप्रसंग ६

१९ बन्दौंनामरामरघुबरको *। हेतुकृशानुभानुहिमकरको * १
बिधिहरिहरमयवेदप्राणसे । अगुणअनूपमगुणनिधानसे २
महामंत्रजोहिजपतमहेशू * । काशीमुक्तिहेतुउपदेशू * * ३
महिमाजासुजानगणराऊ । प्रथमपूजियतनामप्रभाऊ * ४
जानआदिकबिनामप्रतापू । भयउशुद्धकरिउलटाजापू * ५
सहसनामसमसुनिशिवबानी । जपिजेईपियसंगभवानी * ६
हरषेहेतुहेरिहरहीको * * । कियभूषणतियभूषणतीको ७
नामप्रभावजानिशिवनीके । कालकूटफलदीन्हअमीके * ८
दो० बरषाऋतु रघुपतिभगति तुलसी शालिसुदास ॥
राम नाम बर बरण युग सावन भादों मास १

१९ जो प्रकरण श्रीगुसाईं जी कहतेहैं ताके पूर्वहीं ताको स्वरूप कहतेहैं ताके मध्य में ताको अंग कहतेहैं ताके अंतमें माहात्म्य कहते हैं ऐसेही सर्व सत्काव्यनमें जानि लेव अब रामनाम को बन्दते हैं मन बचन कर्म अभिनिवेश बन्दना करिआये हैं अरु करतेहैं बन्दौंनाम परमेश्वरके अनन्तनामहैं तामें रामनामबन्दौं परमेश्वरको कवनस्वरूप रघुबर तिनको नाम रघुबर क्योंकहा यमही कहते तहां स

होतहै दुइ स्वरूपमें सामान्य बोधहै दुइ स्वरूप में विशेष बोध होतहै परशुराम बलिराम जो परशु कहिकै बलि कहिकै रामकहै तब बोध होतहै ताते सामान्य बोध कही अरु जो केवल रामही कहै तौ रमणाद्राम इत्यपि अरु श्रीदाशरथीराम दुइ स्वरूपमें विशेष बोध होतहै जो केवल रामही कहै रघुबर न कहै तव शुष्कादैतमतबादी अपनैमत सिद्ध करै हठकरिकै ताते गुसाईंजी रघुबरको नामराम कह्या परमेश्वरके अनन्तनामहैं रामही नाम क्यों बंदे तहां जो आत्मा को नमस्कार कियो सो शरीरको करिचुक्यो तहां परमेश्वरके अनंत नाम हैं तिन सबनको आत्मा राम नाम है पर परमेश्वर के सब नाम नित्य परंपद दाताहैं ईहा शरीरशरीरी नित्य अखण्डहै एकही तत्वहै पर रामनामसर्बोपरिहै काहेते रामनाम में पञ्चपदार्थ प्रसिद्ध हैं रेफ रेफकी अकार अरु दीर्घअकार अरु मकार की अकार हलमकार यह पांचहू बिना एकौ अक्षर नाम मंत्र इत्यादिक नहीं सिद्धहोतिहैं यह बिचारिलेव शास्त्रन में ताते रामनाम बड़ोहै तहां प्रमाणहै श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं पार्वतीं प्रति (श्लोकद्वै) परमेश्वर नामानि सत्यनेकानि पार्वति ॥ परन्तुरामनामेदंसर्वेषा मुत्तमोत्तमः१ नारायणादिनामानिकीर्त्तितानिबहून्यपि ॥ आत्माते षांचसर्वेषांरामनामप्रकाशकः २ पुनि रामनाम कैसोहै हेतु कृशानु भानु हिमकरको जहां एक शब्दमें दुइ अर्थहोइ तीनचार पांचछःसात इत्यादिक अर्थहोइं आशय लिहे एक शब्दमें ताको श्लेषालंकार कही पुनि धुन्यात्मक काव्य कही यह चौपाईमें अनेकहेतु अनेक धुनि अनेक आशयहैं निजमति अनुसार एक दुइमें भी कहत हौं हेतुकहे प्रिय पुनि हेतु कहेकारण पुनि हिमकर कहे जो हिमहै पाला ताको उत्पन्नकरै ताको हिमकर कही सोचंद्रमा अरु हिमऋतु अगहन पूष इनको हिमकरकही दृष्टांत हिमऋतु जो हिमकरहै तहां कृशानु भानु हेतु कही प्रियहै काहेते प्रियहै जेते सर्वजीव भूतहैं तिनकी देहकी हिमऋतु में जाड़ दुःख देत है ताको अग्नि सूर्य निवारण करिदेतहैं ताते प्रिय है अब दृष्टांत यहां उपमेय लुप्तालंकार है सो कहते हैं दुइमास कौन हैं मय मोर रतोरतै मय इत्यादिक दूत तामें जड़ता जाड़ विषम उरलागा जड़ता नाम अज्ञानरूप जाड़ सो सबके अन्तःकरणमें लगि रह्योहै दुःख देतहै तहां रकार कृशानु अकार भानु जेहिके हृदयमें प्रवेश भये तेहिके अन्तःकरणको जाड़ रूप अज्ञान ताको नाश करतुहै तामें मकार रूपहै ताते हेतुनाम प्रिय है पुनि दूसर अर्थ हेतु कृशानुभानु हिमकर को हेतु कही कारण कार कृशानुको कारणहै अरु रकार में दीर्घ अकार सो भानु को कारणहै मकार चंद्रमाको कारण है तहां जो कोई कहै कि कारण कार्य को उत्पन्न करिकै पुनि कार्यमें लीन होइ जातुहै जैसे बीजते तरु भयो पुनि बीज तरु में लीन भयो तैसे राम नामते कृशानु भानु शशि उत्पन्न भये इनही में राम नाम लीन भयो तहां ऐसो नहीं होइहै कारण दुइ प्रकार को है एक सामान्य है एक बिशेषहै जैसे सोना को कारण एक कोई जरी बूटी पारा की खाक सो धातुमें लीन ह्वै जातु है तब सोना सिद्धि होतहै सो सामान्य कारणहै अरु पारस अतौल सोना करि देतु है आप पूर्ण बनो रहेहै सो बिशेष कारणहै तैसे रामनाम बिशेष कारण है अनेक अग्नि सूर्य चंद्र उत्पन्न करै आपु सदा पूर्णहै ये तो ऐश्वर्य राम नामे कहिबे को कौन तात्पर्य है तहां धुनि है

जब गोसाईं जी श्रीमद्राम चरित ग्रंथ करिबेको प्रारम्भ कीन्हहै जब ये ते बन्दना प्रथम करि आयेहैं जब रामनाम बिषय आये तब कछु बिचार कीन कि श्रीमद्राम चरित निर्विकार है अरु मेरी मति व्यकार युक्तहै व्यकार तीनि प्रकार के एक शुभ कर्म एक अशुभ कर्म एक अन्तष्करणकी बासना यह तीनि करिके जीव आवृत होइ रह्यो है मति मलिन होइ रहीहै अरु ताही मतिसों रामचरित्र करिबे को है तहां कैसे बनेगो जो मेरी मति निर्मल होइ तब निर्मल जो है राम चरित तब बरणौं काहेते देवता रूप होइकै तब देवताकी पूजन करै यह परम्परा (प्रमाणहै) देवोभूत्वा देवंयजेत्श्रुतिः ॥ तब बिचार कीन कि मेरी मति कैसे शीघ्र निर्मल होइ तीर्थ यज्ञ दान जप तप योग ज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिक करै पर येते साधन जब बहुत काल करै जब सिद्धि होइ तब शुद्धहोइ अथवा जन्मांतर शुद्ध होइ किंतु बिघ्न होइजाय न सिद्धि होइ अरु मोको शीघ्र शुद्धता चाहिये तहां रामनाम तुरन्त शुद्ध करैगो काहेते कि हेतु कृशानु भानु हिमकरको रकार अग्निको कारणहै तेहि पावकमें कौन शक्ति आई प्रकाश उष्णता दाहक बिशेष है दृष्टांत जैसे अग्निमें शुभ साकल्य घृत शक्कर तिल यव चावर मेवा छुहरादिक हुतिदेइ ताको शुद्धता भस्म करिकै आपनो स्वरूप करिदेतु है अरु व्यकारहुति देइ तौ उसकी व्यकारता भस्म करिकै आपनो स्वरूप करिदेतु है देखिये तो जो कार्यमें येती शक्ति है तौ को जानै कारणमें केती शक्ति होइगी अब दृष्टांत कृशानु को कारण जो है रकार तामें जो मन वाक्य अभिनिवेश भयो तहां शुभ कर्म यज्ञादिक सो साकल्य है अरु अशुभ कर्म व्यकार लकरी इत्यादिक तहां रकार शुभाशुभ कर्म भस्म करके तुरंत आपनो स्वरूप करि देतुहै अरु मध्यको अकार भानु बीजहै तामें जो मन वाक्य अभिनिवेश होइ तौ अन्धकार रूप जो बासना सो तुरंत नाश होइ जाइ है तहां रकार ते अकार ते शुभ कर्म अरु बासना नाश भई अब मकार क्यों बन्दते हैं तहां कृशानु अरु वैराग्य कै एक कृपाहै अरु भानु ज्ञानकी एक कृपा है काहेते कि वैराग्य ते संसार की राग जरि जातुहै अरु ज्ञानते अज्ञान अन्धकार नाश होतुहै तहां रकार वैराग्य हेतुहै अरु अकार ज्ञान हेतुहै गुसाईं यह बिचार कीन कि कृशानु भानु तेजोमय है अरु वैराग्य ज्ञान तेजो मयहै वैराग्यमें तत अहं वैराग्यमान् ज्ञानमेंतेज ब्रह्मास्मि अरु रकार अकारको तेजको कहै अरु मेरी मति तौ निर्मल भई काहेते रकार ते अरु अकारते कर्म शुभाशुभ अरु बासना ध्वंस भई पर वैराग्य ज्ञान तेजोमयहै तहां जो मेरे हृदयमें रकार अकार आयो कारण रूप तौ कार्यरूप तौ वैराग्य ज्ञान भी आवैगो अरु तिसमें जो अहं पदहै तेजोमय सोभी आवैगो तब उद्वेग होइगो अरु मेरी मति शांति शीतलताको प्राप्ति होइ तब राम चरित आवै ताते मकार जो है चंद्र हेतु अरु भक्ति हेतु ताको बंदौं जाते शीतल मति होइ जैसे कृशानु भानुकी तपनि चंद्रमा अपहरतु है तैसे रकार अकारमें जो वैराग्य है ज्ञान तामें अहं जो है उष्णता ताको मकार जो भक्तिबीज सो हरतुहै ताते रकार अकार मकार बंदिकै रामचरित कहौं जो कहौ कि चंद्रमा तौ अपने शीत प्रकाश ते कृशानु भानुको प्रकाश मंद करि देत है अरु सूर्य शशिके प्रकाशको मंद करि देतहै परस्पर बिरोधहै तैसो रकार अकार मकार नहीं है

दृष्टांतको एक देश लिया रकार अकार मकार ते अत्यंत प्रीति है जैसे एक चंद्रमणि होती है जो अग्निके समीप धरिदेहु तौ अग्निकी उष्णता तौ हरि लेइ है अरु प्रकाश दोउनका वनोरहै है तहां रकार अकार मकार ये तीनों वैराग्य ज्ञान भक्तिके उपादान कारणहैं अरु कृशानु भानु हिमकर ताके निमित्त कारण हैं जैसे मृत्तिका घटको उपादान कारण है अरु कुम्हार निमित्त कार है देखिये तो तहां भूमि के एक देश ते अनेक घट होतेहैं अरु एकहु कुम्हार अनेक घट बनाय देतुहै तैसे श्री राम नाम है ऐसे अनेक अर्थ राम नाममें हैं ताको बंदौं तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिव वाक्यं (श्लोकचारि) रकारोनलबीजंस्याद्येसर्वेबाड़वादय: ॥ कृत्वामनोमलंसर्वंभस्मकर्म शुभाशुभम् १ अकारोभानुबीजंस्याद्वेदशास्त्रप्रकाशक: ॥ नाशयत्येवसद्दीप्त्यायाऽविद्याहृदयंतम: २ मकारश्चन्द्रबीजंच सद्म्यापरिपूरणम् ॥ त्रितापंहरतेनित्यं शीतत्वंतुकरोतिच ३ रकारहेतुवैराग्यंपरमंयच्चकथ्यते ॥ अकारोज्ञानहेतुश्चमकारोभक्तिहेतुकम् ४ जो कोई कहै कि रामनाम को ऐता प्रताप जाके स्मरण करत संते बाह्यान्तर तुरन्त शुद्ध होइ तहां प्रमाणहै (अगस्त्यसंहितायां) अभिरामेतियन्नाम कीर्तितंविवशाच्चये ॥ तेपिध्वस्ताखिलाद्योद्यायांतिविष्णो:परंपदम् ॥ रकार मकारको प्रभाव अमितहै इत्यर्थ: (१) पुनि श्रीरामनाम कैसोहै अब अंगकहतहैं रामनाम बिधि हरि हर मयहै मयकहो तदात्मक को यह सेना मनुष्य मयहै यह ग्राम गृहमय है सूर्य प्रकाशमय है पट सूत्रमय है इत्यादिक रूप एकहीहै ताते तदात्मक मयकहो पुनि मयकहो बाहुल्यको यह मणि द्रव्य अन्न वस्त्र गज तुरंग इत्यादिमय है ये पण्डित विद्यामयहै ये सन्त दिव्य गुण मयहै कुवेर धनमयहै भूमि बीजमय है इत्यादिकनके स्वरूप गुणभिन्नहैं ताते बाहुल्य मयकहो ऐसेही रामनाम बिधि जोहैं ब्रह्मा हरि जोहैं बिष्णु हरजोहैं महादेव तिनमय रामनाम तदात्मक मयहै अरु बाहुल्य मयहै जब गुणनते परे तौ नहु रूपहै तव तदात्मक मयहै जब गुणनको ग्रहण कियो तब बाहुल्य मयहै काहेते कि श्रीरामचंद्र की एकपाद बिभूति में अनन्त ब्रह्माण्ड हैं तहां ब्रह्माण्ड प्रति ब्रह्मा विष्णु शिव हैं ताते राम नाम बिधि हरि हर बाहुल्य मय है क्रमालंकार करिकै जानब रकार बिधि मय अकार हरिमय है मकार हर मयहै ये तीनिहूं रूप सूक्ष्म गुणन की साम्यता शुद्धरूप ओंकारमें लक्षि होतेहैं तहां तदात्मक मयहै सो ओंकार मोक्षदाताहै (श्लोक एक पद श्रीभगवद्गीतायां) ओंमित्येकाक्षरं ब्रह्म ऐसो ओंकार रामनाम के अंशांशते सिद्धि होत है कैसे होत है रकार में जो रेफ है सो ब्रह्ममय है अरु रकार मय अकार सो नादमयहै जाको योगीजन सुनतेहैं महानाद जाकोकहो अरु बिंदुमय हल मकार है अरु जीवमय मकारको अकार है अरु वेद व्याकरण इत्यादिक जेते स्वरहैं तेहि मय दीर्घ अकार है अरु जब प्रणव होत भयो तब माया को कारण है ताते ये षट्तत्व करिकै रामनाम आवृत है तहां नादरूप जो अकार है सो उकार होत है अर्द्ध भागते वेदसूत्र करिकै अरु मुनिन की वाक्यमें जहां आर्ष बाणी है तहां व्याकरण को प्रयोजन नहीं है केवल श्लोकही के पढ़नते अर्थ सिद्ध होतु है ताते इहां आर्षपद है तहां नादरूप अकार उकार ह्वैकै अकार के पूर्व बिपर्यय ह्वैकै प्राप्त भई अकार

उकार मिलिकै ओकार भयो हलमकार अनुस्वार भयो ओंकार सिद्ध भयो अरु मकार को अकार सबर्णी मानिकै नादरूप ओंकार में प्रवेश भयो अरु रेफ अन्तर भूत भयो अथव सिद्ध भयो अथवा व्याकरण के सूत्र करिकै रेफ को बिपर्यय ह्वैकै अकार जो दोनों सो एक भयो ताके पूर्व ह्वैकै रेफ बिसर्ग भयो विसर्ग को उकार अकार मिलिकै ओकार भयो हलमकार अनुस्वारभयो तब ओंकार सिद्ध भयो मकारको अकार सबर्णी मानि कै नादरूप ओंकार में प्रवेश भयो ओंकार सिद्धि भयो ताते बिचार लेब राम नामके अंशके अंशते बीज जोहै अरु ओंकार जो है अरु सो ऽहं जो है ये तीनिहूं सिद्धि होते हैं ताते रामनाम बिधि हरि हर मयहै तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं (श्लोक १२) अंशांशैरामनामश्च त्रयःसिद्धाभवन्तिहि ॥ बीजमोंकार सोऽहंचसूत्रमुक्तंमितश्रुतिः १ रामनाममहाविद्याषड्भिर्वस्तुभिरावृतं ब्रह्मजीवमहानादैस्त्रिभिरन्यद्वदामिते २ स्वरेणविन्दुनाथैवदिव्ययामाययापिच पृथक्त्वेनविभागेनसांप्रतंशृणु पार्वति ३ परब्रह्ममयोरेफोजीवोकारश्चमश्चयः रस्याकारोमयोनादःरायादीर्घस्वरामया ४ मकारव्यंजनंबिन्दुर्हेतुःप्रणवमायया अर्द्धभागादुकारस्यद्वकारोनादरूपिणः ५ रकार गुरुएकारस्तथावर्णाबपर्ययः मकारव्यञ्जनंचैवप्रणवंवाभिधीयते ६ मस्यासवर्णितंमत्वा प्रणवेनामरूपधृक् अंतर्भूतोभवेद्रेफः प्रणवेसिद्धिरूपिणी ७ वेदेव्याकरणेचैवयेचबर्णाःस्वरास्मृताः रामनाम्नैवतेजाताःसर्वेषांनात्रसंशयः ८ अकारःप्रणवेसत्वमुकारश्चरजोगुणःतमोऽहलमकारःस्यात्प्रयोहंकारमुद्भवः९ प्रियेभगवतोरूपैस्त्रिबिधोजायतेऽपिच बिष्णुर्बिधिरहंचैवत्रयोगुणविधारिणः १० ऐसेही श्रुति स्मृति कहतु हैं (महाशम्भुसंहितायांश्लोक) प्रणवंकेचिदाहुर्वैबीजंश्रेष्ठंतथापरे तत्वारामेतिबर्णाभ्यांसिद्धिमाप्नोतिमेमतं ११ (पुनिश्रुतिः) प्रणवंकेवलमकारोमकारश्चार्द्धमात्रसहितं तस्मात्प्रणवस्यचकारस्यचोकारस्यवमकारस्यचार्द्धमात्रस्यचइत्यथर्वणश्रुतिः १२ अकारोप्रथमाक्षरोभवतिउकारोद्वितीयाक्षरोभवतिमकारस्तृतीयाक्षरोवभर्तअर्द्धमात्राचतुर्थाक्षरोभवतिविन्दुः पञ्चमाक्षरोभवतिनादःषष्ठाक्षरोभवति तारकत्वात्तारको भवतितदेवरामेतितारकंब्रह्मत्वंबिद्धीतिश्रुतिः१३पुनिवेदप्राणसेपुनि राम नामवेदके प्राणहैं जैसेशुद्ध पञ्चतत्वमय ब्रह्माण्डसमष्ठिरूपहै तैसेपञ्चतत्वके व्यकारमय अंडकही शरीरहै मनुष्यादिक विष्टिरूपहैं ताते अण्ड ब्रह्माण्ड दोऊ पञ्चतत्वबेष्ठित विग्रह है तिनके पञ्च प्राणहैं प्राण अपान उदान व्यान समान येते पञ्चप्राण शुद्धरूप बिराट में हैं अरु पञ्चप्राणके पञ्चव्यकाररूपप्राण सोई मनुष्यादिकन में हैं तैसे वेदन के प्राण दिव्यरूप राम नाम है वेदको मूल एक ओंकार ताते वेद चारि पुनि पांच साम यजुः अथर्वण ऋग सुक्ष्म महाभारतादि ये पांचहू वेदके जो अक्षर सो स्थूल विग्रह जानिये अरु पांचहूको सिद्धांत अर्थ जोहै सोई पञ्चप्राण रामहै रेफ रेफको अकारदीर्घ अकार हल्मकार मकारको अकार पांचौ वेदके प्राणहैं जैसे प्राण स्थूल शरीरको त्यागि दियो तब शरीर मृतक भयो तैसे जेहिवेदस्मृतिपुराणइत्यादिक सूत्रऋचाश्लोक पद अक्षरन में रेफ बिसर्ग अकार हलमकार अनुस्वार न होइ ते सब मृतकरूप ह्वै जाइँ अरु बेदको सिद्धांत जोहै एक तत्व तेहिमयहै रामनाम ताते वेद प्राणसे कहा (श्लोक)रामनाम्नःसमुत्पन्नःप्रणवोमोक्षदायकः रूपंतत्वमसेश्चासौवेदतत्वाधिकारिणः १ पुनि रामनाम

कैसोहै अगुण कहो निर्गुणहै अनूपम जाकी उपमा को कछु नहींहै अरु अनेक निधानकहे स्थानहं किन्तु अगुण जो ब्रह्महै अनूपम ताको गुणकहे प्रत्यक्ष करिबे को निधानहै रामनाम अथवाअगुणअनूपम सात्विक राजस तामस ये जोतीनि गुणहैं ताकेपरे जे गुणहैं योग वैराग्य ज्ञान शांति शील दया क्षमा करुणादिक एते गुण अगुणहैं अनूपमहैं मुक्तिउपहित आत्माके गुणहैं प्रकृतिके गुणनहींहैं तिन गुणनको निधान है रामनाम जैसे धनकोनिधानकुवेरहै किन्तुअगुण अनूपम जो श्रीरामचन्द्रहैं तिनके अगुण अनूपम गुणहैं रामनाम जैसे पतंगमें गुणहै ताकरिकै पतंगपाइयतहै तहांगुण पतंगकोरूपभिन्नहै रामनाम रामरूप अभिन्नहै इहां दृष्टांतको एकदेश लिया इत्यर्थः (२) रामनाममहामंत्रहुते उत्तमहै काहेते जाको महेश अहर्निश जपते हैं अरु काशी में सर्व जीवनको मुक्तिहेतु उपदेश करतेहैं महेशकी साक्षी प्रथम क्यों दिया देव दानवमनुष्यादिक सबनके पांच ईश्वर हैं अरु ऋषि मुनियोगी ज्ञानी ध्यानी समाधी वैष्णव सबमें अग्रणीय हैं महेश ताते जो महेश को सिद्धांत सो तत्व सर्वोपरि जानिये (प्रमाणंभागवते वैष्णवानां यथाशम्भुः मनुस्मृतौश्लोकत्रयः) सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तविभ्रमकारकाः एकएवपरोमंत्रोरामइत्यक्षरद्वयम् १ (हिरण्यगर्भसंहितायां) श्रीराममितिपरंमंत्रंतदेवपरमंपदम् तदेवतारकंविद्धिजन्ममृत्युभयापहं २ (काशीखण्ड) पेयंपेयंश्रवणपुटके रामनामाभिरामं ध्येयंध्येयंमनसिसततंतारकंब्रह्मरूपं जल्पंजल्पंप्रकृतिविकृतोप्राणिनांकर्णमूलेवीथ्यावीथ्यामटतिजटिलः कोपि काशीनिवासी (३) पुनि रामनामकी महिमा गणेश जानते हैं जाके प्रतापते प्रथमपूजा भई एकसमय में श्रीशिवजू लोक मंगलार्थ गणेशके पूजाकी इच्छाकीन तब संपूर्ण शिव के गण पूजाकी सामग्रीही जहां तहां ते लिहे आवते रहे तब स्वामिकार्तिक देखिकै बूझते भये तब सब समाचार दूतनके मुखते सुन्यो तब बिचार कीन कि शिवजू गणेश को क्यों पूजतेहैं अरु जो पिता पुत्र को अधिकार देत संते पूजते हैं तौ वेदकी आज्ञा जेठे पुत्रको है सो हम बनेहैं यह बिचारिकै षट्मुख शिवके पास गये शिवजी जानिगये तब शिवजी कहा हे महावीर षडानन तुम अरु गणेश ब्रह्माके पास जाहु जाको ब्रह्मा पूजिदेहिं ताको सब पूजैं तब दोऊजन ब्रह्माके पास जाइकै सब कथा कही तब ब्रह्मै कहा दोऊ जन सुनो सामर्थी पूजा जात है जो पृथ्वीकी प्रदक्षिणा प्रथम करिआवै ताको पूजैं तब स्वामिकार्तिक मयूर पर चढ़े गणेश मूष पर चढ़िचले तब मयूर आगे उड़ि चल्यो मूषा पाछे रह्यो तब नारद जी मिले गणेश को तब कहा हे गणेश तुम नहीं पहुंचोगे तुमजाहु ब्रह्मा की सभा में रामनाम लिखि कै प्रदक्षिणा करहु रामनाम अनेक ब्रह्माण्ड को कारण है स्वामिकार्तिक जानि जाहिंगे तब गणेश वैसाही कियो तहां जब स्वामिकार्तिक चले जाहिं मूषा के पग को अंक देखते जाहिं आश्चर्य मान्यो तब दुइदंड में षटमुख संपूर्ण ब्रह्मांडकी प्रदक्षिणा करिआये ब्रह्माकी सभामें गणेश को बैठे देख आश्चर्य माने तब ब्रह्माते पूछते भये कि गणेश प्रदक्षिणा को करि- आये तबब्रह्मै कहो तुम को कछु देखि परेउ होइ तौ गणेशते बूझहु तब गणेशते बूझे गणेश कहा कि श्री नारद जू के उपदेश ते हमने राम के नाम की प्रदक्षिणा कियी है तब स्वामिकार्तिक समुझिगये ब्रह्मा के पाछे आपुही तिलक कियो तब षट्-

मुख रामही नाम आधार कियो इति शैवतंत्रोक्ता: (४) आदि कवि श्री वाल्मीकि जी नामको प्रताप जानतेहैं मरा मरा उलटा नाम जपिकै शुद्ध स्वस्वरूप पर स्वरूपकी प्राप्ति भई (५) शिवजी भगवान्के सहस्रनाम श्लोक वद्धमें कीन्ह तब पार्वती जी बूझती भईं कि हे महादेव यह जो सहस्रनाम आप कीनहै ताके पाठ कियेते बड़ो महत्फलहै तब शिवजू कहा कि हे प्रिया भगवान् के अपर सहस्रनाम उच्चारण करै अरु राम नाम एक बार उच्चारण करै सो तुल्यहै पाद्मे (श्लोक ८) रामरामेतिरामेति रमेरामेमनोरमे सहस्रनामतत्तुल्य रामनामवरानने १ (पुनिहारीतस्मृतौचतुर्थअध्याये) श्रीरामायनमोह्येततत्त्वंब्रह्मनाम नाम्नांविष्णो:सहस्राणांतुल्यएवमहामनु: २ अनन्ताभगवन्मंत्रानानेनतु समाकृता: श्रेयोरमणसामर्थ्यात्सौंदर्यगुणसागरात् ३ श्रीरामइतिनामेदं तस्यविष्णो:प्रकीर्तितं रमणान्नित्ययुक्तत्वाद्रामइत्यभिधीयते ४ एतदेवपरंमंत्रंब्रह्मरुद्रादिदेवता: ऋषयश्चमहात्मानो मुक्ताजप्त्वाभवांबुधौ ५ एतन्मंत्रमगस्त्यस्तुजप्त्वारुद्रत्वमाप्नुयात् ब्रह्मत्वं काश्यपोजप्त्वा कौशिकस्त्वमरेशतां ६ कार्तिकेयोमनुश्चैवइंद्रार्कगिरिनारदा: बालखिल्यादिमुनयोदेवतात्वंप्रपेदिरे ७ इममेवजपन्मंत्रं रुद्रस्त्रिपुरहारक: अद्यापिरुद्र:काश्यांतु सर्वेषांत्यक्तजीविनां ८ सो पार्वती सुनत भईं सहस्रनाम सम रामनामको प्रताप शिव के मुखते सुनिकै पार्वती शिवके संग जपत भईं शिव सहस्रनाम पाठ करैं पार्वती जी राम नाम जपत भईं किंतु जपिकै शिवके संग तब भोजन करहिं (६) तव पार्वती के हृदय के हेतु कही प्रीति हेरिकै हर हर्षे तब किय भूषण तिय जेती स्त्री ब्रह्माण्डमें हैं तिन सबनके भूषण कीन नाम सर्वोपरि बड़ाई दीन्ह अथवा यह जानिकै कि जब ताईं सहस्र नाम जपतेहैं तब ताईं पार्बती रामनाम सैकरन बार जपती हैं ताते पार्बती को भजन हमारे भजनते बहुत बढ़ेउ तब यह विचारिकै किय भूषण तिय पार्वतीको अपने अंग को भूषण कीन्ह नाम अर्द्धाङ्गी कीन जनु भजन मिलाइकै बांट लीन आधा आधा भूषण तियको अरु पार्बतीके भूषण शिव आपु हैं अथवा तियका जिन शिवके तियको भूषण सपनेहुं नहींहै काहे ते शिवजी बिरक्तहैं ते शिव पार्बतीको भूषण कीन्ह रामनाम में प्रीति जानिकै (७) रामनामको प्रभाव शिव जी नीकी प्रकार जानते हैं काहेते जब क्षीरसमुद्र मथन भयो तब अनेक रत्न निकसे तहां विषको घट निकस्यो ताकी ज्वाला ते सुर असुर इत्यादिक जरेजाहिं तब भगवान् शिवको प्रेरणा कियो तब शिवजी भगवान्की आज्ञा मानि सबको दु:खित देखि कै रामनाम कहिकै बिषको घटपान करिगये सो बिष सत्य अमीफलको दियो श्री शिवजी सदा अविनाशीहैं अरु इंद्रादिक जो देवता ते अमृत पियो तदपि ते मन्वंतर प्रति पतन होतेहैं (८) (जैमुनिपुराणेवेदव्यासवाक्यं श्लोक २) रामनाम्निपरंब्रह्मसर्ववेदप्रपूजितं महेशएवजानातिनान्योजानातिवैमुने १ राम नामपरंस्वादु भेदज्ञारसनायजा तंनामरसनेत्याहुर्मुनय:तत्वदर्शिन: २ दोहार्थ ॥ बर्षा ऋतु रामभक्तिहै राम नाम वर माम श्रेष्ठ जो दोऊ बर्ण अक्षर हैं तहां रकार श्रावण मासहै मकार भादोंमास है देखिये तो दुइ मास करिकै ऋतु कहावैहै तैसे राम दोऊ अक्षरको सुमिरण सोई भक्ति कहावैहै अरु बर्षा ऋतु जो है सो शालि जो धान ताको विशेष पोषण करतुहै काहेते कि धानको केबल बर्षा ऋतुमें मेघही को जल आधार है

अपर जल सामान्यहै अरु शालि संज्ञा तो गेहूं यव इत्यादिक सबको है ते सब कूप सर नदीके जल जो एकहू बार पावतेहैं तब होतेहैं किंतु बिना जलहू ते होते हैं कोई केवल भूमिकी शरदते कोई शीत पाइकै होतेहैं इत्यादि तुलसीदास शालि सुहृद्दास जाके केवल रामनाम आधारहै सोई धानहै रामनाम श्रावण भादों मास है रसना मेघ है उच्चारण करना सोई गर्जवहै प्रेमजल है बुद्धि भूमिहै जीव धानहैं अन्तःकरण संयुक्त अरु जिनके नेम जप तीर्थ व्रत दान योग वैराग्य ज्ञान इत्यादिक अरु नाम सबको बराबरि भरोसहै ते दास अपर शालिहैं उरद मोठ जुवार गेहूं यव चना मसूर इत्यादिकहैं ६॥

२० आखरमधुरमनोहरदोऊ * । बरणबिलोचनजनजियजोऊ १
सुमिरतसुलभसुखदसबकाहू । लोकलाहुपरलोकनिबाहू * २
कहतसुनतसमुझतसुठिनीके । रामलषणसमप्रियतुलसीके ३
बरणतबरणप्रीतिबिलगाती । ब्रह्मजीवइवसहजसंघाती * ४
नरनारायणसरससुभ्राता * । जगपालनबिशेषजनत्राता * ५
भक्तिसुतियकलकरणबिभूषण।जगहितहेतुबिमलबिधुपूषण ६
स्वादतोषसमसुगतिसुधाके । कमठशेषसमधरबसुधाके * ७
जनमनमंजुकंजमधुकरसे * । जीहयशोमतिहरिहलधरसे * ८
दो० एक छत्र यक मुकुटमणि सब वरणन परजोउ ॥
तुलसी रघुवर नाम के बरण बिराजत दोउ १

२० राम ये जो दोऊ अक्षर सो मधुरहैं भक्ति रसमय हैं सबको प्रियहैं अरु मनोहर मनको हरतहैं सुन्दर अतिशय हैं काहेते कि जेते भगवत्के नामहैं ते सब स्वर संयुक्त हैं ए ऐ ओ औ अ ई उ ऋ लृ इत्यादि स्वरहैं अथवा जो इन स्वर ते रहित नामहैं केवल अकारही स्वर है तामें छोटे बड़े अक्षर हैं किंतु द्वित्व अक्षर हैं अरु राम नाम केवल अकार युक्त है सो अकार स्वराधिपहै अरु दोऊ अक्षर समहैं ताते मनोहर नाम अति सुन्दर हैं दोऊ अक्षर पुनि बर्ण जो हैं छत्तीस अक्षर जा करिकै वेद स्मृति पुराण सब हैं तेहि सब बर्णन के नेत्र हैं राम नाम बि कहे बिशेष नेत्र हैं किंतु बि नाम दुइ को दोऊ नेत्रहैं मस्तकपर होते हैं तैसे र बिकार की रेफ मकारहल अनुस्वार दोनों सब अक्षरनके माथेपर रहते हैं अरु जन जोहै दास तिनके जीवके नेत्रहैं रामस्वरूप देखिबेको जा जीवके रामनाम नेत्रही हैं सो अंधहैं (१) पुनि सुमिरतकै सुलभहै अपर नाम जो परमेश्वर के हैं ताको जो पढ़े होइ तब शुद्ध कहि आवै अरु राम सबते कहि आवैहै अरु सबको सुखदाता है जेहि मोक्षको अनेक यत्न पण्डित जन करते हैं सोई मुक्ति रामनाम उच्चारण करत सन्ते होतुहै (श्लोक अगस्त्य संहितायां) श्रीरामेतिवदन्ब्रह्म भावमाप्नोत्यसंशयः। तत्वविद्यार्थिनोनित्यंरमंतेचित्सुखात्मनि १ पुनि लोकलाहु उज्ज्वलयश अरु परलोक निबाहु नाम मोक्षदाताहै (२)पुनि

सोरह हजार चींटी जरिगईं तहां देखिये तो बिना बिचार की धर्म्म कर्म्म अपराधही है तहां शालग्राम को भोग लगाये सन्ते एते गुण भये वाही पुण्यते षोड़शो हजार चींटी तेरी रानी भई हैं अरु जिनने मोको कपड़ा दियो सो छोटी रानी भई तिसको मैं पुत्र भयों तहां मोको तो सोरह हजार बार जन्म धरिबे को होत तहां एक शालग्राम को भोगलगायेसंते एक जन्म धरिबेको भयो ताते सोरहहजार एकही साथ अपनोदांव लियो यह समुझि लेहु बहुतका कहों यह कहिकै बालक शरीरको त्यागिकै श्रीराम-चन्द्रको प्राप्तभयो तब राजाको ज्ञानभयो नारदके उपदेशते राज्यको त्यागिकै विरक्त भयो अरु सब रानी वैष्णवी भईं सब भगवत् को प्राप्तभईं नारद ऐसेहैं पुनि हिरण्य-कशिपु त्रैलोक्यराजा सो तप करिबे को गयो तहां हिरण्यकश्यप की रानी गर्भ युक्त रहै तहां नारदजू जाय प्राप्त भये तब रानी के गर्भ में बालक रहै सहित रानी बालक को श्रीराम तत्त्व उपदेश करने लगे काहेते जब जीव गर्भमें रहत है तब जीव को ज्ञान होत है शुद्ध दशा रहती है तहां जीवको अनेक जन्म की सुधि रहती है सारा सार को विवेक होत है तब यह आपु को चूक मानिकै यह कहत है कि जो अबकी जगत् में जाउँ तो परमेश्वर को भजन करौं कृतार्थ होइ जाउँ ऐसे कहत सन्ते गर्भते बाहिर भयो तब प्रसव की पवन लग्यो तब ज्ञान भूलिगयो तब रोदन करने लग्यो आगे बाल पौगण्ड कौमार किशोर युवा बृद्ध इत्यादिक अवस्थनमें अनेक दुःख पावत भयो ताते श्री नारदजू प्रह्लाद को गर्भ ही बिषे उपदेश कियो तब प्रह्लाद जीकी रामाकार वृत्ति भई तेही दशा में प्रह्लाद उत्पन्न भये प्रसव को पवन स्पर्श नहीं कियो सर्ब भूत श्री राममय देखिपरेउ तहां प्रह्लादही द्वार ह्वैकै हिरण्यकश्यप को बधभयो अरु मोक्ष को प्राप्त भयो ऐसे नारद हैं यह सप्तऋषि कहते भये अरु तेहि नारद को गुरु करिकै तुम अपनी गृहस्थी कौन चहत हौ (२) सप्त ऋषि बोले हे उमा जे कोई स्त्री पुरुष नारद को उपदेश सुनैं ते बिशेष गृह त्यागि कै बिरक्त होइ जाईं (३) नारद मन को कपटी है अव ऊपर के देखत सन्त है मन को बेग संकल्प बिकल्प ताको कपटि लीन्ह अथवा संसार के जाल को काटिकै अपने सदृश करते हैं ताते कपटी कहा (४) पुनि पांचकी चौपाई ते छःकी चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (६) यह संसार में ठगि कै नाम युक्त करिकै ज्ञान बैराग्य दैकै जीव को निकासि लेते हैं ताते ठग कहा (७) पुनि अठत्तरि अष्टपदी की आठ की चौपाई ते उन्नासी अष्टपदी की सात चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (७)॥

७९ अजहूं मानहु कहा हमारा । हमतुम कहं बरनीक बिचारा १

अतिसुन्दर शुचि सुखद सुशीला । गावहिं वेद जासु यश लीला २

दूषण रहित सकल गुण राशी * । श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी ३

...उ बखाना । ...बिहंसि भवानी ४

सत्य कहेहु गिरिभव तनया हा । हठ न छूट छूटहि बरु देहा * ५

स्वाद गू गहो जानैहैं कहि नहीं सकै (८) दोहार्थ ॥ एक छत्र है जो रकार में रेफहै सो जलतुम्बिका के न्यायते सब अक्षरनके शीशपर दिव्यछत्ररूप शोभितहै मकार हल मोनुस्वार: यहि सूत्र करिकै मकार दिव्य मुकुट मणिवत् दोऊ शोभित हैं अरु जो रेफकी अकार मकार की अकार दीर्घ अकार ताके आश्रय सब अक्षर है सो अकार राजाहै (श्लोकार्द्ध श्रीमन्महारामायणे (नवर्णांरामनामेदं केवलंचस्वराधिपं ॥ मुकुटोछत्रमर्वेषां मकारोरेफव्यंजनम् १ अथ च ॥ यन्नामसंसर्गवशाद्विवर्णानन्दरौमूर्द्धनिगतोऽक्षराणां ॥ तद्रामपादौ हृदये नधाय देहीकथंनोर्ध्वगतिंप्रयाति २ ॥ ६ ॥

२१ समुझत सरिस नाम अरु नामी । प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी * १
नाम रूप दोइ ईश उपाधी * । अकथ अनादि सुसामुझि साधी २
को बड छोट कहत अपराधू । सुनि गुण भेद समुझिहहिं साधू ३
देखिय रूप नाम आधीना । रूप ज्ञान नहिं नाम बिहीना * ४
रूप बिशेष नाम बिनु जाने । करतलगत न परत पहिंचाने * ५
देखे । आवत हृदय सनेह बिशेषे * ६
नाम रूप गति अकथ कहानी । समुझत सुखद न परत बखानी ७
अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी ८
दो० राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार ॥
तुलसी भीतर बाहिरहु जो चाहसि उजियार १

२१ अब गोसाईं जी रामनाम अरु नामी कही विग्रह परम दिव्य मूर्ति राम स्वरूप सो कहते हैं काहेते जो कोई कहै कि गोसाईं जी नामाकार रहे हैं स्वरूपाकार अरु ब्रह्मज्ञानमें सामान्य रहेहैं ताते नाम नामीको प्रकरण कहते हैं तहां त्रैताप के उपासक सबहैं सावयव ब्रह्म अरु निरावयव ब्रह्म अरु शब्द ब्रह्म नाम तहां तो नहूं तत्व एकही हैं पर ध्यान ज्ञान ते नाम करिकै जीवको ब्रह्म परब्रह्म दोउ परमेश्वर कै प्राप्ति सुलभ आगे कहतेहैं समुझत सरस नाम अरु नामी नाम अरु नामी जो स्वरूप सो समुझत संते सरस कहे बराबरिहै अरु दोउनकी प्रीति परस्पर कैसीहै जैसी प्रभु जो स्वामी की प्रीति सेवक पर अरु सेवककी प्रीति प्रभु परहै इहां ऐसो न जानब कि नाम नामी में को स्वामीहै को सेवकहै इहां प्रीति बराबरि लीन्ह है सेवक स्वामी की (श्लोकार्द्ध) योमांपश्यतिसर्वत्र सर्वंचमयिपश्यति ॥ (भिन्नश्लोक) येयथामांप्रपद्यन्तेतांस्तथैवभजाम्यहं (भगवद्गीतायां) (१) नामरूप दोईश उपाधी जो कही कि नाम अरु रूप ईश बिषे उपाधि है ईश जोहै सो नामरूप रहित है जब देव महि गऊ ब्राह्मण सन्त जन को राक्षसन करिकै पीड़ा भई तब ईश इनके रक्षाको उपाधि करिकै रूप नाम को ग्रहण करते हैं जो यह अर्थ करिये तो पूर्वापर विशेष होत है अरु शास्त्रको विशेष पूर्वापर

है पूर्वा पर बिशेष अरु ग्रंथ कर्ता के मत में बिरोध होत है कैसे यह नाम प्रकरण में पूर्वही स्वरूप को बिशेष कीन्ह है बन्दौं रामनाम रघुवर को रघुवर बिशेषण कहा अरु द्विभुज धनुर्द्धर बिशेष कहा और प्रकरण के परेमें राम नाम बिशेष कहा (दोहा) राम चरित शतकोटि महँ लिय महेश जियजानि । गोसाईंको सिद्धांत श्री रामनाम श्रीराम स्वरूप नित्य कैशोर धनुर्बाण धरे ताते जो नाम रूप उपाधि मानिकै अर्थ करै तिनने रामायण को बिषय नहीं जान्यो ऐसो अर्थ यहां असिद्ध है अब यथार्थ सिद्ध करते हैं नामरूप दोऊ ईशके उपकही समीपको अधिकही प्राप्ति करतहैं जो ईशको नाम स्मरण करै किंतु ईशके स्वरूप को ध्यान धरै तेद्वौ ईश जो परमात्मा के समीप जीवको प्राप्ति करैहैं इहां तो बराबरि कहा आगे नामके आधीन नामी कहैंगे काहेते इहां प्राप्ति हेतुहै तामें सरल काठिन्य भेदहै नामके स्मरण ते प्रीति संयुक्त ईश आपुही प्रत्यक्ष होतुहै जीवके समीप अरु जो ईशके स्वरूपको ध्यानधरै तब ईशके समीपको जीव जाइ कै प्राप्त होइहै पर ऐसी समाधि जब लगै जब चतुष्ट अंतष्करण कै बृत्ति अरु बाह्य इन्द्रिनकै बृत्ति एक ह्वैकै आत्मामें लय ह्वैजाहि तब अखंड तैलवत् धार समाधि स्थित होइ ईशके स्वरूपमें जैसे बिना पवन के दीपक की ज्योति नहीं हलै जैसे चन्द्रमा कै प्रतिबिम्ब निर्मल जब स्थिर रहै हलै नहीं तब चंद्रमा को प्रतिबिम्ब चंद्रमा एकही देखिपरै है जैसे चित्रकी बेलि ऐसे जब अखंड बृत्ति आत्माकी परमात्मा में निर्विकल्प समाधि लगै तब यह जीव देह छोड़ि कै ईश के उपकहे समीप अधिक है प्राप्ति होइहै सो कठिन है अरु जो नाम जपै स्नेह संयुक्त तब ईश आपुही आवत है सहज में जैसे अपने गुरु कोई पर्वतके परे रहतेहैं अरु शिष्यके इच्छा भई कि गुरु के समीप को प्राप्त होऊं तहां बन नदी सर्प सिंह पहार चोर इत्यादिक करिकै पंथ अगम है शिष्य की गम्य नहींहै अरु जो गुरुने आपुही बिचारेउ शिष्य को प्रेम तौ शिष्य के घर आपुही आये काहे ते समर्थ हैं कृपालु हैं तबहूं शिष्य गुरुके समीप को प्राप्तभयो तैसे नामके जपते ईश आपुही आवत हैं तब जीवकी समीपता भई अरु ईशके स्वरूप को ध्यान सो कठिन है काम क्रोध लोभ इत्यादिक नदी पर्बत सिंह सर्प इत्यादि हैं ताते ध्यानमें अनेक बाधाहैं जो कदाचित् निर्विघ्न निर्बहि जाइ तौ जीव ईशके समीप को जाइहै ताही ते नामके आधीन स्वरूप कहैंगे अथवा व्यंग्य अर्थ है नाम रूप द्वौ ईशके उपाधी हैं ईशको नाम जपै किंतु रूपको ध्यानकरै तब ईशकी उपाधि होती है तब ईश पर धाम को छोड़ि कै चलो आवत है तहां नाम रूप अनादि है अकथ है दोनोंकी गति सुष्ठु समुझिते साधत बनै है (२) नाम रूप दोनों बड़ छोट नहीं कहा जायहै जो कहै तो अपराध होतहै नामरूपके गुण ताको सुनिकै गुणीके जो भेदहोइ-गो सो प्रवीण साधु समुझैंगे आगे जो व्यंग्य युक्ति है सो मैं कहत हौं (३) देखिये तौ रूप जोहै सो नामके आधीनहै मेरी समुझ में कैसे जानिये जैसे कोई एक कहूं सेर भर अन्नके रोजगार को जातहै तहां दैवयोगते कहूं एक रत्न मिल्यो पीत लाल इत्यादि रूपको ज्ञान तो भयो अरु नाम नहीं जान्यो है तहां सेर भरे अन्नकी बासना नहीं मिटी तहां कोई प्रबीण ने नाम बताइ दियो यह तो जवाहिर है किंतु हीरा है

त्रिकालज्ञत्वं अद्वंद्वपरचित्ताद्यभिज्ञता अग्न्यर्काम्बुविषादीनां प्रतिष्टंभाः पराजयः ५ इति पांच अब सिद्धिन को रूप कहते हैं अणिमा महिमा लघिमा तीनि सिद्धि देह कीहैं जिस सिद्धि करिकै देह अणुरूप को धारण करै सो अणिमा सिद्धि कही १ जेहि सिद्धि करिकै देह स्थूल स्वरूपको प्राप्त होइ ताको महिमा सिद्धि कही २ जेहि सिद्धिकरिकै देह लघु भावको प्राप्तहोइ ताको लघिमासिद्धि कही ३ जेहि सिद्धि करिकै सर्व प्राणमात्र तिनकी जोइंद्री तिनकरिकै सहित इंद्रिन के देवता रूपह्वैकै पर इन्द्रिन में प्रवेशकरै ताकी प्राप्ति सिद्धिकही ४ जेहि करिकै सुनिबे में आये इन्द्रादिक लोक अरु पृथ्वीके बिबर सप्त पातालादिक लोक अरु पर्वतन के बिवर तिन करिकै टके देखने लायक जो पदार्थ तिनको जो भोगदर्शनकी सामर्थ जिसकरिकै होइ सो प्राकाम्य सिद्धि कही ५ माया अरु मायाके अंश उनको प्रेरणा करना माया की प्रेरणा ईश्वराधीन अरु अंशन की प्रेरणा जीवाधीन यह भेद जानना सो ईश्वरता सिद्धि कही ६ विषय भोगमों अंशग रहना ताको बसिता नाम सिद्धि कही ७ जेहि जेहि सुखकी चाहना करै सो सो सुखकी सीमा प्राप्ति होइ ताको अवस्पति नाम सिद्धि कही ८ जेहि करिकै क्षुधा पिपासादिक रहित ताको नाम अनूर्म्मिमत्व सिद्धि कही ६ दूरकी बस्तु देखना ताको दूरिदर्शन नाम सिद्धि कही१०दूरिते सुनि परै ताको नाम दूरि श्रवण सिद्धि कही ११ मनकी बराबरि देहकी गति होना ताको नाम मनोजवः सिद्धि कही १२ जैसा रूप चाहै तैसा धरिलेइ ताको नाम काम रूप सिद्धि कही १३ पराई देहमें प्रवेश करै ताको नाम परकाय प्रवेशननाम सिद्धि कही१४स्वच्छा मृत्यु होइ ताको नाम स्वच्छन्द मृत्यु सिद्धि कही १५ अप्सरन के संगमें जो देवतन की क्रीड़ा प्राप्ति होना ताको देवानांसह क्रीड़ानुदर्शन सिद्धि कही१६ जैसा संकल्पकरै ताके अनुरूप पदार्थ की प्राप्तिहोइ ताको नाम यथा संकल्प सिद्धि कही १७ जाको आज्ञा निवारण न होइ ताको नाम आज्ञा अप्रतिहता गति सिद्धि कही१८ क्षुद्र सिद्धि पांच भूत भविष्यत बर्त्तमान जानना ताको नाम त्रिकालज्ञ सिद्धि कही १ शीत उष्ण करिकै पराभव नहीं होना ताको नाम अद्वंद्व सिद्धि कही २ पर चित्तादिक की बस्तु जानना ताको पर चित्ताद्यभिज्ञता सिद्धि कही ३ अग्नि सूर्य जल बिष इत्यादिक को थांभना ताको नाम अग्न्यर्काम्बु बिषादीनां प्रतिष्टम्भ सिद्धि कही ४ काहू करिकै पराजय न होइ ताको अपराजय सिद्धि कही५ श्रीभगवद्वाक्यं अब सिद्धिनके क्रियाफल मिलित कहते हैं भूत सूक्ष्म जो पञ्चतन्मात्रा शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध तेहि बिषय सूक्ष्म स्वरूप मेरो व्याप्त तेहिमें धारणा करै जो सूक्ष्ममन ताको मेरी अणिमा सिद्धिप्राप्तहोइ १ ज्ञान शक्तिहै जाकी ऐसो जो महत्तत्व तामें जो मेरोरूप तामें जो महत्तत्वाकार मनकरै ताको महिमा सिद्धिप्राप्तहोइ २ बायु आदि जो भूति तिनके जोपरिमाणु कही अति सूक्ष्मरूप तिनमें जोमेरोरूप तिसमें चित्त लगावै जो योगी ताको लघिमा सिद्धि प्राप्तहोइ ३ सात्विक अहंकारमें जो मेरो रूप तामें जोमनको लगावै योगी प्राप्ति सिद्धि होइ ४ क्रिया शक्ति प्रधानहै यामें ऐसो जो महत्तत्व तामें जो मेरोरूप तामें जो मनको लगावै योगी ताको सर्वोपरि ऐसी जो प्राकाम्य सिद्धि ताको प्राप्त होइ ६ त्रिगुणरूप जो माया ताको जो प्रेरक कालरूप विष्णु तिसमें

जो मनको लगावै ता योगी क्षेत्र बाह्यांतर शरीर जीवक्षेत्रज्ञ इनदोनोंकी प्रेरणारूप इ-शिता सिद्धि प्राप्त होइ ६ विराट हिरण्यगर्भ कारण यते तीनि उपाधि तिन उपाधिन से रहित जो नारायण कर तुरीय रूप अरु जिसको भगवान् शब्द करिकै कहते हैं तारूप में जो योगी मनको लगावै ताको बसिता सिद्धि प्राप्त होइ ७ निर्गुण ब्रह्म जो मैं ता रूपमें जो योगी स्वच्छ मनको लगावै ताको परमानन्दरूपअवस्थिति सिद्धिहोइ ८ इति आठ पुनि दशगुण हेतुक सिद्धि कहते हैं श्वेतदीप के अधिपति सत्व गुण रूप धर्ममय जो भगवान् मय तिनमें मन लगावै जो योगी सो षडूर्मी रहित होइ ताको अनूर्मिमत्व सिद्धि प्राप्त होइ १ षडूर्मी के नाम क्षुधा १ पियास २ शोक ३ मोह ४ जन्म ५ मृत्यु ६ आकाशात्म जो प्राण समष्टी रूपनें तद्रूप जो मैं तामें मन करिकै नाद करि चिन्तवनकरै जो जीव सो जीव उस आकाश में प्राप्तिभई जो बिचित्र बाणी ताको सुनै ताको दूरि श्रवण सिद्धि प्राप्त होइ २ व्यापक जो सूर्य तिनमें चक्षुको मिलाइ कै नेत्र में सूर्यको मिलाइ कै ताउभय संयोग में मेरो स्वरूप तेजमय ताको ध्यान करै सो संपूर्ण बिश्वको देखै सूक्ष्म दृष्टी जो योगी सो दूरि दर्शन सिद्धि को प्राप्त होइ ३ मन और देह ताको सङ्गी जो प्राणते विप्राण करिकै सहित मन अरु देह ताको जो मेरे बायुरूप में मुक्त करै ताके प्रभाव करिकै जहां मन जाइ तहां देह भी जाइ ताको मनोजवः सिद्धि प्राप्त होइ ४ मनको उपादान कारण करिकै जो पोषै तादिकरूप इ-च्छाकरै सो सो मन रूपको प्राप्त होइ ताको काम रूप सिद्धि प्राप्त होइ ५ जाजा देहमें प्रवेश करिबेकी इच्छा करै ताता देहमें जीवात्माकार चिन्तवन करै तब अपनी देह छोड़िकै प्राणहै प्रधान यामें ऐसो जो लिंगशरीर सो लिंग शरीर बाह्यवायुमें प्रवेश करिकै तिन मार्ग करिकै तेहि तेहि देहमें प्रवेश करै ताको प्रवेश सिद्धि प्राप्त होइ६ दोनों एंड़ी करिकै गुदाको दाबै अरु प्राण को क्रम करिकैहृदय उरस्थल कंठ मूर्धिन इनमें प्राण उपाधि करिकै सहित आत्माको चढ़ावै अरु चढ़ाइकै ब्रह्म रंध्रद्वारते ब्रह्म को अथवा और अपेक्षित लोकन को मन करिकै आत्मा पहुंचावै तब तनकर परि-त्याग करै ताको स्वच्छन्द मृत्यु सिद्धि प्राप्त होइ ७ देवतन के क्रीड़ा में बिहार करबे की इच्छा करै मेरी मूर्त्ति रूप सुरसत्व ताको चिन्तवन करै तो सत्व अंशते भई जो देवतन की स्त्री सो प्राप्त होतीहै बिमान सहित ताको देवानां सहक्रीड़ानुदर्शन सिद्धि प्राप्त होइ ८ बिना समय भी जिस किसी प्रकार करिकै बुद्धि करिकै जो संकल्प करै सत्य संकल्प जो मैं सत्य स्वरूप जो मैं मेरे में मनको लगावै जो योगी ताको यथा संकल्प संसिद्धि प्राप्त होइ ६ सबको नियंता स्वतन्त्र ऐसा जो मैं मेरे स्वभाव को प्राप्त भया जो योगी ताको आज्ञा कहूं भंग न होइ जैसे मेरी आज्ञा भंगकहूं नहींहै ताको आज्ञा अप्रतिहता सिद्धि प्राप्त होइ १० दशैव गुणहेतवः पांच सामान्य सिद्धि कही मेरी सामान्य भक्ति करिकै शुद्ध भया अंतष्करण जो योगी कर त्रिकालज्ञ जो ईश्वर तेहि में मन को लगावै आपन जन्म आपन मृत्यु सहित त्रिकाल की बुद्धि प्राप्त होइ ताको त्रिकालज्ञत्व सिद्धि प्राप्त होइ १ उसी योग धारणा ते अद्वंद्व सिद्धि प्राप्त होइ २ इसी करिकै पर चित्तादि की वस्तु को जानना ताको पर

इज.रनको मालहै तब तुरन्त.रत्नके रूपमें निश्चय भई प्रीतिभई सेर भरेको वासना नाश भई तुरंत मनमें र जा भयो तैसे नाम जाने विनु रूपकी प्राप्तिहै अरु नहींहै अरु जब नाम जान्यो तब स्वरूप रूपको गुण प्रताप सबै प्राप्त होतेहैं किंतु पको ज.नै नहीं है जो नामते बिहीन है (४) पुनि रूप विशेप जैसे रत्न हाथमें है पीत लाल इत्यादिक रूपको बिशेप ज्ञानहै अरु नाम नहीं जानै तहां वस्तु यद्यपि करतलमें है तद्यपि नहीं पहिचानी ज.इहै तैसेही रामनाम जाने बिना रामजीको स्वरूप गुण प्रताप परन्दलीला धामनहीं पहिचानो जात है (५) अरु रूप नहीं देखवे में आयो अरु स्नेह संयुक्त नामको सुमिरण करतुहै तो स्नेहको बिषता ते रूप हृदयमें जरूर आवैहै जैसे कोई एक सुन्दर बालक है ताको रूप कछु दूरिते देखिकै मन मोहि गयो ध्यान बँधि रह्यो है पुनि कछु आवरण परिगयो अरु ता बालकको मिला चाहतहै अरु नाम नहींजानै तहां जो कोई यत्नते आपुहि जाइ तब मिलाप में अति सुख है तैसे रामनाम राम स्वरूप तहां भगवत् के कोई न.म रूप होइ ऐसेही जानिये (६) नाम रूप के जे अनंत दिव्य गुण हैं तिनकी अकथ कहानी है ममुक्षत सत अति सुख दाता है पर बखान कै नहीं कहत बनै (७) ब्रह्मके द्वै रूप हैं एक निरावयव निर्गुण ब्रह्महै अरु एक साव-यव ब्रह्महै जो तीनिगुण रहित परम दिव्य परमानन्दमय गुण जिनकोहै तिनको सगुण ब्रह्म कही ते दोऊ ब्रह्मके बीचमें सुकही उत्तम स.चीहै अरु चतुर द्विभाषियाहै दोऊ ब्रह्मके स्वरूप में बोधकरि देतुहै जाको जामें वासना होइ सो देखाय देतहै ऐसो राम नामहै (८)दोहार्थ ॥ जैसे दीपक देहरी पर धरिदेइ तब भीतर बाहिर प्रकाश करतुहै पर दीपक पलमात्र न टरै तैसे र.म नाम मणिदीपक है जीभ देहरीरूप तापर धरिदेइ लवमात्र न टरै त चित बुद्धि मन अहंकार चतुष्ट अन्तष्करण अरु बाहर पांच ज्ञानइन्द्री तब पांच कर्म इन्द्री इन दोउनके भीतर बाहर को अन्धकाररूप सो न.श जाइ है भीतर बाहर श्रीरामचंद्रही देखिपरै हैं (श्लोक) बाह्यान्तरसुतीक्ष्णात्रराम्चंद्रप्रकाशते ॥ बाहर भीतर न.मही के प्रक.शते नामरूप देखि परैहै जैसे सूर्यहीके प्रकाशते सूर्यदेखि परते हैं मणिदीपक क्या कहा अबिद्या नाशकरिबे को जेते साधन हैं कर्म योग वैराग्य ज्ञानादिक सो दीपकहैं काहेते येते उपाय ते सिद्ध हैं जैसे तेलबाती संयुक्त दीप सिद्ध होत है ताते उपाधि संयुक्तहै ताते बाधा है पवनरूप लोभ रामरूप बड़ो पतंग है अरु रामनाम मणिदीपक है अरु निरुपाय सिद्ध है ताते निरुपाधि है अरु जो अन्तर नाम सुमिरण करतेहैं तेजीवन्मुक्त होतेहैं कैवल्य मुक्ति पावतेहैं पर भक्तिको नहीं प्राप्त होतेहैं अरु रामचन्द्रके स्वरूपको नहीं प्राप्तहोहिं अरुजे जिह्वांतरमें रामनाम जपतेहैं तिनको जीवन्मुक्ति कैवल्य स्वाभाविकै अनइच्छित होतहै तदुपरि पराभक्ति श्रीराम समीपको प्राप्तहोते हैं तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिव वाक्यं (श्लोक ६) रकारे मूर्धनिसंचारस्त्रिकुट्याकारउच्यते ॥ मकारोधरयोर्मध्ये लोमिलोमिप्रतिष्ठितम् १ रकारेयोगि नांध्येयोगच्छन्तिपरमंपदं ॥ अकारोज्ञातिनोध्येयस्तेसर्वेमोक्षरूपिण:२ पूर्णनाममुदादासा ध्यायंत्यचलमानसा: ॥ प्राप्नुवंतिपरांभक्तिम् श्रीरामस्यसमीपका: ३ अन्तर्जपंतियेनामजीव न्मुक्ताभवंतिते ॥ तेषांनजायतेभक्तिर्नचरामसमीपका: ४ जिह्वयाग्यंतरेचैवरामनामजपं

तिये ॥ तेचप्रेमापराभक्त्या नित्यंरामसमीपकाः ५ योगिनोज्ञानिनोभक्तास्सुकर्मनिरताश्चये रःमनाम्निरताःसर्वेरमुःक्रीड़ातएववै ६ (१) ॥

२२ नामजीहजपिजागहिंयोगी । बिरतिबिरंचिप्रपंचबियोगी १
ब्रह्मसुखहिंअनुभवहिंअनूपा । अकथअनामयनामनरूपा २
जानाचहैंगूढ़गतिजेऊ * * । नामजीहजपिजानहिंतेऊ * ३
साधकनामजपहिंलयलाये । होहिंसिद्धअणिमादिकपाये ४
जपहिंनामजनआरतभारी * । मिटैंकुसंकटहोहिंसुखारी * ५
रामभक्तजगचारिप्रकारा * । सुकृतीचारिउअनघउदारा * ६
चहुँचतुरनकहँनामअधारा । ज्ञानीप्रभुहिंबिशेषपियारा * ७
चहुँयुगचहुँश्रुतिनामप्रभाऊ । कलिबिशेषनहिंआनउपाऊ ८

दो० सकल कामना हीनजे रामभक्ति रस लीन ॥
नाम सप्रेम पियूष हृद तिनहुँकियेमनमीन १

(१) नामको जीभते जपिकै योगीजन मोहरूप रात्रीमें जागतेहैं बिरति जो वैराग्य ताको भोरहूकै बिरंचिके प्रपंचते बियोग नाम छूटिजातेहैं (श्लोक प्रमाणगीतायां १) यानिशासर्वभूतानांतस्यांजागर्तिसंयमी ॥ यस्यांजाग्रतिभूतानि सानिशापश्यतोमुनेः (१) रामनाम जीभते जपि कै योगीजन ब्रह्मसुख जोहै अनूप ताको अनुभवै कहे प्राप्त होतेहैं ब्रह्मकैसोहै अकथहै मन बाणीके परेहै अनामय कहो आमय कहे रोग सो षड्व्यकारहै जायते उत्पन्नभयो बर्द्धते बढ़तभयो बिपरीतते मोटेते दूबर दूबरते मोटे गौरते श्याम श्यामते गौरभयो क्षीयते दिनप्रति क्षीण होतजातहै वृद्धते बढ़ाभयो मृयते मृतकभयो एते षड्व्यकार पुनि षड्ऊर्मी क्षुधा पिपासा हर्ष शोक सुखदुःख एते आमय ताते आत्मारहितहै एकरसहै आत्मनाम रूप रहितहै परनामहोते आत्माको निरूपण होतहै ताते प्राकृतिनाम रूप रहितहै आत्मा ब्रह्म तेहिके नामरूप परमदिव्यहै ताते अनामय रूप कहेहैं ऐसोजोहै आत्माब्रह्म ताको नामहोते जानतेहैं ते ब्रह्म सुख को प्राप्त होतेहैं ब्रह्मसुख अनूपहै (२) श्रीरामभक्त चारिप्रकारकेहैं एक जिज्ञासुहैं जो गूढ़गति हैं गूढ़गति कहो परमात्मा परम तत्त्वजो हैं श्री रामचन्द्र जी तिनकी प्रसन्नता केहि प्रकारते होइ सो जानाचाहतेहैं किन्तु गूढ़तत्त्व स्वरूपतेऊ नामको जीभमेंजपिकैजानते हैं (३) अरु एक साधकहैं नामको जपिकै बासना जो अणिमादिक सिद्धिनकीहै सो भी प्राप्तहोतीहै सिद्धिनके नामरूप क्रियाफल कहतेहैं सिद्धिनके नाम अणिमा महिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्य इशिता बसिता अवस्पति ये आठौ भगवत्प्रधानहैं भगवान्‌विषय स्वाभाविकी हैं निरतिशय हैं अरु दश सिद्धी गुण सम्बन्धी हैं अनूर्मिमत्तं दूरे श्रवणंदूरे दर्शनं ॥ मनोजवःकामरूपंपरकायप्रवेशनं। स्वच्छन्दमृत्यु देवानां सहक्रीड़ानुदर्शनं । यथा संकल्पसंसिद्धः आज्ञाप्रतिहतागतिः १० पुनि पांचक्षुद्र सि सा बर्णन करते हैं

है सिद्ध्यै रूपहै (५) एकरूप ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त है अबिनाशी है ब्रह्म कहे बृहद अन ब्रह्मांडमें एकरस अखंड संपूर्ण जैसे आकाश सर्व व्याप्त सर्वते भिन्न पुनि सत्रूप सत् कहे एकरस काल रहित चेतन कहे जामें अविद्या कबहीं नहीं व्यापे है वह सबकी गतिको जाने है वाकी गति कोई नहीं जाने है अरु आनन्दकी राशि आनंद कहो मायाके सुख दुःख हर्ष शोक इत्यादि सबते रहित है सच्चिदानन्द घन घन कहे जेहि सच्चिदानन्द बिनु एक बारको अग्र भागहू भरि कहूं खाली नहीं है ताते घन कहो (६) अस प्रभु अछत प्रसिद्ध ऐसो ब्रह्म जीवके अन्तर भूत व्याप्तहै जीव सूक्ष्महै जो सूर्यकी त्रिसरेणु झरोखामें जगमगाइ रही है तामें एक त्रिसरेणुको सैकरा भाग होइ तामें एक भाग ताहूते सूक्ष्म है जीव अरु तेही जीवके अन्तरभूत ब्रह्म व्याप्तहै अति सूक्ष्म तर है अबिकारी कहो षड व्यकार रहित सो कहि आयेहैं पाछे तेहिते रहितहै ब्रह्म कैसे जीवके अंतरभूत ब्रह्म व्याप्तहै जैसे कोई मिठाई पेड़ा इत्यादि तामें रसहै रसमें स्वाद है स्वादमें पुष्टीहै यह दृष्टांतहै अब द्राष्टांत कहते हैं पेड़ा स्थाने स्थूल शरीर रसस्थाने चित्त मन बुद्धि स्वादस्थाने जीव पुष्टीस्थाने ब्रह्म ऐसेही फूल इत्यादिक दृष्टांतहैं देखिये तो पेड़ा जो पदार्थ है अरु ताको रस गत रसे होइजात है पर स्वाद अरु पुष्टता ये दूनों सर्वकालमें मिलेहैं एक रस है जैसे बीजांतर बीज है जाते अंकुर उठत है तैसे जीव ब्रह्म सदा मिलि रहेहैं पर जगमें सर्व जीव दुःखितहैं काहे ते यह जो पंचजनित देहहै तामें अपनपौ मानिरह्यो है आपने अंतरभूत जो ब्रह्महै तेहिके बिनु जाने सर्व जीव दुःख करिकै दीनहोइ रह्योहै जैसे मृगा अपने अंतर कस्तूरी है बाहर ढूंढ़त है दुःखित दीनहै तैसे जेहि ब्रह्मके जाने बिना सर्व जीव दीन दुःखित है सो ब्रह्म सर्व-व्यापीहै परोक्षहै नहीं देखि परै है (७) जो नाम निरूपण करै तो वहै ब्रह्म प्रत्यक्ष होइ देखिपरै नाम निरूपण का कहावै नामको निरूपण नामहीकी यतन ते होत है जैसे रत्नके परखे ते रत्न परखो जातहै अपर द्रव्यके परखे रत्नको ज्ञान नहीं होत है तैसे परमेश्वरके नाम जे अनंत हैं तिन सब नामनको अर्थ समुझै सो निरूपण कहावै तहां रामनाम में रेफ जो है सो ब्रह्ममय तदात्मक है तहां नाम निरूपणमय कछु और कहा चाहत हौं पर अति गुप्त है कहिबे योग्य नहीं है पर बिना कहे मोपे रहा नहीं जाइ तहां श्री रामचंद्र के नमस्कार करिकै कछु कहतहौं श्रीरामचंद्र के नेत्रन को तेज अतिशय सोई ब्रह्म है सो रकारमें रेफ जो है सो जानब अरु रेफकी अकार अति शुद्ध नित्यजीव है अरु दीर्घ अकार मुक्तजीव है अरु मकारकी अकार स्वजीवहै अरु तीनिहुं अकार एकहीहै ताते जीव ततत्व एकही है अरु हल मकार तीनि शक्ति मयहै एक अह्लादिणी एक विद्या एक अविद्या ये तीनिहूं शक्ति हैं तहां अह्लादिणी अतिसूक्ष्म ब्रह्मानन्दरूप विद्यामें व्याप्त है अरु विद्या अविद्यामें व्याप्तहै तहां नित्यजीव जे श्रीरामचंद्र के समीप सदा अखंड एकरस षडव्यकार रहित सच्चिदानन्द रूप है तिनके अह्लादिणी मय बिग्रहहै आनन्द रूपही है अरु जीव परमात्मा के सुख स्वादक सत स्वरूपहै चित चिद्रूपही है तहां अह्लादिणी अरु जीव अरु व्यापक ब्रह्म ये तीनिहूं ततत्व कथन मात्र भिन्न हैं नतु सर्व काल मय एकही हैं परधाममें ये तीनिहूं ततत्व

विग्रहमान् हैं अरु ब्रह्मांड को सम सूक्ष्मरूप तीनिहूंततत्व हैं जब भगवान् भागवतकी सेवाकरै किंतु अखंड भजन करै तब ये तीनिहूं ततत्व स्थूलहोइ जातुहैं तब रामचंद्र के समीपको प्राप्त होतेहैं अरु मुक्त जीवन के तन विद्या मय हैं दुःख सुख हर्ष शोक पाप पुण्य रहित हैं तैसेही सामान्य विद्या मय शरीर मुमुक्षजीवन के हैं अपर जीवन के शरीर अविद्या मय हैं हर्ष शोक दुःख सुख भरे हैं अरु राम नाम में तीनि अकार जेहैं ते शुद्ध जीव ततत्वहैं अरु अकार ईश्वर बाचक भीहै तहां प्रमाण है (श्रीमन्म-हारामायणे शिववाक्यं श्लोक स ढ़ेसातकरि जानब) शृणुष्वपरमंगुह्यंयन्नजानंतिकेपिच ॥ केपिकेपिबिजानंतिरामानुक्रोसमेवच १ तेजोरूपमयोरेफःश्रीरामविकंजयोः ॥ कोटिसूर्य प्रकाशश्चपरब्रह्मसउच्यते २ सोपिसर्वेषुभूतेषुसहस्रारेप्रतिष्ठितः ॥ सर्वसाक्षीजगद्व्यापीनि-त्यध्यायंतियोगिनः ३ परंब्रह्ममयोरेफःजीवोकारश्चमश्रयः ॥ चिद्वाचकोरकारःस्यात्सद्वा-च्यआकारउच्यते४मकारानन्दकंवाच्यंसच्चिदानन्दमव्ययं ५ व्यंजनाच्चाक्षरोत्पत्तिरकाराद्ब्र ह्मचाक्षरः ॥ रेफोनिरक्षरोब्रह्मसर्वव्यापीनिरंजनः ६ मकारंव्यंजनंचैवत्रिधाशक्तिस्वरूपिणी ॥ शक्तिचाह्लादिनीविद्याविद्यासूत्रात्मकास्वयं ७ तहां श्रुति ओंयोवै श्रीरामचंद्रः सएवलो-चनाभाभातिसएवब्रह्मेतिसएवसार्क्ष सएवचेतः केवलंनिर्गुणात्मकरमाम्मेलश्नं ८(इत्य-थर्वणे उत्तरार्द्धे) अर्द्धमात्रात्मिकोरामोब्रह्मानंदैकबिग्रहः ॥ इति राम तापिनी (श्लोक अन्यच्च) नित्यकैवल्य मुक्तश्चमुमुक्षुबंद्धपंचभिः ॥ अकारोनित्यकैवल्य मध्यमुक्त मुमुक्षणः १ मस्याकारोभवेद्बद्धोजीवतत्त्वंसनातनं ॥ ईश्वरांशोअणुर्नित्यं सच्चिदानंदमव्ययम् २ राम नाम निरूपण अगम है जो मैं गुरुन करिकै पायो है तामें चित्संज्ञा जनाइ दियो है काहे ते अति गोप्यहै प्रवीण उपासक जानहिंगे ताते बहुत नहीं कहेउ अरु नाम नि-रूपण किछुके कहिबे योग्य नहीं है अति अपार है मैं मतिमंद का कहौं पर जो श्री राम उपासक धनुर्वाणादि पंच संस्कार संयुक्त परमात्मा नन्यहोहिंगे तिनको यह नाम निरूपण की परमतत्त्व भासैगी अरु उनहींको फलीभूत होइगो जो सतगुरुनके आश्रय होइ मन क्रम बचनते मान दूर करिकै तब नाम निरूपण प्राप्त होइगो तब सो ब्रह्म जो सबके अंतर्भूत व्याप्त है सो नाम निरूपण प्रकटत है जैसे रत्नके परखे ते माल प्रकटतु है पर जवाहिरी जानै है यथार्थ रत्नको मोल तैसे सतगुरु जानते हैं राम नाम बिषय ब्रह्मको स्वरूप तहां नाम रत्नहै ब्रह्म मोल है जैसे एक रत्न दशहजार को है सो कहूं दशहजार को बिकात भयो पुनि कहूं वह रत्न जाइ दशहजार दाम उसमें सदाबनो है तैसे नाम में ब्रह्म सदा एक रस बनो है पुनि दूसर अर्थ नाम निरूपण नाम यतन ते एक नामको निरूपण है अरु एक नामको यतन है सो कहते हैं श्रीनारदजू प्रह्लाद को अरु बाल्मीकिको नाम उपदेश कियोहै प्रह्लादको निरूपण संयुक्त नाम उपदेश कीन है काहे ते कि प्रह्लाद गर्भमें रहे तब जैसो राम नाम को निरूपण श्रीनारद के मुखते सुन्यो सो यथार्थ नामको स्वरूप हृदयमें आयो काहेते एकही बार के कहे आयो जब जीव गर्भमें रहत है तब वाको सांख्यज्ञान होत है अनेक जन्मको ज्ञान होत है अरु जब गर्भते उत्पन्न भयो तब प्रसव पवन के बेगते ज्ञान भूलि जात है तहां प्रह्लाद को शुद्ध दशामें नाम उपदेश भयो प्रसवको पवन नहीं लाग्यो ताते प्रह्लाद की वृत्ति राम

भिन्नता सिद्धि प्राप्त होइ ५ अग्न्यादिक जो भूत तेहिकी बाधा करिकै रहित भगवान् ऐसो भगवान् ता रूपमें जो योगी मनको लगाइ ताको अग्न्यादिकभूतकी बाधाकरै ताको अग्न्यकाम्बुबिषादीनां प्रतिष्टंभसिद्धि प्राप्तहोइ ४ श्रीवत्स चक्रादिक जो अस्त्र अरु गरुड़ अरु ध्वजा आतपत्र व्यजन इन करिकै शोभित मेरो अवतार तिनअवतारनको सामान्य ध्यानकर्त्ता जो योगी ताको अपराजिता सिद्धि प्राप्तहोइ ५ इतिबीस तीनि तेईस सिद्धि जो हैं सो प्राप्तहोइं अरु अंतमें मोक्ष को प्राप्त होय जो कोई रामनाम लय लगाइ कै जीभते जपै लयकही अतिप्रीति अरु सर्वविस्मरण अरुमनबाणी सकहू जाइ (श्लोकएक) पूजाकोटिसमंस्तोत्रं स्तोत्रकोटिसमोजपं जपकोटिसमोध्यानं ध्यानकोटिसमोलयः (४) अरु एक आरतभक्तहैं सुत बित दारा लोकमें यश शरीर रक्षादिक हेतु सोभी प्राप्तहोतहैं जैसे द्रौपदी गज सुग्रीव इत्यादिक कोई होइ नामको जपतसंते समस्त संकट मिटिजातु हैं सुखीहोतेहैं पुनि परम पदकोप्राप्तहोतेहैं इहां यहै आरतको तात्पर्य है अरु जो आरत प्रसन्न द्वैत्यप्रपन्न कहेहैं सो इहां तात्पर्य नहीं है (५) पुनि एक श्री रामचंद्रके ज्ञानी भक्तहैं अपने स्वस्वरूपकी प्राप्ति अरु सर्व भूतमें एक रस आत्मा दर्शित है ब्रह्मानन्द में प्रसन्नहै जिनकी आत्माशान्त होइ रही है ताको बिशेष ज्ञानी कही तहां प्रमाण है (श्रीभगवद्गीतायां) ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मा नशोचतिनकांक्षति ॥ समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिं लभतेपराम् १ ऐसे जेज्ञानीभक्तहैं तिनको भी नामही आधारहै श्रीरामचन्द्र के भक्त चारिप्रकारकेहैं आरत जिज्ञासू अर्थार्थी ज्ञानी चारिउ सुकृती हैं अनघकहे पाप रहित हैं उदार कही मुक्तिके भागी हैं मुक्ति उपहित क्रिया है तामें तीनि सकामी हैं ये मुक्ति के अधिकारीहैं अरु ज्ञानी जीवन्मुक्त भक्तहैं (६) चारिहू चतुरनको रामनाम आधारहै पर चारिहूमें ज्ञानीभक्त श्री रामचन्द्रको बिशेष पियारे हैं काहेते केवल भक्तिही बिशेष है जिन ज्ञानिनके सोई श्रीभगवद्गीतामें श्रीभगवद्बाक्यं (श्लोकद्वै) चतुर्बिधाभजन्तेमां जनाःसुकृतिनोऽर्जुन ॥ आर्त्तोजिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीचभरतर्षभ १ तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएक भक्तिर्विशिष्यते ॥ प्रियोहिज्ञानीनित्यर्थमहंसचममप्रियः २ (७) चारिहूयुग में चारिहूवेदमें रामनामही के प्रभावतें मुक्ति होती है पर कलिमें तौ बिशेषहीहै ताते अपर उपाय अधिकारई नहींहै (श्लोकवाल्मीकीयेटीकायां) रामेतिबर्णद्वयमादरेण सदास्मरन्मुक्ति मुपैतिजन्तुः ॥ कलौयुगेकल्मषमानुषाणामन्यत्रधर्मेखलुनाधिकारः १ (८) दोहार्थ ॥ ज्ञानी भक्त सकल कामना हीनहैं आरत जिज्ञासू इनते निर्बासिकहैं अथवा अर्थधर्म्म काम मोक्ष यह सब कामनाते हीनहैं अरु राम भक्ति रसमय लीनहैं राम नाम प्रेम संयुक्त अमृतको तामेंअपने मनको मीन कियेहैं ते ज्ञानी श्री रामचन्द्र को बिशेष प्रियहैं (९) ॥

२३ अगुणसगुणदुइब्रह्मस्वरूपा । .... अकथअगाधअनादिअनूपा १
मोरेमतबड़नामदुहूते * * । कियजेहिजगनिजबशनिजबूते २
प्रौढ़सुजनजनजानहिंजनकी । कहौंप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी ३

एकदारुगतदेखियएकू । पावकसमयुगब्रह्मबिबेकू ** ४
उभयअगमजगसुगमनामते । कहौंनामबड़ब्रह्मरामते * ५
व्यापकएकब्रह्मअबिनाशी । सतचेतनघनआनँदराशी ६
असप्रभुहृदयअछतअविकारी । सकलजीवजगदीनदुखारी ७
नामनिरूपननामयतनते * । सोप्रकटतजिमिमोलरतनते ८

दो० निर्गुणते यहि भांति बड़ नाम प्रभाव अपार ॥
कहौं नाम बड़ रामते निज बिचार अनुसार १

२३ ब्रह्मके दुइ स्वरूप हैं एक निर्गुण एक सगुण ब्रह्म दोऊ अकथ अनादि अगाध अनूप हैं (१) पर मेरे मतमें नाम दोउनते बड़ोहै जो नाम दोऊ स्वरूप को निज बश कीन्ह निज बलते (२) प्रौढ़ कहे प्रबीण जन जेहैं ते जनके मनकी जानते हैं मैं अपने मनकी प्रतीति की प्रीतिकी रुचि कहत हौं यामें आशय है कि मैं समस्त प्रबीणन की रुचि कहत हौं (३) ब्रह्मको विचार दुइ बिधिको है जैसे पावक एक तो दारु कहे लकड़ी में व्याप्तहै अरु एक अग्नि प्रत्यक्ष देखिबे में आवैहै जो कोई कहै कि अग्नि तौ लकड़ी कंडा इत्यादि की उपाधिते प्रत्यक्ष है नतु अग्नि को सूक्ष्मै रूप सिद्धांतहै दारुमें व्याप्तहै तहां देखिये तौ समुद्रमें बड़वानलअग्नि निरुपाधि स्वरूपमान् शोभित है ताते ब्रह्मके स्वरूप दुइ सनातन अखंड एकरसहै एक निरावयव ब्रह्म एक सावयव ब्रह्मदोऊको बिबेक बिबेकीजानते हैं (४)उभय ब्रह्मके स्वरूप अनेकसाधन ते अगमहै अरु रामनामते सुगमहै दोऊस्वरूपकी प्राप्ति करिकै पुनि एकही देखिपरै है जैसे रबि अरु रबिको समूहतेज तहां रबि शब्द अरु रबितेज अरुरबिकी मूर्ति एकहीहै अरु भिन्नभीहै तैसे श्रीराम स्वरूप परब्रह्म अरु रामरूप व्यापक ब्रह्मअरुरामनाम एकही है कथनमात्र तत्त्व एकहीहै ऐसेही ब्रह्मको बिबेक बिबेक मान जानते हैं नीके प्रकारते निरावयव ब्रह्म अरु सावयवब्रह्म दोनोंको रामही कही कहो नाम बड़ राम ते जो सबमें रमिरह्योहै ताते रामकही पुनि श्रीदशरथनन्दन राम जाको अतिलावण्य सुन्दर चरण दि प्रति अंग अंगमें परमहंस शुकसनकादि इत्यादि मुनीश्वर रमैहैं ताते राम कही रामनाम राम स्वरूप राम व्याप्त एकही है नाम दोऊ स्वरूपते बड़ कहेहैं सो केवल प्राप्ति देशमें नतु दशरथ नन्दने राम सो व्याप्त हैं रमि रहे हैं अरु दशरथ नन्दनके स्वरूप अरु चरण में परमहंस जे हैं अरु भक्तजन जे हैं ते सबरमे हैं तहां श्रीभागवतके टीकामें प्रथम (श्रीधरबाक्यंश्लोकद्वै) ॐनमःपरमहंसास्वादितचरणकमलचिन्मकरन्दाय भक्तजनमानसनिवासायश्रीरामचंद्राय १ (अन्यच्च) रम्यरूपात्सवैरामेमुनयोयंतपश्चरन् ॥ अतएवरमुक्रीड़ारमतेयच्चराचरे २ ताते एकही है केवल श्रीरामचंद्र हैं द्वैरूप ब्रह्मको कहना सो का हेतमुमुक्षु जीवनको परोक्ष प्रत्यक्ष ब्रह्म दूनोंके प्राप्त रामनाम नामते कहतेहैं सुगमते अरु नाम रूप साधन सिद्धि नहीं

नामाकार भई ब्रह्माकार अखंड एकरस बाहर भीतर रामही देखि पर अंतर्यामी रूप सो कथा प्रसिद्ध है (नृसिंहपुराणे प्रह्लाद वाक्य मिलरंग्ति श्लोक) राम नाम जपतो कुतोभयंसर्वतापशमनैकभेषज ॥ पश्यतातममगात्रस्त्विग्धौपावकोपिसलिलायतेधुना १ देखिये तौ रामनाम निरूपणते कोटिन विघ्न नाश भयो तत्काल ब्रह्म प्रकटत भयो अरु बाल्मीकि को यतन संयुक्त रामनाम उपदेश कियो है मरा मरा मरा प्रथमहिं मकार उपदेश कियो पुनि रकार प्राप्तभयो काहेते मकार जीव तत्वहै रकार ब्रह्मतत्व है ताते बाल्मीकिको प्रथम स्वस्वरूप की शुद्धता उपदेश कियो काहे ते बाल्मीकि जीकी प्रथम कछु मलिनवृत्ति रहै ताते प्रथम स्वस्वरूपही के अधिकारी रहैं आगे पर स्वरूप आपुही प्राप्त होयगो तब मरा मरा मरा जपत जपत कोई कालमें ब्रह्माकार वृत्ति भई ब्रह्म प्रत्यक्ष भयो ताते सद्गुरुन करिकै रामनामको निरूपण प्राप्तहोइ है अथवा यतन प्राप्तहोइ दोऊ रीति एकहूमें दृढ़ प्रतीति धारणा आवै तब ब्रह्मा प्रत्यक्ष होतहै बिना श्रद्धा जैसे रत्नको मोल नहीं जानों जाइ नहीं देखि परै रत्नके भीतर न तौ रुपैया देखि परै नतो मोहर देखपरै पर जे रत्नपारखी हैं तेई जानते हैं जो रत्न की कीमति है तिसको मोल जे रत्न परखैं तेई जानते हैं अथवा खरीद करै सो रत्न को मोल पावै तैसे रामनाम को निरूपण जानै अथवा राम नाम प्रेम समेत सर्व तजिकै तैलवत् धार रटन करै तब ब्रह्म स्वाभाविकै प्रत्यक्ष होइहै इत्यर्थः (८) इति श्रीराम चरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने बालकांडे रामनाममनिरूपण ब्रह्मनिर्णयोनामषष्ठ स्तरंगः ॥ ६ ॥

दो० सप्तम उमँग तरंगमें आदि अंतलों जानि ॥
रामचरण सबते परे रामनाम पहिचानि ७

दोहार्थ ॥ निर्गुण ब्रह्म जो है तेहिते नाम बड़ो है यहि भांतिते जो रीति पाछे कहि आयेहैं काहेते रामनाम को प्रताप अपार है पुनि श्रीरामचंद्र से नामको बड़ो अपनी मतिके अनुसार कहत हौं आगे जो यह प्रकरण गुसाईं जी कहते हैं तामें समस्त लाड़ रसकी बातैं हैं अपर भूलिहू न जानब इहां व्यंग्यस्तुति करते हैं जाते रघुनाथ जी तुरंत प्रसन्न होहिं देखिये तौ यह बात लौकिकहू में प्रसिद्ध है जैसे कोई राजा है राजा के स्वरूपते राजा के नामको अधिक प्रताप बर्णन करै तब राजा मन बचन कर्मते प्रसन्न होतहै तब जिनने नाम की बड़ाई कियो ताको हाथी घोड़ा बस्त्र रत्न इत्यादिक भरि देतहैं तैसे गोसाईंजी रामनाम को यथार्थ ऐश्वर्य बखानि कै बैराग्य ज्ञान नवधा प्रेमा पराभक्ति श्री रामचंद्र से मांगि लीनि है अरु नाम रूप को सिद्धांत एकही है यह सप्तम तरंगमें यहै है जो और अर्थ करिये तौ रसको अनरस होइ जाइगो ताते विवेकी जन जानहिंगे काहे ते कि जो श्री रामचंद्र कृपा करिकै किसूके पार आपु जाहिं किंतु ध्यानमें आवहिं तौ वह जीव कृतार्थ होइ पर यह दोनों होना अगम है अरु जो रामनाम उच्चारण करै कोई होय कैसहू करै कहूं रहै सो कृतार्थ होइहै यह ध्वनि यहि प्रकरण में है तात्पर्य यहै है (१)॥

२४ रामभक्तहिततनतनधारी । सहिसंकटकियसाधुसुखारी ० १

दो० ब्रह्म रामते नाम बड़ बर दायक बर दानि ॥
रामचरितशतकोटिमहं लियमहेशजियजानि १

२४ श्रीरामचंद्र अपने भक्तन के हेतु नर तन धरेउ है ताको अर्थ जैसे नर जो मनुष्य पंचभूत तन धारी कोई बड़ो राजा तैसो लीला करते भये किन्तु नर तन धारी जो भक्त हैं तिनको संकट निवारण कीन है ताते नर तन धारी कहा अरु जो कोई कहै कि तुम उपासना को खैंचि करिके अर्थ करते हौ गोसाईं तो यही कहा है चतुर्भुजभगवान् जाको नारायण कहौ बिष्णु कहौ सोई भक्तनके हेतु नरतन धरेउ है द्विभुजरूप दशरथ के गृहमें अवतार लीन किन्तु कोई कहै कि निर्गुण ब्रह्म जो सर्व व्यापक है सो भक्तन के हेतु नर तन धरेउ है सो इहां दोनों अर्थ नहीं सिद्धि होतहैं काहेते तुलसी गुसाईं श्री राम उपासक हैं ताते गुसाईं को यह मत नहीं है काहेते जो कोई या स्वरूपको उपासक छोड़गो सोई सर्वोपरि मानैगो अरु जो अपर स्वरूप में पर्यवसान करै किन्तु अपर स्वरूपही को आविर्भावतिरो भाव करै तौ वह उपासक है नहींहै अरु श्रीतुलसीदासजी बिशेष श्रीराम उपासक हैं अरु श्री बाल्मीकि को अवतार हैं भक्तमाल में कहाहै जाकी कीर्त्ति भरतखण्ड में पूरि रहीहै गुसाईं को श्रीमद्राम द्विभुज धनुर्द्धर परात्पर हैं ॥ तहां प्रमाण (सनत्कुमारसंहितायां श्रीवेदव्यासवाक्यंश्लोक) परात्परतरंतत्वसत्यानंदचिदात्मकं ॥ मनसाशिरसानित्यंप्रणमामिरघूत्तमं१ (पुनिनारदपंचरात्रे)आनन्दोद्विविधःप्रोक्तःमूर्तश्चामूर्तएवच ॥ अमूर्तस्याश्रयोमूर्तः परमात्मानराकृतिः २ (पुनिभावगतेश्रीधरवाक्यं) ॐनमःपरमहंसास्वादितचरणकमल चिन्मकरंदायभक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचंद्राय ३ (पुनिभागवतेशुकवाक्यं) यस्यामलंमहिपदस्युयसोधुनापिगायन्तिपद्यमृषयोदिगमेंद्रपट्टं ॥ तन्नाकपालवसुपालकिरीटयुष्टंपादांबुजंरघुपतेः शरणंप्रपद्ये (पुनिअन्यच्च) अंशभूताविराट्ब्रह्मविष्णुरुद्रास्तथापरे॥ ब्रह्मतेजोघनीभूतंवर्त्ततेजानकीपतेः ५ (पुनिश्रुतिः)प्रकृत्यासहितःश्यामःपीतवासःप्रभाकरः॥ जःकुण्डलीरत्नमालीधीरोधनुर्द्धरः ॥ देहीदेहविभागोनस्यात्सच्चिदानन्दविग्रह ॥ श्रीरामोपनिषद् ६ (पुनः यस्यांशेनैवब्रह्माविष्णुमहेश्वराअपिजातामहाविष्णुयस्यादिव्यगुणाश्चससएवकार्यकारणयोःपरः परमपुरुषोरामोदाशरथीबभूव इत्यथर्वणउत्तरार्द्धे ७ (पुनिवाल्मीकीयेलववाक्यं) वेदवेद्येपरेपुंसिजाते दशरथात्मजे ॥ वेदःप्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ८ वेद करिके वेद्य कही जानबे योग्य जो परम पुरुष हैं जो परम तत्व वेदांत को सारभूत सो दशरथ आत्मज साक्षात् हैं अरु श्रीमद्रामायण वेद को साक्षात् आज्ञा है जो चतुर्भुज भगवान किन्तु बिराट् भगवान् किन्तु अन्तर्यामी ब्रह्म अवतार श्रीरामचन्द्र होते तौ साक्षात्पद क्यों देते अरु साक्षात् कही ज्यों को त्यों छोड़ ताते नरदेहधारी लीला भक्तन हेतु बाललीला इत्यादिक लीलामात्र नरतन धरब कहा अरु श्रीरामचन्द्र स्वरूप द्विभुज धनुर्द्धर अखण्ड एकरस सर्वोपरि कार्यकारण के परे सो राम भक्तानु ग्रहार्थ अवतीर्ण भये जैसे कोई ऊंचेते नीचेको साक्षात् उतरि

आर्थे इत्यर्थः श्रीरामचन्द्र संकट सहिकै साधुन को सुखी कीन्ह तहां यह अर्थ अ-
सिद्ध है काहेते कि दुःख सुख जीव को धर्म है काहेते जीवषट् बिकार संयुक्त है अरु
परमात्मा षट्बिकार रहित रूपहै (तहां प्रमाण है श्रीअध्यात्मरामायणेपरशुरामवाक्यं
श्रीर.मंप्रति॥ श्लोकार्थ) षट्विक.रैर्विरहितंरामंत्वद्रूपचिन्मयं ॥ तातेयहअर्थहै सहिसंकट
किये साधु सुखारी। साधुन अनेक संकट सहेउ तिनके संकट श्रीरामचन्द्र आपु ग्रहण
कीन्ह काहेत भक्त वात्सल्य हैं ताते दुष्टन को मारिकै संकट नाश करिकै सुखी करि
दीन आगे व्यंग्य स्तुति के भावते दुइ दोहाको अर्थ अक्षरार्थं जानव २ नाम सप्रेम
जपत अनयासा। भक्त होहिं मुद मंगल बासा ३ ऋषि हित राम सुकेत सुताकी।
सहित सेन सुतकीन बिवाकी४ सहित दोष दुख दास दुराशा। दलइ नाम जिमि रबि
निशिनाशा ५ राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी ६ भंजेउ
राम आप भवतापू। भव भय भंजनु नाम प्रतापू ७ दंडक बन प्रभु कीन्ह सोहावन।
जनमन अमित नाम किय पावन ८ निशिचर निकर दले रघुनन्दन। नाम सकल कलि
कलुषविभंजन ६ दोहा॥ शवरी गृध्र सुसेवकन्ह सुगति दीन्ह रघुनाथ। नाम उधारेउ
अमित खल वेद बिदित गुणगाथ १० ॥ चौपाई ॥ राम सुकीट विभीषण दोऊ। राखे
शरण जान सब कोऊ ११ नाम गरीब अनेक निवाजे। लोक वेदबर बिरद बिराजे १२
राम भालु कपि कटक बटोरा। सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा १३ नामलेत भव सिंधु
सुखाहीं। करहु बिचार सुजन मन माहीं १४ राम सकुल रण रावण मारा। सीय
सहित निजपुर पगु धारा १५ राजा राम अवध रजधानी। गावतगुणसुरमुनिबरबानी१६
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती। बिनुश्रम प्रबल मोह दल जीती १७ फिरत सनेह मगन
सुख अपने। नाम प्रताप शोच नहिंसपने १८॥ दोहा॥ ब्रह्म रामते नाम बड़ बरदायक
बरदानि। रामचरित शत कोटिमहं लिय महेश जियजानि १६ स.मष्टीअर्थ ॥ श्रीरा.म
चन्द्र समुद्र बांधिकै लंका जीतिकै श्रीअवधमें आइकै निःकंटक राज्य करते भये अरु
राम सेवक जे हैं ते राम नाम ताको प्रेमते सुमिरते हैं तिनको भवसागर बिना श्रम
सूखिजात है सुजन अपने मनमें बिचार करि लेहिंगे (१६) अरु मोहरूप रावण सहित
सहाय नाम प्रताप ते जीति लेतेहैं पुनि रामनाम के प्रताप ते अपने सुखमें आनन्द
हूकै फिरते हैं(१७) निष्कंटक भयेहैं स्वप्नेहु शोच नहींहै (१८) (दोह र्थ) एक व्यापक
सो राम (अध्यात्मे) रमणाद्राम इत्यपि ॥ पुनि धनुषधारी राम॥ (अन्यच्चश्लोक)
रम्यरूपार्णवेराम मुनयोःयंतपश्चरन् ॥ इतिरामपदेनासौपरंब्रह्माभिधीयते१ताते व्यापक
रामरूप ब्रह्मअरु दासरथी रामस्वरूप ब्रह्मतें द्वैरूप एकही ब्रह्म हैजैसेमणिअरुमणिकोप्र-
काशसूर्य सूर्यके निकटको घन प्रकाश तैसेही एकब्रह्म जानो अरु मतबादतेदुइ भासते हैं
ताते ब्रह्म राम द्वैते रामनाम बड़ोहै यह कहिबेको हेतु यहहै कि व्यापक ब्रह्म जो है
सो शुद्धविज्ञान करिकै व्याप्तहोतहै अरु किशोर बिग्रह ब्रह्म सो प्रेमापराभक्तिकरिकैप्राप्त
होतहै पर विज्ञान प्रेमापरा भक्ति कठिनते सिद्धि होत है अरु राम नाम करिकै दोनों
ब्रह्मरूप स्वरूप प्राप्तहोतेहैं पर बिनाश्रमहो ताते नामदोनोंते बड़ोहै पुनिरामनाम कैसो
है बरदायक जो महादेवहैं तिनको बरदान दाता है बरदायक कही जो शिवजू एक

बरदानै दाताहैं और कछु नहींहैं पुनि बरदायक कहीएक बरदहै जिनके बरद कहे एक बरदानै दाताहै ताहीपर सदा आरूढ़ रहतेहैं दूसरबाहन हई नहींहै उत्तम बरदाता हैं बिकारबर नहीं देतेहैं पुनि एकसैलक्षको एककोटि होतहै ऐसेएकसैकोटि श्रीमद्रामायण एक बाल्मीकिजी कीन्ह्योहै तबशिवके पासलैगये शिवजूको सुनावनेलगे तहां यह खबरि त्रैलोक्यमें होतभई कि श्रीमद्रामायण कैलासपरहोतहैतहांइन्द्र बरुण कुबेर धर्मराज अग्नि पवन सूर्य शशि बृहस्पति शुक्र अरु ब्रह्मादिक सर्व देवता अरु सनकादिक नारद इत्यादि ऋषि अरु सिद्धजन अरु शारदा इत्यादिक शक्ति अरु व्यास शुकदेव अगस्त्य इत्यादिक अमित मुनीश्वर अरु सातहू पाताल नागलोक पिंगल बासुकी शेष अनन्त इत्यादिक तीनिहूं लोकके महा महाजन कैलासको आवतेभये शिवसंयुक्त श्रीमद्रामायणकै दण्ड- वत् कीन्ह शिवजीके आदरसे बैठतेभये एकसंवत् भरेमें बिधि बिधान संयुक्त श्रीमद्रामायण शतकोटि सुनतभये सुनिकै समस्त सहित महादेव परमानन्द परमसुख परम हर्ष को प्राप्तभये सबकी रामाकार बृत्तिभई तब सबके यह इच्छा भई कि श्रीमद्रामायण हहूमं को मिलै तब महादेवसे सबही प्रार्थना कीन्ह तब महादेव प्रसन्नता समेत शतकोटि रामायणके तीनि भाग कीन्ह तेंतीस कोटि तेंतीस लाख तेंतीस हजार तीनसै तेंतीस श्लोक दशअक्षर ब्रह्मादिकनको दीन्ह सो स्वर्गको लैगये अरु उतनै अनन्त जो . . . . . तिनको दीन सो पातालको लैगये अरु उतनै मुनिनको दीन्ह सो सातहू द्वीप नवखण्ड में बटिगयो बाकी रहिगयो दुइअक्षर रामनाम सो महादेव सबते मांगिलीन्ह हृदय में बिचारिकै जो कोई कहै कि महेशतो ऐसा रामनाम दुइअक्षर लैलीन्ह तब रामायण शतकोटि अपरहै सो तब रामनाम रहितभयो ताते महेश न लीन्ह किन्तु दोऊ अक्षर रामायणमें रहे सो व्याहरहे किन्तु भिन्नरहे सो तीनि बांटा न करत बनै तातेमहेश मांगि लीन्ह अब रामायणमें रामनाम नहींरह्यो अरु जे शास्त्रकाव्य इत्यादिक हैं ते बिना रामनाम अंकितसब झूंठेहैं तहां देवनमुनिन नागन कैसे लीन्ह यह सन्देहहै सो सुनो रामायण यह जो शब्दहै याको अर्थ रामायण श्रीरामचन्द्रको अयनकहे स्थानहै जहां सदा श्रीरामचंद्र रहतेहैं अरु जहां श्रीरामस्वरूप बिद्यमान तहां नाम आपुही बन्यो है अथवा रामायण रामनामहीको अयनहै ताते रामायण तौ रामनाम मयहै तहां यह भेदहै कि श्लोकन में स्वर सन्धि बिभक्ति धातु क्रिया कर्म इत्यादिकनको रामनाम ही प्रकाश किहेहै अरु तिनमें मिलिरह्यो है अरु श्लोकनके बीचबीच कहींकहीं भिन्नहू है पर पूर्बापरमें और और अक्षर परिगयेहैं तातेमहेश केवल रामनामही दुइअक्षर लैलियो है सो भजनहेतु केवल अहर्निश रामनाम महेश जपतेहैं अरुजहां श्रीमद्रामायण होतिहै तहां अवश्य करिकै सुनतेहैं यह प्रसिद्धहै अरु सबही श्लोक संयुक्त रामनाम लीन्ह्यो है महादेव केवल रामनामही लीन्ह्यो है (१)॥

२५ नामप्रतापशम्भुअबिनाशी। * १
शुकसनकादिसाधुमुनियोगी। * नामप्रसादब्रह्मसुखभोगी२

नारदजानेउनामप्रतापू * । जगप्रियहरिहरिप्रियआपू ३
नामजपतप्रभुकीन्हप्रसादू । * भक्तशिरोमणिभेप्रहलादू ४
ध्रुवस [illegible] । * पायउअचलअनूपमठाऊ ५
सुमिरिपवनसुतपावननामू * । अपनेवशकरिराखेरामू ६
अपरअजामिलगजगणिकाऊ । भयेमुक्तकरिनामप्रभाऊ ७
कहँलगिकहौंमैंनामबड़ाई * । रामनसकहिंनामगुणगाई ८

दो० राम नामको कल्प तरु कर कल्याण निवास ॥
जेहि सुमिरे भयो भागते तुलसी तुलसीदास १

२५ शिवजी अमंगल बेष किये हैं पर राम नाम के प्रतापते मङ्गलराशिही अरु अबिनाशी हैं ताते जिनके केवल रामनामही आधारहै सो कैसहू रहै मङ्गलरूपहीहै (१) शुकसनकादिक इत्यादिक नामके प्रतापते ब्रह्म सुख भोगीहैं (२) रामनामके प्रभावको नारद जान्योहै संपूर्ण जगत्को हरिहर प्रियहैं अरु दोऊजनको नारद प्रियहैं (३) राम नाम प्रह्लाद जप्योहै ताते रामप्रसादते प्रसाद कहो प्रसन्नताते भक्तशिरोमणि भयेहैं (४) पुनि ध्रुवजी ग्लानि संयुक्त नाम जपेउहै एकबार ध्रुवजी पांचवर्ष पूर्ण अवस्था भई है कोई समयमें पिता जोहै राजउत्तानपाद ताकी गोदमें बैठबेको चले तहां छोटी रानीको नाम सुरुचि सो राजाके पास बैठीरहै सो ध्रुवजी सों कहती भई हे ध्रुव तुमराजा की गोदमें बैठबे योग्य नहींहौ जाइकै तप करहु भगवान् से बरमांगिकै हमारे गर्भमें उत्पन्नहोहु तब राजाकी गोदमें बैठो यह बचन सुनिकै राजा नहीं बोल्यो रानीके बश रहे तब ध्रुवजी ग्लानि मानिकै अपनी माता के पासगये माताको नामसुनीति तब माता पूंछती भई ध्रुवजी सब समाचार कहिगये तब माता शोच संयुक्त कहतीहै हेपुत्र आपु मत शोचकरो हमारेसमय ऐसहीहै तबध्रुवजी ने कहा हेमातु जेहि भगवान् के हेतु तप करिबेकोकह्यो सोभगवान् कैसोहै अरुकहांहै तब माताबोलतीभई हेपुत्रभगवान् कोटिन कन्दर्पकी शोभाते अधिकहै अरु जेहिको चक्रवर्ती राजा राज्य छोंड़कै भजतेहैं अरु मुनीश्वर परमहंस इत्यादि विज्ञानी भजतेहैं अरुजेहि भगवान्कीभृकुटीकी एक बिलासमें कोटिन ब्रह्माण्ड उद्भव स्थिति लय होतेहैं अरु इन राजनकी कौनगतिहै अरु वह भगवान् सर्वत्र परिपूर्णहै जल थल नभ देश काल चर अचरमें पूर्णहै अरु सब को साक्षीरूप सबको चैतन्य कर्ता सबको कर्म फल प्रदाता सबको प्रेरक सबके परेहैं तब ध्रुवजीने कहा हमवाही प्रभुको भजन करहिंगे यह संकल्प करिकै तब तपहेतु चलते भये माताने बहुतप्रकार समुझायो ध्रुवजीने नहींमान्यो तब राजासुन्योकि ध्रुवजी बन को जातेहैं तब राजाने ध्रुवजीको बहुतप्रकार बुलायो कि राज्यलेहिं फिरिआवहिं तब ध्रुवजीबिचारकीन्ह कि देखो तौ मैंने अबहीं भगवान्को नहींजान्यो घरतेंनिकसतमात्र राज्यमिलतीहै प्रभुबड़े समर्थहैं यह जानिकै नहींफिरेउ तब कछु दूरिमें नारदजी मिले ध्रुवजी सों बोलतेभये चलो हम तुमको राज्य दिवाइ देहिं अरु तुम बालक हौ बनमें

तुम्हारी रच्छा कौन करैगो। तब ध्रुवजी बोलतेभये हे महामुनि श्रीनारदजी राज्यको मैं नहीं चाहौं अरुमेरी रच्छा सोई पुरुष करैगो जो सबजगत्की रच्छाकरतुहै अरु जो दशमास गर्भमें रच्छाकियोहै सो यहां हमारी रच्छा करैगो तब नारदजी प्रसन्नह्वैकै परमेश्वरको नाम उपदेश करतभये ध्रुवजी दृढ़करिकै जपत भये षट्मासनें भगवान् प्राप्तभये पुनि अचल अनूपम ठाउँ पायउहै इति प्रसंगे श्रीभागवते (५) पुनि रामनाम अतिपावनकर्त्ता ताको सुमिरिकै श्री हनुमान् जोहैं ते श्री रामचन्द्रको अपने बशकरि राख्योहै (६) पुनि अजामिल गज गणिका अपर कहे कोल किरात भिल्ल यमन इत्यादिक नामके प्रभावते शुद्ध ह्वैकै परम पद को प्राप्त भयेहैं पुनि एते सब बिबश ह्वैकै नाम उच्चारण कियोहै ते श्री रामचन्द्रको प्राप्त भये हैं अरु जो प्रीति सो रामनाम उच्चार करै है सो तो श्रीरामचन्द्रको प्राप्तही है यामें कौन आश्चर्य है (प्रमाणवाराहपुराणेशिववाक्यं) दैवाच्छूकरशावकेन निहतोम्लेच्छोजराजर्जरो हारामेतिहतोस्मिभूमिपतितोजल्पंस्तनुं त्यक्तवान्॥ तीर्णोगोपदवद्भवार्णवमहोनाम्नः प्रभावात्पुनः किञ्चित्त्रंयदिरामनामरसिकास्तेयान्तिरामास्पदं १ (पुनिश्रुतिप्रमाणहै) यश्चांडालोरामेतिवाचंवदेत् तेनसहसंवदेत्तेनसहसंभुंजीयात् (७) कहँलगि राम्नामकी बड़ाई मैं करौं श्रीरामचन्द्र जो अपनो रामनाम ताकी महिमाकहाचाहैं तो नहीं कहिसकैहैं इहां व्यंगस्तुति अलंकारहे जैसेकोई राजाको कहै किआपतो कृपण हो पर तुम्हारोप्रताप ऐसोहै जो कोई तुम्हारो नाम लेइतो बनमें सिंह नहीं बोलिसकै है अपरकी का चलीहै तब यह सुनिकै राजा मनमें बहुत प्रसन्न भयो तैसे गुसाईं तुलसीदास जी यह कहिकै श्रीरामचन्द्रको प्रसन्न करिदीन्ह जो यह अलंकार जानै सो यह चौपाई को अर्थ जानैगो (प्रमाणहनुमन्नाटके) रामत्वत्तोधिकंनामइतिमन्यामहेवयं॥ त्वयैकातारितायोध्या नाम्नातुभुवनत्रयं १ यह व्यंग्य स्तुति है पुनि दूसरा अर्थ जोश्री श्रीरामचन्द्र कोई जीव पर कृपाकरहिं तब उसको प्राप्तहोइ तबवह कृतार्थ होइ किन्तु जब श्रीरामचन्द्रके स्वरूपको ध्यानकरै पर समस्त इंद्रनकी बिषय मनकी बृत्तिमें लीनकरै पुनि मनकी बृत्ति जो स्थूल सूक्ष्म सो बुद्धिमें प्रवेश करिकै निश्चय करै बुद्धिकी निश्चय चित्तकी बृत्तिमें लीन करिकै चित्तकीवृत्ति आत्माबिषे लीनकरिकै समाधानको प्राप्तिहोइकै तब श्रीरामचंद्रके स्वरूपमें अखण्डतैलवत् धारासमाधिबँधै तब जीव श्रीरामचंद्रकोप्राप्त होइ अरु रामनाम काऊ कहै कहूंकहै कैसेहू कहे तेसब श्रीरामचंद्रको प्राप्त होतेहैं तहां प्रमाण (हिरण्यगर्भसंहितायां अगस्त्यवाक्यंश्लोकद्वै) श्रीरामेतिपरंमंत्रं तदेवपरमंपदं॥ तदेवतारकंविद्धिजन्ममृत्युभयापहं १ श्रीरामेतिवदंब्रह्मभावमाप्नोत्यसंशयं तत्त्वविद्यार्थिनोनित्यरमंते चित्सुखात्मनि २ ताते रामनामकी महिमा वेद स्मृति शास्त्र पुराण देवता मुनि इत्यादिक नहीं कहिसकैं अरु जेती महिमा रामनाम की वेदकहतु हैं तितनो जीवनको नहीं समुझि परैहैं अरु जो श्रीरामचंद्रजी आपुही अपने नामकी महिमा श्री मुखते कहहिं तौ कौन समुझैहै ताते श्री रामचंद्र अपने नामकी महिमा नहीं कहि सकतेहैं अरु श्री रामचंद्र अपने रामनामको अर्थ प्रभाव गुण स्वरूप संपूर्ण आपुही जानतेहैं पर कहि नहिंसके अपर कौन जानिसकैहै काहेते कि रामनाम रामस्वरूप एकहीहै ताते आपनो रूप गुण प्रताप नामनहीं कहते हैं औरै सब वेदादिक बर्णते हैं

तहां प्रमाण है । श्रीमन्द्दिःरामायणेशिवबाक्यं दु॰ श्लोक) वेदास्सर्वेतथाशास्त्राःमुनयोनिर्जरर्षभाः ॥ नाम्नःप्रभावमत्युग्रं तेनजानंतिसुव्रते १ रामएव भिजानन्ति कृत्स्नंनामार्थमद्भुतं ॥ ईषद्वदामिनामार्थं देवितस्यानुकंपया १ (८) दोहार्थ ॥ न्यूनाधिका रूपकालंकार कहतेहैं रामनाम अरु कल्प तरु कौन दात्मक अंग कहतेहैं मूल श्री रामस्वरूप है रकार अकार त्रयस्कन्ध है रेफ रेफकी अकार दीर्घाकार मकारकी अकार हलमकार पञ्चशाखा हैं चारिहू मुक्तित्वक् है षट्शरणागतसंयुक्त नवधाभक्ति पर्णहै कृपाकरुणा दया सौशील्यादिक परम दिव्य अनन्त गुण फूलहैं प्रेमलक्षण रसरूपहो फलहै पराभक्ति स्वाद पुष्टाहै उत कल्पतरु अर्थ धर्म काम त्रैफल दातानाम कल्प तरु जोहै सो श्रीराम अर्थ धर्मकाम भुक्ति मुक्ति भक्ति सदानित्य सर्वकाल सबकोदाताहै वह सवअनित्यहै यहसर्वानित्यहै अरु संपूर्ण कल्याण कारक है कर्ताहै काहेते कि संपूर्ण कल्याणको निवास कहे स्थानहै राम नाम (हनुमन्नाटकेश्लोक) कल्याणानांनिधानंकलिमलमथनंपावनं पावनानांपाथेञ्जजन्मुमुक्षोसपदिपरपदप्राप्तयेप्रस्थितस्य ॥ विश्रामस्थानमेकंकविवरवचसांजीवनंसज्जनानांबीजंधर्मद्रुमस्यप्रभवतुभवतांभूतयेरामनामाः १ गोसाईं तुलसीदास कहतेहैं कि जेहि रामनाम के सुमिरेते मैं भागते तुलसीदास भयों तुलसी प्रभुको अति प्रियहै तेहिको मैं दासभयों यह तुल्य योग्यता लंकारहै किन्तु जेहि रामनामके सुमिरेते नामके भागमें भागी भयों तुलसी कहै तुल्य योग्यता ऐसी दासत्वको प्राप्तभयो श्री रामरामचंद्रके तुल्यदास तुल्य योग्य भयो अथवा बृन्दानामे जलंधरकी स्त्रीसो नामहीके प्रभावते तुलसीरूप दासत्व को प्राप्तभई तुलसीदास जी कहतेहैं (१)

२६ चहुंयुगतीनिकालतिहुंलोका। भयेनामजपिजीवबिशोका १
वेदपुराणसंतमतएहू * । सकलसुकृतफलरामसनेहू * २
ध्यानप्रथमयुगमखविधिदूजे । द्वापरपरितोषकसमपूजे * ३
कलिकेवलमलमूलमलीना । पापपयोनिधिजलमनमीना ४
नामकामतरुकालकराला । सुमिरतशमनसकलजगजाला ५
रामनामकलिअभिमतदाता । हितपरलोकलोकपितुमाता ६
नहिंकलिकर्मनभक्तिबिबेकू । रामनामअवलंबनएकू * ७
कालनेमिकलिकपटनिधानू । नामसुमतिसमरथहनुमानू ८
दो० राम नाम नरकेहरी कनक कशिपु कलिकाल ॥
जापक जनप्रह्लादजिमिपालिहि दलिसुरसाल १

२६ चारिहू युगमें तीनिहू कालमें तीनिहू लोकमें रामनामके प्रभावतेजीव विशोक होतेहैं जन्म मरणरूप शोक ताते रहित होतेहैं (१) पुराणको सिद्धान्त अरु शास्त्र वेद को सिद्धान्त अरु सन्तनको अनभव सिद्धान्त विशेष यहीहै जेते सुकृतहैं योग बैराग्य

शुभ कर्मकाण्ड शुभज्ञान कर्मकाण्ड शुभनिज सउपासनाकाण्ड इत्यादि सुकृतहैं पर सबको फल रसमय राम येजो दोनों वर्णहैं तिनमें सत्भावते एकरसमय स्नेहकरना (२) प्रथम युग सतयुग तामें नामको जपै अरु प्रभुके स्वरूपको ध्यानकरै तब जीव कृतार्थ होहि अरुत्रेतायुगविषे नामजपै अरु सात्विकी यज्ञकरै प्रभुको समर्पणकरै तबजीव कृतार्थ होहिअरु द्वापर युगविषे नामजपैअरुप्रभुके पदपूजन करै प्रभुको समर्पणकरै तव प्रभु को परितोष होहि तब जीव कृतार्थ होहि (३) अरु कलियुग जोहै सो केवल मल जो है पाप त्यहिको मूलहै ताते मलीन ह्वैरह्योहै तहां पापस समुद्रवत् भरिरह्योहै तहां जन जोहै प्राणी तिन्हको मनमीन ह्वै रह्योहै नहीं भिन्न ह्वै सकैहै जलमीन इव (४) तेहि कलिकाल कराल बिषे रामनाम कल्पतरुहै संपूर्ण शुभ कामनाको दाताहै ताते रामनाम के सुमिरत संते संपूर्ण जोहै जगजाल सो समस्त शमन कही नाशहोइ जातहै अथवा पाप रूप समुद्रम मनरूप मीन ताको निकासि लेतुहै जैसे कोई सागरमें जाल परै है सो मीन इत्यादिक जलके जीव सबको निकासि लेतहै तैसे कोई रामनाम कहै जो सुनै जो सुमिरै जो बिचारै अरु रामनाम उच्चारण करै जहांतक शब्द सुनिपरै सो सबै जीवको मन संसार सागरते निकसि जातहै काहेते रामनाम महाजाल है (५) रामनाम चारिहू युगमें अभिमत कहे बांछित आनन्द व मोक्ष दाताहै पर कलियुग में बिशेष एक राम नामही मोक्ष दाताहै अपर हुई नहींहै अरु परलोक को हितकारी एकराम नामही है अरु लोकमें हित करिबे को उज्ज्वल यशशरीर को पालन रक्षा इत्यादिक सो करिबे को परम हितकारी पिता माता समान है ताते परलोक अरु लोक दोउन में निर्मल फलदाता रकार पितारूप मकार माता रूप जीव पुत्र रूप है (६) यह जो कलिकाल है तामें न कर्मको बिबेक है यज्ञ दान तपादिक अरु न धर्म को विवेक है बर्णाश्रम धर्म इत्यादिक बर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, ब्राह्मण को कर्म धर्म सम दृष्टि किंतु सम कहे चित्त बुद्धिमन अहङ्कार इनकी बृत्ति कामना विषे न चलै सो सम कही ब्राह्मणको एक गुण पुनि दम पांच ज्ञान इंद्री लक्षि करना पुनि ज्ञान चराचर में ब्रह्म भाव करना पांच कर्म इन्द्री तिनको विषय रोकि देना पुनि तप करना पुनि शौच त्रिकाल स्नानादिक पुनि शांति निंदास्तुति सहि जाना पुनि आर्जव कहे करुणा दया पूज्यमान पुनि ज्ञान सारासार को जानना अपने स्वस्वरूप को पुनि आश्रयमान अशीष शाप की सामर्थ्य ये ते नव ब्राह्मण में स्वाभाविक चाहिये पुनि क्षत्रियके कर्म षट्दान तपमें शूर तेजस्वी सब कोई डरै धैर्यमान सब प्रकार ते सावधान दक्ष कहे शास्त्रवेत्ता शास्त्र बिधि नीति करना युद्धमें अचलता वेद बिधि दान करिकै ईश्वरार्पण ये षट् क्षत्रके स्वाभाविक धर्म हैं वैश्य के धर्म कृषी बाणिज्य गऊका सेवन शूद्र तीनिहू बर्ण की सेवा करै प्रमाण (भगवद्गीतायांश्लोकास्त्रयः) शमोदमस्तपः शौचंशांतिरार्जवमेवच ॥ ज्ञानविज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजं १ शौर्यतेजोधृतिर्दाक्ष्यं युद्धेचाप्यपलायनं ॥ दानमीश्वरभावश्चक्षात्रंकर्मस्वभावजं २ कृषिगौरक्ष्यबाणिज्यंवैश्यकर्मस्वभावजं ॥ परिचर्य्यात्मकंकर्मशूद्रस्यापिस्वभावजं ३ पुनि आश्रम कर्म धर्म ब्रह्मचारी बिद्या ध्ययन स्वहस्त भोजन गुरु आज्ञा करना गृहस्थ को कर्म जो धन उत्पन्नकरै

कोई यत्नसे तामें अठ रह भागनें एक भाग तुरंत पुण्य करदइ अरु सत्तर भाग में गृ-हस्थी करै अतिथि सेवन नात कुटुंब सेवन अरु पितृका नित्य नित्य तर्प्पण श्राद्ध करै देव ऋण यज्ञकरै ऋषि ऋण तीर्थ व्रत दान ये तीनिऋणते तब छूटै अरु नित्य पंच बलिवैश्य करै इन्द्र वरुण कुबेर धर्मराज अग्नि इनके हेतु अरु पंच देवता का पूजन करै विष्णु शिव देवी गणेश सूर्य्य पूजिकै विष्णुते मुक्ति मांगै किंतु जो गुरु इष्ट बतावै सोई पूजन करै पुनि वानप्रस्थको कर्म जो ब्रह्मचारी बिवाह करै पुनि वानप्रस्थ लेइ तब बनमें जाइके स्त्री संयुक्त तप करे किंतु ब्रह्मचर्य्यही ते वानप्रस्थलेइ बनमें जाइ तप करै पुनि संन्यास कर्म सो दुइ प्रकार को एक वैष्णव एक शैव ते द्वौ दण्ड ग्रहण करिकै कहूं दुइ राति नहीं टिकै ग्राममें नहीं जाइ रात्रिको भोजन धातु बाहन को त्याग ब्रह्मनेष्ठी वेदवेत्ता बैराग्यमान बाह्यांतर इंद्रीजित् पुनि संन्यास में दुइभेद एक बिविदिषा संन्यास जो कहि आये हैं कछु कर्म वेद आज्ञा लिये हे अरु एक विहित संन्यास परमहंस दशा इत्यादि वर्णाश्रम कर्म धर्म बहुत हैं पुनि भक्ति श्रवण कीर्तन स्मरण पाद सेवन अर्चन बंदना दास्य सख्य आत्म समर्पण ये नवधा भक्ति अरु प्रेमा परा ये दुइ सुतंत्रा भक्ति हैं साधन रहित हैं केवल राम कृपारूप हैं येते सब कर्म धर्म योग बैराग्य ज्ञान भक्ति इन सबनको विवेक कलियुग में नहीं होसकैहै केवल सर्व कल्याण हेतु एक रामनाम यह कलियुगमें जीवन को अवलंबन है प्रमाण (बाल्मी-कीये भूषणटीकायां) रामेतिवर्णद्वयमादरेण सदास्मरन्मुक्तिमुपैतिजंतुः ॥ कलौयुगेकल्म षमानसानामन्यत्रधर्मेखलुनाधिकारः (७) कलि जो है कपटको निधान कहीं स्थान सोई कालनेमि राक्षस है अरु रामनाम सुमतिमान समर्थ हनुमान् जो हैं ताके नाश करिबे को (८) दोहार्थ ॥ पुनि रामनाम श्रीनृसिंहजू हैं अरु कलिकाल जोहै सो हि-रण्यकशिपु है अरु रामनाम के जापक जे हैं ते प्रह्लादजूहैं जैसे प्रह्लादके हेतु श्रीनृसिंह जू हिरण्यकशिपु जो देवतनको शालत रह्यो है ताको मारिडारेउ है तैसे जो रामनाम जपै ताके जेते कलिके कपट इत्यादिक विकार हैं सो समस्त नाश करि देतु है अरु संतजन सुर मुनिहैं तिनको पालन करैहै अवश्य रामनाम ऐसोहै बहुत का कहों राम नाम कल्याणको स्थानहै आधारहै अरु भुक्ति मुक्ति ज्ञान भक्ति इत्यादिक सर्वकल्याण को आधेय है पर एक रस पूर्ण अरु सर्वयुग सर्वकाल सर्वदेश में सर्व जीवन को सर्व क-ल्याण कर्त्ता एक राम नामही है ब्रह्मानंद परमानंदरूप है तहां प्रमाण है (श्रीहनु-मन्नाटके श्लोक) कल्याणानांनिधानंकलिमलमथनंपावनंपावनानां पाथेयंयन्मुमुक्षोः सपदिपरपदप्राप्तयेप्रस्थितस्य ॥ बिश्रामस्थानमेकं कविवरबचसांजीवनंसज्जनानां बीजं धर्मद्रुमस्यप्रभवतुभवतांभूतयेरामनामः १ तहां यह श्रीगुसाईं तुलसीदास जी पुकारि कै कहतेहैं कि सर्वकाल में उपाय शून्य होइ कै राम नाम जपहु (अन्यश्लोक) तदेव लग्नंसुदिनंतदेवताराबलंचंद्रबलंतदेव ॥ विद्याबलंदैवबलंतदेवसीतापतेर्नामयदास्मरामि १ ताते रामनाम सर्वकाल में निर्विघ्न मङ्गल कर्त्ता है (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकल कलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेश्रीसीतापतिरामनामसर्वोपरिबर्णनंनामसप्तमस्तरङ्गः ॥ ७ ॥

दोहा ॥ अष्ट तरङ्गम नाम फल राम कृपा पटग्रर्ण ॥
रामचरण सौशील्य रस सत महात्म्य दुख हर्ण ८

२७ भावकुभायअनखआलसहूं। नामजपतमंगलदिशिदशहू
सुमिरिसोरामनामगुणगाथा। करौंनायरघुनाथहिमाथा
मोरिसुधारिहिसोसबभांती *। जासुकृपानहिंकृपाअघाती ३
रामसुस्वामिकुसेवकमोसे । निजदिशिदेखिदयानिधिपोसे४
लोकहुवेदसुसाहिबरीती *।
गनीगरीबग्रामनरनागर *। पंडितमूढमलीनउजागर *६
। नयहिंसगहृतसबनरनारी७
साधुसयानसुशीलनृपालू *। ईशअंशभवपरमकृपालू *८
सुनिसनमानहिंसबहिंसुबानीभणितभक्तिमतिगतिपहिचानी९
यहप्राकृतमहिपालसुभाऊ। जानिशिरोमणिकोशलराऊ१०
*। कोजगमन्दमलिनमतिमोते ११

दो० शठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहैं राम कृपालु ॥
उपलकियेजलयानजिन सचिवसुमतिकपिभालु १
सहूं कहावत सब कहत राम सहत उपहास ॥
साहब सीता नाथ से सेवक तुलसी दास २

२७ रामनाम भाव समेत जपै किंतु अभाव समेत जपै किंतु अनख कहे ईर्षा समेत जपै किंतु आलस कहे जंभुवात संते किंतु आलस कहे सर्व प्रकार हारिकै आसक्त होइ कै रामनाम कैसहूं जपै दशहूं दिशामें मंगल होइ है पश्चिम बायव्य कोण उत्तर ईशान्यकोण पूर्व अग्नेयकोण दक्षिण नैर्ऋत्यकोण अरु ऊर्ध्व दिशा आकाश पुनि अद्धं दिशा पाताल येते दश दिशा ताके देवता दशब्रह्म महो ते जानब बरुण बायु कुबेर शिव इंद्र अग्नि यम निर्ऋति आकाशको देव आकाशही है किंतु कोई मुनि वाक्य है आकाश को देवता शिव भगवान् है पवन तत्त्वको देवता अनन्त जो भगवान् शेष हैं अरु अग्नि तत्त्वको देव सूर्य भगवान् हैं जलको देव बरुण भगवान् हैं महितत्व को देवता बाराह भगवान् हैं अरु पाताल को देव अष्टकुली नाग भगवान् है येते दश देवता दश दिशाके अरु तीनि गुण देवता संयुक्त रामनाम जपत संते मंगल करते हैं अथवा दश दिशा पांच ज्ञान इंद्री श्रोत्र त्वक् चक्षु रसना घ्राण पुनि पांच कर्म इन्द्री मुख हाथ पग लिंग गुदा येते दश इन्द्री दशौ दिशा तिनके देवता क्रमही ते जानब आकाश देवता श्रवणको ताको बिषय शब्द त्वक्को पवन देव बिषय स्पर्श चक्षुको देव

सूर्य विषयरूप जीभको देव वरुण विषयरस नासिकाको देवता अश्विनीकुमार सूर्यकेपुत्र ताको बिषय गंध मुखको देव अग्नि बिषय भक्षण हाथके देव इन्द्र बिषय व्यवहार पगको देव यज्ञ बिष्णु बिषय चलन लिंगको देव प्रजापति दक्ष बिषय मैथुन गुदाकोदेव यमराज बिषय विसर्ग येते दश दिशा अरु ताके देवता समस्त राम नामके जपेते परम दिव्य मंगल करते हैं सो प्रह्लाद में देख लेव प्रमाण (नृसिंह पुराणे प्रह्लादवाक्यं पितरंप्रति श्लोक) रामनामजपतांकुतोभयंसर्वपापशमनैकभेषजं ॥ पश्यतातममगात्र सन्निधौपावकोऽपिसलिलायतेऽधुना १ ऐसेही बाल्मीकिये ध्रुवइत्यादिक भये भावते रामनाम जिनने जपेउहै प्रह्लाद बिभीषण इत्यादिक जे ऐसेहुतेउनकी मंगलमें रामनामके प्रतापते भक्तराजभये रामनामकी दृढ़ताते अरु कुभावते हिरण्यकशिपु रावणइत्यादिक नाम कहेहैं ते कृतार्थभयेहैं अरु अनखते शिशुपाल इत्यादिक नामकहेहैं तेऊ कृतार्थ भयेहैं अरु अलसाइके कहे हारिके आसक्तहूके आर्त संयुक्त द्रौपदी गज इत्यादिक ते सब लोक परलोकहूमें मंगलमय भये हैं ताते रामनाम कैसहू जपै सो मंगल मय है यह ध्रुव कहे निश्चय है अरु जो भावते नाम जपे हैं तिनने दशनामापराध बचाइके जपे हैं नामापराध कौन हैं शिव विष्णु में भेद करै कोई ईश्वर ततत्व मानिके किन्तु ईश्वर कोटी मानिके शिव विष्णु में अभेद करते हैं कोई जो उपासक हैं किन्तु मतबादी हैं तेऊ बिष्णुको भगवत्मानिके शिव को भगवत मानिके अभेद करते हैं (प्रमाणभागवते) बैष्णवानांयथाशम्भुः ॥ ताते भगवत् भागवत अभेद है तहां प्रमाण है (अन्यच्च श्लोकार्द्ध) श्रीमद्रामस्वरूपतोजनबपुर्भिन्नजातक्वचित् मीनाद्यारघुनाथयथा द्वयपतिःसर्वैवतारायथा ॥ ताते शिव को भगवत् अत्यन्तप्रियहैं अरु भगवत्को शिव अत्यन्त प्रिय हैं ताते द्वौ अभेद हैं पुनि प्रमाण (हरिबंशे ब्रह्मणोक्तं) रुद्रोबिष्णुः प्रबिष्टस्तुविष्णुरेवयथाभवेत् ॥ विष्णुःरुद्रप्रबिष्टस्तुरुद्रएवतथाभवेत् ॥ तस्मादेकत्वमापन्नौ रुद्रयेंद्रौचताबुभौ ॥ ताते शिव विष्णु में भेद नहीं है अरु भगवत् के नाम रूप एक ही है तहां शिवजी केवल भगवत् नामरूप अपर कर्म जानते नहीं ताते कीट भृङ्ग के न्यायकरिके शिव बिष्णु में अभेद है जोई रीति सों जो जानै सोई रीतिसों विष्णु में शिवमें अभेदमानै तब नामापराधमिटै (अथनामापराध) शिव विष्णुमें भेदकरै १ पुनि वेद निन्दा २ अरु सन्त कैसहू होइ तिनकी निन्दाकहे लघुता करना ३ पुनि नाम के बलते पाप करना कि हम केतेऊ पापकरैंगे नाम जपैंगे मिटिजाइगो ४ पुनिश्रद्धाहीन को नाम उपदेश करना ५ पुनि मुक्तिके साधन अनेकहैं तिन सबनकी नाम की बराबरि जानै सो अपराध ६ पुनि नामके माहात्म्यमें मिथ्या बुद्धिकरना ७ पुनि नामके माहात्म्य में बिश्वास नहींआवैहै ८ पुनि गुरुको निरादर ९ पुनि नामके माहात्म्यमें अपर कल्पना कल्पना कहे यह मनमें ल्यावतहैं कि जो नामकहेते मोक्षहै तौ सबै प्राणीनाम कहते हैं तौ सबै मोक्षमान हैं किन्तु यह मनमें ल्यावतहैं कि नाम अपर साधन सहित मुक्ति दाताहै १० येते दशनामापराध हैं जो हरि अपराध होइ तौ नाम के जपेते मिटिजात है अरु जो जानिके नामापराध करै सो कितनौ नाम जपै फलीभूत नहीं होत है अरु अजान नामापराध होइ तौ परमेश्वर के स्वरूप में मन आवेश करिके प्रेम समेत आर्त

संयुक्त नाम उच्चारण करै तौ नामापराध मिटिजात है पर पुनि नामापराध न करै तब परमेश्वरको नामकोटिन जन्मके संचित कर्म शुभाशुभ सो नाशकरि देतहै मोक्षकरतहै ताते जे भाव समेत नामापराध बचाइकै नाम जपते हैं ते सारूप्य सामीप्य मुक्तिको प्राप्त होतेहैं अरु जे कुभावते कि अनखते परमेश्वर के नाम मुखते निकासते हैं अरु कहते कहते शरीर पात ह्वैजाइ तब ते कैवल्य मुक्तिको प्राप्त होतेहैं अरु उनको नामापराधको ज्ञान नहींहै अरु जे आलस्य आसक्त आर्तते अपनी रक्षाहेतु नाम उच्चारण करतेहैं ते सालोक्य मुक्तिको प्राप्त होतेहैं उनको भी नामापराधकी सुधिनहींहै (१) ऐसो श्रीराम नाम ताको हृदयमें स्मरण करिकै धारण करिकै श्री रामचंद्रजी को माथनवाइ कै श्रीरामचंद्रजीके गुणनकी गाथाकरौं (२) जिन श्रीरामचंद्र जीको नामऐसोहै ते श्रीरामचन्द्र मेरीसब प्रकारते सुधारहिंगे जिन श्री रामचन्द्रकी कृपा कै कृपा चाहतु है ब्रह्मा शिवादिकन कै कृपा सो अघातिही नहीं इन सबन कै कृपा यह चाहती है कि श्रीराम कृपा हमारे ऊपर नित्य करतही रहैं किन्तु जासु कही जिन श्रीरामचंद्रकी कृपाबिना अपर देवकी कृपाते अघाती कहे अघको हत कहे नाश होतई नहीं (३) देखिये तौ हमैं ऐसे कुसेवक तिनहूंको अपनी दिष्टि देखिकै पोषण कीन्ह काहेते श्री रामचंद्रजी सुष्टुस्वामीहैं अरु दयाके समुद्रहैं (४) अरु यह बात तौ लोकहू वेदमें प्रसिद्धहै कि सुष्टु साहबजेहैं ते सबकी बिनती सुनिकै जाकी जैसी प्रीति होती है तैसेही सुसाहब पहिचानि जातेहैं (५) जैसे कोई राजा है ताके ग्राममें सबै बसतेहैं गनीहैं गरीबहैं नरन में नागरहैं पण्डित हैं मूढ़ हैं मलीन हैं उजागर हैं (६) सुकबिहैं कुकबिहैं इत्यादिक अनेक हैं ते सब अपनी मति करिकै राजाको सब नरनारि सराहते हैं (७) तहां राजा जो है सो साधुहै सुजानहै सुशीलहै ईशको अंशहै अरु परम कृपालुहै (८) राजा जोहै सो सबकै स्तुति सुनिकै सुष्टु बाणीते यथा योग्य सबका सन्मान करत भयो तहां सुकबि की भणित कही काव्य की रचना अरु पण्डित की भणित वेद शास्त्र बांचबे की अरु अर्थन की रचना दुइकी भणित पहिचान्यो है अरु गनी कही गनती वाले धनवान् जो हैं तिनकी भक्ति कही सेवा जो धन करिकै करते हैं अरु नागर कही जे नरनमें श्रेष्ठहैं कुलमें जातिमें क्रियामें ते राजासे उत्तमकर्म धर्म कराइकैराजा की भक्ति करते हैं इन दोनों की भक्ति पहिचान्योहै अपने बिषय अरु उजागर कही सभाचातुर तिनकीसुमतिकी चातुरी सुष्टु मतिवाले सबसराहतेहैं राजै तिनकी सुमति पहिचान्यो अरुगरीब कही दीन को कि मोसे कछु नहींबनै जाके एक राजहीकी गतिहै अपर किसूको कभी जानते नहीं हैं अरु एकै ग्रामीण जे गवांर हैं अरु एकै मूढ़हैं मूढ़ कही जो किसीकी कही समुझतेनहीं मानते नहीं एक मनवचनकर्म राजहीकी गतिहै मैतैं अरु एकै मलिनहैं जाको धर्म कर्म इत्यादिक एकौआवतै नहीं एक राजाके आश्रय हैं अरु एकै कुकबि हैं जिनको छन्द प्रबंध अलंकार अक्षरन की मैत्री लघु दीर्घ घटि बढ़ि इत्यादिक समझतै नहीं एकराजाको यश प्रेमसंयुक्त पदबनाइकै गावतेहैं एक राजहीकी गतिहै इनचारिहू किन्तु पांचहूकी गति पहिचान्यो तहां राजासबको सराहत भयो परइन चारिहू पांचकी गति हृदय में जानिकै हंसिकै सराहत भयो एतो स्वभाव तो प्राकृत राजन में है यह

दृष्टांत है अब दार्ष्टांत कहते हैं जे ब्रह्मा शिवादिक सर्वज्ञ त्रिकालज्ञ तिन सबन के शिरोमणिश्रीरामचन्द्र सबकेईश महाराजनके राजा तिन श्रीरामचन्द्रजीके अनेकब्रह्मांड सोई ग्रामहै तामें सब बसतेहैं गनी कही गनतीवाले सर्व दिग्पाल चन्द्र सूर्य इत्यादिक नागर ब्रह्मा पुत्रन संयुक्त पुनि पण्डित मुनीश्वर बृहस्पति शेष इत्यादिक पुनि कवि शुक्र व्यास बाल्मीकि इत्यादिक पुनि उजागर शारदा इत्यादिक पुनि गरीब गवांर मूढ़ मलीन कुकवि ये जो पांचहैं सो गुसाईं तुलसी दासजी कहतेहैं कि ये पांच हम सरीखे जिनको कछु आवतैनहीं सब प्रकारते हीनहैं पर एक महाराजनकेराजा श्रीरामचंद्रपर-मेश्वरपरब्रह्म हैं तिनहीकीगति हमको केवलहै अपर जे अनेक साधन लोक परलोकके हैं कर्मकांड ज्ञानकांड अरु भक्ति जो दोनों लिखेहैं सो सब हमकोआवतैं नहींहै यह सत्य करिकै कहतहौं केवल श्रीरामगति हमकोहै यह उपाय शून्य प्रपत्ति शरणागत कहावत है दुर्लभ है ध्वन्यात्मक अर्थहै (६) अरु वह तौ प्राकृत राजन के स्वभाव हैं अरु श्री रामचन्द्र तौ ज्ञान शिरोमणि हैं यह भरोस है परम दृढ़ करिकै अरु कोशलाधीश श्रीरामचन्द्र परम उदार दीनदयालु अशरण शरण हैं यह भरोस है (१०) ज्ञान शि-रोमणि तौ श्रीरामचन्द्र हैं पर निसोत स्नेहते रीझते हैं निसोत कहे निर्मल तैलवत् धार ताते यह अवश्य चाहिये कि जो कोई कर्त्तव्य ते श्रीरामचन्द्र में स्नेह होइ ताही में संकल्प करै अरु जो स्नेह में प्रतिकूलता होइ ताको बिशेष त्याग करै आधी चौपाईको अर्थ पुनि कार्यते कहते हैं यह जगत् में मेरी समान मतिमन्द कोई नहींहै मोसे कछु नहीं बनै यह सत्य कहौं हौं ताते मेरे ऊपर रामजी कैसे रीझेंगे (११) दोहार्थ ॥ यहां आरत गोप्तृत्व मिलित है गुसाईंजी कहते हैं कि मैं तो मतिमन्द हौं पर शठजे बाल बुद्धी सेवकहैं तिनकी प्रीतिकै रुचि श्रीरामचंद्र राखतई आये हैं कैसे जानिये जिन श्री रामचंद्र पाषाणकी नाव अरु सुमतिमान मंत्री कपि भालुकीन्हे है अरु काठकीनाव अरु सुपात्र प्रबीण मंत्री चाहिये अरु ज्ञान भक्ति करिकै जीव संसारके तरैहैं यह वेदकीबाक्य है अरु ब्रह्माने अपनी सृष्टिमें यही मर्यादा कियोहै तहां पाषाण की नाव कपि भालु चञ्चलते मंत्री अरु तृण पाषाण कोलभिल्ल राक्षस बानर भालु इत्यादिक जिनकीओर प्रभु देखेउ अरुजिनने प्रभु कोदेखेउ तिनसबहीको परमपददीन जेहि पदको महामुनीश कठिनता ते प्राप्त होतेहैं देखिये तौ प्रभुस्वरूप बहुतहै अरु समर्थसबहैं परजैसो श्रीराम-चंद्र कीन्हहै ऐसो किसू प्रभुने नहींकियो ताते श्रीरामचंद्रमहाराजहैं महाप्रभुहैं परब्रह्म हैंपरमकृपालु हैं यह मोको जानि परेउ है (१) रीझत राम सनेह निसोते यह चौपाई लैकैअरु यह दोहा तक राम निकाई रावरीहै सबही को नीक यह प्रसंगमें श्रीरामचंद्र की शरणागत जो षट् प्रकारहै सो कहते हैं ताते षट् शरणागत के लक्षण प्रथम जनाइ कै तब आगे चौपाइन को अर्थ करेंगे तहां प्रमाण है (अन्यच्चश्लोक) आनुकूलस्य संकल्पः प्रातिकूलस्यबर्जनं ॥ रक्षस्यतीतिविश्वासो गोप्तृत्वबर्णनंतथा १ आत्मा निक्षेपका-र्पण्यं षड्बिधाशरणागतिः ॥ ताको अर्थ जो धर्म कर्म ज्ञान उपासना इत्यादिक जो केवल श्री रामचंद्रके अनुकूल होइ रामस्नेह मय होइ तामें बारम्बार संकल्प करै कि यह करिबे योग्य है मन बचन कर्म इहै करौं बिशेष अरु काल कर्म गुण स्वभाव बश

न होइ सो लाचार १ अरु जो रामचंद्र से प्रतिकूल होइ रामस्नेह में विक्षेप करै सो धर्म कर्म ज्ञान उपासना ताको त्यागकरै २ पुनि आत्म समर्पण तन मन बचन श्री रामार्पण समस्त अपनपौ दूरिकरै ३ पुनि कार्पण्यहै श्रीरामचंद्र मोसे कछु नहीं बनै ४ पुनि गोप्तृत्व वर्णन जिन श्रीरामचंद्र अपनो कीन्ह है कोलभिल्ल शवरी गीध बानर रीछ राक्षस जिनको जाति शरीर धर्म कर्म मन बचन लोक वेद करिकै निन्दित है तिनको अवगुण श्रीरामचंद्र एकहु नहीं लीन अरु अपनो नीकी प्रकारते कीनहै देखिये तौ जिनको समस्त रीति चौरासी नरक भोग करिबे योग्य तिन सबको सेवते रक्षाकीन परमपद को प्राप्त करिदीन ऐसे श्रीरामचंद्र उदार कृपालु दयालु हैं जो वेद ने नहीं कही गुप्त राख्यो है सो श्रीरामचंद्र प्रत्यक्षकरि दीन अपने प्रतापते यह स्तुति करै यह गोप्तृत्व वर्णनहै पुनि रक्षा में बिश्वास जो कोई कैसहू होइ कैसहू रीति से प्रीति भय आर्त इत्यादिक जे सुकृति कहे एकहु बार श्रीराम शरणजाइ तेहि जीव को श्रीराम-चन्द्र अभय करिदेते हैं पर स्वाभाविकहिंते अरु तेहि को अवगुण देखि नहीं लेते हैं सुग्रीव विभीषण इत्यादिक में देखि लेव यह बिश्वास करना ऐसेही मेरी रक्षाकरैं गे इतिषट् ६ ॥ (बाल्मीकीयेश्लोक द्वै श्रीरामचंद्रवाक्यं) सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाचते॥ अभयंसर्बभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम १ मित्रभावेनसंप्राप्तं नत्यजेयंकथञ्चन ॥ दोषोयद्यपि तस्यस्यात्सतामेतदगर्हितं २ (दोहार्थ) देखिये तौ जो मोको कोई बूझत है कि तुम को हौ तब यह कहत हौं कि मैं श्री राम सेवक हौं अरु औरौ सब कोई श्रीराम दास कहते हैं यह बड़ी उपहास्य कही हँसीवा है काहेते कि जैसो साहब होइ तैसो सेवक चाहिये श्रीरामचंद्र की सेवकाई योग्य शिव हैं हनुमान् अगस्त्य शुक सनकादि शारदा इत्यादिक हैं अरु मैं मति मन्द अरु साहब सीतानाथ तिनको मैं सेवक क-हावत हौं यह बड़ी उपहास्य है बड़ी लघुता है इहां सीतानाथ क्यों कहा तीनिशक्ति हैं श्रीशक्ति भू शक्ति लीलाशक्ति सो श्रीसीताजी से उत्पन्न हैं ताते सीतानाथ कहा (प्र-माणहैअन्यत्त्रश्लोक) जानक्यंशसमुद्भूत श्रीभूलीलादिभेदतः ॥ प्रकाशंश्रीश्चभूधारांली-लालयभवस्थितिं २ ॥

२८ अतिबड़िमोरिढिठाईखोरी। सुनिअघनरकहुनाकसिकोरी १
समुझिसहमिमोहिंअपडरअपने। सोसुधिरामकीन्हनहिंसपने २
सुनिअवलोकिसुचितचखचाही। भक्तिमोरिमतिस्वामिसराही ३
कहतनसायहोयहियनीकी ※। रीझतरामजानिजनजीकी ४
रहतनप्रभुचितचूककियेकी ※। करतसुरतिशतबारहियेकी ५
जेहिअघबध्योब्याधजिमिबाली। सोइसुकंठपुनिकीन्हकुचाली ६
सोइकरतूतिबिभीषणकेरी ※। सपनेहुसोनरामहियहेरी ※ ७
तेभरतहिंभेटतसनमाने ※ ※। राजसभारघुराजबखाने ※ ※ ८

दो० प्रभु तरुतर कपि डारपर तेकिय आपु समान ॥
तुलसी कहूं न रामसम साहिब शील निधान १
राम निकाई रावरी है सबही को नीक ॥
जो यह सांची है सदा तो नीको तुलसीक २
यहिबिधिनिज गुणदोष कहि बहुरि सबै शिरनाय ॥
बरणौं रघुपति विशदयश सुनिकलिकलुष नशाय ३

२८ देखिये तौ एते बड़े सीतानाथ स्वामी अरु मैं मतिमन्द तिनको सेवक कहावतहौं एती बड़ी मेरी ढिठाई ताकी खोरि कहे खोटाई अतिशय है ताको सुनि कै अघ अरु नरक दोनों नाक सिकोरत भये यह जानिकै पाप कहत भयो कि यह तौ हमारो सम्बन्धी है अरु नरक कहत है कि हमारे योगयहै अरु रामसेवक कहावत है यह तौ बड़ी ढीठता है (१) अब सात चौपाई में आत्म समर्प्पण कहते हैं मैं राम सेवक कहावतहौं औ अपनी करणी समुझत हौं तौ रामचंद्र को सेवकाई योग्य मेरे एकहु लक्षण नहींहैं धर्म बिरोधी कर्म मेरे हैं ताते अपने मनमें यह समुझिकै आपुही ते आपु मैं डरिगयो हौं तहां मेरे गुण अवगुण जाग्रत के स्वप्न के श्रीरामचंद्र को एकहू सुधि नहीं कीन्ह कैसे जान्यो जो मेरे अवगुण श्री रामचंद्र सुधि करते तौ मेरे अन्तष्करण में उद्वेग उठतो (२) तब मैं जहां तहां संतन ते सुनेउं शास्त्रन में सुनेउं गुरुनते सुनेउं तब सब सुनिकै हृदय के नेत्रन ते सुचित्त ह्वैकै अवलोकन कियेउं तब यह देखि परेउ कि मेरी मति अनुसार जो है मोमें भक्ति सो स्वामी की सराही ऐसी समुझि परती है कि स्वामी अंगीकार कीन्हे हैं (३) काहेते जो कहतकै नशाइ जाइ कहते न बनै करते न बनै अरु हृदय में नीकी प्रकारते सांचो ह्वैकै चतुष्ट अंतष्करण आत्मा श्रीरामार्पण करिदेइ चाहै कर्म सबन ते वेद को कहा कछु बनै चाहै न बनै श्रीरामचंद्र अपने जनके अंतष्करण की जानिकै रीझते हैं (४) पुनि जनसों जो कुछ चूक परै सो श्रीरामचंद्र चित्तमें ल्यावते नहीं काहे ते उनके मनमें तौ केवल अनन्य भजन की निश्चयहै अरु जो संसार बशते किंतु काल बशते किंतु संग दोष ते बचन कर्मते व्यभिचार बिचार होते जातेहैं सो चूक श्रीरामचंद्र देखते नहीं बार बार उसके हृदयकी सचाई पर सुरति करतेहैं अरु उसको अपनो जन बिशेष मानते हैं यह श्रीरामचंद्र की सहज रीतिहै (श्रीबाल्मीकीयेश्लोक ४) तद्ब्रूहिवचनंदेविराज्ञायदभिकांक्षितं ॥ करिष्येप्रतिजानेचरामोद्विर्नाभिभाषते १ कथंचिदुपकारेणकृतेनैकेनतुष्यति ॥ नस्मरेत्युपकाराणांसतमप्यात्मवत्तया २ (नाटके) द्विःशरंनाभिसंधत्तेद्विःस्थापयतिनाश्रितान् ॥ द्विर्ददातिनचार्थिभ्योरामोद्विर्नाभिभाषिते ३ (पुनःश्रीभगवद्गीतायां) अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक् ॥ साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः ४ कैसे जानिये कि श्रीरामचंद्र अपने जनकी चूक नहीं लेते उसके हृदयकी प्रीति बारंबार सुरति करते हैं गोसाईं तुलसीदास यह कहते हैं कि मैं तौ मन बच कर्म श्रीरामार्पण करि दियो

है पर उपाय शून्य ताते अब चाहै मोसे कर्म धर्म बनै चाहै न बनै मेरे कछु शोचनहीं है अरु मेरी दशा श्रीरामचंद्र जानते हैं जे श्री रामचंद्र मोको समस्त अवगुण मेटिकै आपन कीन्हेहैं ताते मैं तौ आपुही ते जान्योंहै कि श्रीरामचंद्र जनकी चूक नहीं लेते हैं (५) जो कोई कहै कि तुम कैसे जानेउ कि श्रीरामचंद्र मेरो अवगुण मेटिकै अपनो कीन्ह है तहां यह बात प्रसिद्ध है देखिये तो जौने अघते बालिको मारेउ सोई सुग्रीव कीन्हदेखिये तौ सुग्रीवकी स्त्री संयुक्त जो बिषयमें बालि लीन रहेउ सोई बिषयमें सुग्रीव लीन भयो श्रीरामचंद्रके देखत संते सो सुग्रीवको अवगुणएकहू नहीं लीन काहेते सुग्रीव शरणागतभयोहै कैसेजानिये सुग्रीवसांचा है कै कह्यो श्रीरामचंद्रसोंहै(चौपाई)सुखसम्पति परिवार बड़ाई । सब परिहरि करिहौं सेवकाई ॥ सो श्रीरामचंद्र मानि लीन पुनि कह्या हे सखे राज्यकरो अरु बिषयको फल जन्म मरण सो मोसों न होने पावैगो ताते एक बार श्रीराम शरण भयो ताको अभय कियो अरु ऋद्धि भोग करै पर श्रीराम प्रताप ते दंड रहित भयो (६) अरु सोई बिभीषण की रीति जानिये ताते जीव श्रीराम शरण एक बार जाइ पुनि उसके अवगुण जाग्रत स्वप्नके एकहू नहीं लेते (७) देखिये तौ ते बिभीषण सुग्रीव इत्यादिकन को भरत के मिलत संते श्रीरामचन्द्र बखानते भये पर राजसभा में जहां बशिष्ठ सुमंत्र भरत जी तहां बड़ाई देते भये (८) दोहार्थ ॥ अब रक्षा में बिश्वास करते हैं देखिये तौ प्रभु जो हैं स्वामी श्रीरामचंद्र ते तरुके नीचे बैठेहैं अरु बनर तरुके ऊपर चढ़ेहैं पर कपिनकै सुरति श्रीरामचंद्र के कार्य्य में लगी है ताते ऊंचे नीचेकी सुधि कपिनको नहीं है तिन कपिनको श्रीरामचंद्र अपने समान कीन्हे हैं ताते श्रीरामचंद्र जी के समान शीलको निधान को है अपर जे भगवत् के स्वरूपहैं तेभी ऐसी साहिबी नहीं जानतेहैं जैसी श्रीरामचन्द्र जानते हैं अपरकी कौन चलीहै श्रीरामचंद्र आपनो स्वरूप दीन्ह समस्त रीछ राक्षस बानर इत्यादिकनको स्वरूप मुक्तिको प्राप्त कीन पर याही तनमें देखिये तौ ऐसो अपर अवतार में कब कियोहै किंतु बिना अवतारही जो परमेश्वरको स्वरूप वेद वर्णतहैं तिन ने ऐसो प्रभाव कब कियोहै जैसो श्रीरामचंद्र कीन्हहै पाषाणकीनाव रीछ बानर कोल-भिल्ल राक्षस तिन सबन को सुमंत्री कीन्ह अरु आपनो स्वरूप करि दीन तहां प्रसिद्ध है (प्रमाण उत्तरकांडे) हनुमदादि सब बानर बीरा । धरे मनोहर मनुज शरीरा ॥ मनोहर तो एक श्रीरामचंद्र हैं ताते समस्त राम रूपहीहैं ऐसे एक उदार श्रीरामचंद्रहीहैं (९) ताते श्रीरामचंद्र महाराज ईशन के ईश परम कृपालु हैं जो श्रीरामचंद्र कै निकाई सबको नीकी है ब्रह्मा शिव शुक सनकादि नारद बाल्मीकि व्यास अगस्त्य इत्यादिक जे बड़ेहैं अरु शबरी गीध इत्यादिक जे नीचहैं तिन सबनको रामनिकाई एकरस नीकीहै जो ऐसो राम रावरो निकाई सांचोहै अनुमान में आवति है प्रमाण: वेद कहते हैं प्रत्यक्ष मोको आपुहीते देखि परेउ है अनुमान प्रमाण प्रत्यक्ष सर्व-काल में एकरस सांचोहै तौ तुलसीको नीको बनो बनायोहै यह अचल बिश्वास है कि श्रीरामचंद्र मेरी रक्षा लोक परलोक दोनोंमें करैंगे यहध्रुव बिश्वासहै यहषट्शरणागत गोसाईं तुलसी दास बर्णन कियो पर धारणा संयुक्त (२) यहिप्रकारते निज गुण दोष

कोहके निज गुण कीनहै मोहिंमें में केवल श्रीराम शरण हौं इतनो गुणहै अरु अपर कर्म धर्म योग बैराग्य ज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिक शुभगुण तिन सबनते रहितहौं यह अवगुणहै सो सब कह्यो पुनि सबको प्रणाम करिकै श्रीरामचंद्र के विशद निर्मल उज्ज्वलयश जा सुनिकै कालि कहे कालिहू होइ रहेहैं अनेक जन्मके कलुष कहे पाप जाके वश जन्म मरण होतेहैं किंतु कलि कहो क्लेश जो अनेक हैं सो समस्त नाश होइ जाइहैं ऐसो राम यश वर्णत हौं (३) जो कोई कहै कि गुसाईं तुलसीदास श्रीरामोपासक हैं अनन्य हैं अरु बारम्बार देवतादिकन को नमस्कार करते हैं इसमें तो अनन्यता में बिरोध भासतेहै तिसको समाधान करते हैं सुनो जो कोई देवता श्रीरामचंद्र की बराबरि होइ तब तो देवतांतर होइ अरु ब्रह्मा शिवादिक जे देवता हैं ते सब कोई अंश है कोई कलाहै कोई बिभूतिहै ताते श्रीरामचंद्र से कोई भिन्न हुई नहीं है तिन सबमें जे रामभक्त अनन्य हैं तिनकी स्तुति गोसाईं तुलसी दास कीन्हहै मुनि देव इत्यादिक देखिये तो महादेव श्रीरामचंद्रके परमानन्य भक्तहैं अरु पार्वती श्रीरामतत्त्व की परम अधिकारिणी हैं अरु गणेश पार्वती को सेवामें रहते हैं अरु केवल रामनाम जपते हैं ब्रह्मा श्रीरामचंद्रके प्रथम भक्त हैं अरु अपने को छोट मानतेहैं (ब्रह्मरामायणेब्रह्मणोवाक्यंनारदंप्रति श्लोकएक) सीतारामौपराभक्तिःकृत्स्नंवेदशिवःस्वयं ॥ तदर्द्धंगिरिजावेत्तितदर्द्धंवेद्म्यहंमुने १ (पुनि वेद कहते हैं) सत्यलोके ब्रह्मा रत्न सिंहासने मंडप मध्ये श्रीरामंस्थापयित्वातस्यपूजामकरोत् तदनंतरंश्रीरामंपार्वतीरुद्रौपूजितौतस्यपूजामकुरुतांरुद्रपूजानंतरंसूर्यः श्रीरामंपूजितवान् (इत्यथर्वणे) अरु सूर्य श्रीरामभक्तहैं अरु सिंहासन हैं श्रीरामस्तवराज (अर्द्धश्लोक) सूर्यमंडलमध्यस्थं रामंसीतासमन्वितम् ॥ ताते जो श्रीराम दासनको सेवन करै तेहि जनपर श्रीरामचंद्र अति प्रसन्न होतेहैं अपनी सेवाते ऐसो नहीं प्रसन्न होतेहैं जैसो अपने भक्तनकी सेवाते प्रसन्न होतेहैं भक्त कैसहू होइ यह सब शास्त्रन में प्रसिद्ध है ताते गोसाईं तुलसी दासजी भागवत जे रामानन्य देवता हैं तिनकी स्तुति कीनहै अरु भागवत मुनिनकी स्तुति कीनहै अरु चराचरकी स्तुति कीनहै श्रीरामचंद्र को सर्वांतर्यामी देखिकै तामें देवतांतर मंत्रांशही होतेहैं श्रीतुलसीकी काव्य केवल श्रीरामानन्य भावहै अरु जे कोई देवतांतर मंत्रांतर कहते हैं तिनने तुलसी कृतकी तत्त्व नहीं जान्यो किंतु बिरोधी हैं (आदिपुराणेभगवद्वाक्य श्लोक ६) मद्भक्तोवल्लभोयस्यसएवममवल्लभः ॥ तत्परोवल्लभोनास्तिसत्यंसत्यवदाम्यहं १ (भारतेपांडवगीतायां) वासुदेवस्ययेभक्ताःशांतास्तद्गतमानसाः ॥ तेषांदासस्यदासोऽहंभवेज्जन्मनिजन्मनि २ (कोईआचार्यकावाक्य) नाहंबिप्रोनचनरपतिर्नापिवैश्योनशूद्रोनोवावर्णीनचगृहपतिर्नोवनस्थोयतिर्वा ॥ किंतुप्रोद्यन्निखिलपरमानन्दपूर्णामृताब्धेःसीताभर्त्तुःपदकमलयोर्दासदासानुदासः ३ ज्ञानावलम्बकाःकेचित्केचित्कर्मावलम्बकाः ॥ वयंतुरामदासानांपादत्राणावलंबकाः ४ (ब्रह्मांडपुराणेश्रीरामगीतायांश्रीमुखवाक्यं) मद्भक्तमादरेद्यस्तुमनस्पर्शनभाषणैः ॥ तंहितंमयिपश्यामिबशिष्ठमहतामिव ५ मद्भक्तेभ्यःप्रयच्छंतिसुवस्तूनिधनान्यपि ॥ आतिथेयंकरिष्यामितस्याहंसीतयासह ६ येमद्भक्तस्तुतिर्नित्यंमांप्रसन्नोहितेकृतम् ७ (पुनि भागवते एकादशे)

सर्वभूतेषु मद्भावं सर्वे भागवतोत्तमः ८ (श्रीरामस्तवराजे) रामःसत्यंपरंब्रह्मरामात्किंचिन्नविद्यते ॥ तस्माद्रामस्यरूपोऽयंसत्यंमत्यमिदंजगत् ९ ताते सबको राममय जानिकै अरु रामभक्त जानिकै स्तुतिकीनहै (३) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने बालकांडेऽष्टशरणागतसर्वास्तुतिवर्णनंनामअष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

दोहा ॥ नव तरंग महिमा कथा शिव भुशुण्डि मुनि आप ॥
रामचरण भाषा कियो पुनि निज गुरुकी थाप ९

२९ याज्ञवल्क्यजोकथासुहाई । भरद्वाजमुनिवरहिंसुनाई १
कहिहौंसोइसंवादबखानी । सुनहुसकलसज्जनसुखमानी
शम्भुकीन्हयहचरितसुहावा । बहुरिकृपाकरिउमहिंसुनावा ३
सोइशिवकागभुशुण्डिहिदीन्हा । रामभक्तिअधिकारीचीन्हा ४
तेहिसनयाज्ञवल्क्यपुनिपावा । तिनपुनिभरद्वाजप्रतिगावा ५
तेबक्ताश्रोतासमशीला ॥ । समदरशीजानहिंहरिलीला ६
जानहिंतीनिकालनिजज्ञाना । करतलगतआमलकसमाना ७
औरौजेहरिभक्तसुजाना ॥ कहहिंसुनहिंसमुझहिंबिधिनाना ८
मैं पुनिनिज गुरु सनसुनी कथा सु सूकर खेत ॥
समुझ नहीं तसबालपन तब अति रहेहुँ अचेत १
[illegible] निधि कथा [illegible]
[illegible] मलग्रसितबिमूढ़ २

२९ जो कथा शोभायमान श्री याज्ञवल्क्यजू श्रीभरद्वाजको सुनायो है (१) सोई संवाद वखानिकै करतहौं समस्त सज्जन जोहैं सो सुख मानिकै सुनउ (२) यह जो राम चरित मानस अतिसुन्दर है सो महादेव को कीनहै बहुरि कृपा करि कै पार्वती को सुनायोहै (३) पुनि शिव जी कोई कालमें कागभुशुण्ड को दीन्हो है काहेते श्री राम भक्त को अधिकारी जानिकै (४) पुनिकोई काल में तिन कागभुशुण्ड ते याज्ञवल्क्य पायो है तिन याज्ञवल्क्यजू भरद्वाजसे कह्योहै (५) ते बक्ता अरु श्रोता दोऊ सम शील कहे बराबरि बुद्धि रहैं अरु समदर्शी रहैं अरु दोऊजन श्री राम लीला नीकी प्रकार जानते रहैं ताते यथार्थ बोधको प्राप्तहैं (६) अरु तीनि काल जानते रहैं भूत भविष्य वर्त्तमान भूत कहे जो काल पाछे बीति आयो है भविष्य कहे जो काल आगे होइगो बर्त्तमान कहे काल बिद्यमान है ये तीनि हूं कालकी गति सब जानते रहैं जैसे अपने हाथमें अमराको फल प्राप्तहै तेहि फलको ज्ञान स्वाभाविकै जानबेमें आवत है तैसेही तीनिहूंकाल वे जानतेरहैं (७) औरौ जे हरिके भक्त सुजानहैं कोई हरि यश सुनते हैं कोई कहते हैं ते सब यथार्थ बक्ता रहैं स्पर्श पर शास्त्र बोध यथार्थ रहै (८)

(दोहार्थ) सोई कथा हमारे गुरुनको को जानै कहां ते प्राप्त भई सोई कथा है मैं अपने गुरुनते सुन्योहै कथा सुकहे सुष्ठु कथा अरु शूकर कहे जो सुष्ठु पदार्थ को उत्पन्न करै ताको शूकर खेत कहो तहां सुष्ठु पदार्थ श्री राम यश गुण चरित सो सत्संग उत्पन्न करतु है ताते सत्संगै शूकर खेत है तेही सत्संग में गुरुनते सुनते सुन्यों है अथवा शूकर खेतकहे बाराह क्षेत्र श्री अयोध्या के पश्चिम तीनि योजन है सरयू तीर तहां सुनेउँ है तब मेरी बाल अवस्था रहै अचेत दशारहै तेही दशा में जसकछु समुझि परेउ सो ग्रहण भयो किन्तु शूकर खेत शूकर जो है जैसे भूमि खोदत है जहां तहां तैसे मोको बालपने में कछु समुझि परेउ कछु नहीं समुझि परेउ सो ग्रहण भयोहै (१) अरु मोको यथार्थ कैसे समुझि परै काहेते श्रीराम कथा अति गूढ़ है ताके समुझिबेको अरु कहिबेको श्रोता बक्ता ज्ञान को निधान चाहिये अरु मैं कैसे समुझों एक तो बाल-बुद्धि दजे कलिकाल होइकै मतिमन्द होइ रह्योहै ताते बिमूढ़ होइ रह्यो हौं २ ॥

उ० यदपिकहीगुरुबारहिंबारा । समुझिपरीकछुमतिअनुसारा १
भाषाबद्धकरौं मैंसोई * । मोरेमनप्रबोधजेहिंहोई *२
जसकछुबुधिबिबेकबलमोरे । तसकहिहौं हियहरिकेप्रेरे *३
निजसन्देहमोहभ्रमहरणी । करौं कथाभवसरितातरणी ४
बुधिबिश्रामसकलजनरंजनि रामकथाकलिकलुषबिभंजनि ५
रामकथाकलिपन्नगभरणी । पुनिबिबेकपावककहँअरणी ६
रामकथाकलिकामदगाई । सुजनसजीवनमूरिसुहाई *७
सोइबसुधातलसुधातरंगिनि । भवभंजनिभ्रमभेकभुअंगिनि ८
असुरसेनसमनरकनिकन्दनिसाधुबिबुधकुलहितगिरिनंदनि९
सन्तसमाजपयोधिरमासी । बिश्वभारभरअचलक्षमासी १०
यमगणमुंहमसिजगयमुनासी । जीवनमुक्तिहेतुजनुकासी ११
रामहिंप्रियपावनितुलसीसीतुलसिदासहितहियहुलसीसी १२
शिवप्रियमेकलशैलसुतासीसकलसिद्धिसुखसम्पतिरासी १३
सदगुणसुरगणअम्बअदितिसी । रघुबरभक्तिप्रेमपरिमितिसी १४
दो० राम कथा मन्दाकिनी चित्र कूट चित चारु ॥
तुलसी सुभगसनेह बन सियरघुबीर बिहारु १

उ० यद्यपि गुरुन बारबार कहा मेरी अज्ञानता को देखिकै तदपि अपनी मति के अनुसार समुझि परेउ (१) जो गुरुन कहेते कछु समुझि परेउ है ताको मैं भाषा बद्ध करत हौं काहेते जाते मेरे मनमें प्रबोध होइ जो कोई कहै कि गुरुन के कहेते बोध

नहीं भयो अपने ग्रन्थ लिहिते बोधहोइगो यामें जो यशकी इच्छा भाजैहै तहां यह प्रयोजन नहीं है यातें भाषा करत हों कि गुरुनकी तहत्य भूलि न जाय तातें लिखि लेतहौं किन्तु अपने लिखेपर मन विक्षेप दृढ़ करैंहै (२) जस कछु मेरी बुद्धि के बिवेक को बल होइ गो हरि की प्रेरणाते तस कहौं गो (३) यह श्री राम कथा जोहै सो निज कहे जो मोर संदेह भ्रम तेहिकी हरण हारीहै सो कथा मैं करत हौं भव जो है संसार सो महा नदीहै ताके पार जाइबे को यह कथा नाव इहां पुल्लिंग स्त्री लिंग को भेद न लेब संसार में सब संबित है अरु भाषा में सो प्रयोजन परत है तैसे सब कहवैमें आवत है (४) पुनि श्रीराम कथा कैसीहै बुध पंडित जन तिनको विश्राम स्थान है अरु समस्त जन जेहैं तिनको रंजन कहे आनन्द दाता है कलि कहे क्लेश जो अनेक प्रकार के कलुष कहे पाप तिन सबन को नाश करिदेति है श्री राम कथा ऐसी है (५) पुनि राम कथा कैसीहै कलि कहे जोहै जन्म मरण अथवा कलि कहे कलिकाल सो सर्प है ताके बिष निवृत्त करिबे को राम कथा बरणी मंत्र कहे गरुड़मंत्र है अरु कोई कोष बिषे भरणी नाम मयूरीको ताते रामकथा मयूरी है कलि कहो क्लेश सर्प है अरु जो कोई कहै कि एक भरणी जन्तु होतहे ताको सर्प लीलि जातुहै तब वह पेट फारिकै निकसि जात है यह दृष्टांत सो सामान्य है पुनि रामकथा विवेक अग्नि रूप ताके उत्पन्न करिबे को अरणी कहे लकड़ी है बक्ता श्रोताकी दृष्टिते विवेक उपजत है अरु कथा तो विवेक मयहै (६) श्री रामकथा अनेक क्लेश दूरि करिबे को दिव्य कामधेनु है अरु सुजन जेहैं तिनको परम दिव्य सजीवन मूरि है अविनाशी करि देतुहै (७) पुनि बसुधा जो पृथ्वी मण्डल तामें अमृत मय तरंगिणी नाम नदीहै अरु भय भंजिनि है अरु भ्रमभेक कहो मेढुक है ताके भक्षण करिबे को सांपिनी है (८) पुनि राम कथा गिरिनन्दिनि इव है पार्वती दुर्गा स्वरूप असुरन को नाश कीन्हहै अरु देवतन को हित कीन्ह है अरु श्री राम कथा नरकन को निकंदन करिकै साधुन को हित करतु है (९) पुनि श्रीराम कथा लक्ष्मी रूप है सन्तन की समाज क्षीर सागर है तहां रहती है अरु ताही ते उत्पन्न है अरु संपूर्ण विश्व जोहै अरु विश्वरूप यह शरीर है तेहिके भार धारिबेको अचल क्षमासी नाम पृथ्वी की समान है (१०) अरु श्री रामकथा यमुना इवहै यमुना सूर्यकी पुत्री है अरु यम सूर्यके पुत्रहैं तहां यमुना जी सूर्यसे बर मांगि लीन्हहै अरु यमराजै भ्राता हैं तिनहूं ते बर मांगि लीन है कि जो प्राणी यमद्वितीया को मोहिंमें स्नान करै ताको यमके दूतनको दंड न होइ यम के दूतन के मुखमें कारिख लगिकै फिरि जाहिं तैसे रामकथा सदा यमद्वितीया को प्रभाव है यमके गण तिनके मुखमें कारिख लगाइबे को यमुना इव है अरु जीवन को मुक्ति देबेको काशी समहै (११) पुनि श्री रामचंद्र को यह कथा तुलसी सम प्रियहै अरु तुलसीदास जी कहते हैं कि मेरे हृदय को श्रीरामचंद्र बिषय हुलास रूपही हैं (१२) पुनि महादेव को कैसो प्रिय है जैसे मेकल शैल ताकी सुता गंगा जाको शीशपर लिहेहैं किंतु नर्मदा सम प्रियहै अरु भगवत् सम्बन्धी जो सिद्धी हैं अरु सुख सम्पत्ति है अरु संपत्तियां हैं अरु गुण सम्बन्धी

जो स्वाद सुख सघात हैं तिन सबन की राशि है (१३) पुनि सद्गुण जो गुण श्रीरामचंद्रको प्राप्त करने वाले सोई गुण देवतन के गण हैं तिनको उत्पन्न करिबे की माता अदिति सम है यह श्रीराम कथा अरु श्रीरामचंद्र की प्रेमा परा इत्यादिक जो भक्ति हैं तिनको तो परमिति कहे मर्याद है (१४) दोहार्थ ॥ पुनि श्रीराम कथा मन्दाकिनी है अरु संतनकर चारु चित्त जोहै सोई चित्रकूट है अरु श्री तुलसी गोसाईं कहते हैं कि सन्तन कर स्नेह जो सुभई सोई सुन्दर बनहैं किंतु बन नाम जल तहां श्री सीताराम लक्ष्मण संयुक्त सदा बिहार करते हैं १ ॥

१ रामकथाचिन्तामणिचारू । सन्तसुमतितियसुभगसिंगारू १
जगमंगलगुणग्रामरामके * । दानिमुक्तिधनधर्मधामके * २
सद्गुरुज्ञानबिरागयोगके । बिबुधबैद्यभवभीमरोगके * * ३
जननिजनककीसियरामप्रेमके । बीजसकलब्रतधर्मनेमके * ४
[illegible] । [illegible] ५
[illegible]बिबसुभटभूपतिबिचारके । कुम्भजलोभउदधिअपारके * ६
कामकोहकलिमलकरिगणके । केहरिशावकजनमनबनके ७
अतिथिपूज्यप्रीतमपुरारिके * । कामदघनदारिददवारिके ८
मंत्रमहामणिबिषयब्यालके * । मेटतकठिनकुअंकभालके ९
हरनमोहमदतमदिनकरसे * । सेवकशालिपालजलधरसे १०
अभिमतदानिदेवतरुवरसे । सेवतसुलभसुखदहरिहरसे * ११
सुकबिशरदनभमनउडगणसे । रामभक्तजनजीवनधनसे * १२
सकलसुकृतफलभूरिभोगसे । जगहितनिरूपधिसाधुलोगसे १३
सेवकमनमानसमरालसे * । पावनगंगतरंगमालसे * * १४

दो० कुपथ कुतर्क कुचालि कलिकपट दम्भ पाखंड ॥
दहन राम गुणग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड १ ॥
राम चरित्त राकेश कर शरद सुखद सब काहु ॥
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिशेष बड़लाहु २ ॥

३१ पुनि श्रीराम चरित चारु चिन्तामणि है जोई चिन्तवन करै सोई देइ संतन के सुमति जो है सोई सुन्दरि स्त्री है ताको सुन्दर शृङ्गार है (१) श्रीराम गुणग्राम जोहै सो संपूर्ण जगत् को मंगल रूपहै अरु धन धर्म मुक्ति तिन सबन को दाता है पर सर्वकाल में अरु ज्ञान बैराग्य योग तिनके बोध करिबेको गुरु रूपहै अरु बिबुध

वैद्य अश्विनीकुमार सूर्यके पुत्र देवतन के रोग नाश करि देते हैं किंतु धन्वंतरि हैं तैसे भव जो संसार महाभीम रोग जेहि वश सब जीव रोगी होइरहे हैं तहां जेहि जीव को श्रीरामचरित प्राप्त भयो ताको संसार रोग नाश करिदेतु है (३) अरु श्री सीताराम के प्रेमको उत्पन्न करिबे को माता पिता है अरु समस्त व्रत धर्म नेमयमतिन को तो बीजरूप है (४) अरु पाप संताप शोक इत्यादिकनको शमन कहे नाशकरि देतुहै अरु लोक परलोक दोनों प्रिय पालकहै (५) अरु बिचार रूप राजा है ताके रक्षा को सुभट मंत्री है अरु लोभ जो समुद्रवत् अपार ताको अगस्त्य रूप है (६) अरु काम क्रोध कलिके मल सोई हाथीहै अरु जन जे संपूर्ण प्राणी हैं तिन को मन सोई बन है तहां रहते हैं तिनके नाश करिबे को राम चरित सिंह रूप है (७) अरु पुरारि जोहैं तिनको अति प्रियतम पूज्यमान है सदा अतिथि इव है अरु दरिद्र जो असंतोषादिक सो दावानल है ताके बुझाइदेबे को कामद धनहै (८) अरु विषम रूप जो सर्पहै ताको विष निवृत्त करिबे को महामणि मंत्र है एक मणि होती है जो सर्प के काटे घावपर धरिदेइ तौ बिषनाश होइ जातहै अरु भाल में जो बिधाते कुअंक लिख्यो है ताको मेटि डारती है (६) मोह मद तम जोहै ताके नाश करिबे को सूर्य है अरु सेवक जोहै सो धानहै तिनके पालन करिबेको मेघहै (१०) अरु बांछित फल देबे को कल्पवृक्ष है अरुसेवतके सुलभ है अरु सुख देबेको हरि हरके सम है (११) अरुसुक बिनके मनशरद नभहै तहां नक्षत्र इवउदितहै श्रीरामभक्तनको जीवनधन है (१२) अरुसमस्तसुकृत के भूरि फल जोहैं ताको भोग्य है अरुहितकारी तौ सबजगत् को है पर निरुपाधित रूप साधुनको है किन्तु जगहित साधु समहै (१३) पुनि श्रीराम सेवकन को मन मानसर है तहां को हंस है अरु पवित्र करणी गंगा सरयू की तरंग की माल है (१४) दोहार्थ॥ कुमार्ग जो वेद मर्याद छोड़िकै चलै कुतर्क जो विशेष पदार्थ है ताको उक्ति युक्ति करिकै दूषण दैकै सामान्यकरिदेइ कुचाल जो लोक वेदकै रीति छोड़िकै कलि कहे अनेक क्लेश कपट जो हैं मीठीबात मन में राखै अरु दम्भ जो औरे के देखाबे को शुभ कर्म करै पाखण्ड जो वेद शास्त्र निन्दि कै जो करै इत्यादिकन को नाश करि देतहै श्रीरामचरित्र जैसे प्रचण्ड अग्निमेंसूखी लकड़ी भस्म ह्वै जाय (१) श्रीराम चरित्र पूर्णमासी को चंद्रमा है शरद ऋतु को सब को सुखदाता है पर सज्जन जे हैं तिनको जो चित सो कुमुद अरु चकोर है तिनको विशेषबड़ लाभहै (२) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेश्रीमद्रामायणमाहात्म्यप्रतापयथार्थबर्णनोनामनवमस्तरंगः ॥ ६ ॥

दोहा ॥ रामचरण दश तरँगमें महिमा अवध अपार ॥
उमा प्रश्न शिव बोधकृत मानस सर अवतार १०

३२ कौन हेतुभवानी। जेहिबिधिशंकरकह्यो। ......

सोअबहेतुकहबमेंगाई *। कथाप्रबंधबिचित्रबनाई * २

जोयहकथासुनीनहिंहोई जनिआश्चर्यक

कथाअलौकिकसुनहिंजेज्ञानी। नहिंआश्चर्यकरैंअसजानी ४
रामकथाकैमितिजगनाहीं । असिप्रतीतिजिनकेमनमाहीं ५
नानाभांतिरामअवतारा । रामायणशतकोटिअपारा * ६
कल्पभेदहरिचरितसुहाये । भांतिअनेकमुनीशनगाये * ७
करियनसंशयअसउरआनी। सुनियकथासादररतिमानी * ८

दो० राम अनन्त अनन्त गुण अमित कथा बिस्तार ।
सुनि आश्चर्य न मानिहैं जिनके बिमल बिचार १

३२ गोसाईं तुलसीदास कहते हैं जौने हेतु पार्वती जू प्रश्न कीन है अरु जेहि बिधिते शंकर बखानिकै कहेउहै (१) सो सब हेतु मैं बिचित्र कथा जोहै ताको प्रबन्ध करिकै कहौंगो (२) जे यह कथा कबहुं न सुनेउहोय तौ सुनिकै आश्चर्य न करब (३) काहेते जे ज्ञानी पुरुष हैं ते जो कबहूं अलौकिक कहे सब लोकमें कहिबे में देखिबे में सुनिबे में कहूं नहीं आयो अरु कहूं सुनिबे में दैवयोग ते आय गई तौ यह जानि कै आश्चर्य नहीं करते हैं (४) काहे ते श्रीराम कथा कै मिति नहीं है यहि जगत् में जिन पुरुषन के ऐसी प्रतीति है (५) काहे ते कि श्रीरामचंद्र के अवतार नाना भांति करिकै ताते रामायण शतकोटि अरु अपर अपारहै पर एते रामायणके ग्रन्थहैं शत कहे सौ हजारको एक लाख सौलाख को एक कोटि ऐसे सौ कोटि अरु अपर अपार श्रीमद्रामायण के ग्रन्थ हैं किन्तु जाको एती प्रतीत न आवै सो एते श्लोकै मानिलेइ (६) (तहांप्रसिद्धश्लोकहै) चरितंरघुनाथस्यशतकोटिप्रविस्तरं॥ एकैकमक्षरंपुंसां महापातकनाशनम् १ अरु प्रभुके अवतार कल्प कल्प प्रति होते हैं तहां मुनीश जन जे हैं तिनने अनेक ग्रंथ कीन्हहै अरु अनेक भांतिते प्रभुके चरित गाये हैं ताते परमेश्वर के चरित को शुमार नहीं है वेद जेहैं ब्रह्मा शिव शेष शारदा इत्यादिकते नेति नेति करतेहैं पर प्रभुके चरित को पार नहीं पावते हैं (७) श्री राम चरित अपरम्पार जानिकै संशय न करो श्रीरामकथा आदर प्रीति समेत श्रवण करिये (८)॥ दोहार्थ॥ जैसे श्रीरामचंद्र अनन्त हं तैसे श्रीराम गुण अनन्त हैं तैसे अमित कथा विस्तार है यह बिचारि कै जे बिमलविवेकी हैं ते आश्चर्य न करैंगे (१)

३३ यहिबिधिसबसंशयकरिदूरी। शिरधरिगुरुपदपंकजधूरी *१
पुनिसबहींबिनवोंकरजोरी । करतकथाजेहिलागनखोरी २
सादरशिवहिंनाइपदमाथा । बरणौंबिशदरामगुणगाथा ३
संवतसोरहसैयकतीशा * * । करौंकथाहरिपदधरिशीशा ४
नौमीभौमवारमधुमासा । अवधपुरीयहचरितप्रकाशा * ५
जेहिदिनरामजन्मश्रुतिगावहिं।तीरथसकलतहांचलिआवहिं६

तहां ज्ञान अज्ञान देवता रहते हैं ह्वां एकते सात लोक अब सदा शिव संहिता को मत कहते हैं पृथ्वीते कोटि योजन महर्लोक है क्रमहीते लोकके ऊपर लोक दून दून जाने जीव महर्लोक परजन लोक ताके पर तपलोक ताके पर सत्लोक ताके पर कौमार लोक सनकादिक रहते हैं ताके पर उमालोक पार्वती रहती हैं ताकेपर शिव लोक है निजशक्ति संयुक्त शिव रहते हैं यह सप्तावरण कहावत है इहां ताईं देवलोक संज्ञा है जो जैसो कर्म करैं तैसे लोकको प्राप्त होते हैं अरु सत्यलोक ताके ऊपर ऊर्ध्व प्रमाण रहित रमावैकुंठ है जहां सनकादिकन जय विजयको शापदीन्हहै तहां शुद्ध सात्त्विक भगवत् कर्म निर्बास करिकै जीव प्राप्त होते हैं अब ब्रह्मांड तत्त्वावरण कहते हैं सात आवरण करिकै ब्रह्माण्ड है शिवलोक ऊपर पचास कोटि योजनको अंतर है तहां पृथ्वीको आवरण पचासकोटि योजनको मोटो है अब क्रमहीते दश दशको अधिकता जानब महितत्व के परे महिते दशगुण जल तत्त्व है जल तत्त्व के परे ताको दश गुण अग्नि तत्त्वहै अग्निते दशगुण पवन तत्त्वहै पवनते दशगुण आकाश तत्त्व है आकाशके परे त्रिधाहंकार है तामसाहंकार राजसाहंकार सात्त्विकाहंकार तीनिहु अहंकार मिलेहैं एकही हैं ताके परे महातत्त्व है एते सात आवरण करिकै ब्रह्मांड है अब तिसको भेद न कहते हैं जिन जीव के मुक्त की इच्छा भई कोई योग ते प्रथम अपने वर्णको कर्म धर्म सवासिकते नीचेते करैं अरु महर्लोक ताईं प्राप्त होते हैं पुनि आश्रमके कर्म धर्म सवासिकते करैं जनलोकको प्राप्त होतेहैं पुनि तेजीव तपस्या सवासिक करैं ते तपलोक को प्राप्त होतेहैं पुनि जे शुद्ध यज्ञ सवासिक करैं ते सत्यलोक को प्राप्त होतेहैं पुनि जो अपने मन शरीर शुद्धदान सवासिक करैं सो कौमार लोक को प्राप्त होतेहैं पुनि जो सात्त्विकी विद्यादान सवासिक करैं सो उमालोक को प्राप्तहोतेहैं पुनि जो शास्त्र जन्य ज्ञानदान सवासिक करैं सो शिव लोक को प्राप्त होते हैं एते कर्म कांडी निर्वासिक होतेही नहीं इन कर्मनको यह फलहै कैसहू ह्वैकै करै यह साती लोक की प्राप्ति क्रमहीते है पुनि जो स्थूल शरीर जो सूक्ष्म शरीर को कारण शरीर तीनिहू की विषय स्थूलसूक्ष्मताको भेदन कहतेहैं जो नासिकाकी विषय दुर्गंध सुगन्ध भक्ति भाव करिकै जीतै किंतु ज्ञान भाव करिकै सो महि आवरण भेदन करिजाइ पुनि जो रसना विषय जीतै अनरस सुरस निन्दा स्तुति इत्यादिक जीतै सो जल तत्त्वभेद करिजाइ पुनि जो नेत्रकी विषय जीतै प्रकृतिको रूप त्याग अरु चराचर विषय रामरूप ग्रहण सो अग्नि तत्त्व आवरण भेदन करिजाइ पुनिजो त्वकको विषय स्पर्श शीतोष्ण इत्यादिक जीतै सो पवन तत्त्व आवरण भेदन करिजाइ पुनि जो श्रवण विषय जीतै सो नभ तत्त्व भेदन करिजाइ तब स्थूल शरीरको भाव मिटिजाइ पुनि जो पंचविषय शब्द स्पर्शरूप रस गन्ध पुनि पंचप्रान अपान उदान व्यान समान पुनि पंच कर्म इंद्रिन को विषय चलब बिसर्ग मैथुन भक्षण व्यवहार अरु मन बुद्धि इन सत्रह तत्त्व की विषय जीतै सो अहंकार तत्त्व भेदन करिजाइ तब लिंग शरीर को अभाव ह्वैजातु है पुनि अहंकार की विषय उलटिकै यह वृत्ति आवै कि मेरो स्वरूप सर्वकाल में शुद्ध है मैं तो चैतन्यरूपहौं सदा श्रीराम दासहौं अरु चित्तको विषय सो उलटिकै स्वरूप पर

स्वरूपकी चिंतवन करै सर्व भूत में श्रीराम रूप अनन्य ह्वैके देखै सो मानते रहित ह्वै जाइ एक रस सर्वकाल में हर्ष शोक निंद्यस्तुति मानापमान इत्यादिक रहित होइ सत् गुरुनके बचन लैके सदा आनंद रहै तब स्वरूप प्राप्त भयो पर रूपको चल्योहै तब महत्तत्व भेदन करिजाइ तब कारण शरीर छूटिजाइ तब तुरीयः को प्राप्त ह्वैकै तब सातों आवरण ब्रह्माण्डके भेदिजाइ ब्रह्माण्डके ऊपर अनत योजन महाविष्णु को लोक है जाको वेद सहस्रशीर्षा पुरुष करिकै बर्णते हैं सो पुरुष ब्रह्मांड को कारण है अब ताही पुरुषमें ब्रह्मांड लीन होतहै पुनि जब पुरुष की रचणा होती है तब महत्तत्व होत है ताते अहंकार होतहै ताते सात्विक गुण होतहै पुनि राजस तामसी तीनिउ गुण भिन्न भिन्न भये पुनि तामस ते आकाश तत्व भयो ताते शब्द भयो ताते पवन भयो ताते स्पर्श भयो ताते अग्नि भयो ताते रूप भयो ताते जल भयो ताते रस भयो ताते महि भयो ताते गन्धि भयो ताते औषध औषधी होती भई तरु तृण अन्न इत्यादिक होत भये ताहीते सर्व जीवनको पालन होतभयो अरु तीनि गुण पांच तत्व मिश्रित देव दानव मनुष्य इत्यादिक सो जीव के शरीर होत भये अनादि कर्मानुसार जीवको भोग्य होत भयो पुनि जब महा प्रलय को काल प्राप्त भयो तब जैसे अनुलोम करिके तत्व उत्पन्न भये तैसे प्रतिलोम करिकै प्रलय भई महा विष्णु में सब प्राप्त भये सबको साम्यता रही ताते महा विष्णु बिराट् के कारण हैं सो महा विष्णु को स्वरूप हजारन शीश हजारन नयन कर चरण इत्यादिक अंगहैं वेद कहते हैं (प्रमाण) सहस्र शीर्षापुरुषः सहस्राक्षस्सहस्रपात्सभूमिग्वं इतिश्रुतिः ॥ तहां रघुनाथ जीके परम दिव्य जे अनंत गुणहैं करुणा बात्सल्य दया इत्यादिक सोई महा विष्णु को स्वरूप है सोई हजारन अंगरूप पृथक् पृथक् शोभित है (श्लोक सौमित्रि वाक्यं वेदान्प्रति) राघवस्यगुणोदिव्यो महाविष्णुःस्वरूपवान् ॥ बासुदेवोघनोभूतं तनुतेजोमहा शिवः ॥ सो महाविष्णु अनादि है निर्विकार है अखण्डएक रस है जिन महा विष्णु ते ब्रह्मा विष्णु शिव होतेहैं तहां जे जीव महा विष्णु की उपासना पर मानन्य ह्वैकै करते हैं ते ब्रह्मांड पार ह्वैकै महाविष्णु को प्राप्त होतेहैं पुनि महाविष्णु लोक ताकेपर महा शम्भु को लोकहै सो महा शम्भु ज्योतिस्स्वरूप है जाको आदि ज्योति कहते हैं सो श्रीरामचन्द्र के तनुको तेजहै अक्षर ब्रह्महै जे तिनकी उपासना योगी जन करते हैं ते कैवल्य मुक्ति को प्राप्तहोतेहैं ताही लोकको पुनि तेहि लोकके पर बासुदेव लोकहै चतुर्व्यूह भगवान् रहतेहैं बासुदेव संकर्षण अनिरुद्ध प्रद्युम्न तिनको स्वरूप तेजोमय है सो बासुदेव श्रीराम चन्द्रको घनीभूत तेजहै निरक्षर ब्रह्महै एक रसहै जे तिनकी उपासना ज्ञानी जन करते हैं ते तेहि लोक को प्राप्तहोतेहैं जाको कैवल्य परम पद कहो दोउ लोक की मुक्ति एकही जानब श्रीभगवद्गीतायां (श्लोकार्द्ध) सांख्ययोगोपृथक्बालाः प्रवदंतिनपण्डिताः ॥ पुनिताके पर असंख्य ऊंचो गोलोकहै सो अनन्त योजन विस्तारितहै सो श्री रामचन्द्रको देशहै दृष्टान्त जैसे नगरके मध्यमें राजाको महत् महल है दृष्टान्त को एक देशहै तैसे ताके मध्य में श्री अयोध्याहै तामें दश आवरणहैं जो भीतर को आवरण है सो सवा कोटि योजन विस्तारित है यह संज्ञा वेदने ——— के [illegible]

कीन है नतु अनन्त योजन ऊंचो बिस्तारहै (प्रमाणब्रलोकार्द्ध) अनन्तयोजनोच्छ्रायम नन्तयोजनायतं ॥ पुनि क्रमहीते ताको दूनदून बिस्तार जानिलेब दशो आवरण ताके बारह चारिहू दिशामें चारि दरवाजेहैं तिनके अग्र भागमें परमदिब्य चारिबनहैं अमित विस्तारहै श्री अयोध्याके उत्तर श्री सरयूहै दक्षिण बिरजा गंगा है सरयू बिरजा एकही है तहां श्री अयोध्याके दक्षिण द्वारपर श्रीहनुमान् हैं सहित पार्षदनसंयुक्त कैशोर स्वरूप श्रीराम लक्ष्मणजू के रूप हैं सब तहां अशोक बनहै पुनि पश्चिम द्वार पर बिभीषण अनन्त पार्षदन संयुक्त हैं तहां बृन्दाबन है उत्तर अंगद अनन्त पार्षदन संयुक्त हैं तहां आनन्द बनहै पूर्व सुग्रीव अनन्त पार्षदन संयुक्त सब किशोर अवस्था श्रीराम लक्ष्मण के स्वरूप हैं तहां अशोक बनहै ऐसे नव आवरणमें सब सखा दासनके मन्दिर बनेहैं परम दिव्य अखण्ड एकरस ब्रह्ममय सब जानब अरु अन्तर आवरण जोहै दशवां तहां अनन्त सखिनके मन्दिर बनेहैं पुनि श्री अयोध्या को दशओं आवरण जोहै अन्तर ताके मध्य में परम दिव्य ब्रह्म स्वरूप कल्प तरुहै छत्राकार है रत्नमय पेड़ स्कन्ध डार पात फूल फल संपूर्ण परम दिब्य चिन्मय श्रीराम रूपा रूपहै ताकेतर मंडप ब्रह्ममय है ताके तर वेदिका है परम दिव्य रत्नमय है ताके पर सिंहासन को दिन सूर्यके प्रकाश को हरत है ता सिंहासन पर हजार दलको कमल रत्नमयो है ताके पर दुइमुद्रा हैं अग्नि मुद्रा पुनि चंद्रमा अगस्त्य संहिता में तीनि मुद्रा कहे हैं अग्नि सूर्य चंद्र ताके मध्यमें श्रीसी-ताराम बिराजमान हैं श्रीलक्ष्मण भरत शत्रुहन भ्राता अरु श्रीहनुमान् इत्यादिक षोड़श पार्षद छत्र चमर ब्यजन इत्यादिक लियेहैं तहां जे श्रीसीताराम उपासक हैं पर मानन्य उपाय शून्य प्रपत्ति जेहैं ते सातों लोकके आवरण अरु सातों तत्त्वके आवरण भेदिकै ते महा बिष्णुके लोकको प्राप्त भये महाबिष्णु अति आदर संयुक्त महा शम्भुके लोकको पहुंचायो तब महा शंभु ने अति आदरते बासुदेव लोक को प्राप्त किये तहां अति आदर संयुक्त गोलोक को प्राप्त भये बिरजा पारभये तहां श्रीहनुमान् परम आचार्यतिनको मिले तब तिनने अति आदरते श्री लक्ष्मण इत्यादिक भ्राता पार्षद संयुक्त जहांश्रीसीता राम बिराजमान हैं तहां को प्राप्त किये तब श्रीसीताराम प्रसन्न ह्वैकै तिनकोमिलतभये तब श्रीजानकीजी की आज्ञाते जैसी भावना इहां करतरहैं ताही सेवाको प्राप्तभये तहां यह श्रीअयोध्या जे यहि कालमें सेवनकरैं अरु वह श्रीअयोध्याकीबासनाकरैंतो तिनको वह श्रीअयोध्या प्राप्तहोतुहै पर बिना क्रमही यह प्रकरण हमने सूक्ष्मकरिकैकहा (३) तहां प्रमाणहै (सदाशिवसंहितायांश्रीसौमित्रिवाक्यंवेदान्प्रतिश्लोकउन्तालिस ३६) महर्लोकोचतरूर्ध्वमेककोटिःप्रमाणतः ॥ कोटिद्वयेनविख्यातंजनलोकंब्यवस्थितं१ चतुष्कोटप्रमाणस्तु तपोलेकोविराजितःउपरिष्ठात्ततःसत्यमष्टकोटिप्रमाणतः २ आपःप्रख्याष्टकोमारंकोटिषोडशसंभवं ॥ तदूर्ध्वपरिसंख्यात उमालोकस्सुनिश्चितः ३ शिवलोकात्तदूर्ध्वंतुप्रकृत्याचसमागतः ॥ बिश्वस्यपुरतोवृत्तिः शिवस्यपुरतोबहिः ४ एतस्माद्बहिरुक्ताः सप्तावरणसंज्ञकाः (अन्यच्च)तदूर्ध्वंकोटिपंचाशत्क्रमात्दशगुणात्परं ५ भूमिरापोनलोवायुस्त्वमहंच त्रिधापरं ॥ प्रकृतेर्महामूलेनसप्तावरणसंज्ञकाः ६ (सदाशिवसंहितायां) तदूर्ध्वसर्वसत्वानां कार्यकारणमानिनां ॥ निलयंपरमंदिव्यंमहाविष्णवसंज्ञकं ७ सहस्रमूर्द्धाविश्वात्मासहस्रा

क्षः सहस्रपात् ॥ यन्निमेषाज्जगत्सर्वं लयीभूतव्यवस्थितं ८ उद्भवन्तिविनश्यन्तिकाल ज्ञान विडंबनैः ॥ यदंशेनसमुद्भूताब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ९ एतद्गुह्यंसमाख्यानंददातुर्वाञ्छितंहिनः ॥ तदूर्ध्वंतुपरं दिव्यंसत्यमन्यद्व्यवस्थितं १० ॥ न्यासिनां योगिनांस्थानंभगवद्भावनात्मनां ॥ महाशंभुर्मदतेत्र सर्वशक्तिसमन्वितः ११ तदूर्ध्वंतुपरंकान्तंमहावैकुंठसंज्ञकं ॥ वासुदेवादयस्तत्रविहरंतिस्वमायया १२ तदूर्ध्वंतुस्वयंभांतीगोलोकः प्रकृतेः परः ॥ वाङ्मनोगोचरातीतोज्योतीरूपः सनातनः १३ तस्यमध्ये पुरं दिव्यंसाकेतमितिसंज्ञकं ॥ योपिद्रत्नमणिस्तंभ प्रमदागणसेवितं १४ तन्मध्येपरमोदार कल्पवृक्षोवरप्रदः ॥ तस्याधः परमं दिव्यं रत्नमण्डपमुत्तमम् १५ तन्मध्येवेदिकारम्यास्वर्णरत्नविनिर्मिता ॥ तन्मध्येचपरंशुभ्रंरत्नसिंहासनंशुभं १६ सहस्रारंमहापद्मंकर्णिकारैस्समुत्तमं ॥ तन्मध्येमुद्रिकाभिन्नंमुद्राद्वाभ्यां विभिन्नकं १७ वह्नींदुमंडलेनापरिवेष्टितंविंदुभूषितं ॥ चन्द्रकोटिप्रतीकाशंछत्रकंचसचामरं १८ सदामृतघनश्राविमुक्तादामवितानकं ॥ तन्मध्ये जानकीदेवीसर्वशक्तिनमस्कृता १९ तत्रास्ते भगवान्नामः सर्वदेवशिरोमणिः ॥ तत्रादौचिन्तयेत्तेजो वह्निरूपं तुशकं २० तजसामहताखिलब्रह्म नंदैकाग्रमंदिरं ॥ एकाग्रमनसापश्येत्तत्रदेवंसुविग्रहं २१ स्निग्धमिंदीवरश्यामं कोटींदुललितद्युतिं ॥ चिद्रूपंपरमोदारंवीरभद्रंरघूद्वहं २२ द्विभुजंमधुरंशांतंजानकीप्रेमविह्वलं ॥ दोर्दंडचंडकोदंडखंडशरचन्द्रमहाभुजं २३ सीतालिंगितवामांगकामरूपंरसोत्सुकं ॥ तरुणारुणसंकाशंविकचांबुजपादकं २४ पदद्वन्द्वनखश्चंद्रप्रियंतेजः समावृतं ॥ कूर्मपृष्ठयदाभासंरणन्मञ्जीरपादकं २५ कटिसूत्रांकितश्रोणंयज्ञसूत्रैरलंकृतं ॥ रत्नकंकणकेयूरशोभिताग्रभुजद्वयं २६ चंद्रकोटिप्रतीकाशंकौस्तुभेनविराजितं ॥ दिव्यरत्नसमायुक्तंमुद्रिकाभिरलंकृतं २७ नाशांशिकसमायुक्तं मुक्ताफलस्फुरन्मुखं ॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशंकुण्डलाद्विश्रुतिद्वयं २८ प्रवृत्तारुणसंकाशं किरीटेनविराजितं ॥ गोविंदंगोवेदांश्चैवचिन्मयानन्दविग्रहं २९ दिव्यायुधसुसंपन्नंदिव्याभरणभूषितं ॥ अचरंकेवलंब्रह्मपीतकौशेयवाससं ३० शंखचक्रगदापद्मचर्मासिहलमूशलैः ॥ तद्रूपैर्विविधाकारैः सेव्यमानंपरात्परं ३१ वशिष्ठवामदेवादिमुनिभिःपरिसेवितं ॥ लक्ष्मणंपश्चिमेभागेधृतछत्रंसुचामरं ३२ उभौभरतशत्रुघ्नौतालवृंदकरांबुजौ ॥ अग्रेव्यग्रंहनूमंतंवाचयंतंसुपुस्तकं ३३ (भार्गवपुराणे नारायण वाक्यं नरंप्रति) इदमेव पुराप्रष्टुंवैकुंठनगरेहरिं ॥ सर्वेश्वरीजगन्मातापप्रच्छकमलालया ३४ त्रिपाद्विभूतिवैकुंठे विरजायाः परेतटे ॥ यद्देवानांपुरायोध्याह्यमृतेनमृतापुरी ३५ (अन्यच्च) वैकुंठंपंच वक्ष्यातंक्षीराब्धिचरमाव्ययं ॥ कारणंमहावैकुंठंपंचमंविरजापरं ३६ नित्यंदिव्यमनेकभोगविभवंवैकुंठरूपोत्तरं ॥ सत्यानंदचिदात्मकंस्वयममूंन्मूलत्वयोध्यापुरी ३७ (इतिअर्द्ध श्लोक) गोलोकाच्चपरं ज्ञेयंसाकेतोऽतः पुरःप्रियं ॥ गोप्याद्गोप्यतरागोप्यासायोध्याऽविदुर्लभा ३८ (इतिमहारामायणे शिव वाक्यं) रामस्यनामरूपञ्चलीलाधामपरात्परं ॥ एतच्चतुष्टयं नित्यंसच्चिदानन्दविग्रहं ३९ (इति वशिष्ठसंहितायां) श्रुति वेद कहते हैं या अयोध्यापुरी सासर्ववैकुंठानामेवमूलाधारामूलप्रकृतेः परातत्सद्ब्रह्ममयाविरजोत्तरा दिव्यरत्नकोशाढ्या तस्यांनित्यमेवं सीतारामयोर्विहारस्थलमस्तीत्यथर्वणोत्तरार्द्धे ४० देवानांपुरायोध्यातस्यांहिरण्मयः कोषःस्वर्गोलोकोज्योतिषावृतायोवैतांब्रह्मणो वेदामृतेनावृतांपुरीतस्मैब्रह्मचब्रह्माचआयुःकीर्तिप्रजांददरितिसामवेदेतैत्तरीयश्रुतिः ॥

है (३) इत्यर्थः ४० चारि खानि जीवहैं ताते अपार हैं चारि खानिमें कोई जीव छोड़ जो श्री अयोध्या में शरीर छूटै तो पुनि संसार में न आवै जे अयोध्या में जीव बसतेहैं अरु कोई भजन करते हैं सुकर्म करते हैं तिनको शरीर जब छूटता है तब जाको जैसी भावना भई सो तैसी मुक्तिको प्राप्त भयो श्रीरामचंद्रजूके समीप सारूप्य मुक्ति को प्राप्त होते हैं किंतु सायुज्य अलंकार को प्राप्त होय अरु जे अयोध्या में पाप करते हैं तिनको शरीर जब छूटता है तब ते कीट पतङ्ग पशु इत्यादिक योनि में जन्म लेते हैं पर श्री अयोध्यामें जब तिनको शरीर छूटता है तबते सालोक्य मुक्तिको प्राप्त होते हैं काहेते पाप पुण्यको फल भोग्य मनुष्य तनकोहै अपर योनिमें नहीं है ताते जे मनुष्य अयोध्या में बसि करिके पाप करत हैं ते चौरासी के दण्डसे छूटिके अरु नरक दण्ड ते छूटिके श्रीअयोध्या को प्राप्त होतेहैं अरु जे अन्यत्रके जीव कोई योगते श्रीअयोध्या में आधहू निमेष निवास करि गयेहैं जब उनको शरीर कहूं छूटा तब वे श्री अयोध्या में जन्म लेतेहैं कर्मानुसार मनुष्य कीट पतंग पशु इत्यादिक योनिमें जन्म लेते हैं तब श्री अयोध्या में शरीर छोड़ि कै श्रीरामधाम जो श्रीअयोध्या तहांको प्राप्त होते हैं यह प्रमाण है (पद्मपुराणे श्लोकै) षष्टिवर्षसहस्राणिकाशीवासेनयत्फलं ॥ तत्फलं निमिषार्द्धेणकलौदाशरथीपुरी १ (स्कांदे) जलरूपेणब्रह्मवसरयू मोक्षदासदा ॥ नैवात्रकर्मणोभोगे रामरूपोभवेन्नर. २ यदाम तिंप्रकुरुतेअयोध्यागमनंप्रति ॥ तदानरकनिर्मुक्तागायंति पितरो दिवि ३ यस्याःप्रभावमतुलं ब्रह्मावेदाःशिवोह्यहं ॥ नहिवक्तुंसमर्थास्तेविष्णुश्च सगुणः पुमान् ॥ तहां जो अनेक बासना जीव कैहै सो श्रीअयोध्या में टिकै मोक्ष देतो है किंतु सब एकही तनमें मोक्षहै (४) सब प्रकार ते मनोहर है अरु सकल सिद्धि संपूर्ण मंगल तिहिको दाता है (५) ऐसी पुरी जानिकै श्रीराम जन्मस्थान में बिमलकथा को मैं प्रारम्भ कीन कथा सुनत संते दुःख दोष मोह दम्भ पाखंड काममद सर्व नाश होइ जाइ (६) यह जो श्रीराम चरित है ताको नाम मानसर रामायण है जो कोई यह श्री मद्रामायण सुनै ताको मन बिश्राम स्थान को प्राप्त विशेषिकै होइ (७) मन जोहै सोई हाथी है विषय बनरूप है तेहिमें तीनि तापसंयुक्त चिंता अनेक सोई दावानल लगि रह्योहै पर बिभव देखिकै जरत है ताहीमें मन हाथी जरत है जो श्री राम चरित मानस में परै तौ सुखी होइ (८) यह श्रीराम चरित मानस मुनिन के मन भावन हैं यह श्रीराम चरित अति सुन्दर अति पावन श्रीमहादेवजू कीनहै (९) कैसो है श्रीमद्राम चरित मानस तीनि प्रकारके दोष जेहैं काम क्रोध लोभ किंतु तीनि कामना अर्थ धर्म्म काम किंतु मात्सर्य मद मान किंतु तीनि ईषणा सुत बितलोक मर्याद किंतु तीनि गुण जे जे तीन बिकार हैं तिनते जनित जो दुःख तिन संयुक्त सबन को श्रीमद्रामायण नाश करति है परमपद देति है पुनि कलि कुचालि अरु संचित क्रियमाण प्रारब्ध संयुक्त भूत भविष्य वर्त्तमान समस्त पाप नाश करि देति है (१०) श्री महेश जी अपने मनके अनुभवते यह मानस रामायण रचि राख्यो है कोई सुष्ठकाल पाइके तब शिवा जो पार्बती तिनको सुनावते भये (११) ताही ते यह जो श्री मानस नाम महादेव अपने हृदयमें बिचारिकै हर्ष संयुक्तधरेउहै (१२)

श्री महादेव कृत मानस रामायण ताही को भाषा करत हौं हे सज्जनहु सादर ते मन लगाइकै सुनहु (१३) दोहार्थ ॥ जैसा मानस को स्वरूप प्रताप है अस जेहि हेतु करिकै जगत् में प्रचुर भयो सो अब समस्त प्रसंग पर्व्वती महादेवका स्मरण करिकै कहत हौं (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेश्रीरामचरितमानस प्रारंभश्रीअवधस्वरूपप्रभावयथार्थवर्णनंनामदशमस्तरंगः (१०) ॥

दोहा ॥ रामचरण दशरथ में मानस थल जल पूरि ॥
रामकिरतिसरयूप्रकट सुनत न्हात अघदूर ११

३५ शंभुप्रसादसुमतिहियहुलसी । रामचरितमानसकबितुलसी १
करौं मनोहरमतिअनुहारी । सुजनसुचितमुनिलेवसुधारी २
सुमतिभूमिथलहृदयअगाधू । वेदपुराणउदधिघनसाधू * ३
बरषहिंरामसुयशबरबारी * । मधुरमनोहरमंगलकारी * ४
लीलासगुणजोकहैबखानी । सोइस्वच्छताकरैमलहानी * ५
प्रेमभक्तिजोबरणिनजाई * । सोइमधुरताशीतलताई * * ६
सोजलसुकृतशालिहितहोई । रामभक्तजनजीवनसोई * * ७
मेधामहिगतसोजलपावनासकिलिश्रवणमगचलेउसुहावन ८
भरेउसुमानससुथलथिराना । सुखदशीतरुचिचारुचिराना ९

दो० सुठि सुन्दर संवाद वर विरचेउ बुद्धि विचारि ॥
ते यहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि १

३५ श्रीमहादेव की प्रसन्नताते हृदय में सुमति का हुलास भयो है ताते श्री राम चरित मानस ताको मैं जो कबि तुलसीदास ह्वै तभयों मैं तो मानस रामायण के काव्य करिबे योग्य नहीं हौं पर शिवजी की कृपाते योग्य भयों (१) श्रीराम चरित जो मनोहर है ताको अपनी मतिके अनुसार कहतहौं किन्तु श्रीरामचरित करिकै अपनी मतिको मनोहर करौं हौं ताते हे सज्जनहु जो मोसे न बनै सो सुष्ठुचित्त जो तुम्हार है ताते सुधारि लेव किन्तु यह सुष्ठु चरित है याको चित में धारण करब (२) अब रूपकालंकार करिकै मानसर जो है किं पुरुष खण्ड अरु श्रीराम चरित मानस जो है तिन दोनोंकी तुल्य योग्यतालंकार करिकै कहते हैं ग्राम सर जो उत्तरा खण्डमें है उस मानसर में थल भूमि है या भूमि में कुण्ड है श्रीराम चरित मानस में कबिकै सुमति थलभूमि है अरु हृदय अगाधता है अरु मानसर लौ सदाभरो रहत है पर समुद्रते जल लैकै मेघ चौरि भरिदेते हैं अरु कबिकी हृदय मानसर भरिबे को बेद पुराण समुद्र है सन्त जन मेघहैं (३) श्रीराम सुयश वर कहो श्रेष्ठ बारि है सोई वर्षते हैं सो मधुर है मनोहर है मंगल कर्त्ता है दृष्टान्त जैसे समुद्र में खार जल अरु मीठो जल दोऊ मिश्रित हैं तहां

और किसूसे नहीं भिन्नहोइ एक मेघही की गतिहै मीठो जल लेतेहैं खारको त्यागकरत हैं जब करतहै जब ताईं भूमिमें नहीं परै तब ताईं वहजल मधुर मनोहर मंगल करी है मेघ को जल जो कोई पात्र में उध्र्वहोते लैकै कोई देशमें पानकरै तो कफ बात पित इत्यादिक एकहू नहीं होइ अरु छहू ऋतुमें सर्व काल में मधुर कहे स्वरूप कीमाधुर्यताअति कमल मनोहर कहे अति सुन्दर है अरु जो कोई समुद्र ते जलभरि लइ जाइ अरु कोई पीवै तब ताके अनेक रोग होयँ किन्तु पचै नहीं अरु सुन्दर नहींहै तैसेही वेद पुराण खार समुद्र हैं काहेते कर्मकाण्ड सो तौ खार है अरु भगवत् यश सो मधुर है दोनों मिलिरहे हैं तहां साधुजन जेहैं ते मेघहैं जैसे मेघ मधुरै जल लेतेहैं तैसे वेद पुराणते सन्तजन भगवत् यश मधुर मनोहर मंगल कारी लैकै बर्षते हैं ताके पान कियेते काम क्रोध लोभ इत्यादिक नाश ह्वै जाते हैं अरु जे कोई असाधु हैं तेवेद पुराण बांचिकै सुनावते हैं ते जनु खारही जल भरि भरि पिआवतेहैं काहेते सबसानिकै कहतेहैं अरु मेघ खारही समुद्रते जललेतेहैं अरु सूर्यकी किरणिकी गर्मीते मेघ जल बरसते हैं किन्तु सूर्य मेघके आवरणते बरसते हैं यह मुनिनको अनेक मत है (४) श्रीराम चंद्रकी जो नरनाट्य लीलाहै ताको साधु प्रेम समेत बखानि बखानि कहते हैं सोई जलकी स्वच्छता है अरु मेघ को जल शरीर को मल हरै है अरु श्री राम लीला संपूर्ण बाह्यांतर के कर्म वासना रूप मल जन्म मरण मल हरति है (५) अरु जो प्रेम लक्षणा भक्तिहै सो बर्णिबे योग्य नहीं है पर जब संत कहने लगे तब प्रेम ते गद्गद बाणी ह्वै जातीहै रोमांच ठाढ़े होतेहैं कभी बैठि जातेहैं कभी खड़े ह्वै जाते हैं कभी निर्लज्जह्वै कै नाचि उठते हैं कभी स्तम्भ ह्वैकै कम्पायमान होतेहैं कभी रोइ देतेहैं कभी ठठाइकै हँस देतेहैं कभी प्रेम भरे गाइ उठते हैं कभी स्वरूपाकार वृत्ति पराभक्ति को प्राप्तह्वै कै अपनपौ समस्त भूलि जाते हैं पुनि स्वामीकी इच्छाते चैतन्य होइ जातेहैं इत्यादिक अनेक दशा होतीहैं ताको प्रेम लक्षणा भक्ति कही सोई जलकी माधुर्यता कही स्वादु है श्रीरामचन्द्र को माधुर्य स्वरूप सो स्वादहै अरु शांतरस शांति क्षमा करुणा सोई शीतलता है जब मेघते जल छूट्यो अरु भूमिमें नहीं परेउ तब को बर्णन भई तैसे संत जनके मुखते श्रीराम सुयश उच्चारण भयो तब को बर्णन भयो (६) पुनि जब मेघको जल भूमिमें परेउ तब शालि जोहै धान इत्यादिक ताको हित भयो शालिकी वृद्धिते कृषी कारको हित भयो तैसे जब साधु श्रीराम सुयश बर्षै तब कबिनके श्रोतन के अंतष्करणमें परेउ तब सुकृत रूपी शालि बढ़ेउ तब रामभक्त श्रोतन को आनंदभयो परमानन्द जीवको औ आत्माको भयो (७) पुनि मेघको जल भूमिमें परेउ तब कोई नारे खोरनमें परिकै जाइमानसरमें प्राप्तभयो अरु श्रीराम सुयश जो सन्त बर्षै तब कबिकै मेधा कही बुद्धि सोई भूमि तामें परेउ तब श्रवण राह ह्वैकै हृदय में प्राप्तभयो सुमति जोहै सो मनस को थल भूमि है अरु बुद्धि मानस के बाहरकी भूमि है (८) तब उहां जो सुष्ठुथल मानस रहै सो भरो भयो जब हूंढ़बर्षा रहित भयो शरद ऋतु प्राप्त भई तब जल थिराति भयो अपने पूर्व रूपको स्मरण करत भयो तब वो उपाधि करिकै जल छाक्रन्तु ह्वै गयो है जब अपने पूर्व स्वरूप को जल

कीच में बैठि गई अपने शुद्ध स्वरूप को प्राप्त भयो तब सुखदाता भयो पुनि एक रस शीतल भयो पुनि सब को रोचक भयो पुनि चारु कहे सुन्दर भयो पुन चिरान कहे पुरान भयो जैसे मेघते छूट्यो तैसो निर्मल भयो यह तद्रूप दृष्टान्त है अब दृष्टान्त कहते हैं जब संत श्रीराम सुयश केवल निर्मल वर्षे तब श्रोता कविता की बुद्धि भूमिरूप तामें परेउ तहां बुद्धि में राजस गुण जो है सो मिलि गयो ताते ढाबर ह्वै गयो किन्तु जो सन्तन प्राकृत दृष्टान्त संयुक्त श्रीराम सुयश श्रोताके बोध हेतु कहते हैं तब श्रोताने सहित दृष्टान्त बुद्धि करिकै श्रवण कियो तब सुमति थल में परेउ तब मनन कियो तब बुद्धिको राजसगुण अरु सन्त गुरुनको प्राकृत दृष्टान्त सो धीरेही धीरे क्रमही ते त्यागभयो तब निदध्यासन भयो तब श्रीरामसुयश केवल निर्मल आनन्दरूप साक्षात् भयो अन्तःकरण थिर भयो तब वे पुरुष सब जीव को सुख दाता भये सबको शीतल रूप भये रोचक भये पुराण पुरुषको प्राप्त भये पुनि जलके दृष्टान्त करिकै जैसे जैसे यह जीव अपने स्वरूप को चिन्तवन करै तैसे तैसे जो बीचकी उपाधिते जीव मलिन ह्वै गयो है सो विकार मिटिजात है (६) दोहार्थ ॥ मानसर में चहूंदिशि मणिन को घाटबांध्यो है श्रीराम चरित मानस अति सुभग तामें चारि संवाद अतिशय सुन्दर तेई चारिहू घाटहैं प्रथम संवाद शिव पार्वती को दूसरा कागभुशुण्ड गरुड़ को तीसरा याज्ञवल्क्य भरद्वाज को चौथ गोसाईं के गुरु अरु गोसाईं को अपनी अपनी बुद्धि करिकै बिरचे हैं तेई मनोहर घाट हैं (७) ॥

३६ सप्तप्रबन्धसुभगसोपाना ॥ ज्ञाननयननिरखतमनमाना १
रघुपतिमहिमाअगुणअबाधा। बरणबसोइबरबारिअगाधा २
रामसीययशसलिलसुधासम। उपमाबीचिबिलासमनोरम ३
पुरइनसघनचारुचौपाई ॥ युक्तिमंजुमणिसीपसुहाई ॥ ४
छंदसोरठासुन्दरदोहा ॥ सोबहुरंगकमलकुलसोहा ॥ ५
अर्थअनूपसुभावसुभासा ॥ सोइपरागमकरन्दसुवासा ॥ ६
सुकृतपुंजमंजुलअलिमाला ॥ ज्ञानविरागविचारमराला ॥ ७
धुनिअवरेबकवितगुणजाती। मीनमनोहरतेबहुभांती ॥ ८
अर्थधर्मकामादिकचारी ॥ कहबज्ञानविज्ञानविचारी ९
नवरसजपतपयोगविरागा ॥ तेसबजलचरचारुतड़ागा १०
सुकृतीसाधुनामगुणगाना ॥ तेविचित्रजलविहगसमाना ११
सन्तसभाचहुंदिशिअमराई। श्रद्धाऋतुबसन्तसमगाई ॥ १२
भक्तिनिरूपणविविधविधाना। क्षमादयाद्रुमलताबिताना १३
संयमनेमफूलफलज्ञाना ॥ हरिपदरतिरसबेदबखाना १४

*। तं

टी० पु

इहै अरु सातों प्रबन्ध प्रसंग युक्त तेई सुभग सोपान कहे सीढ़ी हैं वह मानसर प्रत्यक्ष नेत्रनते देखिपरत है श्रीराम चरित मानस हृदय के नेत्र जे ज्ञान वैराग्य हैं तिनते देखि परत है तब यह मन प्रतीति मानत है (१) वह मानस में जल अगाध है यह मानस में रघुपति की महिमा कहे मर्याद सो निर्गुण है किन्तु गुणभूत सब में सूत्रधर व्याप्त सबको नियन्ता अंतर्यामी साचीरूप सबको चेतन कर्त्ता श्री रामचंद्र को घनीभूत तेज सूक्ष्म रूप निर्गुण सो महिमा किन्तु श्रीराम गुण सब निर्गुण है यहै जो महिमा सो अगाध है अगाध कहे कोई कवि बरणि नहीं सकै काव्यन में नहीं समाइ सकै किन्तु अगाध कहे निर्दोष है सोई श्रीराम सुयश बर बारि की अगाधता है (२) वह मानस में तरंग उठती हैं यह जो श्री सीताराम की यश सुधा सलिल है तामें उपमा जो अनेक प्रकारकी हैं सोई तरंग हैं जाको देखत सन्त मन रमत है कबिजनन के उपमेय को उपमान के सदृश कहते हैं सो उपमेयको लचि करावते हैं सो उपमान कहो (३) वह मानस में पुरइनि छाइरही है अरु सीप हैं तिनमें मुक्ता प्रसव होती हैं श्रीराम चरित मानस में चौपाई सुन्दरि सघन पुरइनि है अरु कबिकी सुमति सीप है अरु युक्ति जो है सो मंजुनाम मोती है मंजु केवल उज्ज्वल को नाम है ताते मोती को नाम मंजु है चारिभांति सबके नाम कहे जाते हैं एक लाड़ नाम कहो एक जस कर्म करै तस नाम परत है ताको क्रियानाम कहो एक जैसा गुण होइ तैसो नाम कहाजात है ताको गुणनाम कहो एक जैसो रूपहोइ तैसो नाम कहा जात है ताको रूपनाम कहो अरु मंजुकहो उज्ज्वलको अरु मोती में केवल उज्ज्वलै धर्म है ताते इहां रूप नाम कहे हैं ताते मोती को मंजुनाम है (४) वह मानस में कमलके फूल बहुत रंगके हैं श्रीराम चरित मानसमें अनेक भांतिके छन्द हैं सोरठा दोहा इत्यादिक तेई बहुत रंगके कमल हैं (५) अरु कमल में पराग है मकरन्द कहे रस है सुगन्ध है अरु छन्द सोरठा दोहादि जे कमल हैं तिनमें अर्थ जे अनूपम हैं तेई पराग सुन्दर हैं अरु सुन्दरि भावना सोई मकरन्द है अरु सुन्दरि भाषा जो नम्रता करिकै कही है सोई सुगन्ध है (६) पुनि उन कमल के रस सुगन्ध को भ्रमर जे निर्मल हैं ते आस्वादन करते हैं अरु पराग में रंगि जाते हैं अरु छन्द जे कमल रूप हैं तिनके सर्व स्वादके ग्रहणकर्त्ता सुकृतिन के सुकृत जे हैं तेई भ्रमर हैं पुनि उस मानसर में हंस रहते हैं श्रीराम चरित मानसर में ज्ञान बैराग्य बिचार इत्यादिक तेई मराल हैं (७) पुनि उस मानसर में मनोहर मीन हैं अनेक भांतिके अरु श्रीराम चरित मानस में छन्दन में अर्थ चारि भांति करिकै हैं चारि खानि हैं चारि लक्षण हैं चारि गति हैं सो जानब काव्यन के बिषे एक ध्वनि है एक अवरेव है एक गुण है एक जाति है सोई मनोहर मीन है ध्वनि काको कहो जहां दुइ तीनि चारि अक्षरको मर्द होइ ताही शब्दमें कइउ अर्थ होवैं यह चौपाई ते

जानव ॥ बन्दौं नाम राम रघुबरको ॥ पुनि सखरस कोमल मंजु इत्यादिक जहां होइँ ताको ध्वनि काव्य कहो ते चेल्हवा इत्यादिक मीनहैं जे चमकतेहैं अवरेव काको कही जो अक्षर उलटि कै अर्थ सिद्धि होइ ॥ चौपाई ॥ राम कथा कलि बिटप कुठारी ॥ जहां अवरेव काव्यहै ते बांबा मीनहैं तिनकी सर्प इव रूप चालहै पुनि कवित्त बिषे गुणकाको कहो जे दुइ तीनि अक्षरके पदहोंहिं अरु जो अक्षर पूर्वहो परै सोई पदमें जमक अनुप्रास परत जाहि अरु एकै अर्थ होइ ॥ चौपाई ॥ भव भव विभव पराभव कारिणि ॥ जहां यह रीति काव्य होइ ताकोगुण काव्य कही तहांजे छोटी छोटी मीन सौ पचास मिलिकै चलतीहैं ते मीनहैं पुनि जाति काव्य काको कहो जहां आठ दश बारह इत्यादिक अक्षरन के पदहोंहिं अरु अर्थ प्रसिद्ध होइ ते वड़े बड़े मीनहैं एकही एक रहतेहैं ॥ हरिगीतछंद ॥ मन जाहि राचेउ मिलिहि सोबर सहज सुंदर सांवरो ॥ यहि रीतिते जहां काव्य होइ ताको जाति काव्य कही काव्यकी अरु चतुरंगिणीसेना की एकही रीति वर्णन है काव्यन बिषे जो ध्वनिहै सो घोड़ेन की रहस्य है अवरेव जो है सो गाड़िन की रहस्य है गुण जोहै सो पैदरन की रहस्य है जाति जोहै सोहाथिनकी रहस्य है जैसे चतुष्पद सेनाहै गज रथ तुरंग पैदर तैसे चतुष्पद काव्य है ध्वनि अवरेव गुण जाति तेई श्रीराम चरित मानस में अनेक भांतिके मीनहैं (८) उस मानस में अनेक भांति के जलचर हैं अरु श्रीराम चरित मानस में अर्थ धर्म्म काम मोक्ष ज्ञान बिज्ञान बिचार नवरस अरु जप तप अरु योग वैराग्य एते सब जलचर हैं अर्थ कहे द्रव्य अन्न बस्त्र वाहन इत्यादिक सो तप दानते अर्थ सिद्ध होतहै धर्मकहे वर्णाश्रम के धर्म्मते अपने कर्मते सिद्ध होतहै कामकहे कामना सो अष्टसिद्धि इत्यादिक सो देवता इष्टते सिद्ध होतहै मोक्षकहे संसार की निवृत्ति परम पदकी प्राप्ति सो ज्ञान भक्तिते सिद्ध होतहै ज्ञान दुइ प्रकार का है एक शास्त्र जन्य ज्ञान दूसर निज अनुभवते स्वस्वरूपकी प्राप्ति बिज्ञान कहे बिशेष ज्ञान स्वस्वरूपते परस्वरूपकी प्राप्ति सर्वत्र एकदृष्टि बिचार कहे सारासारको बिभागकरना आत्मा अनात्माको बिचारकरिकै भिन्नकरना (९) नवरस श्रीरामचंद्रजीते उत्पन्नहैं शृंगार जनकपुर में हास्य फागुमें अरु शूर्पणखाकी नाककाटते करुणा जब श्रीलक्ष्मणजीके शक्ति लगी किंतु बिभीषण पर जब शक्ति चली रौद्र खर दूषण के युद्धमें अद्भुत जय कागभुशुण्ड को दिखायो है अरु श्री कौशिल्याको दिखाये अरु जयन्ता बिषे वैभत्स्स जब नाग फांसमें स्वेच्छित बंधे भयानक जब सेतु बांधे रावणको भय भयो वीर रावण के संग्राम में पुनि शान्त जब राज्याभिषेक भयो ॥ इति ९ ॥ प्रमाण शृंगार मालाग्रंथे (श्लोक १) शृंगारोजनकगृहेरघुवराद्धास्यःकृतोद्‌ नस्य तत्कारुण्यंऽनुजरोदनेखरबधेरौद्रोद्भुतःकाकके ॥ वैभत्स्योपरिबंधनेभयकरःसेतौरणेवीरहा शान्तः श्रीभुवनेश्वरेभवहराद्रामादसोभून्नव: १ शृंगारकी दश अवस्था अभिलाष चिन्ता स्मृतिगुण कथन उद्वेग प्रलाप उन्माद व्याधि जड़ता मरण १० स्वामीके मिलिबे की इच्छा चिन्तासंयुक्त सो अभिलाष स्वामी के दर्शन अरु स्वामी के मिलिबेको संतोष बार्त्तालाप करिकै सो चिन्ता स्वामीकी जेती चेष्टा दुःख सुख सबको स्मरण ज्ञानसो स्मृति स्वामी को बिछोह बहुत दिनको तिनको गुण किसूसे कहना स्पर्श परपति पतीके भाव सो गुण कथन स्वामी

के विषे कामको क्लेशते विषयिक ज्ञान सो उद्वेग प्रिय जोहै स्वामी तिनके आश्रित कल्पनाजोहै व्यवहार सो प्रलाप स्वामीको चकित ह्वैकै ताकना अरु नेत्र संयुक्त उन्मीलित मन अरु दूनों हाथसे जाहीको पावै ताही को धरै अरु भ्रमके वचन कहना सो उन्माद मदन को क्लेश करिकै संतापते शरीर दूबर ह्वै गयोहै सो व्याधि विरह व्यथा जोहै सोई जीवनहै दूनोंकरिकै जड़ह्वै रहीहै सो जड़ता बिरहके क्लेशते उत्पत्तिभयो जो व्यवहार सो मरण १० मानों मरि गईहै शृंगार बिधिमें द्वै भेदहैं एक बिप्रलंभ स्वामीके देखिबे हेतु प्राण बिहंग ह्वैकै उड़िकै जावेकी इच्छाहै सो बिप्रलंभ पुनि संभोग संभोग में चारिभेद हैं उद्दीपन उत्कंठा अभीसार साक्षात् अरु उसीमें अनुभाव बिभाव है सो कहते हैं प्रथम उद्दीपन कही तामें द्वै भेदहैं एक वचन उद्दीपन स्वामी जो हैं श्रीरामचंद्रजू तिनकी जो चर्चा कोई करै ताको सुनिकै स्वामीको गुण कृपा हृदय में प्रवेशभयो तब तन पुलकि उठतु है पुनि रूपोद्दीपन कही जब स्वामीके रूपरंगकी अनुहारि कोई पदार्थ देखिबे में आयो तब स्वामी के स्वरूपकी सुधि आई हृदय में स्वरूप प्रवेशभयो किंतु स्वामीके बिरहकी दशा काहूमें देखिपरेउ है तब वाह्यान्तर अंग अंग पुलकित भयो सो उद्दीपन कही पुनि दूसर उत्कंठा कही स्वामी के मिलिबे की अति चाहना भई अपर कछु नहीं सोहात है नेत्रन में जल भरिआये हैं हृदय गद्गद ह्वै आयोहै सो उत्कंठा कही पुनि अभीसार स्वामीके मिलबेको चलत भई अति आतुर ते अनेक सुख को अनुभव होतजाते हैं अरु मगमें पग डगमगात परते हैं अंग अंग पुलकित हैं सो अभीसार कही पुनि साक्षात् स्वामी को स्वरूप देखि परेउ तब मग्नह्वै गई स्तंभभावको प्राप्त भईहै तहां साक्षात्संभोग में तीनि भेदहैं मन संभोग चक्षुसंभोग स्पर्शसंभोग संभोग में दुइ भावना हैं एक तत्सुख एक स्वसुख तत्सुख स्वामीके सुख हेतु शृंगार है अरु एक स्वामी करिकै अपने सुख हेतु शृंगार है विशेष शृंगार रस रतिको कही तहां मनवचन कर्मके व्यवहार एक ह्वै जातुहै तहां शृंगार रसमें षोड़श उद्दीपन हैं प्रथम मज्जन है पुनि वस्त्र हार तिलक अंजन कुण्डल नासिका की मोती कबरी नूपुर जावक कुच मणि क्षुद्रघंटिका ताम्बूल कंकण अंगराग चंदन केसरि अगर कस्तूरी इत्यादिक को लेपन इति १६ पुनि शृंगार रसके सहायक बारह आभूषण हैं चूरी करमुद्रिका बाजूबन्द ग्रीव भूषण कटि किंकिणी मंजीर नाम बिछुआ श्रवण तटंक भालमें कंचन मणि के टीका शीशफूल बेनी मोतिनते गुहीहै बेसरि शृंगारहूमें है आभूषणहू में है कोढी इति १२ पुनि बारह आभूषण शील क्षमा दया पतिब्रत संतोष लज्जा बिनय दृढ़ता सुन्दरता माधुर्य शुद्धता गुरुसेवा इति १२ शृंगार श्याम रंग ताकी स्थायी भावरति इत्यादिक प्रीति १ हास्य या उरंगता के लक्षण बिपर्यय अलंकार किन्तु हास्य के बचन २ करुणा धूम्ररंग पर दुःख देखिकै द्रविउठै ३ रौद्ररक्त अनुचित देखिकै क्रोधउपजै ४ अद्भुत पिंगल रंग आश्चर्यवत् देखिपरै ५ वैभत्स्य कृष्ण रंग देखिकै लज्जा उत्पन्न होइ मनमें धृति आवै ६ भयानक नीलरंग जाको देखिकै भय उत्पन्नहोइ ७ वीर गौररंग रणमें दान में तपमें शरीरइत्यादिक सबदेह हर्षसंयुक्त नेकहू नहीं मुरै ८ शान्तश्वेतरंग निंदास्तुति मानापमान हर्ष शोक इत्यादिक रहित इति ६ पुनि तीनि रस वात्सल्य कंचन रंग पुत्र

भाव लाडन　　पुनि दास्य चित्र रंग निष्काम सेवा पुनि मध्य अरुण स्वामी को प्रसन्न सब प्रकार राखै इति ३ इतिरससमाप्तम् ॥ पुनि जैजै अक्षर को मन्त्रहोय ते हजार दिनप्रति जपै अरु अक्षर प्रति लक्षको पुरश्चरण करै अरु तप इन्द्रिन को विषय जीतै पुनि योगाष्टांग नेम यम आसन प्रत्याहार प्राणायाम ध्यान धारणा समाधि इति ८ वैराग्य कहे तीनि गुण सम्बंधी जो है सिद्धि तिनको त्याग एते समस्त श्रीराम चरित्र मानस के जलचर हैं चारु कहे सुन्दर जो श्रीराम चरित तड़ाग है तामें सुन्दर जलचर हैं अरु उस मानसर में अनेक भांतिके जलचर हैं (१०) इत्यर्थः ॥ उस मानस में जल बिहंग जो जलही में रहतेहैं अहर्निश तिनको कुक्कुट नाम है एत मानस में जे सुकृती साधु हैं जे केवल राम नामही गान करते हैं तेई विचित्र जल बिहंगहैं (११) उत अमराई है चहूंदिशि इत सन्तसभा अमराई है उत बसन्त ऋतु करिकै शोभित है इत सदा श्रद्धा बसन्त ऋतु है श्रद्धा कही अपनी उपासना अनुकूल वेदबाक्य सन्त बाक्य गुरु बाक्य निज अनुभवकी एकता करिकै प्रतीति करना सो श्रद्धाकही (अन्यच्चश्लोक एक) शास्त्रदृष्टंगुरोर्वाक्यं तृतीयंचात्मनिश्चयं ॥ त्रिविधंयोऽभिजानाति समुक्तोजन्मबन्धनात् १ सन्तसभा अमराई में बसन्त रूपी श्रद्धा सदाहै (१२) पुनि उस अमराई में अनेक तरहके द्रुमहैं आमनकी जाति बहुत है पुनि कटहर बड़हर सहतूत चिंचिनी ठुमरि इत्यादिक हैं पर अपने अपने फूल फल सुगन्ध स्वाद इत्यादिक करिकै शोभित हैं अरु तिनपर लता चढ़ि रही हैं बितान इव छत्राकार शोभायमान ह्वै रहीहैं अरु इत श्री रामचरित मानस में सन्तसभा अमराई में पृथक् पृथक् द्रुम दिखावते हैं क्रमालंकार करिके जानब ॥ भक्तिनिरूपणविविधविधाना ॥ भक्ति के निरूपण विविध प्रकारके हैं भक्ति कही सेवा भज धातुहै सो सेवाबिषे सिद्ध होतु है तहां सन्तसभा में पराभक्ति के प्राप्तिवारे प्रेम लक्षणावारे नामाकारवृत्तिवारे मानसीवारे ध्यानकरनेवारे नवधा भक्तिवारे इत्यादिक भक्त जनहैं ज्ञान नेष्ठी योगनेष्ठी कर्मनेष्ठी इत्यादिक सभामें सब हैं अरु अपनी अपनी भावनाते आपु आपु को सबै भक्त मानै हैं यह कहते हैं कि सेवा को भक्ति कही सेवा कही सेवायां प्रसन्नता जाही रीतिसे स्वामी प्रसन्न होइ सो भक्ति है सोई सेवा है तहां पराभक्तिवारे श्री रामचंद्र के स्वरूप में तदाकार भक्ति मानते हैं प्रेम लक्षणा वारे कभी दिशा भूलि जाते हैं कभी नाचि उठै कभी गाइ उठै कभी रोइ उठै कभी बैठि जातेहैं समाधिस्थ होतेहैं इत्यादिक दशा विरही विरह भक्ति मानै हैं नामवारे राम नाम रटते प्रेम भरे भक्ति मानै हैं मानसीवारे मानसी सेवा भक्ति मानैहैं ध्यान करनेवारे अपनेस्वरूपको ध्यानकरिकै परस्वरूपको निरखतेहैं सोई भक्ति मानैहैं अरु नवधा वारे कोईश्रवणकी भक्ति मानै हैं कोई नृत्यगानस्तोत्रपाठ पुराण इत्यादिक बांचना ताहीकोभक्ति मानैहैं कोई सुमिरणको मानैहैं कोईचरण सेवन भक्तिमानैहैं कोईशालग्राम अरु धातु शिला दारु मृत्तिका अरु चित्र लीला इत्यादिक बिग्रह अरु गुरु सन्त तिनकी अर्च्चन नाम परिचर्या जल चंदन तुलसी पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल इत्यादिक सेवा सोई भक्ति मानते हैं कोई परिक्रमा करिकै संस्कृत किन्तु भाषा स्तुति करिकै साष्टांग दण्डवत् दोनोंपग दोनों जांघ छाती शिर मन बचन सबांग भूमिस्पर्श करै जैसे दण्ड

भूमि में परे हैं जैसे सर्प भूमिमें लपटि रह्यो है सो बंदना भक्ति मानै हैं (पाद्मे श्लोकं) दोर्भ्यां पद्भ्यांचजानुभ्यांउरसाशिरसादृशा ॥ मनसावचसाचेति प्रमाणोऽष्टांगई रतः १ कोईदास्य भाव परमेश्वरकी आज्ञानुकूल सब करतेहैं कोई सखा भाव स्वामी से केलि भक्ति मानतेहैं कोई मनबचन कर्म्म आत्म समप्पर्ण किये हैं जो करै सो रामही करै ज्ञानी जन जे हैं ते अपने अंतष्करण की बृत्ति अखंड करिकै अपनो स्वस्वरूप निर्मल ताहीको सेवन करतेहैं सोई भक्ति मानतेहैं अरु योगीजन अष्टांग योग नेम यम आसन प्रत्याहार प्राणायाम ध्यान धारणा समाधिकरिकै ब्रह्म जो ज्योतिस्स्वरूप तेहीकी प्राप्ति हेतु सेवाभक्ति मानतेहैं अरु कर्म्मवारे यज्ञदान जप तप तीर्थ ब्रत इत्यादिक करिकै भगवत्को समर्प्पण करतेहैं सोई सेवा भक्ति मानतेहैं सोई भक्ति निरूपणहैं विविधप्रकारके सोई संतसभा अमराई में विविध भांति के द्रुमहैं अरु सबमें क्षमाहै सोई लताहै दया है सोई बितान इव छैरहीहै (१३) उस मानसर की अमराईमें फूल फलेहैं पुनि फूलहैं पुनिफलहैं पुनिफलमें रसहै इस मानसरमें संतसभा अमराई में संयमनेम फूलहै अरु ज्ञानफलहै हरिके चरणारबिन्द में रति सोई रसहै संयमदशहैं अहिंसा सत्य स्तेय ब्रह्मचर्य्य दया नम्रता क्षमा धृति अल्प भोजन शौच एते दश संयम १० नेम शौच होम तप दान विद्याध्ययन इन्द्रीनिग्रह ब्रत चान्द्रायण इत्यादिक किंतु ब्रत कहे प्रण उपवास एकादशीआदि मौनरहना स्नान त्रिकाल संध्या करना दश नेम १० (श्लोकद्वैप्रमाण गायत्रीभाष्ये) अहिंसासत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्य्यंदयार्जवं ॥ क्षमाधृतिमिताहारः शौचंचैवयमादश १ शौचंत्यागस्तपोदानंस्वाध्यायश्चाप्रतिग्रहः ॥ ब्रतोपवासमौनानिस्नानंचनियमा दश २ एते संयमनेम (१४) उत अमराईमें बिहंग हैं मयूर शुक पिक इत्यादिक इत अमराई में अनेक प्रसंग हैं ॥ चौपाई ॥ तनयययातिहि यौवन दयऊ ॥ इत्यादिक प्रसंग जोहै अरु संत सभामें एक एकते अपर प्रसंग कहते हैं तेई अनेक बर्णके बिहंग हैं तरह तरह की मनोहर बाणी बोलते हैं (१५) दोहार्थ ॥ उत मानस के चहूं फेर किनारे किनारे बाटिका शोभित है यामें केवल रस सुगंधमय फूलही लगेहैं सो बाटिका तामें बिहंग मधुकर राय मुनि इत्यादिक जे केवल रसै ग्रहण करते हैं पुनि ताहीके पीछे अमराई है यामें रसाल पनस इत्यादिक तरुहैं तामें शुक पिक बिहंग हैं फलन के रस ग्रहण करते हैं ताके पीछे बन है जामें अनेक रीति के तरु हैं तहांके वहंग अनेक प्रकार के हैं उत्तम मध्यम निकृष्ट बनके फल अनेक ताके भोक्ता हैं अरु इत मानस में जो समाज की पुलकावली है सो तीनि प्रकार की है एकन की पुलकावली केवल भक्ति रसमय है श्रीरामलीला माधुर्य्यमें पुलकि कै मग्न रहते हैं तेई बाटिका हैं अरु केवल श्रीसीताराम के स्वरूप माधुर्य्य रसमें मग्न ह्वै प्रेम उमँगत है तेई बाटिकाके पुष्पहैं परमानंद रसहै जीव बिहंग है सोई ग्रहण करतहै अरु एकनके मनमें केवल ज्ञानही की पुलकावली है सोई बाग है अरु तेहिको फल जीवन मुक्तहै अरु ब्रह्मानंद रसहै चित्त बिहंग है सोई रसको भोक्ताहै अरु एकन के कर्म्मकांडमें पुलकावली होती है सोई बन है तामें अर्त्थ धर्म्म काम फल है ताको भोग सो रस है अहंकार बिहंग भोक्ताहै ताते उपासना कांड ज्ञानकांड कर्म्मकांड ये तीनहूं बाटिका

बाग बन हैं अरु तीनहूं को सुष्ठ मन सोई माली है जैसे वाटिका बाग वनहै तैसो ताको मन माली है अरु अपनी अपनी भावनामें स्नेह जोहै सोई जलहै अरु दोऊ नेत्रते चारु घट हैं ताहीते भरि भरि सींचते हैं पुनि दूसर अर्त्थ पुलकावली सोई बाटिका है या बाटिका में सर्व्व पदार्त्थ हैं ताते बाग कहा अरु बन कहे समूह बाटिका बाग बन तीनहूं को एकही अर्त्थ है (१)॥

चौ० जेगावहिंयहचरितसम्हारे *। तेर्यहिताल चतुररखवारे * १
सदासुनहिंसादरनरनारी * *। तेसुरवरमानसअधिकारी * २
अतिखलजेबिषयीबककागा।यहिसरनिकटनजाहिंअभागा ३
शम्बुकभेकसियारसमाना *। इहांनबिषयकथारसनाना ४
र्यहिकारराआवतहियहारे। कामीकाकबलाकबिचारे ५
आवतर्यहिसरअतिकठिनाई। रामकृपाबिनआइनजाई * ६
कठिनकुसंगकुपन्थकराला। तिनकेबचनव्याघ्रहरिव्याला ७
गृहकारजनानाजंजाला *। तेअतिदुर्गमशैलविशाला * ८
बनबहुबिषममोहमदमाना। नदीकुतर्कभयंकरनाना * * ९
दो० जे श्रद्धा सम्बल रहित नहिं सन्तन कर साथ॥
तिनकहँ मानस अगम अति जिनहिं न प्रिय रघुनाथ १

चौ० उत मानसर में रक्षक हैं इत श्रीराम चरित सँभारि कै जे गावते हैं अपर चौपाई दोहा छन्द न मिलै पावै कहीं कुपाठ न होने पावै कहीं अर्त्थको अनर्थ न होने पावै तेई चतुर रखवारे हैं (१) उत देव देवी स्नान करते हैं इत नर नारि जे सादर ते सदा सुनते हैं तेई सुरवर स्नानके अधिकारी हैं (२) उत बकुला काग नहीं जाते हैं इत अति खलजे बिषयी तेई बक कागहैं अति खल कही जे कहते हैं समझते हैं पर मानते नहीं अरु धारणा नहीं करतेहैं अरु निन्दक हैं ते खल हैं पुनि बिषयी जे बिषयमें लीनहैं अरु भगवत् के बिग्रहमें अरु भगवत्पदार्त्थ में बिषय आरोपण करते हैं अरु भगवत्के स्वरूपमायिक कहते हैं तैसही चरित है यह मानते हैं ते बिषयी हैं अरु भगवत्के स्वरूप लीलामें बिषय लेशहू नहींहै (३) उत बक काग क्यों नहीं जाते शंबूक कही घोंघा भेक कही मेढ़क जो सेवार में समाइ रहे हैं ते उतै मानसर में तीनिहू नहीं हैं ताते बक काग नहीं जाते हैं इतै श्रीराम चरित मानसर में बिषय की कथाके रस सो नहीं है लोभ सेवार है क्रोध शंबूक है काम भेक है क्रोध काम दोनों लोभही के भीतर रहते हैं सो इत मानस में नहीं है (४) ताहीते हृदय में हारिकैनहीं आइ सक्ते हैं॥ कामी काक बलाक बिचारे॥ उनको चारा इत मानसर में नहीं है ताते नहीं आइ सक्ते हैं अथवा बिचारे कहे कंगाल हैं

ज्ञान हीन हैं मूर्ख हैं मलीन हैं ते श्रीराम चरित मानस में कैसे आवहिं (५) उतै जाबेको कठिन है इत आइबे को कठिन है बिना श्रीराम कृपा नहीं प्राप्त होइ (६) कहते उत कुपंथ कराल है इत कुसंगै कराल है कुपंथ उत मानस के मार्ग में व्याघ्र हरि कही सिंह जाको पंचानन कही चारिहू पगके चंगुल चारि अरु एकउ पांचहू ते पांच हाथी एकही बार मारतु है ताते पंचानन कही किंतु पांच मुख होहिंगे शास्त्र कहते हैं अरु सर्प इत्यादिक तामसी जीवन करिकै मार्ग कठिन है इत मानसर में जो कदापि मन सम्मुख होइ तौ कुसंगी पुरुष जेहैं तिनको बचन जो भय दायक सोई व्याघ्र हरि व्याल है (७) उत विशाल पर्वत है इत गृह कार्य जो नाना जंजाल है सोई शैल है (८) उत बिषम बन है इत मोह मद मान जो है तेई बिषम बन है उत भयंकर नदी हैं इत मनकी कुतर्क जेहैं तेई भयंकर नदी हैं (९) दोहार्थ ॥ उत मानस को मार्ग एक तौ कठिन है दूसरे खर्च नहीं है पुनि संगति नहीं है ताते अगम है इत मानसमें श्रद्धा खर्च नहींहै पुनि संतनकी संगति नहीं है पुनि जिनके श्री रघुनाथ जी प्रिय नहीं हैं तिनको मानस अगम है (१) ॥

जोकरिकष्टजाइपुनिकोई * । जातहिंनींदजुड़ाइहु * * १

* । पावअभागा २

। [illegible]अपारआवाहसमत्तआभमाना ३

जोबहोरिकोउपंकनआवा । संतनिन्दाकरिताहिसुनावा * ४

सकलबिघ्नव्यापैंनहिंतेही । रामसुकृपाबिलोकहिंजेही * ५

सोइसादरसरमज्जनकरई * । महाघोरत्रयतापनजरई * *

तेनरयहसरतजहिंनकाऊ * । जिनकेरामचरणभलभाऊ * ७

जोनहाइचहयहि * । सोसतसंगकरैमनलाई * * ८

असमानसमानसचखुचाही । भइकबिबुद्धिबिमलअवगाही ९

भयउहृदयआनन्दउछाहू * । उमँगयोप्रेमप्रमोदप्रबाहू * १०

चलीसुभगकबितासरितासी । रामबिमलयशजलभरितासी ११

सरयूनामसुमंगलमूला * * । लोकवेदमतमंजुलकूला * १२

[illegible]मानसनन्द। मलतसातक।

दो० श्रोता त्रिबिध समाजपुर ग्राम नगर दुहुं कूल ॥
सन्त सभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल १

टी० जो कदापि कोई कष्ट करिकै जाइ तौ उसको जूड़ा ह्वैजात है इत जो कष्ट करिकै आयो तब पूर्व पापते निद्रा आइगई (१) उत अतिशय जाड़ लागि आइ है

ताते स्नान पान नहीं भयो इत जड़ता जोहै अज्ञानता जाते कछु नहीं समुझि परेउ ताते बाह्यांतर नहीं भीज्यो भाग्य हीन है (२) उत इत शीतके जोरते नतौ मज्जन भयो नतौ पान करिगयो अभिमान समेत फिरि आयो है अभिमान कहो इतै निद्रा अज्ञान बश इतै अति जाड़ बश अभिमान भयो कि सूने ते स्नान कियेते का होत है ताते फिरि आयो है (३) जो कोई पूछिबेको आयो तब मानसर में अनेक दूषण रोपण करिकै निन्दा सुनावत भयो (४) अस तेहि प्राणीको एकहू बिघ्न नहीं व्यापै जेहि पर श्रीरामचन्द्र कृपा करहिं (५) उस मानसरमें जो सादर समेत स्नान करै तौ तीनि ताप मेटिकै मोक्ष देतुहै इत मानसमें प्रेम समेत श्रवण करै तौ तीन ताप मेटिकै श्रीरामचंद्रकी प्राप्ति होइ तीनि ताप कौनहैं अधिभूत अध्यात्म अधि दैवत अधिभूत कहो जो सुत कुटुम्ब राजा सर्प चोर व्याघ्र इत्यादिकन ते जो बाधा होइ अरु अपने मनमें जो कोई जीवको बिघ्न ताकै सो अधिभूत कहो लोक परलोकहूमें पुनि अध्यात्म जो शरीर ते बाधा उत्पन्न होइ ज्वररोग बरतोर इत्यादिक पुनि काम क्रोध ईर्षा मात्सर्य इत्यादिकनते बाधा स्वार्थ परमार्थहू मेंसो अध्यात्म ताप कहिये पुनि आधि दैवत जो दैवयोगते होइ पाला पाथर अति बृष्टि अनावृष्टि इत्यादिक किन्तु इंद्रिन के देवतन करिकै बाधा होइ स्वार्थ परमार्थहू के ताको अधि दैवत तापकहो इहै जो तीनिहू ताप महाघोर जेहि करिकै सर्वजीव तप्तहै जो श्रीरामचरित मानसरमें मज्जन करै तो त्रैताप में नहीं जरै (६) सब तजिकै जिन जीवन के श्रीरामचंद्र जीके चरणारविन्द में भली प्रकारते भावहै तेप्राणी यह मानस को नहीं तजते हैं (७) जो भावयुक्त यह मानसर स्नान कीन चाहै तो सबको त्यागि मनको अच्छी तरह लगाइकै सत्संगति सन्तन कै करै जे पुरुष शास्त्र सम्प्रदाय लिहे सब प्रकार निरभिमान निरपेक्ष निर्दम्भ संसारते वैराग्य समदृष्टि इत्यादिक लक्षण एक रस श्रीरामतत्पर तिन पुरुषनकै संगति अहर्निश करै औ मानसर नीको प्रकारते अन्हाहि (८) अरु यह मानसर देखिबे को हृदय के नेत्र चाहिये उत मानसर भरो भयो इत कविता को हृदय मानसर भरो भयो अवगाह भयो तब कविता कै विमल अनभवित बुद्धि अवगाहत भई श्रीरामचरित मानस में प्रवेश करत भई (९) तब कबिके हृदय में आनन्द को उत्साह भयो तब प्रेमको प्रमोद कहो आह्लाद उमँगत भयो (१०) तहां उत मानसर उमँगत भयो तब शुभ मंगलमय नदी चली तामें श्रीरामचंद्रको यश करुणामय जल भरिकै चली सो सरयू नामहै सो सरयू मानसर में कहांते प्राप्त भई तहां भक्तराज जो श्रीबशिष्ठजू तिनने पूर्वही महा तपस्या कीह्यों परब्रह्म को स्मरण कीह्यों तब परब्रह्म परमात्मा जो श्रीरामचंद्रते प्रसन्न भये तब जो गोलोक के मध्यमें श्री अयोध्याताके दक्षिण विरजा गंगा श्रीअयोध्या के उत्तर श्री सरयूहै सो श्रीरामचंद्रकी करुणा रूपहैं को जानै अनादिही नेत्र द्वार है प्रवाह चरण सेवित है सो सरयू श्रीरामचंद्र की आज्ञानुकूल श्री बशिष्ठजू के हेतु श्री सरयू चलती भई प्रथम बासुदेव लोकमें आई पुरुष ने पूजन कियो पुनि महा शम्भुके लोकमें आई पुनि पूजन समेत महाबिष्णु केलोक में आइकै महा बिष्णुके अंगमें प्रवेश करिकै संपूर्ण लोकको मेखला करि लियो तहां महाबिष्णु

के लोकमें सरयू कछु रहिगई कोई काल पाइकै श्री बामनजी के चरण सों ब्रह्माण्ड फूटि गयो तब धारा चलती भई तब ब्रह्माजी कमण्डलु में लै लियोपुनि कोई काल में राजा भगीरथ के हेतु ब्रह्मा कमण्डलु से छोड़ि दीन सो गंगा भगीरथ लैकै चले ताते भागीरथी नाम कहाई अरु महिते गमन कीन ताते गंगा नाम कही अरु प्रथमहिं महा विष्णु के लोकमें कछु आपनो अंश छोड़िकै श्रीसरयू श्रीवशिष्ठ के हेतु चलती भई तब ब्रह्माण्ड भेदन कियो महत्तत्वत्रिधा हंकार नभ पवन पावक जलमहि एते सात आवरण ब्रह्माण्ड केते भेद आई पुनि शिव लोक उमालोक कौमार लोक सत्य लोक तपलोक जनलोक महर्लोक समस्त लोकन को भेदन करत संते किं पुरुष खण्ड में मानसर है तामें धारा आइ प्राप्त भई तब श्रीबशिष्ठ जी आगेह्वै कै लेत भये षोड़श प्रकार पूजन कीन तब आगे श्रीबशिष्ठ जू भये तब मानसर ते श्रीसरयू चलती भई श्रीसरयू श्री रामचंद्र की मन रूपी है श्रीरामचंद्र के मानसते भईहै अनादिही है ताते सरयू कही अरु कविको हृदय जो श्रीराम चरित रूप मानसर तहां बशिष्ठ स्थाने जीव तत्त्व तिनके हेतु कविके हृदय ते काव्य रूप सरयू चलती भई श्रीराम यश जल बिमल भरिकै चली इति प्रसंग वशिष्ठसंहितायां उत्तरार्द्धे (११) सो नदी और काव्य रूप नदी दोउनके सरयू नाम दोउ मंगलको मूल हैं सरयूके दुइ किनारे शोभित हैं अरु काव्य रूप सरयू में लोक सम्मत जोहै अरु वेद सम्मत जोहै सोई निर्मल दोउ कूल हैं (१२) पुनीत नदी जो मानस नन्दनी है सो तृण तरु निकन्दन करती चलीहै श्री राम कीर्ति अमृत रूप जल काव्यरूपी नदी भरिकै चलीहै सो कालिके मल सोई तृण तरु है ताको मूलनाश करती चलीहै (१३) दोहार्थ ॥ सरयू के दोउ किनारे पर पुरग्राम नगर बसेहैं जो पांच घरते अरु सौताईं ताको पुरकही अरु सौते हजार ताईं ग्रामकही हजारके आगे असंख्य ताको नगर संज्ञा है अरु सरयू तीर श्री अयोध्या है अरु सरयूके दोउ किनारे पर पुर ग्राम नगर बहुत हैं अरु श्री अयोध्या एकही है अरु काव्य सरयू के तीर त्रिविधि श्रोताहैं एकै आरत हैं सुत वित लोक बड़ाई शरीर रक्षा इत्यादिक हेतु भगवत् कथा सुनते हैं तेपुरहैं दूसर श्रोता अणिमा महिमा इत्यादिक सिद्धिहैं अरु अल्प सिद्धि मारण मोहन उच्चाटन इत्यादिक तिनके सिद्धि होने के हेतु वेद पुराण इत्यादिक सुनिकै मंत्र यंत्र देवताराधन करते हैं सिद्धिन के हेतु ताको अर्थार्थी श्रोताकही ते ग्राम हैं पुनि तीसर श्रोता जिज्ञासू जे कथा श्रवण करते हैं ते केवल ज्ञान वैराग्य योग शील संतोष शान्ति इत्यादिक ग्रहण करतेहैं चारि मुक्ति हेतु तिनको जिज्ञासू श्रोता कही ते नगर हैं अरु जे श्रोता नहीं हैं केवल ज्ञानी भक्त हैं भगवत् यश सुनते हैं अपने स्वस्वरूप में सदा आरूढ़ हैं श्री रामचंद्र को स्वरूप अलि माधुर्यनाम धाम लीला सोई रस पान करते हैं ऐसे जन दश बीसकी एक रस वृत्ति है आरत अर्थार्थी जिज्ञासू इन तीनिहू कामना ते रहितहैं तिन सन्तनकी सभा जो है समाज सोई अनूपम श्री अयोध्याजी है अपर अर्थ जो करते हैं सूप चलनी ऊंट बकरी इत्यादिक दृष्टान्त करिकै श्रोता कहते हैं सो भलो दृष्टान्त नहीं लागै अरु श्री सरयू के दोउ किनारे पुर ग्राम नगर बसे हैं अरु श्रीराम कीर्ति सरयू रूप तहां दुइ कूल लोक

वेदमत कहे हैं तहां पुर ग्राम नगर कौन है तहां तीनि प्रकार के श्रोता पुनि कहते हैं अर्थार्थी जिज्ञासू किन्तु त्रिवर्गी श्रोता हैं अर्थी धर्मी कामी तिनमें भेद है एक विषय हेतु आरत अरु एक श्रीराम हेतु आरत अरु एक विषय हेतु अर्थार्थी अरु एक श्रीराम हेतु अर्थार्थी अरु एक विषय हेतु जिज्ञासा करते हैं गुण सीखते हैं लोक में पुजाइबे हेतु अरु एक श्रीराम तत्त्व के जिज्ञासू हैं अरु एक विषय अर्थी हैं एक श्रीराम अर्थी हैं अरु एक विषय धर्मी हैं अरु एक श्रीराम धर्मी हैं अरु एकै विषय कामना में हैं अरु एकै भगवत् कामना में हैं अरु दोउन को सिद्धान्त श्रीराम कथा श्रवणकरिकै है तहां जो विषय स्वार्थिक हैं ते तीनों लोक सम्मत किनारे पर बसे हैं अरु जो श्रीरामस्वार्थिक हैं ते वेद सम्मत किनारे पर बसे हैं पर दोऊ श्री रामचंद्र को प्राप्त हैं तहां एके तुरन्त प्राप्ति है एक कालान्तर प्राप्ति है (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डेश्रीरामचरितमानसवर्णनंनामएकादशस्तरंगः११

दो० रामचरण दशहू लहरि राम कीर्ति विस्तार ॥
भरद्वाज मुनि याज्ञवलि कहि सम्वाद उदार १२

। [illegible] सरयु सोहाई * १
सानुजराम समर यश पावन । मिलेउ महानद सोन सुहावन * २
युग बिच भक्ति देवधुनि धारा । सोहत सहित सुबिरति बिचारा ३
[illegible] तापत्रास [illegible] सुहानी । रामस्वरूप सिन्धु समुहानी ४
सुरसरि [illegible] * । सुनत सुजन मन पावन करिही ५
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा । जनु सरि तीर तीर बन बागा ६
उमा महेश बिवाह बराती * । ते जलचर अगणित बहु भांती ७
रघुबर जन्म अनन्द बधाई * । * भ्रमर तरंग मनोहरताई * ८

दो० बाल चरित चहु बन्धु के बनज बिपुल बहु रंग ॥
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारि [illegible] ॥

टी० श्रीराम भक्ति रूप सुरसरी जो है सो श्री राम कीर्ति रूप सरयू में मिलत भई अरु जो कही कि सुरसरी में सरयू मिली है तहां श्री सरयू को श्री वशिष्ठजू ल्याये हैं प्रथम भू मण्डल में श्री सरयूजी आई हैं कहते को जानै श्री वशिष्ठजू श्री सरयू को कब ल्याये हैं पर पुराणन में वर्णन है राजा सगर के आगे श्री सरयू जी विद्यमान रही हैं अरु कइउ पुश्त बीते भगीरथ भये ते गंगा को ल्याये हैं ताते श्री सरयू के पीछे राजा भगीरथ करिकै सुरसरी बहुत काल पीछे भू मण्डल में आई है ताते सुरसरी श्री सरयू में मिलत भई हैं तैसे राम कीर्ति में भक्ति मिली है यह विचारिलेव (१) उत श्रोणनदी मिल्यो है इहां श्री लक्ष्मणजी संयुक्त श्रीरामचंद्र को संग्राम यश जो है सोई श्रोण नद मिल्यो है (२) जैसे सरयू के अरु श्रोण नद के बीच भागीरथी शोभित है तैसे सुष्ठु वैराग्य

अरु सुष्टुबिचार जो है दोउन बीच में दूनों संयुक्त भक्ति शोभित है सुष्टु वैराग्य कही असत्य को त्याग सत्यको लहि सत कही योग ज्ञान विज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिक सतहै तहां सुष्टु बिचार करिकै सर्व सतकालि है श्री रामनाम स्वरूप लीला ग्रहण सो सुष्टु बिचार है तामें प्रीति करना सो भक्ति तात्पर्य यहहै कि बिना वैराग्य बिनाबिचार भक्ति शोभित नहीं होती है अरु तीनिहू मिलत शोभित हैं (३) त्रिमुहानी क्षेत्र जहां शालग्रामी नदी को संगम है तेहिको लोग कहते हैं पर यह प्रसंग में त्रिमुहानी श्री सरयू गंगा श्रोणनदी तीनिहूं को एकता तहां सरयू गंगा संगम भई सो त्रिमुहानी है अरु इत बिचार भक्ति वैराग्य यह तीनों मिलत त्रिमुहानी तहां दूनों त्रिमुहानी तीनिहूं ताप हरतु है अरु उत समुद्र को चली मिलत भई अरु इत श्री राम स्वरूप सिंधु तहां को चली प्राप्त भई (२) जहां मानस मूल जोहै सरयू अरु सुरसरी मिली है स्नानते निर्मल होतहै इत श्रवण किहेते निर्मल होतहै मनवचन कर्म ते (५) पुनि उलटि करिकै सिंहाव लोकन प्रसंग कहतेहैं श्री सरयू अरु सरयू को तीर अरु श्री राम कीर्ति सरयू दूौको वर्णन करते हैं तहां बीच बीच में अपर इतिहास कथाहै सोई सुन्दर सरयू तीर के वन बाग हैं (६) श्री सरयूमें जलचर हैं इहां उमा महेश बिवाह के बराती जेहैं तेई अनेक प्रकारके जलचर हैं (७) श्री सरयूमें भ्रमरकी शोभा अरु तरंग की शोभा मनोहर हैं इत श्री राम जन्म को आनन्द जो है सोई भ्रमर है अरु जो बधाई बहुत त्रैलोक्यमें मनोहर बाजतीहैं सोई तरंग उठती हैं (८) दोहार्थ॥ श्री सरयू में पांच रंग के अरु बहु रंगके कमल फूले हैं नीलरंग पुनि हरित लाल मिश्रित पुनि अरुण रंग पुनि श्वेत रंग पुनि पीत रंग इत्यादिक मिलित बहु रंग हैं कमल पर मधुकर रस लेते हैं पुनि जलके बिहंग हैं इतै चारिहू भाइनके बाल चरित जेहैं अनेक रस रंग के तेई कमल हैं अरु शान्ति करुणा हास्य वात्सल्य दास्य सख्य शृंगार इत्यादिक सब रस तेई रसहैं अरु सुगन्धहै यथा योग्य अधिकारी प्रतिरस सुगन्ध ताको बाल लीला में दरशावते हैं तहां श्री दशरथ महाराज अरु कौशल्यादिक महारानी इनके सुकृत जेहैं तेई मधुकर हैं वात्सल्य रस बिशेष पीवते हैं अपर रस सुगन्ध है संपूर्ण परि जनन के सुकृत जे हैं ते बारिबिहंग हैं तेई सुगन्ध लेते हैं (१)॥

४० सीयस्वयम्बरकथासुहाई । सरितसोहावनिसोछबिछाई १
नदीनावबटुप्रश्नअनेका * । केवटकुशलउतरसबिबेका * २
सुनिअनुकथनपरस्परहोई * । पथिकसमाजसोहसरिसोई * ३
घोरधारभृगुनाथरिसानी । घाटसुबन्धरामबरबानी * * ४
सानुजरामबिबाहउछाहू * । सोसुभउमँगसुखदसबकाहू * ५
कहतसुनतहरषहिंपुलकाहीं । तेसुकृतीमनमुदितनहाहीं * ६
रामतिलकहितमंगलसाजा । पर्ब्बयोगजनुजुरेउसमाजा * ७
काईकुमतिकेकयीकेरी * । परीजासुफलबिपतिघनेरी * ८

दो० शमन सकल उतपातअति भरत चरित जसयाग ॥
कलिअघखलअवगुणकथन तेजलमलबककाग १

४० सरयू में शोभा छबि छाय रही है श्री राम कीर्ति सरि में श्री जानकीजूके स्वयम्बर की कथा जो है सोई शोभा छबि छाइ रही है (१) श्री सरयू में नाव है नावपर केवट हैं कुशलते पार उतारि देतहैं अरु इतै बटुसंज्ञा ब्रह्मचर्य ग्रहण संयुक्त विद्यार्थीजे हैं विद्या के अर्थ तिन्हों के प्रश्न अनेक बिधिते करते हैं पुनि बटुसंज्ञा सब श्रोतनकी है तिनके जे अनेक प्रश्न हैं तेई लोह लकरी संयुक्त सोई नाव है अरु कुशल नाम पण्डित जो बक्ता हैं सबके प्रश्नको उत्तर देकै बोध बिबेक संयुक्त करतु हैं सोई केवट कुशल पूर्वक पार उतारि देतहैं (२) श्री सरयू में पथिक जनको पार करतहैं इहां बक्ता के मुखते सुनिकै तब दुइ चारि मिलिकै परस्पर अनुकथन करतेहैं अरु बक्ताकी बाणी करिकै परस्पर बोध करतेहैं सोई पथिकनकी समाज है (३) सरयू में घोर धार है इहां परशुराम को कोप घोर धार है श्री सरयूमें सुन्दर अचल अटूट घाटबँधेहैं इत श्री रामबचन श्री परशु राम प्रति तेई सुन्दर अटूट घाट हैं (४) श्री सरयू में उमंग है जो जल राशि की राशि लगि जातु है अरु इतै सहित अनुज श्रीरामचंद्र के बिवाहको उत्साह जो है सोई सुख सब को सुखदाता उमंग है (५) श्री सरयू में सुकृतीजनस्नान करतेहैं अरु इतै श्री रामकी कीर्ति सरि जोहै तहां सुनतेहैं समुझतेहैं पुलकते हैं हर्षते हैं मन मुदित होतेहैं इतेई स्नानकरते हैं (६) श्रीसरयूमें पर्बयोग परतु है इतै श्रीराम चंद्रके राज्याभिषेक की समाज सोई पर्ब योगहै (७) अरु जलमें एक देशमें कहूं काई को योग कबि कहते हैं इहां कैकेयीमें कुमति जो देवमाया करिकै भईहै जेहिकरिकै सर्वजीवको दुःखै फल होत भयो सोई काईहै (८) दोहार्थ ॥ जैसे बर्षा ऋतु में जोर जल पाइकै काई बहिजाती है तैसे समस्त उत्पात जो कैकेयी करिकै भयाहै सो भरत के जप यज्ञ करिकै शमन कहो नाश ह्वै गयो अरु जो कलियुग के स्वरूप कहेहैं अरु कलिके अघ कहेहैं उत्तरकाण्ड में अरु बालकाण्ड में बन्दनामें खलनके अवगुण कहेहैं सो जलको बिकारफेन अरु बक काग हैं क्रमते जानब (१) ॥

१४कीरतिसरितछहूं ऋतुरूरी । समयसुहावनिपावनिभूरी * १
हिमहिमशैलसुताशिवब्याहू। शिशिरसुखदप्रभुजन्मउछाहू २
बरणबरामबिवाहसमाजू * । सोइमुदमंगलमयऋतुराजू * ३
ग्रीषमदुसहरामबनगवनू * । पंथकथाखरआतपपवनू * ४
बर्षाघोरनिशाचरगरी * । सुरकुलशालिसुमंगलकारी ५
रामराज्यसुखबिनयबड़ाई । बिशदसुखदसोइशरदसोहाई ६
सतीशिरोमणिसियगुणगाथा। सोइगुणअमलअनूपमपाथा ७
भरतसुभावसुशीतलताई * । सदाएकरसबरणिनजाई * ८

दो० मिलनि परस्पर हास ॥

प भांति चहुं बन्धु के जल माधुरी सुबास १

४१ श्रीसरयू अरु श्रीसरयू के तीर छहूं ऋतु करिकै शोभित हैं अरु कीर्ति सर जोहै तामें छहूं ऋतु रूर नाम शोभित हैं समय समय सुहावनि लागती है अरु भूरि नाम अति पावनि है (१) प्रथमै हिम ऋतु कहते हैं हिम कहे हिमांचल शैल जोहै तिनकी कन्या पार्वती अरु शिवजू को विवाह जोहै सोई यह अगहन पूष हिम ऋतु है हिमऋतु ठंढ परतु है गरीबन को दुइ चारि घड़ी दुःख देतु है शिवजूके बिवाह में भूत प्रेतन को देखिकै बाल बाल बृद्ध जीव दुःखित भये सोई जाड़ है इम ऋतु में बड़े आदमी विषय भोगमें सुखी रहते हैं अरु इम ऋतुमें तुषार जब परै उ तब कमल ताम्बूल इत्यादिक नाश होइ जाते हैं अरु शिव पार्वती के बिवाह में स्वामिकार्तिक के जन्मको हेतु है तेहि करिकै देवता बड़े आदमी हैं ते सुखी भये खल कमल नाश भये पुनि माघ फाल्गुन शिशिर ऋतु है माघ में मकर के सूर्य होते हैं प्रयाग में मेला परतु है अरु फाल्गुन में फागु होता है बाजन गान होते हैं श्रीराम जन्म के समय में ब्रह्मादिक देवता सिद्ध मुनि आये मेला होत भयो अरु त्रैलोक्य में बधाई गान अगर कपूर चंदन केशरि कस्तूरी कुंकुम अबीर की कीच मचि रहीहै श्री रामजन्म के उत्सव में सोई शिशिर है (२) अरु श्रीरामचंद्र के बिवाह की समाज जोहै मुदमंगल मय सोई चैत्र बैशाख ऋतुराज बसन्त है बसन्त में पल्लव फूल करिकै तरु तृण भूमि शोभित होइ रहीहै अरु श्रीरामचंद्रके बिवाह में बरातकी शोभा हाथिन के यूथ घोड़न के यूथ रथन के यूथ पैदरन के यूथ तिन सबन के शृंगार हेम मणि बनात पटम्बरन करिकै शोभित देवलोक नरलोक नागलोक सबके मन प्रफुल्लित सोई बसन्त शोभित है (३) अरु श्रीरामचंद्रको बन गमन सोई ज्येष्ठ आषाढ़ ग्रीष्म ऋतु है अरु पंथकी कथा सोई घाम अरु पवन है श्रीरामचंद्र को वियोग श्रीदशरथ महाराज के बियोग करिकै सबको क्लेश भयो सो सब ग्रीष्म को धर्म है (४) अरु खर दूषण रावणादि राक्षसनको महाघोर संग्राम जोहै सोई श्रावण भादों बर्षा ऋतु है दोउ दलकी अनीरव्यूह रचना जेहै तेई मेघ हैं अरु बाजन के आयुधन बीरनके घोर शब्द जेहैं तेई मेघ के गर्ज्जन हैं अरु राक्षसन के धनुष के गोशा अरु बानरन के लूमकी शोभा सोई दामिनी चमक है अरु श्रीरामचंद्रके बाणन की बहु बिशेषता अरु दोउ दलन के बाणन के छूटब तेई जलके बिन्दुन की बर्षा है अरु संतगो महिमुनि सिद्ध देवतादिकन के कुलतेई शालिन म विशेष आनंद तिनको मंगल कारीहै (५) अरु श्रीरामचंद्र जीको राज्याभिषेक को जो सबै जीवन को सुखदै अरु देव मुनि करिकै जो बनतोहै व्यास इत्यादिक जे ———

जल नभ सब निर्मल उज्ज्वल होत भयो श्रीरामचंद्र राज्यपर बैठे तब यश करिकै त्रैलोक्य उज्ज्वल होत भयो शिवकी उज्ज्वलता लय होइ गई तहां परम पुरुष श्रीम-

नारायण अपनो क्षीर समुद्र ढूंढ़ते हैं शिव कैलास ढूंढ़ते हैं इंद्र ऐरावत हाथी ढूंढ़ते हैं राहु श्वेत ह्वै गयो चंद्रमा को ढूंढ़त है तहां आपनो रूप नहीं समुझि परै तैसेही ब्रह्मा हंस ढूंढ़ते हैं ऐसोही रीति ब्रह्मांड कोष भरेमें होति भई तामसराजस गुण नहीं रह्यो केवल शुद्ध सात्विक शांतरस पूरिरह्योहै (६) (प्रमाण श्रीहनुमन्नाटकेश्लोकएक)महाराजश्रीमन्जगतियश्सातेधवलितपय. पाराव:रंपरमपुरुषोऽयंमृगयति ॥ कपर्द्दी कैलासं कुलिशभृद्भौमंकरिवरंकलान थंराहु:कमलभवनोहंसमधुना १ सजीजोहैं नरनाग देवी जेती स्त्री बर्ग ब्रह्माण्ड में हैं पतिव्रता सती जेतीहैं तिन सबनकी शिरोमणि श्रीजानकीजी के सुमिरेते सबको पतिव्रत रहत है तिन श्रीजानकीजीको जो निर्मल अनूपगुण गाय है सोई जलकी निर्मलता है (७) अरु भरतजीको सुभाव जो नर्मल एक रस सोई जलकी शीतलता है वर्णबे योग्य नहीं है (८) दोहार्थ ॥ पुन चारिहू भाइन की जो परस्पर अवलोकनि है बोलनि है मिलाप है ये तीनिहू तीन प्रकार जल की माधुर्यता है जलके स्वरूप की माधुर्यता पुनि स्वादकी माधुर्य्यता पुनि गुणकी माधुर्यता है पुन परस्पर परम प्रीति जो है अरु परस्पर हास्य जो है भायप जो है सोई तीनि प्रकार के जलकी सुगन्धता है एक स्वरूपै में सुगन्ध है अरु एक सुयश की सुगन्ध है अरु एक प्रवाह अखंड नित्य एक रसकी सुगन्ध है क्रमही ते जानब १० ॥

४२ आरतिबिनयदीनतामोरी *। लघुताललितसुबारिनथोरी* १
अद्भुतसलिलसुनतसुखकारी। आशापियासमनोमलहारी २
रामसुप्रेमहिंपोषतपानी *। हरतसकलकलिकलुषगलानी ३
भवश्रमशोषकतोषकतोषा। शमनदुरितदुखदारिददोषा* ४
कामक्रोहमदमोहनशावन । बिमलबिवेकबिरागबढ़ावन ५
सादरमज्जनपानकियेते *। मिटतपापपरितापहियेते * ६
जिनयहिबारिनमानसधोये। तेकायरकलिकालबिगोये ७
तृषितनिरखिरबिकरभवबारी फिरहिंमृगाजिमिजीवदुखारी ८

दो० मतिअनुहारि सुबारिगुण गणिगणिमनअन्हवाइ ॥
सुमिरिभवानि शुशंकरहि कह कविकथा सुहाइ १
अब रघुपति पद पंकरुह हिय धरि पाइ प्रसाद ॥
कहौं युगलमुनि बर्य्यकर मिलन सुभग संवाद २
भरद्वाज जिमि प्रश्न करि याज्ञवल्क्य मुनि पाइ ॥
प्रथम मुख्य संबाद सो कहिहौं हेतु बुझाइ ३

४२ श्रीराम कीर्ति सरयूद्वौ की लालित्य अतिशय है जेहि पदार्थके सुनत कहत देखत समुझत ग्रहण करत संते बाह्यांतर विषे आह्लाद उत्पन्न होइ ताको लालित्य

कह्यो इत कीर्त्ति सरयू बिषे मेरी आरत बिनय दीनता सोई लालित्य है पर मेरी सब लघुहै अरु कीर्त्ति सरयू की लालित्य थोड़ी नहीं है बहुति है जेहि बस्तुकी किसूसे अति चाहना भई अरु ताकी बिनती अति दीन ह्वैके करत है ताको आरत कह्यो किंतु आरत बिनय दीनता लघुता येई लालित्य हैं (१) अद्भुत कह्यो जोयहि नेत्रनते अदृश्य होइ अरु हृदय के नेत्रनते देखि परतहै अरु प्रत्यक्ष देखि परतहै पर जो सुनिबे में नहीं आवै आश्चर्यवत् देखिये जैसे मेघ पर नक्षत्र उदय होइ इत्यादिक जानब अरु जाकीशोभा कहिबेमें नहीं आवै ताको अद्भुत कह्योसरयूसलिल जोहै अरु काव्य सरिमें राम कीर्त्ति सलिल जो है अद्भुत दोऊहैं सुनबे में स्नानहै सुखकारी अनेक आशा पियास दोनों हरतहैं अथवा आश कह्यो श्रीराम चरितको चाहना सोई पियास है सो सन्तुष्ट करत है पुनि चाहना बढ़त है मनको मल दोनों हरतहै (२) श्रीरामचन्द्र को प्रेम दोनों पोषत है अरु कलि कह्यो कलियुग को किन्तु कलि कह्यो क्लेश को तिनके कलुष जो सम्पूर्ण पाप तेहि करिकै जो ग्लानि ह सो दोनों हरतु है (३) अरु भव जो संसार सागर तेहि करिकै श्रम जन्म मरण दोनों सोखि लेतेहैं अरु संतोष को तोषण कह्यो पोषण दोनों करत है अरु शमन कह्यो नाश करिदेत हैं दुसह जो नहीं सहाजाइ ऐसो दुःख अरु दरिद्र कह्यो असंतोष अरु सर्व दोष शमन करि देत है (४) अरु काम कोह मद मोह नाश करत ह दोनों बिमल विवेक वैराग्य को बढ़ावत है (५) उतै जो सादरसमेत मज्जन करै किंतु पानकरै अरु इतरश्रवण करैअरु धारणा करैते दोनों बाह्यांतर के जे हैं पाप अरु परिताप कह्यो अनेक चिंता तेहि करिकै जो क्लेश सो हरत है (६) जिनने श्रीसरयूमें स्नान नहीं कियो अरु श्रीराम कीर्त्ति सरि में अपने मनको नहीं धोयो तिन कादर्य्य जीवन को कलिकाल ने बिगोइ लियोहै बिगोइ कह्यो कलिकाल ने अपने में लीन करि लयो है अपने खाने जाद गुलाम करि लियो है (७) जे प्राणी श्रीमद्राम चरित सरमें नहीं तृप्त भये ते अपर धर्म्म कर्म्म संसार मृग तृष्णा को जलता में दुःखित भ्रमते हैं (८) दोहार्थ॥ अपनी मतिके अनुसार दोऊ बारिके गुण गनिकै अरु गुनिकै नाम बिचारिकै अपने मनको स्नानप न कराइकै भवानी शंकरको सुमिरिकै श्रीमद्राम चरित जो शोभायमान है तेहिको कबि मैं होतहौं (१) अब श्रीरघुपति के पद पंकज हृदय में धरिकै तेहिको प्रसाद कह्यो प्रसन्नता पाइकै युगुल मुनि बर्य्य नाम श्रेष्ठ तिनको मिलाप अरु तिनको परम उत्तमोत्तम ऐसो जो संबाद सो कहत हौं (२) जेहि प्रकार भरद्वाज याज्ञवल्क्य मुनि पाइकै प्रश्न कीन्ह है सो संबाद प्रथम मुख्य करिकै कहतहौं जाते सब सम्बाद मोको स्फुरित होइ सो सब हेतु समुझिकै कहौं गो यह दोहा भरद्वाज जिमि प्रश्न करि सो कहूं कहूं नहींहै पर विरोध भी नहीं है (३) इति श्रीरामचरित मानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेमानसरूपकसमाप्तं नामद्वादशस्तरंगः १२॥

दोहा ॥ रामचरण दशतीनि में बसि प्रयाग सतसंग ॥
ब्रह्म निरूपण कांड त्रय चौअनुवन्ध प्रसंग १३

भरद्वाजमुनिबसहिंप्रयागा । तिनहिंरामपदअतिअनुरागा १
तापसशमदमदयानिधाना । परमारथपथपरमसुजाना * २
माघमकरगतरबिजबहोई * । तीरथपतिहिंजाइसबकोई ३
देवदनुजनरकिन्नरश्रेणी । सादरमज्जहिंसकलत्रिबेणी ४
पूजहिंमाधवपदजलजाता । परसिअक्षयबटहर्षितगाता * ५
भरद्वाजआश्रमअतिपावन । परमरम्यमुनिवरमनभावन * ६
तहांहोइमुनिऋषयसमाजा । जाहिंजेमज्जनतीरथराजा * ७
* ८

दो० ब्रह्म निरूपण धर्म्म बिधि बरणहिं तत्त्व बिभाग ॥
कहहिं भक्ति भगवंत की संयुत ज्ञान बिराग १

४३ जब मकरके सूर्य होतेहैं तब जेभागवत जीव ब्रह्माण्डमेंहैं ते सब तीर्थ पति जो प्रयाग तहांको जातेहैं तहां भरद्वाज मुनि परम विवेकी श्रीरामतत्त्वके परमवेत्ता तिनके आश्रम को समस्त नरमुनि ऋषि देव दानव इत्यादिक जे भागवत हैं तेसमस्त भरद्वाज से सत्संगहेतु जाहिं तहां समाज होइ यह आठहू चौपाई को भाव जानब अरु अर्थ अक्षरार्थै जानिये (८) दोहार्थ ॥ मकर के समय प्रयाग में जेते साधु जाहिं ते सब भरद्वाज के आश्रम को जाहिं तहां समाज होइ तब ब्रह्मको निरूपण करहिं ब्रह्म निरूपण धर्म बिधि अवरेव करिकै अर्थ होत है प्रथम कर्मकांड पुनि ज्ञानकांड पुनि भक्तिकांड निरूपण करहिं धर्मबिधि अपने अपने धर्मकी बिधि कहहिं सो कर्मकांड है पुनि सांख्य संयुक्त ब्रह्म निरूपण करहिं सो ज्ञानकांड है पुनि भगवत् की भक्ति ज्ञान वैराग्य संयुक्त कहहिं सो उपासना कांडहै अथवा ब्रह्म निरूपण धर्म विधि ब्रह्म निरूपण धर्म बिधि से करहिं तहां एक अधर्म बिधि ब्रह्म निरूपण है अरु एक धर्म विधि ब्रह्म निरूपण है एकै कहते हैं कि अपर ब्रह्म कहां है यह संसारै ब्रह्म है यहि जगत् को कर्ता कोई नहीं है आपही ते यह जगत् उत्पत्ति होतुहै मनुष्य ते मनुष्य पशुते पशु पक्षीते पक्षी तरुते तरु अन्नते अन्न इत्यादि चराचर काल में उपजते पलते मरतेहैं यह परम्परा अनादि कालते चला आवत है जैसे जलमें लहरीस्वाभाविक उठती हैं पुनि बनी रहती हैं पर आदि अन्त मध्य एक जलही है ऐसेहीपांचहू तत्त्व एकहीहैं तेही करिकै स्वाभाविक रचनाबनिरहीहै ताते संसारै ब्रह्महै पुनि कोई कहते हैं कि अपर ब्रह्म कहांहै सांख्य जोहै सोई ब्रह्म है महत्तत्त्व से महद्भयो पुनि त्रिगुण

अहंकार भयो पुनि पांचतत्त्व नभ पवन पावकजल महि पुनि पंचबिषय क्रमहीतेशब्द स्पर्श रूप रस गन्ध पुनि अनेक व्यवहार भयेपुनि स्वाभाविकै कोई समयमें सृष्टि महिमें लयभई महि जलमें जल पावक में पावक पवन में पवन नभमें नभ गुणन में गुण अहंकार में अहंकार प्रणव में प्रणव महद में महद्तत्त्वमें ऐसेही उपजत है पलत है लय होतहै जैसे आकाशही के कोषते मेघ उठत है प्रत्यक्ष होतहै पुनि आकाशही में अदृश्य होइ जातुहै ऐसेही संसार की परंपरा है ताते सांख्यै ब्रह्महै अरु कोई शक्ति को ब्रह्म कहते हैं कि शक्ति कोईहै सो अति अनर्बचनीय है तिनने अपनी इच्छा ते ब्रह्मा विष्णु शिवको उत्पन्न कियो तिनते तीनि गुणको प्रवृत्ति भई तेहिते संपूर्ण जगत् को व्यवहार भयो पुनि काल पाइकै सब जगत् क्रमही ते शक्तिमें लीन भयो ताते शक्तिही ब्रह्म है पुनि कोई कहते हैं कि कालही ब्रह्म है जेहि काल के भीतर यह संसार उत्पत्ति पालन प्रलय होतु है ताते कालही ब्रह्महै अरुकोई कहते हैं कि कर्म ब्रह्महै काहेते कि जे जैसे कर्म करते हैं ते तैसे कर्मानुसार भोगकरते हैं ताते कर्म ब्रह्म है अरु कोई कहते हैं कि ब्रह्म सोतो एकहै निराकार है नामरूप रहितहै निर्विशेष है जीव अरु ब्रह्म दुइकहना अज्ञान देशमें है ब्रह्म एक अखण्ड दंडायमान परिपूर्ण सजातीय बिजातीय स्वगतभेद रहित है यह जो संसार सोतो भ्रमरूप है कल्पना मात्र है कछुहै नहीं अपने भ्रमते ब्रह्ममें द्वैत भासते हैं जैसे रज्जु में भुजंग भ्रांति होतुहै जैसे सूर्यकी किरणिमें जलकीभ्रांति होतीहै जैसेसीपमें रूप भासतहै ऐसे ब्रह्ममें जगत् भासतहै अरु जीव ब्रह्म अज्ञान के आवरण ते द्वैत भासत हैं जैसे दर्पण में अपने द्वै स्वरूप भासत हैं जब दर्पण दूरि भयो तब एकही है जैसे घटोपाधिते सूर्य द्वै भासतेहैं ऐसे अविद्या उपाधिते ब्रह्म द्वै भासत हैं जैसे घटाकाश मठाकाश महदाकाशहै आकाश तत्त्व एकहीहै अविद्या उपाधि जीव विद्या उपाधि ईश्वर द्वौ उपाधि रहित ब्रह्महै घट मठ भंगभये आकाश एकही है घट अविद्या मठ बिद्या ऐसे अविद्या बिद्या त्यागे ब्रह्म एकहीहै अथवा ब्रह्म एक देशमें मायाहै अनादि है तेहि उपहित जो ब्रह्महै ताही को ईश्वर कहो ईश्वरते जगत् उत्पत्ति पालन प्रलय होतहै जैसे आकाश के एकदेश में कहूं मेघ रहतुहै सदा जब कबहूं इच्छा कियो तब आकाशही बिषे मेघ बिस्तार ह्वै जातुहै पुनि कछु काम बनोरहतु है पुनि आकाश के एकदेश में कहूं मेघ सिमिटि रहत है आकाश के एक देशमें आश्रित है शुद्धहै तहां मेघ में शब्द जोहै दामिनी जोहै जल जोहै सो अति सूक्ष्मरूप सम ह्वैकै रहेहैं तैसे ब्रह्मके एकदेशमें माया है सो शुद्ध है तहां तीनिगुण पांच तत्त्व शुद्ध साम्यता को प्राप्तहैं ताही देश में जो ब्रह्म उपहितहै ताही देशको ईश्वर कहो सो साकार रूपहै ईश्वर जब ईक्षणा करतहै तब तीनिगुण पांचतत्त्व भिन्नभिन्न होते हैं ताते जगत् बिस्तार होतहै पुनि पालनभयो पुनि प्रलयभयो तहां संसार कार्य्यरूपहै अरु ईश्वर कारणरूपहै अरु ब्रह्मकार्य्यकारणते परेहै निराकारहै निर्विशेषहै सच्चिदानन्दहै निर्गुणहै तेही ब्रह्मते अरु जीव ईश्वरते अभेद कहतेहैं कि ईश्वर की विद्या माया अरु जीवकी अविद्या मायाहै अरु ईश्वरकी सर्वज्ञता अरु जीवकी अल्पज्ञता इन सबन को त्यागिकै जीव ईश्वर ब्रह्मतत्त्वएकहीहै

तहांयहबिचारमें आवतहै जीवअपनीअविद्याअल्पज्ञताज्ञानभयेत्यागिसकैहै अरुईश्वरकी विद्या सर्वज्ञता यह कौन त्यागने वाला है इसके त्यागे नहीं त्यागी जाइहै सो आगे कैलासके प्रसङ्गमें कछु कहैंगे पुनि कोई कहते हैं कि जो कोई यहि संसार को कर्ता है सोई ब्रह्महै पुनि कोई कहते हैं सर्वत्र भगवान् के हाथ हैं सर्वत्र पायँ हैं सर्व शीश हैं सर्व नयन हैं सर्व मुख हैं पुनि कोई कहते हैं भगवान् चतुर्भुज रूप सोई ब्रह्म है जिनको वेद नारायण कहते हैं तिनहीं ते जगत् की उत्पत्ति पालन संहार होत है अरु नारायण सर्व जीवमें साकार रूप व्याप्तहैं अरु नारायण बिरजापार पर बैकुंठ में दिव्य बिभूति संयुक्त बिराजमान हैं सर्वोपरि हैं ताते नारायण ब्रह्महैं अरु दूसर बिग्रह छीरसागर में लक्ष्मी संयुक्त बिराजमान हैं जगत् के कारण हैं अरु एक रूप रमा बैकुंठमें बिराजमान हैकै सात्विक गुण करिकै जगत् को पालन करते हैं अरु सर्वजीव नारायणके दासहैं अरु कोई कहते हैं कि ब्रह्म द्विभुज स्वरूप हैं जिनको वेद श्रीकृष्ण ऐसो नाम कहते हैं सर्वोपरि हैं प्रकृति के पार गो लोक है तहां श्रीराधा संयुक्त परम दिव्य बिहार सदा करते हैं अरु कार्य्य कारण ते परेहैं सर्व व्याप्तहैं परम पुरुषहैं पर-ब्रह्महैं अरु कोई कहते हैं कि द्विभुज स्वरूप श्रीरामचंद्र सोई परब्रह्म हैं सो सर्वोपरि कार्य्य कारणके परेहैं सर्वोपरि श्रीअयोध्या तहां श्रीजानकी संयुक्त परम दिव्य बिभूति संयुक्त बिहार करते हैं अरु ब्रह्म जो सर्वत्र व्याप्त सो श्रीरामचंद्र को घनीभूत तेज है पर तेज चैतन्य रूप एकरस अखंड दंडायमान परिपूर्ण सर्व भूतमें रमि रह्योहै ताते राम कहो अरु अति लावण्य माधुर्य्य स्वरूपमें योगी मुनिनके मन रमत हैं ताते राम कहो सोई स्वरूप याज्ञवल्क्य निरूपण करहिंगे ऐसेही अपने अपने मति के अनुरूप ब्रह्म निरूपण सबै करते हैं अरु जेहि तत्त्वन करिकै ब्रह्म अरु जीवके बीचमें आवरण परिगयो है नहीं देखिपरै ताते तत्त्वन को बिभाग करते हैं ताते स्वस्वरूप जीव अरु पर स्वरूप परमात्मा सो देखिपरै ताते यह बर्णते हैं कि ईश्वर जब ईक्षणा करत है सो मूल प्रकृति है ताते महत्तत्व भयो तेहिते महद्संज्ञा भई पुनि अहंकार भयो ताते त्रिधारूप भयो सात्विकाऽहंकार राजसाऽहंकार तामसाऽहंकार पुनि पांच तत्त्व आकाश पवन अग्नि जल पृथ्वी भये पुनि पंच बिषय भये क्रमहीते शब्द स्पर्श गन्ध पुनि दश इन्द्री भईं पांच ज्ञानइन्द्री पांच कर्मइंद्री क्रमहीते जानब श्रवण त्वक् नयन जीभ नासिका पुनि पांचकर्म्म इन्द्री मुख हाथ पग लिंग गुदा पुनि क्रमही ते देवता जानब दिशा पवन सूर्य्य बरुण अश्विनीकुमार एते ज्ञानइन्द्रीके देवता पुनि कर्म्मइंद्री के देवता क्रमहीते अग्नि इन्द्र यज्ञ बिष्णु दक्ष प्रजापति यमराज एते कर्म्म इन्द्री के देवता तामस गुणते तत्त्व भये राजस सों इंद्रीभईं सात्विक ते देवता भये पुनि चतुष्ट अन्तष्करण चित्त अहंकार मन बुद्धि चारि देवता वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध पुनि जीव रुद्र चंद्रमा ब्रह्मा पुनि दशबायु भईं प्राण अपान उदान व्यान समान पुनि देव दत्त कृकल कूर्म्म नाग धनंजय पुनि पंचकोश भये आनन्द मय विज्ञान मय मनो मय प्राणमय अन्नमय एते पंचकोश इत्यादिकनमें अनेक भेदहैं मैंने तो अति अल्प कहेहैं पर एते पंचीकृत बिषय में हैं अनित्य हैं तिनके अन्तर्भूत जीव तेहिके अंतर्भूत ब्रह्म

है ब्रह्मते जड़ चैतन्यहै अरु ब्रह्म भिन्नहै जैसे चुम्बक शिलाते लोहा स्फुरित होत है तैसे ब्रह्मते पंचीकृत स्फुरितहै पंचीकृतमें जीव ब्रह्म कैसे मिले हैं अरु भिन्न है बिशेष जैसे फूलमें सुगन्ध रस जैसे मिठाईमें स्वादपुष्टी जैसे दूधमें माखन घृत जैसे फल बीज पुनि बीजांतर बीजहै ऐसे अनेक दृष्टांत हैं जहां जीव ब्रह्म अंतर्यामी एकही तत्त्व है आचार्य्यनके मत करिकै भिन्न भी है एक भी है यामें कछु बिरोध नहींहै कर्माधीन जीव भोक्ताहै अंतर्यामी साक्षीहै अरु शुद्ध दशामें एकही है वही कैवल्य रूप है वही दास रूपहै श्रीरामचंद्रको कोई यह कहतेहैं कि पंचीकृतमें एकरूप कैसे ब्याप्त है जैसे दारुमें अग्नि जैसे तिलमें तेल जैसे धातुमें शब्द इत्यादिक अनेक भांतिते तत्त्वनको बिभाग करिकै आत्माको बिलक्षण दिखावते हैं पुनि जब तत्त्वनते बिलक्षण भगवान् देखि परेउ तब भगवंतकै भक्ति कहतेहैं ज्ञान बैराग्य संयुक्त भक्ति एक अरु दशहैं अरु साठि अरु चारि अंगहैं अस्सी चौरासी अंग कहते हैं सो सब ग्रन्थन में प्रमाण है मेरे जानेहैं कौन अंगहैं परमेश्वरके आठ पहरके कर्म किंतु आठ पहर की मानसी भावना सोई चौंसठि कही अरु वाही में बढ़ायकै अस्सी कहे हैं चौरासी भी कहे हैं पर मैं ग्यारह स्वरूप कहतहौं श्रवण कीर्त्तन स्मरण पाद सेवन अर्च्चन बंदन दास्य सख्य आत्म समर्पण प्रेमपरा अब इनकी दशा कहते हैं श्रवण भक्ति जैसे मृगाराग सुनत संते अपनो दशा भूलि जातहै तैसे श्रीराम यश सुनै अरु जो बक्ता कहै सो सब धारणा करि लेइ पश्चात् मनन करै सो श्रवण भक्ति कही पुनि कीर्त्तन श्री भगवद्यश गावते हैं नाचते हैं मग्न होतेहै जैसे मयूरगति सो कीर्त्तन भक्ति कही पुनि स्मरण श्रीराम स्वरूप गुण लीला नाम स्मरण करते हैं जैसे बिरहिनी अपने पतिको सुमिरतिहैं जैसेकमठ अंडको सुमिरतहै इहां दृष्टांतको एक देशलिया सो स्मरण भक्तिकही पुनि पादसेवन श्रीरामपाद सेवन अर्च्चाविग्रह में करै किंतु मानसीमें करै पर निष्काम प्रीति समेत करै जैसे पतिब्रता अपने पतिके पद सेवन करति है पर अपर धर्म कर्म जानति नहीं सो पादसेवन भक्ति अर्च्चन बाह्यांतर प्रथम अपनो स्वरूप शौच स्नान भूत शुद्धि इत्यादिक करिकै शुद्ध करै तदुपरांत परमेश्वर की मन्दिर लेपन पार्षद स्नान शृङ्गार फल तुलसी धूप दीप नैवेद्य आचमन तांबूल आरती दण्डवत् राग भोग इत्यादिक भाव प्रीति सों अर्पण करना जैसे स्नेहवती माताके एकही पुत्रहै वह उसका लाड़न पोषण करती है सो अर्च्चन भक्ति बंदना साष्टांग द्वौजानु कटि बक्षस्थलद्वौ पाणि नासिका ललाट इत्यादिक सर्वांग भूमिमें स्पर्श होइ जैसे सर्प्प भूमि में लोटत है जैसे दण्ड पृथ्वी में गिरत है पुनि द्वौ कर जोरि कै दीन ह्वैकै भगवान् के आगे बिनय करै सो बन्दना भक्ति कही दास्य श्री रामचन्द्र की इच्छानुकूल सेवा करै अरु सर्ब काल में राम रजाय पर आरूढ़ रहै अरु चारिहू पदार्थन ते निष्काम रहै सदा प्रसन्न रहै देहादि संसार ते राग को त्याग करै प्रीति एक श्री रामचन्द्रसे करै अरु श्री रामचन्द्र स्वामी हैं मैं दास हौं दासतत्व कैसे करे जैसे नयन पद कर ये तीनिहूं मुख को सेवन करते हैं नेत्र देखिकै पग चलिकै कर करिकै अनेक ब्यंजन प्रीति संयुक्त बनावते हैं मुखको भोजन करावते हैं अरु आप ब्यंजन को स्वाद लेशहू नहीं ग्रहण करते हैं तहां मुख सर्ब इन्द्रियन को पोषण करत है तैसे भगवान्

के दास अरु भगवान् हैं यह दास्य भक्ति सत्य जोई रीति से स्वामी श्री रामचन्द्र प्रसन्न होहिं सोई करे संग भोजन शयन जागब खेलब बैठब बोलब हास्य इत्यादिक निर्भर बराबरि करे पर स्वामी भाव मनकी रुचि लिहे सब करै सत्य भक्ति आत्म निवेदन अपनो मन बचन कर्म जीव श्री सीताराम को समर्पण करै अपनाउपाय शून्य अकर्ता रहै यह आत्म निवेदन भक्ति पुनि प्रेमा श्री रामचन्द्र के प्रेम में मग्न होइ जातेहैं कभी हँसि उठते हैं कभी रोय देते हैं कभी उठि दौरते हैं कभी बैठि जाते हैं दिशि बिदिशि नहीं सूझि परै प्रेम में मत्त हैं जैसे मदांध ताको प्रेम लक्षणा भक्ति कही प्रेमा परा भक्ति श्री रामचन्द्र की सेवामें है अरु प्रेम करिकै सेवा में बिपर्यय भई अपर अंग के भूषण पट अंगराग इत्यादिक अपर अंग में पहिरावते हैं औरै भोजन चाही औरै भोजन देतेहैं सो प्रेमापरा भक्ति मिलित कही जैसे शवरी बिदुर को फल पुनि पराभक्ति श्री रामचंद्र अति सुन्दर जिनको देखिकै कोटिन काम मोहित ह्वै जातेहैं जेहि स्वरूप कै छबि ब्रह्माण्ड भरेके जीवन के चित्त को आकर्षण करति है जेहि स्वरूप की माधुर्य लावण्य छटा बाह्यांतर नेत्रन ते दृश्य मानहोत सन्ते जड़ीभूत समाधिस्थ ह्वै जाते हैं मुनीश्वरजे हैं परमहंस जेहैं ते देखिये तो उत्तर कांड में जब श्री रामचंद्र के समीप सनकादिक चारिहू भाई गये हैं कैसे सनकादिक हैं सदा ब्रह्म तत्पर जिनकी ब्रह्मविषे सहजानन्द समाधि सर्बकाल में बनीहै ते महामुनि परमहंस जे सर्व कालमें तुर्यावस्था में आरूढ़ अरु जीवन्मुक्त विदेहमुक्त ऐसी नित्य दशा एक रस मूर्ति जिनकी दृष्टि सदा ब्रह्ममय जिनकी ब्रह्माकार अखंड वृत्ति जिनने ब्रह्मज्ञान करिकै प्रश्न कीन्ह तब ब्रह्मा ते प्रत्युतर नहीं आयो तब भगवानने हंसरूप ह्वैकै ब्रह्मा को पक्षकरि कै प्रत्युतर दैकै समाधान कीन्ह ऐसे अबालहीते ब्रह्मनेष्ठी ते सनकादिक श्री रामचंद्र कै छबि अतुलित बिलोकिकै श्री राम रूपमें डूबिगये कछु सुधि न रही जैसे भीति में चित्र जैसे शिला में प्रतिमा तब तिनकी बड़ाई श्री रामचंद्र आपु श्री मुख ते करते भये सोई सुतीक्ष्ण की दशा भई ताते जहां सेवककी सेवकाई अरु स्वामी की स्वामितत्व भूलि जाइ ताको पराभक्ति कही भक्ति कही भज धातु सेवा बिषे होतहै सेवा कही प्रसन्नता जाही में स्वामी प्रसन्न होइ सोई भक्ति है तहां सब भक्ति में श्री रामचंद्र प्रसन्न हैं पर प्रेमापरा में बिशेष प्रसन्न हैं सनकादिक नारद सुतीक्ष्ण शवरी में देखिलेव ताको भक्ति कही पुनि ज्ञान कहते हैं स्वस्वरूप के प्राप्ति जाते पर स्वरूप में भक्ति होइ अपनो स्वरूप अपने शरीरहीमें है कैसेहै जैसे फूलमें सुगन्ध जैसे पदार्थ में स्वाद जैसे दूधमें घृत जैसे दारु पाषाण में अग्नि जैसे तिलमें तेल जैसे मृगमें कस्तूरीहै पर बिना जाने बाहर ढूंढ़त है तैसे अपने स्वस्वरूप माया के आवरण बिक्षेप करिकै ढपि रह्यो है तहां नित्य नित्य को बिबेक करिकै आवरण विक्षेपको दूरि करिकै अपनो स्वरूप आपुही में देखै आवरण कही अपने अज्ञानते अपनो स्वरूप ढपिरह्योहै बिक्षेप कही शरीर इंद्री मन इनकी व्याधि आधिकी उपाधि करिकै स्वस्वरूप भूलि गयोहै ताको बिक्षेप कही बुद्धि के अनुभव बिचारते अपनो स्वस्वरूप शरीरते भिन्न करिकै देखै कि मेरो स्वरूप न तो चारि बर्णही है न तो चारि आश्रमहै न तो देवता है नतो दानवहै नतो मनुष्य है नतो चरहै न अचर

है यह तो सब अनित्य है अरु मेरो स्वरूप नित्यहै अखंड एक रसहै शुद्ध चैतन्य निर्मल है चौबीस तत्त्व माया केहैं अरु पचीसवां तत्त्व आत्मा है चौबीसते भिन्न है चौबीसों आत्मा करिकै सत्य है चौबीसों तत्त्व ते आत्मा को ज्ञान के यत्न ते भिन्न करिलेइ जैसे फूलते अतर चोवा फुलेल कढ़ि लेतेहैं जैसे दूध में घृत व्याप्त है यत्नते काढ़ि लेते हैं इत्यादिक अनेक दृष्टांत हैं ऐसे ही जब अपने अनुभवते अपने स्वरूपकी प्राप्ति भई तब उसको न सुख न दुःख न पाप न पुण्य न निन्दा न स्तुति तब वह आनन्दमय होत है जब स्वस्वरूप की प्राप्ति भई ताको ज्ञान कहो ज्ञान तीनि प्रकार को एक वर्णाश्रम को ज्ञान एक शास्त्र जन्य ज्ञान अरु एक बिशेष अनुभव स्वरूपाकार ज्ञान औ जाते ऐसो ज्ञान होइ सो वैराग्य कहते हैं वैराग्य में चारिभेद हेतु स्वरूप फलअवधि बिषय जोहै ताको बिषहूते अति अधिक जानै काहेते कि जो कोई बिषखातुहै तो शरीर छूटि जातु है पुनि जो कहूं कर्मानुसार शरीरको धारण कियो तहां वह बिष नहीं अमल करै अरु जो मनुष्य तन पाइकै बिषय जोहै महा बिष रूप ताही भोग में आसक्त भयो तब शरीर छूटि गयो तब बिषय विष जोहै सो चौरासी लक्ष योनिमें अमलकरतुहै जियतहै मरतहै को जानै केते युग याही हाल में बीतैंगे ताते बिषयको बिषहू तेअधिक जानै ताको हेतु वैराग्य कहो पुनि स्वरूप वैराग्य में द्वै भेद हैं एक फल को त्याग एक स्वरूपको त्याग एकै बिषय को व्यवहार करिकै कर्म करते हैं पर ताको फल भोग्य त्याग करते हैं यह कहते हैं कि वेदकी आज्ञा करते हैं फल भगवत् समर्पण करते हैं अरु एकै जब बिषय ऋद्धि सिद्धि मान बड़ाई इत्यादिक प्राप्ति भई तेहि बिषय को स्वरूपै त्याग करते हैं यह काहे तेहै कि जेहिको फलै नहीं खाना तिसका उपाय काहेको करना ताको स्वरूप बैराग्य कहो पुनि जो बिषय प्राप्ति भई अरु ताको त्यागि दियो पुनि उसमें बासना न चले दीनाधीन को त्याग करै दीन कहो जो पदार्थ में त्याग कीन है सो मेरे पास फेरिआवै तो कछुक उसमें से लैकै अपनो निर्बाह करौं यह दीन ताको बासना न उठाने पावै आधीन यह जो पदार्थ मेरे इहां आयोरहै सो मैं पुण्यकर देत्यों तो भलो होतो जाते कोई कालमें मोको फेरि प्राप्त होतो यह बासना न उठने पावै पुनि अहंपद मन वचन कर्मते न आवै कि मैं बड़ो त्यागी हौं यह बासना कबहूं न उठै ताको फल बैराग्य कहो पुनि जो बिषय जानिकै त्याग कियोहै तैसेही बिषय इहां ताईं जामें सातलोक नीचे हैं अतल बितल सुतल रसातल तलातल महातल पाताल इति ७ पुनि सात लोकऊपर हैं भूर्लोकभुवः स्वः महः जनः तपः सत्यलोक इति ७ पुनि शेषलोक ऐश्वर्य मृत्युलोक ऐश्वर्य ब्रह्म लोक ऐश्वर्य एते समस्त महा बिष रूप जानै ताको अवधि बैराग्य कहो एक बैराग्य चारि प्रकार को है व्यतिरेक एकै इन्द्रि बशीकार जितमान सारा सारको बिचार नीको प्रकारते अहर्निश करना यह संसार असार है संसार कहो अपनो देह अरु देहके स्नेही माता पिता स्त्री पुत्र भाई नात कुटुम्ब अरु देव दानव मनुष्य पशु पक्षी इत्यादिक समस्त न काहू के भये हैं न काहूके हैं न काहूके होहिंगे न कोई संग जाइगी न कोई संग आयोहै मैंतो सदा एकही आश्चर्यहै मेरा शरीर अनित्य है अरु शरीर के हेतु जिनमें स्नेह

मान्योहै सो भी अनित्य है अरु तिन दोनों में अहंमम मानि रह्योहै सर्व भूतमें मित्र अरि मानापमान इत्यादिक अनेकन विकार ग्रहण करि रह्योहै मेरे बिचार में त्रैगुण्य जनित व्यवहार जोहै सो सब अनित्य है अरु आत्मा नित्य है सोई मेरो स्वरूप है सोई सारहै नित्यानित्य दूनों कैसे मिलिरहेहैं जैसे दूध अरु जल तहां हंसवत् बुद्धि करिकै सारको ग्रहण असार को त्याग ताको जितमान बैराग्य कहो पुनि व्यतिरेक काम क्रोध लोभ मोह मद इत्यादिकन को स्वरूप शोधन करै अरु ज्ञान बैराग्य बिज्ञान शांति संतोष शील इत्यादिक इन दूनोंको स्वस्वरूप शोधै कौन परिपक्क है कौन अपक्क है जो परिपक्क होइ तामें चित्त लगावै अरु जो अपक्क होइ ताको किसी योग करिकै मिटाइ डारै अरु काल जोहै सो सर्पहै सबको डसैहै तहां अपनी बुद्धिको नेउर रूपकरै जब नेउरको सर्प काटैहै तब नेउर भी सर्प को काटि डारत है अरु नेउर जो है सो कोई बूटी सूंघिलेतु है सर्पको बिष नहीं व्यापत है वह सर्पको खगड खगड करिडारतु है तैसे गुरुमंत्र बूटीते कालको बिषय निवृत्त करै जेते बिषय भाव हैं ते ते सर्व अभाव करि देइ ताको व्यतिरेक बैराग्य कहो पुनि एकेन्द्री जो मनमें बिषय भोगकी इच्छा होइ तो बिषय कोहो अनित्य जानिकै अरु अपने धर्मको बाधक जानिकै बाह्य इंद्रिन संयुक्त मनको बिचार करिकै रोकि देइ अरु इंद्रिन संयुक्त चतुष्ट अन्तःकरण के अभिमान को त्यागकरै अरु सब इंद्रिन में ब्याप्त श्रीरामचंद्र को देखै जैसे एक घटमें अनेक छिद्रहैं ता घटके भीतर दीपक बारिदेइ दीपक सब छिद्रनको प्रकाश करतुहै तैसे श्रीरामचंद्र सबको प्रकाश कियेहैं यह अचल दृष्टि होइ ताको एकेन्द्री बैराग्य कहो पुनि बशीकार नरलोक बिषय भोग्य देवलोक बिषय भोग्य नागलोक बिषय भोग्य तीनहूं लोकन की बिषय महारोग सम अरु नाशमान जानिकै ताको स्वरूपहो त्यागकरै ताको बशीकार बैराग्य कहो पुनि बैराग्य में चारि भेदहैं मन्द तीब्र तीब्रतर तीब्रतम मृतकको देखिकै किन्तु कोई योगते बिषयनष्ट होइ गयोहै अथवा गृहकेलोगन अपनेको त्यागि दियोहै तब आपुको धिक मानिकै बैराग्य आईहै ताको मन्द बैराग्य कहो पुनि तीब्र श्रुति स्मृति पुराण इत्यादिक श्रवणकरिकै संसारको अनित्य जानिकै सुतदारा धनधाम इत्यादिक दियोहै ईश्वर के भजनकी लालसा उठीहै जोकछु प्राप्ति होइ ताहूको अभाव अरुप्राप्ति में बासना नास्ति मुमुक्षु रूपहै ताको तीब्र बैराग्य कहो तीब्र तर जाको अपनी देहते बैराग्य है शीत उष्ण दुःख सुख मानापमान इत्यादिकनकी शरीर में चेष्टा नहीं आवै अरु किसी के गुण अवगुण दृष्टिमें न आवैं अरु चौदह भुवन तीनि लोक को बिषय मनते भूलिजाइ अर्थ धर्म काम इनकी गन्धि दूरि ह्वै गई है जीवन्मुक्तहैं केवल मोक्ष दशामें आरूढ़ हैं सम बिषमते परेहैं सर्वत्र ब्रह्म दृष्टि है ताको तीब्रतर बैराग्य कहो पुनि तीब्रतम जोई तीब्रतरके लक्षण हैं सो लक्षण तो साधारणै हैं पर जिनके मोक्षहू को त्यागहै अरु जिनके नित्यानित्यको अभाव है अरु श्रीरामचंद्रके स्वरूप में बिरह प्रेमा परा भक्ति में एकरस आरूढ़ हैं जिनकी दशा अलक्षिहै ताको तीब्रतम बैराग्यकहो यह दोहा सातहूकांडके अर्थको सूचित करतु है ताते अमित अर्थहै मैंने अपनी मति अनुसार कह्यो मकर के समय ... न प्रयाग की जोहिं भरद्वाज के आश्रम में आसन

करहिं प्रातःकाल समस्त क्रिया करिकै सत्संग होइ तहां ब्रह्म निरूपण अरु संपूर्ण धर्म के बिधिकरहिं पुनि सांख्य वर्णन करहिं भगवन्तकी भक्ति अरु ज्ञान बैराग्य कहहिं येही प्रकारते मास भरि सत्संग होइ (१)॥

४४ यहिप्रकारभरिमाघनहाहीं। पुनिसबनिजनिजआश्रमजाहीं १
प्रतिसंवतअसहोइअनन्दा। मकरमज्जिगवनहिंमुनिवृन्दा २
एकबारभरिमकरनहाये *। सबमुनीशआश्रमनसिधाये * ३
याज्ञवल्क्यमुनिपरमबिवेकी। भरद्वाजराखेपदटेकी * * ४
सादरचरणसरोजपखारे *। अतिपुनीतआसनबैठारे * * ५
करिपूजामुनिसुयशबखानी। बोलेअतिपुनीतमृदुबानी * ६
नाथएकसंशयबड़मोरे * *। करतलवेदतत्त्वसबतोरे * ७
कहतसोमोहिंलागतअतिलाजा। जोनकहौंबड़होइअकाजा ८

दो० सन्तकहैं असनीति प्रभु श्रुति पुराण मुनिगाव॥
होइ न विमल विवेकउर गुरुसन किहे दुराव १

४४ येही प्रकार ते माघभरि स्नान करहिं पुनि निज निज आश्रम को जाहिं (१) ऐसेही प्रति संवत् आनन्द होइ पुनि अपने अपने आश्रम को जाहिं (२) एक बार कल्प वास करिकै सब मुनि निज निज आश्रम को गये (३) तहां याज्ञवल्क्य महा मुनीश परम बिबेकी तिनको भरद्वाज चरण गहिकै राखते भये (४) चरण धोइ कै सुन्दर आसन दियो (५) षोड़श प्रकार पूजन करिकै स्तुति कीन पुनि भरद्वाज दोउकर जोरिकै मृदुबाणी बोलत भये (६) हे नाथ संपूर्ण वेदकै तत्त्व तुम्हारे करतल है अरु मेरे एक बड़ो संशय है (७) सो कहिकै बड़ीलाज लागती है काहेते सब कोई कहैंगे कि भरद्वाज के संशय अबहीं बनो है अरु जो लोक लाज करिकै नहीं पूछौं तौ परम अकाज है (८) दोहार्थ॥ अरु संत जन श्रुति स्मृति पुराण इत्यादिक कहते हैं कि जो सद्गुरुन ते नेकहू दुराउ करै तो बिमल विवेकको नहीं प्राप्त होइ (१)॥

४५ असविचारिप्रकटौंनिजमोहू। हरहुनाथकरिजनपरछोहू १
रामनामकरअमितप्रभावा *। सन्तपुराणउपनिषदगावा २
सन्ततजपतशंभुअविनाशी। शिवभगवानज्ञानगुणराशी ३
आकरचारिजीवजगअहहीं। काशीमरतपरमपदलहहीं *४
सोपिराममहिमामुनिराया *। शिवउपदेशकरतकरिदाया ५
रामकवनप्रभुपूछौंतोहीं *। कहहुबुझायकृपानिधिमोहीं ६

एकरामअवधेशकुमारा * । तिनकरचरितविदितसंसारा ७
नारिविरहदुखलहेउअपारा । भयउरोषरणरावणमारा * ८
त्रिपुरारि ॥

हे नाथ ऐसे बिचारि कै अपनो मोह प्रकट करत हौं मेरे ऊपर छोह करि कै मोह को नाश करहु (१) हे नाथ रामनाम को प्रभाव अमित है जाके प्रभाव को सन्त जन पुराण उपनिषद् गावते हैं पर पार नहीं पावैं (२) अरु शिव जी निरन्तर जपते हैं यामें एक लवमात्र अन्तर नहीं परै जो कहौ कि शिवजी अपने जन्म मरण के छुटाइबे को जपते हैं किन्तु महत् ऐश्वर्य के हेतु जपते हैं किन्तु ज्ञान गुण के हेतु जपतेहैं सो नहींहै काहेते शिवजी सदा अबिनाशीहैं भगवान्हैं ज्ञानगुणकोराशिहैं ईश्वर हैं तिनको इष्ट रामनामही है अरु महादेव के समान तो कोई हुई नहीं है अधिक कहांते होइगो अरु तिन महादेव को इष्ट रामनाम है ताते निरन्तर जपते हैं (३) चारि खानि ते अनेक जीवते हैं काशीमें जे मरतेहैं ते परमपद को प्राप्त होतेहैं (४) सो शिवजी रामनाम उपदेश करते हैं ताते मोक्षहोतेहैं सो राम नामही की महिमा है (५) भरद्वाज पूछतेहैं हे महा मुनीश श्रीयाज्ञवल्क्यजी प्रभुकहे समर्थ हैं मैं आपु को शिष्य हूं कै पूंछत हौं मेरी अज्ञान ताको अपराध क्षमा करो हे नाथ जेहि राम नामको महेश जपते हैं सो राम को स्वरूप अखंड एक रस कौनहै तुम कृपा के निधान हौ नीकी प्रकार ते यथार्थ मोसे समुझाइ कै कहौ (६) यह सन्देहहै कि कोई मुनि श्रुति स्मृति को प्रमाण दैकै कहतेहैं कि रामचंद्र सब में रमि रह्यो है मन बचन कर्म अगोचर अरु रूप अनुभव कहो प्राप्त ज्ञान स्वरूप कैवल्य रूप निर्विकार सूक्ष्म तरहै सब में रमि रह्योहै ताको राम कहो अरु मैं श्रुति स्मृति बिचारि कै अरु जहां तहां सुनिकै एक स्वरूप श्रीरामचंद्र को जानत हौं अखंड एक रस अवधेश जो श्री दशरथ महाराज तिनके कुमार भक्तानुग्रहार्थ तिनको चरित निर्मल अमित सो ब्रह्मांड के बाह्यांतर पूर्ण विदित ह्वै रह्यो है (७) ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्री रामचंद्र जी तहां यह आश्चर्य देखिबे सुनिबे में आयो कि नारिन के बिरह करिकै आपु दुःख को प्राप्त भये हैं पुनि आश्चर्य देखै हैं कि रावण त्रैलोक्य बिजयी ताको संग्राम में रोष करिकै नाश कर दियो तहां यह संशय है कि परब्रह्म बिषे दुःख अरु क्रोध कैसे संभव है (८) दोहार्थ॥ हे प्रभु सोई राम चंद्र हैं जिनको महेश जपते हैं किन्तु अपर राम हैं तुम सत्य के धाम हौ पुनि सर्वज्ञ हौ अरु यथार्थ बक्ता आपु हौ ताते बिबेक करिकै बिचारिकै कहौ कौन राम हैं (९)॥

४६ जैसेमिटैमोहभ्रमभारी * । कहहुसोकथानाथविस्तारी * १
याज्ञवल्क्यबोलेमुसुकाई । * २
रामभक्ततुममनक्रमबानी । चतुराईतुम्हारिमैंजानी * * ३

चाहहुसुनारामगुणगूढ़ा । कीन्हेउप्रश्नमनहुंअतिमूढ़ा * ४
तातसुनहुसादरमनलाई * * । कहौं रामकैकथासुहाई * ५
महामोहमहिषेशविशाला । रामकथाकालिकाकराला ६
रामकथाशशिकिरणसमाना । संतचकोरकरहिंजेहिपाना ७
ऐसेहिसंशयकीनभवानी * * । महादेवतबकहाबखानी * ८

कहौं [illegible] हार अब उमा शम्भु सम्वाद ॥
भयउ समय जेहि हेतु अब सुनुमुनि मिटै विषाद १

४६ हेनाथ यह बड़ो सिद्धान्त विषे संशय है श्रीराम जीको कौन स्वरूपहै निर्गुण निराकार रूपहै किन्तु सगुणसाकार स्वरूप है कौन स्वरूपमें हम निश्चय करैं ताते जेहि प्रकारते मोह मिटै सो बिस्तार पूर्ब्बक कथा कहहु (१) तहां गोसाईं तुलसी दास जी कहते हैं कि भरद्वाजको प्रश्न परम बिचित्र परम ततत्व को प्रत्यक्ष करन हारो ऐसो शुभ प्रश्न सुनिकै श्रीयाज्ञबल्क्य जी अति हर्ष संयुक्त बिहँसि कै बोलते भये हे भरद्वाज तुम धन्य हौ तुम्हारी आश्चर्य बुद्धिहै तुम्हारे प्रश्नमें जो वेदमें गुह्याद् गुह्य गुह्य तम परम ततत्व है सो आपुही ते प्रत्यक्ष होइगो हे भरद्वाज मोको तौ ऐसो समुझि परतु है कि तुमको रघुपतिकी प्रभुता नीकी प्रकारते बिदित है रघुपति कहो जेते रघुबंश कुल में उ-त्पन्न भयेहैं अरु हैं अरु होहिंगे तिन सबको बिना श्रमही परम पदको अधिकार दियो है ताते श्रीरामचंद्र को रघुपति कहो पुनि रघु संज्ञा जीवकी है अरु सर्ब जीव के पति श्रीरामचंद्रहै ताते रघुपति कहो तिन रघुपतिकी महिमा हे भरद्वाज तुमको बिदित है किंतु लीला प्रकरणमें रघुबंश कुलमें श्रेष्ठ ताते रघुपति कहो (२) हे भरद्वाज तुम मन बचन कर्मसे श्रीराम भक्तहौ तुम्हारी चतुराई मैं अच्छीतरह जानीहै (३) श्री रामचंद्र के गूढ़ गुण सुना चाहतहौ अरु प्रश्न मूढ़की नाईं किहेउ है सो ऐसेही चाहिये (४) हे तात मनको सावधान करिकै सादर ते सुनहु श्रीराम ततत्व अति गूढ़है अब श्रीराम कथा शोभायमान मैं कहतहौं (५) महा मोह महिषासुर दानवको ईश है ताके नाश करिबेको रामकथा कालिका भवानी तद्वत् है (६) पुनि श्रीरामचंद्र बिमल पूर्णचंद्र हैं अरु रामकाथा अमृतमय घन किरणि है सन्तनको चित्त चकोरहै ताक पान करते है हे तात श्रुति स्मृति इत्यादिक अरु श्री मद्रामायण शत कोटि अपर है सो प्रतिपादक है अरु दशरथ नन्दन श्रीरामचंद्र प्रतिपाद्य हैं प्रतिपादक प्रतिपाद्य ताको अर्थ समस्त ग्रंथ श्रुतिस्मृति पुराण श्रीमद्रामायण इत्यादिक श्रीरामहीको गावतेहैं हे भरद्वाज अब चारि अनुबन्ध कहते हैं सो सुनो जब चारि अनुबन्ध सतगुरुनते प्राप्तहोइँ तब श्रीराम चरित श्रीराम ततत्व प्राप्त होतहै सो कहते हैं प्रथम अधिकारी पुनि बिषय पुनि स-म्बन्ध पुनि प्रयोजन अब इनके स्वरूप कहतेहैं जब वैराग्य बिवेक अरु षड़संपत्ति संयुक्त होइ ताको बिशेष अधिकारी कहो वैराग्य सो तो पाछेके दोहा में कहिआये हैं पुनि

बिवेक कहते हैं समुझिकै स्वधर्म को ग्रहण पर धर्म को त्याग पुनि आत्मा अनात्मा दोऊ मिलि रहेहैं जैसे जल अरु दूध जैसे हंस दूधको ग्रहण करतहै जलको त्याग करत है तैसेही राम सम्बन्ध पदार्थ ताको ग्रहण संसार सम्बन्ध को त्याग जामें अचल दृढ़ बुद्धि रहै ताको विवेक कही पुनि षट् सम्पत्ति कहते हैं शमदम उपरति तितीक्षा श्रद्धा समाधान शम कही अंतष्करण चित्त बुद्धि मन अहंकार इनकी वृत्तिको वेग एकरस थिर ह्वै जाइ सो शमकही पुनि पांच ज्ञान इन्द्री पांच कर्म इन्द्री इनके विषयको दमन करै जीति लेइ सो दम पुनि अंतर्बाह्य इन्द्रिनको वेग एकरस थिर ह्वै जाइ सो उपरति पुनि दुःख सुख निन्दा स्तुति मानापमान हर्ष शोक इत्यादिक अनेक द्वंद्वधर्म को प्राप्ति होत संते हँसिकै एकरस रहै सो तितीक्षा पुनि अपने इष्ट अनुकूल वेद वाक्य गुरु वाक्य में प्रतीति सो श्रद्धा पुनि अपने स्वरूप ते श्रीराम स्वरूपमें चिन्तवन चित्तकै वृत्ति डिगै नहीं सो समाधान एती षट् सम्पत्ति पुनि षट् सम्पत्ति षट् शरणागतको कहते हैं श्रीरामचंद्र के अनुकूल जो साधन होइ तामें संकल्प करै कि मैं यहै करोंगो पुनि राम प्रतिकूल जो कर्म धर्म होइ ताको विशेषत्यागकरैपुनि मन बचन कर्म आत्म सम्पर्णकरै पुनि कार्पण्य हेश्रीरामचंद्र मोसे कछु नहीं बनै मैं बड़ो नीच हौं पुनि गोप्तृत्व वर्णन देखिये तौ जो वेदने गुप्त राखेउ है नहीं कह्यो सो श्रीरामचंद्र कीन्ह्योहै संसारते उबारि लीन्हे ह्व शबरीके फल जूठे खाये माताकी समान मान्यो निषाद और बानर भालुनको परम सखा कीन मंत्री कीन निज स्वरूप मुक्ति दीन पाषाणकी नावकीन श्रीरामचंद्रकै कृपा करुणा दया समुझै पुनि रक्षामें बिश्वास जिन श्रीरामचंद्र लोक परलोकहूमें रक्षा कीनहै बिभीषण सुग्रीव गज द्रौपदी इत्यादिक अनेकनकै रक्षा कीनहै सो मेरी रक्षा करहिंगे यह अचल बिश्वास करना इति षट् शरणागत हैं इन सबन करिकै युक्तहोइ सो अधिकारी कही जब ऐसो अधिकारी होइ तब बिषयकी प्राप्त होइ बिषय कही श्रुतिस्मृति शास्त्र पुराण श्रीमद्रामायण समस्त ग्रंथन की बिषय श्री रामचंद्र हैं जब विषयको अच्छी तरह जानै तब संबन्धको प्राप्तहोइ संबन्ध कही जीवते अरु परमेश्वरते सजातीय संबन्धहै अंश अंशी संबन्धहै धर्म धर्मी संबन्धहै प्रकाश प्रकाशी संबन्ध है भोक्ता साक्षी संबन्ध है दीन दयाल संबन्ध है पुत्र पिता संबन्ध है सेवक स्वामी संबन्ध है राजा प्रजा संबन्ध है रूप रूपी संबन्धहै सख्य सखा संबन्धहै पत्नी पति संबन्धहै इत्यादिक संबन्ध हैं सब अनादि हैं ताको जानै गुरुकी बाक्यते पुनि प्रयोजन कही जीव को प्रयोजन सांचो श्री रामचंद्र कै भक्ति करै चारिहु फलते निष्काम ह्वैकै से भक्ति पीछेके दोहामें कहेहैं जो चारिउ अनुबन्ध जानै सो रामभक्ति पहिचानै अधिकारी बिषय संबन्ध प्रयोजन लबबुद्धि निष्काम मुमुक्षु भक्तहोइ याज्ञवल्क्य कहतेहैं हे भरद्वाज चारिहु अनुबन्ध तुम्हारे करतल हैं तुम जीवन्मुक्त भक्तहौ श्रीरामचंद्रके भक्तहौ यह चारिहुअनुबन्ध भरद्वाजजी से याज्ञवल्क्यजीने यहि चौपाईमें आशय जनायेहैं (चौपाई) राम भक्त तुम मन क्रम बानी॥ चतुराई तुम्हारि मैं जानी॥ (७) याज्ञवल्क्य कहतेहैं हेभरद्वाज अब जो प्रश्नतुम कीन है तैसेही संशय पार्वती कीनरहै तब महादेव बिस्तार कथा कहिकै संदेह खण्डनकरिदीनहै (८) दोहार्थ॥ सो अपनी मति अनुसार शिव पार्वतीको संबाद जौने समय

जेहिहेतु भयोहै सो कहतहैं जो सुनिकै सम्पूर्ण बिषाद मिटिजाइ पर कछुक सूचनि-कामें प्रथम कहिकै तब संबाद कहौंगो हेतात श्रीरामचन्द्र के द्वै स्वरूपहैं एक अबिग्रह मानहै अरु एक बिग्रहमान है दृष्टांत जैसे सूर्य्य अरु सूर्य्यके सघनप्रकाश पुनि मणि मणि को प्रकाशसूर्य्य मणिस्थान साकार स्वरूप रामप्रकाश स्थान निराकाररूप राम दोउस्वरूप एकहीहैं अखण्डहैं यह श्रुतिस्मृति उपनिषद् पुराण समस्त मुनिनका परमसिद्धांत है अरु कोई कहतेहैं कि साकार स्वरूप परमेश्वर मायिक बिग्रहहैं तहां बेदकै तत्त्व सत्संगकै तत्त्व महामुनीश्वनको मत उनको नहीं प्राप्त भयो अरु महादेव रामनामही जपतेहैं सो साकार स्वरूप रामजिनके रूपकी छटाते कोटिनसूर्य्य कोटिन शशि कोटिन काम लज्जित होतेहैं जिनको दशरथनन्दन कही अरु जिनके अंशते ब्रह्मा विष्णुमहेश बिराट्हैं हे भरद्वाज अब उमामहेशको संवाद सुनो (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकल कालकलष। बालकाण्डे श्रीयाज्ञवल्क्यभरद्वाजसंवादेत्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

दो० रामचरण दश चारिमें शिव अगस्त्य मिलि प्रेम ॥
सती मोह माया लह्यो लषण राम सियक्षेम १४

४७ एकबारत्रेतायुगमाहीं * । शम्भुगये कुम्भजऋषिपाहीं १
संगसतीजगजननिभवानी । पूजेऋषिअखिलेश्वरजानी * २
रामकथामुनिवर्य्यबखानी । सुनीमहेशपरमसुखमानी * ३
ऋषिपूंछीहरिभक्तिसोहाई । कहीशम्भुअधिकारीपाई * ४
कहतसुनतरघुपतिगुणगाथा । कछुदिनतहांरहेगिरिनाथा ५
मुनिसनबिदामांगित्रिपुरारी । चलेभवनसँगदक्षकुमारी * ६
तेहिअवसरभंजनमहिभारा । हरिरघुबंशलीनअवतारा * ७
पिताबचनतजिराज्यउदासी । दण्डकबनबिचरतअबिनाशी ८

दो० हृदयबिचारत जातहर केहिबिधि दर्शन होइ ॥
गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु गये जान सब कोइ १

सो० शंकरउर अति छोभ सती नजानै मर्म्म सो ॥
तुलसी दर्शन लोभ मनडर लोचन लालची १

४७ हे भरद्वाजजी एकसमय त्रेतायुगके चौथेचरणमें महादेवजी महामुनि जो अगस्त्य हैं तिनके आश्रमको जातभये (१) संगमें जगत्की माता सतीजीहैं महादेवको सबके ईश्वरजानिकै अगस्त्यजीने पूजनकियो (२) शिवजीकी आज्ञाते अगस्त्यजी श्रीमद्रामचरित नीकीप्रकार कहतभये परम सुखमानि कै महादेव सुनतभये (३) पुनि ऋषि रामभक्ति पूछतभये तहां यद्यपि अनुबंध जिनके हस्तामलक हैं पुनि रामतत्त्व

राम उपासना ताके परम अधिकारी जानिकै महादेव श्रीरामभक्ति नीकीप्रकार कहते भये ताते बिना अधिकारी श्रीरामतत्व नहीं कबहूंकहो (४) श्रीरघुपति गुणगाथपरस्पर कहते सुनते बहुकाल रहतेभये (५) पुनि मुनिसन बिदामांगिकरि दक्षकुमारि संग कैलासको चलते भये (६) तेहिकालमें श्री रघुवंशमणि अव तीर्णभये हरि क्यों कहे महिको भार हर हिंगे ताते हरि कह्यो (७) श्रीदशरथ महाराज के वचनके मिसु करिकै दण्डकारण्यमें अपनी लीला अविनाशी करतेहैं (८) दोहार्थ ॥ महादेव अपने हृदयमें बिचारकरते चलेजाते हैं कि श्री रामचन्द्र गुप्तरूप श्री अयोध्यामें अवतीर्णह्वैकै अरु गुप्त लीला आरण्यमें करतेहैं याते हमारो प्रभाव कोई न जानै अरु मेरे दर्शनकी बड़ी लालसाहै जो यहिकालमें जाइकै प्रत्यक्ष दर्शनकरौं तो देवता मुनि इत्यादिक सब जानि जाहिंगे अरु श्री रामचन्द्रको संकोच होइगो किंतु यह बिचारिकै श्री अयोध्यामें दर्शनकी इच्छा करतेहैं यह सामान्य अर्थहै (१) सोरठार्थ ॥ हे भरद्वाज न तौ महादेवसे जातबनै न विनादर्शन संतोषहोइ यह द्वन्द्वबिचार ताहीको क्षोभकही तहां शंकरके मनमें क्षोभभयो सो मर्म्मसती नहीं जानैं अरु शिवको मन जातसंते डरतहै अरु दर्शनहेतु लोचनललचाइरहेहैं (१) ॥

४८ रावणमरणमनुजकरयांचा। प्रभुबिधिबचनकीनचहसांचा १
जोनहिंजाउँरहैपछितावा। करत्तविचारनबनतबनावा * २
यहिबिधिभयेशोचवशईशा। तेहीसमयजाइदशशीशा ३
लीन्हनीचमारीचहिसंगा। भयउतुरतसोकपटकुरंगा * ४
करिछलमूढहरीवैदेही। प्रभुप्रभावतसबिदितनतेही * ५
मृगबधिबन्धुसहितप्रभुआये। आश्रमदेखिनयनजलछाये ६
बिरहबिकलनरइवरघुराई। खोजतबिपिनफिरतदोभाई ७
कबहुंकयोगबियोगनजाके। देखाप्रकटदुसहदुखताके ८
दो० अति बिचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान ॥
ते मतिमन्द विमोह बश हृदय धरहिं कछु आन १

४८ हे भरद्वाज कोई कालमें रावण बड़ोतपकीन तब ब्रह्मा बोलतभये कि बरमांगु तब रावणकहा कि बानरनर छोड़िकै अपर किसूकेमारे हम नहीं मरैं ताते परमात्मा परब्रह्म श्री रामचन्द्रजी ब्रह्माका बचन सत्य करिबेको अरु रावणके वधहेतु नरलीला करतेहैं (१) तहांयहै समुझिकै महादेव अपने मनमें कहते हैं कि जो न दर्शनको जाउँतो पश्चात्ताप बनारहैगो काहेते कि श्री रामचन्द्रजी बनमें भले एकांतहैं अरु बहुत दूरिनहींहैं ऐसेहो मनमें संकल्प बिकल्प होतहै कछुबिचार में नहीं आवै (२) ऐसेही ईशजो महादेव सो शोचसंयुक्त चलेजाते हैं अरु तेही समयमें श्रीराम द्व दशशीश जो रावणहै सो मारीचको संगलैकै पंचबटीको जातभयो (३) तहां मारीच

कञ्चनमृग भयो तेहिके बधबेको श्री रामचन्द्र जातेभये पुनि पीछे श्रीलक्ष्मणजी जातेभये (४) तहां रावण प्रभुकी लीलाको प्रभाव नहीं जान्योहै रावण जो मूढ़है सो छल करिकै छलकृत रूप जो है बैदेही तिनको हरतभयो कैसे जानिये छलीको छलै रूप जानकीजी प्राप्तह्वैकै कृतार्थ्य करतीहैं अरु सांचेको सांचही रीतिसों प्राप्त होतीहैं जो कोईकहै कि साचात् सीतालंकाको गईहैं मायाकी सीतानहीं गई काहेते जो माया की सीतालंकाको गईहैं तौ मायाके रामचंद्रहू लंकाको गयेहैं तौ समस्तलीला मायिक भई असत्यभई तहां उसको प्रत्युत्तर देतेहैं देखिये तो रावण इतनो अधिकारी नहीं है जहां साचात् सीताजीजाहिं किंतु साचात् सीताको रावण लैजाइ सो ऐसो होतही नहीं काहेते कि जो जैसो अधिकारी होतहै ताको तैसोही भगवत् कृपा होतीहै तहां रावण जोहै सो केवल अपनी मुक्तिहेतु बिरोधाभाव करिकै सीताजी को लैगयोहै ताते श्रीरामचन्द्र जीकी आज्ञाते श्री सीताजी अपनी एक शक्ति मायारूपी ताको अपनीसदृश स्वरूप करिकै ताहीते लक्ष्मणजी को छलबचन करिकै पुनि लंकाको कृपाकरिकै रावणकी मुक्ति हेतुजात भई काहेते जे जीवकैसहू परमेश्वर को जानैहैं राधेवाबिरोधे तिनको परमेश्वर थोरहीमें कृपाकरिकै कृतार्थ्य करिदेतेहैं ताते रावणके अधिकारयोग्य श्रीबिदेहीको एक अंशभूत लंकाको प्राप्त भईहै पुनि अपने मनमें बिचारतौकरो जोसीता जी साचात् लंकाको जातीं तो सीतासंयुक्त सतीको दर्शन कैसेहोतो ताते सीतारामकबहू पलमात्र अभिन्ननहीं होतेहैं अरु साचात् सीताजीको स्वरूप ताके अधिकारी श्रीजनकऐसेहैं अरु श्रीरामचन्द्र अपने अंगमें सीताजीको अग्निके मिसुकरिकै अगोचरकिहेहैं तब लंकाको गयेहैं कैसे जानिये साचात् स्वरूपको दर्शनपाके अधिकारी बिभीषणहैं कब जानिये जब लंका जीतिभये तब श्रीसीताजी अग्नि प्रवेशकीन तब अग्निमूर्त्तिमान् प्रत्यच्च ह्वैकै श्रीसीताजी को गोदमें लिहे बोलते भये हे श्रीरामचंद्रजी हम आपुके आज्ञानुकूलसदा निकटही रहतेहैं आपु दण्डकारण्यमें सीता जीकी सेवकाई अपने लीलाहेतु मो को सौंपेही सो लीलाआप करतभये अब श्रीजानकी जीकेचरणके पीछेमैं आपुकेसमीप ठाढ़ोहौं जैसो आज्ञाहोइ सोकरों तब श्री रामचन्द्र बिहँसे अति प्रसन्नभये तब श्री रामचंद्रके बामांगमें श्री जानकीजीको स्थापिकै युगलस्वरूप हृदयमें धरिकै पावक अन्तर्द्धान भयो तब बिभीषण इत्यादिकको साचात् सीताजीको दर्शनभयोहै बाल्मीकीय में लंकाकाण्डमें अग्निप्रवेश प्रसंगमें भूषण तिलकमें यह प्रसिद्धहै देखिलेव अरु नाटक में अध्यात्म तुलसीकृतमें प्रसिद्धकहेहैं (५) हे भरद्वाज जब रावण नमस्कार करिकै श्रीजानकी जीको लैगयो तब श्री रामचंद्र मारीच मृगरूप ताको बधिकै लक्ष्मण सहित आश्रमको आवतभये तहां श्री जानकीजीको नहीं देख्यो (६) तब श्रीरामचंद्र अपने कौतुकते श्रीजानकी जीके बिरह करिकै प्राकृत इवलीला करनेलगे नेत्रनमें जल भरिकै संपूर्ण जीवनसे पूछतेहैं हे तरुलतहु तुम श्री जानकीजी को देख्योहै शीघ्रकहो हे मृग मृगिहु तुम श्री जानकीजी को देख्योहै शीघ्र बोलो हे बिहंग बिहंगनिहुं तुम श्रीजानकीजीको देख्योहै हे दीर्घलघुपर्वतहु तुम श्री जनकनन्दनीजीको देख्योहै हे पृथ्वीतुम श्री जनकनन्दनी जीको शीघ्रबताइदेहु हे नदनदिहु तुम श्री मैथिलीजीको देख्योहै हे

तलाव तलाइहुतुम श्री वैदेहीजीको देख्योहै हे सम्पूर्ण बनस्पतिहु तुम श्री जनकला-ड़िलीजीको देख्योहै हे बनके देवदेविहु तुम श्री भूमिजाजीको देख्योहै हेदशहु दिशा के देवतहु सहित शकुन तुम प्राण प्रियाको देख्योहै हे भरद्वाज ऐसेही श्रीरामचंद्रजी जानकी जीके बिरहमें मग्न हैंतेहैं पुनि बूझते चले जाहैं हैं मर्यादाको आवांतर किहे बिरह करतेहैं (७) देखियेतौ जिन श्री रामचंद्रके नतौयोग न बियोग सर्वकाल एकरस सच्चिदानन्द घनमूर्तिते श्री रामचंद्र प्रत्यक्षदुःख करतेहैं तिनके चरितको जानैहै केवल भक्तानुग्रहार्थ तहां रघुनाथजी बिरह करतेहैं लक्ष्मणजी नहीं बोलतेहैं (८) दोहार्थ॥ हे भरद्वाज श्री रघुपतिके चरित अति बिचित्रहैं कोई नहीं जानि सकै जे परमसुजान संत श्री रामचन्द्रके कृपापात्रहैं दैवीबुद्धिहैं ते जानतेहैं श्री रामचरित चित्र बिचित्रतामें आनन्द पावतेहैं यह समुझिकै कि श्रीरामचंद्र यह दिखावतेहैं कि जैसे मैं श्रीजानकी जीके मिलबेको बिकलहौं तैसे मेरे भक्त मेरे मिलबेको बिकलहोहिं यहशिक्षा करतेहैं अरु जिन जीवनके आसुरी बुद्धिहै ते यह समुझतेहैं कि रामचन्द्र परमात्मा परब्रह्मजो होते तौ जानकी जीकोक्यों ढूंढ़ते फिरतेहैं (९)॥

४९ शम्भुसमयतेहिरामहिंदेखा । उपजाहियअतिहर्षविशेषा १
भरिलोचनछबिसिन्धुनिहारी । कुसमयजानिनकीन्हचिन्हारी २
जयसच्चिदानन्दजगपावन । असकहिचल्योमनोजनशावन ३
चलेजातशिवसतीसमेता । पुनिपुनिपुलकितकृपानिकेता ४
सतीसुदशाशम्भुकेदेखी * । उरउपजासंदेहविशेषी * ५
शंकरजगतबंद्यजगदीशा * । सुरनरमुनिसबनावहिंशीशा ६
तेनृपसुतहिकीन्हपरणामा * । कहिसच्चिदानन्दपरधामा ७
भयेमगनछबितासुबिलोकी * । अजहुं प्रीतिउररहतनरोकी ८

दो० ब्रह्मजोव्यापक बिरज अज निर्गुण अकल अभेद ॥
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानहिं वेद १

४९ हे भरद्वाज जेहि समयमें श्री रामचंद्र लीला करतेहैं तेही समय में शिव जी सती संयुक्त चले जातेरहे तहां श्री रामचंद्रको देखते भये अति हर्षको प्राप्त भयेहैं (१) श्रीराम छबि समुद्र लोचन भरि निहारिकै महादेव छकिरहे हैं कुसमय जानिकै पहिचान नहीं कियोहै (२) जय सच्चिदानन्द जग पावन जिन श्री रामचंद्रकी लीला संपूर्ण जगत्को पवित्र करती यह कहिकै नमस्कार करि मनोजन शावन चले मनोज नशावन क्यों कहे शिवजी सदा काम जीतेहैं अथवा आगे कामको नाश करहिंगे (३) सती समेत शिवचले जातसंते पुनः पुनः पुलकित गद्गद प्रेम भरे कृपा निकेत शिवजी को इहां क्यों कहा श्री राम स्वरूप द्विभुज परात्पर सच्चिदानन्द विग्रह जो अगस्त्यजी के इहां सत्संग भयोहै सो परम तत्व सतीजी को अच्छी प्रकार नहीं प्राप्त भयो अब

यह प्रसंग के द्वार ह्वैकै महा देवकी कृपाते श्री रामस्व रूप सती को प्राप्त होइगो कछु सती तनमें लक्षित होइ गो पुनि संपूर्ण दुसरे तन में प्राप्त होइ गो ताते कृपा निकेत कहा अथवा कृपा निकेत श्री रामचंद्र तिनको देखिकै अंग अंग पुलकके संयुक्त चले ज तेहैं (४) शिवजी प्रेमते भरे चले जातेहैं डग मगात पग मगमें परते हैं कभी रस्ता छूटि जाती है कभी राह लेते हैं अश्रुपात होते हैं रोमांच खड़े हैं ऐसी दशा महादेव की सतीजी देखती भई तब सतीके मनमें बिशेष सन्देह होत भयो (५) अपने मनमें यह बिचार करतीहैं कि शंकर को संपूर्ण जगत् बन्दना करत है काहेते जगत् के ईश हैं सुर नर मुनि सब शंकर को शीश नावते हैं (६) ते शंकर राजा दशरथ के पुत्र तिनको प्रणाम करत भये पर सच्चिदानन्द परधाम कहिकै धाम कहे स्वरूप पर यही स्वरूप जो बन में फिरते हैं ताही मूर्त्ति को सच्चिदानन्द परम स्वरूप कह्यो यह बड़ो आश्चर्य है (७) अरु तिनकी छबि देखिकै मग्नह्वै गयेहैं अरु अद्यापि तिनमें परम प्रीति रोंकी नहीं रहै है (८) दोहार्थ ॥ यह कैसो बिचार करिये जो कहिये कि सच्चिदानन्द तौ ब्रह्म को कहो सो ब्रह्म कैसा है सर्वत्र व्याप्त है सर्वते भिन्न है बिरजहै रज कहे माया ते भिन्न है अरु अजन्मा है अरु निर्गुण है अरु अकल है कला रहित है अभेदहै अद्वैतहै अरूपहै एक रसहै सर्व मय है सर्वते भिन्नहै ऐसो जो ब्रह्म है सो नरदेह काहे को धारै गो वामें कछु कारण कार्य नहीं है जाको वेदहू नहीं जानै है सो ब्रह्म ये राज पुत्र नहीं हैं यह सतीजी निश्चय कियो है (९) ॥

५० विष्णुजोसुरहितनरतनुधारी । सोउसर्व्वज्ञयथात्रिपुरारी १
खोजहिंसोकिअज्ञइवनारी । ज्ञानधामश्रीपतिअसुरारी २
शम्भुगिरापुनिमृषानहोई * । शिवसर्व्वज्ञजानसबकोई ३
असंसंशयमनभयउअपारा * । होइनहृदयप्रबोधप्रचारा ४
यद्यपिप्रकटनकह्योभवानी । हरअंतरयामीसबजानी * ५
सुनहुसतीतवनारिसुभाऊ * । संशयअसनधरियउरकाऊ ६
जासुकथाकुम्भजऋषिगाई । भक्तिजासुमैंमुनिहिसुनाई ७
सोइममइष्टदेवरघुबीरा * । सेवहिंजाहिसदामुनिधीरा ८

छं० मुनि धीर योगी सिद्ध सन्तत बिमल मन जेहि ध्यावहीं ॥
कहि नेति निगम पुराण आगम जासु कीरति गावहीं १
सो इराम व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी ॥
अवतरेउ अपने भक्त हित निज तंत्र नित रघुकुल मनी २

सो० लागन उर उपदेश यदपि कहेउ शिव बारबहु ॥
बोले बिहँसि महेश हरि माया बल जानि जिय १

५० पुनि सती जी बिचार करती हैं कि विष्णु सगुण रूप ईश्वर हैं तिनको भी सच्चिदानन्द कहो सो बिष्णु देवतन के हेतु नरतन धरते हैं पर विष्णु तौ सर्वज्ञ हैं जैसे महादेव सर्वज्ञ हैं (१) बिष्णु तौ ज्ञान के धाम हैं श्री पति हैं असुरारि हैं ते बिष्णु अज्ञानकी नाईं कैसे अपनी प्रियाको ढूंढ़ैंगे यह तौ नहीं संभव है ताते ये जो राजपुत्र हैं सो नतौ ये निर्गुण निराकार ब्रह्म हैं अरु नतौ ये सगुण ईश्वर हैं जिनको बिष्णु कही अरु बिराट कही सो नहीं हैं यह सतीजी निश्चय करती भईं (२) पुनि बिचार करती हैं कि ये जो राज पुत्र हैं तिनको महादेव ने सच्चिदानन्द परधाम कहि कै नमस्कार कियो है धामकही स्वरूप बिग्रह ये जो हैं राज तनय ते सच्चिदानन्द मूर्ति सो सर्वोपरि यह कहिकै प्रणाम करिकै तिनकी छबि देखिकै परमानन्द में मग्न हैं यह बड़ो आश्चर्य है अरु महादेवका वचन बृथा नहीं है काहेते कि महादेव ईश्वरहैं सर्वज्ञ हैं त्रिकालज्ञ हैं यह सबै जानते हैं (३) हे भरद्वाज सतीके हृदय में यह सन्देह भरि रह्यो है कि ये जो दशरथ कुमार हैं न तौ निर्गुण हैं न सगुण ईश्वर हैं अरु महादेव का बचन बृथानहीं है यह मन में त्रिधा संशय अपार भयो हृदय में प्रबोध को प्रचार नहीं होतहै (४) यद्यपि सती प्रकट नहीं कियोहै तदपि अन्तर्यामी श्रीमहादेव सब जानि लियोहै (५) तब महादेवजी बोले हे सतीजी तुम स्त्री सुभाव से यह संशय करती हौ ऐसी संशय कबहूं मनहुं में न ल्याइये (६) काहेते जिनकी कथा अगस्त्यजीने महेश से कह्योहै पुनि जिनकी भक्ति मैं अगस्त्यजी से कह्योहै (७) सोई मेरे इष्टहैं जिनको रघुबीर कही दशरथ कुमार कही सतीजी येजो दशरथ कुमार हैं तिनको इहै स्वरूप ताहीको ब्रह्मा नारद सनकादिक शुक शेषअगस्त्य जनक वशिष्ठ बामदेव याज्ञवल्क्य व्यास बाल्मीकि इत्यादिक बड़े बड़े धीर मुनीश्वर जे हैं जिनने अच्छीप्रकार वेदकै तत्वजानी है ते समस्त इनहीं रामचन्द्र को ध्यावते हैं जिनको हमने नमस्कार कियोहै (८) छन्दार्थ ॥ मुनि धीर योगीश सिद्ध इत्यादिक अपने मनको निर्मल करिकै ध्यावते हैं अरु निगमागम पुराण इत्यादिक जेहिकीकीर्त्ति नेति नेति करिकै गावते हैं (९) सो यही रामचंद्र हैं धनुर्धर सबके परेहैं ईश्वर हैं सबते भिन्न हैं अरु वेई श्रीरामचंद्र सच्चिदानन्द घन तेज भूत निर्मल एकरस ते सर्वत्र व्याप्त हैं आकाश पवन पांचहूतत्व तीनिहूं गुण में जैसे कोई सुगन्ध है तामें आह्लाद व्याप्तहै जैसे रसमें स्वादव्याप्तहै जैसे आकाश में शब्द व्याप्तहै जैसे सूर्य्य की किरणि में जल व्याप्तहै जो कोई कहै कि सूर्यकी किरण में जल बृथाहै तहांबिचार करिकै कहो देखौ तो सूर्य्य अपनी किरणि करिकै जल बृष्टि करतेहैं सूर्य्यकै किरण सूक्ष्म है तामें जल सूक्ष्मतरहै जो सूक्ष्म जल न हो तौ तौ सूर्य्यकी किरणते जलकी बृष्टि न होती ताते सूर्य्यकी किरणिमें सूक्ष्म जल सर्वकाल में है तैसे जीवके आवान्तर ब्रह्म व्याप्त है इत्यादि सूक्ष्मके दृष्टांत सूक्ष्मकी व्यापकता कहेहैं अरु जीवकी व्यापकता करिकै सर्व देहधारी जेतेहैं ते सब दुःख सुखके भोक्ता ह्वै रहे हैं अनित्यकी दृष्टान्त नित्यमें देतेहैं तहां दृष्टान्त को तात्पर्य देकै पदार्थ की लखि करावते हैं जिज्ञासूके बोधहेतु शिवजी कहते हैं हे सतीजी तुम श्रीरामचंद्रकी ऐसे जानहु जैसे सूर्य्य अरु सूर्य्य को एक धर्म

तेजहै अरु एक प्रकाश है तहां तेजमें प्रकाश मिलोहै एकही ह्वै रह्यो है अरु घन तेज जोहै ताही तेजके सूत्रते प्रकाशहू तेजमान है परसामान्य तेज प्रकाश में है अरु सब भुवनको प्रकाश किहेहै तहां सूर्य्य तेज प्रकाश मेंमूर्तिमान् है तहां सूर्य्य अपने सघन तेज प्रकाश के आवरणते नहीं देखि परते हैं यहदृष्टान्त है अब दृष्टान्त कहते हैं श्री रामचंद्र मूर्त्तिमान् अखंड एकरस सूर्य्य स्थाने जानियेतहां नतौ उदय है नतौ अस्त है नतौ प्रातःकाल है नतौ संध्याकाल है नतौ मध्याह्नकाल है श्रीरामचंद्र सच्चिदानन्द परब्रह्म बिग्रह हैं एकरस तेज प्रकाशमय हैं अरु जिनको सहज घन तेज प्रकाशमय सो चैतन्य रूपहै ताही तेजके आवरणते श्री रामचंद्रनहीं देखि परते हैं अरु तेही तेज को वेद ब्रह्म कहते हैं मन बचन इंद्री अगोचर है काहेते मन बाणी इंद्री जोउहां लगिकीन तब लय ह्वै जातीहै पुनि कोकहै अरुसघन जोतेज प्रकाश मयहै सो अपने प्रकाशते अनेक ब्रह्मांडको प्रकाश कियेहै ऐसे श्रीरामचंद्र अनेक ब्रह्मांड में ब्याप्तहैं अरु सबके परेहैं सो येई रामचंद्र हैं जिनको हमने नमस्कार कियोहै सोई राम अनेक ब्रह्मांड के पतिहैं सो तैंजानु हे सती अपने भक्तन के हेतु रघुबंश कुलमें अवतीर्ण भये काहेते भक्त वत्सल हैं तहां राजा दशरथ पूर्वजन्म में अखंड भक्ति कियो तिनके हेतु साक्षात् अवतीर्ण भये जैसे कोई ऊंचे महलते नीचे अजिर में उतरि आवते हैं तैसे श्रीराम निज तंत्र कही स्वतंत्र हैं किंतु निज तंत्र कही भक्तिहेतु लीला करिबे की इच्छाहै सोलीला नित्यहै सो तुम हेसतीजी जानहु (२)सोरठार्थ ॥ हेभरद्वाज महादेव जी अनेक प्रकारते उपदेश कियो पर सतीजीके हृदय में उपदेश नहीं लग्यो तब महादेव हरिकी माया अति बलिष्ठ जानिकै बिहँसिकै बोलत भये(१)॥

५१ **जोतुम्हरेमनअतिसन्देहू * । तौकिनजायपरीक्षा लेहू * १**
तबलगिबैठरहोंबटछाहीं । जबलगितुमऐहहुमोहिंपाहीं २
जैसेजायमोहभ्रमभारी * । करेहुसोयतनबिबेकबिचारी ३
चलीसतीशिवआयसुपाई । करैंबिचारकरौंकाभाई * ४
इहांशम्भुअसमनअनुमाना । दक्षसुताकर नहिं कल्याना ५
मोरेहुकहेनसंशयजाहीं * । बिधिबिपरीतभलाईनाहीं ६
होइहिसोइजोरामरचिराखा । कोकरितर्कबढ़ावैशाखा ७
असकहिजपनलगेहरिनामा । गईसतीजहंप्रभुसुखधामा ८
दो० पुनि पुनि हृदय बिचारकरि धरि सीताकर रूप ॥
आगे होइ चलि पन्थ ते जेहि आवत नर भूप १

५१ हे सतीजी जो तुम्हारे मनमें अति संदेह भयोहै तौ तुम कछु परीक्षा जाइ (१) तब लगि मैं यहि बटकी छाया तर बैठोहौं जबलगि तुम लौटि आव (२) पर हे सती जेहि यत्नते यह महामोह मिटै सोई बिवेक बिचारि कै करेउ अपर

अधिक न करेउ (३) शिवकी आज्ञा पाइकै सतीजी परीक्षा लेवेको चलती भईं बिचार करतीहैं कि मैं केहि प्रकारते परीक्षा लेउँ तब यह मनमें आयो कि सीताजीको स्वरूप करों (४) अरु इहां महादेवजी यहबिचार कीन्ह कि दक्षसुताको कल्याण नहींहै (५) काहेते जो हमारेहु कहेते संशयनहीं गई तौ बिधिहो विपरीतहै किंतु बिधि कहोकर्मै कछु भलाई नहीं देख परैहै(६)तब तुरन्त बिचारकीन कि जो कछु श्रीरामचंद्र रचिराख्यो है सोई होइगो तर्कणाकी शाखा बढ़ावै जो शोचकी तर्ककरियेतौ मनकी वृत्ति शोचही में चली जाती है ऐसेही भगवद्विचार में जानब (७) यह परम सन्तनके लक्षण हैं जो कछु होइ सो राम रजाइ अरु कहते सब हैं तहां न तौ हानिमें शोच न तौ लाभ में हर्ष यह समुझिकै कि यह जीव अरु प्रकृति भगवद्विभूति है परमेश्वर चाहैं सो करैं श्री रामचंद्रजी के परम भक्त हैं तिनको हर्ष शोच काहे में होतहै जब कोईकाल में भजन नहीं बनि पर्यो तब शोच करते हैं अरु जब भजन बनो चलो जातहै तब हर्ष में भरेहैं ऐसे बिचारिकै शिवजी आनन्दयुक्त रामनाम जप करने लगे अरु सुख के धाम जो श्री रामचंद्र तहां को सती जाती भईं (८) दोहार्थ ॥ पुनि पुनि हृदय में बिचारकरिकै श्री सीताजी को रूप धरिकै जेहि मार्ग में नर लीला करत श्री रामचन्द्र चले जाते हैं तहां आगे जाइकै सती प्राप्त भईं (१) ॥

५२ **लक्ष्मणदीखसतीकृतवेषा। चकितभयेभ्रमहृदयविशेषा * १**
कहिनसकतकछुअतिगम्भीरा। प्रभुप्रभावजानतमतिधीरा २
सतीकपटजान्योसुरस्वामी *। समदर्शीसबअंतरयामी * ३
सुमिरतजाहिमिटैअज्ञाना *। सोइसर्वज्ञरामभगवाना ४
सतीकीन्हचहतहौंदुराऊ *। देखहुनारिसुभावप्रभाऊ ५
निजमायाबलहृदयबखानी। बोलेबिहँसिराममृदुबानी * ६
जोरिपाणिप्रभुकीन्हप्रणामा। पितासमेतलीनिनिजनामा ७
कह्योबहोरिकहांवृषकेतू। बिपिनअकेलिफिरहुकेहिहेतू ८
दो० राम बचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोच ॥
सती सभीत महेश पहँ चली हृदय बड़ शोच १

५२ तहां लक्ष्मणजी की दृष्टि दशो दिशा मेंहै तहां सती जब सती रूप रहीं तब लक्ष्मणजी देखे अरु जब सती रूपते सीता रूप धारण करत रहे तबदेखे तब लक्ष्मण जीके विशेष सन्देह भयो कि यह सतीजी कौन चरित कीन्ह्यो है किन्तु लक्ष्मण जी सतीजी में विशेष भ्रम जानिकै चकित भये हैं (१) श्री लक्ष्मणजी अति गंभीरहैं कछु बोले नहीं काहेते कि सर्वज्ञता जो है अरु अन्तर्यामित्व जोहै सो स्वाभाविक सामान्य एक गुण श्री रामचंद्रकोहै यह लक्ष्मणजी जानते हैं तहां यह बिचार कीन्ह

कि श्री रामचंद्र की लीला यथार्थ कोई नहीं जानैहै ताते इहां रघुनाथजी कछु चरित कीन्ह चाहतेहैं सो समुझिकै लक्ष्मणजी कछु नहीं बोले (२) तहां सर्व के स्वामी श्री रामचंद्रजी सती को कपट करत सत्ते जान्योहै काहेते सबके अन्तर्यामी हैं समदर्शी हैं सबके अंतष्करण में देशकाल दिशि बिदिशि सर्वत्र सूक्षात्मक व्याप्तहैं (३) जिन श्री रामचंद्र को नाम सुमिरेते संपूर्ण अज्ञान नाश ह्वै जातहै काहेते परमात्मा परब्रह्म परमेश्वर सर्वज्ञ पूर्ण भगवान्हैं भगवान्क्यों कहा ताको अर्थभगवान् कह्यो षट् भग युक्त ऐश्वर्य धर्म्म यश श्रीवैराग्य मोक्ष तिनको स्वरूप कहते हैं ऐश्वर्य जाको अनेकब्रह्माण्ड है पुनि धर्म काको कह्यो सत्यवाक्य सर्वदाता निष्कपट शुद्ध कर्मताको धर्म कह्यो पुनि यश काको कह्यो उदार अजय जाको कोई जीति न सकै शीलनिधि अत्यंत सुन्दर जाको देखि कै चराचर मोहै ताको यश कह्यो पुनि श्री काको कह्यो तेज जाके तेज के आगे सूर्य्य चन्द्र अग्नि दामिनि इत्यादिक छपि जाहिं श्री कह्यो शोभा स्वरूप करिकै सर्वगुण करिकै शोभित है श्री कह्यो प्रताप जाको सब डरैं जाकी आज्ञामें पृथ्वी आप तेज वायु आकाश तीनिहूं गुण देव दानव मनुष्य इत्यादि चराचर वर्तमान हैं श्री कह्यो लक्ष्मीजी जाकी आज्ञानुकूल ह्वैकै कोटिन ब्रह्माण्डमें सुख भोग भरिदियो है ताको श्री कह्यो पुनि वैराग्य काको कह्यो शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध चित्त बुद्धि मन अहंकार सात्विक राजस तामस इन सबन को अपने बश किये हैं अरु इनके परे हैं ताको वैराग्य कह्यो पुनि मोक्ष काको कह्यो सालोक्य भगवान् के लोकमें बसै सामीप्य सदा निकट रहै सारूप्य जैसो भगवान् को रूपहै तैसो रूप होइ सायुज्य अलंकार होइकै रहै अथवा कोईके मतमें जैसे सूर्यको तेज घट फूटे सूर्यहीमे लीन होइ ताको सायुज्य कह्यो पुनि सारिष्ट मुक्ति सामान्य ऐश्वर्य अपने समान ऐश्वर्य देतहैं ये पांच मुक्ति हैं ताते ऐश्वर्य धर्म्म यश श्रीवैराग्य मोक्ष एते षट् भगजामें संपूर्ण होहिं अरु अपने जनको छः रसहु को दाता ताको पूर्ण भगवान् कह्यो जो स्वरूप षटभगमें कछुक कम होइ ताको अंश कलाविभूति कह्यो देखिये तौ एते षट् भग श्री रामचंद्रके बाम चरणमें षट् कोणअंकहैं तामे षटभग शास्त्र कहतुहैं ताते श्रीरामचंद्र पूर्णस्वयं भगवान् हैं (श्लोकदु श्रीमन्महारामायणे) ऐश्वर्येणचधर्म्मेण यशसाचश्रियैवच ॥ वैराग्यमोक्ष षट्कोणैःसंजातोभगवान्हरिः १ पोषणंभरणा धारं शरण्यंसर्वव्यापकं ॥ कारुण्यंषड्भिःपूर्णो रामस्तुभगवान्स्वयं २ अनेक ब्रह्माण्ड को पोषण गुण अरु भरणगुण अरुआधार गुणअरु सर्व शरण्यत्व गुण अरु सर्व व्यापकत्व गुण अरु करुणा गुण एते षड् गुण परम दिव्य पूर्ण श्री रामचन्द्र स्वयं भगवान् हैं (४) परब्रह्म हैं कोटिन ब्रह्माण्ड के स्वामी सबके नियन्ता हैं तिन श्रीरामचन्द्रजीसे सती जो दुराव करिकै परीक्षा लीन चाहती हैं देखौ तौ स्त्री सुभावमें एतो अज्ञानता है (५) तब श्री रामचन्द्र अपनी माया की प्रबलता बिचारिकै सती के निकट जाइकै मनमें बिहँसि कै दोनों कर जोरिकै शीश नाइकै नमस्कार करते भये (६) पुनि मनुष्य की नाईं कोमल बाणी जामें अनेक मर्म्मके अर्थ सो श्रीरामचन्द्र बोलते भये हमारो राम ऐसो नाम है अरु अयोध्याके राजा श्री दशरथमहाराज तिनके हम पुत्र हैं पिता ने हमको बन दियहै हम बन

में आये हैं हमारी प्रिया तिनको कोई हरि लैगयोहै हम बिकल ढूंढ़तेहैं श्री जनकनंदनीजीको कहूं तुम देख्यो तौ नहीं अरु तुमतौ दक्षप्रजापति की कन्याहौ अरु महादेव की प्रियाहौ सती ऐसो तुम्हारो नामहै नर नाग देव स्त्री जे पतिव्रता तिनमें तुम शिरोमणि हौ अरु भवानी जगत् की माता हौ सर्वज्ञ हौ शिवकी सत्संगिनी हौ सब योग्य हौ हे सतीजी ताते हम तुमको नमस्कार करते हैं काहेते हम राजपुत्र हैं अरु तुम अरु महादेव सबके पूज्य हौ (७) पुनि श्री रामचंद्र बोलत भये हे सती जो सब को ईश्वर अरु देव दानव मनुष्य मुनि अरु चराचर सबके पूज्य सबके कर्ता सर्वज्ञ सत्यवादी सत्य संकल्पी ऐसे श्रीवृषकेतु तिनको परित्याग किहे बनमें अकेली तुम काहेको फिरती हौ श्रीरामचंद्रके बचनमें अनेकन अर्थहैं तहां एते समुझि परते हैं श्रीरघुनाथ जीको शिवजी सच्चिदानंद कहिकै नमस्कार कीन अरु सतीजी यह जान्यो कि निर्गुणब्रह्म जो है सो तौ ये नहींहैं अरु सगुण ईश्वर विष्णु जोहै सो भी ये नहींहैं अरु शिवजी राजपुत्रको सच्चिदानन्द कह्यो यह संशय भई तहां सतीजी को श्रीरामचंद्र जी येही स्वरूपके आश्रय दोनों स्वरूप लखि करावते हैं सतीजी श्रीसीताको रूप धारण किये हैं तहां श्री रामचंद्र बोलत भये हे सती तुम महादेव की अवज्ञा कीन अरु श्री सीताको रूप धरेहु ताते महादेव तुमको परित्याग करचुके अब तुम अकेलिहो भइहु यह अपनो व्यापकत्व अंतर्यामित्व रूप गुण जनायो है अरु सर्वज्ञता भी देखायो है अरु यह दिखायो कि हम राजपुत्र सच्चिदानन्द ब्रह्म सर्व व्यापी एकरस ऐसे राजपुत्र अखंड हमहैं अरु जो तुम अपने मनमें कहेहु कि येतो विष्णुभी नहीं हैं सो आगे देखिलेहु (८) दोहार्थ ॥ तहां श्रीरामचन्द्र जीको बाणी अति कोमल अति गूढ़ अर्थ सो सतीजी सब समुझि गईं तब अति संकोच बशह्वैकै बड़े शोच संयुक्त महेश के पास सतीरूप ह्वैकै चलती भईं (१) ॥

५३ मैंशंकरकरकहानमाना *। निजअज्ञानरामपरआना ** १
जाइउतरअबदेहौंकाहा *। उरउपजाअतिदारुणदाहा * २
जानारामसतीदुखपावा *। निजप्रभावकछुप्रकटजनावा ३
सतीदीखकौतुकमगजाता। आगेरामसहितसियभ्राता * ४
फिरिचितवापाछेप्रभुदेखा। सहितबन्धुसियसुन्दरवेषा * ५
जहँदेखहिंतहँप्रभुआसीना। सेवहिंसिद्धमुनीशप्रवीना * ६
देखेशिवविधिविष्णुअनेका। अमितप्रभावएकतेएका * ७
बन्दतचरणकरतप्रभुसेवा *। विविधवेषदेखेसबदेवा * ८
दो० सती बिधात्री इन्दिरा देखे अमित अनूप ॥
वेष अजादिसुर तेहि तेहि तन अनुरूप १

५३ तहां सतीजी शोच करती हैं हे परमेश्वर हाय हाय मैं अपने अज्ञान ते शंकरको कहा नहीं मान्यो अरु अपनी अज्ञानता श्रीरामचन्द्र में आरोपण कियो अब-धौं बिधाता का करैगो (१) अब महेश जीको कौन उत्तर देहौं जाय हाय हाय मोपै कछु करत नहीं बन्यो सतीके दारुण दुःख उत्पन्न भयो हे भरद्वाज जे कोई भागवत की बाणी का अपमान करते हैं तिनको दिनप्रति क्लेशै फल प्राप्त होतहैं (२) तब श्री रामचन्द्र जान्यो कि सती दुःखित भई तब अपनो प्रभाव कछुक शिवकी प्रिया जानिकै अपर दिखावते हैं अपने प्रभाव में अपनो स्वरूप सती जीको कृपा करिकै दिखावते हैं (३) सतीजी शोच संयुक्त शिवके पास चली जातीहैं तब आगे जायकै श्रीरामचन्द्रजी श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजी तीनिहूं स्वरूप सतीजी देखती भईं पर कैसे स्वरूप देखती भईं षोड़शी शृंगार संयुक्त देखे (४) पुनि पीछे देखती भईं तहां श्रीराम सीता लछ्मणजी तीनिहूं स्वरूप सुन्दर वेष शृंगार की रचना संयुक्त देखे श्रीरामचन्द को स्वरूप कैसोहै जैसे नीलमणि की चमक आवरण रहित झकाझक हलहलात परब्रह्म मूर्ति प्रकाशमय मन बचन कर्म अगोचर तैसही श्रीजानकी जीको स्वरूप जैसे पद्मराग मणि पुनि जैसे शरद ऋतुके बाल सूर्य निर्मल आवरण रहित झका झक प्रकाशमय मनवचन इन्द्री अगोचर तैसेही श्रीलछ्मणजीको स्वरूप जैसे पिरोजमणि झका झक हल हलात प्रकाशमय आवरण रहित मन वचन कर्म अगोचर ऐसो स्वरूप पुनि परम दिव्य प्रकृति रहित चिद्रूप परब्रह्म मूर्ति श्रीरामचन्द्रजी हैं अरु ब्रह्मानन्द परमानन्द एकरस मूर्ति श्री जानकीजी हैं अरु परम शुद्ध निर्मल एक रस जीव तत्वरूप निर्विकार मूर्त्ति श्री लछ्मणजी हैं ऐसेही तीनिहूं स्वरूप सच्चिदानन्द परम दिव्य एकरस भिन्न भिन्न सतीजी देखती भईं काहेते श्रीरामचन्द्रजी कृपा करिकै सतीजीको परम दिव्य दृष्टि दियोहै ताते शृंगार संयुक्त देखती भईं सो कहते हैं तहां सतीजी देखती भईं श्रीरघुनाथजी अपनी परम दिव्य त्रिपाद बिभूति दिखावते हैं सो परम दिव्य सन्धिनी सन्दीपिनी आह्ला-दिनी सन्धिनी जीव परमात्मा की सन्धि मिलावै है सो सन्धिनी सन्दीपनी परब्रह्म को स्वरूप जीवके अन्तर दीप्त करैहै सो सन्दीपनी आह्लादिनी जीव के अन्तर परमानन्द परमात्मा को आह्लाद करैहै ये तीनिहूं नवधा प्रेम परा भक्तिहैं कंचन मणिमय भूमि अरु जेते तरु तृण सौकल्प तरु मय जाके पेड़ स्कन्ध शाखापर्ण फूलफल यथायोग्य दिव्य हेम मणि रंग तद्वत् अरु अमृतमयरस सर्वकाल एकरस ऐसेहीदशौ दिशा आकाशपाताल मध्य संपूर्ण ब्रह्मांड श्रीअयोध्या स्वरूप देखि परेउ तहां अनन्त सिंहासन दिव्यरत्न मणिन में दशौंदिशा परिपूर्ण तहांसिंहासन प्रति श्रीसीता श्रीरामचन्द्र श्रीलछ्मण संयुक्तआसीन हैं शीशपै किरीट कुण्डल कोटिनसूर्यके प्रकाश कोटिन चन्द्रमाकी शीतलता अरु अलकैं बंक कपोलनपै झुकि रहीहैं मधुपकी अवलीकी शोभा हरतीहैं मुखपंकज शोभितहै अरु भालमें युगरेख तिलक दामिनीकी छटा हरत है भृकुटी बंक कामकी धनुष की छबि हरतहै श्वेत अरुण श्याम कमल तरुण तेहिकी शोभा हरतुहै लोचन नासिका अति मनोहर तहां एक मोती शोभित है अधरपर हलत है जनुरति जोहै सो अपनी सेंदुर-दानी छोटीसी चन्द्रमा को दियोहै तब पूर्णचन्द्र जो निष्कलंक तिनने अल्पदामिनीते

पोहि कै अपने हृदय में पहिरेउ है कपोल आदर्शवत् निर्मल हैं कुण्डलकी झलक मानो मैन नृत्य करत हैं अरु कुण्डल अरु अलकैं दोनों की हलनि जनु रविसुवन अरु राहु सुवन लरते शशि सुधा हेतु मिलते हैं पुनि जनु नागन के छौना अपने पिताकी मणि अपनी मणि संयुक्त चंद्रमा को देत हैं बदले में अमृतपान करत हैं अधर बिम्ब की अरुणता हरत हैं दश नहींकीहै पोढ़ाई प्रकाश निर्मल रंग दाड़िम के बीजकी सघनता रंग निर्मलता दामिनीकी छटा ईषद्धास्य प्रकाशमय अनूपम ऐसे दशन हं बदन अनूप है अरु चिबुक जैसे नील गोलमणि तामें पीत बिन्दु श्रृंगारहू को श्रृंगार योगीशन के चित्त हरत हैं ग्रीवात्रेरेखा सो सुन्दरताकी सींव तीनिरेखा हैं यहिके परे सुन्दरता नास्तिहै कंठमें गज मुक्तन के कंठा अनूप पुनि कौस्तुभमणि त्रिकोण है सोशुद्ध समष्टी जीव तत्व जगमगाइ रह्यो है पुनि बक्षस्स्थल बिषे दक्षिण भाग में श्रीवत्सलांछण परमदिव्य संपूर्ण श्री तेहिको सामष्टी स्वरूप श्रीजानकीजीको दूसर रूप सुन्दर प्रकाश मय भुक्ति मुक्ति भक्ति प्रदायनी सर्वदा पनिपदिक ढिगन में मणिन की कनी लगी हैं जनु चौकोण चंद्रमा के ढिग न वृहस्पति शुक्र इत्यादिक नक्षत्रनकी सभा अचल बैठी है पुनि मोहनमाला मुक्ता पद्मराग मणि पिरोजमणि पुनि वैजयन्तीमाला नील हरित लाल श्वेत पीत मणिनमय जगमगाय रह्यो है पुनि बनमाला तुलसी दलश्वेत पीत फूल पद कंज में नूपुर तप्त हेमइव प्रकाशमय मणिन की कनी जटित स्वाभाविक ओंकार शब्द मधुर मधुर होते हैं जनु मुनिन के निर्मल मन चित्र बिचित्र मधुकर रूप चरण कमल में मकरंद पानकरते हैं अरु आनन्द से गुञ्जार करते हैं अरु पदके नखन की शोभा जनु पंकज के दलन पर मुक्तान की अवली बैठी हैं अरु दोनों चरण के तल में मनोहर अंक चालीस अरु आठ शोभित हैं दक्षिण चरण के मध्य में अष्टांग योगरूप ऊर्ध्व रेखाहै १ मध्यएड़ी में सर्व कल्याण स्वरूप स्वस्ति कहै २ ऊर्ध्व रेखा के बायें स्वस्तिक के आगे अष्टांग योग अष्ट सिद्ध स्वरूप अष्टकोण हैं ३ संपूर्ण श्री स्वरूप श्रीहै ४ क्रूर बुद्धि शमन करिबे कोहल है ५ कर्म के कूटिबे को मूशल है ६ क्षमा क्षिति धारिबे को शांत स्वरूप शेषहै ७ प्रलय स्वरूप बाण है ८ निर्मल आकाश अम्बर है ९ जो भगवान् के हाथमें पद्म है सोई अष्टदल कमल है १० परमदिव्य पुष्पकबिमान सर्व पदार्त्थ पूर्ण है ११ पाप पर्वत नाश करिबे को बज्र रूप ब्रह्म है १२ अंगुष्ठ मध्य में शुद्ध यज्ञ स्वरूप यवहै १३ ऊर्ध्वरेखा के दाहिने स्वस्तिकके आगे चारिहू पदार्त्थ पूर्ण कल्पतरु है १४ मन मतङ्ग फेरिबे को अंकुश है १५ सर्व विजय रूप ध्वजा है १६ त्रैलोक्य में त्रैताप रूप मुकुट है १७ जो भगवान् के हाथ में दुष्टनको संहार कर्त्ता सो चक्रहै १८ पुनि सिंहासन परम संतोष बोधरूपही है १९ पुनि चमर षट् बिकारको नाश कर्त्ता ऐश्वर्य रूपही है २० पुनि छत्र सर्व रचक शांति निष्कंटक कर्त्ता श्रीरामचन्द्र की दया रूपही है २१ अंक सर्व साक्षी मूर्त्तिमान् चरण सेवा करत यवमाला

यमदा_ कालरूप _ यमदण्ड

क्रमही ते जानब पुनि बाम चरणके मध्यमें श्रीसरयू है श्रीरामचन्द्र की करुणा रूपही

है पुनि एड़ी के मध्यमें गोपदहै कामधेनुही है परम दिव्य गुण दाता है सरयू दाहिन गोपद के आगे छितिहै परम दिव्य गुण उत्पन्न करत है पुनि अमृत कुम्भ है सर्व मंगल रूपहै पुनि पताका है शुभ कीर्त्ति रूपही है पुनि जंबूफल है रामरूप को दरशावत है पुनि अर्द्धचन्द्र है बाह्यांतर की क्रूरता हरत है पुनि पांच जन्य शंखहै जो भगवान् के हस्त कमलमें शोभित है सोई चरण सेवन करत है अनहद शब्द जामें स्वाभाविक होत है पुनि षट्कोण षट् ऐश्वर्य्य रूपहीहै पुनि त्रिकोण है त्रैकांड रूपही है समस्त त्रिदोष हरै है पुनि गदा भगवान् के हस्त कमलमें शोभित है दुष्टनको नाश करत है पुनि वहै चरण सेवन करत है पुनि जीव रूप जगमगाय रह्यो है पुनि अंगुष्ठ में बिंदु है सो प्रकाश रूपही है वात्सल्य शृङ्गार रसमय है पुनि सरयू के बाम दिशि में गोपद के आगे शक्ति है मूल प्रकृति रूपही है सम्पूर्ण जगत्को कारण मूर्त्ति है प्रकृति के बिकार हरति है पुनि अमृत कुण्ड है जामें मुनीश्वरन के चित मीन ह्वै रहे हैं अमर करतु है पुनि त्रिवली है तीनि गुण हरत है पुनि त्रैदेव एक एक रूप ह्वै के चरण सेवन करतेहैं पुनि मीनहै सम्पूर्ण दिव्य जो सद्गुण है सो समस्त समष्टी रूपहै पुनि पूर्णचन्द्र ते परम आह्लाद रूपही है पुनि बीणा है सम्पूर्ण राग रागिनी ताल मूर्च्छना स्वर ग्राम इत्यादिकनको समष्टी रूप है पुनि बेणु है जामें स्वाभाविक मधुर शब्द होत है जो योगी मुनीशन के चित्तको आकर्षण करतु है पुनि धनुष है महाकाल रूपही है बीर रस रूपही है मनके बैरी हरतु है पुनि तूणहै सख्य रस रूपही है पुनि हंस है दास्य रस विवेक रूपही पुनि चन्द्रिका है शृङ्गार रस विजय सुकीर्त्ति रूपही है एते अठचालीस अंकन के स्वरूप मैंने सूक्ष्म कहेहैं अरु श्री मन्महारामायण में अठचालिस अध्याय में नब्बे अरु एक इक्यानवे श्लोक कहे हैं अंकन के रंग ऐश्वर्य स्वरूप अरु जो अंक श्री रामचन्द्र के दाहिने पगमें हैं सो श्री जानकीजीके बाम पगमें हैं जो श्रीरामके बाम पग में हैं सो श्रीसीता के दाहिने पगमें हैं राज्यासन में श्री रामचन्द्र बैठे हैं सुखासन में श्रीजानकी जी बैठी हैं श्रीरामचन्द्र के पीताम्बर शोभित है कटि में बाल सूर्य की ज्योति हरतुहै कटि किंकिणी तीनि अवली पुनियज्ञोपवीततड़ितकी शोभा हरतुहै पुनि बाजूबंद हेमरत्नमय शोभित है पुनिकंकण तीनि अवलीयवाकार हेमरत्न मय हैं पुनि मुद्रिका हेमरत्नमयहै बिशालभुजहैं नखजनु पंकजदलनपर मोतिनकी अवलीहैं अनूपम धनुषबाण चित्रबिचित्र लिहेहैं नखशिखलौं अनूपमशोभा बनिरहीहै यही प्रकारते जहां जसचाही षोड़शी शृंगारहैं नख शिखलौं अद्भुतअलंकार चंद्रिकादिकअंगराग इत्यादिक संयुक्त श्री जानकीजी शोभित हैं पर एते अलंकार फूलहूते हरुहैं दाहिने करकंज में नीलकमल सुन्दर लिहे हैं अरु बामकर में बिचित्र गेंद लिहे हैं सीतारामचन्द्र जी के वामांगबिषे स्थितहैं अरु जैसे श्रीरामचन्द्र जीके शृंगार कहेहैं तैसेही श्रीलक्ष्मणजी को जानिलेव श्रीरामचन्द्रके दाहिने भागमें चमर लिहेठाढ़ेहैं श्रीसीताराम जीके मध्यमें श्रीभरतजी छत्रलिहे श्रीसीताराम जीके पाछे ठाढ़ेहैं अरु श्रीभरतजीके बाम भागमें श्रीजानकी जीके बामदिशिमें शत्रुहनजी व्यजनलिहे ठाढ़ेहैं तहां तीनिहूंभाइको एकही जानब अरु हनुमान् अग्रभागमें श्रीमद्रामायण गानकरतेहैं अपर पार्षद

षोड़शौ हनुमान् सुग्रीव अंगद दधिमुख द्विविद मयंद जामवन्त सुषेण दरीमुख नील-नल गवाक्ष पनस गन्धमादन विभीषण इत्यादि अनंतपार्षद ते सब किशोरमूर्त्ति श्री रामलक्ष्मण के रूप श्याम गौर ते सबसेवामें अनेकन अनेक पदार्त्थ लिहे अमतछत्र चमर व्यजन धनुषबाण बेतइत्यादिक लिहे यथायोग्य ठाढ़ेहैं (प्रमाणअगस्त्य संहिता यांउत्तरार्द्ध श्लोक) षोडशा:पार्षदानित्या:दिव्यदेहाव्यवस्थिता: ॥ किशोरावयसाभव्या रामलक्ष्मणरूपिण: १ श्याम:गौरा:सुमनसा:कामादधिकसुन्दरा: ॥ अनेकानिपदार्त्थानि गृहीता:करकंजकै: २ मनोवाक्कर्मभि:सर्वेरामसेवासुतत्परा: ॥ स्थिता:समीपगा:श्रद्धा:सीतारामैकमानसा: ३ यादृशीरामवांछास्यात्तादृशीहिभवंतिते ॥ रामाभिलाषिण:सर्वेराम रूपैकतत्परा: ४ हनुमानथसुग्रीवोह्यंगदोद्विविदस्तथा ॥ मयंदश्चसुषेणश्चकुमुदश्चदरीमुख:५ नीलोनलोगवाक्षश्चपनसोगन्धमादन: ॥ विभीषणोजामवन्त:दधिमुख:षोडशस्स्मृता:६ अरु जानकीजीके निकट पंच अरुषोड़श इत्यादिक सखीअनेक षोड़शौ शृंगार बारहौ आभूषण नित्यशृंगार आभूषण सदासब मध्यकिशोरी नित्यएकरस अनेक पदार्त्थलिहे ठाढ़ीहैं आह्लादिनी ह्रींदिशि सहजानन्दनी मदनमंजरी चन्द्रकला चन्द्रावती चन्द्रमुखी इतिपंच बिमला उत्कर्षिणीक्रिया योगा पार्वती ईशानाह्वाना सत्याइति अष्टउज्ज्वल कांचनी चित्रा चित्ररेखा सुधासुखी हंसीप्रहंसी कमलाविशदाक्षी सुदर्शका चन्द्राननी चन्द्रभद्रा माधुर्यशालिनी कर्पूरांगी बरारोहा इतिषोड़श पुनि रघुनन्दन की सखी पंच आह्लादिनी ह्रींदिशि चारुशीला अतिशीला सुशीला हेमा लक्ष्मणा इतिपंच पुनि अनुवागीशा माधवी हरिप्रिया मनजीवा नित्या विद्या सुविद्या कूटरूपा इतिअष्ट पुनिषोड़श शोभना शुभदा शांता संतोषा सुखदा सत्यवती चारुस्मिता चारुरूपा चर्वांगी चारुलोचना हेमांगी चेमा चेमदात्री धात्री धीरा धरा इति षोड़श इत्यादिक अनन्त सखी श्रीजानकी जीके निकट अनेक पदार्त्थ लिहे सब मंगल सेवामें तत्पर हैं (५) संपूर्ण भूमि तहां हेम इव प्रकाश शीतलमय निर्मलसीसा इव तहां सतीजी जौनिहीं दिशा देखती हैं भूमितल आकाश जहां देखतीहैं आकाश पाताल निर्मल दिशि बिदिशि श्री सीताराम लक्ष्मण सिंहासनपर आसीन हैं अनन्त सिंहासन सिंहासन प्रति श्री सीताराम बिराजेहैं अखिल ब्रह्मांड कोषमें परिपूर्ण शोभा ह्वै रहीहै जहां तहां सिद्ध कपिलदेव लोमश इत्यादिक सेवतेहैं अरु मुनीश्वर शुक सनकादिक नारद बाल्मीकि व्यास इत्यादिक सेवते हैं पर सब किशोर रूपहैं अरुजैसे अनन्त श्रीरामचन्द्रके स्वरूप हैं तैसेही इन सबके अनन्त रूपहैं (६) पुनि जहां जहां श्री सीता रामचन्द्र को आसीन देखे तहां तहां सदाशिव अरु ब्रह्मा अरुविष्णु अनन्त देखे तहां विष्णु चतुर्भुज गदा पद्म शंख चक्र परम दिव्य किरीट कुण्डल कमल नयन चन्द्रबदन कौस्तुभ भृगुलता श्रीवत्स पदिक मोतिन के माला पीताम्बर किंकिणी यज्ञोपवीत बनमाल नूपुर चरण कमल ऐसे परम दिव्य अलंकार अनूपम श्याम स्वरूप कोटिन सूर्यको प्रकाश किरीट इत्यादिक अलंकार कोटिन घन दामिनी इत्यादिकन की शोभा हरत हैं कौस्तुभ भृगुलता श्रीवत्स एते तीनि लांछण छोड़ भगवान् विष्णु स्वरूप अनन्त पार्षद अनेक पदार्त्थ लिहे संगही हैं ऐसे विष्णु भगवान् जिनको अमित प्रभाव है

अरु ब्रह्मा दिव्यरूप सहित पार्षदन चारिहू मुखते वेद पढ़त अरु शिव परम दिव्य कल्याणरूप पार्षदन संयुक्त श्री रामयश गान करत ऐसे अनेक अमित प्रभाव जिनके (७) अरु तीनि गुण काल कर्म सुभाव दिव्यरूप अरु इन्द्र बरुण कुबेर यमराज अग्नि चन्द्र सूर्य शुक्र बृहस्पति इत्यादिक अमित देवता देखे दिव्यरूप अरु सहित पार्षदन अमित ऐश्वर्य संयुक्त तहां शिव ब्रह्मादिक समस्त देवतन को संग लिहे सब संयुक्त विष्णु जो हैं भगवान् ते सहित देवतन ऐश्वर्यशक्तिन संयुक्त श्रीरामचन्द्रकी स्तुति करते हैं चरणारबिन्दकी सेवा करते हैं पर एक एक देवतन को पृथक् पृथक् रूपवेष सतीजी देखती हैं पर स्वरूप प्रति आकृति अरु वेष कछुक कछुक भिन्न भिन्न देखती हैं (८) दोहार्थ ॥ तहां महादेव के समीप सतीजी अपनो स्वरूप अनेक देखती हैं अरु इन्द्राणी अनेक सरस्वती सावित्री गायत्री अनेक देखती हैं अरु लक्ष्मी अनेक देखती हैं ऐसेही जेते देवता ब्रह्मादिक हैं तिन सबन के वेष अनुरूप तिनहीं के समीप तिनहीं की शक्ति देखती भईं श्रीजानकीजीकी सेवा सब करती हैं (१) ॥

देखेजहंतहं ।

ा * । हे

पूजहिंप्रभुहिदेवबहुबेसा * । रामस्वरूपनदूसरदेखा * * ३

अवलोकेरघुपतिबहुतेरे * । सीतासहितनबेषघनेरे * * ४

सोइरघुबरसोइलक्षमणसीता । देखिसतीअतिभईसभीता * ५

हृदयकम्पतनसुधिकछुनाहीं । नयनमूंदिबैठीमगमाहीं * ६

बहुरिबिलोक्योनयनउघारी । कछुनदीखतहंदक्षकुमारी * ७

पुनिपुनिनाइरामपदशीशा * । चलीतहांजहंरहेगिरीशा * ८

गईं समीप महेश तब हंसि पूंछी कुशलात ॥
लीन्ह परीक्षा कवनबिधि कहहु सत्यसब बात १

५४ सती जी श्रीरामचन्द्रजी अरु श्रीसीता लछमण जी के स्वरूप अनेकन देखती हैं अपने आगे पीछे आकाश पाताल दिशा उपदिशा सती जी देखती हैं जहां जहां देखती हैं तहां तहां रघुपति के स्वरूप अनेकन देखती हैं अरु जेते रघुपतिके स्वरूप देखती हैं तिन श्रीरामचन्द्रके निकट एक एक स्वरूप प्रति अनेकन देवता अरु शिव ब्रह्मा विष्णु निज निज शक्तिन संयुक्त सब देवतन को सती जी देखती हैं श्रीरामचन्द्र जीकी सेवा करते हैं (१) पुनि जेते जीव चर अचर संसार में हैं तेते सब दिव्यस्वरूप श्रीरामचन्द्र जीकी सेवा यथा योग्य करते हैं पर जेते जीव देव दानव मनुष्य चारि खानि देखे सब दिव्यरूप पर भिन्न भिन्न रूप आकृति सबकी देखी जैसे कोटिन मनुष्य पर कछुक रूप आकृति पृथक् पृथक् देखि परती है तैसेही सबको देखती

हैं (२) यथायोग्य श्रीरामचन्द्र जीके पद पङ्कज पूजते हैं बहु बप बहु आकृति बने हैं अरु तहां श्रीरामचंद्र को स्वरूप अनन्त देखती हैं पर न दूसर बेप न दूसर रूप देखे अरु न र आकृति देख्यो है तहां परिपूर्ण परब्रह्म सच्चिदानन्द मूर्ति श्रीरामचन्द्र जी अरु परिपूर्ण पराभक्ति सच्चिदानन्द बिग्रह श्री सीता जी अरु नित्य शुद्ध जीव ततत्व समिष्टीरूप सच्चिदानंद मूर्ति श्री लक्ष्मणजी तीनिहूं स्वरूप बिग्रह अखंड एक रस नख शिखलों श्रृङ्गार अद्भुत स्वरूप सतीजी देखती हैं (३) रघुपति क्यों कहा ॥ (विश्व-कोषेश्लोकार्द्धः) रघुर्जीवात्मबुद्धिश्चभोक्ताभुक्चेतनस्तथा ॥ रघु संज्ञा जीव देव दानव मनुष्यादिक चराचर अनंत जीव सबके पति सब सेवते हैं तिनको सती जी देखती हैं तेई रघुपति रघुवंश कुलको संसार ते रक्षा करिकै परम पद दीन ताते रघुपति कहा अवलोके अमित श्रीरघुपति को श्रीसीताजीको श्रीलक्ष्मण जीको देखे सोई बेष सोई आकृति तदाकार अनन्त रघुपति अनन्त सीता अनन्त लक्ष्मण एक रस एकमूर्ति एकही बेष रूप सतीजी देखती भईं जेते अनन्त श्री राम स्वरूप देखे तहां तहां श्री रामजीके निकट चहुंफेर मण्डलाकार ठाढ़े करजोरे इन्द्रादिक देवता अरु शिव ब्रह्मा श्री बिष्णु भगवान् इत्यादिक अनन्त ठाढ़े हैं पर इन सबके अनन्त रूप देखेपर सबके देवतन कै आकृति रूप बेष कछुक कछुक भिन्न भिन्न देखती हैं सती जी देखिकै अति भय को प्राप्त भईं तहां शिवके बचन अनुकूल अरु सती के सन्देह के अनुकूल श्रीराम-चन्द्र परात्परतर गुह्याद् गुह्यतम ऐसो अपनो स्वरूप कृपा करिकै दिखाये हैं काहेते श्री रामचन्द्र सती को प्रणाम कीन्ह्यो है तब सर्वज्ञ अन्तर्यामितत्व व्यापकतत्व गुण धर्म्म सती को दिखाइ दियो अरु अपनो अद्वैत द्विभुज स्वरूप एक रस अनन्त स्वरूप दिखावते भये तहां अनन्त ब्रह्मा शिव विष्णु अपनी सेवा में दिखाये हैं काहेते कि सती जो प्रथम यह सन्देह कीन्ह्यो रहै कि येजो राज पुत्र हैं तिनको महादेव सच्चिदानन्द बिग्रह परात्परतर कह्यो है अरु तिनको स्वरूप देखिकै प्रेम में मग्न ह्वै गई हैं अरु सच्चिदानन्द दुइ स्वरूप को कही एक ब्रह्म जो सर्व व्यापक है ताको सच्चिदानन्द कही अरु एक बिष्णु को सच्चिदानन्द कही सो येजो राज पुत्रहैं ते दोनों में एकहू नहीं हैं अरु शिव को बचन बृथा नहीं है तहां श्री रामचन्द्र जी अपनो निर्गुण गुण अन्तर्यामी प्रकाश रूप प्रथम दिखायो है अरु ब्रह्मा शिव विष्णु को अपनो अंशभूत ईश्वर रूप दिखायो है अरु इन्द्रादिक देवतन को अपनी उतम बिभूति जीव कोटि में दिखायो है अपने आश्रय सबको दिखायो है ब्रह्मा शिव विष्णु को गुण संयुक्त दिखायो है अरु अपनो स्वरूप गुणातीत दिखायो है अरु ब्यापक ब्रह्म अपनो स्वरूप दिखायो है सो निर्गुण रूप अरु धनुर्द्धर अपनो स्वरूप दियोहै कोई यह कहते हैं कि परमात्मा को बिग्रह ताको रूप कहो सो रूप नित्य है पर रूप में व्याप्त ब्रह्म ताको स्वरूप कहो देही देह ताको बिभाग मानते हैं सो यह जाको मत होइ ताको होइजाइ पर यह शिव अगस्त्य ब्यास बाल्मीकि को मत नहीं है अरु तुलसीदास जीको मत नहीं है इनको मत यहहै श्री रामचन्द्र धनुर्द्धर सीतापति स्वरूप हैं अरु तिनको प्रकाश समूह को रूपहै ऐसो परम स्वरूप परम दिब्य लीला सतीजी देखती भईं चैतत्व अखण्ड

एक रस देखती भई तहां व्यापक तत्व अरु ईश्वर तत्व सोसमस्त श्रीरामचन्द्रके आश्रय देख्यो अरु त्रिपाद बिभूति सन्धिनी सन्दीपिनी आह्लादिनी विद्या संयुक्त देख्यो पुनि श्री शक्ति लीला शक्ति भू शक्ति समस्त सीताजी के आश्रय देख्यो अरु जेते जीवसमस्त श्री लक्ष्मणजीके आश्रय देख्यो श्रीराम सेवामें सबभली प्रकारते देख्यो तदपिशिवके बचन के अपमान ते बोध नहीं भयो बिकल भई इहां बार बार कहेको पुनि शक्ति न मानब यह प्रकरण ऐसेहै (४) तहां प्रमाण है (श्रीमन्महा रामायणे शिववाक्यं पार्वतींप्रतिश्लोक) इच्छाभूतोक्षरस्तस्य चाक्षरस्तेजउच्यते॥ निरक्षरोघनस्तेजो वर्त्ततेजानकीपतेः १(अगस्त्य (संहितायांपरात्परतरंतत्वं रामंदशरथात्मजं॥ धनुर्बाणधरंवीरं चिन्मयानन्दविग्रहं २ वाल्मीकीये अयोध्याकांडे सुमित्रावाक्यं कौशल्यांप्रति) सूर्यस्यापिभवेत्सूर्यो ह्यग्नेरग्निः प्रभोःप्रभुः॥ श्रियःश्रीश्चभवेदग्र्या कीर्त्याकीर्त्तिःक्षमाक्षमा: ३ (श्रीभागवतेएकादशेयोगी श्वरवाक्यं॥ सोऽधिंबबन्ध दशवक्त्रमहन्सलंकं सीतापतिर्जयतिलोकमलघ्नकीर्त्तिः४ (सनत्कु मारसंहितायां श्रीवेदव्यासबचयं युधिष्ठिरंप्रति) तत्वस्वरूपंपुरुषंपुराणं स्वतेजसापूरितविश्वमेकं॥ राजाधिराजंरविमण्डलस्थं विश्वेश्वरंराममहंभजामि ५ (शंकराचार्यवर्यश्रीरघु नाथाष्टके) निजतनुप्रभाभासिताखिलं ज्वलितरत्नयुग्मदिव्यकुण्डलं॥ पदविराजितंक्षोणि मंडलं भजमनःसदाराममद्भुतम् ६ (पुनःश्रुतिः) धीरोयस्यमधीतंसैवरामःदाशरथीसैव घनस्तनुभाब्रह्मेतिचेतः सम्मेलनंवधिसंहितायांश्रुतिः ७ प्रकृत्यासहितःश्यामः पीतबासः प्रभाकरः॥ द्विभुजःकुण्डलीरत्न मालीधीरोधनुर्धरः॥ देहीदेहविभागेन स्यात्सच्चिदानन्द विग्रहः॥ श्रुतिः ८ (श्रीस्कन्दनिर्बाणखंडेश्रीबिष्णुबाक्यं) नमोरामाय विभवे तुभ्यंविश्वैक साक्षिणे॥ नमोविश्वैकदेहाय नमोविश्वातिगायते ९ नमोनित्यायशुद्धाय प्रभवेकालमूर्त्तये दशदिग्बाहवेतुभ्यंनमोस्तुचरणायच १० नमोभेरितसेशश्वत्तेजोनेत्रायतेनमः॥ वायुवक्त्राय महते व्योमदेहायतेनमः ११ सत्वोपाधिरहंराम हृदयन्तेपितामहः॥ कंठस्तेनीलकंठोयं भ्रूमध्यंतवेश्वरः १२ सदाशिवोललाटस्ते तत्दूर्ध्वंपरःशिव॥ भूषणानिचतत्वानिविश्वा काशस्यतेप्रभो १३ विष्णुर्नसंख्यान्पश्यामित्वयिरुद्राननेकशः॥ बहुरूपान्बहुभुजान्बहुवर्णा न्महोदयान् १४ वर्तमानानतीतांश्च सुरानिहभविष्यतः॥ नाहमन्तम्प्रपश्यामि विभूती नांतवप्रभो १५ अनन्त स्वरूप रघुबर सीता लक्ष्मणके देखेपर एकही आकृति एकही बेष सोई रघुबर सोई सीता सोई लक्ष्मण हैं ऐसेही सती जी देखती भई श्रीरामचन्द्र जीकी अद्भुत लीला सतीजी देखिकै अति बिकलता को प्राप्त भई (५) तब हृदय में कांपिकै तनदशा भूलिगई नेत्र मूंदिकै मगमें बैठि गईहैं (६) पुनि तुरन्त पलकखोलती भई तब दक्षकुमारी कछुनहीं देख्योहै (७) तहां सहित अनुज श्री रामचन्द्रजी मुनि बेष किये प्राकृत इव लीला करने लगे श्रीजानकीजी को बिरह संयुक्त ढूंढ़ते हैं जैसे पूर्वहीं लीला करते रहे तैसेही करने लगे यह अद्भुत लीला श्री रामचन्द्र जी की देखि कै पुनि सतीजी श्री रामपद युगल तामें नमस्कार करिकै अतिशोच संयुक्त महादेवके समीप चलती भई सतीजी मग में चलीजाती हैं अति शोक संयुक्त बिचार करती हैं हे बिधाता जब महेश मोंसे कछु पूंछहिं गे तब मैं कौनो प्रकारते प्रत्युत्तर देउंगी तहां कछु बिचार सिद्ध नहीं भयो ऐसेही बीचमें महेश के समीप प्राप्त भई (८) दोहार्थ॥

जब सती जी महेशके समीप प्राप्त भईं तब महेश जी बिहँसि कै कुशल पूछत हैं कहो सतीजी कौनो प्रकारते परीचा लीन है तुम सती हौ सत्य कहौ (१) इतिश्री रामचरितमानसेसकलकलिकलुष विध्वंसनेबालकांडेश्रीरामलीलाअद्भुतसतीमोहवर्णनंनामचतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

दोहा ॥　सतीशोच तनत्यागि शिव बहुरि जन्म परसंग ॥
　　रामचरण शिवभक्ति दृढ़ पँचदशरंग तरंग १५

५५ सतीसमुझिरघुबीरप्रभाऊ । भयबशशिवसनकीन्हदुराऊ १
कछुनपरीक्षालीनगोसाईं । कीन्हप्रणामतुम्हारीनाईं * * २
जोतुमकहासोमृषानहोई * । मोरेमनप्रतीतिअतिसोई * * ३
तबशंकरदेख्योधरिध्याना । सतीजोकीन्हचरितसबजाना ४
बहुरिराममायहिंशिरनावा । प्रेरिसतिहिजेहिझूठकरावा ५
हरिइच्छाभावीबलवाना । हृदयबिचारतशम्भुसुजाना * ६
सतीकीन्हसीताकरवेषा । शिवउरभयउबिषादबिशेषा * ७
जोअबकरौंसतीसनप्रीती । मिटैभक्तिपथहोइअनीती * ८

दो०　परम पुनीत न जाइ तजि किये प्रेम बड़पाप ॥
　　प्रकटनकहत महेशकछु हृदयअधिक सन्ताप १

आगे अचरार्थं जानिये सतीजी श्री रघुबीर को प्रभाव समुझिकै भय को प्राप्त ह्वैकै महादेव से दुराव करती भईं अरु महादेव की अवज्ञा किये सन्ते मति भ्रम ह्वै गई है ताते दुराव करती भईं (१) महादेव यह बिचार कीन कि सतीजी श्रीजानकी जीको स्वरूप धारण कीन्ह्योरहै अरु श्री जानकी जी मेरी इष्टहैं ताते जो अब सतीजी सों पत्नी भावकरिकै प्रीतिकरौंगो तो भक्तिकी मर्याद मिटि जातीहै अरुभावही भक्तिहै ताते सती तनमें श्री जानकी भाव करना तब श्री रामचन्द्रजू को दण्डवत् करिकै सती स्वरूप त्यागको संकल्प कीन्ह्यो पचपन अष्टपदीकी दुइ चौपाई लैकै छप्पन अष्टपदीकी दुइ चौपाई ताईं को अर्थ अचरार्थं जानब (२) पुनि तीन चौपाई ते चार ताईं ब्रह्मा की बाणी आकाश बिषे भई (४) पुनि पांच चौपाई से लैकै सत्तावन अष्टपदीकी सात ताईं अचरार्थं जानब (७) ॥

५६ तबशंकरप्रभुपदशिरनावा । सुमिरतरामहृदयअसआवा १
यहितनसतिहिभेंटमोहिंनाहीं । शिवसंकल्पकीन्हमनमाहीं २
असबिचारिशंकरमतिधीरा । चलेभवनसुमिरतरघुबीरा * ३
चलतगगनभइगिरासुहाई । जयमहेशभलिभक्तिदृढाई * ४

७

यद्यपिसतीपूंछाबहुभांती ※। तदपिनकह्योत्रिपुरआराती

दो० सती हृदय अनुमान किय सब जान्यो सर्व्वज्ञ ॥
कीन्हकपटमैं शम्भुसन नारिसहज जड़अज्ञ १

० जलपयसरिसबिकाय देखहु
बिलगाहोत रसजाय कपट

कृपासिंधुशिवपरमअगाधा। प्रकटनकह्योमोरअपराधा ※ २

निजअथसमुझि ि ि

सतिहिसशोचजानिवृषकेतू। कहीकथासुंदरसुखहेतू ※ ※ ५

बरनातपंथबिबिधइतिहासा। बिश्वनाथपहुँ

तहँपुनिसमुझिशम्भुप्रणआपन। बैठेबटतरकरिकमलासन ७

※ अखंडअपारा ८

दो० सतीबसहिंकैलासतब अधिकशोच मनमाहिं॥
मर्म्मनकोऊ जान कछुयुगसमदिवस सिराहिं १

५७ श्रीशंकर अपनो सहज स्वरूप संभारिकै अखण्डनिर्विकल्प समाधि लागते भये सहज स्वरूप कहो जो श्रीरामस्वरूप सती जी देख्योहै सो सम्हारेउहै किंतुव्यास बाल्मीकि अगस्त्य शुक सनकादिक नारद हनुमान् शिवादिक जो महान् हैं तिनके एक एक स्वरूप परधाम में श्रीरामचन्द्रजीके निकट नित्यसेवामें रहतेहैं अरुएकएक स्वरूप प्रकृति मंडल में आचार्य रूप श्री रामाज्ञाते धर्म्मके मर्याद हेतु रहते हैं जो श्रीराम निकट स्वरूप है सोई सहज स्वरूप जानब वह स्वरूप सँभारेउ तब एकहो हूजाते हैं पुनि अपनो स्वरूप जो आत्मा देहते भिन्नहै ताको सँभारिकै पर स्वरूप में लग्यो तब समाधिस्थ भयो सो शंकर सतीके त्याग संते कियो ताते जे सर्ब त्याग करैं तब ऐसी समाधि लगै (८) पुनि सत्तावन अष्टपदी के दोहा से उनसठि की पहिली चौपाई ताईं अन्तरार्थ जानब (१)

५८ नितनवशोचसतीउरभारा। कबजैहहुंदुखसागरपारा ※ १

।नपतिवचनसुखाकरिजाता २

३

असनगुभियेतोहीं । शंकरबिमुखजियावहुमोहीं ४

कहिनजाइकछुहृदयगलानी । मनमहँरामहिंसुमिरिसयानी ५

जोप्रभुदीनदयालकहावा * । आरतहरणवेदयशगावा * ६

मैंबिनयकरउंकरजोरी * । छूटैवेगिदेहयहमोरी * * ७

तोमानचरणनेहू * । मनक्रमबचनसत्यब्रतयेहू * ८

बाज।हाबनाहिंश्रमदुसह।

बदुखितप्रजेशकुमारी । अकथनीयदारुणदुखभारी १

। बिनाशा *

रघालागे * । जान्या

न्दनकीन्हा । सन्मुखशंकरआसनदीन्हा * ४

गकहनहरिकथारसाला * । हिकाला ५

देखाबिधिबिचारिसबलायक।दक्षहिकीन्हप्रजापतिनायक ६

बड़अधिकारदक्षजबपावा । अतिअभिमानहृदयतबआवा ७

नहिं असकोउजन्मेउजगमाहीं । प्रभुतापाइजाहिमदनाहीं ८

दो० दक्षलिये मुनि बोलिसब करनलगे बड़याग ॥

नेवते सादर सकलसुर जेपावहिं मख भाग १

५९ जब सत्तासी हजार वर्ष समाधिहीमें बीते तब श्रीराम आज्ञा भई तबमहादेव समाधि को त्यागकीन्ह्यो जो कोई कहै कि सत्तासीहजार वर्ष समाधि में महादेव जी रहे अरु चौदह वर्ष बीते श्रीरामचन्द्र लंका जीति आये तहां राज्याभिषेक में शिव आये यह संदेह है तहां शिव ईश्वरहैं सब प्रकार समर्त्थ हैं किंतु शिव की समाधि ही को स्वरूप राम राज्याभिषेक में प्रत्यक्ष भयो (२) पुनि उनसठि अष्टपदी की तीसरी चौपाई ते छः चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (६) दक्ष बड़े अधिकारको प्राप्त भयो ताते महा अभिमान भयो (७) ऐसोजगत्में कोई नहीं है दूजाको प्रभुता पाइकै अरु मद नहीं होइ नतुही वही करै जिनने अपनपौ मान्योहै सो मातेहैं मदअष्टहैं जाति कुल युव.रूप धन विद्या ज्ञान ध्यान प्राप्त होत सन्ते अष्टमद एक एक मद सबको बौराइ देतुहै काहे ते अपनपौ मानि लेतेहैं तहां जिनने श्री रामचन्द्रजी की समस्त बिभूति

जान्यो है सब प्रकार ते अपनपौ दूरि कियो है तिनको जो आठहूं मद प्राप्तहोयँ तहां लेशहू मद नहीं होइ (८) पुनि उनसठिही अष्टपदी के दोहाते इकसठि अष्टपदी की दूसरी चौपाई ताईं अक्षरार्थेजानब (२) ॥

किन्नरनागसिद्धगंधर्व्वा । बधुनसमेतचलेसुरसर्व्वा * १
विष्णुविरंचिमहेशविहाई । चलेसकलसुरयानबनाई * २
सतीबिलोकेउव्योमविमाना । जातचलेसुंदरविधिनाना ३
सुरसुन्दरीकरहिंकलगाना । सुनतश्रवणछूटहिंमुनिध्याना ४
पूंछेउतबशिवकहाबखानी । पितायज्ञसुनिकछुहरषानी ५
जोमहेशमोहिंआयसुदेहीं । कछुदिनजाइरहौंमिसुयेहीं ६
पतिपरित्यागहृदयदुखभारी । कहैंननिजअपराधबिचारी ७
बोलींसतीमनोहरबानी * । भयसंकोचप्रेमरससानी * ८

दो० पिताभवन उत्सव परम जोप्रभु आयसु होय ॥
जाउं कृपायतन सादर देखन सोय १

६१ कहेउनीकमोरेमनभावा । यहअनुचितनहिंनेवतपठावा * १
दक्षसकलनिजसुताबुलाई । हमरेबैरतुम्हैंबिसराई * * २
। ३
जोबिनुबोलेजाहुभवानी । रहैनशीलसनेहनकानी * * ४
यदपिमित्रप्रभुपितुगुरुगेहा । जाइयबिनुबोलेनसंदेहा * ५
तदपिबिरोधमानजहंकोई । तहांगयेकल्याणनहोई * * ६
भांतिअनेकशंभुसमुझावा । भावीवशनज्ञानउरआवा * ७
कहप्रभुजाहुजोबिनहिंबोलाये । नहिंभलिबातहमारेभाये ८

दो० कहि देखा हर यत्न बहु रहै न दक्ष कुमारि ॥
दियेमुख्यगण सङ्गतब बिदाकियेत्रिपुरारि १

६१ एक समय में महादेव ब्रह्माकी सभा में बैठे रहे तेही कालमें दक्ष प्रजापति आय प्राप्त भयो तहां ब्रह्माकी सभामें जेते देव मुनि सिद्ध इत्यादिक रहे तिन सबै मिलि दक्षकी प्रजापति मानिकै आदर भाव करते भये तहां पितामह ब्रह्मा नहीं उठे अरु महादेव ईश्वर अरु श्रीराम भक्तिते बिरक्त महादेव नतौ आदर कियो नतौ निरादर कियो एकरस बैठे रहेहैं तहां दक्ष ऐश्वर्य मद पाइकै शिवजी को निरादर बचन बहुत कह्यो शिवजी नहीं बोले पुनि दक्ष शाप दीन्ह्यो यह कह्यो कि यज्ञ में

तुम्हारो भाग नहीं मिलै तब दक्षको नन्दीश्वर शाप देतभयो यह कह्यो कि जो प्रजा पति भयोहै अरु यज्ञ जो करैगो सो नष्ट होइजाइगो तब भृगुमुनि विचार कीन्ह्यो कि जो दक्षको यज्ञ पूर्ण होतो तौ समस्त मुनिनको पूजा होती वेद करिकै सत्कर्म्म होतो यह समुझिकै भृगुमुनिको पक्षकरिकै शाप दीन्ह्यो कि जहां लगि शिवके गण होहु तिनमें ब्राह्मणके अपमान करें पापंडी होइँ पुनि नन्दीश्वर शाप दीन्ह्यो कि जेते ब्राह्मण तुम्हैं इत्यादिक सकामी होहिं ते समस्त विद्या पढ़हिं पर तत्त्व को नहीं प्राप्त होहिं पुनि भृगु शाप देबेको कीन्हो तब लगि शिवजी नन्दीपर आरूढ़ ह्वैकै कैलास को आवते भये तेही समय में दक्ष जोहै सो शिवते ईर्षा करत भयो यह सब कथा महादेव सतीजीते कहते भये हे सतीजी जब हम ब्रह्माकी सभामें गयेरहे तब तुम कैलासमें रहिहु ताते हमारे मनमें यह आवत है कि तुम दक्षकी यज्ञ में नहीं जाहु (३) पुनि इकसठि अष्टपदी की चौथी चौपाई ते बासठि अष्टपदी के दोहा ताईं अक्षरार्थ जानब (१)॥

** १

सादरभलेहिमिलीइकमाता। जननीमिलीबहुतमुसक्याता २

पूंछीकुशलाता। सतिहिबिलोकिजरेउसबगाता ३

सतीजाइदेखेउतबयागा *। कतहुंनदीखशंभुकरभागा * ४

तबचितचढेउजोशंकरकहेऊ। प्रभुअपमानसमुझिउरदहेऊ ५

पाछिलदुखनअसहृदयनब्यापा। जसयहभयउमहापरितापा ६

। सबतेकठिनजातिअपमाना * ७

समुझिसोसतिहिभयोअतिक्रोधा। बहुबिधिजननीकीन्हप्रबोधा ८

दो० शिव अपमान न जाइसहि हृदय न होय प्रबोध॥

सकलसभाहिहठि हटकि तबबोलीं बचनसक्रोध १

सुनहुसभासदसकलमुनिन्दा। कहीसुनीजिनशंकरनिन्दा १

सो ... भलीभांतिपाछितापिताहू * २

संतशम्भुश्रीपतिअपबादा। सुनियजहांतहंअसिमर्यादा ३

काटियजीभजोबसबसाई। श्रवणमूंदिनतुचलियपराई * ४

जगदात्मामहेशपुरारी। जगतजनकसबकेहितकारी * ५

पितामन्दमतिनिन्दततेही। दक्षशुक्रसम्भवयहदेही * ६

तजिहौंतुरतदेहतेहिहेतू *। उरधरिचन्द्रमौलिवृषकेतू * ७

असकहियोगअग्नितनजारा। भयउसकलमखहाहाकारा ८

कवन सवखीश ॥
यज्ञ बिध्वंस बिलोकि भृगु रक्षा कीन्ह मुनीश १

६३ कहिबे को तौ तुम्हारी सब सभा है पर तुम सब असद्बुद्धिहहु (१) तब अपने अपने कर्मके फलको भली प्रकारते प्राप्त होहुगे अरु पिता भली भांतिते पछिताइगो (२) सन्त कैसहू होइ अरु शंभु अरु श्रीपति इनको अपमान निन्दाकरै अरु जो कोई सुनै तौ द्वौ को कोटिन गोबध को पाप होतहै तहां असि मर्याद वेदहू में सुनाहै (३) कि निन्दक की जीभ काटिलेइ कैसे काटै संस्कृत किन्तु भाषा किन्तु युक्ति उक्ति चातुर्यता इत्यादिक कोई यत्नते निंदक की बाणी को खण्डनकरिडारै आगे जो नहीं सामर्थ्य होइ तौ उसको पाषण्डी कहिकै श्रवण मूंदिकै भागि जाय तब वह पाप मिटैहै अरु मैंतो सबकी जीभ काटिबे को समर्थ हौं (४) तहां महेश जगत् के आत्मा पिता हितकारी हैं (५) पिता जो शिव निन्दक है ताहीके बीर्यते मेरो शरीर उत्पन्न है (६) तातें यह शरीरही चन्द्रमौलिको हृदय में धरिकै त्याग देउँगी (७) तब सतीजी सम्पूर्ण सभाकोतिरस्कारकरिकै योगाग्नि प्रकटकरिकै शरीरभस्मकरिदियो (८) दोहार्थ ॥ तब शिवके गण उत्पात करनेलगे तब भृगुभंजन करिकै रक्षा कीन (१) ॥

६४ समाचारजबशंकरपाये । वीरभद्रकरिकोपपठाये * * १

न्हा। सकलसुरनबिधिवतफलदीन्हा २

विदितदक्षगतिसो

यहहोतहाससकलजगजाना । तातें ...ना * * ४

सतीमरतहरिसनवरमांगा *। जन्मजन्मशिवपदअनुरागा ५

तेहिकारणहिमगिरिगृहजाई । जन्मीपारबतीतनपाई * ६

जबतेउमाशैलगृहजाई *। सकलसिद्धिसम्पतितहँछाई ७

जहँतहँमुनिनसुआसनकीन्हा । उचितवासहिमभूधरदीन्हा ८

दो० सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति ॥
प्रकटीं सुन्दर शैलपर मणि आकर बहु भांति १

६४ तब समस्त समाचार नारदजी महादेवते कह्यो जाइ तब महादेव ने अपने कोपकी मूर्ति वीरभद्र तिनको बहुतसेना संयुक्त पठावते भये (१) तिन जाइकै यज्ञ बिध्वंसकियो अरु सबको यथा योग्य दण्ड दियो (२) शंभुके बिमुख के हवाल राजा दक्ष ते जानिलेव (३) महादेव की दोहाई करिकै संपूर्ण यज्ञको भाग भक्षण करिकै कैलासको जातभये सो प्रसिद्ध है (४) पुनि चौंसठि अष्टपदी की पांचवीं चौपाई ते पैंसठि अष्टपदी की दूसरी चौपाई ताईं अर्थ जानब (२)॥

सरपुनीतजलबहहीं । खगमृगमधुपसुखीसबरहहीं १
सहजबैरसबजीवनत्यागा * । गिरिपरसकलकरहिंअनुरागा २

*

नितनूतनमंगलगृहतासू *। ब्रह्मादिकगावहिंयशजासू ४
नारदसमाचारसबपाये । कौतुकहीगिरिगेहसिधाये * ५
शैलराजबड़आदरकीन्हा । पदपखारिबरआसनदीन्हा * ६
चारा ७
निजसौभाग्यबहुतगिरिबरणा । सुताबोलिमेलीमुनिचरणा ८
दो० त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम गति सर्वत्र तुम्हारि ॥

। जब पार्वतीजी हिमाचल के गृहमें उत्पन्न होती भई तब शैलराज कैसे शोभित हैं जैसे श्रीरामचन्द्र की भक्ति पाइकै सन्त जन शोभित होतेहैं (३) सबके गृह मंगलमय भये ब्रह्मादिक यश गावते हैं (४) पार्वती को जन्म सुनिकै श्रीनारदजी आवते भये (५) तब हिमाचल षोड़श प्रकार पूजन करते भये (६) पुनि नारि युक्त मुनिपद बन्दि धोइ गृह सींचते भये (७) पार्वती को पांयन में डारते भये (८) दोहार्थ ॥ हे महा मुनि कन्या के लक्षण कहो (१) ॥

छं कहमुनिबिहँसिगूढ़मृदुबानी । सुतातुम्हारिसकलगुणखानी १
सुन्दरिसहजसुशीलसयानी । नामउमाअंबिकाभवानी * २
सबलक्षणसम्पन्नकुमारी * । होइहिसन्ततपियहिंपियारी ३
सदाअचलयहिकरअहिवाता । यहितेयशपैहहिंपितुमाता ४
होइहिपूज्यसकलजगमाहीं । यहिसेवतकछुदुर्लभनाहीं * ५
यहिकरनामसुमिरिसंसारा । तियचढ़िहहिंपतिब्रतअसिधारा ६
शैलसुलक्षणसुतातुम्हारी * । सुनहुजेअबअवगुणदुइचारी ७
अगुणअमानमातुपितुहीना । उदासीनसबसंशयक्षीना * ८
दो० योगी जटिल अकाम मन नग्न अमंगल वेष ॥
अस स्वामी यहि कहँ मिलिहि परी हस्तअसरेख १

छं तब मुनि बिहँसिकै कोमल बचन कहते हैं बिहँसे क्यों शुभाशुभ अनेक लक्षण देखिकै बिहँसत भये तब छिपी छिपी बातैं कहते हैं (१) पुनि छांछठि अष्टपदी की दुइ चौपाई ते सरसठि अष्टपदी की एक चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (१)॥

। दुखदम्पतिहिउमाहरषानी १

नारदहूयहभेदनजाना ＊ ＊ । दशाएक

।। पुः

।＊। उमासोबचनहृदय

उपज ठलमनभासटहू ＊ ५

ातदुराइ ＊ । ＊

ह ७

ाऊ ＊ । कहहुनाथकाक ८

हिमवं

व दनुज नर

६७ यह भेद नारदहू नहीं जान्यो है कौन भेद है जो नारद कह्यो है सो सम्पूर्ण रानी अरु सर्व सखी अरु पार्वतीजी रोवने लगीं यह भेद नारदहू नहीं जान्यो तहां यह दशा समुझत संते भेद बिलगाय गयो कि पार्वती के आनन्द भरे आंशू हैं और सबके शोच भरे आंशू हैं यह सामान्य अर्थ है पुनि दूसरा अर्थ जो पार्वती के गुण अगुण बिचारेउ सो यह भेद नारदहू नहीं जान्यो कि पार्वती को कौन बर मिले गो जब वैसी दशा शिवमें समुझत भये तब भेद बिलगाइ गयो तब कहने लगे (२) पुनि सरसठि की अष्टपदीकी तीसरी चौपाई ते अड़सठि अष्टपदी की चार चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (४) ॥

६८ तदपिएकमैंकहहुं उपाई ＊ । होइकियेजोदैवसहाई ＊ ＊ १

जसबरमैंबरणेउँतुमपाहीं । मिलिहिउमाहिंतससंशयनाहीं २

जेजेबरकेदोषबखाने ＊ ＊ । तेसबशिवपहँमैंअनुमाने ＊ ＊ ३

जोबिवाहशंकरसनहोई ＊ । दोषउगुणसमकहसबकोई ＊ ४

जोअहिसेजशयनहरिकरहीं । बुधकछुतिनकहँदोषनधरहीं ५

भानुकृशानुसर्बरसखाहीं ＊ । तिनकहँमन्दकहतकोउनाहीं ६

शुभअरुअशुभसलिलसबबहई । सुरसरिकोउअपुनीतनकहई ७

समरथकहँनहिंदोषगुसाईं । रविपावकसुरसरिकीनाईं ＊ ८

दो० जो कार बवक अभिमान ॥

ं कल्पभरि नरकमहँ जीव कि ईश समान १

नारद बोले हे हिमाचलजी जो तुम्हारी कन्याकी अरु शिवकी विवाह होइ तो जेते दूषण हैं ते सब दिव्य भूषण होइ जाहिंगे जो सर्प चिता कै बिभूति सिंह चर्म अस्थि इत्यादिक जो अशुभ पदार्थ महादेव ग्रहण किहेहैं तहां महादेव के अंग अंगते सब परम दिव्य होइ रहेहैं (५) देखिये तो जो नारायण सर्प शय्या पर शयन करते हैं तहां पंडित जन नहीं दूषण धरैं (६) देखिये तो भानु अरु कृशानु सर्व रस शुभाशुभ भक्षण करते हैं पर तिनको अज्ञानी कोई नहीं कहै (७) सुरसरी में शुभाशुभ सब पदार्थ बहे चले जाते हैं पर सुरसरीको अपवित्र कोई नहीं कहै (८) तहां इत्यादिक ईश्वर तत्त्व है समर्थ है इनको दोष नहीं लगै इनके संयोग ते दूषण भूषण ह्वै जाते हैं (६) दोहार्थ ॥ जोपै ऐसो हसको कहै बराबरि कोई जीव करै कि जीव अरु ईश्वर तत्त्व एकही है जो ईश्वर शुभाशुभ करैहै तौ ईश्वर को नहीं लगै तैसे जीवहूको नहीं लगै जो ऐसो कहै तो एक कल्पभरि नरक में रहै पुनि चौरासी को जाइ काहते जीव ईशको समता को कभी नहीं है (१) ॥

६९ सुरसरिजलकृतबारुणिजाना। कबहुंनसन्तकरहिंत्यहिपाना १
सुरसरिमिलसोपावनकैसे *। ईशअनीशहिअंतरजैसे * * २
शम्भुसहजसमरथभगवाना। यहिबिवाहसबबिधिकल्याना ३
दुराराध्यपैअहहिंमहेशू *। आशुतोषपुनिकियेकलेशू * ४
जोतपकरैकुमारितुम्हारी । भाविउमेटिसकहिंत्रिपुरारी * ५
यद्यपिबरअनेकजगमाहीं *। इनकहँशिवतजिदूसरनाहीं ६
बरदायकप्रणतारतभंजन *। कृपासिंधुसेवकमनरंजन * ७
इच्छितफलबिनशिवअवराधे। लहहिनकोटियोगजपसाधे ८
० अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्ह अशीश॥
होइहि अब कल्याण सब संशय तजहु गिरीश १

६९ देखिये तो कोई नीचजाति सुरसरी को जल कछुक भरि लैगयो तहां कोई तरु को फल कोई तरु को छिलका अरु मिठाई इत्यादिक गंगा जल में मिलाइकै कृत कहे मदिरा करत भयो ताको भले आदमी नहीं पान करते हैं अरु जो वहै फल छिलका मिठाई हजारन मन गंगा की धारामें डारि देव तो यह सब पावन होइ जातहै तैसे जीव अल्पज्ञ है अनादि कालते कर्म्मन के बश परेउहै ताते अनेक बिकार काम क्रोध लोभ इत्यादिक धारण करि रह्योहै ताते तिन जीवन कै संगति सन्त जन नहीं करते हैं तिन को बचन नहीं पान करते हैं (१) प्रत्यक्ष देखिये जैसे सुरसरी में जो परै सोई पावन होतहै तैसे जो ईश अनेक बिकार धारण करै तो समस्त बिकारहू निर्बिकार होइ जातहैं तिन ईश को सन्तजन भजते हैं हे हिमाचल तैसेही महा-

देवको जानहु अरु जो सुरसरीको छूट जल तामें अर्घ्य करते ८ सो नहीं ८ अथ जो कहते हैं कि जो वही मद गंगामें परै तो गंगा होइ जातहै तैसे जीव ईशको जाने ते ईश होतहै सो यहां यहि अर्थ को प्रयोजनै नहीं है (२) पर महादेव दुराराध्य हैं दुराराध्य कही दुस्तर जिनको अवराधन है पर जो तुम्हारी कन्या क्लेश करिकै तपकरै तो महेश मिलहिंगे काहेते महेश सर्व कामके दाता हैं (३) पुनि चारिकी चौपाई ते आठकी चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब (८) दोहार्थ ॥ ऐसे अनेक बातें कहि कै नारद हरि को सुमिरि कै गिरिजा को अशीश दैकै ब्रह्मलोकको जाते भये (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेसतीपरित्यागपुनर्जन्मवर्णनंनामपंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

दोहा ॥ दश अरु षट्तरंग में शुभ नारद उपदेश ॥
रामचरण पार्वतीतप महामुनिनकर देश १६

७० असकहिब्रह्मभवनमुनिगयऊ।आगिलचरितसुनहुजसभयऊ १
पतिहिइकान्तपाइकहमयना।नाथनमैंसमुझेउमुनिबयना२
जोघरबरकुलहोयअनूपा * *।
ततुकन्याबरुरहैकुमारी * *।क
जोनमिलीबरगिरिजहियोगू।गिरिजड़सहजकहहिंसबलोगू५
सोइबिचारिपतिकरेहुबिवाहू। जेहिनबहोरिहोयउरदाहू ६
असकहिपरीचरणधरिशीशा। बोलेसहितसनेहगिरीशा ७
बरुपावकप्रकटैशशिमाहीं ।नारदवचनअन्यथानाहीं * ८

दो० प्रिया शोच परिहरहु अब सुमिरहु श्री भगवान ॥
पार्ब्बती निर्मयउ जिन सोइ करिहैं कल्यान १

७० पुनि एककी चौपाई ते आठकी चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब (८) दोहार्थ॥ हिमाचल कहतहैं हे प्रिया शोच को त्याग करहु श्री भगवान् को सुमिरण करहु जो परमेश्वर पार्ब्बती को निर्मित कीनहै सोई तुम्हारो कल्याण करैगो प्रभु समर्थ्थ है सर्व जीव को हितकारी है प्रभु जो करैगो सो नीकही करैगो तुम न शोचकरौ

७१अबजोतुमहिंसुतापरनेहू *। तौयहजायसिखावनदेहू * १
करइसोतपजेहिमिल हकलेशू२
नारदवचनस *।सुन्दरसबगुणनिधिवृषकेतू * ३
अशंका।सबहिभांतिशंकरनिकलंका४
मुनिपतिबचनहृदयमनमाहीं ।गईतुरतउठिगिरिजापाहीं* ५

उमहिं बिलोकिनयनभरिबारी । सहितसनेहगोदबैठारी ॥ ६
बारहिबारलेतिउरलाई ॥ ॥ । गद्गदकंठनकछुकहिजाई ७
[सर्वज्ञभव] ॥ ॥ । मातुसुखदबोलीमृदुबानी ८

दो० सुनहु मातु मैं दीख अस स्वप्न सुनावहुं तोहिं ॥
सुंदर बिप्र सुगौर बर अस उपदेशेहु मोहिं १

७१ पुनि एक की चौपाई ते आठकी चौपाई ताईं अक्षरार्थें जानब (८) दोहार्थ ॥ पार्ब्बती जी भवानी हैं आद्या शक्ति हैं त्रिकालज्ञा हैं तहां युक्ति करिकै माता को बोध करती हैं हे मातु स्वप्न बिषे गौर ब्राह्मण मोको उपदेश करतहै हे उमा तप करु तप करु यह सुनिकै रानी राजा ते बूझि कै आनन्दको प्राप्त भई (१)

७२ करहु जायतपशैलकुमारी । नारदकहासोसत्यबिचारी ॥ १
मातुपितहिपुनियहमतभावा । तपसुखप्रदुखदोषनशावा २
तपबलरचैप्रपंचबिधाता ॥ । तपबलबिष्णुसकलजगत्राता ३
तपबलशम्भुकरहिंसंहारा ॥ । तपबलशेषधरहिंमहिभारा ४
तपअधारसबसृष्टिभवानी ॥ । करहुजायतपअसजियजानी ५
सुनतबचनबिस्मितमहतारी । स्वप्नसुनायहुगिरिहिहँकारी ६
मातुपितहिबहुबिधिसमुझाई । चलीउमातपहितहरषाई ७
प्रियपरिवारपिताअरुमाता । भयेबिकलमुखआवनबाता ८

दो० वेदशिरा मुनि आयतब सबहिं कहा समुझाइ ॥
पार्ब्बती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ १

७२ पुनि एककी चौपाई ते आठकी चौपाई ताईं अक्षरार्थें जानब (८) दोहार्थ ॥ पार्वतीको स्वप्न सुनिकै अरु वेदशिरानामे जो मुनि तिनने पार्वती की महिमा सब समुझाइ दियो तब अच्छीतरह माता पितादिक प्रबोधको प्राप्तभये (१) पुनि तिहत्तरि अष्टपदीकी एक चौपाई ते पचहत्तरि अष्टपदी की एक चौपाई ताईं अक्षरार्थें जानब(१)॥

७३ उरधरिधीरप्राणपतिचरणा । जाइबिपिनलागींतपकरणा १
अतिसुकुमारिनतनतपयोगू । पतिपदसुमिरितज्योसबभोगू २
नितनवचरणउपजअनुरागा । बिसरीदेहतपहिमनलागा ॥ ३
संवतसहससूलफलखाये । शाकखाइशतवर्षगँवाये ॥ ॥ ४
कछुदिनभोजनबारिबतासा । कियेकठिनकछुदिनउपवासा ५
बिल्वपत्रमहिपरहिंसुखाई । तीनिसहससंवतसोइखाई ॥ ६
पुनिपरिहरेहुसुखान्योपर्णा । उमहिंनामतबभयउअपर्णा ७

अउ ... ारी । ब्र ...गिराभइगगनगँभीरा * ८
बि
हिं त्रिपुरारि १

अबउरबरहुब्रह्मबखानी । सत्यसदासंततशुचिजानी * २
...ताको आवनजबहीं । हठपरिहरिगृहजायहुतबहीं * ३
...तुमहिंजबसप्तऋषीशा । तबजानेहु प्रमाणबागीशा ४
सुनतगिराविधिगगनबखानी । पुलकगातगिरिजाहर्षानी ५
उमाचरितसुंदरमैंगावा । सुनहुशम्भुकरचरितसुहावा * ६
जबतेसतीजाइतनत्यागा । तबतेशिवमनभयउबिरागा * ७
जपहिंसदारघुनायकनामा । जहँतहँसुनहिंरामगुणग्रामा ८

दो० चिदानंद सुखधाम शिव बिगतमोह मद काम ॥
बिचरहिंमहिधरिहृदयहरि सकललोकअभिराम १

७५कतहुंमुनिनउपदेशहिंज्ञाना। कतहुंरामगुणकरहिंबखाना १
यदपिअकामतदपिभगवाना। भक्तबिरहदुखदुखितसुजाना २
यहिबिधिगयउकालबहुबीती । नितनवहोइरामपदप्रीती ३
नेमप्रेमशंकरकरदेखा। अबिचलहृदयभक्तिकीरेखा * ४
प्रकटेरामकृतज्ञकृपाला। रूपशीलनिधितेजबिशाला * ५
बहुप्रकारशंकरहिसराहा। तुमबिनअसप्रणकोनिर्बाहा * ६
बहुबिधिरामशिवहिसमुझावा । पार्बतीकरजन्मसुनावा ७
अतिपुनीतगिरिजाकीकरणी। बिस्तरसहितकृपानिधिबरणी ८

दो० अबबिनतीममसुनहुशिव जोमोपर निजनेहु ॥
जाइबिबाहहु शैलजहि यहमोहिं मांगेदेहु १

७५ यद्यपि महादेव निष्काम हैं तदपि भगवान्‌हैं चाहै तसरहैं भगवान्‌की (श्लोक पोषणंभरणाधारं शरण्यंसर्वव्यापकं ॥ कारुण्यंषड्भिःपूर्णो रामस्तुभगवान्स्वयं १ जहांएते षड्भाग पूर्णहोहिं ताको स्वयंभगवान् कही जहां कछुकमहोइ तिनहूं को भगवान्‌कही पर अंशकला बिभूतिकही ताते सतीजो परम भक्तिमान् तिनके दुःखतेभये काहेते भगवान्‌हैं रामानन्यहैं (२) पुनि पचहत्तरि अष्टपदी की तीन चौपाईते सतहत्तरि अष्टपदी के दोहाताईं अन्वयार्थजानब (१)

७६ कहशिवयदपिउचितअसनाहीं। नाथबचनपुनिमेटिनजाहीं १
शिरधरिआयसुकरियतुम्हारा। परमधर्मयहनाथहमारा २
मातपिताप्रभुगुरुकीबानी। बिनहिंबिचारकरियशुभजानी ३
। ।शिरपरस * ४
युतरचना * ५
। अबउररावडजाहमकहेऊ * ६
अन्तर्द्धानभयेअसभाखी * । शंकरसोइमूरतिउरराखी * ७
। बोलेहरअतिवचनसहाये ८
दो० पार्व्वती पहं जाइ तुम प्रेम परीक्षा लेहु ॥
हि प्रेरि　　हुसन्देहु १
७७ मुनिशिवबचनपरमसुखमानी। चलेहर्षिजहँरहींभवानी * १
ऋषिनगौरिदेखीतहंकैसी * । मूरतिवन्ततपस्याजैसी * २
बोलेमुनिसुनुशैलकुमारी * । करहुकवनकारणतपभारी ३
हू। हमसनसत्यमर्मसबकहहू * ४
सुनतऋषिनकेवचनभवानी। बोलीगूढ़मनोहरबानी * * ५
कहतमर्ममनअतिसकुचाई। हँसिहहुसुनिहमारिजड़ताई ६
। चहतबारिपरभीतिउठावा ७
। उड़ाना * ८
देखहुमुनिअविवेकहमारा। चाहियशिवहिसदाभर्त्तारा ९
दो० सुनतबचन विहँसेऋषय गिरिसम्भवतवदेह ॥
नारदकर उपदेश सुनि कहहुबस्यो केहि गेह १
दक्षसुतनउपदेशिनजाई * । तिनपुनिभवननदेखाआई * १
चित्रकेतुकरघरउनघाला। कनककशिपुकरपुनिअसहाला २
नारदशिषजुसुनहिंनरनारी। अवशिहोहिंतजिभवनभिखारी ३
मनकपटीतनसज्जनचीन्हा। आपसरिससबहीचहकीन्हा ४
तिनकेबचनमानिविश्वासा। तुमचाहहुपतिसहजउदासा * ५
निरगुणनिलजकुवेषकपाली। अकुलअगेहदिगम्बरव्याली ६
कहहुकवनसुखअसबरपाये। भलभूलिहुठगकेबौराये * ७

।बिबाही। पुनिअवरेहिमरावलि ८

दो० अजहुंतलसोवतमोचनहिं औरवसांगिभखवाहिं ॥
सहजसखाछिनकेभवनकबहुंकिनारिखटाहिं १

७८ दक्षप्रजापति ब्रह्माके पुत्रहैं तहां पिताकी आज्ञाते प्रथम हज़ारपुत्र उत्पन्न कियो पुनि दशहज़ार उत्पन्न कियो जब सातवर्षके सब पुत्रभये तब पिताने आज्ञा दई हे पुत्रहु तुमजाइ तपकरहु उपरान्त सृष्टिकरहु तब समस्त पुत्र बनमें जाइकै गंगाके तट तपस्या करनेलगे तहां श्रीनारदजी प्राप्त भये तहां समस्त बालकनको देखते भये अति सुन्दर शुद्ध हृदय शुद्धदशा देखिकै नारदजी बूझतेभये हे बालकहु तुम समस्त किसके पुत्रहौ तब वे बोलतेभये हम दक्षप्रजापतिके पुत्रहैं पिताकी आज्ञाते तपकरिकै बिवाहकरिकै सृष्टि करहिंगे तब नारदजी बिचारकीन कि येतो मोक्षके अधिकारी हैं इनको बिषयकी पवननहीं लगी उपदेशके पात्रहैं यह बिचारिकै नारदजी बोलतेभये हे बालकहु तुम अपनो जन्म क्यों खोवतेहौ यह जो संसारहै सोतौ बंधनरूपहै स्त्री पुत्र पौत्र धन धाम इत्यादिक जीवके फांसीहैं इनके बश ह्वैकै जीव चौरासी में भ्रमते हैं अनेक दुःख सहते हैं इन सबनकों त्यागिकै बड़े बड़े चक्रवर्ती राज्यको त्यागिकै ईश्वरको स्मरण करिकै ईश्वरको प्राप्तभये हैं यह संसार अनित्यहै अरु तिसके हेतु तुम तपस्या करतेहौ तुम बड़े अज्ञान। [illegible] बालकै तौ [illegible] तुमकहो कि पिता की आज्ञाहै तहां जो परमेश्वरकी ओर न लगावै सो वह गुरुनहीं वे माता पिता पति पुत्र मित्र धन इत्यादिक सब वृथा हैं ताते हे बालकहु तुम सत्संग करिकै भगवद्भजन करिकै भगवत्को प्राप्तहोहु तहां प्रमाणहै [भागवतश्लोक] गुरुर्नसस्यात्स्वजनोन सस्यात्पितानसस्याज्जननीनसास्यात् ॥ दैवंनतत्स्यान्नपतिश्चसस्यान्नमोचयेद्यःसमुपेत मृत्युम् १ तहां नारदकी बचनसुनिकै बालकन को ज्ञानभयो तब समस्त बालक बोलते भये तुम कौनहु तब मुनि बोले हम नारदहैं ब्रह्माके पुत्रहैं हमको ब्रह्माने सृष्टि की आज्ञादई हमने नहीं मान्यो तब ब्रह्मा हमारे ऊपर बहुत प्रसन्नभये नारदजी कहते हैं हे बालकहु तुम्हारोपिता अरु हम दोऊ ब्रह्माके पुत्रहैं तुम्हारोपिता बिषयको अंगीकार कियो अरु हम विषयको त्यागिकै भगवद्विषयको प्राप्तभये हे बालकहुतुमको ज्ञान प्राप्तभयोहै देखोतौ ऐसोकौन अभागीहै जो कल्पतरु कामधेनु अमृत इनकोतजिकै रेंड़ अरु गदही अरु बिषय इनको सेवनकरैहै यह बचन सुनिकै सब बालक बोलते भये हे श्रीनारदजी आप हमको शिष्य करो जो आप कहोगे सोई हम करैंगे तब नारद जी सबन को बासुदेवमंत्र उपदेश करिकै ध्यान बतावते हैं हे बालकहु तुम अपने नासाग्र दृष्टिकरो पलक नहींचलै समाधान ह्वैकै स्वस्वरूप देखहु तब कछुकालमें तुमको परब्रह्म को स्वरूप देखिपरैगो तब तुम कृतार्थ ह्वैजाहुगे अरु तुमको शीतोष्ण क्षुधा पिपासादिक नहीं ब्यापैगी पर तुमको जब पिता बुलावने आवै केतउकरै तब तुम उनको बचन नहीं सुनहुगे तब अपने ध्यानमें तत्पररहना अरुजो किसीका बचन सुनहुगे तब बिघ्न ह्वैजायगो यह कहिकै नारद ब्रह्मलोकको गये तब कछुकाल बीते दक्ष पुत्रन के

पोलाउनेको गये यह कह्यो हे पुत्रहु तुम्हारी तपस्या पूर्णगई अब उठौ चलौ तहां को सुनै उनको तौ निर्विकल्प समाधि लगिरही है तब ब्रह्मवाणीभई इनको नारदको उपदेश भयोहै अब ये तुम्हारे कामके नहींहैं तब दक्ष खीझिकै फिरिगये ते सब संसार सागर दुःखरूप तामें फिरि नहीं आये मोक्षको प्राप्त भये (१) चित्रकेतु चक्रवर्ती राजा तिनके षोड़शसहस्र रानीरहैं पर पुत्र काहूके नहींरहै तहांराजा बिनापुत्र दुखितरहै तब राजाने अंगिरामुनिको सेवा नीकीप्रकारकियो तब मुनि प्रसन्नह्वैकै कह्यो हेराजन्तुम्हारी छोटी रानीके एकपुत्र होइगो तब राजा हर्षको प्राप्तभयो तब कछुक कालबीते राजाके पुत्रभयो तब राजा प्रजाको बड़ोआनन्दभयोअरु पुत्रवती रानीकोबड़ोआदरभयो तहां अपर जे रहीं ते सब मिलिकै यह बिचार कीन कि जेहि रानी के पुत्र भयो सोई मालिकिनि भई तब ईर्षा और सम्मति करिकै पुत्र को बिषदियो पुत्र मरि गयो तब राजा के महा शोक उत्पन्न भयो तब अंगिरा मुनि ज्ञान बैराग्य योग स्वार्थ परमार्थ अनेक विधि करिकै समुझावते भये राजा को मोह नहीं गयो अब अंगिरा ऋषि नारद को स्मरण कीन्ह नारदजू आइ प्राप्त भये तब नारद राजा को समझायो पर राजा को मोह नहीं गयो तब नारदजू कहा कि हे राजन् चलो तौ पुत्रसे बूझैं कि तुम कोही अरु कैसे तुममरेहु तब राजा ने कहा कि बालक तो मरिगयो किसतरह बूझैंगे तब नारद ने कहा कि मरब जियब हानि लाभ इत्यादिक अज्ञान दशा में सब हैं जो ज्ञान करिकै देखहु तो आत्मा नित्य है आनन्द स्वरूप है न किसू को पुत्र है न किसू को पिता है न हर्ष न शोक न दुख न सुख आत्मा सबते रहित है हे राजन् तुम चलो तो वह बालकै सब कहैगो तब नारद जी अंगिरा जी राजा संयुक्त समस्त समाज बालक के पास गये तब नारद जी ईश्वर के प्रताप से बालक ते बोलते भये हे बालक तुम उठहु राजा ते बार्ता करहु नारद जीके प्रताप ते बालक उठि बैठेउ पुनि बालक बोलत भयो हे राजन् तुम काहे को शोच करते हो कौन किसका पुत्रहै कौन किसका पिताहै देखो तो जो किनूने अपनो पुत्र मान्यो है अरु पुत्र ने पिता मान्यो है तहां जब आइ के कोई क्लेश प्राप्त भयो तब न तो पिता को मिटायो पुत्र को क्लेश जाइ न तो पुत्र को मिटायो पिता को क्लेश जाइ देखिये इतना तो किसूका किया होतही नहीं इन्हों ने अपनपौ कहा मानि लियोहै यह तो सब पिता पुत्र दारा मित्र अरुहानि लाभ हर्ष शोक धन धाम एते भगवत् मायाके बिलास हैं सो कैसे हैं जैसे मृग तृष्णा को जल जैसे सीप में रजत जैसे भूतकी मिठाई अरु प्रेतकी अग्नि देखिबे मात्र है भ्रम दायक है दुःख दायक है केवल क्लेशही है ताते राजन् सब त्यागि भगवच्छरण होहु कृतार्थ होहु अरु हमारी दशा सुनो मैं जोहौं सो पंचाल देश को राजा रहों कोई मुनि के उपदेश ते राज्य त्यागि कै बिरक्त भयों भगवान् की शरण भयों एक समयमें मैं स्वाभाविक कहूं को जातरहौं तहां डेढ़ पहरदिन प्राप्त भयो तहां एक ग्रामते मैं भिक्षा करि ल्यायों अरु एक माई ने चारि कण्डा दियो तब मैंने स्नान करिकै शालग्राम को स्नान कराइकै नैवेद्य बनाइकै भोग लगाइकै प्रसाद पायो प्रथम कण्डा को मैंने शोधिनलियो तब पाछेको कण्डा की राख में मेरी दृष्टिगई तहांक खडा में पिपीलिका को ।

सोरह हज़ार चींटी जरिगईं तहां देखिये तो बिना बिचार की धर्म्म कर्म्म अपराधही है तहां शालग्राम को भोग लगाये सन्ते एते गुण भये वाही पुण्यते षोड़शौ हजार चींटी तेरी रानी भई हैं अरु जिनने मोको कपडा दियो सो छोटी रानी भई तिसको मैं पुत्र भयों तहां मोको तो सोरह हज़ार बार जन्म धरिबे को होत तहां एक शालग्राम को भोगलग्यो ऐसंते एक जन्म धरिबेको भयो ताते सोरहूहजार एकही साथ अपनोदांव लियो यह समुझि लेहु बहुतका कहों यह कहिकै बालक शरीरको त्यागिकै श्रीराम-चन्द्रको प्राप्तभयो तब राजाको ज्ञानभयो नारदके उपदेशते राज्यको त्यागिकै विरक्त भयो अरु सब रानी वैष्णवी भईं सब भगवत् को प्राप्तभईं नारद ऐसेहैं पुनि हिरण्य-कशिपु त्रैलोक्य राजा सो तप करिबे को गयो तहां हिरण्यकश्यप की रानी गर्भ युक्त रही तहां नारदजू जाय प्राप्त भये तब रानी के गर्भ में बालक रहे सहित रानी बालक को श्रीराम ततत्व उपदेश करने लगे काहेते जब जीव गर्भमें रहत है तब जीव को ज्ञान होत है शुद्ध दशा रहती है तहां जीवको अनेक जन्म की सुधि रहती है सारा सार को विवेक होत है तब यह आपु को धृक् मानिकै यह कहत है कि जो अबकी जगत् में जाउँ तो परमेश्वर को भजन करौं कृतार्थ होइ जाउँ ऐसे कहत सन्ते गर्भते बाहिर भयो तब प्रसव की पवन लग्यो तब ज्ञान भूलिगयो तब रोदन करने लग्यो आगे बाल पौगण्ड कौमार किशोर युवा बृद्ध इत्यादिक अवस्थनमें अनेक दुःख पावत भयो ताते श्री नारदजू प्रह्लाद को गर्भ ही बिषे उपदेश कियो तब प्रह्लाद जीकी रामाकार बृत्ति भई तेही दशा में प्रह्लाद उत्पन्न भये प्रसव को पवन स्पर्श नहीं कियो सर्ब भूत श्री राममय देखिपरेउ तहां प्रह्लादही द्वार ह्वैकै हिरण्यकश्यप को बधभयो अरु मोक्ष को प्राप्त भयो ऐसे नारद हैं यह सप्तऋषि कहते भये अरु तेहि नारद को गुरु करिकै तुम अपनी गृहस्थी कौन चहत हौ (२) सप्त ऋषि बोले हे उमा जे कोई स्त्री पुरुष नारद को उपदेश सुनैं ते विशेष गृह त्यागि कै बिरक्त होइ जाईं (३) नारद मन को कपटी है अब ऊपर के देखत सन्त है मन को बेग संकल्प बिकल्प ताको कपटि लीन्ह अथवा संसार के जाल को काटिकै अपने सदृश करते हैं ताते कपटी कहा (४) पुनि पांचकी चौपाई ते छःकी चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब (६) यह संसार में ठगि कै नाम युक्त करिकै ज्ञान वैराग्य दैकै जीव को निकासि लेते हैं ताते ठग कहा (७) पुनि अठत्तरि अष्टपदी की आठ की चौपाई ते उन्नासी अष्टपदी की सात चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब (७)॥

७९ अजहूं मानहुंकहाहमारा । हमतुमकहंवरनीकविचारा १
अतिसुन्दरशुचिसुखदसुशीला । गावहिंवेदजासुयशलीला २
दूषणरहितसकलगुणराशी * । श्रीपतिपुरवैकुंठनिवासी ३
ाउबआन। ।बिहंसिभवानी४
सत्यकहेहुगिरिभवतनयेहा । हठनछूटछूटहिबरुदेहा * ५

हि　　होई । जारेउसहजनपरिहरसोई * ६
नारदबचननमैंपरिहरऊं * । बसोभवनउजरैनहिंडरऊं * ७
गुरुकेबचनप्रतीतिनजेही * । सपनेहुंसुगमनसुखसिधितेही ८
दो० महादेव अवगुण भवन बिष्णु सकल गुणधाम ॥
जेहिकर मन रम जाहि सन ताहि तेहिसनकाम १

७९ पार्वती बोलती भई हे मुनिहु जिनके गुरुके वचन में प्रतीति नहीं है तेप्राणी कोटिन जन्मभरि अनेक कर्म धर्म ज्ञान वैराग्य करहिं पर संसारते न तरहिं गुरुकही वेदमें स्वस्वरूपमें परस्वरूपमें बोधहोइ ताको गुरुकही सो महादेव जगद्गुरुहैं (८) दोहार्थ ॥ इहां बाणी में संकेत अर्थहै अवगुण कही तीनिहुंगुणते रहित हैं अरु बिष्णु दिव्यगुणके धाम हैं हेमुनि हमारो मन महादेव सों राचेउहै (१) पुनि अस्सी अष्टपदी से तिरासी की सात चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (७) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे नारदोपदेशपार्वतीतपवर्णनंनामषोड़शस्तरंगः ॥ १६ ॥

॥ दशअरु सात तरंगमें　　समाधिको त्याग
मदन बिजयपुनि दहनतेहि रतिबरदानसोहाग १७

८० जोतुमिलतेहु प्रथममुनीशा । सुनतिहुं शिखतुमारिधरिशीशा १
अबमैंजन्मशम्भुसनहारा * । कोगुणदूषणकरैबिचारा * २
जोतुम्हरेहठहृदयबिशेषी * । रहिनजाइबिनाकियेबरेषी * ३
तौकौतुकियन्हआलसनाहीं । बरकन्याअनेकजगमाहीं * ४
जन्मकोटिलगिरगरहमारी * । बरउंशम्भुनतुरहौंकुमारी * ५
तजहुंननारदकरउपदेशू * । आपकहहिं शतबारमहेशू * ६
मैंपायपरौंकहैजगदम्बा । तुमगृहगवनहुंभयउबिलम्बा * ७
देखिप्रेमबोलेमुनिज्ञानी । जयजयजगदम्बिकेभवानी ८
दो० तुममायाभगवान शिव सकल जगतपितुमात ॥
नायचरणशिर मुनिचले पुनिपुनि हर्षितगात १

८१ जाइमुनिनहिमवंतपठाये । करिबिनतीगिरिजागृहल्याये * १
बहुरिसप्तऋषिशिवपहंजाई । कथाउमाकीसकलसुनाई २
भयेमगनशिवसुनतसनेहू * । हर्षिसप्तऋषिगवनेगेहू * * ३
मनथिरकरितबशम्भुसुजाना । लगेकरनरघुनायकध्याना ४
तारकअसुरभयउतेहिकाला । भुजप्रतापबलतेजबिशाला ५

तसबत ते ✻ ✻ ६

। ✻ ७

त ✻ ८

दो० सबसनकहाबुझाइ बिधि दनुजनिधनतबहोइ ॥
शम्भु शुक्र सम्भूतसुत यहिजीतै रणसोइ १

८२ मोरकहासुनिकरहुउपाई ✻ । होइहिईश्वर करहिसहाई ✻
तजोदससमव ✻ । जन हा ✻ २
पकीन ःतलागी । ३
यदपिअहैअसमंजसभारी ✻ । तदपिबातएकसुनहुहमारी ४
पठवहुकामजाइशिवपाहीं । करैक्षोभशंकरमनमाहीं ✻ ५
तबहमजाइशिवहिं समुझाई । करवाउबबिवाहबरिआई ६
यहिबिधिभलोहिदेवहिततहोई । मतिअतिनीककहैसबकोई ७
अस्तुतिसुरनकीन्हअसहेतू ० । प्रकटेउबिषमबाणिचरकेतू ८

दो० सुरनकहीनिजविपतिसबसुनिमनकीन्हबिचार ॥

८३ तदपिकरबमैंकाजतुम्हारा । श्रुतिकहपरमधर्म्मउपकारा १
परहितलागितजहिंजेदेहीं । सन्ततसन्तप्रशंसहिं तेहीं ✻ २
असकहिचलेउसबहिंशिरनाई। सुमनधनुषकरसहितसहाई ३
चलतमारअसहृदयबिचारा । शिवबिरोधध्रुवमरणहमारा ४
तबआपनप्रभावबिस्तारा ✻। निजबशकीन्हसकलसंसारा ५
कोपेउजबहिं बारिचरकेतू । क्षणमहँमिटेउसकलश्रुतिसेतू ६
ब्रह्मचर्य्यव्रतसंयमनाना ✻ । धीरजधर्म्मज्ञानविज्ञाना ✻ ७
सदाचारजपयोगबिरागा । सभयबिवेककटकसबभागा ८

छं० भागेउबिवेकसहायसहित सुभटसंयुग महिमुरे ।
सद्ग्रन्थपर्व्वतकन्दरन महंजाइतेहि अवसरदुरे ॥
होनिहारकाकरतारको रखवारजग खरभरपरा ॥
दुमाथकोहिरतिनाथजेहि कहँकोपिकरधनुशरधरा १

दो० ब जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम ॥
निज मर्याद तजि भये सकल बश काम १

८३ जब काम कोपेउ तब वेदमर्याद मिटिगई अरु विवेक राजा धर्मरथ धीरता ध्वजा ज्ञान खड्ग सन्तोष चर्म क्षमा बख्तर ताके बैराग्य मंत्री विज्ञान मित्र यमभट नेम सेनापति सदाचार सेना वेदाध्ययन बाजा सदन कर्म ब्रह्मचर्य व्रत इत्यादिक सो सेवक इत्यादिक सहित कटक विवेक भाग्यो सद्ग्रन्थ सोई पर्वत प्रसंग कन्दरनमें जाइ रहे (८) पुनि तिरासी अष्टपदी की छन्द ते चौरासी अष्टपदी की चार चौपाई तहँ अक्षरार्थ जानब (४)॥

सबकेहृदयमदनअभिलाषा। लतानिहारिनवहिंतरुशाखा १
नदीउमँगिअम्बुधिकहँधाईं। सङ्गमकरहिंतलावतलाईं * २
जहँअसिदशाजड़नकीबरणी। कोकहिसकैसचेतनकरणी ३
पशुपक्षीनभजलथलचारी *। भयेकामबशसमयबिसारी ४
मदनअन्धब्याकुलसबलोका। निशिदिननहिं अवलोकहिंकोका ५
देवदनुजनरकिन्नरब्याला *। प्रेतपिशाचभूतबेताला * ६
इनकैदशानकहेउंबखानी *। सदाकामकेचेरेजानी * * ७
सिद्धबिरक्तमहामुनियोगी *। तेपिकामबशभयेबियोगी ८

छं० भयेकामबशयोगीशतापस पामरनकी कोकहैं।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखतरहैं॥
अबलाबिलोकहिं पुरुषमयजगपुरुषसबअबलामयं।
दुइदण्डभरि ब्रह्माण्डभीतर कामकृत कौतुकअयं १
धरा न काहू धीर सबके मन मनसिज हरे॥
जेहि राखे रघुबीर ते उबरे तेहिकालमहं १

८४ कामके बश चक चकई निशि दिन नहीं देखहिं तहां दुइ दण्ड भरि काम कोपेउ निशिदिन कैसे सम्भवै तहां सुमेरु के दक्षिण जब सूर्य होतेहैं तब दिनहै जब सुमेरु के उत्तर तब इहां निशि है उहां दिनहै अरु काम ब्रह्मांड भरि व्यापेउ है आगे अक्षरार्थ जानब (५) पुनि चौरासी अष्टपदी की छः चौपाई ते पचासी अष्टपदी की सात चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (७)॥

८५ उभयघरीअसकौतुकभयऊ। जबलगिकामशम्भुपहँगयऊ १
शिवहिंबिलोकिसशंकेउमारू। भयउयथाथिरसबसंसारू २
भयेतुरतसबजीवसुखारे *। जिमिमदउतरिगयेमतवारे * ३

रहहिदेखिसदनभयमाना। दुराधर्षदुर्गमभगवाना * * ४
।
।।

जहंतहंमनउमँगतअनुरागा। ८
मनोभव मुयउमनवन सुभगतानपैकही।
प्रीतलसुगन्धसुमन्दमारुतमदनअनलसखासही॥
विकसे सरन बहुकंज गुंजत पुंजमंजुल मधुकरा।
कलहंसपिकशुकसरसरवकरिगानमाचाहअप्सरा १
दो० सकल कलाकरि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत॥
चलीन अचल समाधि शिव कोपेउ हृदय निकेत १

८५ तहां कामको कोप प्रभाव ऐसो देखि परेउ कि जिनको मन मरि रह्यो है तिनहूं के मनसिज जाग्यो है (८) पुनि पचासीके छन्दते छियासी अष्टपदी की पहिली चौपाई ताईं अपराधं जानब (१)॥

८६ देखिरसालविटपबरसाखा। तेहिपरचढेउमदनमनमाखा १
सुमनचापनिजशरसंधाने। अतिरिसताकिश्रवणलगताने २
छांड़ेसिविषमविशखउरलागे। छूटिसमाधिशम्भुतबजागे ३
भयोईशमनछोभविशेषी। नयनउघारिसकलदिशिदेखी ४
सौरभपल्लवमदनबिलोका *। भयउकोधकम्पेउत्रैलोका ५
तबशिवतीसरनयनउघारा *। चितवतकामभयउजरिछारा ६
हाहाकारभयउजगभारी *। डरपेसुरभयेअसुरसुखारी * ७
समुझिकामसुखशोचहिंभोगी। भयेअकण्टकसाधकयोगी ८
छं० योगीअकण्टकभये पतिगतिसुनत रति मूर्छितभई।
रोदति बदति बहुभांति करुणा करत शंकरपहँगई॥
अतिप्रेमकरिबिनतीबिबिधबिधिजोरिकरसन्मुखरही।
प्रभुआशुतोषकृपालशिव अबला निरखिबोलेसही १
दो० अबते रति तव नाथ कर होइहि नाम अनंग॥
बिनुबपु व्यापिहि सबनउर सुनुनिज मिलनप्रसंग १

८६ आकर्षण उच्चाटन मारण वशीकरण ये पांचों कामके धनुष हैं अरु कम्पन मनचहै अरु मोहन स्तम्भन पांच बाण हैं पांच कामके बाण हैं पर सुमन रूप हैं (२) पुनि तीन चौपाई ते पांच चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (५) ताही धनुष बाणते शिवके हृदयमें मारत भयो शिवकी समाधि छुटि गई तब शिवजी ने तीसर नेत्र अग्नि मय खोलिकै कामको भस्म करि दियो काम शिवजीको कोप पायो (६) पुनि छियासी अष्टपदी की चौपाई ते पांचवीं अष्टपदीकी दुइ चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (२) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने बालकांडे श्रीशिव समाधिमदनविजयपुनःकामादिध्वंसनंनामसप्तदशमस्तरंगः (१७) ॥

दोहा ॥ दश अरु अष्टतरंग में शिव विवाह सुखधाम ॥
रामचरण षटमुख जनम बीरभाव परिणाम १८

८७ जयसहुमंगलकथाअवतारा * । होइहि हरविवाहप्रकारहि भारा * १
कथा तनय होइहि पर्वतीसा । बहुल [illegible] होइ हर कोपा * * २
[illegible] कथा अपर अरु अनकहि अवतारा ३
* * । ब्रह्मादि [illegible] * * ४
सोऊ जह [illegible] ता * ५
[illegible] प्रशंसा । भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा * ६
* * । कहहु अमर आयेहु केहि हेतू ७
[illegible] है [illegible] ८

दो० सकल सुरनके हृदय अस शंकर परम उछाह ॥
नयनन देखन चहैं नाथ तुम्हार विवाह १

यह उत्सव देखिय भरि लोचन । सोइ कछु करिय मदनमदमोचन १
[illegible] कहा । कृपा । [illegible] २
[illegible] पसाऊ । [illegible] ३
पार्वती तप कीन्ह अपारा * । करहु तासु अब अंगीकारा * ४
सुनि विधि विनय समुझि प्रभु बानी । ऐसेहि होउ कहा सुखमानी ५
तब देवन दुन्दुभी बजाईं ० । बरषि सुमन जय जय सुरसाईं ० ६
अवसर जानि सप्तऋषि आये । तुरतहि विधि गिरिभवन पठाये ७
प्रथम गये जहं रहीं भवानी । बोले मधुर बचन छलसानी ० ८

दो० कहा हमार न सुनेउ तब नारद के उपदेश ॥
अब भा झूंठ तुम्हार प्रण जारेउ काम महेश १

१

७

७

ा ३

जामंगावसें * ४

ूनिवि ५

७ ७७

तातअनलकरसहजसुभाऊ। हिमतेहिनिकटजाइनहिंकाऊ ७
गयेसमीपसोअवशिनसाई। असमहेशमलनथकीनाई * ८
१० हियहरषेमुनिबचन सुनि देखिप्रीतिविश्वास॥

सबप्रसंगगिरिपतिहिसुनावा। मदनदहनसुनिअतिदुखपावा १
बहुरिकहेउरतिकरवरदाना। सुनिहिमवंतबहुतसुखमाना २
हृदयबि ... । सादरमुनिवरलियेबोलाई * ३
सुदिनसुनखत ... * ४
पत्रीसप्तऋषिनकहँदीन्ही। गहिपद विनयहिमाचलकीन्ही ५
जाइविधिहिंतिनदीन्हेउपाती। बांचतप्रीतिनहृदयसमाती ६
... नसबसुरसमुदाई * ७
सुमनवृष्टिनभबाजनबाजे ०। मंगलसकलदशहुदिशिसाजे ८
लगे सँवारन सकलसुर बाहनबिबिध बिधान॥
होहिंशकुन मंगलसुखद करहिंअप्सरागान १
९१शिवहिशम्भुगणाकरहिंशृंगारा। जटामुकुटअहिमौरसँवारा १
कुण्डलकंकणपहिरेव्याला। तनविभूतिकटिकेहरिछाला २
शशिललाटसुन्दरशिरगंगा। नयनतीनिउपवीतभुजंगा * ३
गरलकंठउरनरशिरमाला *। अशुभवेषशिवधामकृपाला ४
करत्रिशूलअरुडमरुविराजा। चलेबसहचढ़िबाजनबाजा ५
देखिशिवहिसुरतियमुसुकाहीं। बरलायकदुलहिनिजगनाहीं ६
विष्णु विरंचिआदिसुरव्राता। चढ़िचढ़िबाहनचलेबराता ७
सुरसमाजसबभांतिअनूपा *। नहिंबरातदूलहअनुरूपा * ८

दो० बिष्णुकहा अस बिहँसिसब बोलिसकल दिशिराज ॥
बिलग बिलग होइ चलहुसब निजनिजसहित समाज १

९२ बरअनुहारिबरातनभाई *। हाँसकरैहौपरपुरजाई * * १

। [illegible]निजनिजसेनसहितबिल[illegible] २

मनहींमनमहेशमुसुकाहीं *। हरिकेब्यंग्यबचननहिंजाहीं ३

अतिप्रियबचनसुनतप्रियकेरे । भृङ्गिहिप्रेरिसकलगणटेरे ४

शिवअनुशासनसुनिसबआये । प्रभुपदजलजशीशतिननाये ५

नानाबाहननानाबेषा * *। बिहँसेशिवसमाजनिजदेखा ६

कोउमुखहीनबिपुलमुखकाहू । बिनुपदकरकोउबहुपदबाहू ७

बिपुलनयनकोउनयनबिहीना । हृष्टपुष्टकोउअतितनक्षीना ८

।

भूषण कराल कपाल करसब सद्य शोणित तन भरे ॥
खर श्वान शूकर शृगाल मुखक बेष अगणित को गनै ।
बहुजिनिसप्रेतपिशाचयोगिनिभाँतिबरणतनहिंबनै ॥

सो० नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब ॥
देखत अतिबिपरीत बोलहिंबचनबिचित्रबिधि १

९२ अपने मनमें महेश बिष्णुकी व्यंग्यस्तुति सुनिकै मुसुकाते हैं व्यंग्य बचन बिषे निन्दास्तुति दोनों होती हैं इहां श्री बिष्णुकी बाणीमें स्तुतिहै व्यंग्यार्थ यह है कि महादेव गुणातीतहैं काहेते यह संसारकी मर्याद त्रैगुण्यमय है सो लोक मर्याद महेश लेशहूमात्र नहीं हैं (३) पुनि बानबे अष्टपदी की चार चौपाई ते अट्ठानबे अष्टपदी की तीन चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब [३]

९३ जसदूलहतसबनीबराता *। कौतुकबिबिधहोहिंमगजाता १

इहाँहिमाचलरच्योबिताना । अतिबिचित्रनहिंजाइबखाना २

शैलसकलजहँलगिजगमाहीं । लघुबिशालनहिंबरणिसिराहीं ३

बनसागरसबनदीतलावा । हिमगिरिसबकहँनेवतिपठावा ४

कामरूपसुन्दरतनुधारी *। सहितसमाजसहितबरनारी ५

गेसबतुरतहिमाचलगेहा *। गावहिंमंगलसहितसनेहा ६

प्रथमहिंगिरिसबगृहसंवराये । यथायोग्यजहँतहँसबछाये ७

पुरशोभाअवलोकिसुहाई । लागैलघुबिरंचिनिपुणाई ८

चौ० लखुलाभिरूचिकीनिपुनाताखनखोर्किपुरखोभासही ।
बनबाग कूप तडाग सरिता सुभग सब सककों कही
मंगलबिपुलतोरनपताका केतुगृहगृह सोहहीं ।
बनिताषुरुषसुन्दरचतुरखबिदेखिमुनिमनमोहहीं ॥ १

चौ० जगदम्बा जहँ ॥ तरी सो पुर बरनि न जा

निलनूतन सुदिव

॥ ३

जिवाहननाना * । लेनचलेसादरअगवाना * २

हंसयाने * * । * ५

सुभाता । कहति

* * । बद्ध

छं० तनछारब्याल

नि

बिकटबेषरुद्रहिजबदेखा । अबलनउरभयभयउबिसेखा ४
भागिभवनपैठींभयत्रासा * । गयेमहे ॥ * ५
यभयउदुखभारी * । जकुमारी ६
अधिकसनेहगोदबैठारी * । श्यामसरोजनयनबहबारी * ७
जेहिबिधितुमहिंरूपअसदीन्हा । तेहिजडबरबाउरकसकीन्हा ८

छं० कसकीन्हबरबौराहबिधिजिमहुमहिंसुन्दरतानई ।
जोफलचाहियसुरतरुहि सोबरबसबबूरहिं लागई ॥
तुमसहितगिरितेंगिरौंपावकजरौंजलनिधि महँ परौं ।
घरुजाउअपजसुहोउजगजीवतबिवाहनहौं करौं १

दो० भई [illegible] बिकल [illegible] नारि ॥
[illegible] बिलपति [illegible]

[illegible] बिचारा ॥ भवनमोरजिन्हबसतउजारा ॥ १
असउपदेसुउमहिंजिनदीन्हा । बौरेबरहिलागितपकीन्हा २
[illegible] उउनकेमोहनमाया ॥ उदासीनधनधामनजाया ॥ ३
[illegible] ॥ ४
[illegible] ला । बो [illegible] ५
बिचारिशोचहुजनिमाता । सोनटरैजोरचैबिधाता ॥ ६
करमलिखाजोबाउरनाहू ॥ ॥ तौकतदोषलगाइयकाहू ७
तुमसनमिटहिंकिबिधिकेअंका । मातुब्यर्थजनिलेहुकलंका ८

छं० जनिलेहु मातुकलंक करुणा परिहरहु अ[illegible]
दुखसुखजोलिखाललाट हमरेजाबजहँ पाउबतहीं ॥
सुनिउमाबचनबिनीतकोमलसकलअबला शोचहीं ॥
[illegible] बि [illegible] १

दो० तेहि अवसर नारद सहित औ ऋषि सप्त समेत ॥
समाचार सुनि तुहिन गिरि गवने तुरत निकेत १

९७ तबनारदसबहीसमुझावा ॥ पूरबकथाप्रसंगसुनावा ॥ ॥ १
मैनासत्यसुनहुममबानी ॥ जगदम्बातवसुताभवानी ॥ ॥ २
अजअनवद्यशक्तिअबिनाशिनि।सदाशंभुअरधंगनिवासिनि ३
जगसम्भवपालनलयकारिणि । निजइच्छालीलाबपुधारिणि ४
जन्मीप्रथमदक्षगृहजाई ॥ ॥ नामसतीसुंदरतनुपाई ॥ ॥ ५
तहौंसतीशंकरहिंबिवाहीं ॥ कथाप्रसिद्धसकलजगमाहीं ६
एकबारआवतशिवसंगा ॥ देखेउरघुकुलकमलपतंगा ॥ ७
भयउमोहशिवकहानकीन्हा । भ्रमबशवेषसीयकरलीन्हा ८

असजानसमयतजहु गिरिजा सर्व्वदा शंकर प्रिया १

दो० मुनि नारदके बचन तब सबकर मिटा बिषाद॥
क्षण महं ब्यापेउ सकलपुर घरघर यह सम्बाद १

९८ तबमैनाहिमवंतअनन्दे * * । पुनिपुनिपारबतीपदबन्दे * १
नारिपुरुषशिशुयुवासयाने । नगरलोगसबअतिहरषाने * २
* * । भजेसबहिंहाटकघटनाना * ३
।यउजेवनारा * । सूपशास्त्रजसकछुब्यवहारा ४
सोजेवनारकिजायबखानी । बसहिंभवनजेहिमातुभवानी ५
सादरबोलेसकलबराती * । विष्णुबिरंचिदेवसबजाती ६
बिबिधपांतिबैठेजेवनारा * । लागेपरोसननिपुणसुआरा * ७
नारिबृन्दसुरजेंवतजानी * * । लगींदेनगारीमृदुबानी * * ८

छं० गारी मधुर सुर देहिं सुन्दरि ब्यंगबचन सुनावहीं ।
भोजनकरहिं सुरअतिबिलम्बबिनोदसुनिसचुपावहीं ॥
जेंवत जो बढ़ेउ अनंद सो मुख कोटिहू न परै कह्यो ।
अंचवाइ दीन्हे पान गमने बास जहं जाको रह्यो १

दो० बहुरि मुनिन हिमवन्त कहँ लग्न सुनाई आइ ॥
समय बिलोकि बिबाह कर पठये देव बोलाइ १

९८ अनेक जेवनार भये सूप शास्त्र बिषे जैसी भोजन की बिधि कही है सो सब बनाई है (४) पुनि अट्ठानबे अष्टपदी की पांच चौपाई से एक सौ दुइ अष्टपदी की छन्द ताईं अक्षरार्थ जानब (१) ॥

९९ बोलिसकलसुरसादरलीन्हे । सबहिंयथोचितआसनदीन्हे १
वेदीवेदबिधानसँवारी * * । सुभगसुमंगलगावहिंनारी * २
सिंहासनअतिदिब्यसुहावा । जाइनबरणिबिरंचिबनावा * ३
बैठेशिवबिप्रनशिरनाई * । हृदयसुमिरिनिजप्रभुरघुराई ४
बहुरिमुनीशनउमाबोलाई । करिश्रृंगारसखीलैआई * * ५

रवतरूपसकल रमोहै * । बरगौंछबिब्रसकबिजराकोहै ६
। सुरनसनहिंमनकीन्हप्रणामा ७
सुन्दरतासद * । जाइनकोटिहुबदनबखानी ८
शोभासहा ।

सकुचहिंकहतश्रुतिशेषशारदमन्दमतितुलसीकहा ॥
छबिखानिमातुभवानिगमनी मध्यमंडपशिवजहां ।
अवलोकिसकहिंनसकुचपतिपदकमलमनमधुकरतहां १

दो० मुनि अनुशासन गणपतिहि पूजे शम्भु भवानि ॥
कोउसुनिसंशयकरैजनि सुर अनादि जियजानि १

१०० जसबिवाहकैबिधिश्रुतिगाई । महामुनिनसोसबकरवाई १
गहिगिरीशकुशकन्यापानी । भवहिसमर्पीजानिभवानी २
पाणिग्रहणजबकीन्हमहेशा । हियहर्षेतबसकलसुरेशा * ३
वेदमंत्रमुनिवरउच्चरहीं * * । जयजयजयतिसकलसुरकरहीं ४
बाजहिंबाजनबिबिधबिधाना । सुमनवृष्टिनभभइबिधिनाना ५
हरगिरिजाकरभयउबिवाहू । सकलभुवनभरिरहाउछाहू * ६
दासीदासतुरगरथनागा * । धेनुबसनमणिवस्तुबिभागा *७
अन्नकनकभाजनभरियाना । दायजदीनननजाइबखाना * *८

छं० दायजदियोबहुभांतिपुनिकरजोरिहिमभूधरकह्यो ।
कादेउँ पूरणकामशंकर चरणपंकज गहिरह्यो ॥
शिवकृपासागरससुरकरसन्तोषसबभांतिनकियो ।
पुनिगह्योपदपाथोजमैना प्रेम परिपूरण हियो १

दो० नाथ उमा मम प्राण प्रिय गृह किंकरी करेहु ॥
क्षमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसन्न बर देहु १

१०१ बहुबिधिशम्भुसासुसमुझाई । गमनीभवनचरणशिरनाई * १
जननीउमाबोलितबलीन्ही । लैउछंगसुन्दरशिखदीन्ही * २
करेहुसदाशंकरपदपूजा * । नारिधर्मपतिदेवनदूजा * ३
बचनकहतभरिलोचनबारी । बहुरिलाइउरलीन्हकुमारी ४
कतबिधिसृजीनारिजगमाहीं । पराधीनसपनेहुँसुखनाहीं *५

सप्तर्षितिप्रेमविधि ... री । धीरज

१०२ तुरतभवन आये गिरिराई । सकलशैलसरलिये बोलाई ** १
सादरदानविनयबहुमाना । सवकहंविदाकीन्हहिमवाना २

जगतमातुपितुशम्भुभवानी । तेहिशृङ्गारनकहेउँवखानी * ४
करहिंविविधविधिभोगविलासा । गणनसमेतबसहिंकैलासा ५
हरगिरिजाबिहाररनितनयऊ । यहिबिधिबिपुलकाल चलिगयऊ ६
भेउ षटवदनकुमारा । तारकअसुरसमरजिनमारा * ७
निगमसर्वप्रसिद्धागाना । षगामख्वजन्मकर्मसकलजगजाना ८

छं० जगजानषरामुखजन्मकर्म प्रताप पुरुषारथ महा ।

यह उमाशम्भु बिबाह जेनरनारि सुनहिंजेगावहीं
कल्याणकार्य्य बिबाहमंगल सर्वदासुखपावहीं १
चरितसिन्धु गिरिजा रमण
वरणौ तुलसीदास किमि अतिमतिमन्द गंवार १

१०२ दोहार्थ ॥ गिरिजा रमण कहे शृंगार रसपुनिषणमुखको जन्मतब बीररस अरु देवतन को क्लेश मेटेउ तब करुणारस अरु शांतरस दास्य रसमें सदाहै सर्व रस पूर्ण हैं पर जब गिरिजा बिषे श्रीराम चरित रमायो तहां शांत दास्य मूर्तिहीहै ताते गिरिजा रमण को चरित समुद्र है को पार पावैहै तहां तुलसी दास किम कहै अरु अति मतिमन्द गँवार किम कहै (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे श्रीमहेशचरितपरमानन्यभावभक्तिदर्शनवर्णनंनामाष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

दोहा ॥ रामचरण उनइस लहरि भरद्वाज सुखपाइ ॥
उमाप्रश्न शिवश्रवण पुनि ध्यानउतर हरषाइ १९

१०३ रामसुचरितसुनिसरससुहावा । भरद्वाजमुनिअतिसुखपावा १
। नयननीरनामावलिठाढ़ा * * २
प्रेमवि　। दशादेखिहर्षेमुनिज्ञानी * ३
अहोधन्यतवजन्मसुनीशा । तुमहिंप्राणसमप्रियगौरीशा ४
शिवपदकमलजिनहिंरतिनाहीं । रामहिंतेसपनेहुंनसुहाहीं ५
।दनेहू * । रामभक्तकरलक्षणयेहू * * ६
शिवसमकोरघुपतिव्रतधारी । बिनुअघतजीसतीअसिनारी * ७
८

० प्रथमहिंकहि मैं शिवचरित बूझा मरमतुम्हार ॥
शुचिसेवक तुम रामके रहित समस्त विकार १

१०३ पुनि एकको चौपाईते छःको चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (६) श्रीसी-
ताराम बिषे भाव भक्तिको ब्रत जोहै सो ब्रत शिवकी समान धारण को करै ऐसो कौन
है सो ब्रत कैसो है बिनु अघहै सो ब्रत शिवजी धारण करिकै सती ऐसी नारि को
त्यागि दियो यह परम भक्ति कहावै है यह परा भक्तिहै (७) महादेव प्रण कीन्ह्यो है
सती बिषे श्रीजानकीजीको भाव यह प्रण कहो संकल्प करिकै श्रीरामचन्द्र कै भक्ति दृढ़
करिकै श्रीराम भक्तन को दिखाइ दीन कि जो कहूं कोई जीव में किंतु कोई पदार्थ में
कहूं थोरहू श्रीसीतारामको चिन्ह देखै ताको श्रीसीताराम सममानै परदृढ़ बुद्धि करिकै
ताको बिलक्षण भक्ति कहो तामें श्रीरामचन्द्र तुरन्त प्राप्त होतेहैं सोशिवजी कियो ताते
शिवकी समान श्रीरामचन्द्रको को प्रियहै कोई नहींहै अरु जो महादेव की ऐसी भक्ति
कोई करै तौ वोहू प्रिय होइगो (८) पुनि एकसे तीन अष्टपदी के दोहाते एकसे चार
अष्टपदी की चार चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (४) ॥

१०४ मैंजानातुम्हारगुणशीला । कहौंसुनहुअबरघुपतिलीला १
सुनुमुनिआजुसमागमतोरे । कहिनजाइजससुखमनमोरे * २
रामचरितअतिअमितमुनीशा । कहिनसकैंशतकोटिअहीशा ३
तदपियथाश्रुतकहौंबखानी । सुमिरिगिरापतिप्रभुधनुपानी ४
शारददारुनारिसमस्वामी * । रामसूत्रधरअंतरयामी * * ५
जेहिपरकृपाकरहिंजनजानी । कबिउरअजिरनचावहिंबानी ६
प्रणवहुंसोइकृपालुरघुनाथा । बरणौंबिशदजासुगुणगाथा ७

गिरि ...तासू * । सदा जहां शिव उमा निवासू * ८

दो० सिद्ध तपोधन योगिजन सुर किन्नर
बसहिं तहांसुकृतीसकलसेवहिं ॥

१०४ शारदा दारुकी स्त्रीहै अरु श्रीरामचन्द्र अन्तर्यामी सूत्र धरहैं तहां शारदा जोहै बाणी सो चारिरूप है कृपा संयोग ते परावाणी को हृदय नाभि में वास है सो गुणातीत है ब्रह्म मयहै अरु पश्यन्ती बाणीका हृदय के शिरोभाग में वासहै सो सात्विक गुण युक्त पुनि मध्यमा बाणीका कण्ठ में वासहै सो राजसगुण युक्त है पुनि ... को मुखमें वासहै सो तामसगुणयुक्तहै एतेचारि शारदा के स्थान हैं तहां तीनि बाणीके सूत्र तीनिहू गुण हैं सूत्रधारी आद्याशक्तिहै किन्तु विष्णु बिधि शिवहैं ते रामाधीनहैं अरु परा बाणीको सूत्र अंतर्यामी ब्रह्महै सूत्रधर श्रीरामचन्द्र हैं (५) तहां तेहि कबिको आपनजन जानिकै श्रीरामचन्द्र कृपाकरहिं तब तेहिके हृदयमें पराबाणी को नचावते हैं तब वह कविकी काव्य में यथार्थ श्रीसीताराम चरित तीनिहू बाणी को भेदिकै आवतहै (६) हे भरद्वाज ऐसे श्रीरामचन्द्र कृपा निधिहैं तिनको मन बचन कर्म नमस्कार दण्डवत्करिकै श्रीसीतारामचरित बिशद सो वर्णतहौं (७) कैलास पर्वत परमरम्य कहौ अति सुन्दर अति श्वेत है तहां श्रीमहादेव पार्वती सदा बिराजते हैं (८) दोहार्थ॥ जेहि कैलासबिषे सिद्धजन तपस्वीजिनके तपै धनहै अरु योगीश्वर बिरक्त मुनि अनेक अरु देवता किन्नर इत्यादिकबसतेहैं श्रीमहादेवके चरणारबिन्द सेवते हैं (१)॥

१०५ हरिहरबिमुखधर्मरतनाहीं । तिनरतहसपनहुनाहिंजाहीं * १
तेहिगिरिपरबटबिटपबिशाला। नितनूतनसुन्दरसबकाला * २
त्रिबिधसमीरसुशीतलछाया।शिवबिश्रामबिटपश्रुतिगाया ३
एकबारतेहितरप्रभुगयऊ । तरुबिलोकिउरअतिसुखभयऊ ४
निजकरडासिनागरिपुछाला । बैठेसहजहिंशम्भुकृपाला * ५
* * । भुजप्रलम्बपरिधनमुनिचीरा ६

* । आननशरदचन्द्रछबिहारी * ८

दो० जटामुकुट सुरसरित शिर लोचन नलिन बिशाल ॥
नीलकण्ठ लावण्य निधि सोहबाल बिधु भाल १

जे जीव हरिहरके पदमें रत सोई परम धर्मीहैं तेहिते बिमुखहैं अरु अनेक कर्म करतेहैं तिनको कैलास दुर्लभहै (१) तेहि कैलासके मध्य ताके उत्तरकछु ताही पर एक बट बिटपहै तेहिके लघु दीर्घको प्रमाण नहींहै श्री महादेवकी इच्छानुकूल छत्राकार है सघन ललित नील अरुणयुक्त मणितद्वत् पर्णहैं अरु अरुणमणि इव फ

मालाइव शोभितहै नित्य एकरस है सर्वकाल में अविचल छायाहै (२) शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहतेहैं सदा शीतल छाया शिवके मनभावित सो वट शिवको आनन्द विश्रामद वेद कहतेहैं (३) एकबार महादेव तेहि बटतर जातेभये वट विलोकिके अतिसुख भयोहै शिवजू तो सदा आनन्दरूपै हैं पर यहिकालमें पार्वतीके सत्संगको संयोग है ताते कहा (४) श्री महादेवजू निजकरते नागरिपु सिंह तेहिकीछाल बटतर बिछाइ कै सहजही बैठतेभये कैसेहैं शम्भुकृपालु हैं इहां श्रीतुलसीदास गोसाईंजी महादेव में समस्त आचार्यधर्म्म सद्गुरुधर्म वक्तृत्वधर्म महादेवके द्वारा ह्वैकै लखि करावतेहैं कि आचार्य सद्गुरु वक्ता ऐसो जबहोइ जैसे महादेवहैं तब वह भगवत्तत्वउपदेश करिबे को अधिकारीहै तब उस आचार्यकी बाणीसे जो श्रीरामतत्व निकसै तब जिज्ञासू जोहैं श्रोता तिनको यथार्थतत्व प्राप्तहोइ जब वक्ता मन वचन कर्म्मै निरभिमान होइ अरु अपने भजनहेतु किसूसे टहल कराइबेकी अपेक्षा न करै अपने हाथ अपने शरीर की परिचर्य्या करै आसन बासन बसन अशन जल इत्यादिक देखिये तो शिव ईश्वर हैं अरु लाखन पार्षद हैं पर अपने हाथ सिंहचर्म्म बिछाइकै बैठेहैं सिंहचर्म्मासन आसीन ह्वैकै जाते श्रोताको सन्देह मोह संशय भ्रम इत्यादिक गजरूप नाशह्वै जाहिं ऐसे वक्तन की बाणी सिंहरूपहै किन्तु निवृत्ति आसनहै जाको कोईनहीं लेइहै तेहिचर्म पर महादेव सहजही बैठते भये सहजही कही सहजानन्द निष्काम निर्वासनिक यह वासना नहींहै कि हमारो कोईशिष्यहोइहमकोकोई गुरुमानै हमारोकोई उपदेशलेइ हमकोकोई पूजै हमको कोई भला कहै इत्यादिक अहं ममरहित भलीबुरी बासनाते रहित होइ अरु बाह्यान्तर अहर्निश भगवत् तत्पर होइ तब उस वक्ताकी बाणी में पराबाणी जानिये पवनरूप भगवत्तत्व सुगन्धमयहै तब जिज्ञासू श्रोताकीबुद्धिनासिका सुगन्धमय रामतत्व ग्रहण करत है आनन्द को प्राप्त होत है सो महादेव में देखि लेव (५) श्री महादेव कैसे हैं कुन्दइन्दु दरगौर ऐसो शरीरहै कुन्द के फल तद्वत्श्वेत कोमल सुगन्ध मकरन्दमय सुन्दर शरीर है अरु चन्द्रमा तद्वत् उज्ज्वल प्रकाश शीतल अमृत मय शरीरहै पुनि दरकही शंख तद्वत् धवल निर्म्मल सचिक्कण मंगलमय ऐसो विग्रह हैं किन्तु मन बचन कर्म्म शिव ऐसे हैं कुन्दके फूल समधर्म्म सहित पुनि शिवके मुख के बचन कैसे हैं इन्दुके धर्म गुणसहित पुनिशिवके कर्म्म कैसे हैं शंखसरिस सचिक्कण उज्ज्वल गुण संयुक्त ऐसे महादेव सदाहैं काहेते श्रीरामनाम श्री रामरूप श्रीरामभक्ति जिन महादेवके मन बचन कर्म्म रोम रोममें पूर्ण ह्वैरहेहैं सोसब पार्वतीको प्राप्तहोइगो पुनि शिवजी उदारहैं काहेते भुज प्रलम्बकही बिशालहैं जिनके सदा दानही देवहै अरु कटिमें मुनिवस्त्रहैं ऐसे बिरक्तहैं (६) शिवके चरण लालकमल जो प्रथम फूलेउहै अरु नखद्युति भक्तनके हृदयको अन्धकार हरतहै (७) अरु भुजंग कही अनन्त शेष जेहैं आचार्य्यरूप सोई महादेवको भूषणहै ताते दोऊ भक्तराज सदा मिलेहैं ताते श्रुतिस्मृतिरीति परात्परस्वरूप भक्ति उपदेश करते हैं अरु महादेव विभूति धारण किहेहैं सो विभूति जो श्री अयोध्याके जीवपर विभूतिको जातेहैं तेहि श्मशानकै विभूति जोहै सोई विभूति महादेव भूषणकरतेहैं अद्यापि अपर विभूतिमहेश नहींधारण

करतेहैं यहैनिश्चयजानिये काहेते शिवजी श्रीरामउपासकहैंअरुउपासक ताहीकोकही जो अपने इष्टको सम्बन्ध कहूं थोरहूपावै तहां इष्टको समान मानै यह भावबिना इष्टकी कृपानहीं आवै किन्तु ऐसे उपासक जब कृपाकरहिं तब आवै ताते शिवजी बिभूति धारण किहेहैं शिवजीको श्रीअयोध्या अयोध्याबासी रामसम प्रियहैं शिवजी सो बिभूति धारण करिकै परम उपासनाको दिखावते हैं अरु त्रिपुरारि कहा यह मन असुर है ताके तीनिपुर हैं तीनगुण कबहीं सात्विक में जात है कभी राजसमें कभी तामस में किन्तु काम क्रोध लोभ इनमें क्षण क्षण जात है किन्तु अर्थ धर्म्म काम इनमें रहत है किन्तु सुत वित लोकमर्य्याद इनमें रहत है इत्यादिक तीनितीनि में मन रहतहै जब सहित स्थान मनको नाशकरिदेइ तब परमतत्व उपदेशकरै सो महादेव ऐसेहीहैं ताते त्रिपुरारि कहा पुनि शिवजीको बदन शरद चन्द्रहूकी छबिहरतहै काहेते चन्द्रमा अपनी किरणि अमृतमय ताकरिकै एक सूर्यका तापहरतहै पर फेरि दूसरेदिन सूर्य्यकी तपनि होइहै अरु आचार्य्यको मुख चन्द्रवत्है तिनके बचन जो किरणिरूपता में श्रीसीताराम चरित्र परम अमृतमयहै सो श्रोतनके बाह्यांतरकी ताप अधिभूतअध्यात्मआधिदैवत नाश है जातहैं फिरिकबहीं नहीं होइ ताते शरद चन्द्रहूकी छबिहरत है मुखकी छबिऐसीहै (८) दोहार्थ ॥ महादेव के शीशपर जटा मुकुटा कारहैं जोशिव में जटा अहि बिभूतिभूषण चर्म्मासन इत्यादिकहैं सो वैराग्य दिखावतेहैं कि बक्ताभूषण बसन सोई धारणकरै जो कोई नहींलेइ काहेते जो नीको भूषण बसन भोजन है अरु ताको बक्ताग्रहण करैगो किंतु श्रोताकी तो उसमें चित्तकीबृत्ति अवश्य जाइगी मनकीगति अति सूक्ष्महै तहां नतोबक्ताते यथार्त्थ कहतबनैगो अरु नतो श्रोताते समुझत बनैगो ताते बक्ताश्रोता दोऊ संसारते बाह्यांतर त्यागहोइ तब श्रीरामतत्व यथार्त्थ कहिबे सुनिबे धारणामें आवै तहां देखियेतो शिवपार्वती की बिभूति त्रैलोक्यहै ते महादेव श्रीरामतत्वहेतु जटाको मुकुट सर्प्प कपाल बिभूति भूषण अरु मृगचर्म्म बस्त्रसदा निवृत्ति भजनहेतु धारणहैं अरु शिवजीकी जटामें श्रीगङ्गाजी हैं तहां शिवजी तो सदायथार्त्थ सत्यबक्ताहैं तहां सुरसरि ताकोअर्त्थ युक्तिकरिकै कहतेहैं कैसे जैसे कोई श्रीगङ्गामाथे परधारै तब वह सत्यैकहतहै ताते महादेव सौगन्ध करिकै पार्वतीजोसे श्रीरामतत्वकहैंगे अरु महादेवके नेत्र कमल तद्वत् बिशालहैं शीतल कृपाभरे तहां बक्ताकेनेत्र शीतल सौम्य कृपासंयुक्त चाहिये जाते श्रोताके मनमें आह्लादहोइ नील कंठलावण्यनिधि शिवजी के कंठमें बिषकी नीलरेखाहै गंभीर पुष्ट सो उपमाको समुद्रहै काहेते जब समुद्रते बिष निकस्यो तब समस्तलोक देवदानव मनुष्य इत्यादिक चराचर बिषकी ज्वाला ते जरे जातेरहैं तब भगवत् आज्ञाते शिवजी बिषको पानकरिगये तब संसारसुखी भयो सो बिष शिवके कंठहीमें रहिगयो तेहिबिषमें एती लावण्यता शोभित होतिहै एकतो कृपाकरुणा दयालुता सूचितहै कि शिवजी ऐसे दयालुहैं सब को दुःख पीगये पुनि शिवकी बड़ाई जनावतेहैं कि बड़े जोहैं सो बड़े की मर्य्याद राखिकै दण्डदेतेहैं ताते कण्ठमें प्रत्यक्ष राख्यो अरु शिवजू जो चाहते तो बिष पचाइ डारते बिषको नामरूपलेशहू नहींराखते शिवजू ऐसेसमर्त्थहैं पुनि स्वामीबिषे सेवक भाव दिखावतेहैं कि जो स्वामीकी आज्ञा

होइ तो बिषहू पानकरि जाइये आज्ञाभंग नहींकरना मरबे जीबेको नहींडरिये पुनि उक्तिकरिकै अर्थ करतेहैं तहां शिवजू बिषको पानकरिकै पचाइगयेहैं तब परमेश्वरमें जो भक्तबात्सल्य है सो यह बिचारकियो कि शिवजू अत्यन्तमेरी आज्ञाकीन्ह्यो है अरु मेरोस्वरूप नीलहै मैं शिवके कण्ठमें सदावास करौंगो तहां शिवजूके कण्ठमें भगवान्‌को एक स्वरूप बस्योहै तहां परमेश्वरको बिष अमृत इत्यादिक सबैहैतहां विषकोमहादेवनाश करिदियो तब भगवान् बिषको मर्य्याद हेतु शिवजूके कण्ठमें नीलस्वरूप आपु बसेहैं इत्यादिक अनेक लावण्यता नीलकण्ठमें हैं ताते लावण्य निधिकही पुनि बालबिधुभालमें शोभितहै जेहिके दर्शनते केवल मंगलै होतेहैं (१)॥

१०६ बैठेसोहकामरिपुकैसे * । धरेशरीरशान्तरसजैसे * * १
पार्व्वतीभलअवसरजानी * । गईशम्भुपहँमातुभवानी * * २
जानिप्रियाआदरअतिकीन्हा । बामभागआसनहरदीन्हा ३
बैठींशिवसमीपहरषाई * । पूरबजन्मकथाचितआई * ४
पतिहियहेतुअधिकअनुमानी । बिहँसिउमाबोलींमृदुबानी ५
कथाजोसकललोकहितकारी । सोपूछनचहशैलकुमारी * ६
बिश्वनाथममनाथपुरारी * । त्रिभुवनमहिमाबिदिततुम्हारी ७
चरअरुअचरनागनरदेवा * । सकलकरहिंपदपंकजसेवा * ८

दो० प्रभु समर्थ सर्व्वज्ञ तुम सकल कला गुण धाम ॥
योगज्ञान वैराग्य निधि प्रणत कल्पतरु नाम १

१०६ कामरिपु शिवजू कमलासन पै बैठे कैसे शोभितहैं मानहुं शान्तरसकीमूर्तिहीहैं तहां जब सद्गुरु ऐसो होइ बैठे कही आसन दृढ़होइ कामरिपु कही निष्काम होइ अरु शान्तरस कही उदार दृष्टि बाह्यांतर कै बृत्ति ब्रह्मानन्दबिषे लयहोइ ब्रह्मानन्दमें आरूढ़ ऐसे शुद्धस्वरूप को ज्ञान सदाताको शान्तरस कही जब ऐसो होइ तब श्रीराम स्वरूप सुन्दर मध्य किशोर ताको अधिकारी होइ श्रीरामनाम श्रीरामधाम श्रीरामचरितको यथार्थ्य बक्ताहोइ तब तत्त्वमें जिज्ञासूको बोधहोइ सोमहादेव सदा ऐसेहीहैं इहां पार्वतीको श्रीरामतत्त्वके उपदेशको अवसरहै ताते हमने अपनी बुद्धिअनुसार महादेवको गुण स्वभाव कृपा कहेहैं (१) पार्वतीभलो अवसर जान्यो तहांकैलास ऊपरसदा मङ्गलमय कालहै अरु शिवजू सदा आनन्द स्वरूपहैं पर यहिकालमें श्रीराम कृपाते पार्वतीके अन्तष्करणमें आनन्द होतभयो यह समुझिकै कि सतीतनमें श्रीरामचन्द्रजूके स्वरूपमें मोकोभ्रमभयो तहां श्रीमहादेवजू को कहा मैंनहीं मान्यों यहमहा अपराध मोसेभयोहै ताहूपर महादेव मोरेऊपर कृपैकरत आयेहैं अब उनको संकल्पभी पूर्णभया अबमोको अपनीदासी जानिकै अङ्गीकार कियोहै ताते अब महेशते श्रीरामचजोपरात्परतर स्वरूपहै जोमैंबनमें देख्योहै तेहीस्वरूपको प्रश्नकरिकै प्रमानन्दको

प्राप्त ह्वैकै तब भजन करौं अरु आरण्य में यथार्थ रूप मैं देख्यो है पर महेश की अवज्ञा किये सन्ते यथार्थ नहीं भास्यो यह समुझिकैं आनन्द पूर्वक महेश के पास पार्वती जाती भईं ताते जेहि काल में श्री रामचंद्रजू की कैसहू सुधि आवै सोई उत्तम अवसर काल है तहां प्रमाण है (अन्यच्च) तदेवलग्नंसुदिनंतदेव तारावलंचंद्र बलंतदेव ॥ विद्याबलंदैवबलंतदेव सीतापतिर्नामयदास्मरामि १ पार्व्वती संपूर्ण जगत्की माता हैं तहां माता जोहै सो सब प्रकार बालक को पालन करती है ताते पार्व्वतीजी सर्व जीव के कल्याण हेतु महेश ते प्रश्न करिवे को जाती भईं जब पार्व्वती महादेव के समीप जाती भईं (२) तब परम प्रिया जानिकै अति आदर कीन वाम भाग में आसन दीन (३) पार्व्वतीजी शिवके समीप हर्षाइ कै बैठती भईं पूर्व जन्म में जो सती तन में श्री रामचन्द्र बिषे मोह भयोहै तेहिकी सुधि आवती भई (४) पति जो महादेवहैं तिनके हृदयमें अति प्रीति अपने विषे देखी तब बिहँसि कै पार्व्वतीजी मृदु बाणी मुसुकानी कही प्रसन्न ह्वैकै बोलती भईं किन्तु पाछिल शिव को तिरस्कार अरु अपनी अज्ञानता अरु अब बर्त्तमानमें अपनी सन्मुखता अरु शिवकी प्रसन्नताको शिवजी ऐसे कृपालु हैं मेरी चूक समस्त क्षमाकियो है यह समुझिकै मुसुकाइ कै बोलती भईं (५) जो श्री रामचन्द्र कै कथा समस्त लोकन की मंगल करन हारी सो शैलकुमारी जोहैं पार्बती सो पूछा चाहती हैं शैलकुमारी क्यों कहा सब प्रकार ते शैल परमार्थ करतु है ताते कहा (६) हे विश्वनाथ हे ममनाथ हे त्रिपुरारि कहे त्रिपुरमें दानव रहै ताके तीनि पुर रहैं एक स्वर्ग में एक मृत्यु लोक में एक पाताल में तहां उस दानव में ऐसी शक्ति रहै कि एकही बार तीनिहूं पुर में तीनि रूप ह्वैकै निवास करै अरु देवमुनि दुःख दाता रहै ताको महादेव त्रिशूल करिकै तीनिहू पुरसहित दानव को एकही बार नाश करि दीन ताते त्रिपुरारि कहो अरु इहां तीनि शरीरहैं सोई पुर हैं स्थूललिंग कारण ताकी तीनि अवस्था हैं सोई महल हैं जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तहां एकही अहंकार त्रिधा रूप है सात्त्विक राजस तामस सोई त्रिपुर दानवहै तेही पुरस्थान में बसते हैं तहां आत्मा शिव रूप है अरु वैराग्य ज्ञान भक्ति सोई त्रिशूल है तीनिहू करिकै तीनिहूं अहंकार सहित वसना अपने बिषे करै अरु शिष्य बिषेनाशकरै ताको सद्गुरु कही अरु जिज्ञासू कही तहां महादेव तो तीनिहू अहंकार के परेहैं अरु पार्वती अहंकार दूरि करिकै तब आई हैं अरु कछु भीनो होइगो सो महेश दूरि करिकै तब श्री राम तत्त्व उपदेश करहिंगे ताते त्रिपुरारि कहा हे महादेव तुम्हारो महिमा त्रैलोक्य में बिदित है (७) हेमहादेवजू तुम्हारे पद पंकजकै सेवा चराचर नरदेव इत्यादिक सकल संपूर्ण करतहैं (८) दोहार्थ ॥ पार्बती बोलती भईं हे प्रभु तुम सब प्रकार समर्त्थ हो सर्वज्ञ हो अरु चौदहो विद्या अरु बिघ्नकी चौंसठि कला सो पाछे कहि आये हैं यह चौपाई में ॥ सकल कला सब बिद्या हीना अथवा षोडश कला पूर्ण परम पुरुष है सो कला कौन हैं ऐश्वर्य धर्म्म यश श्री मोक्ष भरण पोषण आधार उत्पत्ति पालन संहार शत्रु नाशक रक्षक शरण पालन सामर्थ्य इति षोड़श आगमग्रन्थे अथवा जैसे सोरहकला करिकै जब पूर्ण चन्द्रमा तब पूर्णमासी पूर्णहै तैसे रघुनाथैव महापूर्णा षोडश कला है

अनन्त शक्ति गुण पूर्णहैं अरु इहां तीनि गुण को प्रयोजन नहीं दिव्य गुण कहिवे को प्रयोजन है दिव्य गुण कौन हैं करुणा वात्सल्य ज्ञान क्षमा शान्ति उदार सर्वत्र व्यापकत्व सर्वनियन्ता सर्व कारण सौम्य शील सदा प्रसन्न पूर्ण दया सन्तोष सम सहन इत्यादि दिव्यगुण तिहिसब कालनके अरु सब गुणन के हे श्री महादेवजू आप धाम हैं अरु योग ज्ञान वैराग्यके निधि हो निधि कहीसमुद्र हो किन्तु निधि कहो नवनिधि हो प्रणत जो तुम्हारी शरणहैं तिनको जो तुम्हारो शिवनामहै सो दिव्य कल्पतरुहै (८)॥

१०७ जोमोपरप्रसन्नसुखरासी *। जानिनमोहिंसत्यनिजदासी १
तौप्रभुहरहुमोरअज्ञाना *। कहिरघुनाथकथाबिधिनाना २
रतरुतरहोई *। सहकिदरिद्रजनितदुखसोई * ३
भूषणअसहृदयबिचारी। हरहुनाथममतिभ्रमभारी ४
प्रभुजोमुनिपरमारथबादी *। कहहिंरामकहँब्रह्मअनादी *५
शेषशारदावेदपुराना * *। सकलकरहिंरघुपतिगुणगाना ६
तुमपुनिरामरामदिनराती *। * *७
। गुणअलखगतिकोई ८

दो० सो नृपतनय तौ ब्रह्मकिमि नारिबिरह मतिभोरि॥
देखिचरित महिमासुनत भ्रमितबुद्धिअतिमोरि १

१०७ पार्वती कहती हैं हे परम सुखकी राशि हे प्रभु जो मोरे ऊपर प्रसन्नहोहु अरु मोको सत्य अपनी निज दासी जानते होहु (१) हे प्रभु तो मेरो अज्ञान हरहु हे प्रभु श्री रघुनाथजी की कथा बहु बिधिसे कहिकै काहेते कि रघुनाथजू के स्वरूप में मोको भ्रम भयोहै (२) काहेते कि जेहिको भवन सुरतरुतर होइ सो दरिद्र ते जो दुःख उत्पत्तिहै सो काहे को सहैगो (३) हे महादेव ऐसे बिचारिकै मेरीमति में जो भारी भ्रम सन्ताप दाता है सो हरहु काहेते तुम शशिको भूषण किहे हो (४) हे प्रभु जे मुनि परमार्थ वादी कहो ब्रह्मवेत्ता हैं ते मुनि राम को अनादि ब्रह्म कहते हैं (५) अरु शेष शारदा वेद पुराण इत्यादिक सबै रघुपति के गुणानुबाद गान करते हैं (६) अरु हे महादेव आपहू अहर्निश राम ही नाम जपते हो सादर कहो आदर प्रीति संयुक्त जपतेहो हे अनंग अरि अनंग अरि क्यों कहे अनंग नाम कामको तहां काम कही कामना को सो कामना दुइप्रकारकी एकस्थूल एक सूक्ष्महै स्थूल कही जो मन में उठै ताको करि उठै ताको स्थूल कही अरु जो मनमें उठो है अरु करिबे की इच्छा नहींहै प्राप्तिहू भये ते नहीं अंगीकार है अरु सूक्ष्म बासना मनकी चलीहै ताको सूक्ष्म कामना कही तहां सूक्ष्म बासना बद्ध नहीं करैहै कैसे जैसे एक कोई क्षुधित ब्राह्मण बाजार में निकरेउ जाइ तहां कोई म्लेच्छ की दुकान में अनेक व्यञ्जन बने रहैं अरु देखिकै ब्राह्मण को मन चलिगयो अरु ब्राह्मण को जो वह व्यञ्जनका मा-

लिक देवहू करै तो वह ब्राह्मण छूवहू नहीं करै अरु मनकी झीनी लहरि गईहै तहां ब्राह्मण को धर्म्म तो नहीं गयो तैसे झीनी बासना है पुनि झीनी कामना कैसी है जैसे भूजा अन्न नहीं उगै जैसे जरो जेउरी जरेउ पटको थान तहां इनको स्वरूप तो देखपरैहै पर उनते कछु कार्य नहीं सिद्ध होइ तैसे बिना चाहना मनमें कछु बासना उठैहै सो यह मनकी लहरि कहावै है स्वाभाविक उठैहै जैसे सूर्यकी किरणि में जल की लहरि लहलहाती है सो भ्रम मात्रहै तैसे मनकी गतिहै पर संतजन मनकी गति झीनिहू नहीं सहिसकै तहां झीनी बासना अपने पुरुषार्थ से नहीं मिटै पुनि कब मिटै जब बासना नाश हेतु अति आरत ह्वैकै रामनाम अहर्निश उच्चारण करै तब झीनी बासना नाश ह्वै जाती है अरु स्थूल बासना संतजन मिटाइ सक्तेहैं का करिकै वेद बाक्य गुरुवाक्य निज अनुभवते अरु झीनी बासना बिना श्री राम कृपा नहीं मिटै तहां शिवजू श्रीराम कृपाकै मूर्तिहीहैं कैसे जानिये श्रीरामचन्द्रके भजनमें कामने बिघ्न कियो ताको नाश करि दीनहै ताते अनंगारिहैं अरु बिना अंगको काम ताको झीनी कामना कही ताहीको झीनी बासना कही सो महादेव सदा नाश किये हैं रामनाम अखण्ड अहर्निश जपते हैं अनंग अराती कहिबेको तात्पर्य पार्बती के यहहै कि मेरी स्थूल अरु झीनी दोउ भ्रममहादेव अवश्य नाश करैंगे अपनी सदृश करैंगे ताते अनंगारि कहा (७) हे स्वामी महादेव श्रीअवधपति जो दशरथ महाराजहैं तिनके पुत्र जो श्रीराम हैं तिनहीं को नाम स्वरूप सब ध्यावते हैं कि अपर कोई रामहैं जिनके अजअगुण अलख गति वेद कहते हैं (८) दोहार्थ ॥ हे महादेवजू यह संदेह मोको सती तनमें भयो रहै कछुक अबहूं है जो राजा के पुत्र हैं तिनको ब्रह्म कैसे कही जो कही ब्रह्म शरीर को धारण कियोहै तहां ब्रह्म शरीर धारणकरै सो प्रयोजनै नहीं संभवै तथापि भक्तानुग्रहार्थ ब्रह्म शरीर को धारण करिकै आविर्भाव भयो तहां नारि के विरह करिकै अज्ञान इव नारिको ढूंढ़ते हैं यह बात कैसे ब्रह्म बिषे सम्भवै अरु मैं जो बनमें चरित प्रथम प्राकृत इवलीला देखेउँ पुनि आपकी जब अवज्ञा करिकै परीक्षा लेबेको गई तब औरै चरित देखेउँ अरु आपुके मुखते अरु श्रुति स्मृति में तिनकी महिमा सुनेउँ सब मिलिकै मेरी बुद्धि अति भ्रमको प्राप्त ह्वै गई तहां पार्वती ने प्रथम यह कहा कि शेष शारदा वेद पुराना । सकल करहिं रघुपति गुणगाना ॥ ऐसे तो रघुपति को पार्वती जानती भई फिरि यहप्रश्न क्यों कियो कि जाको सब महान ध्यावतेहैं सो येही दशरथके पुत्र रामहैं जाको अज अगुण अलख ब्रह्म कही सोई दशरथ नन्दन हैं भक्त हेतु देह धरेउ है किंतु यह बिग्रह है अज अगुण अनुपमहैं किंतु अज अगुण ब्रह्म औरै हैं दशरथ नन्दन औरै हैं पार्वती के प्रश्नमें ध्वनि करिकै यह अर्थ है (९) ॥

१०८ जोअनीहव्यापकविभुकोऊ।कहहुबुझाइनाथम्वहिसोऊ१
अज्ञजानिउरिसजनिधरहू।जेहिबिधिमोहमिटैसोइकरहू२
बनदीखरामप्रभुताई।अतिभयबिकलनतुमहि
ावा।सोफलभलीभांतिमपावा

अजहूं कछु संसय मन मोरे ॥ क　　　　　　　रे ॥ ५
प्रभु जहिं तब बहु भांति प्रबोधा । न　　　समुझि करहु जनि क्रोधा
तब कर अस बिमोह अब नाहीं । रामकथा पर रुचि मन माहीं ७
कहहु पुनीत राम गुण गाथा ॥ भुजगराज भूषण सुरनाथा ८

दो॰ बन्दौं पद धरि धरणि शिर बिनय करौं कर जोरि ॥
बरणहु रघुपति बिशद यश श्रुति सिद्धांत निचोरि १

१०८ हे नाथ जो ब्रह्म अनीह है अनीह काही चेष्टा रहितहै चेष्टा काही षट्विकार रहित एक रस है कालावच्छिन्न है अरु सर्व व्यापक है अरु सबको प्रभुहै समर्थ है ऐसो जो ब्रह्म है सो मोसे समुझाइकै कहो वह प्रभु कैसो है अरु राजपुत्र राम तिनको समुझाइकै कहो सो कैसे हैं (१) हे नाथ अज्ञानी जानिकै रिस न करब जेहि प्रकारते मोह मिटै सोई रीति सों कहहु (२) काहेते मैं जो बनमें श्रीरामचन्द्र कै प्रभुता देखेउँ सो अमित देखेउँ सो कछु शुमार नहीं मिलेउ तब आपुकी जो अवज्ञा करिकै गइउँ अरु श्रीराम प्रभुता अमित देखिकै दोऊ भीतिके अति भयते विकलहोइ गइउँ ताते आपु ते कछु कहेउँ नहीं (३) यद्यपि मैं श्री रामचन्द्र की प्रभुता सब प्रकार अमित देखेउँ तदपि आपुके बचन में मोको प्रतीति नहीं आई ताते मेरी मति मलीन ह्वै गई ताते देखिकै बोध नहीं भयो तहां आपुके बचन की अवज्ञाको फल मैं भली प्रकारते पायो ताते जाको गुरनके बचन में प्रतीति नहींहै ताको कल्याण नहीं है जो कोटि प्रकार कोटिन जन्म भरि करै (४) हे नाथ जोमैं श्रीराम प्रभुता देखेउँ सो अब आपुकी प्रसन्नताते मोको बहुत भासि आयो तथापि कछुक संशय अबहूं बनो है सोसंशय को कृपा करिकै नाश करहु मैंदूनों कर जोरिकै बिनय करतीहौं (५) अरु हे नाथ प्रथम सती तनमें मोको आपु बहुत प्रबोधकीन्ह तहांमेरी अभाग्य तेमेरे हृदयमेंनहीं आयो सो समुझिकै क्रोध न करब (६) हेस्वामी तब को ऐसोमोह अब नहीं है अब श्रीरामचन्द्र की कथामें अत्यन्त प्रीति है जाके सुनेते सबसंशय जाती रहैगी (७) अब श्रीरामचन्द्रको अति पुनीत जो गुणगाथहै सो कहहु भुजंगराज जो शेष जूहैं जिनको अनन्त कही सर्वजीवनके कल्याण कर्ता आचार्यरूपहैं सोई तुम्हारे भूषणहैं अरु तुमकैसे हौ संपूर्ण जो देवताहैं तिनके नाथहौ ताते आपु ते कछु जानिबेको बाकी नहीं है (८) दोहार्त्थ ॥ पार्बतीजू महिमें माथनाइकै महादेव के युगल पदकै बन्दना करिकै यह कहती भई हे प्रभु श्रीरघुपतिको यश अतिशय विशद सो परि वेदनकर सिद्धांत बिचारिकै कहहु जो ततत्व चारिहू वेदको सिद्धांत जाको वेद बर्णन करतेहैं अरु पार नहीं पावते नेति नेति कहतेहैं अरु जो तुम अपने अनुभव बिषे सिद्धांतकीन्ह है सोई कहहु
ते तुमते श्रेष्ठ कोई　हि तुम ईश्वरहौ तुम ब्रह्मादिक देवतनमें श्रेष्ठ अरुयोगीश्वरनमें　अरु बिरक्त ज्ञानी बिज्ञानी अरु जे परमानन्द परपति भक्तहैं तिन सबन में

तुम सब प्रकारते श्रे तातें वेदान्तके सिद्धान्तको जो परम रस होइ सो रस निचो रिकै कहो (१)॥

१०९ यदपिपयोषितानअधिकारी । दासीमनक्रमबचनतुम्हारी १
गूढ़ौतत्त्वनसाधुदुरावहिं । आरतअधिकारीजहंपावहिं २
अतिआरतपूछौंसुरराया । रघुपतिकथाकहौकरिदाया ३
प्रथमसोकारणकह । निर्गुणब्रह्मसगुणबपुधारी ४
। बालचरितपुनिकहहुउदारा ५
। राज्यतजासोदूषणकाही ॥ ६
बनबसिकीन्हेउचरितअपारा । कहहुनाथजिमिरावणमारा ७
राज्यबैठिकीन्हेउबहुलीला । सकलकहहुशंकरसुखशीला ८

दो० बहुरिकहहु करुणायतन कीन्हजो अचरजराम ॥
प्रजासहितरघुबंशमणि किमिगमने निजधाम १

१०९ यद्यपि श्रीवेदान्त श्रवणका अधिकारी नहीं है तदपि मैं तो मन बचन कर्म ते तुम्हारी दासीहूं (१) अरु यह प्रमाणहै कि साधुजन जोहैं सो गूढ़कही जो तत्त्व वेदमें छपीहै अनुभवते प्रत्यक्षहै सोऊ नहीं दुरावतहैं कब जब कोई जीव परमतत्त्व के आरत अधिकारीहैं आरतकही जिनको यहसंसार में जेतेदेहके संबन्धी अरु देह अरुमान बड़ाई इत्यादिक दुःखरूप लागयोहै जैसेबनके मध्यमें हाथीहै अरु बनमें चहूं फेर दावालाग्यो है अरु गजदावाकी तपनिते बिकल आरत ह्वैकैभाग्यो कोई नदमें परयोजाइ सुखीभयो तैसे जगत्की तापते बिकल ह्वैकै सत्संग सागरमें परै जाइ तब सुखीहोत है ताको अति आरतकही अधिकारी कही वैराग्य बिवेक षट् सम्पत्तियुक्त होइ शम दम तितिक्षा उपरति श्रद्धा समाधान इतिषट् पुनि षट्शरणागत भगवत् अनुकूलमय संकल्प प्रतिकूल मय त्याग आत्मसमर्पण कार्पण्य गोप्तृत्वबर्णन रक्षा प्रतीति इतिषट् इन सबनको स्वरूप याज्ञवल्क्य भरद्वाजके संबादमें कहिआयेहैं इन करिकैयुक्त होइ ताको अधिकारी कही तहांजे केवल आरतहैं तेसामान्यहैं अरु जे केवल अधिकारीहैं तेभी सामान्यहैं दूनोंमिले विशेषहैं तासोंसाधु नहीं दुरावते तहांमैं दूनोहौंतातें मोसे कहो (२) पार्वती कहतीहैं हे संपूर्ण देवतनके स्वामी मैं अति आरत अधिकारी हूं कै श्रीरघुपतिकै कथा अति पवित्र पूंछतिहौं सो दया करिकै कहहु (३) पार्बतीजू महत् प्रश्न करतीहैं जा प्रश्नमें पूर्वापर मध्य प्रसंग समस्त सूचितहोइगो हे महादेव स्वामी तुम परम गुरु हो प्रथमहिं सो कारण बिचारिकै कहो निर्गुण जो ब्रह्म सर्बव्यापकसबको नियन्ता सर्वसाक्षी सर्वतेभिन्न अति सूक्ष्मतर सूक्ष्म अजअकल अभेद ऐसोब्रह्म सगुण कैसे होतहै पार्बतीके जो पूर्बहीं सतीतनमें तीनि संदेहभयेरहैं एकतो यह संदे

कि महादेव राजाके पुत्रको सच्चिदानन्द परधाम कहे परस्वरूप विग्रह कहेहैं तब सती तनमें यह सुनिकै बिचार कीन्ह कि ब्रह्मके द्वैस्वरूप वेद वर्णतहैं एक सगुण ब्रह्म एक निर्गुणब्रह्म तिनको सच्चिदानन्द कही जो कहो कि निर्गुण ब्रह्मजोहै सोई देहधरेउहै तहां निर्गुणब्रह्म जो सर्व व्यापक ताको देहधरिबेको कछुकारण नहींहै ताते व्यापकब्रह्म निर्गुण सोये राजपुत्र नहींहैं अरु जो कहो कि विष्णुभगवान् देवतनके हेतु नरतनधरे तेहैं तहां बिष्णुतौ सर्वज्ञहैं जैसे महादेव सर्वज्ञ हैं ते बिष्णु अज्ञानकी नाई कैसे आपनी प्रियाको खोजेंगे ताते ये राजपुत्र बिष्णुभी नहींहैं सतीजूके मनमें दोऊस्वरूप को निषेध भयो है अरु सतीजू यह बिचार कीन्ह कि महादेव के बचन वृथानहीं हैं तेतीनिहूं सन्देह अब पार्वती तन में स्मरण करिकै गर्भितप्रश्न करती हैं क्रमहीते दोऊ प्रश्न के अवान्तर समस्त तात्पर्यहैं दोऊप्रश्न कौनहैं ॥ चौ० ॥ प्रथमसो कारण कहहु बिचारी । निर्गुणब्रह्मसगुणबपुधारी ॥ पुनि प्रभुकहहु राम अवतारा ॥ प्रथम निर्गुणब्रह्मको प्रश्न करती भई काहेते कि मेरी मतिमें निर्गुणब्रह्म सगुण नहीं होतहै आगे जो महादेव कहैंगे कि निर्गुण ब्रह्म सगुणरूप धारण करतुहैं तौ मैं यह समुझौंगी कि मोते सतीतनमें नहीं समुझत बन्योहै अब मैं यह जानिहौं कि श्रीरामचन्द्र निर्गुणब्रह्महैं भक्तनके हेतुस्वरूप धारण कियो है अरु जो श्रीरामचन्द्र को निर्गुणब्रह्म नहीं कहैंगे तो श्री रामस्वरूपधौं कवनीरीति बर्णन करैंगे तहां पार्बती के प्रथम प्रश्नको तात्पर्य्य यहीहै जो कहिआयेहैं (४) आगे दूसर प्रश्नकरतीहैं हे प्रभु पुनि श्रीरामचन्द्रको अवतार कहौ पुनि बाललीला कहौ जो अतिउदार हैं जाते मो को सब जानिपरै यह प्रश्नको तात्पर्य है कि जो निर्गुण ब्रह्म श्री रामचन्द्र को नहीं कहैंगे तो यह कहैंगे कि श्री रामचन्द्र साक्षात् बिष्णु को अवतार हैं तब मैं यह जानि हौं कि सती तनमें जो मैं सन्देह कीन्ह्यों रहै कि ये राजपुत्र विष्णु नहीं हैं सो यह मोसे नहीं समुझत बन्यो अरु महादेव तौ श्री रामचन्द्र का न तौ निर्गुण ब्रह्म कहैंगे अरु न तौ विष्णु को अवतार कहैंगे तबधौं श्री रामचन्द्र दशरथके पुत्रहैं तिनको स्वरूपकवनी रीति बर्णन करैंगे जो मैं वनमेंपरात्पर बिग्रह स्वरूप देखेउँ है ताते दूसर प्रश्न पार्बतीजी कीन्ह्यों है हेभरद्वाज (५) समस्त प्रश्न दोई प्रश्नके भीतर जानब हे प्रभु श्री जानकीजी को बिवाह अति सुन्दर नीकी प्रकार कहौ अरु राज्य को त्याग कीन्ह सो कवने दूषणते (६) अरु जो बन में बसिकै चरित्र कीन्ह सो कहौ अरु रावण त्रैलोक्य बिजयी ताको रणमें नाश करिदीन्ह सो कहौ (७) अरुराज्यपर बैठे तब अनेक दिव्य लीला कीन्ह सो कहौ अरु यह बड़ी बिचित्र लीला भई कि जब श्री रामचन्द्र राज्य पर बैठे तब ब्रह्माण्ड भर के जीव परम पद के अधिकारी होत भये हैं सो कहौ (८) दोहार्थ ॥ अरु हे करुणा यतन यह बड़ो आश्चर्य श्री रामचन्द्र कीन्ह है ऐसी लीला न तो कोई अवतार में कीन्हहै अरु विना अवतारहू नहीं कियो है जैसो लीला श्री रामचन्द्र कीनहै कि सहित प्रजा अरु श्रीअयोध्या की मर्य्याद द्वादश द्वादश योजन चारिहू दिशा तहां के जीवजे चराचर रहे अरु जेते बानर ऋच्छ समस्त सेना रावण के संग्राम में रही तिन सबन को अपनो स्वरूप दैकै सब को संग ही पर धाम को लैगये सो

महादेव उत्तर काण्ड में कहे हैं जहां प्रभाव बर्णन कीन्ह है अरु श्री रघुनाथजी की बाटिका स्थित ताई ॥ चौपाई ॥ एकबार रघुनाथ बोलाये (१) ॥

पुनिप्रभुकहहु ... जेहि ... ग्या...
भगतिज्ञानबिज्ञानबिरागा । पुनिसबबरनहुसहितबिभागा २
औरौरामरहस्यअनेका * । कहहुनाथअतिबिमलबिबेका ३
जोप्रभुमैंपूछानहिंहोई * । सोउदयालराखहुजनिगोई * ४
तुमत्रिभुवनगुरुबेदबखाना । आनजीवपामरकाजाना ० ५
प्रश्नउमाकरसहजसुहाये । ० छलबिहीनशंकरमनभाये ६
हरहियरामचरितसबआये । प्रेमपुलकिलोचनजलछाये ० ७
श्रीरघुनाथरूपउरआवा ० । परमानंदअमितसुखपावा ० ८
पुनिमन बाहर कीन्ह ॥
रघुपति चरित महेशतब हर्षित बरणैलीन्ह १

११० हे प्रभु पुनि सो तत्व बखानिकै कहो जेहि तत्व बिज्ञानते मुनीश्वर मग्न होतेहैं सोकहो (१) भक्ति ज्ञान बिज्ञान वैराग्य इत्यादिक समस्त बिभाग बिभागकहो (२) औरौश्रीरामचन्द्रकी रहस्य जो अनेकप्रकारकी है सो कहो रहस्य कहो श्रीरामचन्द्रको स्वभाव कृपा करुणा दया उदारता सदा प्रसन्नता एक रस अरु यावल्लीला है सो सब परम रहस्यहै अरु ज्ञानभक्तिको भेदइत्यादिक सोभी रामरहस्यकहो अरु हे नाथ बिमल बिवेक कहो एक बिबेक गुण सम्बन्धी है अरु एक बिबेक भगवत् सम्बन्धी है सारासार को बिबेक ताते बिमल कहा (३) हे नाथ जो मोर नहींजानाहै अरु जो मेरे पूंछिबे में कछु रहि गयो होइ अरु जोमैं नहीं पूंछेउँ होइ सो सब कहहु काहेते तुम दयालु हो अरु मैं आरत हों ताते सब कहो कछु गोइ न राखहु (४) तुम तीनिहु लोक के गुरु हो शिक्षा करिबे को अपर जीव जेहैं पामर कहे जिन को तीनिहू गुण को ज्ञान है ते पामरका जानैंगे (५) तहां हे भरद्वाज उमा को प्रश्न सहजही शोभित है अरु निश्छल निष्कपट ऐसो प्रश्न पार्ब्बती को सुनिकै शंकरके मनमें बहुत आनन्द भयो (६) तहां पार्ब्बती के प्रश्न किहे सन्ते तब महादेवके हृदय में श्री रामचरित सब आये तब महादेव प्रेमते मग्न होतभये नेत्रनते जल चलतभयो (७) श्रीरघुनाथजी को रूप महादेवके हृदय में आयो परमानन्द जो अमित सुखहै ताते भरिरहे हैं तहां जैसे जैसे पार्ब्बती जी प्रश्न कीन्ह्यो है तैसे तैसे क्रमहीं ते महादेव स्मरण करते हैं शिवजी तो सदा श्री रामानन्द में छके हैं तहां पार्ब्बती के प्रश्न के अनुस्यूत स्मरण करिकै समाधान करैंगे प्रथम पार्ब्बती जी श्री रामचरित को प्रश्न कीन्ह्योहै सो हर के हृदय में श्री रामचरित सब आयोहै पुनि निर्गुण ब्रह्म को प्रश्न कीन्ह्योहै कि निर्गुण जो ब्रह्म ब्यापक सो कैसे ... ताते श्री राम स्वरूप हृदय में आयो

राम स्वरूपही चेतन रूप सर्वत्र व्याप्त है तहां प्रमाण (सनत्कुमारसंहितायांश्लोकएक) रामंसत्यंपरंब्रह्मरामात्किञ्चिन्नविद्यते ॥ तस्माद्रामस्वरूपोयं सत्यंसत्यमिदंजगत् १ ताते महादेव के हृदय में रामरूप आयो पुनि पार्वती प्रश्न कीन्ह्यों श्रीरामावतार कहहु ताते आगेके दोहा में श्री रामचन्द्र के स्वरूप को ध्यान करहिंगे सुन्दर श्याम किशोर विग्रह परब्रह्म मूरति जाते सब प्राप्त हैं पर चरित रूप स्वरूप कह्यो है (८) दोहार्थ ॥ तहां हे भरद्वाज श्री महादेव श्री रामस्वरूप को ध्यान कीन्ह्यो ताही ध्यानके रसमें दुइ दण्ड मग्न कही डूबिगये पुनि मनको बाहर करिकै महेश जी श्री रघुपति को चरित कहिबेकी अति हर्ष संयुक्त इच्छा कीन जो कोई कहै कि दुइ दण्ड मग्न भये हैं अरु मग्न ह्वैकै पुनि मन ऐसे आनन्द से क्यों निकारेउ है सो कहते हैं युग दण्ड कही द्वैत सेवक से व्यभाव पुनि द्वै दण्ड कही माया संबन्ध जे द्वैत हैं मैं मोर तोर तैं मैं इत्यादिक जो द्वन्द्व तेहिको एक रस करिकै तब ध्यान को रस मिलत है अथवापार्वती को द्वैत हृदय में बिचारिकै कि इनको द्वैत कैसे नाश होइ तव श्रीरामस्वरूपको ध्यान करतसंते समस्त अभिप्राय हृदयमें आइगयो ताते दुइदण्ड कहा अरु साधारण शास्त्र नमें बर्णनहै कि जे निज भगवज्जनहैं तिनको भगवान् अपनी विभूति ऐश्वर्य लीला इत्यादि दुइ दण्डमें जनाय देतेहैं अरु ध्यानबिषे पार्वतीके प्रश्नको अनुसंधान बनो-रह्योहै अरु ताहीहेतु ध्यानकीन्हहै तातेमन बाहरभयो है (१) इतिश्रीरामचरितमान सेसकलकलिकलुषविध्वंसने बालकाण्डे उमाप्रश्नशिवश्रवणध्यानवर्णनंनामएकोनविंशति स्तरंगः १९ ॥

दो० विंशतिशुभगतरंगमें प्रश्नोत्तरगौरीश ॥
सावधानश्रोताबहुरिरामचरणधरशीश२०

१११झूंठौसत्यजाहिबिनुजाने । जिमिभुजंगबिनुरजुपहिचाने * १
जेहिजानेजगजाइहेराई * । जागेयथास्वप्नभ्रमजाई * * २
बन्दौंबालरूपसोइराम * । सबबिधिसुलभजपतजेहिनाम ३
मंगलभवनअमंगलहारी ० । द्रवौसोदशरथअजिरबिहारी ४
करिप्रणामरामहिंत्रिपुरारी । हर्षिसुधासमगिराउचारी * ५
धन्यधन्यगिरिराजकुमारी । तुमसमाननहिंकोउउपकारी ६
पूंछेहुरघुपतिकथाप्रसंगा । सकललोकजगपावनिगंगा * ७
तुमरघुबीरचरणअनुरागी । कीन्हेउप्रश्नजगतहितलागी ८
दो० राम कृपा तेगिरि सुता सपनेहु तवमन माहिं॥
शोक मोह संदेह भ्रम मम विचार कछुनाहिं १

१११ आगे तीनिचौपाई को एकही अन्वयहै हे भरद्वाज शिवजी रघुपतिके बाल स्वरूपको ध्यानकरिकै मनको बाहरकरिकै पुनि बालस्वरूप श्रीरामचन्द्र की बंदनाकीन्ह

अरु मनमें यह बिचार कीन्ह कि श्रीरामचन्द्र अपने स्वरूप करिकै सर्बव्यापक हैं जैसे सूर्य अपने घन तेज करिकै सर्वत्र प्रकाश करिरहेहैं तैसे श्री रामचन्द्र अपना घन तेजरूप जोहै परम दिव्य एकरस सर्वकाल परिपूर्ण सोई रूप ते व्याप्त हैं (ब्रह्मांडपुराणे श्री रामगीतायां श्लोकएक) यथानेकेषुकुंभेषुरविरेकोऽपिदृश्यते ॥ तथासर्वेषुभूतेषुचिंतनीयोऽस्म्यहंसदा १ तहां यह जगत् झूठाहै जिन श्री रामचन्द्रको व्यापकरूप जाने बिना जगत् सत्यइव भासतहै जैसे रात्रिबिषे जेवरी कोई देख्यो तब वाको सर्प्प भ्रम भयो जब कोई यत्नते जेवरी का ज्ञान यथार्थ भयो तब इस जेवरी बिषे सर्पकीभ्रांति मिटिगई तहां आगे वहप्राणी सर्प्प देखैहै तबतो रज्जुबिषे सर्प्पका भ्रमभयाहै ताते जेहिको रज्जुबिषे यथार्थ ज्ञानभयो तेहिको भ्रम मिटिगयोहै जब रज्जुमें निश्चयभई तब सर्प्पकी भ्रांतिमिटगई अरु जो कहै कि सारे जगत्के सर्प्पमिटि गयेहैं सो यहकहना नहीं संभवैहै तहां अपने स्थानमें मायाभी सत्यहै अरु श्रीरामस्वरूप व्यापकब्रह्म बिषे माया झूठीहै नहीं है अरु यहां तो महादेवके समुझिबे और कहिबेको यह तात्पर्यहै कि श्रीरामचन्द्रबिषे पार्बतीने सतीतनमें प्राकृत इव लीलादेख्यो तब भ्रम भयो सो वहै लीला प्राकृतरहित परमदिव्य ब्रह्ममय सो शिवजी देखाइकै पार्बतीको भ्रम हरहिंगे जैसे रज्जुमें सर्पको भ्रमभयो कोईने रसरी चिन्हाइ दियो तब भ्रममिटि गई तैसे श्री रामचन्द्र की लीला जो परमदिव्यहै तेहि लीलामें जो कोई प्राकृत रोपण करै ताको रज्जु भुजंगवत् भ्रमहोतहै काहेते उनको प्राकृत गुरु मिलेउहै अच्छो वेदवेत्ता गुरुनहीं मिलेउहै अरु निर्गुणब्रह्म सगुणब्रह्म दोउ स्वरूपनकी एकता अरु भिन्नता इनकाबोध करनेवाला ऐसो सद्गुरु उनको नहीं मिलेउ अथवा सद्गुरुनकै कही उनको नहीं समुझि परेउ ताते जब सद्गुरुन करिकै श्रीरामचन्द्र जान जाहिं तब जगत् श्री रामचन्द्रबिषे भ्रमरूपसो मिटिजाइहै जैसे रज्जुके ज्ञानते अहि को भ्रममिटि जात है (१) जेहिके जाने यह जगत् हेराइ जातहै फेरि नहीं मिलै जैसे स्वप्नबिषे किसूको कोई पदार्थ प्राप्तभयो तब उसने निश्चय कियो जब वह पुरुष जाग्यो तब स्वप्नको पदार्थ जातरह्यो तैसे जो जागबहै सोई श्रीरामचन्द्र को जानबहै जब श्रीरामचन्द्र को सद्गुरुन करिकै जान्यो तब श्रीरामचन्द्रबिषे जो भ्रमभयो सो हेराइ गयो अरु तब उसको सहित व्यवहार समस्त स्वप्नवत् बीतिगयो वह प्राणी जीवन्मुक्तभयो अन्त्य में परमपदकी प्राप्तिभई (२) ऐसेजे श्रीरामचन्द्र हैं तिनके बालक स्वरूप को महादेव नमस्कार करतेहैं जिन श्रीरामचन्द्र को रामनाम जोहै तेहिके जपेते सब अबिधिनाश होत है अरु सर्व बिधि सुलभ होतहै काहेते कि श्रीरामनामके आधीन समस्त बिधि है तहां एक बिधिहै अरुएक निषेधहै यहां यह बिधिकही जो बिधि श्रीरामचन्द्रको प्राप्तकरै योग वैराग्य ज्ञान बिज्ञान ध्यान भक्ति इत्यादिक जो श्रीरामचन्द्रके अनुकूलहै ताको बिधिकही अरु काम क्रोध लोभ मान मद ईर्षा मात्सर्य इत्यादिक जे श्रीरामचन्द्र से प्रतिकूलहैं ताको निषेधकही तहां रामनाम जपेते समस्तबिधि स्वाभाविकै सुलभहोती हैंअरु निषेधको नाश होतहै अथवा सब बिधि कही सब प्रकारते श्री रामस्वरूप श्री रामधाम श्रीरामलीला श्रीरामप्रताप सहजही प्राप्त

तिनको बालस्वरूप बन्दौं जाते बाल चरित इत्यादिक समस्त चरित्रमेरे हृदयमें आवैं ताते महादेवने बालही स्वरूपको बन्दना कीन्हहै पुनि श्रीरामचन्द्र श्रीदशरथ महाराजके सदनमें अवतीर्ण भये तहां जैसे राजनके बालक लीलाकरतेहैं तैसे करहिंगे जैसे कोई राजनके बालकके हाथमें रत्नहै अरु तेहि बालकको जो एक लेडुआ कोईदेय तो वह बालक तरत्न मांगिलेइ अरु वह बालकहू हर्षिकै दैदेत है अरु जो वही बालक सयान भयो तब कितनीहूं मिठाई देइ तब वह रत्न नहीं देइ है तैसे श्रीमहादेव श्रीरामचन्द्र के बाल स्वरूपको नमस्कार करिकै संपूर्ण परम तत्त्व लीला धाम नाम स्वरूप गुणप्रताप ज्ञानबिज्ञान भक्ति इत्यादिक समस्त फुसिलाइकै मांगि लीन्हहै कैसे जानिये देखिये तो दशरथ महाराज के अजिर में जो बाललीला में कागभुशुण्ड को बरदीन है सोबर किसू मुनीश्वरको नहीं दियोहै ताते महादेव प्रथम बालही स्वरूप को बन्दना कीन्ह यहअर्थ उक्ति करिकै कहेहैं (३) ते श्रीरामचन्द्र अरु रामनाम संपूर्ण मंगलके भवनहैं अरु संपूर्ण अमंगल के नाशकर्ता हैं ते श्रीरामचन्द्र बालस्वरूप दशरथ के अजिर बिहारी मोपर द्रवैं जाते समस्त श्रीराम पदार्थ मेरे हृदय में आवैं (४) श्रीरामचन्द्र को प्रणाम करिकै अमृत मय वचन महादेव बोलते भये (५) गिरिराज जो हिमाचल है तिनकी तुम कन्याहौ ताते तुम धन्य धन्य हौ दुइबार धन्य कहा सो अति आदर कीन्ह तुम्हारी समान सबको हितकारी दूसर कोई नहींहै गिरि जोहै सो सबको हितकारी स्वाभाविकै होतहै ताते गिरिराज कुमारी कहा (६) श्रीरघुपति की कथा समस्त प्रसंग संयुक्त जो तुम प्रश्न कीन्हहै सो श्रीराम कथा कैसी है श्रीगंगा इवहै तुम्हारो प्रश्न भगीरथ रूपहै तहां भगीरथ गंगालैकै जगत् को कल्याण कीन्ह पर जेहिलोक में गंगा गईहै अरु श्रीराम कथारूप गंगा जो है नवखण्ड सातहु द्वीप चौदहौ भुवन तीनिहुंलोक इन सबन को पवित्र कीन्ह ताते तुम धन्यतर हौ (७) अरु हे पार्वती तुमतौ श्रीरामचन्द्र के चरण पंकज की अनुरागिनी हौ मैं जानत हौं अरु जो प्रश्न कियोहै सो यह रीतिही है कि जे श्रीराम तत्त्व जानिकै जीवन्मुक्त होइ रहेहैं तेऊ अति प्रीतिते श्रीराम कथा पूंछते हैं अरु जो अपनेते जिज्ञासा करैहै ताहूते कहतेहैं अरु उनहीं के कहेते सुनेते सब जगत्को हितकार होतहै ऐसो तुम्हारो प्रश्न है (८) दोहार्थ॥ हे गिरिसुता श्रीराम कृपाते तुम्हारे शोक मोह संदेह भ्रम सो मेरे बिचार में अब नहीं है काहेते कि शोक इत्यादिक तब ताईं जानिये जब ताईं आरत ह्वै कै सद्गुरुनते प्रश्न न करै तबलगि सबहै गिरिसुता क्यों कहा अबते तुम्हारी बुद्धि अचलहै जो मैं कहौंगो तामें नहीं चलैगो पुनि शोक काको कहो जो तत्त्व कछु प्राप्त रह्यो है अरु कोई योगते जात रह्यो ताकी कल्पना तको शोक कहो पूर्व सतीतन में जो शिव अगस्त्य के संबाद में तत्त्व प्राप्त भयो अरु आगेहूते जो प्राप्त रह्यो श्रीरामचन्द्रकी बन की लीला देखिकै जात रह्यो सतीको शोक भयो पुनि मोह कहो जो महान् पुरुष के कहे में सामान्य बोधकरै अरु अपने जानबे में बिशेष बोधकरै इत्यादिक अपनपौ सोई मोह अरु सद्गुरु वाक्यमें अप्रतीति सो मोह तहां सतीजू महादेव को कहा नहींमान्यो अरु अपनी बुद्धि ते श्रीरामचन्द्रको राजपुत्र निश्चय कियो ताते मोह ह्वै गयो संदेहकहो

संदेहालंकार कोई पदार्थ है तामें संदेह भयो कि ऐसोहै तहां सतीजू श्रीरामचन्द्र को राजपुत्र मान्यो अरु महादेवने सच्चिदानन्द कहा तब सतीके मनमें यह आयो कि ये दोउ कुमार राजपुत्र हैं कि परमात्मा हैं यह सन्देह भयो पुनि भ्रम कहो कोई पदार्थ होइ तामें अपर पदार्थ आरोपण करै जैसे रज्जु बिषे भुजंग सो भ्रमालंकार है तहां सतीजू श्रीरामचन्द्र परब्रह्म तिनमें प्राकृत भावना कीन्ह सो भ्रम भयो तहां महादेव कहत हैं कि हे पार्वती मोरे बिचार में शोक मोह संदेह भ्रम अब तुम्हारे नहीं तात्पर्य्य यहहै कि अब एकहू नहीं रहैगो (१)॥

११२तदपिअशंकाकीन्हेउसो । कहतसुनतसबकरहितहोइ
जिनहरिकथासुनीनहिंकाना । श्रवणरन्ध्रअहिभवनसमाना २
नयननसंतदरशनहिंदेखा * । लोचनमोरपक्षकेलेखा * ३
तेशिरकटुतुमरीसमतूला * । जेननमहिंहरिगुरुपदमूला ४
जिनहरिभक्तिहृदयनहिंआनी । जीवतशवसमानतेप्रानी ५
जेनहिंकरहिंरामगुणगाना । जीहसोदादुरजीहसमाना ६
कुलिशकठोरनिठुरसोइछाती । सुनिहरिचरितनजोहरषाती ७
गिरिजासुनहुरामके । सुरहितदनुजविमोहनशीला ८
दो० राम कथा सुर धेनु सम सेवत सब सुख दानि ॥
सन्तसभा सुरलोक सम को न सुनै अस जानि १

११२हे पार्वती यद्यपि तुम निस्सन्देह हौ तदपि नीकी शंका किहहु है इहां व्यंग्यार्थहै तुम्हारे प्रश्न में शंका नहीं है अशंका है काहेते जो सुनत कहत सबको हितकार होइगो यहि प्रसंग में आश्वासन अरु भयदर्शन अरु प्रीति शिवजू पार्बतीको दिखावते हैं प्रथम आश्वासन कीन पुनि भय दर्शन करावते हैं सावधान करते हैं यह सद्गुरु जिज्ञासू की रीतिवेद बर्णत हैं कि प्रथम आदर करै जाते श्रोता को मन प्रसन्न होइ पुनि कोई युक्तिसे अरु किसूके मिसु करिकै जिज्ञासूको भय दिखायकै तब तत्त्व उपदेशकरै तेहिके उपरांत तत्त्वमें प्रीति करावै तब मुमुक्षु जीवन्मुक्त होइ तातेश्रीमहा-देवजी प्रथम आदर दीन्ह अबभय दिखावतेहैं (१) हे पार्बती जे श्रीरामकथा श्रवणतेचित्त लगाइकै नहींसुनै तिनके कानरन्ध्रहैं कौन रन्ध्रहैं अहि भवनसम किन्तु एककान कोटको

कान सर्पको बिलहै जे कोई श्रीरामयश ६

।।तीसुनते हैं तहां जैसे रंदामें बंदूक चलै है अरु अहि भवनमें अहि समातहै तैसे उनके कानमें निंदा बिषय प्रवेश करत है तहां श्रीराम कथा कैसे सुनै जैसे मृगा राग सुनते हैं तहां सबको कहते हैं अरु पार्बती को कहते हैं कि सावधान ह्वैकै सुनो जो मेरी बाणी सुनत संते चित्तकी वृत्ति अंते कहूं गई तौ तुम्हारे श्रवणरन्ध्र अहि भवन ह्वैजा-हिंगे महादेव के कहिबेको यहै तात्पर्य है पर यह सबको कहा है अब याही रीति ते

यह प्रसंग भरंको अर्थ जानव (२) पुनि जहां संत सुनैं अरु चलिकै दर्शनको न जाहिं तो उनके नेत्र मयूरके पत्तकी रेखाहैं नाम नेत्र को आकार मात्र है पर अंधे हैं तहां महादेव कहते हैं कि मेरे मुखमें तुम्हारी दृष्टि नहीं चलै काहेते कि बक्ता के मुखको ज्योतकी दृष्टि लगी रहै डिगै नहीं तब सद्गुरु कै तत्त्व नेत्रद्वार ह्वैकै प्रवेश करतु है (३) पुनि तिनके शिर कडू लौकी समहैं ताके भीतर कटु पदार्त्थ रह्योहै जिनके शिर अरु गुरु जोहै सो प्रत्यक्ष तिनको पद मूल एँड़ी अंगुली नख पद पीठ युगल तामें जाको शिर आरत ह्वैकै नहीं नवैं तिनके शिर कटु तुम्बी समहैं (४) पुनि जे प्राणी अपने हृदय में श्रीरामचन्द्र कै भक्ति नहीं ल्यावैं ते प्राणी जीवत हैं पर शवकहो मुर्दा सम हैं जीवत मृतक क्यों कहे मृतकको सियार श्वान गीध इत्यादिक नोचि नोचि खातेहैं अरु हरि विमुखनको कुटुंब दारा पुत्र इत्यादिक निशि दिन फारि फारि खाते हैं (५) जे प्राणी जीभते श्रीराम गुण नहीं गान करते रामनाम नहीं उच्चारण करते तिनकी जीभ दादुरकी समहै जो कहौ कि दादुर तो जीभ रहित है उसकी वाणी कपोल कल्पित है अनर्थं है तहां दादुरके कपोलही में जीभहै तहां जे रामगुण रामनाम संबन्ध रहित बोलते हैं तिनको बाणी दादुर सम बिनु अर्थहै वृथा है अरु जेहि समाज में श्रीरामगुण यश नहीं कथन होइ सो सभा मेंढुकनको समाज जानिये काहे ते कि इक्कीस हजार छःसै २१६०० श्वासा आठ पहरमें साधारण चलती हैं अरु जे बहुत सोवते हैं बहुत चलते हैं बहुत भोजन करते हैं बहुत बोलते हैं तब श्वासा बढ़िजाती तितने विधाता के अंकहु ते आयुर्बल छीण होती है अरु ब्रह्मा श्वासही की गिनतीते दिन मास वर्ष बांधते हैं ताते जन्म मरण पर्यंत ताईं जे श्वासा बिनु रामनाम जाती हैं तितनेही हिसाब में जन्म मरण होत है ताते जे विवेकी जन हैं ते अहर्निश श्रीराम यश गुण नाम अनेकन कथन करते हैं (६) हरिको यश सुनिकै जिनको हृदय नहीं हर्षत है तिनकी छाती कुलिशहु ते कठोर जानिये यहि प्रसंग में यहध्वनिहै कि पार्वती को सावधान कीन है अरु भय दर्शन करायेहैं कि जो कछ मेरी वारयते कोई अंग डिगैगो तो ऐसेही होइगो जैसे कहि आयेहैं पुनि ध्वनि है कि जब जिज्ञासू सद्गुरुन ते तत्त्वकी जिज्ञासा करै तो सर्वांग सावधान ह्वैकै सद्गुरु की बाणी सुनै जैसे मृगा राग सुनै है तब सद्गुरुकी बाणी फलीभूत होती है (७) हे गिरिजा श्रीरामचन्द्र की लीला सुनहु अब तुम्हारी बुद्धि स्थिर रहै श्रीरामलीला कैसी है जिन जीवनकै बुद्धि दैवी सम्पत्ति में है तिनको अति हितकारी है अरु जिन जीवनकै बुद्धि आसुरी सम्पत्ति में है ते व्यामोहित हैं श्रीरामलीला देखिकै सुनिकै दैवी बुद्धिवारे यह कहतेहैं कि देखिये तो परब्रह्म श्रीरामचन्द्र जेहैं ते अपने जननके सुख हेतु अनेक तरह की लीला करते हैं जा लीलाको सुनिकै समुझिकै गाइकै अनेकन जीव कृतार्त्थं होते हैं अरु जिनकै आसुरी बुद्धिहै ते यह कहते हैं कि रामचन्द्र परमेश्वर होते तो जानकीको क्यों ढूंढ़ते फिरते नागपास में क्यों बन्धित होते जब लक्ष्मण के शक्ति लागी तब क्यों रोवने लगे ऐसेही अनेक असम्भावना करिकै परमेश्वर विषे प्राकृत भाव रोपण करिकै व्यामोहित होतेहैं हे पार्वती ऐसेही सती तनमें तुमहूं मोहको प्राप्त भई हौ सो सुनहु (८) दोहार्त्थ॥

हे पार्वती श्रीराम कथा सुर धेनुसमहै पर सुरधेनु तीनिही फलकी दाताहै अरु श्रीराम कथाचारिहू फल अरु भक्ति श्रीराम स्वरूप श्रीराम धाम सबकीदाता है अरु सुरलोक सम संत समाज तहां रहती है ऐसो समुझिकै ऐसो कौन अभागी है जो श्रीराम चरित नहीं सुनै अरु जो श्रीराम चरित नहीं सुनै हैं तिनको लोक परलोक दोनों नष्टहैं अरु जिनकै दैवी बुद्धि है तिनको अमृत रूपहै अरु जिनकै आसुरी बुद्धिहै तिनको बिषरूप होइजात है जैसे स्वाती नक्षत्रको जल जो सीपके मुखमें परै तौमुक्ता होतहै अरु सर्पके मुखमें परै तौ बिष होत है तैसे श्रीरामकथा सुनिकै संत जनपरम दिव्य लीला जानते हैं अरु आसुरी बुद्धवाले प्राकृत इव लीला मानते हैं (१)इतिश्रीरामचरितमानसेसकल कालकलुष विध्वंसन बालकांड श्रोता सावधानकृते विंशतिस्तरंगः ॥ २० ॥

दोहा इकइस शुभग तरंग में उत्तर प्रश्न बहोरि ॥
रामचरण भय दर्शना श्वासन प्रीतिन थोरि २१

११९रामकथासुंदरकरतारी * । संशयबिहगउड़ावनिहारी * १
रामकथाकलिबिटपकुठारी ।
रामनामगुनचरितसुहाये । ज ३
ᳵ
जथाअनन्तरामभगवाना * । ४
तदपियथाश्रुतिजसमतिमोरी ।कहिहौंदेखिप्रीतिअतितोरी५
उमाप्रश्नतवसहजसुहाई * । ।६
एकबातनहिं मोहिं सोहानी । ७
रामकोउआना।जेहिश्रुतिगावधरहिं मुनिध्याना ८
हिं सुनहिं अस अधमनर ग्रसेजेमोहपिशाच ॥
पाखंडी हरिपद बिमुख समुझहि झूठनसाच १

हे पार्वती श्रीरामकथा सुन्दर करतारी समहै संशयरूपी बिहंग ताको उड़ाइ देतिहै पर जो एक हाथ हलावै तौ बिहंग नहीं उड़ैहै काहेते शब्द होतही नहीं कैसे बिहंगउड़ै तैसे अकेलहो कथाबांचै तौ संशय नहीं जाइहै अरु एक अंगुली अरु हथौरी बजावै तहां अल्प शब्द होइगो तबहूं नहीं बिहंग उड़ैगो तैसे जो श्रोता में अल्पबुद्धिहै किन्तु बक्तै अल्पबुद्धिहै तहां संशय नहीं जाइहै तहांजो बराबरि ताल बाजै तौ बिहंग उड़ैहै तैसे श्रोता बक्ता जानब [१] हे पार्वती कलिजो कलियुग पापमय है किन्तु कलि कहो क्लेश जोहै जन्म मरण सो बिटपहै ताके काटि डारिबे को श्री राम कथा कुठारी इव है सो रामकथा आदर संयुक्त चित्तकी वृत्ति एकाग्र करिकै सुनहु (२) हे पार्व्वती श्रीराम नाम श्रीरामगुण परम दिव्य श्रीरामकीर्ति परम निर्मल श्रीराम जन्म श्रीराम कर्म्म इत्यादिक जोहैं परम दिव्यतर सो अगणित हैं वेद भी कहते हैं (३) यथा अनन्त श्रीरामस्वरूप हैं तथा कथा कीर्त्ति गुण इत्यादिक नाना

विधत हैं कि कि जानबे कहिबे योग्य नहीं भगवान् शब्दको अर्थ पू॰ कहि आयेहैं (४) तदपि यथा वेद कहते हैं तथा मैं कहौं गो अरु जोमेरी मतिके अनुभव में आवैगो सो भी कहौं गो काहेते तुम्हारी प्रीति श्रीराम चरित में अतिशय देखि परती है (५) उमामा संज्ञा जीवकी है उकही उपसर्ग नाम संस्कार सोहि जीवके श्रीराम तत्त्व जानिबे को अरु सद् गुरुन ते प्रश्न करिबे को संस्कार होइ ताको शुद्ध जिज्ञासु कहो ताते उमा कहा अथवा महादेव कहते हैं हे उमा मा कहो मेरी उपमंगी तुहै ताते तुम्हारी प्रश्न मोको अतिप्रिय लागेउ है सहजही शोभित है काहेते तुम्हारे प्रश्नमें सो सत सम्मतहै ताते तुम्हारी प्रश्न मोको बहुत भायोहै आगे उमा तो ईश्वरीहै महादेव की अर्द्धांगी है अहर्निश रामाकार है (६) इन चौपाइन में श्रोताको आदर करि आये अब श्रोता को भयदिखावते हैं अरु जो अपने इष्ट को छोड़िकै दूसरे स्वरूपको निश्चय ब्रह्म करे तौ सद्गुरु नहीं सहिसकै है यहि प्रसंग में यह धुनि है श्री महादेव कहते हैं हे पार्व्वती तुम्हारो प्रश्न अतिप्रिय लागेउ है पर एक वात तुम्हारी मोको नहींनीकी लगी यद्यपि तुमका करहु मोहके बश कहेउ है (७) हे भवानी तुम तौ हमारी प्रियाहौ पर श्री दशरथ नन्दन जो श्री रामचन्द्रहैं जिनको बन में हमने नमस्कार कीनहै सोई हमारे इष्टदेव हैं अरु तिनको छोड़िकै तुम्हारे मनमें यह निश्चय आई कि जाको वेद नेति नेति करि गावते हैं अरु मुनीश्वर ध्यान करतेहैं सो रामआन हैं (८)दोहार्थ ॥ तहां हे भवानी अब मैं तोको का कहौं पर जैसो तू कहेहुहै ऐसो कहै कहै जो सुनै सो दोनों महा अधम हैं उन दूनहुं को महा मोह रूपी पिशाच लग्यो है बनाइ शठ हैं अरु पाखण्डी श्रोता बक्ता दोनों हैं अरु हरि पद ते बनाइ बिमुख हैं न तो उन को झूंठ समुझि परै न तो पुरुष समुझि परै अथवा समुझहिं झूंठनसांच झूठही समुझते हैं सांच समुझते नहीं तिनके ऐसो पशुइव ज्ञानहै जे दशरथनन्दन श्रीराम परमात्मा परब्रह्म विग्रह तिनको अपर राम सिद्धान्त करते हैं ते अधम पिशाच पाखण्डी हरिपद ते सब प्रकार ते बिमुख हैं (९) ॥

अज्ञअकोबिदअन्धअभागी । काईबिषयमुकुरमनलागी १
लम्पटकपटीकुटिलबिशेषी । सपनेहुंसन्तसभानहिंदेखी * २
कहहिंतेवेदअसम्मतबानी । जिनहिंनसूझलाभअरुहानी ३
मुकुरमलिनअरुनयनबिहीना । रामरूपदेखहिंकिमदीना ४
जिनकेअगुणनसगुणबिवेका।जल्पहिंकल्पितबचनअनेका ५
हरिमायाबशजगतभ्रमाहीं। तिनहिंकहतकछुअघटितनाहीं ६
बाततलभूतबिबशमतवारे * । तेनहिंबोलहिंबचनबिचारे * ७
जिनकृतमहामोहमदपाना । तिनकरकहाकरियनहिंकाना ८
सो० असनिज जानि विचारि तजुसंशय भजुरामपद ॥

११४ तहां प्रमाण है (पाद्मे आरण्यमुनिवाक्यं हनुमान्प्रति श्लोक ११) नतत्पुरं यां नहियत्ररामो यस्यांनरामोनचसंहितासा ॥ सनैतिहासोनहियत्ररामः काव्यंनतत्स्यान्नहियत्ररामः १ शास्त्रंनतत्स्यान्नहियत्रराम स्तीर्थंनतद्यत्रनरामचन्द्रः ॥ यागःसयागोनहियत्ररामो योगःसरोगोनहियत्ररामः २ नसासभायत्रनरामचन्द्रः कालोऽयकालोकलिरेवसोस्ति संकीर्त्यतेयत्रनरामदेवो विद्यापविद्यारहितात्वनेन ३ स्थानंभयस्थाननरामकीर्त्तिः रामेतनामामृतशून्यमास्यं ॥ सुरालयंप्रेतगृहंचतद्धि यत्रार्च्यतेनैवमहेन्द्रपूज्यः ४ उक्तेनकिंस्याद्बहुनातुविश्वं सर्वंमुधास्याद्यदिरामशून्यं ॥ तदेवसत्यंविहितंतदेव तदेवयोग्यंरघुनाथयुक्तं ५ सर्वोपनिषदसाराणां रहस्यंतत्प्रकाशितं ॥ एकादवारामचन्द्रा व्रतमन्यन्नतत्समं ६ मंत्रंत्वेकंचतन्नाम शास्त्रंतच्चैवतत्स्तुतिः ॥ तस्मात्सर्वात्मनाराम चन्द्रम्भजमनोहरं ७ येषांतुमानसंग्रामे लग्नंनेहमनोरमे ॥ वंचिताविधिनापाप स्तेवैक्रूरतरेणच ८ रामंब्रह्मवदन्तिसद्भक्त्या संभूताःकथयन्तिये ॥ श्रूयन्तेचसुकार्यंतेदेवैरिंद्रादिभिःस्तुते ९ येषांरामःप्रियोनैव नवैवारोशजातथा ॥ दृष्टव्यनमुखंतेषां गतिरस्तुकुतस्तदा १० (पुनःश्रीमन्महारामायणे) श्रीरामेयेचविमुखाः खलमतिनिरताब्रह्ममन्यद्वदन्ति तेमूढानास्तिकास्ते शुभगुणरहितास्सर्वबुद्ध्यातिरिक्ताः ॥ पापिष्ठाधर्म्महीनागुरुजनविमुखावेदशास्त्रेविरुद्धा ॥ तेहित्वागांगमंभोरविकिरणजलंपातुमिच्छन्तिग्रस्ताः ११ श्री रामचन्द्र धनुर्द्धर तिनको छोड़िकै जो अपर राम तत्त्व सिद्धान्त करते हैं ते अज्ञानी हैं अरु अकोविद कही मूर्ख हैं अरु अन्ध हैं बाहर भीतर के नेत्र फूटे हैं अरु अभागी हैं अरु मनरूप दर्पण तामें बिषय रूपमल लगि रह्योहै (१) अरु वे लंपट हैं परधन पर दारामें लीन हैं अरु कपटी हैं कहते हैं आन अरु करते हैं आन अरु कुटिल हैं सब प्रकार ते बिशेष कै टेढ़े हैं अरु संतन कै सभा स्वप्नेहु नहीं देखेउ है सत्संग नहीं कियो मन मुखीहैं (२) ते प्राणी वेदको सिद्धांत सम्मत जो तेहिको छोड़िकै कहते हैं जे अपने जीवकी हानि लाभ नहीं समुझते हैं ऐसो पशुइव जिनके ज्ञानहै (३) दृष्टांत जैसे कोई एक अन्धहै अरु दर्पण मलीन हाथमें लियेहै अपनो मुख देखा चाहत है सो कैसे देखैगो जो कोई कहै कि अन्धको निर्म्मल दर्पण काकरैगो किन्तु नेत्रहैं अरु दर्पण मलीन है तबहूं नहीं अपनो मुख देखिपरैहै तहां नेत्र अरु दर्पण दोनोंकी मलीनता क्यों कही तहां दर्पण स्थाने उनके गुरुहैं अरु गुरुतत्त्व वेत्ता नहींहै अरु वेद शास्त्रै में बोध नहीं है ताते मलिनहै अरुशिष्यजिज्ञासू जोहै तेहिकै ज्ञान बैराग्य रूप नेत्र नहीं हैं ताते दोऊ अन्धे हैं तहां मुख स्थाने श्रीरामरूप कोटिन सूर्यनको प्रकाश कोटिन कन्दर्प्पकीशोभाकोटिन दामिनी की छटा ऐसो रूप वह अन्ध मुकुर मलिन कैसे देखैगो ज्ञान करिकै विहीन है ताते दीन ह्वै रह्योहै (४) जिनके निर्गुण ब्रह्मको विचार नहीं है जानते नहीं हैं कि निर्गुण काको कही जो कहूं कहिबे को भयो तो यह कहिदेते हैं कि जो सर्व में व्यापक है सो निर्गुण है यह नहीं जानत कि निर्गुण कैसोहै अरु का स्वरूप है अरु कैसे व्याप्त है कैसे भिन्नहै यह बिचार जिनके नहींहै अरु सगुण ब्रह्मको बिचार नहीं

है यह कहते कि सगुणरूप विग्रह मायिक है सात्विक गुण मय विग्रह है ताको ईश्वरकही सो विद्या माया उपहित विग्रह है ताको सगुण कही किन्तु भक्तन के हेतु गुणनको ग्रहण करिकै विग्रहवान् होतहै ताको सगुणकही अरु यह जानी नहीं किकौन गुण वे हैं जो सगुण ब्रह्ममें विशेषण हैं अरु परब्रह्म मूर्ति विशेष्य है ताको सगुण कही यह जानते नहीं ताते जिनके अगुण सगुण को विवेक नहींहै तेई जल्पित कही जल्दी अति आतुरता संयुक्त कल्पित बचन बनाइ बनाइ अनेकन कहते हैं और किसूकी सुनतै नहींहैं हे पार्बती ते अज्ञानी आनराम कहते हैं (५) वे मनुष्य हरिकी माया जो अति प्रबल है तेहिके बश ह्वैकै जगत् में भ्रमते हैं ते जो आनराम कहहिं तो उनका यह कहना घटित है नाम उचित है काहेते हरिकी मायाके बशहैं (६) काहेते जो प्राणी बातकही सन्निपात के बशहै अरु जिनको भूत लगि रह्यो है अरुजे मदिरा पानकिये हैं ते मनुष्य संभारिकै बचन नहीं बोलते हैं तेई अनुचित वचन कहते हैं अरु जिनको सन्निपात अरुभूत अरुमद तीनिउ ग्रसेहैं तिनकी का कहौं तहां बात कफपित्त तीनिउंके मिले सन्नि होतीहै अरु इहां काम क्रोध लोभ जिनके है तिनके सदा सन्निपात जानिये (उत्तरकांडेचौ०) कामबात कफ लोभ अपारा । क्रोधपित नित छातीजारा ॥ प्रीति करहिं जो तीनिउँ भाई । उपजै सन्निपात दुखदाई ॥ अरु अशास्त्र अबिद्यमान ऐसो गुरु तिनको बचन दृढ़ करिकै ग्रहण सोई भूत चढ़ेउ है अरु मोहरूपी मद अपनेको उत्तम जाति मानेहैं अरु रूपवान् मानेहैं अरुयुवा अवस्था माने हैं अरु बिद्यावान् मानेहैं अरु महातत्त्व मानेहैं अरु वैराग्यवान् माने हैं अरु ज्ञानी माने हैं अरु ध्यानी मानेहैं एते अष्टमद पान किहे हैं देहाभिमानी हैं एते प्राणी बिचारि कै बचन नहीं बोलते हैं ते आन राम तत्त्व कहते हैं (७) हे प्रिया जिन महा मोह मदपान कीनहै तिन मनुष्यन कर कहा कबहूं नहीं सुनिये उनके संग न बोलिये न बैठिये न संगकरिये एक मोह एक महामोह कही जो संसार संबन्ध बिषै है तेहि में अपनपौ मानना सो मोहहै अरु जो परमात्मा परब्रह्म श्रीरामचन्द्रजीहैं किन्तु भगवत् के कोई विग्रह होहि अरु तिनके स्वरूप में लीलामें नाममें धाममें तर्क करिकै माया भाव रोपण करना अपने अज्ञानते ताको महा मोह कही इहां औरेके द्वार ह्वैकै पार्बती को कहते हैं पार्बती के श्रीरामलीला देखिकै महा मोह भयोरहै किन्तु पार्बती के मिसु करिकै सर्व जीवको शिक्षा करते हैं (८) सोरठार्थ ॥ यह सब कहिकै पार्बती को सावधान दृढ़ करिकै भली प्रकारते पुनि महादेव प्रसन्न ह्वैकै बोलते भये हे प्रिया जस मैं कहिआयों है तैसे अपने हृदय में दृढ़ बिचार करिकै सब संशयत्यागि कै श्रीरामपदपंकज भजहु अपर समस्त समुद्भव भ्रम है अन्धकाररूप है अरु मेरी बाणी रबि की किरणि है भ्रम तम नाश करिदेतु है सो बचन सुनहु तुम गिरिराजकुमारी ह तुम्हारी बुद्धि अचलहै (९) ॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडे उमाप्रश्नोत्तरश्रोताभयदरशआश्वासनप्रीतिसावधानकृतएकविंशतिस्तरंगः ॥ २१ ॥

दोहा अगुण सगुण दुइरूप प्रभु रामचरण करि एक ॥
राम स्वरूप बिशेष पर बाइस लहरि विवेक २२

११५ अगुणहिं सगुणहिं नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुराण बुध बेदा १

* २

जोगुणरहितसगुणसोकैसे * । जलहिमउपलबिलगनहिं जैसे ३
जासुनामभ्रमतिमिरपतंगा * ।तेहिकिमिकहीबिमोहप्रसंगा ४
रामसच्चिदानन्ददिनेशा * । नहिंतहँमोहनिशालवलेशा ५
सहजप्रकाशरूपभगवाना । नहिंतहँपुनिबिज्ञानबिहाना
हर्षविषादज्ञानअज्ञाना * । जी ७
रामब्रह्मव्यापकजगजाना । परमानन्दपरेशपुराना * * ८

दो० पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रकट परावर नाथ ॥
रघुकुलमणिममस्व

११५ हे भरद्वाज अब श्रीमहादेवजी पार्वतीके प्रथम प्रश्नका प्रत्युत्तर देतेहैं सो कैलासके प्रसंगभरेमें जानब प्रथम यह प्रश्नहै (चौपाई) प्रथम सो कारण कहहुबिचारी । निर्गुणब्रह्म सगुणबपु धारी ॥ तीनि चौपाईकी एकही अन्वय जानब अरु इहां केवल पार्वतीके प्रश्नको प्रत्युत्तरहै अरु ताहीके आवांतर श्रीराम स्वरूपको वर्णनहै यहनिश्चय जानब अरु दूसरा पार्वतीको यह प्रश्नहै (चौपाई) पुनि प्रभुकहहु राम अवतारा ॥ यहि प्रश्नको प्रत्युत्तर जय विजय जलंधर नारदको मोहलैके अरु श्रीरामजन्म ताईं केवल श्री रामस्वरूप वर्णन जानब महादेव बोले हे पार्वती निर्गुणब्रह्म अरु सगुणब्रह्म ते कछुभेद नहीं है यह मुनीश पुराण बुध वेद कहतेहैं (१) अगुणब्रह्म अरूप अलख अज जो है सोई ब्रह्मभक्तन के प्रेमबश ह्वैकै सगुण होतहै (२) जो ब्रह्मगुण रहितहै सो सगुण कैसे होतहै जैसे जल कारण पाइकै पाला अरु ओला ह्वै जातहै जब कार्य करिभयो पुनि जलको जलह्वै गयो तैसे ब्रह्म जो व्यापक अलखहै जो कोई भक्तन यह अभिलाषा कियो कि जो ब्रह्म सर्वत्र व्याप्तहै सोई हमारी रक्षाकरैगो तहां वह ब्रह्मकैसो चेतनहै सर्वसाक्षी है सर्वकीगति जानतहै ताते भक्तनकी अभिलाषा प्रेमको जानिकै स्वरूपको धारणकरते हैं जैसे प्रह्लाद अपने पितासों कह्यो कि मेरीरक्षा जो प्रभु सर्व व्यापकहै सो करतुहै तब नृसिंहजी प्रकटभये परमाया गुणरहित स्वेच्छित स्वरूप आगे जो कोई कहै कि निर्गुण ब्रह्म जो सर्व व्यापक सो प्रत्यक्ष विग्रहवान् होतहो नहींहै तहां ऐसो नेमनहीं है काहे तेकि जहां जहां जैसो कारण होतहै तहां तहां तैसी अभिलाषा भागवतनके होतिहै अरु देवतनके होतिहै उसी स्थानते प्रभु प्रत्यक्ष होतेहैं कबहीं क्षीरसागर ते कबहीं बैकुण्ठते कबहीं परधामते कबहीं सर्वव्यापक जोहै एतेस्वरूप प्रभुके एकहीहैं भक्तनकी अभिलाषा अनुकूल प्रत्यक्ष होतहै यहसब वेद शास्त्रमें प्रमाणहै काहेते प्रभुमें अनन्त

शक्तिहै प्रभु के अनन्तरूपहैं अनन्तलीलाहैं अनंत कारणहैं अनन्त कार्य्यहैं तहां जोकोई यहिमें संदेह करैगो तो उसको प्रभुकी प्रभुता अरु शास्त्रको विचार अरु आत्मअनुभव अच्छीतरह नहीं आयोहै अरु इहां महादेवके केवल पार्वतीके प्रश्नको प्रत्युत्तर कहतेहैं काहेते कि जैसो जिज्ञासू प्रश्नकरै तैसही वक्ताको कहना चाहिये तहां पार्वती प्रथम यह प्रश्न कीन्ह कि हे महादेव प्रथम यह कहो कि निर्गुणब्रह्म सगुण कैसे होतहै यह प्रश्न पार्वतीजू क्यों कियो तहां सतीतनमें तीनि संदेह भयरहैं एकतो यह कि महादेव जी राजपुत्र रामतिनको परस्वरूप विग्रह सच्चिदानन्द कहिकै प्रणाम कीनहै तव सतीजी संदेह संयुक्त विचार करतीहैं कि मेरे समुझबेमें ब्रह्मजो व्यापक बिरज अज निर्गुण अकल अभेदहै ताको सच्चिदानन्द कहो परसो तो देह धरतैनहीं प्रयोजनै नहींहै काहेते वाको वेदहू नहीं जानैं ताते सो ब्रह्म ये राजपुत्र नहींहैं अरु बिष्णु भगवान्‌हैं सो देवतनके हेतु देहधरतेहैं सोभी सच्चिदानन्द विग्रहहैं पर वे सर्वज्ञहैं सोभी ये राजपुत्र नहींहैं अरु शिवको बचन बृथा नहीं है यह पूर्वसंदेह कछुकहै ताते यह प्रश्न कीनहै कि जो मोसे समुझत नहीं बन्योहोइ तो महादेवके कहेते बोधह्वोइगो जो महादेव यह कहहिंगे कि श्रीराम दशरथनन्दन येई निर्गुण व्यापक ब्रह्महैं भक्तनकेहेतु शरीरको धारणकीन है तामें मानिकै बोधकरौंगी अरु जो बिष्णु भगवान्‌हैं तिनहींको अवतार रामजी को कहैंगे तो मानिकै बोधकरिहौं कि मोसे नहीं समुझत बन्योहै अरु जो ब्रह्मव्यापक अरु विष्णु भगवान् इनदोनों स्वरूपते रामस्वरूपपरै वर्णनकरैंगे तौ जौनोरीति कहेंगे तब तौनो रीतिमें समुझौंगी ताते यह प्रश्नकीन है कि हे महादेव निर्गुण कैसे सगुण होतहै तात्पर्य्य यहहै कि निर्गुण सगुणहोत है कि नहीं होतहै ताते महादेव कहतेहैं कि निर्गुण होतहै एक देशयेभी है हे पार्वती पर श्रीरामचन्द्रके स्वरूपके वर्णिबे को इहां तात्पर्य्य नहींहै अरु महादेव के कहिबेको हेतु यहहै कि हे पार्वती जो तुम सतीतनमें संदेहकीनहै सो सब बृथाहै निर्गुण सगुण होतहै सो कैसे ह्वतहै जैसे सूर्य आपुतेजकी मूर्त्तिहैं अरु अपने तेज प्रकाश करिकै व्याप्तहैं तहां जब कोई को अग्निका कार्य्य भयो तब सूर्यमुखी चस्मा सूर्यके सन्मुख देखावतहै अरु नीचे कपड़ा धरतहै तब वहै तेज जो अतिसूक्ष्महै सो ऐनक अरु कपड़ाके योगते स्थूलह्वै जातुहै यह दृष्टांत सूर्यस्थाने श्रीरामचन्द्र जी अरु तेजस्थाने व्यापक ब्रह्म अरु ऐनकस्थाने प्रह्लाद अरु कपड़ास्थाने हिरण्यकशिपु तहां उत्तर एक देश महादेव कहेहैं कि ऐसहू होतहै अब दूसरा अर्थ किन्तु जो गुण रहित सो सगुण कैसे होतहै जल हिम उपलके दृष्टांत ते तहां जलभी साकारहै अरु अवस्थांतर करिकैउहै जलहिम उपलहोत है सोभीसाकारहीहै तहां श्रीरामचन्द्र किशोर मूर्त्ति तिनते भक्तवात्सल्य इत्यादिक परम दिव्य-गुण भक्तानुग्रहार्थ अवस्थांतर भये श्रीदशरथ महाराज भक्तराज तिनके पुत्रभये बाल अवस्था पौगण्ड अवस्था कुमार अवस्था आदि किशोर अवस्था पुनि किशोरके किशोर है ऐसो किशोर बिग्रह श्रीरामचन्द्र परमात्मा परब्रह्म एकरसते प्रत्यक्ष भये इत्यर्थः

(३) श्रीमहादेव जी पार्वतीके प्रश्नको उत्तरदैकै बोध करिकै तब नामस्वरूप कहतेहैं हे पार्वतीजी जिन श्रीरामचन्द्र को नाम नित्य एकरस सूर्यहै अरु भ्रम अंधकाररूपतेहि

को बिना श्रमही नाशकरतुहै अरु तिन श्रीरामचन्द्र विषे तुम मोहरोपण कीन्ह्योहै यह महाअज्ञान है (४) हे पार्वती श्रीरामचन्द्र सच्चिदानन्द एकरस नित्य अखण्डमूर्ति ऐसे दिनेशहैं तहां मोहजो तिमिररूप सो कहूंलेशहू नहीं संभवैहै (५) हे प्रिया श्रीरामचन्द्र जी स्वयं भगवान्हैं षड्भाग पूर्णहैं ऐश्वर्य जिनके चारिपद बिभूतिहै एकपद में अनेक ब्रह्माण्डहैं सो अविद्यामयहै अरु विद्याभीहै अरु त्रिपाद बिभूति परधाममेंहै संधिनी संवेपिनी आह्लादिनी (तहांश्रुतिप्रमाण है) त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः ॥ इनको स्वरूप पूर्व कहेहैं सतीके मोहके प्रसंगमें यह ऐश्वर्य है पुनि धर्म चारि पद सत्य शौच तप दान पुनि जिनको यश चारि वेद चारि युगमें उज्ज्वल एक रस पूर्णहै पुनि श्री चारिहू बिभूतिमें प्रकाश रूपहै पुनि वैराग्य तीन गुण पांच तत्त्व मूल प्रकृति इत्यादिक सबते श्रीरामचन्द्रजी भिन्न हैं पुनि जो मोक्ष सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य सारिष्ट एते समस्त षड्भाग पूर्णहैं श्रीरामचन्द्रजी पुनि षड्भाग अनेक ब्रह्मांड को पोषण गुण अरु भरण गुण अरु आधार गुण सर्व शरण्यत्व गुण सर्वव्यापक गुण करुणा गुण इत्यादिक अनंत परमदिव्य गुण श्रीरामचन्द्र में स्वाभाविक पूर्ण हैं ताते भगवान् कही (अन्यच्चश्लोकद्वै) ऐश्वर्य्यंणचधर्मेणयशसाचश्रियैवच ॥ वैराग्यमोक्ष षटकोणैःसंजातोभगवान्हरिः १ पोषणंभरणाधारंशरण्यंसर्वव्यापकं ॥ कारुण्यंषड्भिः पूर्णोरामस्तुभगवान्स्वयं २ पुनि श्रीरामचन्द्र आपु रूपी हैं अरु सहज प्रकाश एक रस राम रूपहैं जो अनेक ब्रह्मांडको प्रकाश किहे हैं रूपी रूप सहज प्रकाश को दृष्टांत जैसे सूर्य रूपीहै प्रकाश रूपहै तहां सो प्रकाश सूर्यने सहजही बन्यो है शोभित है ऐसे ही चन्द्रमा अरु मणिको दृष्टांत है देखिये तो जैसे सूर्यके महत् प्रकाश आवरण ते सूर्यकी मूर्ति नहीं देखि परै है पुनि जैसे एक महातप्त सुवर्ण को गोला है तहां गोलाही के प्रकाश आवरण ते गोला नहीं देखिपरै है तैसे श्रीरामचन्द्रजी को सहज जो महत्प्रकाश सो चिन्मय एक रसहै तेहिके आवरण ते श्रीरामचन्द्रकै मूर्त्ति नहीं देखि परै है मन बचन अगोचर है (श्लोक ४) वाङ्मनोगोचरातीतंज्योतिरूपसनातनं ॥ कौशल्यानन्दनंरामंसच्चिदानंदविग्रहं १ नखेन्दुकिरणाःश्रेणीपूर्णब्रह्मैककारणं ॥ केचिद्वदंतितस्यांशं ब्रह्मचिद्रूपमव्ययं २ तदंघ्रिपंकजद्वन्द्वनखचन्द्रमणिप्रभाः ॥ आहुःपूर्णब्रह्मणोऽपिकारणं वेददुर्गमं ३ पद्मपुराणेपातालखण्डेएकोनसप्ततमोऽध्यायः ६९ ॥ रामैवघनस्तेजोब्रह्मैव व्यापकत्वाद्व्यापकैवसाक्षिणः निराकारोसूक्ष्मत्वात्सूक्ष्मतरोचेतनत्वाच्चेतनकरोवाह्याभ्यन्तरप्रकाशरूपेणएकैवइतिश्रुतिः ॥ नहिंतहँपुनिविज्ञानबिहाना ॥ तहां श्री रामचन्द्र के बिज्ञानको बिहानै नहीं है काहे ते कि जहां रात्री है तहां रात्रीके बीते प्रातःकाल को तात्पर्य है अरु जहां रात्रीही नहीं है तहां बिहान करिबे को कौन तात्पर्य है ताते जहां अज्ञान है जब अज्ञान दूरिभयो तब बिज्ञान कही विशेष ज्ञान जो है अरु जहां सच्चिदानन्द दिनेश श्रीरामचन्द्र जी एकरस उदय हैं तहां अज्ञान ज्ञान बिज्ञान ध्यान समाधिकाल कर्म स्वभाव गुण इत्यादिक जहां एकहू नहीं है (६) हे प्रिया हर्ष बिषाद ज्ञान बिज्ञान अज्ञान अहंमम अहमिति कही अहंइति सुत बित्त इत्यादिक मोर है अभिमान कही मैं बड़ो गुणवान् हौं इत्यादिक सब जीवके धर्महैं (७) हे पार्व्वती

जोश्रीरामचन्द्रजो ही सर्व व्यापक ब्रह्मआपने महत्प्रकाश गुण मतकरिकै जगनामाकही संपूर्ण जगत्में साची मात्र सबके नियंता अंतर्यामी हैं जैसे कठपुतरो में सूत्रधर अपने सूत्र करिकै व्याप्त है अनेक कला करावत है आप भिन्न है तैसे श्रीरामचन्द्र सूत्रात्मका व्याप्त हैं आपु भिन्न हैं परमानन्द स्वरूप हैं अरु परेश कहे सबके परे ईश हैं शिवजू कहते हैं ब्रह्मा अरु हम बिष्णु इत्यादिक सबके ईश हैं अरु पुराण पुरुष जिनको आदि अंत मध्य वेदहू नहीं जानि सकै नेति नेति करिकै गावते हैं भैं जो हौं श्रीराम कृपाते कछुक श्रीराम स्वरूप जानतहौं सो येई रामचन्द्र हैं सो मैं तोसे कहत हौं (८) दोहार्थ॥ कैसे हैं श्रीरामचन्द्र जी प्रसिद्ध पुरुष हैं वेद शास्त्र पुराणन में श्रीरामचन्द्र ही प्रसिद्ध कहो सिद्धांत हैं किंतु एक अप्रसिद्ध पुरुष हैं परोक्ष जो सर्वत्र व्यापक ब्रह्म अरु एक प्रसिद्ध पुरुष प्रत्यक्ष साकार ब्रह्म श्रीरामचन्द्रजू तहां अप्रसिद्ध प्रसिद्ध पुरुष एकही तत्व हैं अरु प्रकाश निधिहैं निधि कही समूह को जैसे समुद्र जलनिधि है सूर्य प्रकाश निधि है चन्द्रमा शीत निधिहै अग्नि तेज निधिहै इत्यादिक जहां लगि जाको कोश है तहां तक ते अपने ऐश्वर्य प्रकाश करिकै पूर्ण हैं तैसेही श्रीरामचन्द्र को कोश अनेक ब्रह्मांड है तहां ब्रह्मांड ऐश्वर्य है अरु व्यापक ब्रह्म प्रकाश है जाते ब्रह्मांड प्रकाशित है तहां प्रकाशी श्रीरामचन्द्र हैं अरु प्रकाश व्यापक है तहां प्रकाशी एकही है तहां अप्रसिद्ध कही अदृश्य है अरु प्रसिद्ध कही अंतर्बाह्य दिव्य नेत्रते दृश्यमान है तहां याही प्रकारते दूनों रूप स्वरूप श्रीरामचन्द्रही हैं ताते प्रसिद्ध प्रकाश निधि पुरुष कहा पुनि प्रकट कही प्रत्यक्ष विद्यमान श्रीरामचन्द्र जिनको हमने नमस्कार किया अरु तुम्हारी लीला देखिकै भ्रमभयो ताते प्रकट कहा पुनि परावरनाथ और जो माया है अरु पर जो जीवहै श्रीरामचन्द्रजी दूनोंके नाथ हैं किंतु और जीव अरु पर सर्वजीव के अंतर व्याप्त सो तिन दूनोंके नाथहैं किंतु और ब्रह्मादिक देवता अरु दशों दिग्पाल हैं अरु पर बिष्णु भगवान् हैं ते दोनोंके नाथ श्रीरामचन्द्र हैं जे श्रीरघुवंश कुलके मणि हैं सो दशरथ नन्दन साक्षात् हैं किंतु रघु संज्ञा जीवकी है ताते जहां लगि जीवपदहै बद्धमुमुक्षुमुक्त कैवल्य नित्य तिन सबके शिरोमणि ईश श्रीरामचन्द्र कौशल्या नन्दन द्विभुज अखंड एकरस अविद्या विद्या दूनों ते परे निर्विशेष परब्रह्म सच्चिदानन्द मूर्ति परात्पर परतत्व वेदांतको सारभूत पंच प्रकार के जीव कौन हैं तिनको भेद कहते हैं बद्धमें तीन भेदहैं एक पामर जाको ईश्वरको ज्ञानै नहीं है दूसर विषयी जो कछु पढ़े गुणै पुराण इत्यादिक बांचै अपरको उपदेश करै पर केवल विषयको अनुसंधान मन में है तीसर बद्ध जो वेद पुराण पढ़े हैं बाचते हैं तत्वको समुझते हैं अरु अपरते सुनते हैं कहत सुनत वैराग्यमें अनुसंधान होत है आपु को धिक् मानते हैं पर जब कहब सुनब बन्दभयो तब अर्थ धर्म्म काम यहि तीनिमें आसक्त होते हैं पुनि मुमुक्षुमें चारि भेद हैं एक बिषय शील मुमुक्षु द्रव्यका उपाय करते हैं पर भगवत् भागवत में शास्त्र सुनि कै लगाइ देते हैं अरु आप मन्द वैराग्यमें आरूढ़ हैं दूसर कृपा शील शास्त्र सुनिकै अध्ययन करिकै त्रिकाल संध्या पूजा पाठ जाप्य यजन इत्यादिक करिकै भगवत् अर्पण करते हैं आपु वैराग्यमान् हैं पुनि तीसर मनन शील शास्त्र सुनतेहैं ताको मनन करि।

सारासार को बिचार करते हैं ताहीमें मोक्ष मानेहैं ते तीव्र वैराग्यमान् हैं चौथे मुक्त शील मुमुक्षु मनन करिकै सिद्धांतको ग्रहण करिकै भक्तनकी दशामें अनुसंधान करतेहैं ते तीव्रतर वैराग्यमान् हैं पुनि मुक्तमें तीनि भेदहैं एक जीवमुक्त हैं जनक वशिष्ठ बिश्वामित्र वामदेव याज्ञवल्क्य भरद्वाज बृहस्पति ब्रह्मा इत्यादिकहू जे बिदेह मुक्त ऋषभदेव दत्तात्रेय जड़भरत इत्यादिक तीसरे जीवन्मुक्त बिदेह मुक्त दूनों दशा हैं जिनमें सनकादिक नारद शुकदेव इत्यादिक पर तीनिहूं को यही तत्व है कछुक कृपा भिन्नहै पर तीनहूं में तीव्रतर वैराग्यहै अरु योग ज्ञान भक्ति करके परिपूर्णहैं पुनि कैवल्यजीवहै अष्टावक्र हस्तामलक इत्यादिक जे वेदान्तशास्त्र बिचारिकै ज्ञान नन्दमें मग्नह्वैरहेहैं आपुकोब्रह्मास्मि मानेहैं जीवब्रह्मकी एकता मानतेहैं तेऊ तीव्रतम वैराग्यमें आरूढ़ हैं पुनि नित्य जीवहैं जे श्रीरामचन्द्रजीके नित्यनिकटरहतेहैं श्रीहनुमान् इत्यादिक षोड़शौ पार्षद अरु अनंतपार्षदहैं तहां यह पदकहा रघुकुलमणि तहांरघुसंज्ञा सर्व जीवकीहै ताते जहांतकजीवकुलहै तिन सबके मणिकहीईश्वस्वामी श्रीरामचन्द्रजीहैं श्रीदशरथ नन्दन जिनको कही हे पार्वती सोई मोर स्वामी हैं यह कहिकै प्रेमते गद्‌गद होइगये आसनते उठिकै श्रीरामचन्द्रजो साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करिकै पुनि आसन पर बैठे तुरन्त पार्वतीजी उठिकै प्रेमते मग्न होइकै श्रीरामचन्द्रजी अरु महादेवजीको सर्वभावते प्रणाम करिकै श्रीमहादेवकी आज्ञा पाइकै आसनपर बामभागमें सम्मुख करजोरिकै बैठती भई (१) (श्लोक १५ श्रीवशिष्ठसंहितायां सप्तत्रिंशतितमोध्याये श्रीवशिष्ठवाक्यंभरद्वाजंप्रति) जय श्रीमन्महाराज कुमाररघुनन्दन ॥ रामचन्द्रमहाबाहो सच्चिदानन्दविग्रह १ गुणातीतपरब्रह्म परात्परतमप्रभो ॥ वात्सल्यादिपरानन्त कल्याणगुणसागर २ जयमत्स्याद्यसंख्येया वतारोद्भवकारण ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशादि संसेव्यचरणांबुज ३ [पुनःसनत्कुमारसंहितायां श्रीवेदव्यासवाक्यंयुधिष्ठिरंप्रति] तत्त्वस्वरूपंपुरुषंपुराणं स्वतेजसापूरितविश्वमेकं ॥ राजाधिराजंरविमण्डलस्थं विश्वेश्वरंराममहंभजामि ४ विभूतिदं विश्वसृजंविराजं राजेन्द्रमीशंरघुवंशनाथं ॥ अचिंत्यमव्यक्तमनन्तमूर्तिं ज्योतिर्मयंराममहंभजामि ५ मुनीन्द्रगुह्यं परिपूर्णमेकं कलानिधिंकल्मषनाशहेतुं ॥ परात्परंयत्परमंपवित्रं नमामिराममहतोमहान्तं ६ [पुनः श्रीरामतापिन्यां] ओंयोवैश्रीरामचन्द्रः सभगवानद्वैतपरमानन्दात्मयः परब्रह्मभूर्भुवःस्वस्तस्मैवैनमोनमः ७ ओंयोवैश्रीरामचन्द्रः सभगवान्योब्रह्माविष्णुरीश्वरोय सर्ववेदात्माभूर्भुवःस्वस्तस्मैवैनमोनमः ८ ओंयोवैश्रीरामचन्द्रः सभगवान्योब्रह्माण्डस्यान्तर्बहिर्व्याप्तोयो विराट्भूर्भुवःस्वस्तस्मैवैनमोनमः ९ इतिश्रुतिःयत्तद्ब्रह्मततस्यतनुभाश्रुतिः१० नित्योनित्यानांचेतनश्चेतनानामेको बहूनांयोबिदधातिकामांश्रुतिः ११ [अन्यच्च] सच्चिद्रूपगुणस्वरूपविभवैश्वर्यैकदिव्यंवपु र्नित्यानन्दगुणानुभावकरुणःसौन्दर्यशुद्धोदधिः ॥ त्रय्यन्तप्रतिपाद्यवस्तुघटने कर्तास्वतंत्रःस्वतोजातश्चाणुकरान्वयेविजयते श्रीजानकीशोविभुः १२ अंशभूत बिराटब्रह्म विष्णुरुद्रास्तथापरे ॥ ब्रह्मतेजोघनोभूतंवरतेजानकीपतेः १३ सगुणंनिर्गुणंचैवपरमात्मातथैवच ॥ एतेचांशाहिरामस्य पूर्वंचांतेचमध्यतः १४ (पुनःनारदपंचरात्रे) आनन्दोद्विविधःप्रोक्तःमूर्तश्चामूर्त एवच ॥ अमूर्तस्याश्रयोमूर्तःपरमात्मानराकृतिः १५ इतिविशेषेण यह एकसमाप्तहुआ (६)॥

कहिंअज्ञानी। प्रभुपरमोहधरहिंजड़प्रानी १
…नयनपटलनिहारी । …भानुकहहिंकुबिचारी २
…लोचनअंगुलिलाये। प्रकटयुगलशशितिनकेभाये ३
…हा। ४
… …नसुरजीवसमेता ॥ …केलि… ५
…रामअनादिअवध… ६
जगतप्रकाश्यप्रकाशकरामू। मायाधीशज्ञानगुणधामू ॥ ७
सुसत्यताजड़माया ॥ भाससत्यइवमोहसहाया ॥ ८

यदपि मृषा तिहुकालसोइभ्रमन सकै कोउटारि १

टी० हे भरद्वाज पुनि श्री महादेवजी बोलतभये हे पार्वती सुनु यहि तेरो कहना अनुचित भयो है जोतुम कहेहु कि राम आन हैं ऐसो तौ ते कहहिं जे प्राणी अज्ञानी हैं जे अपनो भ्रम नहीं समझते हैं अरु अपनो मोह प्रभु विषे रोपण करते हैं यह कहते हैं कि जो राम परमेश्वर परब्रह्म होते तौ जानकी जी को क्यों ढूंढ़ते फिरते तहां प्रभुकी चित्र विचित्रलीला वे जड़ प्राणी कहा जानै हैं (१) जिनके पशुज्ञान है ते प्राणी अपनो भ्रम प्रभु विषे ऐसे रोपण करते हैं जैसे आकाश में मेघ को पटलछाय रह्यो है त्यहि मेघके नीचे आपुढपेहैं अरु सूर्य घनके ऊपर हैं सूर्य्य के प्रकाशते मेघ ढप्यो है तहां वे मूर्ख यह कहते हैं कि मेघकरिकै सूर्यढपिरहेहैं (२) जैसे कोई नेत्रके मध्यमें अंगुली लगाइकै देखते हैं तब वे कहते हैं कि चन्द्रमा दुइ उदित हैं देखौ तौ अपने नेत्र को दोष शशि में रोपण करते हैं तैसेही जे माया करिकै भ्रमित हैं ते अपनो भ्रम श्रीरामचन्द्र बिषे आरोपण करते हैं ऐसे नर पशु हैं (३) हे उमा श्रीरामचन्द्र लीला करतेहैं ताको जिन जीवन देखीहै अरु जिन शास्त्रन में सुनी है कि श्रीरामचन्द्र भगवान् हैं अरु येभी सुनाहै कि श्रीरामचन्द्र आरण्य बिषे बिकल श्रीजानकीजीको ढूंढ़ते हैं यह दूनौं देखिकै सुनिकै महामोह को प्राप्त होतेहैं यह मनमें ल्यावते हैं कि श्रीरामचन्द्र कैसे भगवान् हैं जो मनुष्य की नाईं बिकल बनमें फिरते हैं तहां श्रीरामचन्द्रकी प्राकृत इवलीला जोहै सो अज्ञानी जीवनको मोह रूपहै अरु वही लीला प्राकृत मोहरूप सो श्रीरामचन्द्र बिषे परम दिव्यहै जैसे श्रीगंगा श्रीसरयूके प्रवाह में जो कछुपरै सो अतिपवित्र सरयू गंगामय सोहतहै तैसे श्रीरामचन्द्र बिषे प्राकृत इवलीला ब्रह्म मयजानिये अति शोभाको पावत है जैसे आकाशबिषे रात्रि शोभा पावती है धूम यज्ञादिकन के शोभा पावैहै रज शोभा पावत है किंतु हे प्रिया श्रीरामचन्द्र बिषयिक असमोह श्रीजानकीजी बिषेहै तौ यह शृंगाररस बिषे अतिशोभित है जैसे नभ बिषे तम धूम धूरि शोभापावत है देखिये तौ गगन बिषे रात्रौ सहित

चन्द्रमा नक्षत्र कैसी शोभापावति है अरु धूम नभ बिषे मेघ होतहै अरु धूरि नभ में प्राप्त ह्वैकै राजन के किरीट नेत्रन में शोभित होतिहै देखिये तो ऐसे देव दानव मनुष्य इत्यादिक कौन मोहकरैंगे जैसे श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी बिषे मोहकरैहैं जिन श्रीजानकी जीके मोहहार ह्वैकै संपूर्ण राक्षसन को नाश करिकै परमपद दीनहै अरु संपूर्ण महि बि गऊ ब्राह्मण मुनि सन्त सर्वको निष्कण्टक करिदीन है किंतु श्रीरामचन्द्र बिषे बिषयिक प्राणी जे हैं ते असमोह करते हैं कि नभ जोहै सो तम धूम धूरि करिकै मलीन ह्वै गयो है अरु यह नहीं बिचारते कि नभबिषे ये तीनहूं शोभित हैं अरु नभ तीतम धूरि धूम ते निर्लेप है इनते न तो शोभितहै न अशोभितहै तैसे श्रीरामचन्द्रजी सबते निर्लेपहैं एक रस हैं सर्वते भिन्नहैं (४) दु चौपाईको एक अन्वयहै हे उमा सुनहु एकबिषय है शब्दस्पर्श रूप रस गन्ध ये पांच ज्ञान इन्द्री के बिषय हैं पुनि चलन बिसर्ग कही मलको त्याग मैथुन भक्षण व्यवहार एक कर्म इन्द्रीके बिषय हैं पुनि कारण कही इन्द्री श्रवण त्वक् नयन जीभ नासिका ज्ञानइन्द्री पग गुदा लिंग मुख हाथ कर्म इन्द्री पुनि सुर इन्द्रिन के देवता श्रवणकेदेवतादशौ दिशात्वक् को बायु नयनको सूर्य जीभको वरुणनासिका को अश्विनीकुमार पुनि पगको देवता यज्ञ बिष्णु गुदाको यमराज लिंग को दक्ष प्रजापति मुखको अग्नि हाथको इन्द्र पुनि जीव अरु अन्तर्यामी ब्रह्म तहां ॥ बिषय करन सुर जीव समेता। सकल एकते एक सचेता ॥ बिषय करनते सचेतन है करन सुरनते चेतन है सुर जीवते चेतन है (५) अरु इनसबनके परमप्रकाशक श्रीरामचन्द्र जी अनादि पुरुष अखिल ब्रह्मांड के पति हैं अवध पति कहे दशरथ कुमार सोई मोर स्वामी हैं कैसेहैं सबके परम प्रकाशक हैं जैसे एक कोई महाराज हैं तिनको एक सूबाहै तिनको एक आमिल है तिनको एक जमादार है तिनको एक चाकर है सो सब प्रजापर अमल करैहै तहां राजाको तेज प्रताप सूबामें बिशेषहै पुनि वहै तेज प्रताप सूबाके द्वार ह्वैकै आमिलमें प्राप्त है पुनिआमिलके द्वार जमादार बिषेताहीद्वार चाकरमें प्राप्तहै देखौ तो वहै चाकर राजा के तेज प्रतापते सगरी राज्य में आज्ञा करैहै ऐसेही श्रीरामचन्द्रजी अनेक ब्रह्मांड के राजा अपने गुण प्रताप तेज रूपते अपु सूत्रात्मक व्याप्तहैं जीव बिषे जीव देवतन बिषे देवता इन्द्रिन बिषे इन्द्री या दृष्टांत ते श्रीरामचन्द्र अनादि सर्वको अवधि श्रीअवधि पति तिनके पति सबके परम प्रकाशक हैं हे पार्वती सो येई राम हैं जिनको देखिकै तुम्हारे भ्रम भयोहै (६) यह जगत् प्रकाश्य है अरु एक अन्तर्यामी प्रकाश्य अरु श्री रामचन्द्र प्रकाशक हैं जाते जगत् प्रकाशवान् है पुनि मायाधीश हैं अविद्या विद्या आह्लादिनी तीनिहूं के अधीश कही ईश श्रीरामचन्द्रजी हैं पुनि गुणधाम हैं तामस राजस सात्विक यह तीनि गुणके परेहैं तीनिहूं गुण ईशके आधीन हैं परम दिव्य गुण जेहैं ज्ञान इत्यादिक तेहिके धामहैं सो कौन गुणहैं ज्ञान शक्ति बल ऐश्वर्य तेज बीर्य सौशील्य वात्सल्य आर्जव सौहार्द्द सर्वशरण्यत्व सौम्य कारुण्य स्थिरता धैर्य दया माधुर्य आर्द्दव एते अष्टादश गुण तिनके स्वरूप कहते हैं अरु इनके बिशेषण कहते हैं क्रमहीते सर्वदेशकाल बस्तुको प्रत्यक्ष अनुभव सो ज्ञान १ अघट घटना करनेको सामर्थ्य सो शक्ति२ बिश्व धारणादिको सामर्थ्यसो बल ३ सर्व नियमन शक्तिसो ऐश्वर्य४काहूते पराभव न होइ

सर्वको पराभव करनेकी सामर्थ्य सो तेज ५ अपरमित श्रमके प्राप्त होत संते श्रम न होय सो वीर्य ६ एते षड्गुण सृष्टि आदिक के उपयोगी हैं भगवच्छब्दको वाच्य है सो परब्रह्म में रहते हैं अरु निकट विषे मूर्तिमान् हैं पुनि जाति वर्णाश्रम इत्यादिक के बड़ाई की उपेक्षा छोड़िकै निष्कपट मन्दजनहूं के संगमिलि रहनो सो सौशील्य है ७ भृत्यके दोष न बिचार करना सो वात्सल्य ८ मन बचनकायको सामान्य व्यापार सो आर्जव ९ अपने जनको अपनाते अधिक मानना सो सौहार्द्द १० ब्रह्मादिक स्थावरांत की साधारण रक्षा सो सर्वशरण्यत्व ११ ताहीको नाम सौम्य १२ पर दुःखको दूरि करना सो करुणा १३ दानयुद्धादिकमें अचलतासो स्थिरता १४प्रतिज्ञा पालन सोधैर्य १५ कारण बिना परावा दुःखदेखिकै दुःखी होयकै ताके दुःख निवारण कै इच्छा सो दया १६ अमृत पानकी नाई स्वादु दर्शन सो माधुर्य१७अपने शरणागत जनको दुःख न सहनो सो आर्द्रव १८ इतिअष्टादश पुनि महाकुलीन सर्व रमण सर्वलोक प्रसिद्ध नियतात्मा महाबीर्य द्युति-मान् बशीमान् बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमान् उदार अदभ्र शत्रु निवर्हण सर्व व्यापकत्व इति षोड़श अब इनके बिशेषण क्रमही ते कहते हैं सर्वोत्तम कुल सो म-हाकुलीन १ शब्दार्थ रमणीयाख्यावान् रामनाम संसार दुःख निवृत्ति पूर्वक अपनी नित्य नैमित्यलीला में रमण करावै सो राम अथवा रमण करैं योगीजन जेहि बिषे सो राम अथवा स्वरूप लावण्य दर्शन ध्यानते रमण करैं मुनीशजन जिनबिषे सो राम इति सर्वरमण २ आब्रह्मादि स्थावरांत प्रसिद्ध सो सर्वलोक प्रसिद्ध ३ आब्रह्मादि स्थाव-रांतको आत्मा अन्तष्करण जिनने खींच्योहै सो नियतात्मा ४ जिनके पराक्रमते कण में अनन्त कोटि ब्रह्मांडधारी महा बिराटादि के पराक्रम लीन होइ जाहिं सो महा वीर्य ५ सर्वकाल एकरस सुन्दर सो द्युतिमान् ६ हर्ष शोक दुःख सुख रहित सोधृति-मान्७अपने गुणकरिकै सर्व जीवनको वाह्यांतरजिनने बशीकृत कीन सो वशी ८ प्रशस्त बुद्धि सर्व जीवनको निश्चयरूप सो बुद्धिमान् ९ आब्रह्मादिस्थावरांत अपनी अपनी मर्याद में सर्वको राखतेहैं सो नीतिमान् १० जाकी सहजपराबाणी है जाबाणी में योगी समस्तरमण करिकै रामपदको प्राप्तहोतेहैं अथवावेदहै सहजबाणी जाकी सो बाग्मी ११ अनेक ब्रह्मांड में जेतीहैं विभूतित्रिपाद सहित जाको एक बिलासहै सो श्रीमान् १२ सर्व जीव जाही में प्रसन्न हैं सोई देतेहैं पुनि सन्मुख होइकै जोई पदार्थ प्रार्थना करैं सोई देतेहैं सो उदार १३ जाको आदि अन्त मध्य कोई नहीं जानै अधिकाधिक तर है सो अदभ्र१४ भक्तजन महि गो ब्राह्मण तिनके जो शत्रु तिनको नाशकरि देते हैं अथवा संतजनके शत्रु काम क्रोध लोभ इत्यादिक तिनको बर्जित करते हैं नाशभी करते हैं सो शत्रु निवर्हण १५अपने चैतन्य गुण भूतते अनेक ब्रह्मांड चैतन्य कियेहैं सो सर्व व्यापकत्व १६ एते अष्टादश षोड़श इत्यादिक अनन्त गुण परम दिव्य तिनके धाम हैं श्रीरामचन्द्रजी अपने भक्तनको सोई गुण देतेहैं (७) हेपार्बती जिन श्रीरामचन्द्रजू की सत्यता कही सता ते यह जड़ अविद्या माया है सो सत्य इव भासती है जैसे एक चुम्बक शिला होतिहै तेहिकी सताते लोहा स्फुरित होतहै आपु भिन्नहै तैसे श्रीरामचन्द्र सबते भिन्नहैं तिनकी सताते जड़चेतनहै सत्ताकहे अंशप्रकाश प्रताप तीनिहूं एकही तत्व

हैं सत्ताके आश्रय यहजड़ कैसे चेतनहै जैसे शरीरके आ.श्रयबार अरु नख बढ़ते हैं पर बार नख दोनों जड़ हैं, कैसेजानिये देखिये तौ बार नख जो काटि डारौ तौ शरीर को पीड़ा नहीं होतीहै तातेजड़हैं ऐसेही जड़ चेतन मिलेहैं अरु भिन्न भीहैं तहांबार अरु नख को मूल शरीर में प्रवेशहै सो सर्वकाल में चेतन है जो बार नख ऊपर बाढ़ि आये हैं सो जड़हैं उनको उत्पत्ति नाश बनोहै अनित्य को दृष्टांत नित्य में देते हैं सो जानब दृष्टांत शरीर स्थाने श्रीरामचन्द्रजी अरु बार नख के मूल स्थाने सत्यता तेहि मिलित विद्याहै अरु ताको विशेषण ज्ञान इत्यादिक है अरु ऊपर के नख स्थाने अविद्या जड़ रूप जो त्रैलोक्य में देव दानव मनुष्य इत्यादिक सबको बश करि रहीहै परश्रीरामकी सत्यता ते जड़ सत्य इव भासती है पर मोहकी सहायते यह जीव माया में अपनपौ मानि रह्योहै सोई मोहकी सहायते यथार्थ भासैहै ताते श्रीरामचन्द्रकी सत्यता एक असंभागते जड़ जो माया सो सत्यइव स्थित ह्वै रहीहै (अन्यच्चश्लोकहै) प्रकाशांशः प्रतापश्चचसत्ताचैवरघूत्तम ॥ जड़श्चचेतनंकृत्स्नाव्यापकंचैवमव्ययं १ (पुनिगीतायाम्) तत्तदेव.वगच्छत्वंममतेजोंऽशसंभवं ॥ बिष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत् (८) दोहार्थ ॥ हे पार्वती श्रीरामचन्द्रजी अपनी सत्यता स्वरूप करिकै परिपूर्ण ह्वै रहे हैं चैतन्यरूप तेहि चैतन्य बिषे जड़माया कैसे भासती है जैसे रजत जोहै रूपा सो सीप में भासत है अरु यथा भानुकी किरणि में जल भासतु है पर सीप में चांदी अरु रविकर में बारि तीनिहूं भूतभविष्य वर्तमान काल में मृषा है न कभी रूपा जल रह्योहै न होइगो न है पर यहि भ्रमको कोई टारा चहै तौ किसूके टारिबे योग्य नहींहै देखिये तौ बृथा भी कहा अरु किसूके टारिबे योग्य नहींहै ये भी कहा तहां बड़ो आश्चर्यहै जो कछु बस्तुही नहीं है तौ उसको टारना काहै तहां नहीं है अरुहै सो दोनों वाक्य सिद्ध करना काहेते बिना बस्तु भ्रमनहीं संभव है तहां यह बिचार में आवत है कि सीप में रूपाको छटा सूक्ष्म ताको भासत है काहे ते कि जिनको सीपमें रूपा को भ्रम भयोहै तिसने आगे रूपाको व्यवहार कियो है तबतो मोह करिकै भ्रम भयो है अरु रबिकी किरणि में जलको भ.सहै काहेते कि सूर्य अपनी किरणिते जल बर्षते हैं ताते सूक्ष्म जलको भासहै तबतो किरणिमें जलको भ्रमहोतहै पर सीपमें रूपाअरु रबि किरणि में जल दूनों कार्यकारी नहींहैं आत्माहै तहां यह समुझि परतहै कि सबको भ्रमभयोहै अरु एक भ्रमहै अरु एक जेहिबिषे भ्रम भयोहै ये तीनिहू अनादि समुझि परते हैं माया अरु सत्यता कहै जीव चेतनरूप ताको भ्रमभयोहै अरु जेहि विषे भ्रम भयो है सो शुद्ध सत्यता ब्रह्महै सो ये तीनिहू तत्व अखण्ड अनादि हैं तहां जेहि जीवपर परमेश्वर श्रीरामचन्द्र कीकृपा होइ तबजीवके जो अविद्यारूप भ्रमहै सो मिटि जाइहै तब यथार्थ बोध होतहै तहां (रामोपनिषदतेप्रमाणहै) जीवमायेश्वराश्चते त्रय स्तत्त्वाख्यनाद्योखंडाश्चैकरसास्सर्वदैवइतिश्रुतिः ॥ जीवात्माजोहै सो परमेश्वरकी सत्यताको अंशहै चेतनहै सो माया केबश ह्वैकै भ्रमित ह्वैगयो है अपने शुद्धस्वरूप में आपको भ्रमभयोहै पुनि अपनो भ्रम परमेश्वर में रोपण करैहै तहां बिना परमेश्वर की कृपा यहभ्रम तीनिहूंकालमें नहीं मिटैहै तहां (उत्तरकांडे चौ०) ईश्वर अंशजीव अवि-

नाशी । चेतन अमल सहज सुखराशी॥ सोमायावश भयउँ गोसाईं । बंध्योंकीरमर्कटकीनाईं ॥ (पुनि अयोध्याकांडे) तुम्हरीकृपातुमहिंरघुनन्दन । जानहिंभक्तभक्तउरचन्दन ॥ सोजानै जेहि देहुजनाई ॥ तातेजीवहीको भ्रमहोतो है काहेते कि जीव अनादि मायाको भोक्ता है तहां सीपस्थाने श्रीरामसत्यता है जो नित्यशुद्ध है अरु रूपा को भ्रमस्थाने अविद्या मायाहै सत्यता चैतन्य मेंहै अरु वहै सत्यता चैतन्य रूप सो अविद्याके वश ह्वैकै अनेक रूप है अनादिही ते मोहके वशबद्धह्वै रहेहैं ताही को भ्रम होतो है तहां श्रीराम सत्यता में द्वैभेद हैं पर अनादि हीते एक भेद बद्धअरु एकभेदशुद्ध मुक्त है ताते श्रीरामचन्द्रकी सत्यता अरु माया दोनों मिलि कै ब्रह्माण्ड की रचना ह्वैरही है अरु श्रीरामचन्द्रजी दोऊते परोत्तम हैं (श्रीभगवद्गीतायां श्लोक) द्वाविमौपुरुषौलोके क्षरश्चाक्षरएवच क्षरःसर्वाणिभूतानि कूटस्थो क्षरउच्यते १ उत्तमःपुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः ॥ योलोकत्रयमाविश्यबिभर्त्यव्ययईश्वरः २ यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपिचोत्तमः ॥ अतोऽस्मिलोके वेदेचप्रथितःपुरुषोत्तमः ३ किन्तु बुद्धिके भ्रम आत्मा बिषे होती है किन्तु सतीके भ्रम श्रीरामचन्द्र विषे भयोहै ताते रजत सीप को दृष्टान्त दीन है पुनि दूसरार्थ रजतसीपमहँ भास निमि तहां सीपस्थाने माया अरु रूपस्थाने सत्यता अरु रवि किरणि माया वारि सत्यता जैसे रूपा भिन्न है रूपाकी सत्यता सीपमें भासति है अरु किरणि में जल की सत्यता भासति है तहां सीप अरु रवि करते रूप जल भिन्न है पर अनादि सत्य है तहां सत्यता अरु माया दोनों ते श्री रामचन्द्र परेहैं अरु श्रीराम सत्यता अरु माया दोनोंते समस्त रचना बनीहै ताते श्री रामचन्द्र अरु सत्यता अरु माया तीनिहूं तत्त्व पृथक् पृथक् अनादि शोभित हैं अरु जे मायाको तीनिहूं काल में मृषा कहतेहैं सो यह कहना भ्रम है सो उनका यह कहना भ्रमरूप किसूके टारिबे योग्य नहीं है अरु जो कहा कि सर्वथा वृथा है तौ यह जीवको बन्धन कौन कियेहै ताते वृथा नहीं कही जातीहै अरु जो कहो कि सत्य है तौ इसको कौन टारिसकैहै काहे को कभी छूटैगी जो कहो कि अपने अज्ञानते सत्य है ज्ञान भये ते असत्य है तहां देखिये अज्ञान तौ अवहींतेहै अरु जो कहो कि अज्ञान अनादि है जीवविषे ज्ञानभये ते शान्ति ह्वै जातु है तब जीव मोक्ष होतहै तौ वृथा क्यों कहते हौ ताते यह श्री रामचन्द्र की सत्यता अरु माया ये दूनों चित् अचित् महद्विभूति हैं किहूके कहिबे योग्य नहीं हैं अरु माया जोहै न तौ सत्य कही जाय न असत्य कही जाय अनिर्बचनीय है इत्यर्थः (१) ॥

११७ यहिबिधिजगहरिआश्रितरहई । यदपिअसत्यदेतदुखअहई १
ज्योंसपनेशिरकाटैकोई * । बिनजागेनदूरिदुखहोई * * २
जासुकृपाअसभ्रममिटिजाई । गिरिजासोइदयालुरघुराई * ३
आदिअन्तकोउजासुनपावा । मतिअनुमानिनिगमअसगावा ४
पगबिनचलैसुनैबिनकाना । करबिनकर्मकरैबिधिनाना * ५
आननरहितसकलरसभोगी । बिनबाणीबक्ताबड़योगी * ६

तनुबिनपरसनयनबिनदेखा । ग्रहैघ्राणबिनबासबिशेषा * ७
असस्बभांतिअलौकिककरणीमहिमातासुजाइकिमिवरणी ८
दो० जेहि इमिगावहिं वेदबुध
सोइ दशरथ सुत भक्तहित

११७ यही प्रकार ते जैसे पाछे दोहा में कहि आये हैं तैसेही यह जगत् हरि बिषे आश्रित है यहां हरि कही आत्मा को काहेते (श्लोकार्द्ध) हरिर्हरतिपापानिदु ष्टचित्तैरपिस्मृत: ॥ ताते जब आत्मज्ञान भयो तब संपूर्ण भ्रम मिटिजातहैं जैसे सीपके ज्ञान भयेते रूपाको भ्रम मिटि जातो है जैसे रवि किरणि के ज्ञान भयेते जलकी भ्रान्ति श्रीराम कृपाते मिटिजाती है तहां यद्यपि माया भ्रमरूप असत्य है तदपि दु:ख देतीहै काहेते असत्य कहा जाते आत्मा को कल्याण करी नहीं है ताते असत्य है पुनि द्वितीयार्थ यह जगत् जोहै मायामय तेहि बिषे आत्मा आश्रित है कैसे जैसे रूपा सीप में रविकर में बारिहै तहां यही रीतिसे चित बुद्धि मन अहंकार ये चतुष्टय अन्तष्करण आत्माकी ज्योत्स्ना है ताही करिकै जीवात्माको भोगत है आपभिन्नहै जैसे सूर्य अपनीज्योत्स्ना जो है किरणि ताही करिकैशुभाशुभ रस आकर्षण भोग करते हैं तैसे आत्माचित बुद्धि मन अहंकारते भोग करत है चित्त करिकै शुभाशुभ पदार्थ को चिन्तवन करै है बुद्धि करिकै निश्चय करै है मन करिकै संकल्प बिकल्प यह करौ कि न करौ यह होई कि न होईइत्यादिक अनेक मनके बिषयहैं अहंकार करिकै अहंमम इत्यादिकचारिहू का बिषयकरिकै इन्द्रिनके द्वारहूकै आत्मा भोग करतहै जैसे श्री रामचन्द्रको सत्यता जीवात्मा है तैसेही आत्मा की सत्यता चित बुद्धिमन अहंकार है ताही ते माया जो शुभाशुभ है ताको भोग आत्मा करै है यद्यपि यह भोग असत्य है तदपि दु:ख दाता है (१) जैसे कोई स्वप्न में शिर काटत है तब अनेक दु:खको प्राप्त होत है पर बिना जागेते वह दु:ख नहीं मिटै है पर स्वप्न में शिर में लेशहू चोटनहीं लगी है पर दु:ख प्रसिद्ध भयो है श्री रामकृपा सोई जागब है (२) हे पार्बती जिन श्री रामचन्द्र की कृपाते ऐसो प्रबल जो भ्रमहै सो जीव बिषे मिटिजात है सोई रघुराई श्रीदशरथ नन्दन हैं सुनहु जैसे सीप में रूपाको भ्रम रविकरमें वारि स्वप्नमें शिर को काटब यह भ्रम है तैसे जीवके भ्रम अपने शुद्ध स्वरूप बिषे भयोहै सो भ्रम जो जीव अपने ज्ञानते मिटाना चाहै तौ कोटिहू यत्न ते बिना श्री राम कृपा ते नहीं मिटै तहां हे पार्बती तिन श्री रामचन्द्र बिषे तुम भ्रम रोपणकीनहै यहबड़ो आश्चर्यहै कि हमारीसत्संगनि प्रियाते तुम को श्रीराम स्वरूप नहीं जानि परेउ है ताते अब अच्छी प्रकारते मैं देखावत हौं सो सुनिकै देखहु हे प्रिया जब श्री रामचन्द्र कृपा करहिं तब यह भ्रम मिटै तब अपनो शुद्ध स्वरूप चैतन्य रूप प्राप्तहोइ तब श्रीराम स्वरूप परब्रह्म बिग्रह किशोर मूर्त्ति देखिपरै जो कोटिन कामकी शोभा कोटिन सूर्यको प्रकाश कोटिन शशिकी शीतलता ललित अमृत मय कोटिन दामिनी की छटा कोटिन श्याम मणि मेघ कंज इत्यादिक स‍चिक्कणता निर्मलता झलकता अमोलता गंभीरता उदारता कोमलता लालित्य सुगन्ध

मकरन्द माधुर्य इत्यादिक लज्जित होते हैं श्री राम स्वरूप की उपमा देतसन्ते ऐसो श्री रामस्वरूप देखिपरै है कैसे देखिपरै है जैसे एक कोई जन्म को अन्धा है अरु पश्चिम मुख बैठो है तहां दैवसंयोग ते अर्द्ध रात्रीमें उसके नेत्र खुले तब उसको अन्धकार निश्चय भयो जब भोरभयो तब अन्धकार को अभाव भयो उजियारी में निश्चय भई पुनि जब सूर्य्य को उदय भयो तब सूर्य के प्रकाश में निश्चय भई उजियारी अरु प्रकाश की एकता देखिपरी तब कोई ने कहा कि तुम पूर्व दिशा देखौ तौ तब पूर्वदिशा देखत सन्ते सूर्यको स्वरूप देखि परेउ है तब सूर्य में निश्चय भई सूर्य के आश्रयप्रकाश देखिपरेउ है पर सूर्यही के प्रकाश ते सूर्य देखि परते हैं और प्रकाशते सूर्य नहीं देखिपरै हैं जो षोड़शौ कला चन्द्रमा उदय होंहिं अरु कोटिन मन तैल बारिदेइ अरु सुमेरु इत्यादिक पर्ब्बतन में दावा लगि जाहिं पर सूर्य नहीं देखि परैहैं तैसे यहजीव अविद्या अन्धकार में अनादिही ते निश्चय कियेहै जब याको गुरुकृपाते बिशेष शास्त्र ज्ञानहोइ तब उजियार रूपी विद्या प्राप्त होइ तब जीवकोलखि पुनि जब सद्गुरुनकै कृपाहोइ तब ब्रह्म विद्या प्राप्तहोइ तब विज्ञानहोइतब श्रीरामचन्द्र कृपाकरहिं तब जीवके अन्तर्भूत ब्रह्म जो ब्याप्त है सो लखि होइ तब श्री रामचन्द्र को स्वरूप देखि परै है ऐसे श्री रामचन्द्र हैं सो तुम बिशेष ते जानहु (३) हेपार्वती जिन श्री रामचन्द्र को आदि अन्त मध्य किसूके जानिबे योग्य नहीं है श्रुति स्मृति पुराण ब्रह्मादिक देवता महामुनीश्वर ऋषीश्वर इत्यादिक कोई नहीं जानिसकै हैं अपनी अपनी मतिके अनुसार कहते हैं जैसे सरयू गंगा को प्रवाह चलोजाती है अरु गरुड़ इत्यादिक बड़े अरुमसा इत्यादिक लघु अरु गज इत्यादिक बड़े अरु पिपीलिका इत्यादिक लघु एते सर्व तृषित भये जलपान करिबे को गये अपनी अपनी प्यास प्रमाण सबै जल पीवत भये पर जलको आदि अन्त मध्य शुमार पार किसूने नहीं पायोहै तैसे श्रीराम स्वरूप रामनाम रामधाम रामलीला किसूके जानिबे में नहीं आवै है अपनी अपनी अनुसार सबै गावते हैं सो अब मैं तुमसे बर्णत हौं श्रीरामचन्द्रको परब्रह्म बिग्रह निर्विशेष अखण्ड एक रस सो तुमसावधान ह्वैकै सुनहु तहां यहि प्रसंगमें महादेव जो निराकार ब्रह्मके आवान्तर साकार ब्रह्मदेखावते हैं अरु साकार ब्रह्मको निराकार करिकै देखावते हैं अरु निराकार को साकार करिकै देखावतेहैं आदि अन्त मध्य में साकारही प्रतिपाद्य करते हैं यह मैं कौनौ पक्ष करिकै नहीं कहो है शपथ करिकै कहत हौं यहां वेद को सिद्धान्त अरु महादेव को सिद्धान्त आशय यहीहै जो आगे महादेव कहते हैं तहां महादेव कहते हैं हे प्रिया अपनी मति अनुसार निगम अस कहिकै गावते हैं (४) यहां तीनि चौपाई को एकही अन्वय है हे उमा सो तुम मन लगाइकै सुनहु प्रभु कैसे हैं पगबिनु चलै पग नहीं हैं अरु चलते हैं कान नहीं हैं अरु सबकी सुनते हैं पुनि करन नहीं हैं अरु नाना बिधिके कर्म्म करते हैं (५) अरु मुख नहीं है पर सर्व रस भोग करतेहैं अरु रसना बाणी नहीं है पर बक्ता बड़े योग्य हैं (६) अरु तनु कहो त्वक् नहीं है परस्पर्श सबते करते हैं अरु नेत्र नहीं हैं पर सबको देखते हैं अरु नासिका नहीं है पर उत्तम मध्यम निकृष्ट गन्ध सुगन्ध सब बिशेष ग्रहण करते हैं (७) यह अर्थ में निराकार ब्रह्म सूचित भयो जो कोई

कि सोई निराकार भक्तन के हेतु करिकै साकार भयो है तिनही को कहा है तहां नहीं बनै है काहे ते कि यहां इन्द्री रहित कहा है अरु इन्द्रिन की बिषय संयुक्त कहा है तहां इन्द्रिय बिषय रूप रहित निराकार ब्रह्म है ताते चलब सुनब कर्म्म करब रस भोक्ता स्पर्श रूप देखना सुगन्ध लेना एते विशेषण निराकार निर्गुण ब्रह्म बिषे नहीं सम्भवत हैं काहेते निर्गुण निराकार ब्रह्म निर्विशेष वेद कहतेहैं काहेते वह तौ परिपूर्ण है (प्रमाण) अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तंयेनचराचरं ॥ इतिस्मृतिः ॥ तहां चलब कैसे सम्भवै जो कहूं न होइ तौ चलै अरुब्रह्म तौ एक है ॥ एक मेवाद्वितीयंब्रह्मश्रुतिः ॥ ताते जो दूसर होइ तब तौ दूसरी बाणीसुनै पुनि जो ब्रह्मते कछु भिन्न होइ किंतु बासना होइ तबतौ कर्म्मकरै तहां ब्रह्म तौ अकर्महै अकर्म्म ब्रह्मेतिश्रुतिः ॥पुनि रसभोक्ता जो कौनौ रस उसमें अपूर्ण होइ तब तौ रस भोग करै ॥ सर्वरसश्चैकपूर्णो भोक्ताब्रह्मेतिश्रुतिः ॥ पुनि वक्तृत्वतौ तबकरै जो बाणी में होइ अरु ब्रह्म तौ बाणी ते परेहै ॥ बाङ्मनोगोचरातीतं ज्योतिरूपंसनातन ॥ इतिस्मृतिः पुनः स्पर्श तौ तब करै जोवासे कछु भिन्न होइ ॥ सूत्रे मणिगणाइव इतिगीता ॥ पुनि जो कहूं नहोइ तब तौ कहूं देखै अरु गन्ध सुगन्ध ग्रहण करै तहां ब्रह्माण्ड को बाह्यांतर जो है सर्वत्र ब्रह्म पूर्ण रह्यो है वायु आकाशवत् वाही ब्रह्म के भीतर सब हैं जैसे कोई सागर में घट बोरि देइ तहां घट जल के भीतर तहां घटके बाहर भीतर जल पूर्ण है जैसे घटके बाहर भीतर आकाश पूर्ण है जैसे घटके बाहर भीतर सूर्य है तैसे ब्रह्म बाहर भीतर पूर्ण है (श्लोकभगवद्गीतायां) यथासर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशंनोपलिप्यते ॥ सर्वत्रावस्थितोदेहे तथात्मानोपलिप्यते १ (अध्यात्म्ये) प्रकाशरूपोऽहमजोऽहमद्वयः सकृद्विभातोऽहमतीव निर्मलः ॥ विशुद्धविज्ञानमयोनिरामयः संपूर्ण आनन्दमयोहमक्रियः २ (पुन.श्रीमन्महारामायणे) सर्वंवसतिचैवास्मिन्सर्वेऽस्मिन् बसते ऽपिवै ॥ तमाहुर्वासुदेवश्चयोगिनस्तत्त्वदर्शिनः ३ वायुवद्गगनेपूर्णो जगतामेववर्त्तते॥ सर्वभिन्नंनिराकारं निर्गुणंब्रह्मउच्यते ४ ऐसो जोब्रह्महै तहां शब्द स्पर्श रूप रसगन्ध चलन भक्षण व्यवहार इत्यादिकविशेषण ब्रह्ममेंनहीं संभवतहै अरु जोकहो किसगुण भगवान् बिषे एतेबिशेषणकहेहैं तहां पुनिइन्द्री रहितकैसे कहैंगे सोभोनहींबनैहै तहांयह तीनहूं चौपाईकोयह अर्थ सिद्धिहोतहै निर्गुण सगुणते परोत्तमहै श्रीरामचन्द्रजी पगबिनु चलैं तहांश्रीरामचन्द्रको स्वरूप परब्रह्म विग्रह ऐसोहै त्रिपुटी रहितहै देवता इन्द्री बिषय ये तीनि त्रिपुटीकहावतीहैं इत्यादिक अहांलिंग तीनितीनि हैं सो त्रिपुटी सब कहावती हैं प्रकृति मय सब हैं तहां सब त्रिपुटी करिकै रहितहैं श्रीरामचन्द्रजूको स्वरूप जो है बिषय कहो शब्द स्पर्शरूपरसगन्ध इत्यादिक गोलक कहो श्रवणत्वक् नयन रसना नासिका अरु जो सता बिषयको ग्रहण करै सो इंद्रीहै अरु बिषय के भोक्ता सो देवता हैं (तत्रप्रमाणंमहारामायणे श्लोक२) विषयेन्द्रियदेवाश्च त्रिपुटीविश्रुताबुधैः ॥ रामःसाक्षात्परब्रह्म त्रिभिरेभिर्विवर्जितः १ पदश्रवणकराननबाणी त्वग्नयननासिकादीन्द्रिय विषयाधीशैः ॥ विवर्जितोरामःसाक्षात्परब्रह्मविग्रहः सच्चिदानन्दात्मकःस्वयं २ इतिशिवस्मृतिः ॥ तहां श्रीरामचन्द्रजूके पग कैसे हैं पग बिन चलैं बिनु चलै पगहै विराट् अरु त्रिधा सृष्टि जोहै इत्यादि सबके पगमें यज्ञ विष्णुदेवता को बासहै ताही देवताकेप्रभा-

बते सर्वके पग चलते हैं अरु देवताहीके प्रभावते इन्द्री बिषय सबहै तहां हे पार्वती श्रीरामचन्द्र के पगबिनु चलेहैं जेहिते सबकोई चलते हैं तेहिबिन पग श्रीरामचन्द्रजू केहैं तहां यज्ञ बिष्णु देवता श्रीराम पगपरनहींहै स्वयंपद हैं ऐसेही सर्वअर्थ जानबमुनै बिनु काना श्रीरामचन्द्रके श्रवणसुनै बिनु हैं सबके श्रवण पर दिशा देवताहैं ताते सब सुनते हैं श्रीरामश्रवण ताहिबिनु हैं स्वयंश्रवणहैं श्रीरामकर कर्मकरै बिनुहैं सबके करपर इंद्र देवताको बास है ताही ते सर्व कर्म करते हैं श्रीरामकर तेहि देवता बिनुहैं स्वयं करहैं श्रीराममुख सर्वरसभोगी बिनहैं सर्वके मुखपर अग्नि देवता बरुण संयुक्त हैं ताही ते सर्वरसभोगीहै अरुश्री राममुख तेहि देवता बिनु है स्वयंपद नहीं है श्रीरामरसना बिनु बाणीहै सबकी रसनापर वरुणको वासहै पर सरस्वती संयुक्त ताहीते सर्व वक्तृत्व योग्य है श्रीरामरसना तेहि देवता बिनुहै स्वयंरसना है तहां सर्वके मुखरसना को एक संयोगहै ताहीते मुख जोहै सोअग्नि देवता करके भक्षण करैहै अरु जीभको देवता वरुण ताको लैकै रस ग्रहण करतुहै अरुरसना जोहै सो अग्निको लैकै ग्रहण करतुहै अरुवरुण को लैकै बिषयको रसभोग करैहै अरु सरस्वती करिकै बचन जो अनेकहैं तेहिके रसको भोगैहै इति ॥ पुनि श्रीरामरतनु बिनु परसहै सब के तनुत्वक् पर वायु देवताको बास है ताहीते सर्व स्पर्श करतेहैं श्रीरामतनु तेहि देवता बिनुहै स्वयं तनु है श्रीरामनयन बिनु देखाहै सबके नेत्रनपर सूर्य देवता रहतेहैं ताहीते सब देखतेहैं श्रीरामनयन ताहि बिनु हैं स्वयं नयन हैं श्रीरामनासिका गन्ध सुगन्ध ग्रहै बिनु है सबके नासिका पर अश्विनीकुमार देवताहैं ताहीते सर्वगन्ध सुगन्ध ग्रहणकरत हैं श्रीरामनासिका तेहिबिनु है स्वयंनासिका है यही प्रकारते सर्व त्रिपुटी रहित श्रीरामचन्द्र हैं त्रिपुटी कही देवता इन्द्री विषय तहां सात्विकगुणते देवताहैं अरु राजस गुणते इन्द्रीहैं अरु तामसगुणते इन्द्रिनको विषयहै अरु जेतो त्रिपुटी हैं सोसब त्रिगुणमयहैं अरु श्रीरामचन्द्रजी को स्वरूप विग्रह त्रिगुणातीत परब्रह्म मूर्तिहै जैसो अर्थ कहिआयेहैं ताहीते श्रीरामचन्द्र को निराकार बिग्रह कहा है जहां विद्या अविद्या दूनोंको आकार लेशहूनहीं है ताही ते जिनको ब्रह्मा बिष्णु महेश अरु महाशम्भु महाविष्णु महामाया सनकादिक नारद शुकदेव इत्यादिक परमहंस मुनीश्वर सब ध्यावते हैं (तत्रप्रमाणं वशिष्ठसंहितायां भरद्वाजप्रश्नं वशिष्ठंप्रति श्लोकः १४) इदानींश्रोतुमिच्छामि रामस्यबालकौतुकम् ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशादि ध्येयस्यपरमात्मनः १ (सनत्कुमारसंहितायां) यत्परंयद्गुणातीतं यज्ज्योतिरमलंशिवं ॥ तदेवपरमंतत्वं कैवल्यपदकारणम् २ निरामयंनिराभासं निरवद्यंनिरंजनम् ॥ नित्यानन्दंनिराकारमद्वैतन्तमसःपरं ३ मनसाशिरसानित्यं प्रणमामिरघूत्तमम् (महासुन्दरीतंत्रे श्रीजानकीवाक्यं जनकंप्रति द्वितीयेध्याये) सृष्टेरग्रेपरेधाम्निसम्बादःसमभूत्किल ॥ महाशंभुर्महाविष्णुर्महामायेरितःपुनः ४ महाशंभुर्महामाया महाविष्णुश्चसक्रियः ॥ कालेनसमनुप्राप्यैराघवंपर्यचिन्तयन् ५ अखण्डब्रह्मणो नित्याद्राघवान्नित्यविग्रहात् ॥ चिदानन्दात्परानन्दात्साकेतनगराधिपात् ६ (पुनःश्रीमन्महारामायणेशिववाक्यम्पार्वतींप्रति) शृणुष्वपरमंगुह्यंयन्नजानंतिकेऽपिच ॥ केऽपिकेऽपिविजानंतिरामानुक्रोशएवच ७ तेजोरूपमयोरेफःश्रीरामांवककंजयोः ॥ कोटिसूर्यप्रकाशश्च

परब्रह्मसउच्यते ८ सोऽपिसर्वेषुभूतेषुसहस्रारेप्रतिष्ठितः ॥ सर्वसाक्षीजगद्व्यापीनित्यंध्यायं-
तियोगिनः ९ रामस्यमण्डलस्यैवतेजोरूपंवरानने ॥ कोटिकन्दर्पशोभाढ्यो रेफाकारोहिबि
ंदुच १० अकारःसोऽपिरूपश्च वासुदेवःसकथ्यते ॥ मध्याकारोमहारूपः श्रीरामस्यैव
वक्षसः ११ सोऽप्यकारोमहाविष्णोर्बलबीर्यस्वरूपकं ॥ सर्वेषामेव विश्वानामाधारस्त्वंचविद्धिसः
१२ मस्याकारोभवेद्रूपःश्रीरामकटिजानुनो ॥ सोप्यकारोमहाशम्भुरुच्यतेयो जगद्गुरुः १३
रक्षाभूतश्चरामस्य मकारम्व्यञ्जनंचयत् ॥ सामूलप्रकृतिर्ज्ञेया महामायास्वरूपणी १४
जो श्लोक कहि आयेहैं तिनमें निराकार निर्गुण ब्रह्म तेहिके अवांतरसाकार निर्गुण
परब्रह्म दिखायेहैं पुनि अब जो श्लोक कहते हैं तामें साकार परब्रह्म जोहै तिनके आश्रय
अनादि माया अरु जीव अरु निर्गुण निराकार ब्रह्मसो दिखावतेहैंक्षरअक्षर निरक्षरोतम
दिखावतेहैं जोकोईकहै कि क्षरसो तौ नाशवान्कोकही तहांकारयरूपक्षरनाशवान्हैकारण
रूपनित्यहै तहां (शिवबाक्यंपार्वतींप्रतिश्लोक) मायामयादिकंसर्वं पंचतत्त्वोद्भवंतनुम् ॥
दृष्टंश्रुतादिकंचैवक्षरमित्यभिधीयते १ व्यापकःसर्वभूतेषुयस्यनाशकदापिना ॥ जीवात्मासर्व
गोभेदः सोऽक्षरोभूधरात्मजे २ सर्वसाक्षीचिदानन्दो निर्द्वन्द्वोऽखण्डएवयः ॥ परमात्माप
रब्रह्मकथ्यतेसनिरक्षरः ३ असंख्यामिन्नवतेजोवेदाअपिक्षर्यंविदुः ॥ सर्वेनिरक्षरातीतो रामः
परतरात्परः ४ इच्छाभूतोऽक्षरस्तस्य चाक्षरस्तेजउच्यते ॥ निरक्षरोघनस्तेजोवर्त्ततेजानकी
पतेः ५ तहां श्रीमहादेवको कागभुशुण्ड को याज्ञवल्क्यको सिद्धांत ऐसे श्रीरामचन्द्र
जी हैं अरु परमहंसनको सिद्धांत श्रीरामचन्द्रहीहैं तहां (पुनः प्रमाणंश्रीभागवतेशुकवा
क्यं) यस्यामलंनृपसदस्यथसोऽधुनापिगायन्तिचाद्यमृषयोदिगिभेन्द्रपट्टं ॥ तन्नाकपालवसुपा
लकिरीटयुष्टपादाम्बुजंरघुपतेःशरणंप्रपद्ये १ (पुनः श्रीधरवाक्यं) ॐनमःपरमहंसास्वादित
चरणकमलचिन्मकरन्दाय ॥ भक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचन्द्राय २ तीनिहूं चौपाई
को अर्थ कहिआयेहैं पुनिसूक्ष्मते वेदके प्रमाणते जनावतेहैं ॥ अपाणिपादोजवनोगृहीता
तापश्यत्यचक्षुः सशृणोत्यकर्णः ॥ सोवेत्तिसर्वंनहितस्यवेत्तातमाहुराद्यंपुरुषंपुराणं १ यह
श्रुतिको अर्थजोहै अरु जो तीनिहूं चौपाई को अर्थ जौनीरीतिसे कहिआये हैं सो अर्थ
बिशेष साकार ब्रह्मको प्रतिपाद्य जानव अरु जो यहि श्रुतिको अर्थ निराकार ब्रह्म में
लगावते हैं सो उनने अच्छी प्रकार बिचार नहीं कियोहै काहेते कि जो अपाणि अपा
दइत्यादिक कहेहैं सो निषेधाभास अलंकार कह्योहै तहां अंगको निषेध नहीं होतहै
तहां परब्रह्म मय अङ्गकहेहैं अरुइन्द्री इन्द्रिनको देवता इन्द्रिनको बिषय तिनको निषे
धकीन्हेहैं तहां स्थूलबुद्धिको त्याग सूक्ष्म बुद्धिको बिचार तब यहतत्त्व समुझबेमें आवै
है श्रुतिको यह अर्थ है श्रीरघुनाथजूके पाणि कैसेहैं अगृहीता पाणिहैं अपावन पादहैं
अपश्यत चक्षुहैं अश्रृणोति श्रवणहैं इत्यादि जानव ऐसे आदि पुरुषनमें पुरुषहैं जिनको
वेता कोई नहींहै तहां अर्थको सिद्धांत सोई कहि आये हैं जामें बिशेषता निकसे अरु
सामान्यको त्यागहोइ अरु ग्रन्थ कर्ताके भाव में अरु मुनीश्वरनकी बिशेषबाणी में
[illegible] परै तहां महादेवजी केवल श्रीरामनाम श्रीरामस्वरूप द्विभुज यहै सिद्धांतमाने
अरु जानहैं सर्व तत्त्व सोई श्रीतुलसी दासजीको जानिये तहां जो श्रुतिकह्योहै कि
[illegible] रुषंपुराणं ॥ तहांपुराण पुरुष श्रीरामचन्द्रही को शास्त्र कहतहैं मुनीश्वरके

हतेहैं तहां प्रमाणहै (सनत्कुमार संहितायां श्रीवेदव्यास वाक्यं श्लोक ३) तत्त्वस्वरूपं पुरुषंपुराणंस्वतेजसापूरितविश्वमेकं ॥ राजाधिराजंरविमंडलस्थं विश्वेश्वरंरंममहंभजामि १ (पुनःश्रीभगवते) ध्येयंसदापरिभवघ्नमभीष्टदोहंतीर्थास्पदंशिव वरंचिनुतंशरण्यं ॥ भृत्यार्तिहंप्रणतपालभवाब्धिपोतंवंदेमहापुरुषतेचरणारविन्दं २ त्यक्त्वासुदुस्त्यजसुरेप्सितराजलक्ष्मींधर्मिष्ठआर्यवचसायदगादरण्यं ॥ मायामृगंदयितयेप्सितमन्वधावद्वंदे महापुरुषतेचरणारविन्दं ३ (पुनःश्रुति.) ब्रह्मपच्छप्रतिष्ठाह ॥ तहांब्रह्म श्रीरामचन्द्रजूको पच्छकही पच्छभागहै पच्छभागकही जैसे सूर्यकी किरणि सघन सूर्यविषे मिली सर्वत्रपूर्ण ह्वै रही हैं इत्यर्थः (५) हे पार्वती सब भांति ते ऐसे श्रीरामचन्द्र हैं जैसो कहि आये हैं अरु अलौकिक करणी कही लीला है जिनकी अलौकिक कही जो चौदहौ भुवन तीनिहूं लोकमें नहींहै जैसी करणी कही लीला जो श्रीरामचन्द्र कीनहै काहे ते ब्रह्मांड भर में जेती ईश्वर कोटी हैं तिन सबकी कर्त्तव्य प्रवृत्ति निवृत्ति मय है अरु श्रीरामलीला इन सबके परेहै केवल परब्रह्म मयलीला है ताते श्रीराम स्वरूप श्रीरामलीला तिनकी महिमा को बरणि सकैहै किंतु अलौकिक कही प्रकृति रहित आश्चर्यवत् जौन कहूं देखिबे सुनिबे में नहीं आया है (८) दोहार्त्थ ॥ हे उमा जाको वेद अस करिके गावते हैं जैसो कहि आयेहैं अरु जेहि स्वरूप को मुनीश्वर ध्यान करते हैं सो कौन स्वरूप है जिनको दशरथ सुत कही भक्त हितकारी हैं कोशलपति कही पूर्ण भगवान् कही भगवान् कहा अरु दशरथ सुता कहा तहां भगवान् केहिको पुत्रहै यह सन्देह है तहां दशरथ कही जब रथपर आरूढ़ होहिं तब तिनको रथ दशौ दिशामें गमन करै कोई रोंकि नहिंसकै जिनकी रथकी अव्याहत गति है पुनि दशौ इंद्री दशरथ हैं तापर जीव चढ़िकै नाम इन्द्रिनको जीतिकै परम पुरुष के समीप को गमन करै तब भगवान् उसके बश ह्वैकै जो वह कहै सोई करते हैं पुनि जो नवधा प्रेम दशधा भक्ति है सोई दशौ दिशा हैं अरु जीव रथ पर चढ़ै रथ कौन है चित्त बुद्धि मन अहंकार चारिहू शुद्ध सात्विकमय सोई रथको चक्का है अरु योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान सोई चारि घोड़ेहैं अरु सूरति वृत्तिलय तीनिहूं रसरी हैं अरु सद्गुरुनकी वाक्यहै चाबुक है अरु ध्यान समाधि पताका ध्वजा हैं नाम स्मरण कलश है सत्संग सारथी हैं शील सन्तोष दया करुणा इत्यादिक सहायक हैं शम दम इत्यादिक आयुध हैं ऐसे रथ पर जीव चढ़ै अरु मोहको दल सम्पूर्ण जीतिकै दशधा भक्ति जो दशौ दिशा हैं तहां श्रीरामचन्द्र के आश्रय ह्वैकै गमन करै ताही के बश ह्वैकै भगवान् सुत भाई सखा स्वामी होतेहैं सेवक भी होते हैं काहेते भक्तवत्सल हैं सो यह सब श्रीदशरथ महाराजसे बनीहै अपरसे नहीं बनी है जैसे ब्रह्मांड मंडल बिषे जीव ईश्वर कोटी है तिन सबनते न बनीहै न बनिहै न बनैगी ताते दशरथ कहा अरु ताहीते श्रीरामचन्द्र पूर्ण भगवान् जिनको दशरथ सुत कही (९)

११८ काशीमरतजन्तुअवलोकी । जासुनामबलकरौंबिशोकी १
सोइप्रभुमोरचराचरस्वामी । रघुबरसबउरअन्तरयामी * २

त्रिबग्राहुजाहु हहीं । जं हीं ३
हीं * । * ४
* ।
* ।

सुनिशिवकेभ्रमभंजनबचना। मिटिगैसबकुतर्ककीरचना ७
भइरघुपतिपदप्रीतिप्रतीती। दारुणअसंभावनाबीती * ८

दो० पुनिपुनि प्रभुपद कमल गहि जोरि पंकरुहपानि ॥
बोलीं गिरिजा बचन बर मनहुं प्रेम रस सानि १

११८ हे उमा चारि खानिमें जेते जीवहैं ते काशीमें मरत सन्ते राम नाम में उपदेश करतहौं ताते सर्व जीव मोक्ष और विशोक होतेहैं (१) हे पार्वती सोई मेरे प्रभु अरु चराचर के स्वामीहैं श्रीरघुबंश मणि दशरथ नन्दन नित्य किशोर कोटिन कंदर्प कोटिन रवि शशि घन तड़ित मणिकंज तिन सबकी उपमा क्रमते देते हैं छवि शोभा तेज प्रताप शीतलता अमृतमय गम्भीर छटातेई रघुबर सबके अंतर्यामी हैं जेहि रीतिते पूर्व कहेहैं (२) तिन श्रीरामचन्द्रको रामनाम जो कोई बिबशहु उच्चारण करै तो अनेक जन्मके संचित पापनाश ह्वैकै परम पदको प्राप्त होत है (३) (अध्यात्मे श्लोक १) यन्नामबिवशोगृह्णन्म्रियमाणः परंपदं॥ यातिसाक्षात्सएवाद्यमुमूर्षोर्मेपुरस्थितं १ (वाराहपुराणे) दैवाच्छूकरशावकेननिहतोम्लेच्छोजराजर्जरो हरामेतिहतोऽस्मिभूमिपतितो जल्पं तनुंत्यक्तवान्॥ तीर्णोगोष्पदवद्भवार्णवमहोनाम्नःप्रभावात्पुनः किंचित्रं यदिरामनामरसिकास्तेयांतिरामास्पदं २ अरु जो सादर संयुक्त सुमिरण करते हैं तिनको का कहौं तेतौ श्रीरामपदको प्राप्तही हैं (४) सोई रामचन्द्र परमात्मा परब्रह्म सबके स्वामी प्रभु हैं सर्वके नियता हैं अरु तिन श्रीरामचन्द्र बिषे तुमने भ्रम रोपण किया तहां यह बड़ो अनुचित तुमने किया यह बड़ी अबिहित बाणी तुम्हारी है अबिहित कही अशास्त्र बाणी है हमारे संग हमारी प्रिया हमारी सत्संगिनि ह्वैकै अरु हमारे इष्ट प्रभु स्वामी श्रीरामचन्द्रजी अरु तहां तुमको भ्रम भयो यह बड़ो आश्चर्य है हमको लज्जा भईहै तहां तुम का करौ श्रीरामचन्द्र जीकी माया बड़ी प्रबल है अरु श्रीराम इच्छा ऐसेही रहीहै (५) हे उमा श्रीरामचन्द्र बिषे जैसा संशय तुम कीन्हेउ रहै जो ऐसा संशय कोई करै देव दानव मनुष्य सिद्ध मुनि इत्यादिक कोई होइ तौ उसके ज्ञान वैराग्य इत्यादि समस्त शुभगुण नाशको प्राप्त बिशेषकै होयँ यह श्रीमहादेव को शाप है (६) हे भरद्वाजजी महादेव की संपूर्ण भ्रमकी नाश करनहारी बाणी सुनिकै पार्वतीके अंतःकरणमें जो कुतर्क की रचना रही सो मिटि गई (७) श्रीरघुनन्दन के चरणारबिन्द में बिशेष प्रतीति करिकै प्रीति भई दारुण जो असंभावना रही सो बीति गई असंभावना कही जो अपर पदार्थ में और पदार्थ की भावना करै सो असंभावना कही अरु असम्भावना कही यथार्थ पदार्थको ज्ञान देहको आत्मा मानै अरु आत्मा

को देह मानै यह असंभावना भई अरु देहको देह आत्माको आत्मा यथार्थ ज्ञान सो संभावनाकही तहां पार्वती जूकेसती तनमें आरण्य विषेश्रीरामस्वरूपमेंदारुणअसंभावना भई है कि ये जो राजपुत्र हैं तिनको श्रीमहादेवजी सच्चिदानन्द कहिकै प्रणाम कीन्ह्यो है तहां ये कैसे परमात्मा हैं जो अपनी प्रियाको ढूंढ़ते हैं तब यह कल्पना करती हैं कि निर्गुणब्रह्म सो तौ ये नहीं हैं काहेते ब्रह्म सो तौ सब प्रकारते निर्विक्षेप है तेहि को देह धरिबेको प्रयोजन नहींहै अरु ये राजपुत्र विष्णु भी नहीं हैं काहे ते विष्णु तौ सर्वज्ञ हैं अरु श्रीमहादेवको बचन सब प्रकार ते सत्य है तहां अब मैं का निश्चय करौं तहां सतीजी निर्गुण जो व्यापक ब्रह्म है अरु बिष्णु जो भगवान् हैं तिन विषे सच्चिदानन्द परमात्मा भाव कियो सो संभावना कियो अरु श्रीरामचन्द्र को केवल राजपुत्र निश्चय कियो सो असंभावना कियो है अरु महादेव ने श्रीरामचंद्रजूको सच्चिदानंद पर स्वरूप कहा तब सतीके संदेह भयो अरु जब अपने नेत्रन ते श्रीरामचन्द्र बिषे अति प्राकृत इव बिरह देखती भईं तब महामोहको प्राप्तभईं पुनि जब श्रीरामचन्द्रजू दोऊ कर जोरिकै अरु यह कहिकै कि हम महाराज श्रीदशरथके पुत्र हैं अरु राम हमारो नामहै हमारी प्रिया श्रीजानकीजी तिनको ढूंढ़ते हैं हम तुम्हारे नमस्कार करते हैं तुम सती महादेवकी प्रियाहौ जो कहूं हमारी प्रिया को देखेहु होय तौ बताइ देहु महादेव त्रिकालज्ञ हैं तिनकी तुम प्रियाहौ हम बहुत बिकल हैं यह सुनिकै सती के भ्रम संकोच भयो तहां एती सब सती बिषे असंभावना भईं तहां जो कोई कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र चतुर्भुज श्रीमन्नारायण का अवतार हैं किंतु बिष्णुका अवतार कहते हैं ब्रह्म व्यापक सोई श्रीराम अवतार है यह सब असंभावना जानिये तहां महादेव जी पार्बतीसे सब प्रकार कहते भये निर्गुण ब्रह्म व्यापक सो कहे सगुण बिष्णु भगवान् सोभी संज्ञा जनाइ दियो आगे पुनि कहैंगे अरु श्रीराम स्वरूप किशोर धनुर्द्धर सर्वोपरि कृपा करिके दिखावते भये तब दारुण संभावना रही सो मिटगई (८) दोहार्थ ॥ हे भरद्वाज पार्बतीजी को निराकार साकार ब्रह्मके निर्णय का संदेह नाश भयो एकहौ देखि परेउ है तब पार्बती परमानन्दको प्राप्त ह्वैकै पुनः पुनः पुलक संयुक्त महादेव के चरणारबिंद गहती भईं दोनों कर कमल जोरिकै महादेव से अमृत बचन बोलती भईं (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने बालकांडेउमामहेश्वरसंबादे श्रीरामस्वरूपविग्रहकिशोरद्विभुजधनुर्द्धरसर्वोपरिवर्णनंनामद्वाविंशतिस्तरंगः ॥ २२ ॥

दो० तेइस शुभग तरंग में संज्ञा बहु अवतार ॥
अवतारी परब्रह्म श्रीरामचरण मतसार २३

११९ शशिकरसमसुनिगिरातुम्हारी । मिटामोहशरदातपभारी * १
तुमकृपालुसबसंशयहरेऊ । रामस्वरूपजानिमोहिंपरेऊ * २
नाथकृपाअबगयउबिषादा । सुखीभइउँप्रभुबचनप्रसादा ३
अबमोहिंआपनिकिंकरिजानी।यदपिसहजजड़नारिअयानी ४
प्रथमजोमैंपूंछासोइकहहू * । जोमोपरप्रसन्नप्रभुअहहू * ५

रामब्रह्मचिन्मयअबिनाशी । सर्ब्बरहितसबउरपुरबासी ॥ ६
नाथधरेउनरतनुकेहिहेतू ॥ मोहिंसमुझाइकहहुवृषकेतू ॥ ७
उमाबचनसुनिपरमबिनीता ॥ रामकथापरप्रेमपुनीता ॥ ८

दो० हिय हर्षे कामारि तब शंकर सहज सुजान ॥
बहुबिधि उमहिं प्रशंसि पुनि बोलेकृपानिधान १

सो० सुनुशुभकथाभवानिरामचरितमानसबिमल ॥
कहाभुशुण्डबखानिसुनाबिहगनायकगरुड़१
सोसम्बाद उदारजेहि बिधिभा आगेकहब ॥
सुनहुरामअवतार चरितपरम सुन्दरअनघ २
हरिगुणनामअपारकथारूपअगणितअमित॥
मैं निजमति अनुसार कहौंउमा

हे शिव स्वामी आपु निर्मल एकरस पूर्ण शशिहौ अरु श्रीरामचरित परम अमृत तेहिते पूर्णहौ अरु आपका बचन अमृत भरी किरणि है जैसे शशिकी किरणि ते शरद अरु सर्व ऋतुकी तपनि मिटिजाति है तैसे आपुका बचन सुनिकै महामोह जो भारी त्रैताप मय सो बाह्यान्तर की तपनि मिटि गई (१) हे कृपालु तुम सब संशय नाश किहेहु अब श्रीराम स्वरूप मोंको जानि परेउ है साकार ब्रह्म बिषे मेरी निश्चय भई पर साकार ब्रह्म बिषे कछुक पूछौंगी (२) पर हे नाथ तुम्हारी कृपा ते बिषाद कहौ शोच सो आपुके बचन के प्रसादते मिटिगयो अब मैं सब प्रकार ते सुखी भइउँ (३) अब मोंको अपनी किंकिरी जानिकै यदपि स्त्री की जाति जड़ और अज्ञानी है तदपि जब ताईं अपने अज्ञानते अपनी बोध सब प्रकारते न होइ तब ताईं सद्गुरुन ते प्रश्न किहेजाइ ताते आपुते पुनि बूझतिहौं (४) हे नाथ जो मैं प्रथम दुइ प्रश्न कियों रहै सकतौ निर्गुण कैसे होतहै सो तो बोधभयो पुनि प्रभु कहहु राम अवतार यहि प्रश्नको उत्तर कहहु हे प्रभु जो मेरे ऊपर प्रसन्नहौ (५) हेनाथ अब मैं श्रीराम स्वरूप सच्चिदानन्द अखण्ड अबिनाशी एकरस व्यापक सबते भिन्न ऐसे श्रीरामरघुनंदन हैं सो मैं अच्छी प्रकारते जान्यों है (६) तहां हे नाथ नर तनु केहि हेतु करिकै धरेउ है हे वृषकेतु सो अच्छी प्रकार समुझाइकै कहहु हे भरद्वाज पार्बती यह पूंछिबे को यह तात्पर्य है कि चतुर्भुज जो भगवान् हैं तेई महादेव गण सहित रघुबंश कुल में श्रीदशरथ महाराजके पुत्र भयेहें नर तनु द्विभुज स्वरूप पुनि पृथ्वीको भार उतारिकै वहै स्वरूप चारि भुज ह्वैकै गदा पद्म शंख चक्र धारण करिकै बैकुण्ठ को प्राप्त भये जो ऐसो श्रीरामचन्द्रको महादेव कहैंगे तौ मैं जानोंगी कि श्रीरामचन्द्र साक्षात् द्विभुज नारायण हैं अरु जो बिष्णुको औरै रीतिसे कछु कहैंगे अरु श्रीरामचन्द्र को कोई रीति से द्विभुज अखण्ड एकरस श्रीदशरथ नन्दन सर्बोपरि हैं अस कहैंगे तौ मैं सोई निश्चय करौंगी पार्बतीके पूछिबेमें यह आशय है सो महादेव कहैंगे (७) हे भरद्वाज उमाको

वचन परम बिनीत कही चिंतित है यह वचन में आशय धुनि बहुत है सो यह कहा कि ॥ नर तन धरेउ नाथ केहि हेतू ॥ तहां श्रीराम स्वरूप द्विभुज बिषे उमा को बोध अच्छी प्रकारते भयो तहां द्विभुज स्वरूप को अवतरण सुना चाहती हैं अरु यह सुनिबे की बड़ी लालसा है कि ऐसे श्रीरामचन्द्र कार्य कारण के परे अरु सगुण रूप भगवान् जो हैं अरु निर्गुण ब्रह्म जो है तेहि इनहू के कारण हैं तहां सगुण रूप बिष्णु भगवान् किंतु बिराट भगवान् अरु निर्गुण ब्रह्म सर्व व्यापक सर्व को चेतन सर्व का नियंता सर्वते भिन्न जैसे आकाश सर्व बिषय मय है अरु सर्वते भिन्नहै एकरस अखण्ड पूर्ण सजातीय विजातीय स्वगत भेद रहितहै सजातीय कही ब्राह्मण ब्राह्मण शब्द अरु गऊ गऊ बचन इत्यादिक है पर व्यक्ति करिकै अनेक है पर सजातीय करिकै एक है ताते ब्रह्म सजातीय रहित है काहेते ब्रह्म तौ एकहै जो बहुत होय तब तौ सजातीय कहिबे में आवै अरु विजातीय कही ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अरु गऊ भैंस इत्यादिक बिजातीय हैं तहां जो ब्रह्म छोड़िकै अपर पदार्थ कछु होय तबतौ बिजातीय कहिबेमें आवै स्वगत भेद कही ब्राह्मण ब्राह्मणमें भेदहै किंतु कोई ब्राह्मण मोटा कोई दूबर कोई दीर्घ कोई लघु कोई काला कोई गौर ऐसेही गऊ इत्यादिकन में जानिलेव तहां जो ब्रह्मके सम कोई होय किंतु ब्रह्म लघु दीर्घ गौर कृष्ण इत्यादिक होइ तब तौ स्वगत भेदकही तहां ब्रह्म सबते बिलक्षण है ऐसो जो ब्रह्म है अरु बिष्णु भगवान् है निर्गुण सगुण दोऊ स्वरूप एकही तत्त्व हैं निर्विशेष अरु सविशेष को भेद है तहां दोऊके उपादान कारण श्रीरामचन्द्र हैं जैसे तेज प्रकाशके उपादान कारण सूर्य हैं तहां तेज प्रकाश एकही तत्त्व अनादि अभेद है पुनि जैसे जल मोती को उपादान कारण है पर जल मोती दोऊ साकार रूपहैं तहां जल मोती कारण कार्य तत्त्व अभेदहै तैसे श्रीरामचन्द्र बिष्णु भगवान् के उपादान कारणहैं पर एकही तत्त्व हैं अरु श्रीरामचन्द्र बिराटके निमित्त कारण हैं तहां ऐसे श्रीरामचन्द्र जी सर्वोपरि परब्रह्म रूप सो कौनेहेतु करिकै प्रकृति मण्डलमें अवतीर्ण भये हैं जो कहो कि पृथ्वीके भार उतारिबेहेतु अवतीर्ण भयेहैं तहां पालन शक्ति तौ बिष्णु करिकैहै ताते पृथ्वी को भार उतारिबेको बिष्णुको चाहियेहै श्रीराम अवतार कौने हेतु करिकै है अरु अवतीर्ण ह्वैकै कैसोचरित करत भये हैं सो सब पार्बती प्रीति संयुक्त सुना चाहतीहैं ताते उमाको प्रश्न महादेवको बहुत प्रिय लाग्योहै (८) दोहार्थ ॥ पार्बतीको प्रश्न सुनि कै महादेवजी हृदयमें बहुत प्रसन्न ह्वैकै पार्वती की प्रशंसाकीन काहेते कि जो सद्गुरुकहै अरु जिज्ञासू धारण करिलेय तब वह जिज्ञासू प्रशंसायोग्यहै (१) सोरठार्थ ॥ पुनिमहादेव कृपाके निधान बोलतभये हे भवानी श्रीरामचन्द्रकै अति शुभकथा मानस रामायण अति बिमल सो सुनहु यह मानस रामायण कागभुशुंडजी गरुड़जीसे कह्योहै (१) सोसम्वाद बड़ो उदारहै उदारकही जेहि सम्बादबिषे गरुड़जी को महामोह दरिद्ररूप सो नाशको प्राप्तभयो है अरु जहां यह सम्बाद होतहै तहां योजन पर्यन्त अविद्या नहीं ब्यापत होतीहै ताते उदारकह्यो सो सम्बाद जैसो भयोहै सो आगेकहैंगे अब श्री रामचन्द्रजी को अवतार अति सुन्दर अतिनिर्मल अघरहित है सोनीकी प्रकारते सुनहु (२) हे पार्वतीजी हरिके गुणनाम कथारूप इत्या-

दिक अगणित अपार हैं हरि क्योंकहा श्री रामगुण नामकथा इत्यादिक जन्ममरण हरिलेत हैं ताते हरि कहामैं अपनी मतिके अनुसार कहतहौं सो तुम आदर समेत सुनहु (३) ॥

१२० सुनुगिरिजाहरिचरितसुहाये। बिपुलबिसदनिगमागमगाये १
हरिअवतारहेतुजेहिहोई। इदमित्थंकहिजाइनसोई * २
रामअतर्क्यबुद्धिमनबानी। सततहमारअससुनहुभवानी * ३
तदपिसंतमुनिबेदपुराना। जसकछुकहैंस्वमतिअनुमाना * ४
तसमैंसुमुखिसुनावौंतोहीं। समुझिपरैजसकारणमोहीं * ५
जबजबहोइधर्म्मकैहानी। बाढ़हिंअसुरअधमअभिमानी ६
करहिंअनीतिजाइनहिंबरणी। सीदहिंबिप्रधेनुसुरधरणी ७
तबतबधरिप्रभुबिबिधशरीरा। हरहिंकृपानिधिसज्जनपीरा ८
दो० असुरमारिथापहिंसुरन राखहिंनिजश्रुतिसेतु ॥
जगबिस्तारहिं बिशदयश रामजन्मकरहेतु १

१२० हे गिरिजा श्री रामचन्द्रजीके चरित्र विपुलहैं अनन्तहैं अरु सब प्रकारते निर्मलहैं अति शोभितहैं जेहिचरित्रको वेदशास्त्र गावतहैं (१) हे गिरिजा प्रभुके अवतार जौने जौनेहेतु करिकै होतेहैं सो इद मित्थंकही कि जो इतनेही कारण प्रभुके अवतार के हैं सो नहीं कहाजाइहै प्रभुके अवतारके अनेक का ... किसूक कहिबेयोग्यनहीं हैं (२) हे पार्वतीजी श्रीरामचन्द्र अतर्क्य हैं तहां मनबुद्धि बाणी इत्यादिकरिकै परेहैं तर्कणामें नहीं आव हमारोसिद्धांत मतयहहै जो कोई तर्क करिकै यह कहतहैं कि श्रीरामचन्द्रजी जो परब्रह्महोते तौ श्रीजानकीजी को क्योंढूंढ़ते फिरते रावणकेसंग्राम में क्योंदुःख सहते किन्तु यहतर्क करतेहैं कि श्रीरामचन्द्रजी निराकार व्यापकब्रह्म हैं अपने भक्तनके हेतु अपनी माया करिकै बिग्रहमान दशरथ महाराज के पुत्रभये पुनि भक्तनके कार्य्य करिकै निराकारके निराकार भयेहैं पुनिकोई यह तर्क करतेहैं कि श्रीमन्नारायण चतुर्भुज भगवान्तेई अपने भक्तनके हेतुद्विभुज स्वरूप दशरथ महाराजके पुत्रभयेहैं पुनि भूभार उतारिकै पुनि चतुर्भुज स्वरूप ह्वैकै बैकुण्ठको प्राप्तभयेहैं यह सब तर्कणा श्रीरामस्वरूप विषेबृथाहैं उनहींको भ्रमभयोहै अरु हे भवानी हमारे मतमें श्रुति स्मृतिके सम्मतमें श्रीरामचन्द्र द्विभुजस्वरूप परब्रह्म अखण्ड एकरस परिपूर्ण अतर्क्यहैं (३) तदपि संतजन जेहैं मुनिजन जेहैं वेदजेहैं पुराणजेहैं जसकछु अपनी मति के अनुसार कहतेहैं (४) हे सुमुखि तुम श्रीरामचन्द्रजूके सन्मुखहौ ताते नीकीप्रकार ते सबको सम्मत अब मैं तुमसे कहतहौं अरु जसकछु कारण मेरे अनुभवमें प्राप्तहै सो भी कहौंगो (५) हे पार्वती अब श्रीराम जन्मकर हेतु सुनहु जब जब धर्मकै हानि होतिहै तब तब असुर जो अधम अभिमानीहैं ते बाढ़तेहैं (६) ते संसारमें अनेकरूप-

द्रव करतेहैं सो वर्णिबे योग्यनहींहैं ते राक्षस विप्र गऊ देवता संतजन पृथ्वी तिनसबनको महापीड़ा देतेहैं (७) तहां युग युग कल्प कल्प जब जब ऐसे कारण परैं तब तब ऐसे हीहोइ हैं राक्षसन करिकै पृथ्वीको भार होतहै तब तब प्रभुजे भगवान् हैं ते बिबिध प्रकारको शरीर धारणकरतेहैं जौने जौने कालमें जैसो जैसो कारण आइप्राप्त होत है तैसो तैसो शरीर प्रभुधारण करिकै भूभार उतारतेहैं अरु जीवनको मोक्ष करतेहैं तहां हे पार्वती भगवान्के अवतारको नियम नहींहै काहेते कि जेहिकी जैसी भक्तिहै ते तैसेही स्थानमें भगवान्की प्रार्थना करतुहैं कोई क्षीरसागरते कोई बैकुंठते कोई प्रह्लाद इत्यादिक सर्वव्यापकते अरु स्वायंभुव मनुब्रह्माण्ड के परेपरधाम ते परम पुरुषकीप्रार्थ्य-नाकीन्हहैं तहां भक्तजन अपनी भक्तिभावते अरुदेवता अपनी कामनाते ऐसेही प्रभुकी प्रार्थना करतेहैं तिसो तिसो स्थानते प्रभुआविर्भाव होते हैं मत्स्य इत्यादिक शरीरधा-रण करते हैं पुनिकार्य करिकै अपने निजधामको तिरोभाव होते हैं अरु कोई मुनीश्वर वेदमत लैकै कहैहैं कि परस्वरूप जैसो परमेश्वरको होइ तैसो हम दर्शन पावैं तबप्रभु जे कृपालु भक्तबत्सल हैं तबवही स्वरूपका दर्शन देत हैं भक्तनकी पीड़ा हरते हैं (८) दोहार्थ॥ असुरनको मारिकै देवतनको स्थापन करते हैं अपने वेदकी मर्याद रखते हैं हे पार्वती श्रीरामजन्मको यह हेतुहै सो भी कहौंगो अरु जो पृथ्वीको भार उतारिबेके हेतु रहित अवतार है श्रीराम अवतार सो विस्तार समेत कहौंगो और तेहि अवतारमें भूभार उतारिबेको मिसुमात्र सोभी कहौंगो (१)॥

१२१सोइयशगाइभक्तभवतरहीं । कृपासिन्धुजनहिततनुधरहीं १
रामजन्मकरहेतुअनेका ॥ । परमविचित्रएकतेएका ॥ २
जन्मएकदुइकहौंबखानी ॥ । सावधानसुनुसुमुखिसयानी ३
द्वारपालहरिकेप्रियदोऊ ॥ । जयअरुबिजयजानसबकोऊ ४
बिप्रशापतेदोनोंभाई ॥ ॥ । तामसअसुरदेहतिनपाई ॥ ॥ ५
कनककशिपुअरुहाटकलोचन । जगतबिदितसुरपतिमदमोचन ६
बिजयीसमरबीरबिख्याता । धरिबराहबपुएकनिपाता ॥ ७
होइनरहरिदूसरपुनिमारा ॥ । जनप्रह्लादसुयशबिस्तारा ८
दो० भये निशाचर जाइते महाबीर बलवान ॥
कुंभकर्ण रावण सुभट सुर बिजयी जगजान १

१२१जो भगवान् अपने भक्तनहित तनुधारी ऐसो चरित करते हैं किन्तु नरको ऐसो चरित अपने तनमें धारण कीनहै सोई यश गाइकै भक्तजन संसारतरि जाते हैं (१) तहां हे पार्बती श्रीरामजन्म के अनेक कारण हैं पर एकते एक बिचित्र है (२) तहां हेपार्बती अब तुम बहुत सावधान ह्वैकै सुनहु अबमैं श्रीरामजन्मको कारण कार्य स्वरूप अवतार अवतारी कहौंगो अरु ताही में अपनो मत सिद्धांत सबकर मत दिखाइ कै

कहौंगो ताते तुम चित्त एकाग्र करिके सुनहु कहत सब कहौंगो तुम हौ अब मैं अच्छीप्रकार तुमको जान्योहै कि तुम्हारा बाह्यांतर श्रीरामस्वरूप विषे सम्मुखहै तुम बड़ी सयानी हौ हे भरद्वाज यह कहिके सावधान करिके महादेव कहते हैं हे प्रिया एक अरु दुइ तीनि तौ जन्म अवतार श्रीरामचन्द्रको कहौंगो अरु एक स्वरूप अजन्म अवतारी कहौंगो अरु विष्णु भगवान् जो श्रीराम अवतार होते हैं सो भी कहौंगो अरु श्रीरामचन्द्रके अंशते ब्रह्मा विष्णु भगवान् अरु महेश मैं जो हौं ते जिनके अंश ते अनेकन उत्पन्न होतेहैं सो स्वरूप कहौंगो हेपार्वतीजी कल्प कल्प प्रति भगवान् के दशौ अवतार जोहैं अरु चौबीस अवतार शास्त्र कहते हैं सो कल्प कल्प किंतु युगयुग मैं अवतार होतेहैं कछु नेम नहींहै (भगवद्गीत यांश्लोक २) यदायदाहिधर्मस्यग्ला निर्भवतिभारत ॥ अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहं परित्राणाय साधूनां विनाशाय चदुष्कृतां ॥ धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगेयुगे २ तहां तीनि कल्प की मैं कहत हौं इसी रीतिते जानिलेव तीनिकल्प बिषैविष्णु जोभगवान्हैं सोईश्रीरामचन्द्र स्वरूप भयेहैं तहां चतुर्भुजते द्विभुज स्वरूप भयेहैं रूपांतर भेदभयो ताहीतेअवतारकही तहांकारण कहतेहैं एककल्प भरमा बैकुंठमें सनकादिकन शाप दीन्ह्योहै तौनिजन्मको जय विजय जोविष्णुके द्वारपाल नित्यपार्षद हैं ते द्वौ हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु भयेतहां भगवान् बाराह अवतार श्रीनृसिंह अवतार धरिके द्वौको नाश कियोहै हे पार्वती पुनिहिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु द्वौ लंकामें कुम्भकर्ण रावण जाइ भये तिनके बधहेतु बिष्णु भगवान् श्रीरामस्वरूप होत भये अरु जो श्रीजानकी स्वरूप अवतार लीन्ह अरु कश्यप श्रीदश-रथ महाराज भये अरु अदिति श्रीकौशल्याजी भईहैं हे पार्वती पुनि एक कल्प बिषे जलंधर नाम दानव भया सो किसीको सगत लंकाधिप रावण जाइ भया तेहिके विष्णु भगवान् श्रीराम अवतार लेत भये हैं तहां कश्यप अदिति दशरथ कौशल्या भयेहैं लक्ष्मीजी श्रीजानकी भईहैं पुनि हेउमा एक कल्प में नारद जो हैं ते मोहके वश ह्वै कै विष्णु भगवान् को शाप देत भये भगवान् की इच्छा तीनिहूं विषय में जानब तहां शिवके दूत रावण कुम्भकर्ण भये तिनके हेतु विष्णु श्रीरामस्वरूप धारण करत भये तहां लक्ष्मीजी श्रीजानकी रूप होत भईं कश्यप अदिति माता पिता भये हैं तहां ये तीनि अवतार श्रीरामजूके गिरिजा एक अपर कल्प जो आदिकल्पहै तेहि विषे श्रीरामस्वरूप अगुण अज अनादि अनूपम द्विभुज साक्षात् परब्रह्म बिग्रह निर्वि-शेष रूपांतर रहित किशोरमूर्ति अवतारी श्रीरामचन्द्रजी अवतीर्ण भयेहैं जिनके अंशते अनेक ब्रह्मांड में अनेक ब्रह्मा विष्णु शिवहैं तेहि अवतारको कारण रूपाधि है ब्रह्मा के अंगपुत्र महाराज स्वायंभुव मनुभये हैं तिनने महातप महाभजन परम पुरुष हेतु कियो तब तिनके प्रेमवश ह्वैकै परम पुरुष अवतीर्ण भये पुनि परम पुरुष ने अपनी इच्छाते कारण उत्पन्न कियोहै राजा भानुप्रताप सो भगवत् प्रेरणाते रावण कुंभकर्ण भयेजाइ तब श्रीरामचन्द्र श्रीदशरथ महाराजके भवनविषे अवतीर्ण भये तहां श्रीराम अवतार अवतारी एकही जानब पुनि तीनि कल्पको प्रसंग कहत हौं तहां जय विजय

के हेतु अरु नारदको शाप शिवके दूतनके हेतु येतीनिहूं कल्प.

कश्यप श्रीदशरथ महाराज भये अदिति श्रीकौशल्या होती भई अरु श्री विष्णु भगवान् श्रीलक्ष्मीजी श्रीरामचन्द्रजी श्रीजानकीजी होतभये जब भूभार उतारि भये तब बैकुण्ठको चतुर्भुज स्वरूप प्राप्त भयेहैं पुनि चौथे कल्पमें अवतारी कहत हौं राजा स्वायंभुवमनु अरु रानी शतरूपाते द्वौश्रीदशरथ कौशल्या होत भये तब श्रीराम सखा प्रतापीनाम सो श्रीरामप्रख्याते राजा भानुप्रताप भयो पुनि रावण भयो तब परमात्मा परम पुरुष परब्रह्म द्विभुजस्वरूप अखण्ड एकरस मध्य किशोर विग्रह कार्य कारण के परे परात्पर तर अवतारी अवतीर्णहोत भये जो कोई कहै कि तुम श्रीरामचन्द्रके स्वरूप में भेद करते हौ तहां ततत्व करिकै स्वरूप करिकै नाम करिकै अभेदहै अरुजब तीनि अवतार चतुर्भुज ह्वैकै बैकुण्ठको प्राप्तभये तब भेदहै अंशांशी भेदहै गुणाभिमानी गुणातीतभेदहै आदि अंतश्रीरामहीहैं मध्यमें चतुर्भुजरूप अरुजोकोईकहै कितुमअपनी कल्पनातेभेद करते हौ काहेते कि चौथे अवतारके हेतु मैंने जबब्रह्माके हेतु ब्रह्म बाणीभई है तब यह कहाहै कि ॥ चौपाई ॥ कश्यपअदितिमहातपकीन्हा । तिनकहँमैंपूरवबरदीन्हा ॥ तेदशरथकौशल्यारूपा । प्रकटतभयेअवधपुरभूपा ॥ पुनि ॥ नारद शाप सत्यसब करिहौं ॥ तहां इन बचननको अर्थ कैसे सिद्ध करहुगे अरु तुम कहतेहौ कि चौथे अवतार विषे मनुशत रूपा दशरथ कौशल्या भयेहैं अरु बाणी कश्यप अदिति को कहे हैं हमारो समाधान करौ तहां तुमने बहुत नीक प्रश्न कियो है पर सावधान ह्वैकै सुनहु तहां प्रथम तौ यहै जानहु आगे अवतारन के प्रकरणमें चारि प्रकरण गोसाईं तुलसीदास ने कहे हैं पुनि यह समुझहु कि ग्रन्थकर्त्ता अपने ग्रन्थ विषे बिरोध करिकै नहीं कहैगो अपनी बुद्धिके समुझबे में बिरोध होत है तहां सुनो भगवत् की सत्य संकल्प बाणी है अरु देवतन को प्रयोजनमात्र बाणी बोले हैं देवतन को केवल भूमिके भार उतारिबे को प्रयोजन है अरु पालन शक्ति बिष्णुकै है ताते परमात्मा श्री रामचन्द्र जी अपनी बाणी विषे देवतन को बिष्णु स्वरूप जनावते हैं अपनो स्वरूप गुप्त राखते हैं तहां श्री रामचन्द्रजी को सत्य संकल्प है जाको जो पदवीदीन ताकी मर्यादा फेरिनहीं तोरते हैं श्री रामचन्द्रजी ने बिष्णु को पालन शक्ति दीन है अरु बिधि को उत्पत्ति शक्ति दई है अरु महादेव को संहार शक्ति दईहै श्री जानकी नाथजीने तहां गोसाईं जीने कहा है (हरिगीतिकाछन्द) हरिहिहरितांविधिहिविधितांशिवहिशिवताजिनदई । सोइ जानकीबर मधुरमूरतिमोदमयमंगलमई ॥ ताते बिष्णु भगवान्की मर्यादा हेतु आपको अपनीबाणी बिषे बिष्णुरूप देवतन को जनावते हैं ताते कश्यप अदिति कहाहै अरु बिष्णु भगवान् अरु श्रीरामचन्द्रजू ततत्व करिकै अभेद हैं ताते एकता करिकै बाणी जनावैहैं पुनि कहा कि ॥ नारदशापसत्यसबकरिहौं ॥ पर ब्रह्मबाणी विषे यह अर्थहै कि नारद जो शाप दीन है सोमैं परंपरा मानिलीन है तैसेही लीला येहू अवतार बिषे करौंगो नारद को बचन मैं सदा सत्य करौंगो तहां बाणी में बिष्णुपद बिभव लिहे अर्थ है अरु जो बाणी यह कहै कि महाराज स्वायंभुव अरु रानी शतरूपा तिनने महातप कियो है ते दशरथ कौशल्या श्री अवधपति भये हैं तिनके गृह विषे मैं जो परब्रह्म हौं सो अवतीर्ण ह्वौउँगो जो ऐसो कहें तौ देवतन को भ्रम होइजाइ काहेते कि देवतन कै बृत्ति रमा

वैकुण्ठ ताईं है किन्तु चीरसागर ताईं है अरु यह अवतार परात्पर तर परब्रह्म अवतीर्ण होहिंगे गुप्त अवतार एक महादेव जानते हैं अपर देवता नहीं जानते हैं काहेते जब कोई देवतन कहा कि वैकुण्ठ को चलो तहां पुकारें गे अरु कोई देवतन कहा कि प्रभु चीर सागरमें हैं तहां पुकार करैंगे तहां महादेव जानतेरे हैं अबकी न तौ वैकुण्ठ ते अवतार है अरु न तौ चीरसागर ते अवतार है अबकी तो परम पुरुष परब्रह्म श्रीराम-चन्द्र अवतीर्ण होहिंगे तब महादेव जीने युक्ति करिकै कहाहै कि हे देवतहु तुम काहे को वैकुण्ठ चीर सागर को जाते हौ प्रभु सर्वत्र परिपूर्णहैं देशकाल बस्तु प्रच्छन्न द है ताते तुम यहीं पुकार करौ तुम्हारी आर्त्तते प्रभु आपुही प्रत्यच होहिंगे तहां चारिहू अवतार के प्रसंग हमने सूचित किये हैं सो अच्छी तरह समुझब यह परम सिद्धान्तहै हे पार्वती हमारो मत परम सिद्धान्त श्री रामचन्द्र द्विभुज परब्रह्म सर्वोपरि हैं अरु किसूको यह मत है कि ब्रह्म निराकार है सर्वत्र परिपूर्ण है जीव ईश्वर ब्रह्म तत्त्व एकहीह कस एकही है दृष्टान्त देतेहैं जैसे आकाश के अवांतर सब है अरु सब में आकाश है जैसे महदाकाश मठाकाश घटाकाश आकाश तत्त्व एक है अविद्या उपाधि जीवघट स्थाने अरु विद्या उपाधि ईश्वर मठस्था ने दूनौं उपाधिरहित ब्रह्म महदा काशस्था ने पुनि जैसे आकाश के एक देश विषे मेघहै तहां मेघमें जो आकाश भासता है ताको मेघा-काश कहो अरु मेघते जो जल छूट्यो है तहां बुन्द बुन्द प्रति आकाश में भासत है ताको बुन्दा काश कहो अब दृष्टान्त कहते हैं ब्रह्माके एक देशविषे मायाहै सो अनादि है अनिर्वचनीय है सो माया अरु ब्रह्म मिलित है तिनहीं को ईश्वर कहो ईश्वर सर्वज्ञ है जब ईश्वर ईचणा करतुहै सोई महत्तत्वहै तहां चतुष्ट अन्तष्करण भयो तामें बुद्धि के आधीन चित्तमन अहंकर जानब तहां वहो ईचणा की अनेक बुद्धि ह्वै गईं वृष्टि रूप भई बुद्धि बुद्धिप्रति ब्रह्म को भासभयो ताको जीव कहो तहां आकाश एकहो तत्त्वहै ऐसेही ब्रह्म तत्त्व ईश्वर तत्त्व जीव तत्त्व एकहो है ऐसेही अनेक दृष्टान्त करिकै निराकार प्रतिपादन करते हैं निर्विशेष कहते हैं तहां हे पार्वती तत्त्व करिकै तो निर्विशेषही है पर संपूर्ण विशेषण वाहीते हैं काहेते माया जड़है सो ब्रह्म करिकै चैतन्य है ताते सब बिशेषण वाहीके हैं अरु जो कहते हैं कि ब्रह्मकी सत्ताकरिकै जड़ चेतन है जैसे चुम्बक शिलाकी सत्ता करिकै लोहा स्फुरित होतहै तहां यह दृष्टान्त विषे ब्रह्म में परि पूर्णता नहीं आवै है एक देशी होतहै काहेते एक देश में सत्ता अरु एक देश विषे पूर्ण होतहै अरु ब्रह्म एक रस पूर्ण है अरु पांच तत्त्व तीनि गुण करिकै ब्रह्माण्ड है तहां पांच तत्त्व गुण करिकै कहूं एक बारको अग्र भागहू भरि खाली नहीं है तहां जो कहो कि ब्रह्म इनते भिन्न है ब्रह्माण्ड के बाहर है ब्रह्मकी सत्ता ब्रह्माण्ड विषेहै तौ एक देशी भयो अरु जो कहो कि सर्व गुण तत्त्व में पूर्ण एक रसहै तो बिशेषण बनोहै इत्यादिक अनेक दूषण भूषण मत बादकरिकै हैं तहां हे प्रिया जब ऐसो ब्रह्म ज्ञान होइ चतुष्ट साधन संयुक्त होय तब तेहि मुमुत्तको ज्ञान प्राप्त होइ तब अपने स्वरूप कै लखिहोइ तब सर्वभूत विषे ब्रह्म दृष्टिहोइ तब ब्रह्मानन्दाकार वृत्ति होइ तब अन्तमें कैवल्य मुक्तिकै प्राप्तिहोइहै अरु जो निराकारब्रह्म किसीनेसिद्धान्त कियोहै सोसत्य

है पर हे पार्वती हमारो सिद्धान्त निर्विशेष परब्रह्म श्री दशरथ नन्दन तिनको घन तेज निराकार व्यापक ब्रह्म है अरु हे उमा यहि जगत्को कारणमहामाया है सो महामाया महाविष्णु के आश्रित है अनादि शुद्ध है ते महाविष्णु श्री रामचन्द्रको दिव्यगुण विग्रह है तिनहीं को महा ईश्वर कहो तिनहीं की इच्छाते सब जगत् है पुनि हे उमा कोई मुनीश्वर यह सिद्धांत करते हैं चतुर्भुजभगवान् परात्परतर हैं कार्य्य कारणके परे हैं अरु सोई प्रभु चतुर्भुज साकाररूप सर्वविषे व्याप्त हैं अरु सोई प्रभु एकस्वरूप ईश्वर क्षीरसागर वैकुंठहै तामें बिराजमान संपूर्ण जगत्के कारण हैं अरु हे प्रिया हमारे मतमें चतुर्भुज भगवान् जो हैं सो श्रीरामचंद्रको महत् अंश हैं तिन श्रीरामचन्द्रके अवतारको कारण बहुत बिधिसों विस्तारपूर्वक सुनहु (३) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडे उमामहेश्वरसम्बादे श्रीरामअवतारअवतारीमतमतान्तसूक्ष्मवर्णनंनामत्रयोविंशतिस्तरङ्गः ॥ २३ ॥

दोहा ॥ रामचरण अवतार त्रय भेदमतांत विशेष ॥
सावधान जिज्ञासुकरि लहरिचौबिसै देखि २४

हे उमा एककल्पविषे जय विजय दुइ पार्षद विष्णु के द्वारपाल रमावैकुंठमें तहां सनकादिकन शाप दीन ते द्वौ हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु भये तहां विष्णु वाराहरूप भये पुनि विष्णुने अन्तर्यामी स्वरूप नृसिंहरूप धरिकै मारे (श्लोकार्द्ध) विष्प्रवेशने धातोर्विष्णु रित्यभिधीयते ॥ ते द्वौ रावण कुम्भकर्ण भये तब विष्णु श्रीरामस्वरूप धरिके मारिडारे मुक्तनहीं भये काहेते सनकादिकन को शाप तीनि जन्म कोभयोरहै एकसै इकइस अष्टपदी की चार चौपाईसे एकसै बाइस अष्टपदी की एक चौपाई ताई को अर्थ है (१) ॥

१२२मुक्तनभयेहतेभगवाना *। तीनिजन्मद्विजवचनप्रमाना * १
एकबारतिनकेहितलागी *। धरेउशरीरभक्तअनुरागी * २
कश्यपअदितितहांपितुमाता। दशरथकौशल्याबिख्याता ३
एककल्पयहिबिधिअवतारा । चरितपवित्रकियेसंसारा ४
एककल्पसुरदेखिदुखारे * । समरजलंधरसेसबहारे * ५
शंभुकीनसंग्राम अपारा * । दनुजमहाबलमरैनमारा * ६
परमसतीअसुराधिपनारी *। तेहिबलताहिनजीतपुरारी * ७
दो० छलकरि टारेउ तासुब्रत प्रभुसुर कारज कीन्ह ॥
जबतेइँजानेउ मर्मसोइ शापकोप करिदीन्ह १

१२२ हे उमा एक बार यहिकारण करिकै श्रीरामावतार भयो है भक्तन के हेतु विष्णु चतुर्भुजभये ताते शरीर धारब कह्यो (२) तहां कश्यप अदिति श्रीदशरथ कौशल्या भयेहैं (३) एक कल्पको यहै श्रीरामावतारको प्रयोजन जानब (४) पुनि हे

उमा अपर एक कल्पाविषे जलन्धर रावण भयाहै तबहू विष्णु ने श्रीराम स्वरूप मारि डारेउ परम पदको प्राप्तकीन है तेहू अवतार विषे कश्यप अदिति श्रीदशरथ कौशल्या भयेहैं चतुर्भुज ते द्विभुज ताते नरधारी कह्योहै ऐसेही प्रति अवतार मुनीश्वर हरियश अनेक भांति करिकै गावते हैं एकसै बाइस अष्टपदी की चार चौपाईते अरु एकसै तेइस अष्टपदीकी चार चौपाई ताईं अर्थ जानब (४)

तहांजलन्धररावणभयऊ *। रणहतिरामपरमपददयऊ * २
एककजन्मकरकारणयेहा *। ३

*।

६
७
८

० बोलेबिहँसि

०

१२३ अरु हे उमा एक कल्प विषे नारदशाप दीनहै तेहू अवतार में कश्यप अदिति श्रीदशरथ महाराज अरु कौशल्याजू होती भईं अरु विष्णु भगवान् लक्ष्मीजी श्रीराम सीता होतभये सो जानब (५) आगे छः की चौपाईते आठकी चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (८) दोहार्थ ॥ महेश बिहँसि के बोलते भये हे प्रिया न कोई ज्ञानी है न तो कोई मूढ़है जेहि काल विषे रघुपति जस जेहिको करै हैं तसते होते हैं यहै अर्थ करत संत श्रीरामचन्द्र विषे सम विषम दूषण होतहै काहेते एकको ज्ञानी कियो अरु एकको मूढ़ कियोहै तहां ऐसो नहींहै सबको कर्मानुसार फलदेत हैं जैसे कोई राजाने अपने कारोबारीते सदावर्त्त को नेम बांधि दियोहै सोई रीति परम्परा चली जातिहै कोई कालमें किसूकी करणी ते प्रसन्न भयो तब हाथी दियो अरु बिकारदेख्यो तब दण्डदियो तैसे श्रीरामचन्द्र अपनी माया की प्रेरणाते कर्मानुसार को सदावर्त बांधेहैं तहां काहूजनके कोई संयोग ते अहंकार भयो तिनको दण्ड देते हैं अविद्या मायाके मिसुकरिकै विद्यामायाकी प्रेरणा करके अहंकार को नाश करि देते हैं शुद्धकरि जैसे छोटो कांट पगमें गड़ैहै तब बड़े कांट ते निकासिकै दूनों दूरि करैहैं देखि ब्रह्मा शिव नारदसनकादिक कागभुशुण्ड इत्यादिक अरु जे कोई निरभिमान कोलभिल्ल शवरी गृद्ध वानर ऋक्ष राक्षस तिन पर प्रसन्न ह्वैकै तुरन्त परमपदको

प्राप्त कोन तहां मास्व दाऊ हैं ताते रघुपति एक रस हैं किन्तु अपने अपने कर्मानुमार सर्व जीव हैं तिन विषे जब श्रीरामचन्द्र जिसको जस करैं हैं तैसस होइ हैं ॥ दोहार्द्ध ॥ मशकहि करैं बिरंचि प्रभु। अजहु मशक ते हीन ॥ किन्तु जे श्रीरामानन्य हैं तिनकर यही सिद्धान्त है कि श्री रामचन्द्र की प्रेरणा ते गुप्त होत है इत्यर्थः ॥ एकसै तेइस अष्टपदी के सोरठा ते एकसै चौबिस अष्टपदीको आठ चौपाई ताईं अजगार्थ जानव (८) एकसै चौबिस अष्टपदी की चार चौपाई कर आर्थ करतहन दशौबाई को एक करिके समाधि करिनि है शाप गति पाठ सामान्य हैं (४—८)॥

१२४ हिमगिरिगुहाएकअतिपावनि। बहसमीपसुरसरिसुहावनि १
आश्रमपरमपुनीतसुहावा *। देखिदेवऋषिमनअतिभावा २
निरखिशैलसरिविपिनबिभागा। भयउरमापतिपदअनुरागा ३
सुमिरतहरिहिश्रापगतिबांधी। सहजबिमलमनलागिसमाधी ४
मुनिगतिदेखिसुरेशडेराना। कामहिबोलिकीन्हसनमाना ५
सहितसहायजाहुममहेतू *। चलेउहरषिहियजलचरकेतू
निमहँअतिनासा। चहतदेवऋषि पुरबासा * ७
जेकामीलोलुपजगमाहीं *। कुटिलकाकइवसबहिडेराहीं ८

दो० सूखहाड़ लै भाग शठ श्वान निरखि मृगराज ॥
छीनिलेइमनजानिजिमि तिमिसुरपतिहिनलाज १

१२४ दोहार्थ ॥ सूखहाड़ भूखो श्वान कहूँ चाबत रह्यो तहां सिंहको देखिकै लैभाग्यो कि सिंह मेरो हड़ छीनि लेइगो तैसेही इन्द्र को हाल है यहि दृष्टांत ते इन्द्रपदवी ताईं बिभव जोहै सो श्रीरामदासन को सूखो अस्थि की समान त्यागहै तिनहीं को श्रीरामचन्द्र प्राप्तहैं (१)॥

१२५ तेहिआश्रमहिंमदनजबगयऊ। निजमायाबसन्तनिर्मयऊ १
कुसुमितविविधविटपबहुरंगा। कूजहिंकोकिलगुंजहिभृंगा २
चलीसुहावनित्रिविधिबयारी। कामकृशानुबढावनिहारी ३
रम्भादिकसुरनारिनवीना *। सकलअसमशरकलाप्रवीना ४
करहिंगानबहुताललरंगा *। बहुबिधिक्रीडहिपाणिपतंगा ५
देखिसहायमदनहरषाना। कीन्हेसिपुनिप्रपंचबिधिनाना ६
कामकलाकछुमुनिहिंनव्यापी। निजभयडरेउमनोभवपापी ७
सीमकिचापिसकैकोउतासू। बड़रखवाररमापतिजासू * ८

दो० सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मनमैन ॥

गर्हेसि जाय मुनिबर चरणा कहि सुठि आरत बैन १

१२५ आगे एककी चौपाई ते चार चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (४) पुनि पांचकी चौपाई को अर्थ पाणि कहो हाथके भावते पतङ्ग नृत्य करती हैं रम्भादिक अप्सरा किंतु पतङ्ग नाम तम्बूरा को है सो पाणिमें लिहें बजावती हैं नृत्य क्रीड़ा करती हैं (५) यह प्रसङ्ग विषै एकसै पचीस अष्टपदीकी छः चौपाई ते एकसै सत्ताइस अष्टपदी की पांच चौपाई ताईं एकही भाव जानब तहां नारदजू माया के बश नहीं भये " इहां केवल हरि इच्छा जानब ऐसी इच्छा हरिने क्यों किया तहां सर्वजीवन को अरु भागवतनको भागवतापराध देखावतेहैं महादेव की अवज्ञा कियो जाइ ताते भागवतापराध भयो ताते हरिने कृपा करकै अपराध नाश कियो शुद्ध करिदियो (५)॥

१२६ भयउननारदमनकछुरोषा। कहिप्रियबचनकामपरितोषा १
नाइचरणसिरआयसुपाई। गयउमदनतबसहितसहाई *२
मुनिसुशीलताआपनिकरणी। सुरपतिसभाजायसबबरणी ३

तबनारदगमनेशिवपाहीं। जीतिकामअहमितिमनमाहीं ५
मारचरितशंकरहिसुनाये। अतिप्रियजानिमहेशसिखाये ६
बारबारबिनवौंमुनितोहीं। जिमियहकथासुनायहुमोहीं ७
[illegible]कहहू। [illegible]रायहुतबहू ८

दो० शम्भु दीन उपदेश हित नहिं नारदहि सुहान॥
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान १

१२७ रामकीनचाहैसोइहोई *। करैअन्यथाअसनहिंकोई * १
शम्भुबचनमुनिमननहिंभाये। तबबिरंचिकेलोकसिधाये २
तहँपुनिकछुकदिवसमुनिराया। रहेहृदयअहमिति अधिकाया ३
एकबारकरतलकरबीणा *। गावतहरिगुणगाननवीना * ४
क्षीरसिंधुगमनेमुनिनाथा। जहँबसश्रीनिवासश्रुतिमाथा * ५
हरषिमिलेउठिरमानिकेता *। बैठेआसनऋषिहिसमेता ६
बोलेबिहँसिचराचरराया *। बहुतेदिननकीन्हमुनिदाया ७
कामचरि[illegible] *। यद्यपिप्रथमबरजिशिवराखे ८
अतिप्रचण्डरघुपतिकैमाया। जेहिनमोहअसकोजगजाया ९

दो० रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्रीभगवान॥

तुम्हरे सुमिरणते मिटहिं मोह मार मद मान १

१२७छ: सात चौपाई को अर्थ नारद क्षीरसागर को जातभये भगवान् अति आदर संयुक्त अपने बराबर अपने आसनपर बैठावते भये तहां यह जानिये कि जोकोई काम क्रोध लोभ जीते हैं तिनको भगवान् अपनी बरोबरि मानतेहैं पुनि यामें और धुनि है यह जानिये जो अपनो प्रभु अपनो आदर अपनी बरोबरि कियो तब अपनो कछु वर्त मानमें अवश्य विघ्न जानिये सो नारद विषे आदर विघ्न दूनों देखि लेव आगे अक्षरार्थ जानिये (७) दोहार्थ ॥ अर्थ एकसै सत्ताइस अष्टपदी को सात अंकते एकसै अट्ठाइस अष्टपदी के दोहा ताईं भगवान्की वाणी व्यंग्यार्थ कृपा मयहै पुनि विष्णु भगवान् अपनी विद्यामाया की प्रेरणा कौन सो विद्या माया बर्तमान बिषे अविद्या इव लीला करै है परिणाम शुद्धदशा करिदेइ है तहां प्रभुजो हैं सो अपने दासन के जब कबहूं काहूके ज्ञान ध्यान त्याग भजन इत्यादिको अभिमान भयो पर तेहि दशा में आरूढ़ ह्वैकै मान भयो है सो विद्यामय मानजानब अरु अविद्यामय मान भक्तनके नहीं होत है ताते विद्यामयमान जब भक्तनकेकहूं भयो तबप्रभु महाविद्या की प्रेरणा करिकै मान दूरिकरि देतेहैं ताते बैकुण्ठते अधिक कहा (उत्तरकाण्डे) हरिसेवकहिन व्यापअविद्या । प्रभुप्रेरिततेहिव्यापैविद्या ॥ तातेन शनहोइदासकर । भेदभक्तिबाढ़ैविहंग वर ॥ सो हरिमाया सर्व शुभ गुण खानिने मगमें नगर रचेउ शतयोजन का विस्तार कियो अथवा सत जो भगवान् हैं तिनके जन जो नारद तिनके निमित्त विस्तार कियो किन्तु सतकही सन्तजन जो नारद तिनके हेतु (१) एकसै उनतीस अष्टपदीकी पहिली चौपाई ते एकसै तीस अष्टपदी की पहिली चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (१) ॥

१२८सुनुमुनिमोहहोयमनताके * । ज्ञानबिरागहृदयनहिंजाके १
ब्रह्मचर्यब्रतरतमतिधीरा * । तुम्हैंकिकरैमनोभवपीरा * २
नारदकहेउसहितअभिमाना । कृपातुम्हारिसकलभगवाना ३
करुणामयमनदीखबिचारी । उरअंकुरेउगर्बतरुभारी * ४
बेगिसोमैंडारिहौंउपारी * । प्रणहमारसेवकहितकारी ५
मुनिकरहितममकौतुकहोई * । अवशिउपायकरबमैंसोई ६
तबनारदहरिपदशिरनाई * । चलेहृदयअहमितिअधिकाई ७
श्रीपतिनिजमायातबप्रेरी * । सुनहुकठिनकरणीतेहिकेरी ८
दो० बिरचेउ मगमहँ नगरतेइँ शतयोजन बिस्तार ॥
श्रीनिवास पुरतेअधिक रचनाबिबिधप्रकार १
१२९बसहिंनगरसुंदरनरनारी * । जनुबहुमनसिजरतितनुधारी १
तेहिपुरबसैशीलनिधिराजा । अगणितहयगयसेनसमाजा २

। रूपतेजबलनीतिनिवासा
बिश्वमोहिनीतासुकुमारी । श्रीबिमोहजेहिरूपनिहारी ४
सोहरिमायासबगुणखानी । शोभातासुकिजाइबखानी ५
करैस्वयंबरसोनृपबाला । जुरेतहांअगणितमहिपाला * ६
मुनिकौतुकीनगरतेहिगयऊ । पुरबासिनतबपूंछतभयऊ * ७
सुनिसबचरितभूपगृहआये * । करिपूजानृपमुनिबैठाये * ८
दो० आनि देखाई नारदहि भूपति राजकुमारि ॥
कहहुनाथगुणदोषसब याहकहृदयाबचारि १
१३०देखिरूपमुनिबिरतिबिसारी । बड़ीबारलगिरहेनिहारी १
लक्षणतासुबिलोकिभुलाने । हृदयहर्षनहिं प्रकटबखाने २
जोयहिबरैअमरसोहोई * । समरभूमितेहिजीतिनकोई * ३
सेवहिं सकलचराचरताही । बरैशीलनिधिकन्याजाही * ४
लक्षणसबबिचारिउरराखे । कछुकबनाइभूपसनभाखे * ५
सुतासुलक्षणकहिनृपपाहीं । नारदचलेशोचमनमाहीं * ६
करौंजाइसोइयतनबिचारी । जेहिप्रकारम्वहिंबरैकुमारी ७
जपतपक ... हेबिधि ...
दो० यहिअवसर चाहीपरम शोभारूप बिशाल ॥
जो बिलोकि रीझैकुंवरि तौमेलै जयमाल १

१३० एकसै तीस अष्टपदी की दुइ चौपाई ते एकसै इकतिस अष्टपदी की तीन चौपाई ताईंको भाव एकही जानब नारदजू कन्या के लक्षण देखिकै वैराग्यज्ञान भजन सब बिसरिगये ऐसी भगवत् माया प्रबलहै ताते स्त्रीको मनमें चिन्तवन करना स्त्रीकीबात कोई कहै सो सुनब अथवा स्त्रीको संभाषण स्त्रीकोरूप देखना स्त्री से कछु लेनादेना स्त्रीसे कोई सम्बन्ध करना एते यश सुकर्म धर्म योग वैराग्य ज्ञान भक्ति के बाधक विशेषकै जानब नारदको सब भूलिगयो राजा शीलनिधि भगवान् आपुही लीला रूपहैं तिनते नारदजूने कछुकबात बनाइकै कहा कि तुम्हारी कन्या सुलक्षणा है परै दुइ चारि दिन स्वयंबर को सामान्य योग है यह कहिकै प्राप्ति हेतु भगवान् ते प्रार्थना करिबे को आतुर ह्वैकै चले (३) ॥

१३१हरिसनमांगौंसुन्दरताई । होइहिजातगहरुअतिभाई ** १
मोरेहिततहरिसमनहिंकोई । यहिअवसरसहायसोइहोई

बहुबिधिबिनयकीन्हतेहिकाला । प्रकटेप्रभु कौतुकीकृपाला ३
हरिबिलोकिमुनिनयनजुड़ाने । होइहिकाजहृदयहर्षाने ४
अतिआरतकहिकथासुनाई । करहुकृपाहरिहोहुसहाई * ५
आपनरूपदेहुप्रभुमोहीं * । आनभांतिनहिंपावौंओही * ६
जेहिबिधिनाथहोइहितमोरा । करहुसोवेगिदाससेंतोरा * ७
निजमायाबलदेखिबिशाला । हियहँसिबोलेदीनदयाला ८
दो० जेहिबिधि होइहि परमहित नारद सुनहु तुम्हार॥
सोइहम करब न आनकछु बचन न मृषाहमार१

१३१ एकसै इकतिस अष्टपदी की चार चौपाईलेकै एकसै बत्तिस अष्टपदी की पांच चौपाई ताईंको भाव एकही जानब नारदजूको भगवान् तुरन्त प्राप्त भये नारदजू कन्या हेतु अनेक प्रार्थना कीन तब भगवान् बड़े कौतुकी बड़े कृपालु भक्त बत्सल सरस्वतीको प्रेरिदीन नारद बोले हे प्रभु तुम मेरे परम हितकारी हौ जामें मेरो हित होइ सो करहु तब हरि बिहँसिकै बोले एवमस्तु तुम्हारो हित हम विशेष करैंगे इहां श्लेषालंकारहै नारदहु के बचन में अरु भगवानहूकी वाक्य में दुइ दुइ अर्थ हैं तब भगवान् अन्तर्द्धान भये नारद जहां रंगभूमि बनीहै अरु अनेकन राजा बैठेहैं तहां को जात भये (५) ॥

१३२कुपथमांगरुजिमब्याकुलरोगी । बैद्यनदेइसुनहुमुनियोगी १
यहिबिधिहिततुम्हारमैंठयऊ।कहिअसअन्तरहितप्रभुभयऊ२
मायाबिवशभयउमुनिमूढ़ा । समुझीनहिंहरिगिरागूढ़ा ३
गमनेतुरिततहांऋषिराई * । जहांस्वयम्बरभूमिबनाई * ४
निजनिजआसनबैठेराजा * । बहुबनावकरिसहितसमाजा ५
मुनिमनहर्षरूपअतिमोरे । मोहिंतजिआनबरिहिनहिंभोरे ६
मुनिहितकारणकृपानिधाना । दीनकुरूपनजाइबखाना ७
सोचरित्रलखिकाहुनपावा । नारदजानिसबहिंशिरनावा ८
दो० रहे तहां दुइ रुद्र गण ते जानहिं सब भेउ॥
बिप्ररूप देखत फिरैं परम कौतुकी तेउ १

१३२ एकसै बत्तिस अष्टपदी की छः चौपाईते एकसै चौंतिस अष्टपदी की दुइ चौपाईताईं एकही जानब नारदजूको अपने रूपको अभिमान बहुत भयो अरु भगवान् नारद के हित हेतु कुरूप करिदीन पर अपर कोई नहीं जानि सकैहै सब कोईनारदै जानिकै दण्डवत् करत हैं तहां भगवान् भक्तबत्सल हैं अपने भक्तनको कछु दण्डदेकै

शुद्ध करिदेत हैं पर मर्य्यादा संयुक्त अपर कोई नहीं जानैहै तहां जब नारद महादेव को कहा नहीं मान्यो तब महादेव त्रिकालज्ञ जानिगये नारद के संग दुइ दूत करि दीन कि देखो नारदकी कौनिदशा भगवान् करते हैं पर तुम ऐसी रीतिसे रह्यो जामें नारद न जानहिं अरु कोई नहीं जानै तबते शिवकी आज्ञाते नारद के साथलगे कबहीं अन्तर्द्धानरहे कबहीं बिप्ररूप देखते फिरैं तहां नारदअपनेरूपगर्व समेत सभाको जातभये तब राजननमस्कार कीन्ह बैठतेभये राजकन्या सभा में आई सो नारदकी दशा राजकन्या देखती भई सो भगवत्की महा विद्या मायाहै सो नारदको दृष्टि देखिबै नहीं कियोअरु नारदरूप दश के गर्वते अकुलाते हैं तहां हरकेगण देखि देखि मुसुकाते हैं यहप्रकरण अक्षरार्थ है (२) ॥

१३३ जेहिसमाजबैठेमुनिजाई । हृदयरूपअहमितिअधिकाई १
तहँबैठेमहेशगणदोऊ ** । बिप्रबेषगतिलखैनकोऊ * २
करहिंकूटनारदहिसुनाई * । नीकदीन्हिहरिसुन्दरताई * ३
जकुव ॥इनहिंबरिहिहरिजानि बिशेखी ४
मुनिहिमोहमनहाथपराये । हँसहिं शंभुगणअतिसचुपाये ५
यदपिसुनहिं मुनिअटपटिबानी । समुझिनपरैबुद्धिभ्रमहानी ६
काहुनलखासोचरितबिशेखी । सोस्वरूपनृपकन्यादेखी ७
ही ** । देखतहृदयक्रोधभातहीं * ८

दो० सखीसंगलै कुंवरितब चलिजनुराज मराल ॥
देखतफिरहिमहीपसब करसरोज जयमाल १

१३४ जेहिदिशबैठेनारदफूली । तेहिदिशितेनबिलोकेउभूली १
पुनिपुनिमुनिउकसैंअकुलाहीं । देखिदशाहरगणमुसुकाहीं २
धरिनृपतनतहँगयउकृपाला । जयमाला ३
दुलहिनिलैगयेलक्ष्मिनिवासा । नृपसमाजसबभयोनिराशा ४
बिकलमोहमतिनाठी । मणिगिरिगईछूटिजनुगांठी ५
बोलेमुसुकाई । निजमुखमुकुरबिलोकहुजाई ६
असकहिदोउभागेभयभारी । बदनदीखमुनिबारिनिहारी ७
बेषबिलोकिक्रो शापदीन्हेउ अतिगाढ़ा ८

दो० होहु निशाचर जाय तुम कपटी पापी दोउ ॥
हँसेहु हमहिंसोलेहुफल बहुरिहँ

१३४ एकसै चौंतिस अष्टपदी की तीनि चौपाई मे लैकै अरु एकसै पैंतिस अष्टपदीकी चारि चौपाई ताईं एकही अन्वय जानब तेहि सभाविषे भगवान् राजाको वेष बनाय कैगये राजकन्या जयमाल पहिरायउ भगवान् ताको लैगये तहां सभानिराश भई नारद बिकलभये तब शिवके दूतबोले हे मुनि अपना मुखतौ दर्पणलैकै देखौतब नारद जलमें देखैं तो बानरको ऐसो मुख त.परअशोभित पुनितुरन्त जलमें मुखदेख्यो तब जैसे मुनिरहे तैसेही देख्यो तब कोपकरिकै दोउ दूतनको शापदियो अरु भगवान् परबहुत क्रोधकियो यह कहतचले कि भगवान् को शापदेहौं कितौ भगवान्के ऊपर मरिजैहौं ऐसेही मुनि तामस भरे क्षीरसागर को चलेजाते हैं तहां भगवान् तुरन्तसागरमें लक्ष्मी अरु राजकन्या संयुक्त ठाढ़े हैं (४) ॥

१३५ पुनिजलदीखरूपनिजपावा । तदपिहृदयसंतोषनआवा १
फरकतअधरकोपमनमाहीं । सपदिचलेकमलापतिपाहीं २
देइहौंशापकिमरिहौंजाई । जगतमोरउपहासकराई * ३
बीचहिपन्थमिलेदनुजारी । संगरमासोइराजकुमारी * ४
बोलेमधुरबचनसुरसाईं । मुनिकहँचलेहुबिकलकीनाईं * ५
सुनतबचनउपजाअतिक्रोधा । मायाबशनरहामनबोधा ६
परसंपदासकहुनहिंदेखी । तुम्हरेईर्षाकपटबिशेषी * ७
मथतसिन्धुरुद्रहिबौरायहु । सुरनप्रेरिबिषपानकरायहु * ८
दो० असुरसुराबिषशंकरहि आपुरमामणि चारु ॥
स्वारथसाधककुटिलतुम सदाकपटव्यवहारु १

१३५ एकसै पैंतिस अष्टपदीकी पांचचौपाईते एकसै छत्तिस अष्टपदीकी छः चौपाई लगि एकअन्वय जानब नारदजी बिकलचले आवतहैं तब भगवान् बिहँसिकै बोलत भये हे मुनीश्वर तुमबहुत बिकलकी नाईं कहां चलेहुहै यह बचन सुनतसन्ते मुनिके क्रोध उत्पन्नभयो अनेक दुर्बचन भगवान् को कहतभये पर भगवत् प्रेरणाते मुनिकी बाणीदुर्बचनबिषे ईश्वरै अर्थ बाणीके अवांतरहै तहां यहबिशेषकै जानब कैसहूमहान् होंहि जब कोई कामनामें बासनाभई तब बुद्धि भ्रष्ट होजातीहै तब सुकर्म सुधर्मसंग गुरु भगवान् परमइष्ट सब को असत्कार होतहै कामना बशभये ते भगवत् मायामहा महा मुनीशनको दुस्तरहै ताते केवल श्री रामशरण प्राप्तहोइ तब माया शांतिहोती (गीतायांश्लोक) दैवीह्येषा गुणमयी ममभायादुरत्यया ॥ मामेवयेप्रपद्यन्ते मायामेतां तरंतिते १ तहां नारदजू महा मोहके बशह्वैकै भगवान् को शापदीन कि तुमराजा को तनुधरौ (६) ॥

१३६ परमस्वतंत्रनशिरपरकोई । भावैमनहिंकरौतुमसोई * १
भलेहिमन्दमन्देहिभलकरहू । बिसमयहर्षनमनकछुधरहू २

।। आतअशकसनसदाउछाहू ३
कर्मशुभाशुभतुम्हहिंनबाधा। अबलगितुम्हहिंनकाहूसाधा ४
भलेभवनअबबायनदीन्हा । पावहुगेफलआपनकीन्हा ५
बंचेहुमोहिंजवनिधरिदेहा। सोइतनुधरहुशापममयेहा ६
कपिआकृतितुमकीन्हहमारी। करिहैंकीशसहायतुम्हारी ७
ममअपकारकीन्हतुमभारी। नारिबिरहतेहोहुदुखारी * ८
दो० शापशीशधरिहर्षिहिय प्रभुबहुबिनतीकीन्ह ॥
निजमायाकीप्रबलता कर्षिकृपानिधिलीन्ह १

१३६ एकसै छत्तिस अष्टपदीकी सात चौपाई लैकै एकसै सैंतिस अष्टपदी की आठ चौपाई ताईं एकही भावहै अक्षरार्थ जानब नारदजू शाप देत भये भगवान्‌आप अंगीकार करिकै अपनी मायाकी प्रबलता आकर्षणकरि लीन तबनारद मायारहितभये तब बहुत ग्लानिको प्राप्तह्वै कै भगवान्‌की स्तुतिकीन तब भगवान्‌ने कहाकि मेरी ऐसीही इच्छा है परहे मुनितुम शिवशतनाम जपहुजाय महाअपराध सो मिटिजायगो बिश्रामको प्राप्त होहुगे तहां यह प्रभुकी रीतिहै कि जो कोई भागवतापराध करै है तब उनहीं भागवतन के द्वार ह्वै कै अपराध मिटावते हैं तब शिवके दूतनको मुनि शाप अनुग्रह कीन अब तुम दूनों कुम्भकर्ण रावण लंका बिषे होहु जाय तुम्हारे हेतु बिष्णु भगवान् लक्ष्मी श्री सीताराम स्वरूप श्रीअयोध्या बिषे अवतार लेहिंगे तहां कश्यप अदिति श्रीदशरथ कौशल्या होहिंगे तिनकी आज्ञाके मिसुकरिकै तुमको बधहिंगे तुम परमपद को प्राप्त होहुगे यह कहिकै नारदजी रामगुण गावत सत्यलोकको चले भगवान् अंतर्द्धानभये (८)॥

१३७ जबहरिमायादूरिनिवारी *। नहिंतहँरमानर जकुमारी *१
तबमुनिअतिसभीतहरिचरणा। गहेपाहिप्रणतारतिहरणा २
वृथाहोहुममशापकृपाला *। ममइच्छाकहदीनदयाला ३
मैंदुर्बचनकहेउँबहुतेरे *। कहमुनिपापमिटहिंकिमिमेरे ४
जपहुजायशंकरशतनामा *। होइहिहृदयतुरतबिश्रामा ५
कोउनहिंशिवसमानप्रियमोरे। असपरतीततजहुजनिभोरे ६
जेहिपरकृपाकरहिंत्रिपुरारी *। सोनपावमुनिभगतिहमारी ७
असउरधरिमहिबिचरहुजाई *। अबनतुम्हैंमायानियराई ८
दो० बहुबिधि मुनिहिं प्रबोधि हरि तब भये अंतर्द्धान ॥
सत्यलोक नारद चले करत राम गुण गान १

हरगणमुनिहिंजातपथदेखी । बिगतमोहमनहर्षबिशेषी १

अतिसभीतनारदपहँआये * । गहिपदआरतबचनसुनाये २

हरगनहमनबिप्रमुनिराया । बड़अपराधकीन्हफलपाया ३

शापअनुग्रहकरहुकृपाला * । बोलेनारददीनदयाला * * ४

निशिचरजाइहोहुतुमदोऊ । बैभवबिपुलतेजबलहोऊ * * ५

भुजबलबिश्वजितबतुमजहिया । धरिहहिंबिष्णुमनुजतनतहिया ६

समरमरणहरिहाथतुम्हारा * । होइहहुमुक्तनपुनिसंसारा * ७

लेयुगलमुनिपदशिरना * । भयेनिशाचरकालहिपाई ८

१३० एक कल्प यहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ॥

सुर रंजन सज्जन सुखद भंजन धरणी भार १

१३८ एकसै सैंतीस अष्टपदी के दोहा लैकै अरु एकसै उनतालीस अष्टपदी की तीन चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानिये सो पाछे अर्थ जनाइ आये हैं पुनि जनावते हैं एक कल्प बिषे जय बिजय हिरण्याक्ष अरु हिरण्यकशिपु भये तेई कुम्भकर्ण रावण भये पुनि एक कल्प बिषे जलंधर रावण भयो अरु तिसको भ्राता जय शत्रुसो कुम्भकर्ण भयो पुनि एक कल्प बिषे शिवके दूनों दूत नारदके शाप करिकै कुम्भकर्ण रावण भये तहां तीनिहूं कल्प बिषे श्रीबिष्णु भगवान् रमा बैकुण्ठ ते लक्ष्मी संयुक्त अवतार लेत भये श्रीरामसीता स्वरूप भये तहां तीनिहूं कल्पबिषे कश्यप अदिति श्री अयोध्या बिषे श्रीदशरथ कौशल्या भये तिनके पुत्र भगवान् बिष्णु ह्वै कै पृथ्वी को भार उतारिकै पुनि चतुर्भुज रूप ह्वैकै वैकुण्ठको गमन कीन तहां बिष्णु भगवान् को बिद्या उपाहित गुणाभिमान जानब पर बिष्णु भगवान्को परम दिव्य गुण बिग्रह जानब सात्विकगुणको अपनी इच्छाते ग्रहण किये हैं ताते गुणाभिमानी कहो अरु जब श्रीराम भये तब अबिद्या रहित निर्विशेष परब्रह्म बिग्रह जानब यह मैं कौनेउँ पक्ष करिकै नहीं कह्यों है यहसत्य जानब यह ऐसही तत्वहै ऐसेही प्रभुके जन्म कर्म अनेक तरहतरहके अति सुन्दर सुखकारी बिचित्र निर्मल सच्चिदानन्द मय समस्त लीला जानब तब तब कल्प कल्प मुनीश्वरन परम पुनीत प्रबन्ध बनाय बनाय गाये हैं (३) ॥

१३९ यहिबिधिजन्मकर्महरिकेरे । सुंदरसुखदबिचित्रघनेरे * १

कल्पकल्पप्रतिप्रभुअवतरहीं । चारुचरितनानाबिधिकरहीं २

तबतबकथामुनीशनगाई * । परमपुनीतप्रबन्धबनाई * ३

बिबिधप्रसंगअनूपबखाने । करहिंनसुनिआश्चर्यसयाने ४

हरिअनन्तहरिकथाअनन्ता।कहहिंसुनहिं बहुबिधिसबसंता ५

रामचंद्र * * । कल्पकोटिनगमागमगाये ६

यहप्रसंगमैंकहाभवानी * । हरिमायाम्रोहेमुनि *
प्रभुकौतुकीप्रणतहितकारी । सेवतसुलभसकलदुखहारी * ८
सो० सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ॥
अस बिचारि मनमाहिं भजिय महा माया पतिहि १

टी० एकसै उनतालीस अष्टपदीकी चार चौपाई लैकै अरु उसी अष्टपदीके सोरठा ताईं एकही भाव जानब महादेव कहते प्रिया प्रसंग ह तुम से अनूप अनूप कहे हैं तुम अच्छी तरह जै ते आश्चर्य न करहिंगे अज्ञानी संदेह करहिंगे कि ईश्वरमेंभेद करते हैं अरु हम ईश्वर तत्त्व अरु परब्रह्म तत्त्व एकही मानते हैं तहां परमेश्वरके पांच स्वरूप हैं अनादिहोते कार्य कारण महाकारण पर इत्यादिक वेद कहते हैं कि भक्तानुग्रहार्थअनादि हैं अर्चा अंतर्यामी बिभु बिपुल पराक्रमते जानब शालिग्राम अथवा धातु शिला दारु चित्र मृत्तिका इत्यादि विग्रह सो अर्चा अंतर्यामी सर्वको चैतन्यकर्ता व्यापक बिभु मत्स्यादिक अवतार व्यूह बासुदेव संकर्षण अनिरुद्ध प्रद्युम्न पर श्रीरामचन्द्रजी श्री महाराज दशरथनन्दन जिनको कही तहां जब जब पृथ्वी को भार होतहै तब तबईश्वर मत्स्यादिक अवतार लेते हैं अरु परस्वरूप केवल जे कोई भक्तराजहैं तिनकी भक्ति करिकै पृथ्वीके भार मिसु करिकै अवतीर्ण होते हैं पर सबस्वरूप परमेश्वर एकही तत्त्व है यह सबसमुझिकै प्रवीणजन संदेह नहीं करेंगे (४) कहिते हरि अनन्तरूप हैं अरु हरिकेनाम गुण कथा लीला अनन्त हैं ऐसा समुझिकै सन्तजन सन्देह नहीं करते हैं हरि चरित कहते सुनते हैं श्री रामचन्द्रजीके चरित्र कोटिन कल्पजाँग वेद नहीं कहिसकै अपर की कहा कहौं हे प्रिया हमने तुमसे जय विजय और जलंधर की कथा नारदको मोह भयो सो सब कहा हे प्रिया भगवत्माया अति प्रबलहै सुर नर मुनि सबको मोहित है कोऊ समर्थ नहीं है जो मायाको जीति सकै ताते महामाया पतिको भजो तब कल्याण है (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे भयअवतारभेदाभेदमतमतान्तसिद्धान्तजिज्ञासूसंवधानकृतेचतुर्विंशतिस्तरंगः ॥ २४ ॥

दो० पँचअरुबीस तरंग में नृप रानी तप ज्ञान ॥
रामचरण परप्रभुदरश शोभासिंधुनिधान २५

१४०अपरहेतुसुनुशैलकुमारी * । कहौंबिचित्रकथाबिस्तारी *१
जेहिकारणअजअगुणअनूपा । ब्रह्मभयोकोशलपुरभूपा * २
जोप्रभुबिपिनफिरततुमदेखा । बन्धुसमेतधरेमुनिवेषा * *३
जासुचरितअवलोकिभवानी । सतीशरीररहिहुबौरानी * *४
अजहुंनछायामिटतितुम्हारी । तासुचरितसुनुभ्रमरुजहारी *५
लीलाकीन्हजोतेहिअवतारा । सोसबकहिहौंमतिअनुसारा ६

भरद्वाजसुनि संकरबानी * * । सकुचिसप्रेमउमामुसुकानी * ७
लगेबहुरिबरनै वृषकेतू * * । सोअवतारभयोजेहिहेतू *

दो॰ सो मैं तुम सन कहौं सब सुनु मुनीश मनलाइ ॥
रामकथा कलिमल हरनि मंगल करनि सुहाइ ॥

१४० हे भरद्वाज हे गरुड़ श्री महादेव बोलत भये हे शैलकुमारि अपनी बुद्धि स्थिर करो श्रीरामजन्म के तीनि हेतु तौ मैं अच्छीप्रकार तें कहिआयो हौं अब अपर हेतुसुनहु जो चित्रबिचित्र कथा बिस्तार समेत कहौंगो सो चित लगाइकै सुनहु (१) हे पार्वती अब सो कारण सुनहु जेहि कारणसे अज अगुण अरूप परब्रह्म अवतीर्ण और कोशलपुर भूप भये सो कारण सुनहु अज कहो अजन्मा जो गर्भ में नहींआवै अरुजाको अवतारहू को तात्पर्य नहीं है अपने अंशकला बिभूति करिकै पृथ्वीका भार उतारते हैं ताते अज कहो पुनि अगुणकहो तीनिगुण रहित स्वरूप सच्चिदानन्द विग्रह परमदिव्य ब्रह्ममय गुण ज्ञान बिज्ञान मोक्षकरुणा वात्सल्य सौशील्य इत्यादिक स्वाभाविक जिनमेंहैं ताते अगुण कहो पुनि अरूप कहो जिनकी सदृश कोई नहींहै जिनकी उपमाकोनतौकाम है न तौ कोई भगवत् के अवतार हैं न तौ बिष्णु नारायण हैं न तौ ब्रह्म व्यापक है अपर को का कहौं सो स्वरूप आगे कहतही हौं अरु चौपाई के अन्तमें अनूपही पाठ है पर कोई हठ करिकै और पाठ करते हैं तहां अरूप कहो जाको प्राकृत रूप नहींहै तीन गुण पांचतत्त्व अविद्या विद्या माया रहित रूप है परब्रह्म मयरूप है जिनको ताते अरूपहु कहतेहैं ऐसो जोपरब्रह्म सो कोशलपुर भूप भये कोशलाधीश तौ सदा नित्य हैं तहां चारिहूपद बिभूति चारिहू मुक्ति अरु नवधा प्रेमापरा भक्ति अरु असंख्य ब्रह्माण्ड तिन सबके ईश हैं तहां भक्तानुग्रहार्थ लीला अनुकरणते भूप कहो (२) हे पार्वती जिन प्रभु को तुम बिपिन बिषे बन्धु संयुक्त मुनिवेष किये देखेउ है (३) हे गिरिजा जिन प्रभु की वनलीला चित्र बिचित्र देखिकै तुम सतीस्वरूप विषे बौराइ गइउ रहै अरु मैंने अनेक प्रकारते तुमको समुझायो पर तुमको महा मोह भ्रमभयो तब हमारे कहते तुम्हारे मनमें निश्चय भई (४) हे उमा जिनको चरित्र तुम आरण्य विषे देखिकै महा सन्देहको प्राप्तभइउ उस सन्देह की छाया तुम्हारे अद्यापि वनीहै तब यह चरित्रदेखि कै तुम को तौ भ्रमभयोपर यह चरित्र कैसो है भ्रम जोहै महारोग तेहिके नाश करिबेको महा औषधि है जिन प्रभुको चरित ऐसोहै तिन प्रभु को चरित कारण कार्यऐश्वर्यमाधुर्य लीला बिस्तार समेत कहौंगो सो बहुत सवधान ह्वैकै सुनहु जोसुनिकै सर्व सन्देहनाश ह्वैजाहिंगे (५) हे प्रिया जेहि अवतारकी लीला देखिकै तुमको भ्रमभयो रहै तेहि अवतारको महा मंगल मय हेतु सो कहौंगो अरु जेहि प्रकारते परम पुरुष अवतीर्ण भये सो कहौंगो तेहि अवतार बिषे जो परम बिचित्र लीला कीन है सो लीला किसूके कहिबे योग्य नहीं है श्रुति स्मृति पुराण नर नाग असुर ब्रह्मादिक देवता सब को अगम है नेति नेति कहते हैं तहां अपनी मतिके अनुसार सो लीला मैं भी कहौंगो (६) हे भरद्वाज शंकर के बचन अनेक कर्म्म को अरु माया जीव ईश्वर ब्रह्म

अरु परब्रह्म तहां माया के तीन भेद हैं अविद्या बिद्या आह्लादिनी तहां बिद्या जो है सो अविद्या विषे अरु आह्लादिनी विद्या बिषे सूत्रात्मक व्याप्त है अरु आह्लादिनी ब्रह्मानन्द परमानन्द मय त्रिपाद बिभूति सो कहा अरु पंच प्रकार के जीव कहा अरु ईश्वर सगुण रूप सो कहा अरु ईश्वर ते अवतार सो कहा अरु निरवयव सावयव ब्रह्म परब्रह्म को स्वरूप कहा जिन प्रभु की लीला देखिकै सतीके भ्रम भयो यह प्रकरण मह देवने भिन्न भिन्न करिकै कहा अरु अद्वैत विशिष्टाद्वैत द्वैताद्वैतस् कहा महादेवकी परम विचित्र बाणी सुनिकै उमा संकोच संयुक्त परमानन्द को प्राप्त भई (श्रीमन्महारामायणे श्लोक १) मकारंव्यञ्जनञ्चैवत्रिधाशक्तिस्वरूपिणी ॥ शक्तिराह्लादिनीविद्या विद्यासूत्रात्मकस्स्वयम् (७) पुनि जिस स्वरूप विषे सतीके भ्रमभयो रहै वह अवतार जौनेहेतु भयो सो महादेव आनन्द संयुक्त वर्णन करै लगे (८) दोहार्थ ॥ हे भरद्वाज जेहि अवतार की कथा महादेव पार्वतीजी से कहते हैं विस्तार समेत सो कथा मैं तुमसन यथार्थ कहौं गो श्री राम चरित कैसो है सम्पूर्ण कलि जो क्लेश जन्म मरण तेहिको नाशकर्त्ता है अरु शुभ मंगल जोहै श्रीराम चन्द्रजू की प्राप्ति ताको करतु है (९) ॥

जिनतेभइनरसृष्टिअनूपा * १
तिजिनकैलीका२
* । बहरिभक्तभयउसुततासू * ३
। वेदपुराणप्रशंसहिं ताही * ४
। जोमुनिकर्दमकौप्रियनारी * ५
दीनदयाला * । जठरधरेउजेहिकपिलकृपाला ६
सांख्यशास्त्रजिनप्रकटबखाना। तत्त्वविचारनिपुणभगवाना ७
तेहिमनुराज्यकीन्हबहुकालाप्रभुआयसुसर्वबिधिप्रतिपाला ८
सो० होयन विषय विराग भवन बसत भा चौथ पन ॥
हृदय बहुत दुखलाग जन्मगयो हरि भक्तिबिन १

१४१ हे उमा अनूप कारण सुनहु जेहि कारण विषे पृथ्वीके भारको प्रयोज नै नहीं है तहां महा अनूप कारण विषे परमात्मा परब्रह्म साक्षात् द्विभुज अखण्ड एक रस सच्चिदानन्द मूर्ति अवतीर्ण होहिंगे पुनि यह कारण भव सिद्धि करिकै तेहिके पश्चात् पृथ्वीके भारको कारण करिकै अपनी इच्छासे अपने स्वरूप के कछुक गुप्त संयुक्त अवतार लेहिंगे सो सुनहु हे भरद्वाज स्वायंभुवमनु ब्रह्माजूके पुत्र हैं सहस्र चौकड़ी युगको कल्प तहांएक कल्प विषे चौदह मन्वंतर होते हैं तहां एक भगवान्को अवतार अरु एक इन्द्र इन्द्रके संकल्प संग विषे जो देवता होते हैं अरु एक मनु होते हैं अरुएकमनुकेपुत्र अरु सप्तऋषि होते हैं येषट् मन्वंतर प्रति होते हैं तहां साढ़े एकहत्तरि चौ

युग जब बीतै है तब एक मन्वंतर होतहै अरु कोई मुनिको मत है हज़ारयुगको ब्रह्माको एक दिन कहते हैं तहां साढ़े एकहत्तरि युगको मन्वंतर जानिये एक कल्प विषे ऐसेही चौदह बार भिन्न भिन्न होते हैं ताको मन्वंतर कही ऐसे ही कल्प कल्प प्रति जानव भगवान् सबकी रक्षाहेतु मन्वंतर प्रति होते हैं अरु इन्द्र स्वर्ग को राजा अरु देवता यज्ञ भागहेतु अरु मनु सृष्टि भरे को राजा सबकी रक्षा करैं अरु मनुके पुत्र प्रजापालन हेतु अरु सप्तऋषि वेदधर्म्म पालन हेतु तहां चौदह मनुविषे जो कल्प के प्रथम मनुहैं तिनको स्वायंभुवमनु कही ब्रह्माके पुत्र कैसे भये तहां महाकल्प के अन्त विषे श्रीमन्नारायणकी नाभिते कमल उत्पन्न भयो कमलते ब्रह्मा उत्पन्न भये तब पुरुषकी आज्ञा जानिकै ब्रह्मा मानसी सृष्टि सनकादिक इत्यादिक उत्पन्न कीन तिनने सृष्टिको कारब नहीं अंगीकार कीन विरक्त भये तब ब्रह्माजी ने विचार करिकै दक्षिण भुजते एक पुत्र उपजाया स्वयंभू जो ब्रह्मा हैं तिनते उत्पन्न भये ताते स्वायंभुव मनु कही अरु बाम भुजते शतरूप नामकन्या उपजाई तिन दूनों को बिवाह कीन यहां दोष न जानब स्वायंभुव मनु भगवान् के चौबीस अवतार में हैं अरु शत रूपा तिनकी अनादि दिव्य शक्तिहैं पुनि दोष नहीं है दूसर तौ कोई हई नहीं है कोहिते बिवाह करहिं पुनि समर्थ को दोष होतहीनहीं है जिन मनु शतरूपाते नरसृष्टि जो अनूप है सो होतभई तहां जो कोई कहै कि स्वायंभुवमनु कौने कल्प विषे भये हैं सो यह प्रमाण हमने नहीं पायो पर यह समुझि परैहै कि कोई महा कल्प को अन्तहै अरु नैमित्य कल्पविषे अपर अवतार जानव अरु कल्प के प्रमाण तौ विद्यमान हैं प्रलय कही नाशको कल्प कही जव उत्पन्न भयो पालन भयो ताको कल्प कही तहां प्रलय कई बिधिते मुनिन कहा है तहां एक नित्य प्रलय जो नित्यही दिनप्रति उत्पत्ति नाश होति रहति है पुनि नैमित्तिक प्रलय ब्रह्माके दिनप्रति तहां ब्रह्मा के दिन जब हज़ार चौकरी युगबीतैं तब एकदिन होतहै अरु उतनै रात्रि जानव रात्रि दिन को एक कल्प कही पुनिआत्यंतिक प्रलय योग ज्ञान भक्तिकरिकै मोक्ष होतहै पुनि महाप्रलय ब्रह्माके दिन जब तीनिसै साठि बीतैं तब ब्रह्माको एक बर्ष होतहै ऐसे एकसै बर्षकी ब्रह्मा की उमिरि है जब ब्रह्मा को अन्तभयो ताको महाप्रलय कहीताहीके पाछे आगे को कल्पकही (१) ते महाराज राजामनु अरु महरानीशतरूपा जो ते दूौ राजा रानी धर्मनीति राजनीति वेदनीति आचरण विषे अत्यंत प्रवीणहैं जिन के धर्म के मर्यादकी लीक वेद चारिहू युग विषे गावत हैं (२) जिन स्वायम्भुवमनु के पुत्र राजा उत्तानपाद भये ताके ध्रुवजू भये ध्रुवजू हरि के अनन्य भक्तभये पुनि मनु के ज्येष्ठ पुत्र उत्तानपाद भये अरु लघु पुत्र प्रियव्रत होतभये तिनदोऊ पुत्रन के धर्म नीति यश प्रताप बल बीर्य ऐश्वर्य जिनको वेद पुराण प्रशंसा करते हैं (३) जिन प्रियव्रत का रथ एक चाकको रहै अरु सूर्यको ऐसो प्रकाश रहै तिन प्रियव्रत रथ पर चढ़िकै पृथ्वी की परिक्रमा कीन तिनके रथके चाककी लीकते समुद्र होतभये सातबार सातरथपर चढ़िकै पृथ्वी मण्डल में फिरे तहां प्रथमको चाका जो रही तेहिको दून दूनसातौ रथ जानब ताते दून दून समुद्र होत भये अरु समुद्र के बीच बीच दून दून द्वीप होतभये पर यहसमुझि परतहै कि आगेहू समुद्र रहे हैं काहेते कि सातौ

समुद्र बिराट्के कुछ वेद कहते हैं अरु बिराट प्रथम हैं पछे प्रियब्रत हैं ताते प्रिय ब्रत के रथ चक्र कर संयोग है जैसे राजा सगर के पुत्रनका संयोग क्षीरसमुद्र में है भगवत् बिभूति कछु समुझि नहीं परै अपार है (४) पुनि राजा स्वायंभुव मनुको देवहूती नाम कन्या भई तहां कोई काल पाइकै राजा मनुने कर्दम मुनिको कन्या बिवाहि दीन (५) तिन देवहूती के जठरकही गर्भ बिषे आदिदेव भगवान् परम कृपालु कपिल देव जिनने सांख्य शास्त्र ज्ञानमें माताते बखानि कै कहा है ते प्रभु देवहूती जी की कुक्षि में अवतार लेत भये (६) जिन कपिलदेव ने सांख्यशास्त्रकी रचना कीनहै जिस ग्रन्थ के सुनने और पढ़ने ते आत्मा अनात्मा दोनों भिन्न भिन्न अनुभवकी दृष्टि बिषे देखि परै हैं आत्मा प्रत्यक्ष होतिहै तहां कपिल जी परम तत्त्ववेत्ता तत्त्वरूपहीहैंकैसे जानिये श्री भगवान् परम कृपालु हैं (७) तिन राजा मनु मन्वन्तर भरिराज्य कीन संपूर्णसृष्टिका पिता जो ब्रह्मा तिनकी सब आज्ञानुकूल राज्य कीन्ह्यो (८) ॥ सोरठार्थ ॥ तहां हे भरद्वाज महाराजाधिराज स्वायंभुवमनु यह अपने अंतःकरण बिषे बिचारकीन कि भवनमें बासकरते करते तीनि पन बीतगये चौथापन आइ प्राप्त भयो तब राजा आदर्श लैकै मुख देखत भये जब श्वेत बार देखे तब बिचार कीन कि तीन पन बृथा गये यहि मनको बिषयते वैराग्य न भयो धिक् है हरिके भजनबिना काल बृथा गयो १ ॥

१४२ बरबसराज्यसुतहिनृपदीन्हा । नारिसमेतगमनबनकीन्हा १
तीरथबरनैमिषबिख्याता । अतिपुनीतसाधकसिधिदाता २
बसहिंतहांमुनिसिद्धसमाजा । तहँहियहरषिचलेमनुराजा * ३
पंथजातसोहहिंमतिधीरा * । ज्ञानभक्तिजनुधरेशरीरा * ४
पहुंचेजाइधेनुमतितीरा * । हरषिनहानेनिर्मलनीरा * * ५
आयेमिलनसिद्धमुनिज्ञानी । धर्मधुरन्धरनृपऋषिजानी * ६
जहंतहंतीरथरहेसुहाये * * । मुनिनसकलसादरकरवाये ७
कृशशरीरमुनिपटपरिधाना । सतसमाजनितसुनहिंपुराना ८
० द्वादश अक्षर मंत्रबर जपहिं सहित अनुराग ॥
बासुदेव पद पंकरुह दम्पति मन अति लाग १

तब राजा ने बरबस तुरन्त उत्तानपाद अपने पुत्रको राज्यदैकै रानी संयुक्त आप बनको गमन कीन (१) तहां नैमिषारण्य तीर्थ वेदबिषे बिख्यातहै तहां ब्रह्मा के चक्रकोनैमिषकहो आरको ब्रह्माकी आज्ञाते सो चक्र ब्रह्माण्ड भरि फिरिआयो तेहि स्थान बिषे चक्र आकाश ते उतरेउ और पृथ्वी बिषे धँसिगयो कुण्डह्वैगयो को जानै कबभयो ताते नैमिषारण्य कही अतिपावन देश भूमिजानिकै मुनिन तहां बासकीन (२) नैमिषक्षेत्र कैसोहै जहां अनेक मुनिनकी समाज अरु सिद्धनकी समाज बासकीन्हे हैं मुनि कही मननशील अहर्निश श्रीरामतत्त्व को मननकही बिचारसयुक्त तत्त्वके

दिव्य गुण प्रताप ऐश्वर्य बल वीर्य्य करुणा दया कृपालुता इत्यादिक परम दिव्य अनन्त गुणतत्त्व बिषे समझतेहैं तिनको मुनिकह्यो पुनि सिद्धिनको भेद पूर्व यहि चौपाई बिषे कहि आयेहैं ॥ साधकनाम जपहिं लवलाये । होहिंसिद्ध अणिमादिक पाये ॥ तहांअष्ट सिद्धि भगवत् सम्बन्धीहैं अरु दशसिद्धि तीनिगुण सम्बन्धी हैं तहां बहुत मुनि तो केवल औरतत्त्वहीं को मनन करतेहैं तिनको मुनिकह्यो अरु बहुत मुनिरामतत्त्व को मननकरते हैं पर सिद्धिन को भी हस्तामलक कियेहैं ते मुनि सिद्ध नैमिषारण्यविषे बसतेहैं ते इमहा चेनको परम पुरुषहेतु संसारते तीव्रतम वैराग्य करिकै राजामनु अरु रानीशतरूपा द्वौ सत पदार्थकी मूर्तिहोहैं ते द्वैतप संयुक्त भजन करिबेको चलतेभये (३) भक्तिज्ञानको भेद पूर्व यहिदोहा बिषे कहिआयेहैं ॥ दोहा ॥ ब्रह्मनिरूपण धर्म विधि ॥ महाराज अरु महारानी पंथ बिषेचले जातेहैं जनुभक्ति अरुज्ञान द्वैमूर्तिमान् ह्वैकै परमेश्वर के मिलबेको चलेजातेहैं मनमें तौ अति आरतहैं अरु तपते अत्यन्तधैर्य्य वान्हैं सबप्रकार ते दंपति सदा सावधान हैं तहां यहसमुझि परै है कि बिना वैराग्य ज्ञान भक्ति कछु शोभानहीं पावैहै (४) तहां राजारानी अतिशोभा को पावत आइ कै गोमती को अतिनिर्मल नीरसो अतिहर्ष संयुक्त स्नान करतेभये (५) तहां राजाको धर्म धुरंधर विरक्तराजर्षि जानिकै समस्त सिद्धमुनि ज्ञानी मिलबेको आवतेभये (६) जहां जहां जो तीर्थरहै सो सब मुनिराजा को स्नान करवाते भये (७) राजा रानी को शरीरकृश ह्वैगयो है अरु प्रसन्न संयुक्त संतनकी सभाविषे वेद शास्त्र स्मृति पुराण सुनतेहैं (८) ॥ दोहार्थ ॥ अरु द्वादशाक्षर वासुदेव मंत्र वरकहे श्रेष्ठ सोअनुराग संयुक्त जपतेहैं अरु वासुदेवके चरण कमलबिषे दम्पतिको अनुराग अतिशय है वासुदेव मंत्र क्यों जपतभये तहां वासुदेव शब्द सबमत को बोध करैहै अद्वैतमत बिशिष्टा द्वैतमत द्वैतमतद्वैताद्वैतमत अरु उपासकन को मत ताते गोसाइँ श्रीतुलसी दासजीने कहा कि राजाने वासुदेव मंत्र जपेउहै तहां मंत्रजेहि स्वरूपको होतहै सोई स्वरूप जापक को प्राप्तहोत है तहां राजाने वासुदेव मंत्रजप्यो अरु स्वरूप द्विभुज किशोर अतिसुंदर धनुषबाण धरे ऐसो स्वरूप राजाको प्राप्तभयो ताते तिनहीं को परवासुदेव कह्यो अरु चतुर्व्यूह वासुदेव सो पर वासुदेव के आवरण बिषे है तथाच नारद पंचरात्रे ॥ वासुदेवादिमूर्तीनां चतुर्णांकारणंपरम् ॥ चतुर्विंशतिमूर्तीनामाश्रयश्शरणंमम १ कर्त्तासर्वस्य जगतोभर्त्तासर्वस्यसर्वगः ॥ संहर्त्ताकार्य्यजातस्यश्रीरामश्शरणंमम २ ताते जाको वासुदेव पुरुषवेद कहतेहैं सो द्विभजस्वरूप धनुर्द्धर किशोर मूर्त्ति परब्रह्म सोई अद्वैत स्वरूप सोई द्वैतस्वरूप सोई बिशिष्टाद्वैत स्वरूपसोई द्वैताद्वैत स्वरूप तिसी स्वरूप बिषे योगीजन संपूर्ण बाह्यांतर इन्द्रिन को जीतकै आत्मा की अखण्डवृत्ति परमात्मा बिषे एकता मानते हैं सोई ज्ञानी बिज्ञानी मानत हैं (श्री भगवद्गीतायां) सांख्य योगौपृथग्बालाःप्रवदंतिनपंडिताः १ पर जे श्रुतिस्मृति शास्त्र पुराण सत्संगति को सिद्धांत अच्छी तरह अनुभव किहे हैं तिनको सिद्धांत यहै स्वरूप है जो महाराज मनु रानी शतरूपा को प्राप्त भये हैं ताते वासुदेव मंत्र मनुने जपे हैं अरु श्रीतुलसीदास

सब मत श्रीरामचन्द्र विषे पर्य्यवसान हैं ताते सबको मत

हौ हैं तहां वासुदेव पर पुरुष जाको कह्यौ अरु ब्रह्मव्यापक आदि ज्योति जाको कह्यौ सो सब श्रीरामचन्द्रही को कह्यौ (श्लोक श्रीमन्महारामायणे) सर्वंवसतिदैयस्मिन् सर्वेऽस्मिन्वसतेपिवै ॥ तमाहुर्वासुदेवंच योगिनस्तत्त्वदर्शिनः १ (पुनःसनत्कुमारसंहितायां) नमोऽस्तुवासुदेवाय ज्योतिषांपतयेनमः ॥ नमोऽस्तुरामदेवायजगदानन्दरूपिणे २ कौशल्यानन्दनंरामं धनुर्बाणधरंहरिम् ॥ किंतु दम्पति श्रीराम षडक्षर मंत्र जपत भये तातें द्वौजनको मिलाइकै द्वादशाक्षर कह्यो दम्पति मन अतिलाग वर कह्यो सर्वोपरि मंत्रहै सो द्वौजन जपत भये तातें वा बिकल्प कहेहैं वाके आगे वासुदेव जो परमात्मा परब्रह्म श्रीराम तिनके पद बिषे अति अनुराग है (३) इत्यर्थः (१) ॥

। ब्रह्मसो॰ १

पुनिहरिहेतुकरनतपलागे * । बारिअहारमूलफलत्यागे २

उरअभिलाषनिरंतरहोई * * । देखियनयनपरमप्रभुसोई ३

अगुणअखण्डअनंतअनादी । जेहिंचिंतहिंपरमारथबादी ४

नेतिनेतिजेहिबेदनिरूपा * । चिदानंदनिरुपाधिअनूपा ५

* ।

ऐसेप्रभुसेवकबशअहहीं * * । भक्तहेतुलीलातनुगहहीं * ७

जोयहबचनसत्यश्रुतिभाषा । तौहमारपूजहिंअभिलाषा ८

दो० यहि बिधि बीते बर्ष षट सहस सुबारि अहार ॥

१

(टी॰) ते राजारानी तपकरने लगे शाकफल कन्द आहारकरहिं अरु सच्चिदानन्द ब्रह्म तिनको सुमिरण करहिं सत्कह्यो जो सर्वकाल बिषे एकरसहै जहां असत् पदार्थ लेशहू नहींहै सो सत्कह्यो पुनिचित चैतन्य स्वरूप अपनी सत्ताकरिकै जड़को चेतनकिहेहै वहसर्वजीव की गतिजानैहै उसकी गति कोई नहीं जानिसकैहै सबको नियंता सर्वतेभिन्नहै मनबचन कर्म अगोचरहै सोई चितहै आनन्दकह्यो जहां माया सम्बन्धदुःख सुखशेष लोक मृत्युलोक सत्यलोक पर्यंत ब्रह्माण्डके कटाक्षभरे को सुख तहां नहींसंभवैहै अरुजौने आनन्द समुद्रको एककण मात्र योगी ज्ञानी भक्त पायकै ब्रह्माण्डकी बिभूति त्यागिदेतेहैं ऐसो आनन्दहै जाको कोई नहीं जानिसकै सो आनन्दकह्यो ऐसो जो ब्रह्मसत् चित् आनन्दस्वरूप तिनको चिन्तवन करतेहैं (१) यहांहरि शब्द परतत्त्व जानब पुनः हरिहेतु तपस्या भक्तिमय तेहिको दूसरनेम करनेलगे बारिकह्यो जलकोआहार करनेलगे कन्दमूल फलशाक इनको त्यागकियो तहां तपस्याकी दूसरी भूमिका ग्रहणभई अरु जो प्रथम तपको कन्दमूलफल इत्यादिक खाइकै प्रारंभकीन है अरु तपकी प्रथम भूमिका समाप्तताई स्थूलशरीर जाग्रत अवस्था तिनको अभावभयो तपकी दूसरी भूमिका बि जल आहार कहेहैं तहां दूसरी श्रेणीबिषे प्रथम ते समाप्तताई लिंग शरीर स्वप्नअवस्था को प्रध्वंस भयो अरुजब तीसरी तपकी भूमिका बिषे पवन

आहार कहाहै तहां भूमिकाकी आदिअन्त पर्य्यन्त लगि राजारानी के विरह संयुक्त प्रेमकी वृद्धिहोती जातीहै तब भूमिका समाप्तभये कारण शरीर सुषुप्ति अवस्था पवन को आधार जो रह्यो सो सबक्रमहीते आत्माते त्याग भयो पुनिजब तपकी चतुर्थ अव-स्थाविषे आरूढ़भये जहां कहा कि ठाढ़ेरहे एकपगदोऊ ॥ तहां दंपति एक पगठाढ़ेतप स्या करनेलगे किन्तु एकपगको अर्थ जहांलगि प्रकृतिके सम्बन्ध द्वैतभाव [illegible] अना-दिहीते रहे सो सबनाशको प्राप्तभये केवल शुद्ध स्वरूप परम[illegible] [illegible] [illegible]-यावस्था ब्रह्मानन्द भोग अखण्ड पराभक्तिकी अखण्डदशा [illegible] [illegible] चौथीभूमिका के अन्तविषे परमात्मा परब्रह्म और [illegible] [illegible] (२) राजारानी के [illegible]करण मध्यआत्मा विषे निरन्तर कही आगे अन्तर न परै तैलवद्धार अखण्ड अनुराग [illegible]भयो कि परमप्रभु जो है जाके पर पुनि [illegible] नहीं है ऐसे परम पुरुषको नेत्रभरि [illegible] (३) (श्लोक:पद्मपुराणे[illegible]) रामान्नास्तिपरोदेवो रामान्नास्तिपरंव्रतम् ॥ नहिरामात्परो[illegible] १ (भरद्वाजसंहितायां) एकंचापिपरंसमस्तजगतांज्योतिर्मयंकारणंप्रागन्तेचविकारशून्यमगुणं निर्गम्यरूपंचयत् ॥ तच्छ्रीरामपदारविन्दनखरप्रांतस्यतेजोऽमलं प्रध्योवेदविदोवदन्तिपर मंतत्त्वंपरंनास्त्यत: २ जो प्रभुनिर्गुण तीनिगुणकेपरेहैं अरु अखण्ड एकरसहैं अरु अनन्त कही जाको आदिअन्तमध्य श्रुतिस्मृति शास्त्रपुराण सिद्धमुनि इत्यादिक संपूर्ण कोई नहीं जानिसकैहैं तेहिपुरुषको परमार्थवादी चिन्तवनकरतेहैं परमार्थवादी कही ब्रह्मवादी आ-त्मारामजेहैं शुकसनकादिक नारद इत्यादिकपरम अर्थ जो परमेश्वरतेहिके अर्थीहैं (४) जेहि परम पुरुषको वेदनेतिनेति करिकै निरूपण करतेहैं कैसोहै वह परब्रह्म सच्चिदानन्द है निरुपाधिहै अनूपहै निरुपाधि कहीआद्याशक्तिसे लैके अरु तीनिगुण पांचतत्त्वपर्य्यन्त ताको उपाधिकहीपुनिरावसन करिकै महिदेव गऊब्राह्मणको पीड़ा ताकोउपाधिकहीतिन समस्त उपाधि को जेह पुरुष विषे प्रयोजनै नहीं है सर्बोपाधि रहित अनूप जेहि को उपमा को कोई नहीं है (५) पुनिजेहि परम पुरुष के अंशते अनेकन शम्भु बिरञ्चि बिष्णु भगवान् जोहैं सो उत्पन्न होतेहैं सो पुरुष हमको प्राप्त होहिं (श्रीमन्महारामा यणे शिववाक्यं पार्वतीम्प्रति श्लोक ३) यस्यांशेनसमुद्भूता ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा: ॥ नानाकृतिधराशुद्धा:स्सर्वेध्यायन्तितंसदा १ (स्कन्दे) ब्रह्माविष्णुमहेशाद्यायस्यांशेलोकसा धका: ॥ तमादिदेवंश्रीरामंविशुद्धं परमंभजे२ (सदाशिवसंहितायांसौमित्रिवाक्यंवेदान्प्रति) विष्णुकोटिप्रतीपालं ब्रह्मकोटिविसर्जनम् ॥ रुद्रकोटिप्रमर्दंवै मात्रकोटिविनाशनम् (६) ऐसे जो प्रभु हैं सो सेवकके बश हैं अपने भक्तनके हेतु लीलातनु ग्रहण करते हैं लीलातनु कही अपने तनु विषे लीला ग्रहण करते हैं किन्तु लीला जोहै ताही को तनुकही सो लीला परम दिव्य ग्रहण करते हैं बाललीला बिवाह लीला बन लीला रण लीला राज्य लीला इत्यादिक लीलाबिग्रह मानुहैं (७)वशिष्ठसंहितायां) रामस्यनामरूपंचलीलाधामपरा त्परम् ॥ एतच्चतुष्टयंनित्यं सच्चिदानन्दविग्रहम् १ जो यह बचन सत्य करिकै बेद भाषते हैं कि परमात्मा परब्रह्म अति दुर्गम है योगेश्वरन को मुनीश्वरन को परम हंसन को

जे प्रभु हैं ते अपने सेवकनके बशहैं जो यह बेदबाक्य सत्यहै तो हमारी अभिलाष

पूर्ण करहिंगे (८) दोहार्थ ॥ प्रथम तपकी भूमिका कन्दमूल फल खायकै पांच हज़ार वर्ष बीते पांचौतत्त्व विषे स्थूल शरीर संयुक्त जीति लीयो है पुनि यहि प्रकार ते राजा रानी परम अभिलाष संयुक्त षट् हज़ार वर्ष बारि अहार कीन्हेनि है तब षट् बिकार जो हैं काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य्य पुनि षटजन्म वृद्धि विवर्ण क्षीण जरा मरण पुनि षट ऊर्मी क्षुधा तृषा शीत उष्ण हर्ष शोक इत्यादिक षट् विकार लिंग शरीर संयुक्त जीति लियो है पुनि सात हज़ार बर्षलगि पवनके आधार रहे हैं तब सप्तधातु रक्त मांस मेद मज्जा अस्थि बसा काम सप्तधातु कारण शरीर संयुक्त त के प.र भये (१)

* ।

विधिहरि । मनुसमीपआयबहु * २

भांतिर ऐ हैं ए * ३

स्थिमात्रहोइरह्योशरीरा । पमनागपिनहिं

। ।७ *

।

गरासुहाई । अबगारब्रह्मबैउरजबआई ७

। ।बा * ८

दो० अबगाहुधासम बचनसुनि प्रेमप्रफुल्लित गात ॥

।कोर

पुनि पवन को त्याग करिकै दश हज़ार बर्ष ताईं निराधार एकपग राजा रानी ठाढ़ेरहे परम पुरुष विषे अखण्ड तैलवद्धार आत्मा की वृत्ति लागिरही है तब दश इन्द्री सम्बन्ध स्थूल सूक्ष्म कारण बासना भीनी प्रध्वंस ह्वै गईहै तहां तुरीया वस्था अति शुद्ध समाधिस्थ ह्वै रहे हैं (१) राजा रानीकी अपार जाको पार नहीं है ऐसी तपस्या परब्रह्म मय त्यहि तप को तेज सत्य लोक शिव लोक विष्णु लोक रमा वैकुण्ठ लगि प्राप्त भयो तब विष्णु भगवान् ब्रह्मा शिव अपार तप देखिकै मनुमहाराज के समीप पृथक् पृथक् अनेक अनेक बार आये पुनि मिलि कै बहुबार आये ब्रह्मा हंसपर चढ़े महादेव नन्दीपर आरूढ़ अरु गरुड़ पर आरूढ़ विष्णुने सत्कन संयुक्त यह कहा कि बर मांगो बरमांगो बरमांगो(२) हेराजन् हमबहुत प्रसन्नहैं तुम जोई बर मांगोगे सोई हम देहिंगे तहांपरमधीर राजा की निर्बिकल्प समाधि अचल लगि रहीहैसोनहींचलो काहेते कि परमात्माबिषे राजाकी गुणातीत वृत्ति समाधि लगी है अरु तामस राजस सात्विक गुणकी सूक्ष्म सुगन्धि लिहे तीनिहू ईश्वरन की वाणी समुझि परतीहै तातेराजा की सोवाणी नहीं सुनि परीहै (३) तहां राजा का अस्थिमात्र शरीर ह्वै रह्यो है ऐसी दशा ह्वै गईहै तदपि मन विषे तपकी पीड़ा को आगमन सो लेशहू नहीं है काहे ते कि जहांजाकी एक रस अखण्ड वृत्ति लगिरही है ताको तहांईं की सुधिरहती है (श्री) मनतहँजहँरघुबर वैदेही । बिनमनतन दुखसुखसुधिकेही ॥ सहां राजा

रानी परमानन्द विषे पूर्ण हैं (४) जो सबके प्रभु सर्वज्ञ परब्रह्म हैं तिनमें अपने निज दास जाने राजारानी परमानन्य अपने विषे अनन्य कही अपने बाह्यांतर ते शरीर शुद्ध जगत् को अभाव अरु सर्व कर्म धर्म अरु ब्रह्मा दिक देवतन ते अरु अनेक मंत्रादिकन ते वासना शून्य परमात्मा जो श्री रामचन्द्रजी तिनके नाम स्वरूप विषे बाह्यान्तर अनुराग अखण्ड वृत्ति लगीहै सो अनन्य (५) राजा रानी के प्रेमापराभक्ति के वश ह्वैकै ताते मांगु मांगु बर बर यह बाणीभई तहां परमेश्वर का एकही वचन संकल्प विषे स्वार्थ परमार्थ सर्व सिद्धि होतेहैं तहां बार बार कहेते अति कृपा व ल्सल्य रस पूर्णहोते हैं पुनि धुनिकही जामें अन्तर नहीं परै ऐसी बाणी नभविषे परम गम्भीर कृपा अमृत मयःयहिते स.नो होत भई (६) मृतक जियावनी बाणी संजीवनी परमअमृत मय परमानन्दस्वरूप जबहृदय विषे प्राप्त भई (७) तबतनु जे कृश ह्वैरह्यो है सो हृष्टकही उत्तम काल तेही समय विषे तनु पुष्ट भयो किन्तु हृष्ट पुष्ट एकही शब्द है हृष्ट पुष्ट तनुहोत भयो किन्तु हृष्ट कही आरोग्य परम दिव्य तनु अति शोभितभयो किन्तु हृष्ट पुष्ट संतुष्ट पुष्ट मानों पद जो कहाहै सो उत्प्रेक्षा अलंकार है मानों अबहीं भवनते तुरन्त आये हैं तहां राजारानी की ज्यहि पुरुष विषे निर्विकल्प समाधि रही अरु तेहि पुरुष की बाणीभई कि बरमांगु बारबार धुनिभई तब परम पुरुषकी इच्छाते अक्षरकी उपेक्षा ते निर्विकल्प समाधि जो रही सो परमात्माकी बाणीके संगही राजा रानी की एक रस अखण्डवृत्ति सो हृदय कमल बिषे प्राप्त भई तब सविकल्प समाधि विषे वृत्ति आयगई तब आनन्द संयुक्त समाधि शांतिको प्राप्तभई पर शरीर दुबरे मोटेको भान नहीं रह्यो मनों अबहींते चले अ.वते हैं (८) दोहार्थ ॥ परब्रह्म बाणी परम कृपामृत मय श्रवण बिष प्रवेश करिकै अन्तःकरणमें प्राप्त होत सन्ते हृदयते प्रेम उमँगत भयो तब अंगअंग रोम रोम प्रेम भरिकै प्रफुल्लित ह्वैकै महाराजा रानी साष्टांग दण्डवत् करिकै दोऊ कर जोरिकै परमानन्द संयुक्त बोलतेभये हर्ष हृदयमें नहीं समाय ऊपर उमँगि चल्योहै (९) ॥

सुनुसेवकसुरतरुसुरधेनू * । बिधिहरिहरबंदितपदरेनू १

२

जोअनाथहितहमपरनेहू * । तौप्रसन्नह्वैयहबरदेहू * ३

नियतनकरा

इमनमानसह सा । मधुराअधुरातीहो

देखहिंहमसोरूपभरिलोचन । कृपाकरहुप्रनतारतिमोचन

दम्पतिबचनपरमप्रियलागे । मृदुलबिनीतप्रेमरसपागे * ७

भक्तबछलप्रभुकृपानिधाना । विश्वबासप्रकटेभगवाना ८

दो० नील सरोरुह नीलमणि नील नीरधर श्याम ॥

रविकोटिकोटिशतकाम १

महाराज मनु बोलत भये हे परम प्रभु सुनु तुम अपने सेवकनके सुरतरु सुर धेनु सरिसहो तहां सुनु ऐसा पद जो कहा यह समर्प वाक्य क्यों कहा तहां त्वं तू तैं ते रे सुनु गुनु जानु मांगु ले दे कहु गहु लहु इत्यादिक समर्प पद हैं पर एते स्थान बिषे शोभित हैं रण दान भय स्त्री सुत सेवक याचक कवि बिषे उचित हैं अरु अपने प्रभु स्वामी की स्तुति बिषे गुणकार्य्य बिषे अरु प्रीति बिषे अरत इत्यादिक प्रभु स्वामी बिषे तू तैं सुनु रे इत्यादिक अति प्रीतिको उपजावने हैं तहां राजा रानी की स्तुति आरत प्रीति संयुक्त है ताते सुनु कहाहै (अन्यश्वश्लोकः १) बाल्येसुतानांसुरतेङ्गनानांस्तुतौकवीनांसमरेभटानाम् ॥ सदागुरूणामतियाचकानांत्वंकारयुक्ताःहि गिराप्रशस्ता१ तहां सुरतरु अरु सुरधेनु कहा तहां सर्व कामनाको एकही पूर्ण करै है दुइ क्यों कहा तहां राजा अपनो वाक्य बिषे अपनो अरु रानी को भावना संकेत संयुक्त परमेश्वर ते जनाइ दियो है कि मोको तुम परम दिव्य कल्पतरु रूप हो अरु रानी को परम दिव्य कामधेनु रूपहो तहां राजाकी बाणी बिषे यह आशय है कि परम पुरुष जो तुम हो अरु परमानन्द स्वरूप परमदिव्य शक्ति ज्योतिन संयुक्त हमको दर्शन देव पर स्वाहि परमपुरुष के चरणारबिन्दकी रेणु जोहै त्यहिकी बन्दना ब्रह्मा अरु बिष्णु अरु शक्ति संयुक्त करत हैं सदा बन्दते हैं (श्लोक १ वाशिष्ठ संहितायां) जयम ल्याद्यसेव्यायावतारोद्भवकारणं ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशादिसंसेव्यचरणांबुज १ सो परमपुरुष ऐसो स्वरूप अखण्ड नित्य एकरस होइ सोई साचात् स्वरूप हमको दर्शन होइ यह भरा बाणी राजा बोलते भये (१) पुनि हे गरुड़ महाराज मनु यह कहते भये हे प्रभु तुम्हारो सेवा करत संते तुम सुलभ हो सुलभ कहो सहज में प्राप्त होते हो काहे ते कृपालुही किंतु तुम्हारो सेवा अति सुलभहै तुमको सेवत संते कौनौ साधन क्लेशनहीं है जप तप यज्ञ दान तीर्थ ब्रत योग बैराग्य ज्ञान इत्यादिक एकहू नहीं हैं केवल प्रेम तुम्हारे चरणारविन्द बिषे चाहो केवल प्रेम काको कहो श्रीपरमेश्वर परब्रह्म के स्वरूपकी नख शिख लौं शोभा छबि सुधा सिन्धु महामद ताको पान किहे सदा मत्त हूँ रहेहैं जैसे मदांध कभी रोय उठै कभी गाय उठै कभी हँसि देइहैं तहां दुःख सुख पाप पुण्य हानि लाभ मित्र अरि स्वर्ग नरक कंचन टेम मानापमान चारि बासना अर्थ धर्म काम मोक्ष इत्यादिक जहां एकहू नहीं संभवै है परम पुरुष के स्वरूप की छबिमें छके रहते हैं ताको केवल प्रेमकहो त्यहि प्रेम के आप बशहो अरु मेरे ऐसो कौन प्रेम भयो जो मो हिंपर इतनी कृपा कीनहै अरु तपादिक कर्मन ते आपु दुर्ल्लभहो ताते आप निर्हेतुक कृपालुहो ताते तुम्हारी कृपा बिना तुम्हारी सेवा नहीं बनि परै है अरु तुम सब प्रकारते सर्वजीवनको केवल सुखदाता हो प्रणत जो तुम्हारी शरण है त्यहिको पालन केवल आपही करते हो यद्यपि आप चराचर के नायक अरु सबको यथा योग्य पालन करतेहो तदपि जो कोइ सर्व धर्मको परित्यागिकै सर्बोपाय शून्यह्वैकै केवल एक तुम्हारी गतिहै त्यहिको संचित क्रियमाण अरु प्रारब्ध अरु काल कर्मगुण स्वभाव इत्यादिक सबनाश करिकै केवल अपनो करिकै पालतेहो ऐसे तुम कृपालु हो (२) (श्लोकार्द्ध श्रीभगवद्गीतायां) सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज॥ हेनाथ हित

अनाथ कही जे दीनहैं जिनको आदर संसारमें कोई नहीं करै यहां यही आरत जानब अरु अनाथ कही ब्रह्माण्ड विषे जो देव दानव मनुष्य सिद्ध इत्यादिक अरु शुभाशुभ धर्म कर्म तीर्थ ब्रत इत्यादिक जेहैं तिन सबके जे नाथ कहे प्रभुहैं तिन सबनक आश्रय कहूं लेशहू नहीं है जिनके एक परम पुरुष जो तुम हौ तिनहीं के प्रपन्न हैं पुनि अनाथ कही जिनके नाथ नहीं हैं जैसे बृषभ नाथेते बश ह्वै जात है यहां नाथ कही मोह को ताते मोह नाथ जोहै त्यहि करिकै जेते जीव ब्रह्मांड विषेहैं सब नाये हैं अरु जिन पुरुषन मोह रूपनाथ तोरि डारी है तिनको अनाथ कही ऐसे अनाथन के आप नाथ हितरूपही ताते तुम्हारो जो अनाथ नाम बेदन बिषे सुन्यों रहै सो मैं आपु ते प्रत्यक्ष देख्यो काहेते कि अखिल ब्रह्मांड कार्य है अरु महा माया कारण है अरु महा बिष्णु महाकारण हैं अरु हे परम प्रभु तुम सबके पर उपकारण हौ आपुतौ ऐसेही अरु मैं ऐसो हौं कि तुम्हारी शरण बिना तीनिपन बृथा बीति गये बिषय बिषे ताहू पर आप एती कृपा कीन कि कहतेही जो बरमांगहु सो मैं देउंगो जो एती कृपाहै तौ हे कृपालु मोको प्रसन्न ह्वैकै यह बरदान दीजिये (३) हे भरद्वाज परम पुरुष ते राजा मनु बर मांगते हैं हे परम प्रभु जो हमारे ऊपर आप प्रसन्न ह्वैकै बर देते हौ तौ यह बरदान देहु काहेते हम तुम्हारो निजस्वरूप नहीं जानते धौं तुम्हारो स्वरूप एकरस सनातन अखण्ड है ताते जो स्वरूप शिवजूके अन्तष्करण बिष सदा बसै है सोई स्वरूप जैसोहोइ सो ज्योंको त्यों हमको दर्शनहोइ तहां महादेवकी साखी क्यों दियो है याते दियोहै कि परात्परतम परमतत्त्व स्वरूप महादेव यथार्थ जानते हैं काहे ते कि शिव जी साक्षात् ईश्वर हैं अरु उत्तम कर्मकाण्डनबिषे महा ऋषीश्वर हैं अरु मुनिन में मुनीश्वरहैं अरु योगिन में योगेश्वर हैं अरु बिरक्तन में विरक्तेश्वर हैं अरु ज्ञानी बिज्ञानी बिषे बिज्ञानीश हैं अरु ध्यानी समाधिन बिषे समाधीश हैं अरु वैष्णवन बिषे भक्तराज हैं सब प्रकारते शिवजू सर्वोपरि हैं ताते महाराज मनुने यहकहा कि जो स्वरूप शिवजूको सिद्धान्त होइ सोई सर्वोपरि परमतत्त्व है वही स्वरूप जैसो होइ तैसाही दर्शन हमको होइँ अरु जेहि परम ततत्व की प्राप्ति हेतु मुनि जे हैं मनन शीलते अनेक यत्न करतेहैं सम्पूर्ण बाह्य इन्द्रिन को विषय तिनको दमन करते हैं अरु चतुष्टय अन्तष्करणको सम करते हैं अरु अनेक सुख दुःख निन्दा स्तुति मानापमान हर्ष शोक हानि लाभ इत्यादिक सबको सहिकै त्याग करते हैं अरु त्रैगुण्य जनित बिभूतिते वैराग्य करते हैं अरु सारासारको अहर्निश बिचार करतेहैं गुरुजेहैं परम तत्त्ववेत्ता ते वेदकी बिशेषबाक्य बिषे प्रतीति करते हैं अरु अनेक द्वन्द धर्म प्राप्त होत सन्ते परमतत्त्व बिषे समाधान रहते हैं ऐसेही जेहि परम स्वरूपकी प्राप्तिहेतु अनेक जप तप ध्यान समाधि करतेहैं सोई स्वरूप जैसो होइ तैसो ज्योंको त्यों हमको दर्शन होइँ (४) पुनि हे परम प्रभु तुम्हारा जो निजस्वरूप कागभुशुण्ड के मनमानसरमें जैसो बसत होइ तैसो हमको प्राप्त होइ कागभुशुण्डकी साखी क्यों दियोहै यहि संसारमें स्वर्ग नरक उत्पत्ति पालन प्रलय तीनगुण इत्यादिक सब अबिद्यामय जानब सो कागभुशुण्ड के स्थान बिषे योजन पर्यन्त अबिद्या नहीं है

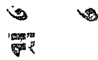
अरु भुशुण्डके स्वरूपकी निर्मलता काकहीं काहेते महाप्रलयहु बिषे जाको नाशनहीं है अरु परमपुरुष परमात्मा जो है सो निज स्वरूप निर्विकार निर्मल एकरस सो ऐसे ही स्थान स्वरूपविषे बास करते हैं ताते भुशुण्ड को प्रमाण दीन है काहे ते कि जो परात्परतर स्वरूप ततत्व वेदान्त को सारभूत सोई भुशुण्डको सिद्धान्त होइगो ताते सोई स्वरूप जैसो होइ तैसोही हमको दर्शन होइँ पुनि तेहि स्वरूप को वेद सगुण ब्रह्म अरु निर्गुण ब्रह्म एकही स्वरूपको दूनों बिशेषण करिकै प्रशंसा करते हैं एक ही स्वरूप बिषे सगुण निर्गुण ब्रह्म कैसे सम्भवै है तहां परमदिय गुण जेहि स्वरूप बिषे युक्तहै सौशील्य बात्सल्य कृपा करुणा दयालुता उदारता इत्यादिक ब्रह्ममें अनन्त गुणहैं ताते वेद सगुण कहते हैं अरु मायाके जेते गुणहैं सात्विक राजस तामस इत्यादिक सबते रहित स्वरूपहै ताते वेद निर्गुण ब्रह्मकहैहैं ऐसो स्वरूप जैसो होइ सो हम देखैं पुनि दूसरा अर्थ अथवा सगुणस्वरूप ईश्वर बिष्णु भगवान् महाविष्णुभगवान् बिराट भगवान् महाबिराट भगवान् अरु चेतन निर्गुण ब्रह्म अरु चेतन को चेतन कर्ता परब्रह्म अरु चारिहूबेद अरु वेदको शिरोभाग उपनिषद जो है एते समस्त जेहि स्वरूपकी प्रशंसा करते हैं सो स्वरूप हमदेखें यहवर देहु (५) वासुदेवादिमूर्त्तीनां चतुर्णांकरणंपरम् ॥ चतुर्विंशतिमूर्त्तीनामाश्रयंशरणंमम १ उदरंब्रह्मेतिशार्कराक्ष्या उपासते हृदयब्रह्मेत्यारुण्यःस्वरूपेण पापब्रह्मादैवतादि इतिश्रुतेः अतएवकेवलंशून्याच्छून्यतरंशून्यं सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरंसूक्ष्मं व्यापकातव्यापकतरंव्यापकं प्रकाशात्प्रकाशतरंप्रकाशंज्ञानात् ज्ञानतरं ज्ञानं नित्यानित्यतरंनित्यं ध्येयाद्ध्येयतरंध्येयं इश्वरादीश्वरपरं ईश्वरं ततत्वततत्वपरंततत्व स्थूलात्स्थूलपरंस्थूलं अनन्दादानंदपरं आनन्दंसुखात्सुखपरंसुखं चैतन्याच्चैतन्यपर चैतन्यं रूपाद्रूपपरंरूपं ज्योतिषोज्योतिपरंज्योतिः ज्योत्स्नायाज्योत्स्नापरंज्योत्स्नासमस्तं प्रमुच्यते इतश्रुतिः जैसो अर्थ यहि श्रुति बिषे सिद्धान्त है सो यही स्वरूप है जो महाराज मनु को दर्शदीनहै अपर अर्थ कल्पन मात्र है हे परमप्रभु सर्वोपरि परात्परतर मय जेहिके परे पुनि दूसर स्वरूप न होइ जो शिव भुशुण्ड मुनीश्वर वेदान्त इन सबनको परम सिद्धान्त जैसो स्वरूप होइ तैसही स्वरूप ज्योंको त्यों हम नयनभरि देखहिं अपर हम कछू जानते नहीं हैं सो कृपा हमारेऊपर करहु काहेते आप प्रणतकही जो तुम्हारे केवल शरणहैं अरु तुम्हार जे आर्त हैं तिनकी आर्ति तुम मिटाइकै पूर्ण करते हौ (६) दम्पतिको बचन परमप्रिय अति मृदुलकही आरत प्रपन्न बिनीत कही जामें अनेकन अर्थ नीतिमय हैं अरु परमप्रेममय ऐसी बाणी दम्पतिकी परम पुरुष सुनिकै परम प्रसन्न होतभये (७) परमप्रभु कैसे हैं भक्तवात्सल्य कही जैसे धेनु गऊ अपने बालक बछराको जीभते चाटिकै निर्मल करि देतुहै तैसे प्रभु जोहैं ते अपने भक्तनको कृपारूप जीभतेचाटिकै निर्मल करि देते हैं काहेतेकृपाके निधान कहे स्थानहैं विश्ववासकहेसंपूर्ण बिश्वबिषे अंतर्यामीघनन्तेज गुणभूतएकरस अथवा विश्ववास प्रकटे संपूर्ण विश्वकेनाथ ―――― व्याप्तविश्वके परे ते परमप्रभु महाराज मनुके परा प्रेमके वश ह्वैकै विश्वबिषे जीवन के कल्याण हेतु परम बिचित्र लीला करिबेहेतु परमपुरुष विश्वबिषे प्रकटे प्रत्यक्ष भये बास कोन

हेप वेतो (८) दोहार्थ ॥ हे भरद्वाज महाराज रानीके समीप परम पुरुष साक्षात्‌अव-
तीर्ण होतभये कैसोस्वरूप है अखण्ड एकरस नि य किशोर प्राप्त भये हैं नील कमल
नीलमणि नीलघन न्हद्वत् श्याम शरीरहै कंजमणि मेघ तीनको उपमा क्यों दियोहै एक
ही नीलाविप बोध होतहै यह दोहा विषे उपमा न तौ कहूं है अरु उपमेय लुप्तालं-
कार कहेहैं अरु कंजमणि घन इनको धर्म लुप्त करिकै कहे हैं तहां जहां लुप्तालंकार
करिकै कहेहैं वहां उपमान कौ धर्म लैकै उपमेय विषे लक्षणा करिकै कहत हैं तहां
नील धर्मतो तीनहूं को लियोहै अरु कंज विषे चारि धर्म लिये हैं कोमल सुगन्ध म
करन्द केशरयुक्त शोभा तहां परम पुरुषको विग्रह ऐसो कोमल सुगन्ध मकरन्द शोभा
मय विग्रह है अरु नीलमणि सचिक्कण निर्मल आवरण रहित प्रकाशमय अमोल अ-
लोम ऐसो स्वरूपहै पुनि नीलमेघ की गम्भीरता अनेक तड़ित संयुक्त अधिकरस उदा-
रतामय ऐसे अनेक परम दिव्य धर्मको उपमाके योग्यतनुहै पुनि कोटिनकाम अंग अंग
प्रति जिनकी सुन्दरता पर निछावरिकरिदीजिये कोटिन काम क्यों कहे एकहीकामकी
शोभा विषे बोध क्योंनहीं कियो तहां दृष्टान्त जैसे एक मणि को प्रकाश जानिये अरु
जहां कोटिन मणिकी एकता करिये तहां केती प्रकाशकी शोभा होतीहै तातेकोटिन
कामको अंग अंग उपमा लघुलगै है कहेते जब परम पुरुष अवतीर्णभयेहैं तब ब्रह्मा
ण्ड मण्डल प्रकाशित भयोहै ऐसौ परमस्वरूप प्राप्त भये हैं (श्लोक ३) रामंस न्द्रघ
न रूपममलंसच्चिद्घनानंदकं विद्युद्दिव्यदुकूलपीतयुगलंश्रीदामवक्षस्थलं ॥ मंजीरांगद
रत्नकंकणरणत्कांचीलस मुद्रिकं मुक्ताहारकिरीटकुण्डलधनुस्संचित्रबाणोज्ज्वलम् १ का-
श्मीरीतिलकालकावृतमुखंसाचीक्षणंसस्मितं तांबूलाधरपल्लवंरसमयंनासाग्रमुक्ताफलं ॥ ध्या
येच्छत्रसुदिव्यचामरयुतंसत्केतरत्नासने जानवयंशभुजंसखीगणवृतंनित्यंनिकुंजेस्थितं २
परिपूर्णगुणोदेवोधीरोदात्तगुणोहरः ॥ नटवर्यवपुश्शोभा कोटिकंदर्पसुन्दरः (१) इतिश्री
रामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलवैराग्यबालकांडे महाराजरानीपरमत्याग
तपवैराग्यज्ञानपराभक्तिपरमपुरुषप्राप्तिदर्शनंनामपंचविंशतिस्तरंगः ॥ २५ ॥

दो० बीसै षष्ठ तरंगमें रामचरण हिय धारि ॥
द पति सुरपुर वासभणि पूर्व अर्थ निर्धारि २६

१४६ शारदमयंकवदनछबिसीवा । चारुकपोलचिबुकदरग्रीवा १
अधरअरुणरदसुंदरिनासा । विधुकरनिकरविनिन्दकहासा २
नवअंबुजअंबकछबिनीकी । चितवनिललितभावतीजीकी ३
भृकुटिमनोजचापछबिहारी । तिलकललाटपटलद्युतिकारी ४
कुण्डलमकरमुकुटशिरभ्राजा । कुटिलकेशजनुमधुपसमाजा ५
उरश्रीवत्सरुचिरवनमाला । पदिकहारभूषणमणिजाला ६
केहरिकन्धरचारुजनेऊ * । बाहुविभूषणसुन्दरतेऊ * * ७

कोदंडा * ८



१४६ भ्रा दकऋतुकी पूर्णमासी को निर्मलमयंक ऐसो बदनहै यहां बाचकधर्म लुप्तालंकार है मयंक बिषे श्वेतता गुणहै प्रकाशस्वभाव है शीतक्रिया है श्रीरामचन्द्र जूको मुख अतिनिर्मल सो गुणहै अति मधुर प्रकाश स्वभाव है अति मधुर मन्द मुसुकानि सो क्रियाहै ऐसो मुखछबि की सींव कहो मर्य्याद है चारु अति सुन्दर निर्मल आदर्शवत कपोलहैं चिबुक जो ठोढ़ी है सो नीलगोल मणिइव है चिबुक के मध्य में पात   है सो शृंगाररस को शृंगार है पुनि जनु शृंगार रस बिषे बात्सल्य रस शोभित है दर कहो शंख को ऐसी ग्रीवा बिषे तीनि रेखा हैं शंखकी रेखा गहिर गम्भीर रसचिक्कण निर्मल मंगलमय ग्रीव त्रय रेख संयुक्त शोभित है जनु छबिशोभा सुन्दरताकी शृंगारकी मूर्त्ति बिषे त्रिलोकहै (१) अधर अरुण हैं जैसे कुंदुरू को पक्क फल अरु बन्धूक पुष्पहै अरु दशन श्वेत अरु कछुक अरुणाई लिहेहैं जनु बिधुके कोष बिषे लघु बजनको अवली बैठीहैं अरु जनु पक्क दाड़िम के बीज शोभित हैं अरु नासिकाजनु शुकश्याम अरु तल अरुण चोंच है जन प्रफुल्लित अरुण कंज तेहि के दलनपर चन्द्रमाके अमृतको बिन्दु हलतहै ताको शुक चुनते हैं चपलते पावत नहीं हैं यह उपमानको उपमा नासिका मोती अधर को है पुनि हास्य जो प्रसन्नता मंद मंद मुसकानि सो बिधु जोहै तेहिकी किरणि जो अमृतमय तेहिको हास्य निन्दा करतु है अरु रसनाको उपमा अभूत है जनु परस्पर दोबज्जनके भूषण तड़ित ते पोहिकै शृंगार करिकै अरुण कंजके कोश दलपर बैठिके जीव बालक को लाड़ करिकै खेलावत है नित्य मधुर जब बोलते हैं तबको उपमा है मुख रसना दशन नासिका की मोती अरु अधर को बर्णन जानब तहां चौपाइन बिषे रसना अरु मोती को प्रसिद्ध बर्णन नहीं है पर यहि चौपाई की धुनि बिषे रसना अरु मोतीं को शोभा सूचित होती है चौपाई ॥ बिधुकर निकर बिनिन्दक हासा ॥ हास कहो हास्य प्रसन्नता प्रफुल्लित प्रकाश मुसुकानि है सब शोभाको सुन्दरता तहां मध्य किशोर सुन्दर बालक की नासिका बिषे मोती अति शोभा देतु है ताते चौपाई के संकेत बिषे रसना अरु मोती को शोभा श्रीगोसाईं तुलसीदासने कहा है किंतु यहि श्लोकके आशय करिकै हमने रसना मोती कहे हैं श्लोक ॥ काश्मीरी तिलकालकावृतमुखंसाचीक्षणांसस्मितं ॥ ताम्बूलाधरपल्लवंरसमयंनासाग्र मुक्ताफलम् १ किंतु रसना मोतीकाबिर संकको रुचिहै (२) नवीन अंबुज जो प्रथमबिकस्यो तद्वत् नेत्रहैं कमलको उन्नता चढ़ाउ उतार अरुणता निर्मलता कोमलता सुगन्धता शीतलता मकरंदलालित सुन्दरता शोभादिक सर्व समयनेत्रहैं क्रमालंकार ते अर्थ जानब विशाल कृपाऽवलोकन सुन्दरवात्सल्य रसमयहै चितवनि कामक्रोध लोभादिकनको नाश करैहै अरु दासरसमें कोईको पक्षनहींहै बाह्यांतर सबदेखतेहैं चितवनिदयासिंधु है करुणा उदार अवलोकनिहै चितवनिअमृतमय त्रयतापहरकटाक्ष शृंगाररसमय मुनीशनकेचित्ता-

कर्षण करतु है छटा जो है गढ़नि प्रमदता प्रकाश तेजमाधुर्य मय है कञ्ज खञ्ज झष अनंग समस्त उपमा लघु है अञ्जक की छबि अति नीकी है अरु चितवनि की लालित्य जीव को भावै है अरु इन्द्री मन बुद्धि चित्त करिकै अगोचर है अरु राजा रानी की दृष्टि वाह्यांतर परम दिव्य है तहां नेत्र की छबि की उपमा कविकी मतिको अगोचर है (३) भृकुटी कैसी हैं मनोज को धनुष तेहिकी छबिको हरतु हैं अरु ललाट विषे केशरि को तिलक है सो पटल जो दामिनी तेहिकी युगरेख तेहिकी शोभा को करतु है किन्तु तेहिकी शोभा को मन्द करतु है तिलककी रेखा जनु मदन के बाण हैं ऊर्ध्वरेतन के चित्त को आकर्षण करतु है (४) अरु कुण्डल मकराकृत हैं मकराकृत मकर जो मीन लघु तेहिकी आकृत मीन को मुखपुच्छ एक ह्वै रह्यो है तेहि विषे गोलकुण्डल जाको देश वाणी में झुमका कहते हैं अनेक परम दिव्य मणिन की झरी छोटे मोतिन की अवली कञ्चन विषे युक्त हैं सो कुण्डलन में कोटिन सूर्य्य चन्द्र को प्रकाश है अरु कोटिन दामिनी की चंचलता है (श्लोक ५) सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिप्रमोदकं ॥ विद्युत्कोटिचलच्छुभ्रं कुण्डलंयच्छ्रुतिद्वये १ मुकुट शीशपर भ्राजत है कोई मुनिके मत विषे पञ्च खण्ड को मुकुट वर्णन है कोई मुनि के मत विषे सप्त खण्ड वर्णन पट खण्ड चौफेर अरु एक मुकुटाकार मध्य विषे है अरु पट खण्ड के बीच बीच लघुलघु फणाकार झुकि रहे हैं अनेक तरह की मणिन की झरी परम दिव्य प्रकाशमय कंचन विषे जटित हैं अति हरू हैं कोटिन सूर्य्य चन्द्रके परम दिव्य प्रकाश की छबिको हरतु हैं अरु केश जो हैं अलकैं सो कुटिल जनु मधुपन की अवली अरुण पंकज के मध्य प्रफुल्लित तेहि कोशके द्वौकूल विषे झूमि झूमि मकरन्द पीवते हैं पुनि जनु सर्पन के छौना पूर्ण परम दिव्य चन्द्र तेहिके अमृत को पान करते हैं (५) उर विषे श्रीवत्सलां-छन है सो श्री जानकीजी को दूसर स्वरूप है काहेते कि श्री रामचन्द्र जी सदा दान देते हैं भुक्ति वैराग्य योग ज्ञान मुक्ति भक्ति इत्यादिकन को दान जहां नित्य है ताते श्री जानकी जी श्री वत्सरूप दक्षिणांग विषे शोभित हैं अरु श्री रामचन्द्र विषे धर्म्म नीति नित्यह श्री जानकी जी बामांग में शोभित हैं किन्तु समस्त श्रीदिव्य वक्षस्थल विषे बसी हैं अरु ग्रीवाते पगलगि वनमाल शोभत है तिन करिकै तुलसीदल अरु तपीत फूल तहां भ्रमरजे हैं ते प्रसादी मकरन्द हेतु गुंजार शोभा करते हैं पुनि ग्रीवा विषे त्रिवली शोभित है जनु शृंगार रसकी मूर्ति की तीनि रेखा हैं अरु मंजु मुक्तनके कण्ठा हैं जनु शृंगार रसके आवरण विषे शांत रस शोभित है पुनि कण्ठा के अद्ध कौस्तुभमणि त्रिकोण शोभित है नित्य परम दिव्य त्रयतत्व विशिष्ट त्रयकोण है तहां शुद्ध चैतन्य श्री रामचन्द्र छाती में लगाये रहते हैं ताते भक्त वत्सल कही कोटिन शशि के प्रकाश को करै हैं कौस्तुभ तर पदिक है सो चौकोण चारिहू मुक्ति मिलिकै चतुर्थकोण शोभत है अरु तिमन विषे मणि मोती जटित हैं मणि मोतीरूप शुद्ध जीवतत्व चारिहू मुक्ति को प्राप्त ह्वैकै हृदांग सेवन करते हैं पदिकके तर हार शोभित है कइउ रंग मणिनकी झरी अरु लघु मोतिन की अवली जहां जहां जसयोग्य चाही तहांतहां तस स्वयंरचित हैं शृंगार रस कारण मूर्ति विषे तहां शृंगार रस सख्य दास्य वात्सल्य

लरै हैं अति मधुर ऐसो हार ग्रीवा ते अरु नाभिलग शोभित है पुनि भूषण मणिन को जालहै चतुरंगुल चौड़ा है अनेक मोती मणि अति छोटी लर तिर्छे तिर्छे स्वयं पोहिरही है परम छबिरूप सुन्दरता शोभा लावण्य माधुर्य इत्यादिक एक ह्वैकै श्रीरामके उर अंग करिकै जाल स्वरूप अति शोभित है रसिक मुनीश्वरन के चित फँसाइबे को जाल है हार बनमाल के बीचविषे शोभित है (६) केहरि कन्ध इव द्वौ कन्ध हैं केहरि कही पंचानन चारुकही सुन्दर यज्ञोपवीत शोभित जनुनील लघु मेघपर तड़ितकी तीनि रेखा थिरह्वै रहीहै अरु विशाल भुज विषे बाजू बलय कंकण मुद्रिका कंचनमणिनमय परम दिव्य अति सुन्दर शोभितहैं (७) करिकर करिकही हाथी पर कामहीकोकरिहोइतेहि को जो करकहेशुण्ड ताहूते सरस कहे श्रेष्ठ किन्तु तेहिसम ऐसो चढ़ाव उतार भुजदण्ड हैं अरु कटिविषे पीत धोती पहिरे हैं ताको अभूतोपमालंकारहै जनु असि तरंग गम्भीर नीरभरोजमि ताके मध्य विषे बालसूर्य ताकी छबि हरैहै तहां कटिविषे धोतीपर कटिसूत्र अरु किंकिणी की जयअवली सो जनु श्रीजानकीजीके नामकी धुनि होतीहै जनु प्रात रविको घेरि मंडलाकार किहे संपूर्ण बालखिल्या परम दिव्य रूप वेद को सारभूत कारण प्रणवउच्चारण धुनि करतेहैं तहां कटि पट तूणीर चित्र विचित्र कनक मणिमय अति शोभित है ताविषे बाण भरेहैं सुवर्ण के पंख चित्र विचित्र डांड़ी हैं अरु अति श्वेत अग्रभाग विषे गांसी अति पैन अति सुन्दर हैं श्रीरामआज्ञानुकूल अनेक स्वरूप महाकालहू के कालहैं अरु कहांलगि कहौं पातकिहु जीवन को परमपद दाताहै कर विषे बाण अरु धनुष निषंग अनूप शोभित है (८) दोहार्थ ॥ जनु मधुर घननील विषे तड़ित की निन्दा करत सन्ते पीताम्बर शोभित है पुनि अनूपम है दोऊ आचरण विषे परम दिव्य मणिन की कणी अरु छोटे छोटे मोती लगेहैं कषाय धोती पीताम्बर धारण किहेहैं पुनि पीताम्बर तप्त कांचन की द्युति हरैहै जनु शृंगार रसविषे बात्सल्यरस शोभित है उदर विषे तीनि रेखा हैं वर कही अति सुन्दर हैं शृंगार रसकी मूर्त्ति विषे जनु तीनि लोक हैं कि इनके समपर शृंगार नहीं है दक्षिणावर्त नाभि परम मनोहर शोभितहै जनु यमुना के भँवर की छबिछीनि लेतुहै तहां भँवर यमुना की शोभा गम्भीरता अथाह ताको जनावते हैं यहां शृंगाररस श्याम सुधानदरूप तहां नाभी भँवररूप सो शृंगार रस नदकी शोभा गम्भीरता अथाह ताको जनावतु है (९) ॥

१४७ पदराजीवबरणिनहिं जाहीं। मुनिमनमधुपबसैंजिनमाहीं १
बामभागशोभितअनुकूला। आदिशक्तिछबिनिधिजगमूला २
उपजहिं जासुअंशगुणखानी। अगणितलक्ष्मिउमाब्रह्माणी ३
भृकुटिबिलासजासुजगहोई। रामबामदिशिसीतासोई * ४
छबिसमुद्रहरिरूपबिलोकी। यकटकरहेनयनपटरोकी * ५
चितवहिंसादररूपअनूपा। तृप्तिनमानहिंमनुशतरूपा * ६
हर्षबिवशतनुदशाभुलानी। परदण्डइवगहिपदपानी * ७

निजकरकंजा । तुरतउठायोकरुणापुंजा ॥ ८

कृपानिधान पुनि अतिप्रसन्नमोहि आनि ॥
मांगहु बर जो भावमन महादानि अनुमानि १

१४७ पदकैसेहैं राजीवजो अरुण तद्वत्कोमल सुगन्ध मकरन्दमय पर किनके वर्णिबे योग्य नहींहैं जेहि चरणारबिन्दबिषे मुनीश्वरनके मन लुब्ध मधुप है बसिरहे हैं नूपुरसुवर्ण के हैं मणिनकी कणी मुहड़ेनपर जटितहैं जनुमधुकर परागते भरिकै अरुणता पीतता लिहे शोभितहैं मधुर ओंकार शब्दहोतेहैं जनुमधुर मधुकर गुंजारकरते हैं पदकी अंगुलिनबिषे नखनकी अवली जनु कमलदलन पर मोती जटितहैं पदपीठ पर जावक शोभितहै पगतरबिषे अंकुश कमलादिक अड़तालिस चिह्न अनूपम हैं यहां श्री गोसाईं जीने श्री रामचन्द्रजूके स्वरूप बिषे षट्रस वर्णन कियेहैं प्रथम शांतरसकहे हैं पुनिशृंगाररस पुनिबीररस पुनि हास्यरस पुनिकरुणारस पुनिवात्सल्यरस कहे हैं (१) श्री रामचन्द्रजूके बामभाग बिषे अतिशय अनुकूलकही श्रीरामचन्द्रजूकी आज्ञाप्रसन्नताकृपा आनन्द स्वरूपही आदिशक्ति सर्वशक्तिनकी आदि श्रीसीताजी हैं शक्तिकथनिहैं श्रीशक्ति भूशक्ति लीलाशक्ति उत्कृष्टा क्रिया योगा उन्नती ज्ञानापर्वी सत्याअनुग्रहाईशानाकीर्ति विद्या इलाक्रांतिः लंबिनीचन्द्रिका क्रूराकांता भीषणीशांता नन्दिनी शोका शान्ता विमला शुभदा शोभना पुण्या कला मालिनी मह्लोदया आह्लादिनी इत्यादिक तीस अरु तीनि महामुख्य शक्ति हैं ते सब श्रीजानकीजीकी भृकुटी को बिलास निरखि निरखि अनेकन ब्रह्माण्ड के कार्य करती हैं अरु इन एक एक के हजार हजार उपशक्तियां हैं अब तेंतीस शक्तिन के गुण कहतेहैं३३ अनेक ब्रह्मांड विषे जेती श्रीहैं तिनकी प्रेरक श्रीशक्तिहै१ ब्रह्मांड को आधार भूशक्ति है २ जेती लीलाहै सो लीला शक्तिसे जानिये ३ जेतो उत्कर्ष ब्रह्मांड गोलक बिषेहै सो उत्कृष्टाशक्ति ते जानिये ४ क्रिया जेतीहै सो क्रिया शक्तिते जानिये ५ अष्टांग योग इत्यादिक जेते हैं ते योग शक्तिते हैं ६ महत् वृद्धि जेतीहै सो उन्नती शक्तिते जानिये ७ वैराग्य ज्ञान बिज्ञान जोहै सो ज्ञाना शक्ति ते जानिये ८ जय पराजय तेहि की प्रेरक पर्वी शक्ति है ९ सत्य पदार्थकी प्रेरक सत्या शक्तिहै १० दया इत्यादिकजे उत्तम गुण हैं ताकी प्रेरक अनुग्रहा शक्ति है ११ जेते भेद जगत् बिषे अति दुस्तर हैं तेहिकी प्रेरक ईशाना शक्ति है १२ जेते सुयश हैं ताकी प्रेरक कीर्ति शक्तिहै १३ संपूर्ण विद्या की प्रेरक विद्या शक्ति है १४ सद्वाणी प्रेरक इला शक्तिहै १५ जितनी क्रान्ता ब्रह्मांड विषेहैं तेहि की प्रेरक क्रान्ता शक्ति है १६ तीनि लोक चौदह भुवन अरु एकसै आठ वैकुण्ठ भूपरहैं सो सब श्रीरामही के धामहैं सब अद्भुत हैं अरु भगवत् के परम दिव्य गुण अनन्त हैं अरु भगवान् जेते रूप धारण करते हैं अंशकला विभूति आवेश सो सब बिलम्बिनी शक्ति करिकै करते हैं १७ शीत अरु प्रकाश जहां जहां है तिनकी प्रेरक चन्द्रिका शक्ति है १८ क्रूरा शक्ति आपुतौ अक्रूर है पर जेती क्रूरता ब्रह्मांड में है तितनेन की प्रेरक क्रूराशक्ति है १९ रागमोह शुभाशुभ जेतेहैं तिनकी प्रेरक कांता शक्तिहै २०जेती भीति जगत्

विषेहै तिनकी प्रेरक भीषणी शक्तिहै २१ क्षमागुण जेते हैं तिनकी प्रेरक क्षमा शक्ति है २२ जेते आनन्द हैं तिनकी प्रेरक नन्दिनी शक्तिहै २३ शोका शक्ति आपु तो बिशोक है पर ब्रह्मांड भरे मे शोक प्रेरण करैहै २४ संपूर्ण शांति तेहिकी प्रेरक शांता शक्तिहै २५ बिमल बिमल गुण जेतेहैं तिनकी प्रेरक बिमला शक्तिहै २६ सद सद्गुण अरु शुभाशुभ धर्म कर्म जेतेहैं तेहिकी प्रेरक शुभदा शक्ति है २७ अरु जितनी शोभा छबि रूप सुन्दरता शृंगार इत्यादिक तिन सबकी प्रेरक शोभना शक्तिहै २८ जेते पुण्य पदार्थ हैं तिन सबकी प्रेरक पुण्य शक्ति है २९ इन्द्रजाल सूर्य्य चन्द्रमा इत्यादिकन विषे जेती कलाहैं सो कलावती शक्तिते जानिये ३० सर्व ब्रह्मांड विषे व्याप्त है सो मालिनी शक्ति जानिये ३१ ब्रह्माण्ड मंडल विषे त्रैगुण्य जनित जेती बिभवहै अरु जीवन विषे प्राकृतिक सुभाव अरु भगवत् विषे भक्ति जो है नवधा अरु चौरासी अंग इत्यादिक भक्ति की प्रेरक श्री सीतारामाज्ञानुकूल सो महोदया शक्तिते है अरु प्रेमापराभक्ति स्वतन्त्रा है ३२ परम आह्लाद जो ब्रह्मानन्द परमानन्द है तिनकी प्रेरक आह्लादिनीशक्तिहै ३३एक एक शक्ति में हजार हजार उपशक्तियांहैं जौने कालविषे श्रीसीतारामकी आज्ञाहोतीहै तौने तौने कालतैसो कार्य्यतेतीस अरु उपशक्तियां जेतीहैं तेसब करतीहैं सर्व शक्ति श्रीजानकी जीकीही कला अंश विभूतिहैं ताते श्रीगोसाईंजीने श्रीसीताजूको आदिशक्ति कहा याहीते सबशक्तिनकी आदि अरुमूलप्रकृति वाहीमहामायाकोकहो सोई संपूर्ण जगत्का मूलकारण है वही श्रीजानकीजीको महत् अंशहै ताते अंशीअंश भावकरिकैश्रीजानकीजीको सबजगत् की मूल कहाहै (तत्रप्रमाणमाह्श्रीमन्महारामायणेश्रीशिववाक्यंपार्वतीम्प्रतिश्लोकाः २१)

संप्रवक्ष्यामियाश्शक्तीर्जानक्यंशास्त्रिंशतः ॥ निकटेसंस्थितानित्यंसर्वाभरणभूषिताः १ श्रीर्भूर्लीलातथोत्कृष्टाक्रियायोगोन्नतीतथा ॥ ज्ञानापार्वतीतथासत्याकथिताचाप्यनुग्रहा २ ईशानाचैवकीर्तिश्चविद्यालाक्रांतिलंबिनी ॥ चन्द्रिका पितथाक्रूराकांताविभीषणीतथा ३ क्षांताचनंदिनीशोका शांताचविमलातथा ॥ शुभदाशोभनापुण्याकलाचाप्यथमालिनी ४ महोदयाह्लादिनीशक्त्यएकादशन्विकाः ॥ भृकुटीदर्शयंतीमाजानक्यानित्यमेवच ५ श्री श्चश्रीःप्रेरकाज्ञेया भूरंडाधारउच्यते लीलाबहुविधालीला उत्कृष्टोत्कर्षप्रेरका ६ क्रिया समक्रियासम्यग्योगायोगान्वितागतिः ॥ उन्नतीमहतीबुद्धिर्ज्ञानाविज्ञानप्रेरका ७ करोति प्रेरणांसत्यकपर्वीजयपराजयौ ॥ सत्यस्यप्रेरकासत्या नाशायादयागुणा ८ येचसर्वेजगन्मध्ये भेदाअपिसुदुस्तरः ॥ ईशानाप्रेरकातेषांवर्ततेनात्रसंशयः ९ यशोऽधिकारिणीकीर्त्तिर्विद्या विद्याधिकारिणी ॥ सद्वाणीप्रेरकेलास्यात् क्रांताक्रांतिविवर्द्धिनी १० यानिधामानिसर्वाणि श्रीरामस्याद्भुतानिच ॥ गुणाश्चानंतरूपाणि प्रेरिकैषांबिलंबिनी ११ शीतप्रकाशयोस्सम्यक् प्रेरकाचन्द्रिकापिच ॥ क्रूरत्वंप्रेरकाक्रूरा मनोवाक्कायकर्मभिः १२ प्रेरकावर्त्ततेकांतारागमोहौ शुभाशुभौ ॥ प्रेरकाभीषणीतेषांयेचसर्वेभयादयः १३ वर्त्ततेप्रेरकाक्षांता क्षमागुणविशेषतः ॥ नंदिनीचतथाशक्तिः सर्वानन्दप्रकाशिनी १४ शोकास्त्वयंविशोकाच लोकानांशोकप्रेरका ॥ शांतिप्रदायनीशांताविमलाविमलानगुणान् १५ शुभदासद्गुणांशोभां प्रेरयंतीचशोभना ॥ पुण्यापुण्यगुणोपेता कलाबहुकलावती १६ मालिनीव्यापकान्सर्वान् प्रेरयंतीमहोदयम् ॥ विभवंप्रकृतिर्भक्तिर्भक्तिवर्द्धयतेसदा १७ आह्लादिनीमहाह्लादं संवर्द्धयतिसर्वदा ॥ स्वेस्वे

कार्य्यरतास्सर्वाश्शर्तयश्चैवतास्सदा १८ यस्मिन्कालेभवेद्यासा सीतारामानुशासनम् ॥ तस्मिन्कालेप्रकुर्वीत सर्वकार्य्यमभीप्सतः १९ एकैकानांसहस्राणि वर्त्तंतेचोपशक्तयः ॥ व्याप्तकास्सत्रलोकेषु सर्वतोगगनंयथा २० जान अशादिसं ताऽनेकब्रह्मांडकारणम् ॥ समूलप्रकृतिर्ज्ञेया महामायास्वरूपिणी २१ आदि शक्ति छवि निधि श्रीरामचन्द्र के बामांग बिषे श्रीसीताजू अति अनुकूल शोभित हैं अति अनुकूल कही श्री रामानंद स्वरूपिणी श्रीरामानंद कारिणी सब प्रकारते छबिकी निधि जैसे समुद्र जलनिधि है तैसे श्रीसीताजू छबिनिधि हैं छबि कही शोभाकी क्रांति जोहै अति प्रकाश छटामय शोभा का को कही नख शिखलौं सर्वांग यथायोग्य केश मस्तक भरि अति सूक्ष्म सघनश्याम सँवारेउ अरु भाल बिशाल भृकुटी बंक कामधेनु की छबि हरैं लोचन बिशाल अरुण श्वेत श्याम कमलकर युत तिन्हकी छबि हरैं क्रमते मृगको शावक डिठुरो तेहिके लोचन की भिरनि दीर्घता मीनकी केवल चपलता खंजनको कछु आकार अरु कटाक्ष की फिरनि सुन्दर नासिका शुककी छबि हरै मुख गोल पूर्णचन्द्रकी छबिहरै अधर अरुण बिद्रुम अरु बिम्बकी छबिहरैं पुनि दशन दाड़िम दामिनिकी द्युति हरैं सुंदरि रसना अरुण चिबुक गोल मणि इव कपोल आदर्शवत् श्रवण सम सुंदर ग्रीव त्रैरेखा संयुक्त उर आयतभुज बिशाल चढ़ाव उतार करतल अरुण अंगुली यथायोग्य नख जनु नवीन कंज दलन पर चन्द्रमा के अमृत के बिन्दु लहलहात हैं कटि सूक्ष्महै पट यथायोग्य शोभित हैं जंघ यथार्थ जैसा चाहिये चरण लाल कमलतल अंगुलिन के नख जन कमल दलनपर मोती बैठे हैं सर्वांग सुभग रूप कही संपूर्ण तनु गौर श्याम इत्यादिक रंग गढ़नि संपूर्ण लैकै ताको शोभा कही अरु अंग अंग प्रति कनक मणिनके अलंकार इत्यादिक षोड़शौ शृंगारकी क्रांति ताको सुखमा कही अरु संपूर्ण तनुकी सचिक्कणता निर्मलता स्वच्छता ताको सुन्दरता कही अरु तनु भूषण बसन इत्यादिकन बिषे जो लालित्य है ताको परमा कही पर सब एकही हैं इन सबको शोभा कही शोभाकी छटा जोहै ताको द्युति कही अरु शोभाकी क्रांति ताको छबिकही सो सीताजू परम दिव्य छबि की निधि हैं जाकी छबिके एक अंशकी छटाते अनेक ब्रह्माण्ड बिषे छबिहै (श्लोकार्द्ध) सुखमा परमाशोभा शोभाकांतिद्युतिश्छविः इत्यमरः (२) जासु कही जिन श्री सीता जूके अंश ते अगणित लक्ष्मी उमा ब्रह्माणी उत्पन्न होती हैं ये तीनिहूं शक्तियां तीनिहूं गुण की खानि हैं पुनि श्रीजानकीजू के चरणारविंदों की बंदना करते हैं हरि जो बिष्णु भगवान् हैं अरु हर जो महादेव हैं अरु सहित शक्तिन ब्रह्मा अरु योगीश जो सनकादि नारद शुक व्यास अगस्त्य वाल्मीकि इत्यादिक जो मुनीश्वर योगेश्वर परमहंस जे ब्रह्मानंद परमानंद रसके रसिक ते सब श्रीजानकीजूके युगल चरण को ध्यान अहर्निश परमानन्य ... करते हैं चरण पंकजबिषे मनमधुप किहे तहां प्रमाण है ॥ बिधात्री श्री गौरीणांसेवकत्रीश्रुतिः ॥ यह श्रुति पूर्वकही है चौपाई बिषे सीयराममयसबजगजानी (पुनः श्रीहनुमत्संहितायां श्लोकएक) जयतिजनकजायाःपादपद्मम्मनोज्ञं हरिहरविधिवंद्यं साधकानांसुसेव्यं ॥ नखरनिकरकांतंमुद्रिकानूपुराद्यैरहरहहृदिमध्ये योगयोगीशभाव्यं (३) जिनको भृकुटी के बिलास अंशते मल प्रकृति है ऐसो

जो श्री सीताजी हैं सो श्रीराम चन्द्रजू के बामांग बिषे शोभित हैं श्रीमहादेव कहतेहैं हे पार्वती जी श्रीसीताजी सोई हैं जिनको श्री रामचन्द्रवन बिषे अपनी लीला पूर्वक ढूंढ़ते रहेहैं तहां तुम देखिकै महामोह को प्राप्त भई रहौ जिनकी भृकुटी के बिलासते अनेक ब्रह्माण्ड होते हैं सोई सीता हैं (४) छबि समुद्र छबिके समुद्र जैसे सब जल को कारण समुद्र है तैसे अनेक ब्रह्मांड बिषे जेती छबिहैं तिन सबको कारण श्रीसीताराम रूपहै ऐसीछबि देखिकै राजा रानी मग्न होते भये नेत्रन की पलकैं थकिरहीं जैसे पूर्णचन्द्रको देखिकै चकोर की दशा होतीहै तैसेही भई इहां एक भावार्थ धुनि है तहां महाराज मनुने एक परब्रह्म की प्रार्थना कीनहै तहां परब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी श्री जानकी संयुक्त प्रत्यक्ष भये काहेते कि परमेश्वरका सर्व भाव जीव नहीं जानिसकै है तहां परमेश्वर बिषे जो एकहू भावना आवै तौ परमेश्वर जो सर्वांतर्यामी सर्वज्ञ है वह अपने जनको सर्वभावसे सुखदेते हैं जाते राजाके पुत्रकी भावना है ताते राजाके हेतु आपु आये अरु रानीकेहेतु श्री जानकीजी प्राप्त भईहैं काहेते बिना पुत्र पतोहू दंपति को संपूर्णसुख नहीं होतहै ताते युगल दर्शन दीनहै जाते संपूर्ण परमानन्द होइ युगल दर्शन विषे यह धुनिहै अरु श्री सीताराम कभीभिन्न नहीं होते (५) महाराज मनु अरु महारानी शतरूपा श्री सीताराम जी का अनूपरूप देखते हैं पर तृप्त नहीं होते अनूप कही जिनकी उपमाको कहूं कोईनहीं है श्रीसीताराम सम श्रीसीतारामही हैं यह अनन्वयालंकार है (६) अति हर्ष के विवश ह्वैकै तनुकी दशा भूलिगई है प्रेमाकुल ह्वैकै राजा रानी दण्डइव श्रीसीतारामजी के पांयनविषे हाथ धरिकै गिरतभये (७) श्रीरामचन्द्र निजकर राजा रानीके शीशपर अति प्रसन्न ताते धरतभये श्रीरामचन्द्रजी करुणा के सागर हैं तुरंत राजा रानीको उठावतेभये (८) दोहार्थ ॥ कृपाके निधान कहो स्थान ऐसे श्रीरामचन्द्र जी राजा रानी को उठाइकै पुनि बोलतेभये हे राजन् जो तुम्हारे अभिलाष होइ सो बर मांगहु कौनिहु बात की चिन्ता मोको महादानी जानिकै नहींमानो मैं सब देबे योग्य हैं। तहां एक दानी अरु एक महादानी दानी कही जो कोई अर्थ धर्म काम मांगै सो देइ तहां ऐसे दानी ब्रह्मादिक देवताभी हैं अरु चारिहू फलके दानी श्रीविष्णु भगवान् भी हैं अरु महादानी चारिहू फल अरु योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान नवधा प्रेमापराभक्ति अरु आपु समेत सब एकही बार देइ अरु जो उसके मांगिबेकी गम्य नहींहै सोभी देइ अरु जो कदाचित् वह कछु विकार लिहे मांगै तो विकार उलटिकै दिव्य फल देइ ताको महादानी कही ऐसे श्रीरामचन्द्रही हैं (९) ॥

१४८ सुनिप्रभुबचनजोरियुगपाणी । धरिधीरजबोलेमृदुबाणी १
नाथदेखिपदकमलतुम्हारे * । अवपूजेसबकामहमारे * २
एकलालसाबड़िमनमाहीं । सुगमअगमकहिजातसोनाहीं ३
तुमहिंदेतअतिसुगमगोसाईं । अगमलागिमोहिंनिजकृपणाई ४
यथादरिद्रविबुधतरुजाई * । बहुसम्पतिमांगतसकुचाई ५

तासुप्रभावनजानतसोई * । तथाहृदयममसंशयहोई * ६
सोतुमजानहुअन्तरयामी * । पुरवहुमोरमनोरथस्वामी * ७
इ [illegible] ों । मोरेनाहिंनदेयकछुतोहीं * ८
० [illegible] कृपानिधि नाथ कहासतिभाव ॥
चाहों तुमहिंसमान सुत प्रभु सन कौन दुराव १

१४८ हे पार्वती श्रीरामचन्द्रजू के अति आनन्दमय बचन सुनिकै राजा जोरिकै अतिशय धीरज धरिकै अति मृदुलबाणी बोलतेभये बड़ेनके आगेअतिसँभारि बोलना चाहिये यह मर्यादहै (१) राजा बोलते भये हे नाथ तुम्हारेपद कमलदेखिकै अब हमारी सबकामना पूर्णभई (२) हे करुणानिधान एकलालसा मोरे मनविषे बड़ी हूरहीहै पर अति सुगम है अरु अति अगम भी है (३) हे गोसाइँ तुमको देतसन्ते अति सुगमहै अरु मोको अपनी कृपणाई समुझिकै अगमलगैहै काहेते जो कोई जैसा दानदेइ जैसो सुकृतकरै तैसोही उत्तमफलको प्राप्तहोय अरु मैंने न तौकछुदान दिया अरु न तौ कछु सुकृत कियो मैं सब प्रकारते दीनहौं पुनिकृपण कही कार्पण्य शरणागत को तहां भगवत् प्राप्ति हेतु जेते साधन वेदशास्त्र पुराण इत्यादिक कर्म योग ज्ञान भक्ति इत्यादिक मन बचन कर्म से कहतेहैं निरन्तर सब करै पर यह मनमें स्वप्नेहुनहींआवै कि मैं कछु करतहौं यहकहै कि हे प्रभु मोसों कछुनहीं बनै मैं सबते नीचहौं ताते राजाने आपुको कृपानिधि कहा अरु प्रथम गोसाईं ने कहाहै गोइन्द्री गो पृथ्वी अरु यह ब्रह्माण्ड मण्डल को कामधेनु गऊस्वरूप आगमसार ग्रन्थविषे विस्तार संयुक्तकहे हैं तहां मैं कछुक कहतहौं संपूर्ण ब्रह्माण्ड कोशनभ जो है सो ताको उदरहै पवन श्वासहै अग्निपित्तहै जलशोणित है पृथ्वीमांस है बनस्पतिरोमहैं पर्वत अस्थिहैं साती समुद्र कुक्षिहैं संपूर्ण नदी नस हैं सातहू पाताल जाकी अंत्रावलीहैं अरु सातहू उर्ध्व-लोक सातहू चक्र हैं मूलाधार स्वाधिष्ठान आधार अनाहत विशुद्ध आज्ञाब्रह्म चक्र ० सुमेरु मेरुदण्ड है चारिहूदिशा चारिपगहैं चारिहू युगस्तन हैं चारिहू फलदुग्ध हैं जीव बत्सहै धर्मराजपुरी गुदहै यमदंत हैं ब्रह्मायोनि है सुरबीथी पूंछ है मेघपुच्छके बारहैं इन्द्रलोक गलकम्बलहै शशि सूर्यनेत्रहैं राति दिन पलकहैं नक्षत्र अलंकार हैं शुभाशुभ कर्म आहार हैं पाप पुण्य शृंगहैं उदयास्ताचल कानहैं रुद्र जाको क्रोधहैसो गऊउर्ध्व-मुख है महाविष्णुको लोक मस्तकहै महाशंभुको लोक त्रिकुटीहै बासुदेव को लोक नासिकाहै चारिहू वेद जाकी हुंकारहैं गोलोकोर्ध्वमुख है अपरदिशा दिग्पाल अपर अंग अंतर्यामी ताको जीवहै ऐसो ब्रह्मांड रूपगो तेहिके साइँ श्रीरामचन्द्रहैं तातेगोसाइँ कहा सब देबे योग्यहैं (४) हे नाथ मैं दीनहौं आपु से बरमांगतसंत मोको कैसे संदेह होतहै जैसे कोई दरिद्री कल्पतरु को पाइकै बहुत संपत्ति मांगतसंते अतिसंकोच पावत [illegible] तथापि देवतरु सर्वदेबे योग्य [illegible] पर वह [illegible] दरिद्रता अरु बहुत संपा [illegible] मांगत भय पावतहै यह समुझिकै कि मैं इतने को पात्र नहींहौं पाऊं [illegible] न पाऊं (५) हे नाथ वह दीन जोहै सो कल्पतरु के प्रभाव को नहीं

मांगतसन्ते संकोच पावतहै तैसेही हे कृपालु मोरे हृदयविषे संशयहोतीहै (६) हे क-
रुणानिधान आपुतौ परात्पर ब्रह्ममूर्ति हौ अपुही सर्वजीवन के नियन्ता निर्गुण सर्व
व्यापक परिपूर्ण सर्वांतर्यामी हौ ऐसे तुम परस्वरूप परमात्मा प्रभुको नहींजानतहौ सर्व
जानतहौ ताते भक्तवत्सल भक्तबश कृपालु जो मेरे मनको मनोरथहै सो आपु पूर्णकरहु
हे स्वामी यहां स्वामी क्यों कहा जाते श्रीरामचन्द्रजी परब्रह्म सच्चिदानन्द घनमूर्ति
अखण्ड एकरस अरु श्री सीताजू परमानन्द एकरस अखण्डमूर्तिपरात्परतर ऐसो युगल
स्वरूप कोटिनकाम रतिकी शोभाको हरैहै जिनकोदेखिकैशृंगारहू की मूर्त्तिमोहिजाय सो
अनूप युगल स्वरूप राजामनु प्रत्यक्ष लोचन गोचर देखते भये तहां देखिकै बुद्धि
विषे यह जानिकै निश्चय भई कि यही युगल स्वरूप श्रीमहादेव अरु कागभुशुण्ड के
हृदय विषे अखण्ड बसत है अरु पुत्रन सहित ब्रह्मा अरु शुकादिक परम हंस लोम-
शादिक योगेश्वर अरु महान् महान् मुनीश्वर अरु चारिहू वेद सिद्धान्त बिषे इनहीं
को ध्यावते हैं यह साक्षात् बुद्धि विषे परमानन्द को प्राप्त होइकै अरु जानिकै अखण्ड
निश्चय भई ताते स्वामी कहा तहां स्वामीपद जोहै सो सब महत् शब्दन ते श्रेष्ठ है
(७) श्रीरामचन्द्रजी बोले हेराजन् सकुच बिहाइकै जो मनमानै सो मांगु यह धुनिहै कि
हे राजन् मोहीं को मांगु मोरे तोको कछु अदेय नहींहै मैं सब देबे योग्यहौं (८)
दोहार्थ ॥ तब सत्य संकल्प प्रभु को जानिकै राजा सत्य बचन बोले हे दानिशिरोमणि
तहां जेते बरदायक ब्रह्मा विष्णु शिवादिक हैं तिनमें तुम शिरोमणि कही सर्वोपरिदानी
हौ आपु कृपा के समुद्र हौ ताते आपुते कवन दुराउ करौं हे त्रैलोक्य नाथ आपुते
सतिभाव कहत हौं तुम्हारी समान पुत्र चाहत हौं देखिये तौ ज्ञान मुक्त भक्ति एकहू
नहीं मांग्यो है अरुबुद्धि इहां ताईहै कि चारिभुज चारिमुख पंचमुख तिनते बरदाननहीं
लीन अरु द्विभुज परब्रह्म बिषे बिशेष प्रतीति करिकै पुत्रही बरमांग्यो यहबात्सल्यरस है
यामें सब हैं अरु महाराज हैं ताते ब्रह्माण्ड भरेको पुत्रबर मांगिकै कल्याणकीनहै (९) ॥

। एवमस्तुकरुणानिधिबोले
* । नृपतवतनयहोबमैंआई * २
प्रातरूप ...जोरे * । देविमांगुबरजोरुचितोरे ३
...नृपमांगा । सोकृपालमोहिंअतिप्रियलागा ४
प्रभुपरन्तुसुठिहोतिढिठाई * । यदपिभक्तहिततुमहिंसुहाई ५
तुमब्रह्मादिजनकजगस्वामी । * ब्रह्मसकलउरअन्तर्यामी ६
अससमुझतमनसंशयहोई * । कहाजोप्रभुप्रमाणपुनिसोई ७
जेनिजभक्तनाथतवअहहीं * । जोसुखपावहिंजोगति लहहीं

दो० सोइसुखसोइगतिसोइभगति सोइनिजचरणसनेहु ॥
सोइबिबेकसोइरहनिप्रभु हमहिं कृपा करिदेहु ९

१४९ तहां राजाकै अति प्रीति आपु विषे देखिकै काहेते सर्व त्यागिकै वात्सल्य लीन ह्वै अरु [illegible] ल बचनसुनिकै अमोलकह्यो निष्काम केवल परमार्थमय बचन सुनिकै करुणानिधि एवमस्तु बोले इहां करुणारसमय बचन बोले काहेते राजाके बचन विषे सर्वजीवन की दीनता सूचित भई है (१) प्रभु कहतेहैं कि हे राजन् आपु सरिस कहां खोजैज.उँ इहां अनन्वया लंकार है श्रीराम सम श्रीरामही हैं हे नृप तुम्हारतनय हमहीं आइकै होब (२) राजामनु को बरदैकै रानी शतरूपाजीको करजोरे प्रभु देखते भये किन्तु करजोरे रानी श्री रामचन्द्र अरु श्री जानकीजीको अति आनन्दते बिलकती हैं प्रभु बोले हेदेवि जो तुम्हारे रुचिहोइ सो बर तुमहूं मांगहु (३) तब रानीजी अति ऐश्वर्य वात्सल्य रस बोरीबाणी बोलती हैं हे अनेक ब्रह्माण्ड के नाथ जो चतुर राजा ने बरमांग्यो सोमोहूं को अति प्रिय लाग्यो है (४) हेप्रभु परन्तु यहि अवसर बरमांगत सन्ते बड़ी ढिठाई होती है काहेते सिद्धान्त विषे तौ जो राजा को आपु वरदीन सोई है तथापि आपुकी आज्ञा परमानन्दमय है किसूके टारिबे योग्य नहीं है अरु तुम भक्तवत्सलही भक्त हितवाणी आपुको बहुत प्रियलगतीहै तहां बड़ेनकै यह रीतिहोहै अरु आपु तौ सबते बड़ेही ब्रह्मादिक जे ईश्वर कोटीमें हैं तिनहूं के तुम उत्पन्न का. परमेश्वर हौ सब जगत्के स्वामी तुमहीं हौ अरु ब्रह्म सर्वांतर्यामी हौ अरु सर्वकारण कार्यरूप तुम्हारीही बिभूति है (५) तहां हे कृपासिन्धु उदार तुम अनेक ब्रह्माण्ड के स्वामी सर्बान्तर्यामी ब्रह्मादिकनके जनक हौ अस तुमको समुझित है तब महा संशय होतहै कि ऐसेजे प्रभु परात्पर तर परब्रह्म जीव ईश्वरके माता पिता अरु तिनके माता पिता हम होबेकी चाहना करते हैं यहि ढिठाई में सन्देह अति होतहै तहां आपु सबके हृदय को भाव अरु प्रीति जानत हौ अरु कृपा करुणा दया इत्यादिकके समुद्र हौ ताते जो आपने कहा कि तुहूं बरमांगु सो मैं प्रमाण कौन सबके प्रभुको आपन प्रभु जानिकै बर मांगति हौं (६) महारानी शतरूपा जी बोलती भईं हे नाथ जे तुम्हारे निज भक्तहैं जे केवल तुम्हारी शरणहैं मृत्युलोक स्वर्गलोक मोक्षलोक तीनिहूं की प्राप्तिके उपायते शून्य केवल प्रपन्न ऐसे जे तुम्हारे निजभक्त हैं ते जौने सुख अरु जौनी गतिको प्राप्त हैं (७) हेनाथ तुम्हारे निजभक्त जेहि सुखको जेहिगतिकोप्राप्त होते हैं (८) दोहार्थ ॥ तुम्हारे निजभक्तनको जो सुख जोगति जो भक्तिजो तुम्हारे चरणार-बिन्दविषे सहज स्नेह होइ सोई विवेक सोई रहनि कहो रहस्य जो विशेष सन्तन के जो सहजानन्द लक्षण जो पाछे दुइचारि जगह कहिआये हैं सोई परम दिव्य गुण जो तुम्हारे संतन के सो हमहिं कृपाकरि कै देहु (९) ॥

१५० सुनिमृदुगूढ़भक्तियुतरचना । कृपासिंधुबोलेमृदुबचना * १

जोकछुरुचितुम्हरेमनमाहीं । मैंसोदीनसकलसंशयनाहीं २

मातुविवेकअलौकिकतोरे । कबहुंनमिटिहिअनुग्रहमोरे ३

बन्दिचरणमनुकह्योबहोरी । अवरिकबिनतीप्रभुमोरी ४

। स्वोहल: ५

मंगि तोमतुम्हेअघोना:

रानीके बचन मृदु गूढ़ भक्ति की रचना जा बाणी बिषे अनेक दिव्यरस अनेक भाव भक्ति अनेक सुखकी रचना अरु भूत भविष्य वर्त्तमान तीनिहुं काल बिषे निर्दोष सो बाणी सुनिकै कृपासिन्धु बिहँसिकै मृदु बचन बोले यहां कृपासिंधु कहा तहां कृपाके समुद्रही बिषे राजा रानी सदा रहैंगे (१) कृपासिंधु बोले जो कछु तुम्हारे मनमें रुचि होइ सो हम तुमको सब दीन यहि में संशय नहीं है (२) प्रथमहिं माता कहा यह कृपाकीन हेमातु अलौकिक बिबेक तोरे हृदयसे मेरे अनुग्रह ते नहीं टरैगो (३) पुनि राजा मनु चरणारविंद बन्दिकै बोलते भये हे प्रभु मोर अवरि एक बिनती है (४) तुम्हारे चरण कमल अरु स्वरूप बिषे असि मोरि रति होइ जैसे पुत्र बिषे अति स्नेह ते होति है बरु मोको बड़ो मूढ़ संसार कहै कि राजाके गृहबिषे परमात्मा अवतीर्ण भयेहैं राजाने केवल पुत्रही भाव मान्यो है यह निंदा मोको अंगीकार है यहि बात में यह आशय है कि परमेश्वर बिषे कोई यत्नते लगै अरु तेहि लागिमें लोक निंदित देखि परै तहां लोक बिडंबना त्यागिकै राम बिषे लगै यह वेद कहते हैं (५) हे प्रभु तुम्हरेबिषे मोर अस मन लगै जैसे मीन जल अरु सर्प मणिके बिछुरत संते प्राणको त्यागि देइहै तैसे तुम्हरे बिछुरत मेरे प्राण छूटि जाहिं यह बरदेहु तहां जो कहो कि राजा ने यह बर तौ मांग्योहै अरु जब बिश्वामित्र श्रीरघुनाथ जीको अपनी यज्ञ अरु जनकपुर हेतु लैगये हैं तब बिक्षेप भयो है पुनि तबतौ शरीर नहीं छूटो अरु जब दक्षिण आरण्य को श्रीरामने गमन कीन तेहि बिक्षेप बिषे शरीर छोड़िदियो यह संदेह है उत्तर ॥ तहां बिश्वामित्र को बिक्षेप सुख पूर्वक है अरु दूसर बिक्षेप दुःख पूर्वक है (६) तहां राजा ऐसो बर मांगिकै श्रीरामचन्द्र जूके चरण गहि रहे हैं कि यह बर बिशेष पाऊं तब मुसुकायकै एवमस्तु करुणानिधिने कहेउ (७) तब श्रीरामचन्द्र बोले हेराजन् अब तुम हमारी आज्ञा मानिकै इन्द्रपुरमें बास करहुजाय (८) सोरठार्थ ॥ हेतात तेहि इन्द्रलोक बिषे कछुक काल भोग बिलास करिकै पुनि तुम अवध के राजा होहुगे तब हम तुम्हार पुत्र होहिंगे तहां ब्रह्माके एकदिन को एक कल्प कहो सौहजार चौकरी को एकदिन अरु हजार चौकरी की राति सो एककल्प तहां एक कल्प बिषे चौदह मन्वंतर होते हैं मन्वंतर प्रतिइन्द्र होते हैं तहां राजामनुने प्रथम कल्प प्रथममन्वंतर प्रथमयुगके चौथे चरणबिषे तप कियोहै पुनि जब इन्द्रपुरमें रहेजाय आगे नहींजानाजाय किधौं कवने कल्प अरु मन्वंतर बिषे कवने त्रेताके चौथे चरण बिषे श्रीअवध के राजा श्रीदशरथ महाराज

भये हैं तहां श्रीरामचन्द्रजीने राजाको इन्द्रपुरी की आज्ञा क्यों दियो है तुरंत अवधकी आज्ञा देते यहां वेदकी मर्याद राखी है तपको फल इन्द्रपुर विषे वहुत काल भोगकर लेहिं तब हम पुत्र होहिंगे तबै ते राजासे इन्द्रकी मित्रता है तहां जो तप संयुक्त भजन करते हैं सो स्वर्ग भोग करिकै श्रीरामचन्द्रके समीप प्राप्त होते हैं अरु जो केवल अनन्य भजन करते हैं ते स्वर्गको नहीं जाते हैं परम पदही को जाते हैं यह तौ हमने सुकृती जीवनको कहा है अरु राजा श्रीदशरथ महाराजजी श्रीरामचन्द्र जी के नित्य निकट हैं श्रीरामचन्द्रजी नित्य इनहीं के अवतीर्ण हैं (१)॥

१५१ इच्छामयनरदेहसँवारे * । होइहौं प्रकटनिकेततुम्हारे १
अंशनसहितदेहधरिताता * । करिहौं चरितभक्तसुखदाता २
जेहिसुनिसादरनरबडभागी । *भवतरिहैंममतामदत्यागी ३
रियहमाया ४
पुरउबमैंअभिला । ५
पुनिपुनिअसकहिकृपानिधाना । अन्तर्हितभयेभगवाना *
दम्पतिउरधरिभक्तकृपाला । तेहिआश्रमहिंबसेकछुकाला ७
समयपायतनुतजिअनयासा । जायकीन्हअमरावतिबासा ८
दो० यह इतिहास पुनीत अति उमहिं कह्यो वृषकेतु ॥
भरद्वाज सुनु अपर अब राम जन्म कर हेतु १

१५१ हे राजन् अपनी इच्छासे नर देह सँवारि कही रचिकै तुम्हारे गृह बिषे प्रकट हाइहौं नरदेह सँवारी यह कहा नर रूप तौ अबैहुहिं द्विभुज धनुषबाण लिहे किरीट कुण्डल इत्यादिक अलंकार किहे हैं तहां अब नरदेह सँवारिबे को कहै है अरु यही स्वरूप षड्विकार रहित अखंड एकरस है (अध्यात्मे परशुराम वाक्यं श्लोकार्द्धं) विकाररहितंरामंत्वद्रूपंचिन्मयंसदा ॥ पुनः ॥ सत्यात्सत्यपरंसत्यंचैतन्याच्चैतन्यपरंचैतन्यं आनंदादानंदपरंआनंदं नित्यान्नित्यपरंनित्यंद्विभुजंधनुर्धरं इतिश्रुतेः तहां नरदेह सँवारब कही नर देह विषेअवस्था होत जाती हैं तैसे राजन् तुम्हारे निकेत बिषे प्रकट होइकै बाल पौगण्ड कौमार अवस्था की लीला मैं भी करौंगो पुनि नित्य किशोरलीला अपनी इच्छासे मैं जो चाहौंगो सो करौंगो (१) हेतात अंशन सहित देह धरिकै तुम्हारे गृह बिषे अवतीर्ण होउँगो भक्तन को सुखदाता चरित करौंगो जो कहो कि भरत लक्ष्मण शत्रुहन ये श्रीरामचन्द्रके अंशहैं देह धरेउ है तौ ये तीनिहूं स्वरूप नित्य विग्रह अखंड एकरस श्रीरामचन्द्रके निकट रहते हैं सो पाछे यहि चौपाईके अर्थमें कहेहैं चौपाई ॥ शेष सहस्र शीश जग कारण ॥ तहां देह धरब कैसे संभवै तहां एक महत् अंश है अरु एक बिभूति अंश है जैसे सरयू गंगाकी प्रवाह धाराते कोई दुइ चारि स्रोतफटिकै अहिते पृथक् चलीं पर धारा बिषे स्रोत लग्यो है सो महत् अंशकही यह सरयू गंगा को स्वरूप

ही है अरु जो धाराते कोई किसी पात्र विषे जलभरि लैगयो ताको बिभूति अंश कही तैसे श्रीरामचन्द्र परब्रह्म तिनको महत् अंश जे ईश्वरकोटी हैं अरु भरत शत्रुघ्न इ-त्यादिक जो पञ्चशी पार्षद कहेहैं अरु हनुमानादिक ये सब महत् अंश श्रीराम स्वरू-पही हैं अरु देव दानव मनुष्यादिक चराचर जीव विभूति अंश हैं ताते प्रभुने कहा कि अंशन सहित देह धरि तहां यह अर्थहै कि ये जो मेरे महत् अंश हैं मेरी देह धरे हैं कि भरत सौमित्रि शत्रुघ्न हनुमदादि सब पार्षद छत्र चमर व्यजन सिंहासन संपूर्ण त्रि-पाद परमदिव्य बिभूति ये सब मेरिही देह धरेहैं तिन सयुक्त अवतीर्ण होउँगो इहां उहां परिपूर्ण करि देउँगो (२) जो लीला मैं करिहौं सो बड़भागी नर गाइकै सुनिकै समुझिकै ममतामद आपुहा त्यागिकै भवसागर को तरि जाहिंगे (३) यहि चौपाईको अर्थ सोई जानब जो पाछे यहि चौपाई को अर्थ भयो है चौपाई ॥ आदि शक्ति छबि निधि जग मूला ॥ यहां खण्डान्वय ते अर्थ है उपजाया जेहि आद्याशक्ति को जेहिते जगत् की उत्पत्ति है जिसने आद्याशक्ति को उपजाया है वह मोरि माया है मायाकही दया मेरी दयाकी मूर्त्ति श्रीसीताजू हैं तिनकी कृपा बिना मैं जीवन को अंगीकार नहीं सत्य जानब सोई अवतीर्ण होहिगी अथवा श्रीजानकी जी को नहीं कहते हैं आदि शक्ति जो जगत् की कारण हैं ऐसी जो मेरी माया हैं तेहि संयुक्त परमदिव्य लीला करौंगो काहेते तेहिको अध्यारोपण करिकै सबके जानिबेको नर इव लीला करौं गो पर मेरी लीला ब्रह्म मय है (४) हे राजन् तुम्हारी अभिलाष मैं सब पूर्ण करिहौं तहां मेरो प्रण सत्य सत्य सत्य है तीनि बार सत्य क्यों कहा श्रीरामचन्द्र की तौ एक सत्य संकल्प है (वाल्मीकीये श्लोकैक चरणं) रामोद्विर्नाभिभाषते ॥ तहां यह कहाहै हे तात मेरो प्रण सत्यात्सत्यतर सत्य जहां तक सामान्य विशेष सत्य है तहां मेरी सत्य सर्वोपरि है (५) पुनः पुनः कही बारम्बार ऐसेही कहिकै कृपा के निधान कही स्थानते अन्तर्द्धान होइ गये (६) सब दम्पति कही राजा रानी जेहैं तिनने कृपालु जो श्रीरामचन्द्र तिनकी भक्ति अपने हृदय बिषे धरिकै तेहि आश्रम बिषे कछुक काल बास कीन (७) आगे श्रीरामाज्ञा समयानुकूल पाइकै अनायासही जैसे गज के कण्ठ से सुमन की माल छूटिपरै तैसेही तनुको तजिकै इन्द्रके पुरमें बास कीन जाइ तनु तजि कहा जैसे शुद्ध लोह धातु ने पारसको स्पर्श कियो तब लोहा ने सब निज धर्म तजि दियो है धातु सुवर्ण भयोहै दृष्टांतको एकदेश लियाहै तहां राजा रानी तौ जबभजन करने लगे तबहीं परमदिव्य भयेहैं तब राजा रानी अपनी भक्ति योग बलते स्वेच्छित तनु दिव्य देवरूप इन्द्रपुर में बसे जाइ इन्द्रने अति आदर संयुक्त लैकै अर्द्ध सिंहासन आसन दीन आपुको धन्य मानते भयेहैं (८) दोहार्थ ॥ हे भरद्वाज यह ऐतिहासिक सम्बाद महादेवने पार्वतीजीसे कहा है सो अति पुनीत है एक पुनीत जो कर्मकांड ज्ञानकांड उपासनाकांड त्रयकांड मिश्रित ग्रन्थमें मोक्ष कहते हैं सो पुनीत इतिहास ग्रन्थहै अरु जो केवल श्रीरामचन्द्रको अति सुन्दर माधुर्य शृङ्गारहूकी शृङ्गार मूर्ति तेहि स्वरूप की परम भक्ति करिकै प्राप्ति अरु मोक्षहू को त्याग केवल अनन्य शरणागत का जेहि ग्रन्थ बिषे वर्णन होइ ताको अति पुनीत इतिहास कही ताते यह इतिहास अति

पुनीत है पुनि मेरो नाम श्रीरामचरणहै अरु महाराज श्रीरामप्रसादजी तिनके श्रीरघुनाथ प्रसाद जी तिनको मैहौं तिनका जी अयोध्या जीमें परम स्थानहै तहां श्रीमद्रामचन्द्रको सत्य संकल्प वेद वर्णते हैं ताते जे ऐसे स्वामी के परमानन्द शरण हैं ते सबै सत्य यथार्थ वादीहैं जहां ऐसो स्थान ऐसे इष्टदेव ऐसे परमगुरु गुरु जिनको ऐसो नाम तिनकी शरण है ताते कैसे झूंठ कहौंगी ताते यथार्थ कहेउँ है अरु यथार्थ कहत हौं तहां हठ पक्ष करिकै नहीं कहौं काहेते हठपक्ष कहे ते हृदय मे बोध नहीं होत है ताते सत्य कहत हौं तहां श्रीयाज्ञवल्क्य महामुनीश्वर कहते हैं हे भरद्वाज जी यह जो महादेव पार्वती का कहा इतिहास सो अति पुनीत है छप्पै ४ ॥ अति पुनीत इतिहास कहेउ तुलसी सब मुनिमत । वेद उपनिषद रूप तत्वकर भाव समुझियत ॥ मतको शास्त्र परत्व संहिता रूप कहत मुनि । पुनि उपासना रूप भाष्य अर्थन पुराण धुनि ॥ पुनि रामचरण उपमान जो उपमेय बाचक धर्ममय । सब भावभेद रसयुक्ति जो उक्तिनको सतकाव्य ह्वय १ पुनः ॥ छन्द प्रबन्ध अनेक भेद रचनाको पिंगल । देहादिक संसार रागहत विरति योगबल ॥ सारासार निवेद विवेकमयी तुलसीकृत । चित बुधि मन हंकार एककरिबेको समचित ॥ सब इन्द्रिनको दमनकहँ बाह्यांतरयक उपरती । सहि रामचरण शीतोष्णादै ताहितितीक्षा कहयती २ पुनः ॥ तुलसीकृत विश्वासरूप गुरुवेद बचनरति । समाधान रघुवर स्वरूपनहिं डिगैध्यान मति ॥ पर स्वरूपकी प्राप्तिकरनको निरूपहय । सर्व चराचर ब्रह्मभाव विज्ञान रूपमय । पुनि प्राप्ति परमानन्दकरि भावभक्ति सिराम धन । कृतराम चरण प्रेमापरा मन्नरामछबि भूलितन ३ देशकाल नयनीतिरीति गमवसर कृतनित । ज्योतिषतंत्र सुमंत्र यंत्र अस्तोत्र मुनिनकृत ॥ सबपुराण व्याकरण भाष्य सतकाव्य रागस्वर । शास्त्रसंहिता धर्मशास्त्र उपनिषद वेदगुर ॥ जिमि रामचरण मधुकरतहै भँवर पुष्प रसरसलियो । तिमि तुलसिदास रससारलै रामचरित भाषाकियो ४ श्रीयाज्ञवल्क्य कहतेहैं हे भरद्वाज यह पुनीत इतिहास वेदको शिरोभाग सोमैं तुम से कहेउँ अब श्रीरामचन्द्र जो परब्रह्म स्वरूप तिनके प्रकृति मण्डलविषे अवतीर्ण होवे को कारण सुनहु जो श्रीरामचन्द्रजी सहित सीताजीके महाराज मनुको वरदैके निज स्थानमें जाइकै किसी एकसमय कोई एकबार परमशुभ्र सिंहासनपर बिराजमान भये तहां अनन्तदास अरु सखनको मण्डली बिराजमानथी तहां अनन्त सखनविषे एकप्रतापी नाम सखा अनन्तयूथन विषेएकयूथप जो श्री जानकी जूकी कृपाकी मूर्त्ति था तेहिते श्री रामचन्द्र जी सदा प्रसन्न बदन बोलते भये हे प्रतापी सखे तुम हमारी आज्ञा ते प्रकृति मण्डल विषे राजा होहु हम तुम्हारे संग कछुरण क्रीड़ा करहिंगे तब तेहिं अति प्रसन्नताते रजाइ शीशपर रखिकै प्रणाम कीन्ह्यो पुनि समय पाइ कै स्वामी की आज्ञा लैके प्रकृति मण्डल विषे राजा भानुप्रताप भयो इतिप्रसंगे ॥ श्रीमन्महारामायणे दोहार्थ स्समाप्तः (दो०) अतिपुनीत को अर्थलघु वार्तिक छप्पै प्राप्त । राम चरण गुरु कृपातेकृत पूर्वार्द्धसमाप्त॥इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेउमामहेश्वरसम्बादेपूर्वार्द्ध समाप्तम्॥इतिश्रीदंपत्योस्सीतारामचन्द्रदर्शनवरप्राप्तिर्नामषड्विंशतस्तरंगः॥२६॥

इतिपूर्वार्द्ध समाप्तम् ॥

दो० विंशति सप्त तरंग में भानुप्रताप प्रसंग ॥
रामचरण तापस मिलन पुनि शरीरकर भंग २०

ू । सत्यकेतुतहँबसैनरेशू ** २
*। तेजप्रतापशीलबलवाना * ३
तेहिकेभ रा *। सबगुणधामसमहारणधीरा * ४
रजधानीजोज्येठे **। नामप्रतापभानुअसताही * ५
ननामा *। भुजबल
भाइहिभाइहिपरमसुरीती *। सकलदोषछलवर्जितप्रीती ७
ज्येठेसुतहिराज्यनृपदीन्हा। हरिहितआपुगमनबनकीन्हा ८
दो० जब प्रताप रबि भयोनृप फिरी दोहाई देश ॥
पालत अतिवेद विधि कतहुँनहीं अघलेश १

१५२ हे भरद्वाज अति पवित्र अरु पुराण कही आदि कल्पकी कथाहै अद्यापि नित्य नवीन चली आवै है जो कथा महादेव ने पार्वती प्रति बखानिकै कहा है सो सुनहु आगे अक्षरार्थ जानब अरु जहां तहां तिलक भी करैंगे (१) एकसै बावन अष्टपदीकी दुइ चौपाईते एकसै तिरपन अष्टपदीकी छः चौपाईताईं अक्षरार्थैजानब(६)॥

१५३ नृपहितकारकसचिवसयाना।
सचिवसयानबन्धुबलबीरा **। आपुप्रतापभानुरणधीरा २
**।
सेनबिलोकिराउहर्षाना **। अरुबाजेगहगहेनिशाना ४
विजयहेतुसबकटकबनाई *। सुदिनशोधिनृपचल्योबजाई ५
जहँतहँपरीअनेकलराई **। जीतेसकलभूपबरिआई * ६
सप्तद्वीपभुजबलबशकीन्हे **। लैलैदण्डछांड़िनृपदीन्हे ७
सकलअवनिमण्डलतेहिकाला। एकप्रतापभानुमहिपाला ८
दो० स्वबश विश्व करि बाहुबल निजपुर कीन्ह प्रवेश ॥
अर्थ धर्म्म कामादि सुख सेवहिं सबै नरेश १

१५३ सप्तद्वीप अरु सप्त द्वीपन के राजन को भुजनके बलते अपने बश करि कै दण्ड लैलै छांड़ि दियो (अथद्वीपनकेनाम) जम्बूद्वीप लक्षयोजन प्रमाण तेहिके मध्य में चौकोण इलावृत खण्ड तेहिके संकर्षण देवता सदाशिव पुजारी तेहि इलावृत खण्ड

के मध्य में सुमेरु पर्वत अरु उत्तर रम्यक् खण्ड धनुषाकार है तहां मत्स्यावतार देवता है मनु पुजारी हैं इन दोनों खण्डों के मध्य में नील पर्वत है सोऊ धनुषाकार है तहां कागभुशुण्ड को आश्रम है रम्यक् खण्डके उत्तर हिरण्मय खण्ड है तेहिके कूर्म्म देवता अर्यमा पुजारी हैं तेहि रम्यक् अरु हिरण्मय खण्डके मध्यविषे श्वेत पर्वत है तेहि हिरण्मय खण्ड के उत्तर कुरु खण्ड है तहां श्री बाराहजी देवता हैं भू देवी पुजारीहैं तेहि हिरण्मय अरु कुरु खण्ड के मध्यमें शृंगवान् पर्वत है कुरु खण्डके उत्तर समुद्र है पुनि इलवृत खण्ड के दक्षिण हरिवर्ष खण्ड है सोऊ धनुषाकार है तहां श्री नृसिंह देवता अरु श्री प्रह्लाद पुजारी हैं इलावृत अरु हरि वर्ष खण्ड के मध्यमें निषध पर्वत है हरिवर्ष खण्ड के दक्षिण किंपुरुष खण्ड है तहां श्री रघुनाथजी देवता हैं हनुमान् जी पुजारी हैं हरिवर्ष अरु किंपुरुष खण्डके मध्यमें हेम कूट पर्वतहै तेहि किंपुरुष खण्डके दक्षिण भरतखण्ड है श्री बद्रीनारायण देवता हैं नारद पुजारी हैं किंपुरुष अरु भरत-खण्डके मध्य में हिमालय पर्वत है तेहि भरतखण्ड के दक्षिण समुद्र है पुनि इलावृत खण्ड के पूर्व भद्राश्व खण्ड है तहां हयग्रीव देवता हैं भद्रश्रवा पुजारीहैं इलावृत अरु भद्राश्व खण्ड के मध्य में गन्धमादन पर्वत है भद्राश्वखण्ड पूर्व समुद्र है इलावृत खण्ड के पश्चिम केतुमाल खण्ड है तहां कामदेवता हैं रमादेवी पुजारीहैं तेहिइला-वृत अरु केतुमाल खण्ड के मध्यमें माल्यवान् पर्वतहै अरु केतुमाल के पश्चिम समुद्र है जम्बूद्वीप में नवखण्ड वर्णन किये जम्बूद्वीप के मध्य इलावृत खण्ड है तेहिके उत्तर अरु दक्षिण तीनितीनि अरु पूर्व पश्चिम एकएकखंड ये सब नवखण्ड जानब तहां जम्बूद्वीपके अधिपति ऋषभदेवजी तिनके शतपुत्र भये तिनमें नव योगेश्वर अरु एक परमहंस अरु इक्यासी कर्मकाण्डी भये अरु जम्बूद्वीप के नवखण्ड करिकै नव पुत्रन को एक एक खण्डका राज्य दैकै आपु परम हंस दशाविषे आरूढ़ ह्वैकै भगवन्त को प्राप्त भये तेहि जम्बूद्वीप के सर्व दिशा में मण्डलाकार लक्षयोजन चौड़ा क्षारसमुद्र है नवो खण्डन को मेखला किहे हैं क्षार समुद्र के परे द्वितीय प्लक्ष द्वीप द्विलक्ष योजन प्रमाण चौड़ा है अरु यहि प्रकार क्रमते सातो द्वीप सातोसमुद्र दून दून बढ़ैंगे अरु समुद्र द्वीपको येही प्रमाण चलाजाइगो द्वीपके स्वामी प्रियव्रतात्मज इध्मजिह्व तिनके सातपुत्र भये ताहीते अपने द्वीपको सातखण्ड करिकै सातो पुत्रन को एक एक खण्ड का राज्यदैकै आप आत्मयोग करिकै उपराम पावत भये तेहि सातो खण्डन में सात पर्वत सातनदी खण्ड खण्ड प्रति एक एकहै तिनके नाम क्रमते प्रथम उत्तर दिशाते बामभाग लैकै गिनते हैं अरु सर्व खण्डन के नाम सोई राजन के नाम हैं अरु द्वीपन के नाम सोई वृक्षन के नामहैं (अथपर्वतनकेनाम) खण्ड के पूर्व दिशाते लिखते हैं— मेघमालपर्वत १ हिरण्यष्ठीव पर्वत २ सुपर्ण पर्वत ३ ज्योतिष्मान्पर्वत ४ इन्द्रसेनपर्वत ५ बज्रकूटपर्वत ६ मणिकूट पर्वत ७ (अथखण्डनकेनाम) प्रथम द्वितीय पर्वत अरु प्रथम द्वितीय समुद्र को अन्तरक्रमते—अमृतखण्ड १ क्षेमखण्ड २ शांतिखण्ड३ समुद्रखंड४ जवसखण्ड ५ शिवखण्ड ६ अभय खण्ड ७ (अथनदिनकेनाम) खण्डन के बीच दोऊ पर्वतन के मध्य उत्तर बाहिनी प्रथम औरौक्रमते दिशा के सम्मुख बहती हैं—ऋत-

म्भरानदी १ सुप्रभातानदी २ सावित्रीनदी ३ आंगिरसीनदी ४ निम्नानदी ५ अरुणा नदी ६ सत्यम्भरानदी ७ तिन नदिन के स्पर्श करिकै नष्ट भयो है रजोगुणचारि वर्ण के हंस १ पतंग २ ऊर्ध्वायन ३ सत्यायननाम चारिवर्ण के सहस्रायुष देवतनके तुल्य श्रम स्वेदादि रहितरूप तैसही पुत्रोत्पादक हैं ते वेदत्रयीमय जो सूर्य तिनको वेदत्रयी करिकै पूजते हैं यही प्रकार सब द्वीपन में जानब प्लक्षादिक द्वीपनके बिषेसब पुरुषन को आयुइन्द्रिय ओज सह बल बुद्धिबिक्रम स्वस्वाभाविकी सिद्धि साधारणहै तेहि प्लक्षद्वीपको सर्व दिशामें द्विलक्षयोजन चौड़ाई इक्षुरसोद समुद्र है २ अथतृतीय शाल्मलि द्वीप चारिलक्ष योजन प्रमाण तेहिको अधिपति यज्ञबाहु यहि द्वीपके सातखण्ड करिकै सातोपुत्रनको राज्यदीन तामें पर्वत नदी खण्डनके नाम (अथ पर्वतनके नाम) श्रुति पर्वत १ सहस्रापर्वत २ पुष्पपर्वत ३ मुकुन्दपर्वत ४ कुन्दपर्वत ५ बामदेवपर्वत ६ शृंगवान् पर्वत ७ (अथ खण्डन के नाम) आप्यायनखण्ड १ पारिभद्रखण्ड २ देववर्षखण्ड ३ रमणकखण्ड ४ सौमनस्य खण्ड ५ सुरोचनखण्ड ६ अविज्ञात खण्ड ७ (अथन दिनके नाम) नन्दा नदी १ रजनीनदी २ कुहूनदी ३ सरस्वती नदी ४ शिनीबाली नदी ५ अनुमतीनदी ६ राकानदी ७ तहांके चारिवर्ण श्रुतधर १ वीर्यधर २ बसुन्धर ३ इषन्धर नाम ४ भगवान् वेदमय सोमको वेदकरिकै पूजतेहैं तेहि शाल्मलि द्वीपको सर्वदिशामें चारिलक्ष योजन चौड़ा सुरोद समुद्रहै ३ अथचतुर्थद्वीप कुशद्वीप आठलक्ष योजन प्रमाण ८ हिरण्यरेत अधिपति तिनके सातपुत्र उन्हें सातोखण्डको राज्यदैकै तपकरतभये सात पर्वत सातनदी (अथपर्वतनकेनाम) द्रविणपर्वत १ ऊर्ध्वरोमा पर्वत २ देवानीक पर्वत ३ चित्रकूट पर्वत ४ कपिल पर्वत ५ चतुःशृंगपर्वत ६ चक्रपर्वत ७ (अथखण्डन के नाम) विविक्तनामखण्ड १ सत्यव्रतखण्ड २ नाभिगुप्तखण्ड३ दृढ़रुचिखण्ड४ बसुदानखण्ड५ बसुखण्ड ६ दैवनाम खण्ड ७ (अथन दिनकेनाम) घृतच्युता नदी १ देवगर्भा नदी २ श्रुतिविन्दानदी ३ मित्रविन्दानदी ४ मधुकुल्यानदी ५ रसकुल्यानदी ६ मंत्रमालानदी७ तिनके जलकरिकै कुशद्वीपवासी चारिहुवर्ण आरोग्य हैं तिनकेनाम कुशल १ कोविद २ अभियुक्त ३ कुलक ४ तहां भगवान् जात वेदस्वरूप अग्निको जानव तिनको कर्म कौशलकरिकै पूजतेहैं तेहि कुशद्वीपको सर्वदिशा में आठ ८ लक्ष योजन प्रमाण घृतोद समुद्र है ४ अथ पंचद्वीप ५ क्रौंचद्वीप सोरहलक्षयोजन प्रमाण घृतपिष्टनाम अधिपतिने अपने सातों पुत्रों को सातोंखण्डको राज्यदैकै आप हरिके चरणारविन्द को प्राप्तहोते भये खण्डखण्डके बिषे एकएकपर्वत एकएकनदी (अथपर्वतनकेनाम)सर्वतोभद्रपर्वत१ नन्दनपर्वत २ नन्दपर्वत ३ उपबर्हणपर्वत ४ भोजनपर्वत ५ बर्द्धमानपर्वत ६ शुक्लपर्वत७ (अथखण्डनकेनाम) लोहितारम्भखण्ड १ आजिघ्रखण्ड २ सधामाखण्ड ३ मेघपृष्ठखण्ड४ मधुरुहखण्ड ५ आमखण्ड ६ बनस्पतिखण्ड ७ (अथनदिनकेनाम)पवित्रवतीनदी १ बृत्तिरूपवतीनदी २ तीर्थवतीनदी ३ अर्थकानदी ४ अमृतौघानदी ५ अभयानदी ६ शुक्लानदी ७ जिनकरजल पवित्र निर्मलसेवनहार निष्पापचारिवर्ण तिनके नामपुरुष १ ऋषभ २ द्रविण ३ देव ४ पुरुष आपोमय देवजलको जलपूर्ण अंजलिकरिकै पूजते हैं तेहि क्रौंचद्वीपको सर्वदिशामें सोरहलक्ष योजनप्रमाण चीरोदसमुद्र है ५ अथ षष्ठद्वीप ६ शाकद्वीप का

बत्तिसलक्षयोजन प्रमाण है मेधातिथि अधिपति सो अपने सात पुत्रन को एक एक पर्वत एकएक नदीयुक्तके खण्ड तिनकाराज्यदैके आपु भगवान्के बिषे मति लगाइ कै तपो-बनमें प्रवेशकरते भये तहां चारिउवर्णके नाम ऋतुब्रत १ सत्यब्रत २ दानब्रत ३ अनुब्रत ४ भगवान् वाय्वात्मक पवन को नाम ताको प्राणायाम करिकै नष्ट है रजस्तम जिन कर तेपरम समाधिकरिकै पूजते हैं (अथ पर्वतनकेनाम) न्यग्रानपर्वत १ देवपालपर्वत २ सहस्रस्रोतपर्वत ३ शतकेशरपर्वत ४ बलभद्रपर्वत ५ उरुशृंगपर्वत ६ ईशानपर्वत ७ (अथ खण्डनके नाम) बहु रूपखण्ड १ चित्ररेफखण्ड २ धूम्रानीलखण्ड ३ जवमानखंड ४ मनोजवखण्ड ५ उरोजवखण्ड ६ विश्वधारखंड ७ (अथ नदिनकेनाम) सहस्रस्तुतिनदी १ पंचपदीनदी २ अपराजितानदी३ उभयस्पृष्टीनदी ४ आयुर्दानदी ५ अनवद्या नदी ६ निज-धृतिनदी७ तेहि कुशद्वीपकी सर्वदिशा में बत्तिसलक्ष योजन प्रमाण दधिरसोद समुद्रहै ६ अथ सप्तमद्वीप तेहिकी रचना सर्वतेभिन्नहै तहांसाते राजाकेदोईपुत्र रहैं सो ताद्वीप के मध्य सर्व दिशा में एक पर्वत अरु दुइ खण्ड हैं ते राजा अपने दोऊ पुत्रन को एक एक खण्डका राज्य दैकै आप योगबलते भगवत्को प्राप्तभये ८(अथद्वीपके नाम) पुष्कर द्वीप १ चौंसठि लक्षयोजन प्रमाण (अथ पर्वतनाम) मानसोत्तर पर्वत दशकोटि योजन प्रमाण ऊंचा चौड़ाहै सो चौफेरद्वीपके मध्यमें एकहीहै तेहि पर्वतपर चारिपुरी चारों-दिशा उत्तरकुवेर पुरी १ पश्चिम वरुणपुरी २ दक्षिणयमपुरी ३ पूर्व इन्द्रपुरी ४ (अथ खण्डनके नाम) जो पर्वतके द्वौदिशिहैं अर्बाचीनखण्ड पर्वत की आदि दिशामें तेहि-कर अधिपति रमणक १ पराचीन खण्ड पर्वतके परदिशामा है तेहिका अधिपतिधात कि तेहि पुष्करद्वीपके सर्बदिशामें चौंसठिलक्ष योजन प्रमाण स्वादूदक समुद्रहै ७ अरु तेहि मानसोत्तर पर्वतके ऊपर सूर्यका रथफिरै है जो सुमेरुकी सर्बदिशामें घूमै तेहिकर संवत्सरात्मकचक्र सो उत्तरायण दक्षिणायन करिकै परिभ्रमतहै अरु तेहि मानसोत्तर पर्वत की उदयास्ताचल उदय अस्तके भागते संज्ञा है यहिप्रकार सातद्वीप जम्बूद्वीप १ प्लक्षद्वीप २ शाल्मलिद्वीप ३ कुशद्वीप ४ क्रौंचद्वीप ५ शाकद्वीप ६ पुष्करद्वीप ७ सातो द्वीपका प्रमाण १२७००००० योजन सातसमुद्र क्षारसमुद्र १ इक्षुरसोदसमुद्र २ सुरोदसमुद्र३ घृतोद समुद्र ४ दधिमण्डोद समुद्र ५ क्षीरोदसमुद्र ६ स्वादूदक समुद्र ७ प्रमाण १२७००००० योजन तेहितेपरे एककोटि अट्ठावनलक्ष १५८००००० योजनभूमि और है तहां प्राणिउहैं तेहिते परे एककम चालीसलक्ष अधिक आठकोटि ८३९००००० सुवर्णकी भूमिहै तहां देवतनबिना और को गम्य नहींहै तेहिते आगे लोका लोकपर्वत है सो ध्रुवसे ऊंचाहै अरु ततनै चौड़ाहे महिकीनाभिमें सुमेरु पर्वतहै वह सोरहहजार योजन तरे अरु चौरासीहजार योजन ऊपरहै अरु धतूरा के फूलकी आकृतिहै चारिपर्वतयष्टि खम्भहैं चारिनदी चतुर्दिशा बाहिनी इलाबृत खण्डबिषे जो हैं तेहिते अरु लोकालोक पर्वत कर अन्तर साढ़बारह करोर १२५००००० सिद्धिभयो (७) एते समस्तद्वीप पृथ्वी मण्डलमें उदयास्त पर्यंतहैं तेहिके राजाएक भानुप्रताप होतभये (८) ॥

१५४ भूपप्रतापभानुबलपाई *। * कामधेनुभइभूमिसोहाई १

* ४
* * । सकलतकरोहंसादरसुखसाने ५
। सुनै
* * ।
विप्रभवनसुरभवनसुहाये * । सबतीरथनविचित्रबनाये ८

हित अनुराग १

१५५ हृदयनकछुफलअनुसंधाना । भूपविवेकीपरमसुजाना * १
करैजोधर्मकर्ममनबानी * । बासुदेवअर्पितनृपज्ञानी * २
चढ़िबरबाजिबारयकराजा । मृगयाकरसबसाजिसमाजा ३
बिंध्याचलगँभीरबनगयऊ । मृगपुनीतबहुमारतभयऊ * ४
फिरतविपिननृपदीखबराहू । जनुबनदुरेउशशिहिग्रसिराहू ५
बड़विधुनहिंसमातमुखमाहीं । मनहुंक्रोधबशउगिलतनाहीं ६
७
* ८

दो० नीलमहीधर शिखरसम देखिविशाल बराह ॥
चपरिचलेउहयसुटुकिनृप हाँकनहोइनिबाह १

१५६ आवतदेखिअधिकरवबाजी । चलेउबराहमरुतगतिभाजी १
त्वरितकीन्हनृपशरसन्धाना । महिमिलिगयउविलोकतबाना २
तकितकितीरमहीपचलावा । करिछलसुवरशरीरबचावा ३
। चलेउसँगलागा * ४
गयउदूरिघनगहनवराहू । जहँनाहींगजबाजिनिबाहू * ५
अतिअकेलबनविपुलकलेशू । तदपिनमृगमगतजइनरेशू ६
कोलविलोकिभूपबड़धीरा । भागिपैठगिरिगुहागँभीरा * ७
अगमदेखिनृपअतिपछिताई । फिरेउमहाबनपरेउभुलाई ८

दो० खेदखिन्न क्षुधित तृषित राजा बाजि समेत ॥

कुबसरितसरज तबि नु   १

तिकपटमुनिबेषा १

* ।   अगयउपराई * २

३

। मिल   ४

रिसउरमारिरंकजिमिराजा । बिपिनबसैतापसकेसाजा * ५

तासुसमीपगमननृपकीन्हा । यहप्रतापरबितेइँतबचीन्हा ६

राउतृषितनहिंतेहिपहिचाना । देखिसुबेषमहामुनिजाना ७

उतरितुरँगतेकीन्हप्रनामा । परमचतुरनकहेउनिजनामा ८

मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाय १

।

। थाम्टदुबाना * २

कोतुमकसबनफिरहुअकेले । सुन्दरयुबाजीवपरहेले * * ३

चक्रवर्त्तिकेलक्षणतोरे * । देखतदयालागिअतिमोरे * ४

नामप्रतापभानुअवनीशा * । तासुसचिवमैंसुनहुमुनीशा * ५

उँभुलाई * । बड़भाग्यपददेखेउँआई * ६

हमकहँदुर्लभदरशतुम्हारा * । जानतहौंकछुभलहोनिहारा ७

तभयउआँधियारा । योजनसत्तरनगरतुम्हारा * ८

दो० निशा घोर गम्भीर बन पन्थ न सूझ सुजान ॥
बसहु आज तुम जानि अस जायहु होत बिहान १
तुलसी जसि भवितव्यता तैसी मिलै सहाइ ॥
आपु न आवै ताहि पहँ ताहि तहां लैजाइ २

१५८ एकसै तिरपन अष्टपदी के दोहाते एकसै अट्ठावन अष्टपदी की दुइ चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब (२) तीन चारकी चौपाई को समष्टी अर्थ जेहि राजाको भानु प्रताप जीति लीनहै सोग्लानि मानिकै मन्द वैराग्य को प्राप्त ह्वै कै महा बनविषे बास करत भयो जब दैवयोग से राजा भानुप्रताप को देखेउ तब चीन्हेउ अरु जब छल कपट हृदय विषे प्राप्त भयो तब तपस्वी राजा भानुप्रताप से बोल्यो तुमको हहु यहि महा बनविषे अकेले फिरते हौ तुमको भय नहीं लागतोहै तुम्हारे तो चक्रवर्ती राजाके

इच्छयाइ ताते मोको दयालागि आईहै तहांपदार्थ जानिकै अपनी उक्ति बनाइकै कहना ताको छलकही (४) तब भानुप्रताप राजनीति की चातुर्य्यतासे बोल्यो हे महामुनीश राजा भानुप्रताप तेहिको मैं मंत्री हौं (५) शिकार खेलत सन्ते बनबिषे भुलाय गयोहौं पर यह बड़ी भाग्य भई जाते आपके चरण देखेउँ आइ (६) राजा बोल्यो हे मुनीश तुम्हारे दर्शन ते परिणाम मेरो भला समुभि परत है राजा की वाणी विषे यह अर्थ सूचित होतहै कि रावण तनविषे मोह है (७)अब तपस्वी जोहै सो राजा को जानिकै कपट सानी सत्य वानी बोलत भयो पर यह भी एक राजनीति को अंग है तब मुनिने कहाकि अन्धकार ह्वैआयोहै अरु तुम्हारो नगर इहांसे सत्तरि योजन दूरि है (८)दोहार्थ॥ पुनि बोल्यो तुम सुनहु राजा महाघोर है वन गम्भीर है पन्थ नहीं सूझै ऐसे जानिकै रातिभरि रहिजाहु भोरहोत जायहु (१) तहां गोसाईं तुलसीदास कहतेहैं कि देखो तो राजाभानुप्रताप जो ऐसो धर्म्मज्ञ विवेकमान जिसने उत्तम श्रुतिस्मृति अनुकूल संपूर्ण कर्म्म धर्म्म भगवत् समर्पण कियो उसीने भवितव्यता ताके वश होइकै कपट मुनिबिषे प्रतीति कियो तहां जैसी भवितव्यता होतिहै तैसेही सहाय मिलती है जेहिके पास जेहिकी हानिलाभ की प्रबन्ध होतीहै तहां भवितव्यता जोहै सो काहू की सहाय लैकै किधौं वाहो को वहिकै पास लैकै जातिहै कितो येहीके पास वाको लैआवति है ऐसी भवितव्यता प्रबल है तहां भवितव्यता दुइ प्रकारको है उत्तम अरु निकृष्ट तामें चारि भेद हैं एक भवितब्यता उत्तम मध्यम पूर्व संस्कारके वश है काल पाइ कै प्राप्ति होति है अरु एक भवितब्यता काल जोहै उत्तम मध्यम लग्न ग्रह नक्षत्रयोग घड़ी मुहूर्त्त इत्यादिक तिनके द्वार होइकै अपनीप्रबलता कराइ लेतिहै अरु एक भवितब्यता कुसंग सुसंग के योगसे होतिहै ये तीनिहूं भवितब्यता पृथक् पृथक् प्रबल हैं (तत्रप्रमाणं श्री अध्यात्मरामायणे श्री अयोध्याकाण्डे श्री दशरथ महाराज कैकैयीप्रसंगे श्लोकः) धीरो ऽत्यंतदयान्वितोऽपिसुगुणाचारान्वितोवाथवा नीतिज्ञोविधिवाददैशिकपरो विद्याविवेको ऽथवा॥ दुष्टानामतिपापभावितधियां संगंसदाचेद्भवेत्तद्बुद्ध्यापरिभावितोभजते साम्यं क्रमेणास्फुटम् ॥ अरु एक भवितब्यता श्री रामचन्द्रजी की इच्छा है सो श्री रामचन्द्र जी अपनीइच्छा अपने दासनपर करतेहैं तहां भानुप्रताप पर श्रीरामकी इच्छाही भवि-तब्यता जानिये काहे ते कि श्री रामचन्द्रजू को सखा है श्री रामचन्द्र जी ने पूर्व ही प्रेरणा कीनहै कि तुम प्रकृति मण्डल में जाहु हम तुम्हारे संग रणक्रीड़ा करहिंगे तहां भानुप्रताप आज्ञालैकै प्रकृति मण्डल में तो आयो पर ऐसी भक्तिकियो कि यही तन में श्री रामचन्द्रको प्राप्तहोउँ काहेते राजा को अपने स्वरूप को ज्ञानबना रहेउहै जब श्री रामचन्द्रजी अपनी परामाया की प्रेरणा करिकै रावण तनमें रणक्रीड़ा करहिंगे तब प्राप्त करैंगे ताते यह भवितब्यता भईहै जो श्री रामचन्द्रजी अपने दासन को विकार भवितब्यता करते हैं तो परिणाम परम हितको कारणहै (२) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे राजाभानुप्रतापदिग्विजय कपटमुनिमिलाप वर्णननाम ——तिलकतरंगः २७ ॥

दो० रामचरण वसुविंश में नृप मुनि संग निवास ॥
कपटी मुनि पाखण्डमय संभाषण विश्वास २८

१५९ भलेहिनाथआयसुधरिशीशा । बांधितुरँगतरुबैठमहीशा १
नृपबहुभांतिप्रशंसेउताही * । चरणबन्दिनिजभाग्यसराही २
पुनिबोलेउमृदुगिरासुहाई * । जानिपिताप्रभुकरौंढिठाई ३
स्वहिंमुनीशसुतसेवकजानी । नाथनामनिजकहौबखानी ४
तेहिनजाननृपनृपहिसोजाना । भूपसुहृदसोकपटसयाना * ५
बैरीपुनिक्षत्रीपुनिराजा * । छलबलकीन्हचहैनिजकाजा ६
समुझिराजसुखदुखितअराती । आवांनलइवसुलगैछाती ७
सरलबचननृपकेसुनिकाना * । बैरसँभारिहृदयहरषाना * ८

दो० कपट बोरि बाणी मृदुल बोला युक्ति समेत ॥
नाम हमार भिखारि अब निर्द्धन रहितनिकेत १

१५९ जब मुनिने राजासे कहा कि आजुराति रहिजाउ तब राजाने कहा कि आपको आज्ञा शीशपर है यह कहिकै घोड़ाको वृक्षके नीचे बांधिकै मुनिके पास बैठ्यो तब मुनिने राजाको कछुक फल मूलकन्द भोजन करायो (१) दुइकी चौपाईते आठ की चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (८) दोहार्थ ॥ तहां राजा मुनिकोनाम बूझतभयो तब राजाकी निष्कपट सरल बाणी सुनिकै मुनि कपटसानी कोमल बाणी अरु युक्तिक रके अर्थ समर्थ न करतहै नाम हमार भिक्षुकहै काहेते हम निर्द्धन हैं अनिकेतहैं यह अर्थको समर्थ न भयो कि जबते तैं हमारी राज्य छीन लीनहै तबते हमनिर्द्धन अनिकेत भये ताते हमारो भिखारीनाम है आकाशवृत्ति बैठेहैं यह गर्भित अर्थ सिद्धभयो अरु राजाको प्रत्यक्ष शब्दार्थ सिद्ध है (१) ॥

१६० कहनृपजेविज्ञाननिधाना । तुमसारिखेगलितअभिमाना १
सदाअपनपौरहहिंदुराये * । सर्बबिधिकुशलकुवेषबनाये २
तेहितेकहहिंसंतश्रुतिटेरे । परमअकिंचनप्रियहरिकेरे * ३
तुमसमअधनभिखारिअगेहा । होतविरंचिशिवहिसंदेहा * ४
योसिसोसितवचरणनमामी । मोपरकृपाकरहुअबस्वामी * ५
सहजप्रीतिभूपतिकैदेखी * । आपुविषयविश्वासबिशेषी * ६
सबप्रकारभूपहिअपनाई । बोलाअधिकसनेहजनाई * ७
सुनुसतिभावकहौंमहिपाला । इहांबसतबीतेबहुकाला * * ८

दो० अबलगि मोहि मैं न जनायउँ काहु ॥
करितप ....हु १
सुवेष भूलहिं मूढ़ न चतुर नर ॥
...िय बचन सुधासम अशन अहिं २

१६० इहां पांच चौपाई की एकही अन्वय जानब तब मुनिकी वाणी नीचनु-सन्धान सुनिकै राजा बोलतभयो हे महा मुनीश जे पुरुष तुम सारिखे विज्ञानके निधान अभिमान रहित हैं (१) ते सदा अपनपौ दुराये कुवेष बनाये रहते हैं पर सब प्रकार ते वोई पुरुष कुशल हैं (२) यही लच्छणन ते श्रुति सन्त टेरिकै कहते हैं कि निष्कं-चन जे आपु सरिस पुरुषहैं तेई प्रभुको प्रियहैं (३) हे महा मुनीश्वर तुम ऐसे अधन अगेह भिखारी जे हैं तिनकी महा तपस्या देखिकै शिव विरंचिको सन्देह होत है कि हमारो लोक न लैलेइँ (४) मैं तुम्हारी महिमा का जानिसकौंगो जो तुमही सो तुमहीं हौ मैं तुम्हारे चरणनको बारबार नमस्कार करतहौं हे स्वामी अब मोरे ऊपर कृपा करहु (५) तब शिव कहते हैं हे पार्वती मुनि जो है तेहिने भूपतिकी प्रीति प्रतीति विश्वास अपने बिषे विशेष जान्योहै (६) मुनि जोहै सो अनेक प्रकारकी युक्ति करिकै सब प्र-कारते राजाको आपनकरि अति स्नेह जनाय बोलत भयो (७) हे महिपाल मैं सब जानत हौं अब तैं मन वचन कर्मसे मोर भयस है मैं तोसे सत्यभाव कहत हौं यहां कहीयहि स्थान बिषे मोको बसत बहुकालबीते हैं राज का पदके अर्थ सिद्धि है अरु तपस्वी की वाणी बिषे यह अर्थहै कि जब से मेरोराज्य नष्टभईहै तबते यहीबनबिषे मैं बसेउँ हौं तबते बहुकाल बीत्योहै तहां बहुकाल कही बहुबचन को जहां तीनि दण्ड तीनि पहर तीनि दिन तीन मास तीनि वर्ष इत्यादिक तीनिसंज्ञा बहु वचनकी हैं ताते बहु काल कहेउ है (८) दोहार्थ ॥ ऐसे अर्थ दोहा बिषे जानब हे राजन् अब लगि मोको कोई नहीं मिल्यो है अरु मैंने काहूको जनायो भी नहीं काहेते कि लोककी मान्यता जारि डारीहै किन्तु लोकमान्यता बनसम उसे तपरूप अग्निमें जराइदीनहै इहां व्यंज-ना करिकै अर्थ समर्थन करत हैं कि जबसे बन बिषे आइ बसेउँ हौं तबसे आज तई तुमहीं हमको मिलेहौ और कोईनहीं मिलेउ है सो सत्यै कहतहै काहे ते कि ग्लानि मानिकैमहाबन बिषे एकान्त टिकोहै जो कोई कहै कि तपस्वी राजाको मित्र राक्षस सो दिनप्रति मिलतहै तहां उनदोनोंने तो एकही संग बनबासकियोहै तहां दुइको प्रयोजन नहींहै एकहीकाहै (१) सोरठार्थ ॥ श्रीगोसाईं तुलसीदास जू कहते हैं कि सुन्दरवेष सुन्दरवाणी देखि अरु सुनिकै मूढ़ प्राणी भूलि जाते हैं कपटी कैसेहैं जैसे मयूरवेष बाणी सुधासम सुन्दरि अरु सर्पखात है ताते चतुर नहीं भूलतेहैं काहेते चतुर नर जोहैं उ-ननें सुष्टुबेष सुष्टु बाणी जब किसूमें देख्यो सुन्यो तब दुइचारि दिन घड़ीदुइचारि बिषे वेष में स्वभावक्रियाअरुबाणीकी सचाई कपट सबबिचारिकै प्रतीति करतेहैं तुरन्त नहीं प्रतीति करतेहैं परन्त वेषमानिकै पूजतेहैं ...... कियोहै काहेते राजा भगवत् की इच्छा जो भवितव्यता तेहिने मूढ़ ह्वैगयो है (१) ॥

माखेलखनकुटिलभइँभौंहैं। रदपुटफरकतनयनरिसौंहैं * ८

दो० कहिनसकत रघुबीर डर लगेबचन जनुबाण॥
शिरबोले गिरा प्रमाणा १

२५१ कोई काकरै यह लाभकै हेको नहींभावै पर शङ्करको चाप काहू न चढ़ावा यह वचनमें व्यंग्यहै कि बिना पौरुष के लालसा का करतेहौ (१) चढ़ाउब तोरब यहतौ रहा पर तिलभरि भूमिहूतौ कोऊ नहीं छुड़ाइ सक्यो (२) यह जनकजू कहतेहैं कि जेतेभटहौ जिनके बीरत्वकर मानहै ते सब कोई अब माख न मानैं काहेते कि बीर बिहीन तीनिहू लोक को हमनेजाना (३) अब आश तजितजि अपने अपने गृहको जाहुकाहेते बिधातैं अपनी सृष्टिविषे वैदेहीको बिवाहै नहीं लिख्योहै (४) अरु जो अपने प्रण को छोंडिदेउँ तौ सुकृतऊ जाइ ताते कुंवरि जो कुँवारि रहै तौ मैंका करौं परमेश्वरकी यही इच्छाहै ५ ; जो प्रथमही मैं जानतो कि बिनाभटकी पृथ्वीहै तौ यह प्रणकरिकै अपन अरु सबको हँसौवा काहेको करावतो (६) यह जनकजीको बचन दीनतालिहे सुनिकै पुरके सम्पूर्णनरनारि श्री जानकीजीको देखिकै दुःखित भये यहां वात्सल्यरस है (७) हे पार्वती यह जनकको बचन सुनिकै लक्ष्मणजू माखिउठे भृकुटी अधिक टेढ़ी ह्वैगई रदकही दशननके पट दोउअधर फरकनेलगे अरु नयन रिससन्ते रूपसंयुक्त अरुणारे ह्वैआये यही वीररसके सञ्चारीहैं (८) दोहार्थ॥ रघुवीर को डेराइकै कछुबोलि नहीं सकते पर जनकने बचन जो कहा कि बिनाबीर पृथ्वीहै सो सुनिकै बाणसारिखेलगे तथापि नहीं रहिगयो श्री रामचन्द्रके पदपद्मविषे माथनाइकै करजोरिकै प्रमाणकही यथार्थबाणी बोलतेभये (१)॥

२५२रघुबंशिनमहँजहँकोउहोई। त्यहिसमाजअसकहैनकोई १
कहीजनकजसअनुचितबाणी। बिद्यमानरघुकुलमणिजानी २
सुनहुभानुकुलपंकजभानू *। कहौंस्वभावनकछुअभिमानू ३
जौतुम्हारअनुशासनपाऊं *। कंदुकइवब्रह्मांडउठाऊं * ४
काचेघटजिमिडारौंफोरी *। सकौंमेरुमूलकइवतोरी * ५
तवप्रतापमहिमाभगवाना *। कोबापुरोपिनाकपुराना * ६
नाथजानिअसआयसुहोई। कौतुककरौंबिलोकियसोई ७
कमलनालजिमिचापचढ़ावौं। योजनशतप्रमाणलैधावौं ८

दो० तोरौं छत्रक दण्डजिमि तव प्रताप बलनाथ॥
जोनकरौं प्रभुपदशपथ कर नधरौं धनुभाथ १

२५२ लक्ष्मणजू बोले हे जनकजू जेहि समाजमें रघुवंशी एक कोई होइ तेहि में अस कोई न कहै जस तुमने कहाहै (१) जस अनुचित तुमने कहा सो अस नचा-

* । तपबलअ *

* ।

अथउनृपहिमुनिअतिअनुरागा । कथापुरातनकहइसोलागा ५

कर्मधर्मइतिहासअनेका * । करैनिरूपणविरतिविवेका ६

उद्भवपालनप्रलयकहानी । कहेसिअमितआश्चर्यबखानी ७

सुनिमहीशतापसबशभयऊ । आपननामकहनतबलयऊ ८

कहतापसनृपजानोंतोहीं । कीन्हयोकपटलागिहितमोहीं ९

सो० सुनु महीश असनीति जहँ तहँ नामन कहहिं नृप ॥

मोहिं तोहिं पर प्रीति सोइ चतुराई निरखि तब १

१६२ तहां आपहू तौ राजा पुनि पण्डित है अरु भानु प्रताप को जनावत है कि येभी पण्डित हैं ताते युक्ति ते एक तनु अर्थ को पुष्ट करैहै हे तात यह जो मैंने कहा है सो सुनिकै अपने मनमें आश्चर्य जान करहु जब तपस्या निर्विघ्न होइ तब कछु पदार्थ दुर्लभ नहीं सब सुलभ है (१) हे तात तपके बलते ब्रह्मा सृष्टि करते हैं विष्णु पालन करते हैं (२) हे तात तपके बलते शम्भु संहार करते हैं अरु तपके बल ते शेष महिका भार धरते हैं (३) तपहीके आधरते सब सृष्टि है हे राजन् तप ते कछु अगम नहीं है (४) यह बात तपस्वीकी सुनिकै अति अनुराग भयो है तब तपस्वी पुरातन कथा कहन लग्यो (५) कर्मकांड धर्म अनेकन इतिहास अरु वैराग्य विवेक अच्छे प्रकार से निरूपण करैहै (६) तहां तपस्वी राजा तौ हईहै सब शास्त्रका विषय जानैहै अरु राजा भानु प्रतापको सब बिधिते जानैहै ताते यहि संसारकी उत्पति पालन प्रलय की बिधि यथार्थ कहैहै अरु अमित युक्ति बनाइकै आश्चर्यकी भी बातें कहैहै (७) यह सब सुनिकै राजा तपस्वीके बशभयो तब आपन नाम कह्यो (८) तपस्वी बिहँसिकै बोल्यो हे राजन् मैं तोको जानतहौं जो तैं कहेसि कि मैं राजाको मन्त्रीहौं अरु आपन नाम नहीं कह्यो यह कपट मोको नीक लाग्यो है (९) सोरठार्थ ॥ काहे ते हे राजन् यह राजनीति वेद कहत हैं कि राजाओंको अपना नाम जहां तहां न कहा चाहिये ताहीते तेरी चातुर्यता बिचारिकै तेरे ऊपर मेरी बड़ी प्रीति भईहै यह सब तपस्वीका कहना बुद्धिके प्रकाशते युक्तिके अर्थ समर्थ करिकै आपन करैहै (१) ॥

१६३ नामतुम्हारप्रतापदिनेशा * । सत्यकेतुतवपितानरेशा * १

गुरुप्रसादसबजानौंराजा * । कहौंनआपनजानिअकाजा २

देखिताततवसहजसुधाई * । प्रीतिपुनीतनीतिनिपुणाई * ३

उपजिपरीममतामनमोरे * । कहौंकथानिजपूंछेतोरे * ४

अबप्रसन्नमैंसंशयनाहीं * । मांगुजोभूपभावमनमाहीं * ५

सुनिमुनिवचनभूपतिहरषाना। गहिपदविनयकीन्हिविधिनाना ६
कृपासिंधुमुनिदर्शनतोरे * । चारिपदारथकरतलमोरे * ७
प्रभुहितथापिप्रसन्नबिलोकी। मांगिअगमबरहोउँविशोकी ८

दो० जरा मरण रहित तनु समर जितै नहिं कोउ ॥
महि राज कल्प शत होउ १

राजन् तुम्हारा नाम भानुप्रतापहै सो मैं जानतहौं ताते जहां ताइ सूर्य को उदय अरु ऊर्ध्व अथ चक्रफिरै अरु प्रकाश प्रताप छैरह्योहै तहांतक तुम्हारोराज्य है ताते तुम्हारो भानुप्रताप नामहै अरु तुम्हारे पिताको सत्यकेतु नाम रह्योहै काहेते तुम्हारे पिताके सत्यताकी पताका अद्यापि फहराति है ताते सत्यकेतु नामकह्यो अरु तुमको राज्यदैकै आपु महातप करिके सत्य जो भगवान्‌हैं तिनको प्राप्तभये तातेसत्य-केतु ऐसो पितातुम्हार ताते तुम धन्यहौ यह आश्वासन राजाको कियो (१) हे राजन् यह सब मैं गुरुनके प्रसादते जानतहौं मैंने अपने गुरुनको तनमन बचन धनधर्मसमर्प-णकरिदीनहै तब गुरुनने कृपाकीनहै गुरुनकी कृपाते मोकोसब सुलभहै पर यह किहूसे कहना नहीं जहां तहां अपनी वस्तु कहेते अपनै अकाज होतहै तपस्वी यह सब सत्य अपनेविषे गुरुत्व है याते कपटभया (२) तपस्वी कहतहै हे तात तु सुधाई देखिकै मैं प्रसन्नभयोहौं एकसूधा केवल अज्ञानी को कहैं अरु एकसूधा ज्ञानीको कहौ परनिष्कपट निश्छल निर्दम्भप्रवीण तहां तपस्वी कहतहै हे राजन् तू निपट सूधाहै काहेते मोरेऊपर पुनीत प्रीतिकिहेसि अरु तैं नीतिमें अति निपुणहै स तहां तपस्वी तौ यहबचन कहिकै अतिशय प्रतीति अपनेविषे करावैहै परउसकी बाणी विषे कविजन यह धुनिनिकारतहैं कि हे राजन् तू तौ ज्ञानवान् सूधाहै परभाविलब्धता के बशमोहिं ऐसे पाखण्डीविषे प्रतीति किहेसि ऐसो नीतिमान् होइकै अबतैं सूध अज्ञा-नीहै (३) हे तात तोरे ऊपरमोरि बड़ी ममता उपजीहै यह जो सब कहेउँ है अरु कहतहौं सोतोरे पूंछेसे नहीं तौ यह कहिबे योग्यही नहींहै (४) अब मैं प्रसन्नहौं तुम निस्सन्देह वरमांगहु (५) सुन्दर बचन सुनिकै राजाहर्षको प्राप्तभयो पुनिपदगहि कै बहुत बिनयकीन (६) हे कृपासिन्धु मुनितुम्हारे दर्शनते मोकोचारिहू पदार्थ सुल-भहैं (७) तथापि आपु मोरेऊपर प्रसन्नहहु ताते ऐसो बरमांगौं जातेविशोक होइजाउँ (८) दोहार्थ ॥ हे नाथ यहबरदेउ जराजोहै वृद्धता अरु मरण अरु सर्वविकार रहित मोर तनुहोइ अरु समरविषे मोसे कोई नहींजीतै अरु शतकल्प तांईं राज्यहोइ जहां ब्रह्माके वर्षको कल्पकहेउहै अरु एक छत्रपतिमैं होउँ मेरीरिपुहीन महिहोइ (१) ॥

१६४ कहतापसनृपऐसेहिहोऊ । कारणएककठिनसुनुसोऊ १
वपदनाइहिशीशा । एकविप्रकुलछांड़िमहीशा २
सदाबरिआरा * । तिनकेकोपनकोउरखवारा ३

जोविप्रनबशकरहुनरेशा * । तौतवबशविधिविष्णुमहेशा ४

। सत्यकहौंदोभुजाउठाई * ५

बिनगुनुमोहपाला । तोरनाशनहिंकवनेउ काला

* । * ७

तवप्रसादप्रभुकृपानिधाना । मोकहँसर्वकालकल्याना * ८

दो० एवमस्तु कहि कपट मुनि बोला कुटिल बहोरि ॥

मिलब हमार भुलावजनि कहहु तौ हमहिं न खोरि १

१६४ तब तपस्वी बोल्यो हे नृप ऐस तुमने बरमांग्योहै तैसेही होय पर तहां एककारण कहितहै सो सुनहु (१) कालजो है सोऊ तुम्हारे पदमें शीशनाइहि पर एक ब्राह्मण कुलको छोड़िकै (२) काहेते तपके बलसे बिप्र सदा बरिआरहैं तिनके कोपसे कोऊरक्षक नहींहैं कहत यथार्थहै परयहिके आगे ब्राह्मणोंसे शापदिवावै कोहै ताते अबहींसे एकाहूति करावतहै (३) हेराजन् जो किसी यत्नते ब्राह्मणोंको बशकरहु तौ तुम्हारे बश बिधि विष्णु शिवहोहिंगे (४) बिप्रकुलते बरिआई नहीं चलै यह मैं दुनों भुजा उठाइकै सत्य सत्य कहत हौं यहि बात बिषे यह धुनि है जाते ब्राह्मण सेवतिकै बोलावै (५) हे महिपाल बिना ब्राह्मण के शाप कवनेहु कालमें तोर नाश नहीं है यहि बातमें यह आशय है कि तेरो पराजय बिना बिप्र शाप और कोटिहू यत्न ते नहीं है सो मैं करावोंगो (६) जब यह मुनिने कह्यो तब राजा हर्ष को प्राप्त भयो हे नाथ अब तुम्हारी कृपा मोपर भई है यहिते मेरो नाश कबहूं नहीं है देखिये तौ छलकी बातन बि॰ कालबश ऐसी प्रतीति भई (७) राजा बोल्यो हे नाथ अब तुम्हारे प्रसादते मोको सर्वकाल कल्याण है (८) दोहार्थ॥ कपटमुनि बोल्यो एवमस्तु पर हमारो मिलाप आप न भुलाउब जो किसूसे कहौगे तब तुम्हारो अकाज होइ तौ हमारो दोषनहीं अपनो चतुराईते राजाको चतुर जानिकै किसूसे कहना रोंकिदियोहै (१)॥

१६५ तातेमैंतोहिंबरजौंराजा * । कहेकथातवपरमअकाजा १

छठेंश्रवणयहपरतकहानी । नाशतुम्हारसत्यममबानी * २

यहप्रकटेअथवाद्विजशापा । नाशतोरसुनुभानुप्रतापा * ३

आनउपायनिधनतवनाहीं । जोहरिहरकोपहिंमनमाहीं ४

सत्यनाथगहिपदनृपभाषा । द्विजगुरुकोपकहहुकोराखा ५

राखहिंगुरुजोकोपबिधाता । गुरुबिरोधनहिंकोउजगत्राता ६

जोनचलबहमकहेतुम्हारे * । होयनाशनहिंशोचहमारे * ७

एकहिडरडरपतमनमोरा * । प्रभुमहिदेवशापअतिघोरा * ८

वश कहहुकृपाकरि सोउ ॥

म सोंज दीनदयालु निज हितू न देखौं कोउ १

टी० हे राजन् ताते तुम को बर्जत हौं यह कथा जो और काहू ते कहहुगे तो तुम्हार परम अकाज होइ गो मोर दोष नहीं जानब (१) यह बात तुम जानो क्षिती मैं जानो हौं छठयें श्रवण विषे जब यह परिहै तौ तुम्हार नाश जरूर होइहि यहि बाणी विषे अलंकार से दुइ अर्थ सत्य भये कि जो राजा किसूसे यह बात कहैगो तौ जोराजाके बड़े बड़े बुद्धिमान् मंत्री हैं वे समुझिकै मेरोनाश करिडारैंगे अरु जब कपट मुनि अपने मित्रसे यहप्रसंग कहैगो छठें श्रवण परैगो तब राजाके नाशको कारणहोइगो (२) अथवा यह प्रसंग प्रकटत सन्ते ब्राह्मण कै शाप होइहि जब कपट मुनि अपने मित्र ते प्रकट करिहि तब द्विज शाप अरु कोपको कारण होइहि अरु जब नभ बाणी प्रसंग को कारण प्रकटिहि तब शाप होइहि (३) पुनि गर्भित वाणी कहत है यहदृढ़ निश्चय कियो कि राजा को नाश केवल ब्राह्मण के शापते होइगो और कोटिहू यत्नते नहीं है अरु राजा को वेद वाक्य से सत्य प्रतीति करावै है (४) आगे राजाकी वाक्य दोहू तहूँ अक्षरार्थ जानब (१) ॥

१६६ सुनुनृपबिबिधयतनजगमाहीं।कष्टसाध्यपुनिहोहिंकिनाहीं१

अहहिएकअतिसुगमउपाई। तहांपरन्तुएककठिनाई * * २

ममआधीनयुक्तिनृपसोई *। मोरजाबतवनगरनहोई * * ३

आजुलगेअरुजबतेभयऊं * । काहूकेगृहग्रामनगयऊं * * ४

जोनजाउँतौहोइअकाजू * । बनाआइअसमंजसआजू * *५

सुनिमहीशबोल्योमृदुबानी । नाथनिगमअसनीतिबखानी ६

बड़सनेहलघुनपरकरहीं *। गिरिनिजशिरनसदातृणधरहीं७

जलधिअगाधमौलिबहफेनू । संततधरणिधरशिररेनू * * ८

दो० अस कहि गहे नरेश पद स्वामी होहु कृपालु ॥

मोहिं लागि दुख सहिय प्रभु सज्जन दीनदयालु १

१६६ हे नृप विप्रन को वश करिबे की अनेकन यत्न जगत् विषेहैं पर अति कष्टते साध्य हैं तामें सिद्धि होइ अथवा न होइ (१) हे राजन् एक उपाय सुगमहै पर ताहू में एक बात कठिन है (२) काहेते वह युक्ति मेरे आधीन है अरु तुम्हारे नगर विषे मेरो जाब नहीं होइगो (३) काहेते आजुते अरु जबते मैं भयोहौं तबते काहूके गृह ग्राम विषे यह आसन छोड़िकै कबहूं नहीं गयों यहि वचन विषे अपनो बैराग्यआसन दृढ़योग सिद्धि राजाको देखावत भयोहै अरु अपने विषे राजाको गुरुत्वदृढ़ता करावत भयो अरु अपनेको यह कहतहै कि जबतेमैं मुनिवेष बनाइकै बन विषे बैठेउँ है तबते कबहूं नहीं गयों पर राजै जाना कि आदि सृष्टिके पुरुष ये हैं (४) पर तैं मोर परम सेवक है अब जो तोरे इहां न जायँ तौ तोर परम अकाज है अरु मोर नेमहै कि मैं कहूं नहींजाउँ

यह असमंजसहै अरु यहिकी बाणी विषे यहध्वनिहै कि जो न जाउँ तौ मोरई अकाज है अरु जाउँ यदि कोई चीन्हिलेइ तब अनर्थ होइ यह असमंजस है किन्तु अपने मनहिं में यह विचार कियोहै (५) आगे छः सात दुइचौपाई का अर्थ अक्षरार्थैहै (७) यहि प्रसंग विषे केवल कपट पाखण्ड बाणी कपट मुनि कहिकै आपन कार्य करत है अरु राजा भवितव्यता के बश होइ कै मूर्ख है गयो है ॥

ौ० [illegible]

[illegible] २

[illegible]

[illegible] * । [illegible]हिंअबकरियदुराऊ * ४

[illegible]मैंकरौं[illegible] * * । तुमपरसहुमोहिंजाननकोई * ५

[illegible]जोइजोइभोजनकरई । सोइसोइतवआयसुअनुसरई ६

पुनितिन्हकेगृहजेंवैजोऊ * । तवबशहोइभूपसुनुसोऊ * * ७

जाइउपायरचहुनृपएहू * । संबतभरिसंकल्पकरेहू * * ८

दो० नित नूतन द्विज सहस शत बरेहु सहित

मैं तुम्हरे संकल्प लगि दिनहिं करब जेवनार १

०९८ [illegible]हिबिधिभपकष्टअतिथोरे । होइहैंविप्रसकलबशतोरे १

करिहैंवि[illegible] [illegible]वा * । २

[illegible] [illegible]वाऊ * * ।

[illegible]राया * *

* * ।

[illegible]

[illegible]हिं * । [illegible] ८

[illegible] ॥

[illegible] १

यहि प्रसंग में एकसै छाछठि अष्टपदी की आठवीं चौपाई ते एकसै अड़सठि अष्टपदी के दोहा ताईं अक्षरार्थै जानब (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेकपटमुनिपाखण्डवर्णनंनामअष्टविंशतिस्तरंगः ॥ २८ ॥

दो० रामचरण उन्नतिस लहरि रविप्रताप लहिशाप ॥

देवस्तुतिरावणविजय भूमि विकल भयदाप २९

१६९ शयनकीन्हनृपआयसुमानी । आसनजायबैठछलज्ञानी १

श्रमितआई * । सोकिमिसोवसोचअधिकाई २

कालकेतुनिशिचरतहंआवा । जेहिशूकरह्वैनृपहिभुलावा ३

अतिकपटप्रबेरा * ४

दशभाई । खलअतिअजयदेवदुखदाई ५

प्रथमहिंभूपसमरसबमारे * । विप्रसन्तसुरदेखिदुखारे * ६

तेहिखलपाछिलबैरसम्हारा । तापसनृपहिमिलिमंत्रविचारा ७

जेहिरिपुक्षयसोइरचेसिउपाऊ । भावीबशनजानकछुराऊ ८

दो० रिपुतेजसी अकेल अपि लघुकरि गनियन ताहु ॥
अजहुदेत दुखरविशशिहि शिर अवशेषित राहु १

टी० सब प्रकार ते अपनाइ कै कपट मुनि बोल्यो हे राजन् तुमश्रमित हहु रात्रो दुइयाम बीती अबचलो हम बताइ देइँ तहां जाइकै शयन करहु भूप शयन कीन्ह आपु छल ज्ञानी आसन पर बैठोजाइ (१) राजा श्रमित सोइ गयो अरु कपट मुनि को शोच है कैसे नींद परै (२) ताही समय विषे कालकेतु नाम निशिचर तेहि के पास आयो जेहिने शूकररूप धरिकै राजा को भुलायो रहै प्रथम कालकेतु वन विषे फिरत रहेउ ताही ने राजा को देखि कै शूकर रूप धरेउ रहै अरु वाही मग विषे भुलाइकै लैगयो जहां कछुक दूरि कपट मित्र को आसन रहै (३) सो राक्षस तापस नृप को परम मित्र है सो अतिशय मायावी कपट बहुत जानै है (४) आगे राक्षस जब अपनी राज्य पर रहै तब तेहिके दशभाई अरु शत पुत्र रहैं वहखल बड़ो अजय काहू ते जीता न जाय अरु देवादिकों को दुःख दाता रहै (५) प्रथमहिं राजाने देवादि को दुःखित देखिकै समर विषे ताही को जीत्यो (६) हे भरद्वाज वाही खल ने पाछिल बैर समुझि कै तापस नृप से मिलिकै मंत्र कीन (७) जाते रिपुकै क्षय होइ सोई उपाय रचेसि राजा भानुप्रताप ने भावीबश मुनि के कपट रूप वचन न जाने (८) दोहार्थ ॥ तहां यह नीति कहते हैं कि रिपु ऋण रोग इनको लघु न जानै देखिये तो शिरबिना राहु रवि शशि को दुःख देत है (१) ॥

१७० तापसनृपनिजसखहिनिहारी। हर्षिमिलेउउठिभयउसुखारी १

मित्रहिकहिसबकथासुनाई । यातुधानबोलासुखपाई * २

अबसाधेउंरिपुसुनहुनरेशा । जोतुमकीन्हमोरउपदेशा * ३

परिहरिशोचरहहुअबसोई।बिनुऔषधिहिव्याधिविधिखोई ४

कुलसमेतरिपुमूलबहाई * । चौथेदिवसमिलबहमआई ५

तापसनृपहिबहुतपरितोषी । चलामहाकपटीअतिरोषी ६

भानुप्रतापहिबाजिसमेता । पहुँचायेसिक्षणमाहिंनिकेता ७
नृपहिरानिपहँशयनकराई । हयगृहबांधेसिबाजिबनाई ८
दो० राजा के उपरोहितहि हरि लैगयो बहोरि ॥
लैराखेसि गिरिखोहमहँ मायाकरिमति भोरि १

१७१ आपुबिरचिउपरोहितरूपा । परयोजाइतेहिसेजअनूपा १
जागेउनृपअनभयेबिहाना * । देखिभवनअतिअचरजमाना २
मुनिमहिमामनमहँअनुमानी । उठेउगवहिंजेहिजाननरानी ३
काननगयउबाजिचढ़ितेही । पुरनरनारिनजानेउकेही * ४
गयेयामयुगभूपतिआवा * । घरघरउत्सवबाजबधावा * ५
देखतजबराजाचकितबिलोकिसमुभिस्वइकाजा ६
युगसमनृपहिगयेदिनतीनी । कपटीमुनिपदरहिमतिलीनी ७
समयजानिउपरोहितआवा । नृपहिमतोसबकहिसमुभावा ८
दो० नृप हर्षे पहिचानि गुरु भ्रम बश रहा न चेत ॥
बरे तुरत शत सहस बर विप्र कुटुम्ब समेत १

१७० यह प्रथम भरद्वाज प्रति याज्ञवल्क्य को वचन कविने कहा तापस नृप अरु राक्षस मित्र की बतकही कहि कै पुनि मिलाप तेहिके आगे कहा तहां यह सिंहवलोकन काव्य है छन्दके प्रथम चरण के अन्त में जो पद को अनुप्रास परै सोई दूसरे चरण के प्रथम परै यही रीतिते चारिहू चरण विषे परै ताते यह प्रसंग को अर्थ सिंहावलोकनि गोसाईं ने कहा है हेभरद्वाज तापस नृप अरु राक्षस को संवाद हम ने तुम से प्रथम कहा पुनि मिलाप सुनहु जब तपस्वी को सखा राक्षस आयो तब तापस नृप राक्षस मित्रसे भानुप्रताप अरु अपने मिलापका सब प्रसंग कहि गयो तब यातुधान सुख पाइकै बोलत भयो एक अरु दो चौपाई को मिलित अर्थ है (१-२) आगे चौपाइनके अर्थ अक्षरार्थ जानब (एकसै सत्तरि अष्टपदीकी तीनि चौपाई से एकसै इकहत्तरि अष्टपदी की आठ चौपाईं ताईं समष्टी अर्थ) कपटी मुनिको मित्र राक्षस वह महामायावी रहै अपने मित्रको सब प्रकार ते बोध करिकै राजा को घोड़ समेत एक क्षणमें उसके निवासमें पहुंचाइ दियो राजा को रानी के पास राख्यो घोड़ा हयशालामें बांध्यो राजाने जागिकै आश्चर्य मान्यो वाही घोड़ेपर चढ़िकर बनको गयो पुनि दुइ पहर बीते आयो पुरमें आनंद भयो अरु राक्षसने राजाके उपरोहितको पर्बत की खोहमें राख्यो आप ताहीको रूप बनाइकै आयो राजै कैसे चीन्ह्यो रूपतो एकही तहां उपरोहितने स्वप्नहि बिषे कछु लक्ष कराइ दियो कि हम आये पुनि वहि राजा सों एकांतमें सब कह्यो है (८) ॥

१७२ उमयाहितउघमनारवनाई । कुरसचारारबोधउकप्युतगाई १
मायासयतोहिंकीनिरसोई । हयंजनबहुगनिसकैनकोई * २
विविधमृगनकरग्रामिषरांधा।तेहिमहँबिप्र मांसखलसांधा ३
* । पदपरखाग्निसादखबैठा * ४
भेजसकामबाणीतेहिकाला ५
बिप्रवृन्दउठिउठिगृहजाहू * । हैबड़िहानिअन्नजिनखाहू ६
भयउरसोईभूसुरमांसू * * । सबद्विजउठेमानिविश्वासू * * ७
भूपबिकलमतिमोहभुलानी । भावीबशनग्रावमुखबानी * ८
० बोले बिप्र सकोप तब नहिं कछु कीन्ह बिचार ॥
जाइ निशाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार १

१७३ छत्रिबन्धुतैंबिप्रबोलाई * । घालेलियेसहितसमुदाई * १
ईश्वरराखाधर्महमारा * * । जैहसितैंसमेतपरिवारा * * २
संबतमध्यनाशतवहोऊ * * । जलदातानरहैकुलकोऊ * ३
नृपसुनिशापबिकलअतित्रासा । भईबहुरिवरगिराअकाशा ४
बिप्रहु शापबिचारिनदीन्हा । नहिंअपराधभूपकछुकीन्हा ५
चकितबिप्रसबसुनिनभबानी । भूपगयेजहँभोजनखानी * ६
तहँनअशननहिंबिप्रसुआरा । फिरेउराउमनशोचअपारा ७
सबप्रसंगमहिसुरन्हसुनाई * । त्रसितपरेउअवनीअकुलाई ८
दो० भूपति भावी मिटै नहिं यद्यपि दोष न तोर ॥
किये अन्यथा होइ नहिं विप्र शाप अति घोर १

१७४ असकहिसबमहिदेवसिधाये । समाचारपुरलोगनपाये १
शोचहिंदूषणदैवहिदेहीं * । बिचरतहंसकागकियजेहीं २
उपरोहिततिहिभवनपहुँचाई । असुरतापसहिखबरिजनाई ३
तेइँखलजहँतहँपत्रपठाये * । सजिसजिसेनभूपसबधाये * ४
घेरेनिनगरनिशानबजाई * । विविधभांतिनितहँपरीलराई ५
जूझेसकलसुभटकरिकरणी । बन्धुसमेतपरेउनृपधरणी ६
सत्यकेतुकुलकोउनबांचा । विप्रशापकिमिहोइअसांचा ७
रिपुहिजीतिनृपनगरबसाई । निजपुरगवनेजययशपाई * ८

ा: ॥

१७१ एकसौ इकहत्तरि अष्टपदी के दोहा ते एकसौ तिहत्तरि अष्टपदी की आठ चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (८) दोहार्थ ॥ बिप्र बोल्यो हे राजन् यद्यपि तैं निर्दोष है तदपि ब्रह्म वाक्य शाप होइगई सो अमेट है निर्दोष कहत संते शापानुग्रह होत भयो तहां हे राजन् हमारे शापते तुम त्रैलोक्य विजयी राक्षस होहुगे अरु अपने निर्दोष ते जो तुम अतिशय शुभ धर्म कर्म भगवत् अर्पण कीन्हेउ है ताते अंत बिषे तुम भगवत्को प्राप्त होहु (अरु यहि दोहासे आगे एक दोहा भरि कथा क्षेपक है) काहे ते यहि क्षेपक दोहाके अंतमें चौपाई है तामें रावण की चारि जगह पराभव कह्यो है पर गोसाईंजीने रावण की पराभव नहीं कह्यो यह रामायण में किसी कल्पकी कथा है ताते दोहा क्षेपक है (आगे १७३ अष्टपदी के दोहाते १७४ अष्टपदी की आठ चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब) दोहार्थ ॥ हे भरद्वाज जब जेहि पर बिधाता बाम होतहै तब वहि प्राणीको धूरिमेरु पर्वत की समान होति है अरु पिता अति हितकारी है पर यम के समान दुःखदाता होतहै अरु जेवरी सर्प हूइजाति है बिधाता जो ब्रह्माहै ते संस्कार के फलदाता हैं यह सर्व जीवन परहै तहां भानुप्रताप को कौन संस्कार रह्यो है तहां राजाको श्रीरामकी यह आज्ञा होति रही है कि तुम प्रकृति मण्डल में जायकै पृथ्वीको भार देखु तब हम अवतीर्ण होहिंगे सो आज्ञा राजाको भूलिगई सोई संस्कार छूइगयो अरु प्रभुके विक्षेपको स्मरण रह्यो ताते तुरंत भगवत् प्राप्तिही को धर्म करै लाग्यो तहां श्रीरामाज्ञाते संस्कार फलदाता जो ब्रह्मा है सो जब राजा ब्राह्मणन को भोजन करावन लाग्यो तब विधाता की आकाश वाणी भई तहां शाप देवाइ कै राजा को निर्दोष कह्यो देखिये तो ऐसो संस्कार प्रबल है (१) ॥

ोनिशाचरसोइ

दशशिरताहिबीसभुजदंडा। रावणनामबीरबरिबंडा * २
भयउअनुजअरिमर्दननामा * । भयउसोकुंभकरणबलधामा २
सचिवजोरहाधर्मरुचिजासू ।

७ ७ ९

।

ारे * । चरघोरघने * * ६
कामरूपखलजिनसअनेका । कुटिलभयंकरबिगतबिबेका ७
कृपारहितसबहिंसकपापी । बरणिनजाहिंविश्वपरितापी ८
दो० उपजे यदपिपुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप ॥
तदपि महीसुर शापबश भयेसकल अघरूप १
१७६ कीन्हबिबिधतपतीनिहुंभाई । परमउग्रनहिंबरणिजाई * १

दीखेबिधाता । मागहुबरप्रसन्नमैंताता * २

बिनतीपदगहिदससीसा । बोलेउबचनसुनहुजगदीसा ३

हमकाहूकेमरहिंनमारे * * । बानरमनुजजातिदुइबारे * ४

मबड़तपकीन्हा * । मैंब्रह्मामिलितेहिंबरदीन्हा ५

कुंभकरणपहँगयऊ । तेहिबिलोकिमनबिसमयभयऊ ६

करहिअहारा । होइहिसबउजारिसंसारा ७

फेरी * । मागेसिनींदमासषटकेरी * ८

दो० गयेबिभीषणपासतब कहेउ पुत्र बरमांग ॥

तेहिमांगेउ भगवन्तपद कमल अमलअनुराग १

१७७ तिन्हहिंदेइबरब्रह्मासिधाये । हर्षिततेअपनेगृहआये * * १

मयतनुजामंदोदरिनामा * । परमसुन्दरीनारिललामा * २

सोमयदीन्हरावणहिंआनी । भइहिसोयातुधानपतिरानी * ३

हर्षितभयोनारिभलिपाई * । पुनिदोउबंधुबिवाहेसिजाई ४

गिरित्रिकूटयकसिंधुमँझारी । बिधिनिर्मितदुर्गमअतिभारी ५

सोमयदानवबहुरिसवाँरा । कनकरचितमणिभवनअपारा ६

भोगावतिजसअहिकुलबासा । अमरावतिजसशक्रनिवासा ७

तिनतेअधिकरम्यअतिबंका । जगबिख्याततनामतेहिलंका ८

दो० खाईसिन्धुगँभीर अति चारिहु दिशिफिरिआउ ॥

कनककोट मणिखचित दृढ़ बरणिनजायबनाउ १

हरि प्रेरित जेहि कल्पजोइ यातुधान पति होइ ॥

शूर प्रतापी अतुलबल दल समेत बस सोइ २

१७८ रहेतहाँनिशिचरभटभारे * । तेसबसुरनसमरसंहारे * १

अबतहँरहहिंशक्रकेप्रेरे * । रक्षककोटियक्षपतिकेरे * २

दशमुखकतहुँखबरिअसिपाई । सेनसाजिगढ़घेरेसिजाई ३

देखिबिकटभटअतिकटकाई । यक्षजीवलैगयेपराई * * ४

फिरिसबनगरदशाननदेखा । गयउशोचसुखभयउबिशेषा ५

सुन्दरसहजअगमअनुमानी । कीनतहांरावणरजधानी * ६

जेहिजसयोगबांटिगृहदीन्हे । सुखीसकलरजनीचरकीन्हे ७

एकबारकुबेरपहँधावा * । पुष्पकयानजीतिलैआवा * ८

दो० कौतुकही कैलासपुनि लीन्हिह लीनउठाय ॥
मनहुँ तौलिनिजबाहुबल चलाबहुत हरषाय १
देव यक्ष गन्धर्व नर किन्नर नाग कुमारि ॥
जीतिबरीं निजबाहुबल बहुसुन्दरि बरनारि २

१७५ एकसै पचहत्तरि अष्टपदी की एक चौपाई ते एकसै सतहत्तरि अष्टपदी की दुइ चौपाई तकका अर्थ करतहौं सो जानिलेव श्रीमयतनुजा मन्दोदरी नाम ताको समा[illegible] अर्थ तहां महामुनि पुलस्त्यके कुल विषे विश्रवा महामुनिने कहूं सन्ध्याविषे र तिकियो तिनके राक्षसरूप भानुप्रतापही आयकै पुत्र उत्पन्न भयो तब कछुक दिनबीते मुनिने पुत्रनको त्यागिदीन तब माता और स्थानमें लैकैरही तब पुत्रन जाइकै महा तप कियो तब ब्रह्मै बर दीन्ह पुनि घरको आये बड़ो प्रतापी बली जानिकै मय नामे दानव रह्यो वह अपनी कन्या रावणको देत भयो जेहिको मन्दोदरी नाम परमसुन्दर ललाम कही अति लालित्य शृंगार रसमय अंग अंग है मन्द+उदरी=मन्दोदरी मन्द नाम सूक्ष्मको ताते सूक्ष्महै उदर कटि जेहिकी ताते मन्दोदरी कही पुनि मन्द कही अज्ञानको जेहिके उदरमें मन्दैमन्द उत्पन्न भये ताते मन्दोदरी नाम अरु रावण नाम जो सबको रोवावै उसे रावण कही आगे ब्राह्मणन बिना विचारे निर्दोष शाप दिहिनि तेहिको फल विधाता रावण करिकै जो ब्राह्मण मुनि ऋषिहैं तिनको दण्डदेतहै अरु देवतनको आपन वादी जानिकै दुःख देत है (२)॥

१७९सुखसंपतिसुतसेनसहाई । जयप्रतापबलबुद्धिब[illegible]

* ।

जाहकहँनहिंप्रातभटजगजाता ३

। * ४

जोदिनप्रतिअहारकरसोई । विश्वरोगसबचौपटहोई * * ५

बारिदनादज्येष्ठसुततासू * । भटमहँप्रथमलीकजगजासू * ७

[illegible]गासम्मुखकोई । सुरपुरनितहिपरावनहोई * ८

दो० कुमुखअकंपनकुलिशरद धूम्रकेतु अतिकाय ॥
एक एक जग जीतिसक ऐसेसुभट निकाय १

१७७ एकसै सतहत्तरि अष्टपदी की तीन चौपाईते एकसै उन्नासी अष्टपदी की एक चौपाई ताईं अर्थ जानब (१) दिन दिन प्रति निशिचर बढ़त जात हैं कैसे जैसे प्रतिलाभ लोभ बढ़त जातहै जैसे कोईके दश रुपैया कै वासना भई अरु प्रारब्ध के

योगत दश मिलि गये तब वाहिके लोभ बढ़ाउ कि बीस होने तौ काम सिद्धि होतो ऐसेही प्राप्ति होत जातहै पर लोभ बढ़त जातहै संतोष नहीं होत जो राजा ताई छोडि राजाके इंद्र होबेको लोभ इन्द्रके ब्रह्मा होबेको लोभ ब्रह्मा के भगवान् होबे को लोभ ऐसो बृथा बासनाते लोभ बढ़त जातहै पर परिणाम में नाशवान् सबका शरीर है जैसे निशिचर बढ़िके सबकेधर्मकेनाशकरतेहैं तैसेलोभबढ़े ते अपनेधर्मको नाशहोतोहै (७) ॥

या * १
दशमुखबैठसभायकबारा । देखिअमितआपनपरिवारा * २
सुतसमूहजनपरिजननाती । गनैकोपारनिशाचरजाती * ३
सेनबिलोकिसहजअभिमानी । बोलावचनक्रोधमदसानी ४
चरयथा * । हमरेबैरीबिबुधबरूथा * ५
तसन्मुखनाहकरोहलराई * । देखिसबलरिपुजाहिंपराई ६
। कहौंबुझ्क यहुनहुसबसाई * ७
द्विजभोजनमखहोमशराधा । सबकैजाइकरहुतुमबाधा ८
क्षुधाक्षीणबलहीनसुर सहजहिंमिलिहैं आइ ॥
तबमारिहौं किछांड़िहौं भलीभांतिअपनाइ १
मेघनादकहँपुनिहँकरावा । दीन्हशीषबलबैरबढ़ावा * १
जेहिसुरसमरधीरबलवाना । जिनकेलरिबेकरअभिमाना २
न्हेंजीतिरणआनहुबांधी । उठिसुतपितुअनुशासनकांधी ३
तीन्ही ४
चलतदशाननडोलतअवनी । गर्जतगर्भश्रवहिंसुररवनी ५
* । देखनत ६
दिगपालनकेलोकसिधाये * । सूनेसकलदशाननपाये * ७
पुनिपुनिसिंहनादकरिभारी । देइदेवतनगारिप्रचारी * * ८
रणमदमत्तफिरैजगधावा * । प्रतिभटखोजतकतहुंनपावा ९
रविशशिपवनबरुणधनुधारी । अग्निकालयमसबअधिकारी १०
किन्नरसिद्धमनुजसुरनागा । हठिसबहीकेपंथहिलागा ११
ब्रह्मसृष्टिजहँलगितनुधारी । दशमुखबश्यसकलनरनारी १२
आयसुकरहिंसकलभयभीता । नवहिंआइनितचरणपुनीता १३

० भुजबलबिस्वबस्यकरि राखेसि कोउनस्वतंत्र ॥
मंडलीकमनिरावन राज्य करै निजमंत्र १

१७९ एकसै उन्नासी अष्टपदीकी तीन चौपाई ते एकसैइक्यासीअष्टपदी की तेरह चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (१३) दोहार्थ ॥ अपने भुजन के बलते रावणने संपूर्ण बिस्व जो ब्रह्मांड कोष जहां लगि ब्रह्मा सृष्टि रही तीनिहूं लोक देव दानव मनुष्य पांचौ तत्व तीनौं गुण चन्द्र सूर्य इत्यादिक चर.चर सबको बश कियो काहू को स्वतंत्र नहीं राख्यो संपूर्ण प्रकृति मण्डल विषे निज मंत्र स्वतन्त्र राज्य करै मंत्रिन ते पूंछै रहो पर काहूके मंत्रनें चलै नहीं प्रभुको एक पाद विभूति राजा रावण होतभयो प्रभु ने सामान्य ऐश्वर्य और बिभूति दीन जहां ब्रह्मा नित्य वेद पढ़िबे को जाहिं शिव जू संहिता गान करिबेको जाहिं बृहस्पति स्मृति पढ़िबेको जाहिं तुम्बरादि गन्धर्ब गानकरै जाहिं रम्भादिक अप्सरा नृत्य करिबेको जाहिं दशौ दिग्पाल स्तुति करिबे को जाहिं ऐसो प्रतापी बली रावण भयो (१)॥

ऐन्द्रजोत १

प्रथमोहाजलकहअथसुदान्हा॥

देवतभीसहपसबपापी * । निशाचरनिकरदेवपरितापी ३

करहिंउपद्रवअसुरनिकाया । नानारूपधरहिंकरिमाया * ४

जेहिबिधिहोइधर्मनिर्मूला * । सोसबकरहिंवेदप्रतिकूला ५

जेहिजेहिदेशधेनुद्विजपावहिं।नगरगाउँपुरआगिलगावहिं ६

सुभआचरणकतहुँनहिंहोई * । देवबिप्रगुरुमाननकोई * ७

नहिंहरिभगतिजज्ञजपज्ञाना * । स्वपनेहुसुनियनवेदपुराना ८

छन्दचौपइया ॥

जप योग बिरागा तप मख भागा श्रवणसुनतदशशीशा ॥
आपु न उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीसा १
अति अस अचारा भा संसारा धर्म सुनै नहिं काना ॥
बहु बिधि त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना २
० बरणि न जाइ अनीति घोर निशाचर जो करहिं ॥
तिनके पापन कवनि मिति १

१८२ एकसै बयासी अष्टपदी की एक चौपाईते एकसै तिरासी अष्टपदीकी एक चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब (१)॥

१८३ बाढ़े खल बहु चोर जुआरा * । जे लंपट परधन परदारा * १
मानहिं मातु पिता नहिं देवा * । साधुन सन करवावहिं सेवा २
जिनके असआचरण भवानी । ते जानहु निशिचर सब प्रानी ३
अतिशय देखि धर्मकी हानी * । परमसभीत धरा अकुलानी ४
गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही । जस मोहिं गरुअ एक परद्रोही ५
सकल धर्म देखै बिपरीता * । कहि न सकै रावण भय भीता ६
धेनु रूप धरि हृदय बिचारी * । गई तहां जहँ सुर मुनि झारी * ७
निज संताप सुनायसि रोई * * । काहूतें कछु कार्य न होई * ८

छन्दचौपय्या ॥

सुरमुनि गन्धर्बा मिलिकरि सर्बा गय बिरंचिके लोका ॥
सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम बिकल भय शोका ॥
ब्रह्मैं सब जाना मन अनुमाना मेरो कछु न बसाई ॥
जाकर तैं दासी सो अविनाशी हमरो तोर सहाई १

सो० धरणि धरु मन धीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरि ॥
जानत जनकी पीर प्रभु भंजहिं दारुण बिपति २

१८३ ऐसो उपद्रव संसारमें राक्षसनकोन तहां कछु राक्षसनके भय अरु कछु पापते सबकै मतिमलीन होइगई तव मातापिता देव ब्राह्मण गुरु इत्यादिकों को कोई नहीं मानै अरु इनसबते बिना प्रयोजन विरोध राखहिं आप बैठेरहैं इनते टहललेहिं अरु साधुजे महान्हैं अरु जिनके कण्ठी तिलकमात्र देखहिं तिनते विशेष टहल करवावहिं आप हुकुम करहिं (२) तहां हे पार्वती जिन प्राणिनके ऐसे आचरण देखियेकोई होहिं तिनको निशिचरै जानब काहेते कि निशिचरनको पापकर्मै है अरु मनुष्य तनु पाइकै निशिचरनके कर्मकरै है इससे उस प्राणीको विशेषकै महानिशिचर जानिये (३) अतिशय धर्मकी हानि देखिकै परम भयमानिकै धरा अकुलाय उठी (४) कि गिरिसुमेरु आदिक पर्वत सरितसिंधु इनको भार मोको अस गरू नहीं है जस कछु परद्रोही को भारहै (५) सर्व धर्मको बिपरीति देखिकै रावणके भयते कछुकहि नहीं सकै (६) तव देव अरु मुनिन के पास जाइकै निजदुःख रोइकै कहेउ (७) तव सबन जवाव दीन हम से कछुनहीं होइगो (८) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेवालकाण्डेरावणदिग्विजयवर्णननामएकोनत्रिंशतिस्तरंगः २९ ॥

(एक छन्द अरु दूसर सोरठा को अर्थ अक्षरार्थै जानब (१)

दो० त्रिंशति सुभग तरंग में रामचरण सुख देतु ॥
देवस्तुति बरदान पुनि परब्रह्म अति हेतु ३० ॥

हिं

पुरबैकुंठजानकहकोई ।

जाकेहृदयभगतिजसिप्रीती * । प्रभुतः

तेहिसमाजगिरिजामैंरहेऊं * । अवसरपाइबचन

हरिव्यापकसर्बत्रसमाना * । प्रेमतेप्रकटहोहिंमैंजाना * ५

देशकालदिशिबिदिशिहुमाहीं । कहहुसोकहांजहांप्रभुनाहीं ६

अगजगमयसबरहितबिरागी । प्रेमतेप्रभुप्रकटैजिमिआगी ७

मोरबचनसबकेमनमाना * । साधुसाधुकहिब्रह्मबखाना ८

दो० मुनि बिरंचि मन हर्षि तनु पुलकि नयन बह नीर ॥
पुलकि गात अस्तुति करत सावधान मति धीर १

१८४ महादेव बोले हे पार्बती ब्रह्मादिक सब देवता बैठे बिचार करनेलगे प्रभु को कहां पुकारी कहां पाई (१) कोई कहै कि बैकुण्ठको चलहु कोई कहै क्षीरसागर को चलहु तहां प्रभु रहतेहैं (२) हे उमा तब मैंने विचार्‌यो कि जहां जैसो जाको प्रेम प्रभावहै तहां प्रभु ताको तैसेही प्रत्यक्षहैं (३) हे पार्बती तेही समाजविषे महूं रह्यौं तब मैं अपने मनमें बिचार किह्यउँ कि कछु कहौं (४) तब मेरे बिचारमें यहआयो कि अबकी तौ इस कल्प विषे नतो बैकुण्ठ ते अवतारहै नतो क्षीरसागरते अवतारहो- इगो तहां यह भेद मैं जानतहूं और कोई नहीं जानत यहि कल्प विषे परम पुरुष परमात्मा परब्रह्म सच्चिदानंद विग्रह निर्विशेष मूर्तिते अवतीर्ण होंहिंगे अरुदेवता पर- म्परा बैकुण्ठ क्षीरसागर ते अवतार जानतेहैं तब मैं आक्षेपालंकार करिकै युक्तिसे श्री रामचन्द्रको जो व्यापकरूप अरु श्रीरामचन्द्र जो पर स्वरूप तिन दोनों रूपनकी एकता करिकै व्यापकरूप देवतनते कछु कहत भयों यह बिचारिकै कि जहां जाको जैसो भाव प्रेमहै तहां तैसेही प्रभु प्रत्यक्षहैं (५) तब मैं बोल्यों हे देवतहु तुमहूं नहीं जाहु काहेते ऐसो कवन देश काल दिशि बिदिशिहै जहां प्रभु नहीं हैं देशकही द्वीप द्वीप देशकही खण्ड खण्ड जैसे भरतखण्ड बिषे श्रीकोशलदेश मैथलदेश मगहदेश बंगालादेश उड़ीसा देश तैलंगदेश मल्लारदेश मालवादेश गुजरातदेश ब्रजदेश इत्यादिक अनेकन देशहैं पुनि काल कही जो सूर्यकी किरणि झरोखेमें रहै है ताकीत्रिसरेणु संज्ञाहै पुनि तीस त्रिसरेणु करिकै परिमाणु कही तीस परिमाणुको अणु कही साठिअणुको लव कही साठिलव को निमेष कही साठि निमेषको पलभयो साठिपलको दण्डभयोसाठिदण्डको दिनराति भयो तीसदिन रातिको मासभयो बारहमासको वर्षभयो इत्यादिवर्षन करिकै युगकल्प महा- कल्प ताको कालकही पुनि चारिदिशाहैं पश्चिम उत्तर पूर्व दक्षिण पुनिषट् उपदिशा हैं वायव्य ईशान अग्नि नैऋत्य ऊर्ध्व अध पुनि इनको बीचतको बिदिशि कही तहां देश कालदिशि बिदिशि ऐसो कौनठौर है जहां प्रभु परिपूर्ण नहींहैं (६) सर्वत्रपूर्ण हैं

अरु अंगकहो स्थावर जगकहो जंगम तेहि चराचरमय प्रभुहैं अरु सबते विरक्तहैं भिन्न हैं परप्रेमते प्रभु प्रत्यक्षहोतहैं कैसे जैसे दारुदारुकी वृष्टिते अग्नि प्रत्यक्ष होतीहै (७) हे पार्बती मोरबचन सब समाजके मनभायो ब्रह्मा मोको साधु साधु कहिकै मराह्योपुनि कहेउ हेदेवमुनिहु शिवसाधु है साधुनके बचन सिद्धांतहैं (८) दोहार्थ ॥ बिरंचि प्रेमते स्तुति करनेलगे (१) ॥

१८५ जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवन्ता।
गोद्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कन्ता॥
पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई १
जय जय अविनाशी सबघट बासी व्यापक परमानन्दा।
अविगतगोतीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा॥
[illegible] समुनिवृन्दा।
निशिबासरध्यावहिं गुणगणगावहिं जयतिसच्चिदानंदा २
[illegible] य न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिय भक्ति न पूजा॥
जो भव भय भंजन मुनिमन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मनबचक्रम बानी छांडिसयानी शरणसकल सुरयूथा ३
शारदश्रुतिशेषाऋषयअशेषा जाकहँ कोउनहिं जाना।
जेहिं दीन पियारे वेद पुकारे द्रवौ सो श्री भगवाना॥
[illegible]।
मुनिसिद्धसकलसुर परमभयातुर नमत नाथ पदकंजा ४

दो० जानि सभय [illegible] बचन समेत सनेह
गगन गिरा गम्भीर भइ हरणि [illegible] संदेह १

१८५ ब्रह्माकी स्तुतिबिषे चौपय्याछन्द है सोरहचरणहैं ताते चारिछन्द हैं प्रथम छन्दमें चारिचरण ताको अक्षरार्थ जानब (१) ब्रह्माबोले हेप्रभु तुम्हारी जय जयताको [illegible]षेषा तुम सदा जयमानहौ कल्याणरूप सदा चिरंजीवि त्रैलोक्य पूज्य सुयशमान् सर्बोपरि अविनाशी सर्वघटबासी सर्बव्यापक परमानन्द स्वरूप पुनि अविगति तुम्हारी गतिकोई नहीं जानै अरु वाह्यांतर इन्द्रिनते परेहौ मायाते रहितहौ अरु पञ्चप्रकार की मुक्ति तेहिके दाताहौ ऐसे तुमको जानिके संसारते विरक्तहोइकै तुमविषे मुनिबृन्द अनुराग करतेहैं मोहते छूटिकै तुमको प्राप्तहोतेहैं [illegible] तुमको [illegible]श ध्यावते हैं

तुम्हारे गुणगण गावतेहैं अरु व्यवहारमेंहैं तेऊतुमको प्राप्तहैं तुम कृपालुहौ सच्चिदानन्द हौ तुम्हारी जय (२) ब्रह्माबोले जोहिसम्पूर्ण सृष्टिको उपाइनाम उत्पन्नकीनहै पर बिना सहायसो हे परमेश्वर तुमने स्वतंत्र रचिच्छित तीनिप्रकारकी सृष्टिरचीहै सात्विकीराजसीतामसी देवमनुष्य दानव वपयी साधक सिद्धइत्यादिक त्रिधासृष्टिकही एकजीवसृष्टि एक ऐश्वरीसृष्टि एक ब्रह्मसृष्टिहै जीवसृष्टिमेंजेहैं तेस्वप्नसुषुप्त अवस्थाविषे सदाहैं अरुस्वप्न स्वरूप जो संसारहै ताहीमें वर्त्तमानहैं अरु जे ऐश्वरीसृष्टि में हैं तेजाग्रतअवस्था विषेवर्तमान हैं वे ईश्वरीतत्त्व भी जानते हैं अरु विषयमें परे हैं अरु ब्रह्मसृष्टिवाले तुरीयावस्थामें तदात्मक सच्चिदानन्द लक्षणाही सदा वर्तमान हैं अरु जेयवनजीव हैं तिनकै तैसी २ बासना बनी है अरु वाही तत्त्वको प्राप्तउ हैं अरु उनको वैसे शास्त्र आचार्य उपदेशक गुरुहैं (तत्र प्रमाणमागमसारे श्लोकाः) त्रिधासृष्टिःपुराजाता तत्रैकाजीव संज्ञका ॥ द्वितीयाचैश्वरीसृष्टिर्ब्रह्मसृष्टिस्तृतीयका १ जीवसृष्टाद्विधावस्था सुषुप्तिः स्वप्नमध्यगा ॥ ऐश्वर्य्याजागरावस्था ब्रह्मसृष्टातुरीयका २ ब्रह्मसृष्टिसमुत्पन्नास्तुरीयात्मानएवये ॥ रहस्यंतेविजानन्ति सच्चिदानन्दलक्षणम् ३ येयेयद्यद्भवाजीवास्तेतत द्वासनान्विताः ॥ तत्तद्ज्ञानंप्रपद्यन्ते शास्त्राचार्योपदेशतः ४ ब्रह्मा कहते हैं हे प्रभु तुम सम्पूर्ण पाप के हरैयाहौ हमारे दुःखको चिन्तवन आप करिये तुम्हारी पूजा भक्ति एकौ नहीं जानते जो प्रभु भवभय भंजन हैं अरु मुनिनके मनको रंजन कही आनन्द दाता हैं अरु सम्पूर्ण विपत्तिके नाशकर्ता हैं सो प्रभु हमारी रक्षाकरैं हे प्रभु हम जो देवता हैं सो मन क्रम बचन ते सब सयानी छोड़िकै तुम्हारीहो शरण हैं सयानी कही हमारी चतुरई और बल राक्षसनते नहीं चलै इससे हमसव तुम्हारीहो शरण हैं (३) शारद श्रुतिशेषाऋषयऋषि कही सम्पूर्ण सिद्ध देवता कवीश्वर जेहि प्रभुको कोईनहीं जानिसकै हे प्रभुदीन जन तुमको बहुत प्रियहैं बेद कहतेहैं अरु हम सब देवतादीनहैं ताते हे श्रीभगवान् तुम द्रवहु भगवान् शब्द को अर्थ पूर्व कहि आयेहैं हे प्रभु तुम कैसे हौ भवजो संसार सो समुद्र है तुम कि त्तु तुम्हारा नाम मन्दराचल पर्वतहै ताको मथिकै अमृतस्वरूप जो उत्तमगुण सो काढ़िकै देवतारूप तुम्हारे सन्त तिनको बांटदेते हौ ऐसे तुम दयालु हौ अति सुन्दर दिव्य गुणके मन्दिर सुखके पुंजहौ हे प्रभु मुनि सिद्धसकल देवता भयकरिकै आतुर बिकलहैं ते तुम्हारे पद कंजविषे नमत हैं (४) दोहार्थ ॥ सम्पूर्ण देवता सिद्ध मुनि इत्यादिक सबको भय संयुक्त जानिकै अरु तिनके बचनअति आरत प्रेम संयुक्त सुनिकै परमात्मा को आकाश विषे अतिगम्भीर शोक सन्देहहरणहारी बाणी होत भई (१) ॥

१८६ जनिडरपहुमुनिसिद्धसुरेशा । तुमहिंलागिधरिहौंनरबेषा १
अंशनसहितमनुजअवतारा ॥ लेइहौंदिनकरबंशउदारा ॥ २
कश्यपअदितिमहातपकीन्हा । तिनकहँमैंपूरबबरदीन्हा ॥ ३
तेदशरथकौशल्यारूपा ॥ ॥ प्रकटतभयेअवधपुरभूपा ॥ ४

तिनकेगृहअवतरिहौं जाई *। रघुकुलतिलकसुचारिउभाई ५
नारदबचनसत्यसबकरिहौं *। परमशक्तिसमेतअवतरिहौं ६
हरिहौं सकलभूमिगरुआई *। निर्भयहोहुदेवसमुदाई * ७
गगनब्रह्मबाणीसुनिकाना *। तुरतफिरेसुरहृदयजुड़ाना *८
तबब्रह्मै धरणीहिसमुझावा । अभयभईभरोसजियआवा ९

दो० निज लोकहि बिरंचि गे देवन इहै सिखाइ ॥
बानर तनु धरि धरणी महँ हरिपद सेवहु जाइ १

१८६ हे देव मुनि सिद्ध तुम जनि डरपहु तुम्हारे हेतु मैं नरवेष धारण करौंगे नरवेष कही सबके देखिबेको मनुष्यइव जैसे कोई राजाको अलंकारलीला तैसे धारणकरैंगे अरु श्री रामदासन के देखिबेमें कैसोहै उहै अलंकार लीला स्वरूप परब्रह्म मयहै (१) अंशन सहित मनुज कही मनु यावतार लेउँगो इस अर्थ बिषे दुइ बिरोध होत हैं एक उपासना बिरोध दूसर शास्त्र बिरोध काहेते यहिमें यह आशय आयो कि पूर्वही एक आपुही कछु और स्वरूप रहे अब देवतन मुनिन सन कहतहैं अपने अंशन संयुक्त मनुय अवतार मनुष्यरूप में श्रीराम भरत लक्ष्मण शत्रुहन होउँगो यहि अर्थ में दुइविरोध भये काहेते श्रीरामचन्द्रजी भरत लक्ष्मण शत्रुहन चारिउ स्वरूप किशोर मूर्ति द्विभुज किरीट कुण्डल बनमाल पीताम्बर धनुबाण इत्यादिक अलंकार संयुक्त नित्य अखण्ड एकरस सर्वोपरि प्रकृतिके परे परधाम ऐसो स्वरूप बिराजमान सो स्वरूप श्री तुलसीदास जीने राजा मनुके दर्शनबिषे कहाहै ताते यह चौपाई अर्थ सन्धिसंकेत संयुक्त कहोहै अंशन सहित अनुज सहित तहां तक रके आगे जो मकार है ताको अनुस्वार होतहै अरु मकारको अकार लैके अनुज पद होत है ताते अंश सर्व सखा दास जानिये अरु अनुज तीनों स्वरूप अरु तिन अंशन सखादास इन सबके सहित सूर्यबंश बिषे अवतीर्ण होउँगो सूर्यबंश कैसोहै अति उदार उदार कहो सर्वोपर बंश सर्वस्वदानी सर्वको प्रकाशकर्त्ता सर्वदुःख हर्त्ता ताही बंशमें अवतीर्ण होउँगो (२) नभ बिषे ब्रह्मबाणी यह होत भई हे देवतहु कश्यप अदितिने महातपकीन्ह हैं तिनको मैंने पूर्वही बर दीन्ह है वही श्री अयोध्या बिषे श्रीदशरथ कौशल्या भयेहैं जो कोई कहै कि तीनि कल्प बिषे विष्णु भगवान् वैकुण्ठते रामावतार गोसाईंने बर्ण्यो है तहां कश्यप अदिति दशरथ कौशल्य भये हैं अरु यहि कल्प बिषे परब्रह्म परमेश्वर होका अवतार साक्षात् होइगो अरु स्वायंभुव मनु रानी शतरूपा ने तप कीन्ह है ते दशरथ कौशल्या श्री अवध में भये हैं अरु ब्रह्मबाणी तो सत्य संकल्प है तहां यह ब्रह्मबाणीका कहैहै यह संदेहहै यह तुमसत्यकह्यो तहां ब्रह्मबाणी बिषे तात्पर्य और है कौन तात्पर्य है आरत संयुक्त जीवनबिषे जो बासना होतिहै सो कर्मानुसार तेहि को फलदाता ईश्वरहै तहां देवतनकै बासना यह है कि हे प्रभु पृथ्वीको भार उतारहु जामें हम सुखी होहिं तहां पालनशक्ति विष्णु भगवान् को है अरु विष्णु भगवान्

बहुधा कश्यपहीके अवतार लेते हैं ताते देवतन के प्रयोजन मात्र हेतु विष्णुरूपबाणी होत भई काहेते कि विष्णु भगवान् जो हैं सो परब्रह्मके महत् अंश हैं तहां अंश अंशी एकही हैं जैसे गंगाकी बड़ी धारा है अरु गंगा का कोई स्रोत है बड़ी धारा में मिली है सो बड़ी धाराकी महत् अंश है सो दूनों एकही तत्व हैं तहां स्रोत ईश्वर तत्व कही अरु बड़ी धारा परब्रह्म तत्व कही तहां दूनों एकही हैं सर्वज्ञ हैं अरु जो घट विषे गंगाजल भरिजात है सो जीव तत्व अल्पज्ञ है तहां परब्रह्म परमेश्वर जो श्री रामचन्द्र सो श्री विष्णु भगवान्को अपनो स्वरूप अभेदमानिकै विष्णुरूप बाणी बोलते भये अरु तीनि अवतार विषे विष्णु भगवान्ने पूर्वही कश्यपको बरदीन है ताते ब्रह्मबाणी सत्य कहैहै यहि चौपाई को यहै अभिप्राय है जो कहि आये हैं ॥ कश्यपअदितिमहातपकीन्हा । तिनकहँमैंपूरबवरदीन्हा ॥ पुनि यहि चौपाई को दूसर अभिप्राय है (प्रमाणं श्लोकैकचरणम्) रामोद्विर्नाभिभाषते॥ जाको श्री रामचन्द्रने एक बार देख्यो किन्तु श्री रामचन्द्रको प्रत्यक्ष अथवा ध्यान बिषे देख्यो अरु जो कोई श्रीरामशरण एकहू बार भयो अरु श्री रामचन्द्रने जो बचनकहा अरु काहू को कछु दीन फिर नहीं दूसरीबात सो अचल है तहां श्रीविष्णुको विष्णुपदवी विधि को विधिपदवी शिवको शिवपदवी श्रीरामचन्द्र दीनहै सो तुलसीदास ने विनयपत्रिका में कहाहै हरिगीतिकाछन्द ॥ हरिहि हरिता बिधिहि बिधिता शिवहि शिवता जिन दई । सोइ जानकीपति मधुर मूरति मोदमय मंगलमई ॥ देखिये तो श्री रामचन्द्रजी ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तहां विष्णुको पालनशक्ति दीनि है अरु देवतनके हेतु राक्षसन को बध अरु पृथ्वीके पालनको प्रयोजन आय परेउ है ताते बिस्मय रूप होइकै आकाश बिषे परब्रह्म वाणी होतभई काहे ते कि सबकोई जानै कि बैकुण्ठते श्रीविष्णु भगवान्ने श्री अयोध्या बिषे राजा दशरथ महाराजके भवन बिषे श्री रामावतार लीनहै अरु जब श्री दशरथ महाराज के अवतीर्ण होइकै परमदिव्य होइकै लीला करहिंगे तब भृगुलता भी धारण करैंगे अरु जब राजा मनुकी अभिलाषा परात्परतमपुरुषके स्वरूपकी भई तब सोई पुरुष प्राप्त भयो तब भृगुलता गोसाईं ने नहीं कह्यो अरु जब दशरथ महाराज के अवतीर्ण लीला बिषे भृगुलता कहेहैं अरु वैकुण्ठ बिषे श्री विष्णु स्वरूपमें वक्षस्थल विषे भृगुमुनि चरण स्पर्श कीन है अरु पर विभूति पर पुरुषको यहि तनुमें किसूको प्राप्ति नहीं है शुक सनकादि नारदादिकनको यहि तनुमें प्राप्ति नहीं है ताते परब्रह्म बाणी विष्णु स्वरूप होइकै कश्यपको दशरथ अदिति को कौशल्या सो येहू अवतार बिषे कहाहै परम्परा देवतनको जनावते हैं काहेते कि पूर्व भूत तीनिहूं कल्प में श्री अयोध्या विषे कश्यप अदिति श्री दशरथ कौशल्या भये हैं चौथे कल्प बिषे राजा मनु रानी शतरूपा श्री दशरथ कौशल्या भये हैं तहां ब्रह्मबाणीने कश्यप अदितिको श्री दशरथ कौशल्या भूत बिषे कहाहै अरु राजा मनु शतरूपा को दशरथ कौशल्या वर्तमान बिषे कहाहै अरु अपनो स्वरूप जो परात्पर है तेहिको अवतीर्ण श्री अयोध्या बिषे श्री दशरथ कौशल्याको भविष्य बाणी कहेहैं अरु इहां तटस्थ लक्षणा बाणी बिषे अर्थ है (गंगायांघोषः) तहां गंगा की धारा विषे घोष नहींहै परंतु तट

पर है किन्तु कश्यप अदिति गंगाकी धारा स्थाने अरु मनु शतरूपा तटस्थाने अरु ब्रह्म बाणी अपने अवतीर्ण को हेत घोषस्थाने अरु ब्रह्मबाणी ने कश्यप अदिति करिकै कहा है तहां इसमें व्यंजनाभी होति है ताते कश्यप अदिति को लक्षणा व्यंजना अध्यारोप करिकै ब्रह्म बाणीने स्वायंभुव मनु शतरूपा को श्रीदशरथ कौशल्या कहा है यहि प्रसंग के अर्थको अभिप्राय यही है अरु जो कोई कहै कि राजा मनु रानी शतरूपा दोउजन परमात्मा ते बर पाइकै शरीरको स्वेच्छित त्यागि स्वर्गको प्राप्तहुये पुनि कोई काल पाइकै कश्यप अदिति भये तब तिन तप कीन तब ब्रह्मबर पाइकै स्वर्ग को प्राप्त होइकै कछु कालमें श्रीअवधमें राजा श्रीदशरथ रानी कौशल्या सहित भये हैं तिनके गृह बिषे अवतार लेहौं यह ब्रह्मबाणी कहै है तहां यहि अर्थ बिषे बहु दूषण हैं काहेते कि कश्यप कल्पभरि बने रहते हैं यह शास्त्रन बिषे कहा है तहां मनु कैसे कश्यप होहिंगे अरु जो कहैं कि यहि कल्पके आगे जो कल्प होइगो तेहि कल्प बिषे मनु कश्यपभये हैं तहां येभी नहीं बनै राजा मनु को परमेश्वर ने यह बर दीन है कि तुम कछु काल स्वर्ग बास करिकै श्रीअवधके राजा होहु जाइ तब मैं तुम्हार पुत्र होउँगो तहां राजा मनु पुत्र बात्सल्य भाव में अति आरत रहेहैं सो कैसे कल्पांतर सहैंगे अरु कल्प चौदह मन्वंतर को होत है अरु राजा स्वायंभुव मनु कल्प के प्रथम मन्वंतर के राजा हैं अरु तेही मन्वंतर के चौथे चरण में तपकीन है अरु मन्वंतर कछु कम साढ़ेयकहतरि चौकरीयुग को होतहै अरु जब चारिउ युग मिलिकै साढ़ेयकहतरि युग बीतैं तब चौथ चरण होत है तहां युग प्रमाण है सतयुग सत्रह लक्ष अट्ठाइस सहस्र बर्ष त्रेता बारह लक्ष नब्बेहजार द्वापर आठलक्ष चौंसठि सहस्र कलियुग चारिलक्ष बतिस हजार अरु राजा मनुने कल्पके प्रथम मन्वंतर बिषे चौथ चरण लागत नैमिषारण्य बिषे आइकै पांचहजार बर्ष तक तपकीन पुनि जल आहार करिकै छः हजार पुनि पवन आहार सप्त हजार पुनि निराधार दशहजार बर्ष रहे तब परमात्माकी बाणी द्वारा सत्य संकल्प मय बरदान होत भयो पुनि कछुकाल श्रीरामाज्ञाते स्वर्गमें रहे पुनि श्रीअवधके राजाभये त्रेता बिषे चौथे चरणमें तहां दश हजारकी आयु तहां श्रीदशरथ महाराजके चौथेपन बिषे श्रीरामचन्द्र अवतीर्ण भये आइ ताते कल्प के प्रथम मन्वंतर चौथे चरण में जो त्रेता प्राप्तभयो तेहिके चौथे चरण बिषे राजा मनु शतरूपा श्रीदशरथ कौशल्या भये हैं श्रीराम परब्रह्म अवतीर्ण भये हैं अरु तेही मन्वंतरके चौथे चरणमें बालकौमार पौगंड कैशोर बिवाह वन राज्यलीला सब नित्य करिकै पर बिभूति संयुक्त पर बिभूतिको गमन कीन्हहै अरु जो कोई कहै कि राजा मनु सोई कश्यप भये हैं तब पुनि तप कीनहै तब ब्रह्मबाणी ने बरदीन तेई कश्यप श्रीदशरथ भये हैं तहां जो मनु तनुमें तपकीन अरु परमेश्वर जो सत्य संकल्प तिन बरदीन तहां दूनों पदार्थ अफल होते हैं यामें बहु दूषणहैं पूर्व कथित अर्थ सिद्धहै अरु इहै अभिप्राय इस चौपाई को जानब ॥ नारद बचन सत्य सब करिहौं । परम शक्ति समेत अवतरिहौं ॥ कश्यपको अरु राजा मनुको प्रसंग जानै तब यहि चौपाईको अर्थजानै इहै प्रयोजन आरण्यकाण्ड में नारदको वाक्य में जानब मुनिनिकहा कि श्रीरामचन्द्र ऐसे भक्तबत्सल पुरुषोत्तम हैं मेरे शापको परम्परा

मानिलीन ताते अनेक दुःख के हरैया ते दुःख सहते हैं (३) हे देवतहु ते कश्यप अदिति श्री अयोध्या बिषे श्रीदशरथ कौशल्या राजा रानी हैं इहां कश्यप अदिति को अध्यारोप करिकै परम्पराराजा मनु रानी शतरूपाको श्रीदशरथ कौशल्या करिकै यहि चौथे अवतार बिषे कहते हैं (४) तिनके गृह बिषे रघुबंशिनके हम तिलक चारिउ भाई अवतीर्ण होइँगे अथवा रघुबंशकुल सर्वकुल बंशकोतिलकहै (५) हे देवतहु नारद को बचन मैं सत्य करिहौं अरु मेरीजो परमशक्ति है तेहिके संयुक्त अवतीर्ण होउँगो यहि पर ब्रह्मबाणी बिषे और अभिप्राय अर्थ है काहेते कि जेहि कल्प बिषे बिष्णु भगवान्को नारद शाप दीन्ह है कि तुम जाइकै राजपुत्र का तनु धारण करहु वहां अपनी प्रियाके हेतु बिरह को प्राप्त होउ तहां बानर अरु रीछ तुम्हारी सहाय करहिंगे ताते जैसी नारदके शापका अवतार बिषे परम दिब्यलीला कीन्हि है तैसी मैं परम्परा मानि कै यहू अवतार बिषे लीला करौंगो काहेते नारद मेरे परम भक्त हैं अरु मैं अपने भक्तनकै बाणी सदा अंगीकार करते आयोंहौं जोकोई कहै कि यह जो परब्रह्म बाणी भई है सो नारदहि के शापसे अवतार यह होइगो सो यह बात नहीं काहे ते कि पूर्व प्रसंग बिषे बिरोध परैगो (पूर्व चौपाई) नारद शाप दीन यकबारा । एक कल्प यहिलगि अवतारा ॥ तहां नारद के शापको हेतु गोसाईं पूर्वहि कहि आये हैं नारदके मोह के प्रसंग बिषे महादेव के दुइ दूत कुम्भकरण रावण भये हैं तब श्री बिष्णु भगवान्को अवतार कह्यो है अरु यहि अवतार को हेतु राजा स्वायंभुव मनु अरु रावण राजा भानुप्रताप ताते नारद बचन सत्य सब करिहौं यहि चौपाईको अर्थ जैसो कहिआयेहैं तैसो जानब अरु परमशक्ति कह्यो परमानन्द जो मेरो सोई सीताहै सो राजा जनक के भवन बिषे अवतीर्ण होहिगी अरु मैंराजा दशरथ के भवन बिषे अवतीर्ण होउँगो(६) ब्रह्मबाणी कहति है कि सम्पूर्ण भूमिका भार हरौंगो हे देवतहु तुम निर्भय होहु न डरहु (७) गगन बिषे ब्रह्मबाणी सुनिकै देवता फिरे हृदय शीतल भयो (८) तबब्रह्मै भूमिको समुझावा अभय भरोस भयो (९) दोहार्थ ॥ ब्रह्मबाणीको अभिप्राय ब्रह्मा सब समुझि गये तब ब्रह्मा देवतनको आज्ञा देतभये कि तुम सब बानर रीछ तनु धरि धरि हरि पद सेवहु जाइकै यह कहिकै ब्रह्मा निजस्थान को गये (१) ॥

१८७ गयेदेवसबनिजनिजधामा । भूमिसहितमनकहँबिश्रामा ॥ १
जोकछुआयसुब्रह्मै दीन्हा । हर्षेदेवबिलम्बनकीन्हा ॥ २
बनचरदेहधरीक्षितिमाहीं ॥ । अतुलितबलप्रतापतिनपाहीं ३
गिरितरुनखआयुधसबबीरा । हरिमारगजोवहिंमतिधीरा ४
गिरिकाननजहँतहँमहिपूरी । रहेजहँतहँअनेकरुचिरूरी ॥ ५
यहसबचरित्तरुचिरमैंभाषा । अबसोसुनहुजोबीचहिराखा ६
अवधपुरीरघुकुलमणिराऊ । वेदबिदिततेहिदशरथनाऊ ७
धर्मधु नधिज्ञानी । हृदयभक्तिमतिशारँगपानी ८

दो० कौशल्यादि नारि प्रिय सब आचरण पुनीत ॥
पतिअनुकूलसुप्रेमदृढ़ हरिपद कमल बिनीत १

१८७ सब देवता निज निज धामको गये भूमि संयुक्त आनन्द को प्राप्तभये (१) जो ब्रह्मै आयसु दीन्ह सो देवतन हर्षिकै कीन्ह (२) बानर का तनुधर भये अतुलित बलवान्भये (३) गिरि तरु नख आयुध जिनके तेहरिकी प्राप्तिकोमग जोवतहैं (४) गिरि बन बिषे अनी बनाइ बनाइकै पूररहे (५) हे पार्बती यह सब रुचिर चरित हमनेतुम से कहा अब जो बीचहि राखेसो सुनहु (६) ॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डेउमामहेश्वरसम्बादेदेवस्तुतिब्रह्मवरबाणीवर्णननामत्रिंश तस्तरंगः ॥३०॥

दोहा इकतिस सुभग तरंग में परम पुरुष अवतार ॥
कौशल्या दर्शन लह्यो रामचरण शिशुप्यार ३१

हे पार्बती अब श्रीरामचन्द्रजी के जन्म को अपर प्रसंग सुनहु श्रीअयोध्यापुरी परम दिब्य सुन्दरि तहांके राजा महाराजश्री दशरथजी ऐसोनाम श्री रघुबंश कुलके मणि जिनके यशको वेद गावते हैं (७) कहते राजा धर्म धुरन्धर गुणज्ञानको समुद्रहै धर्म काको कहो रण बिषे शूर तजस्वी सब डरैं धैर्यमान् सकलमें परमदक्ष वद शास्त्रराज नीति अरु युद्धमें अचल अरु याचकके मन भावित ईश्वर हेतु किन्तु ईश्वर भावतेदान देना अरु भगवत् सम्बन्ध परम दिब्यगुण करुणा दया उदारता शील इत्यादिक ज्ञान शास्त्र जन्यज्ञान अरु आत्मज्ञान परमात्मकज्ञान इत्यादिक धर्मन के धुरीण अचल संतोष तेहिके धरैया एक दशरथ महाराज अरु शार्ङ्गपाणि जो श्री रामचन्द्रजी तिनकी परमानन्य भक्ति हृदय मति बिषे तहां बुद्धि मन अहंकार चित इन चारिहुकी सम्बन्धी जो मतिहै सो त्रैगुण्यमयहै अरु आत्मसम्बन्धी जोमतिहै सो गुणातीत है ताते जो आत्मकमतिसे धारण होइ सोअचलहै काहेते शरीरमेंपंचआकाशहैं शीश कण्ठ हृदय उदर कटि तहां चित्तको बास शीश पर अहंकार कण्ठमें मन उदरमें बुद्धि कटिमें अरुआत्मा हृदय आकाशमें ताते आत्मकमति बिषे ज्ञानभक्ति अचल रहती है किन्तु हृदयतेभक्ति करते हैं अरुमतिते एकरस ग्रहणहै ताते हृदय मतिते शार्ङ्गपाणिकी भक्ति कहाहै (८) दोहार्थ॥ श्री दशरथ महाराज के श्रीकौशल्यादिक रानी सब प्रियहैं अरु सब आचरण विषे पवित्र अरु पतिके अनुकूल प्रेम करिकै दृढ़ हरिके चरणनविषे अति प्रबीणहैं तहां राजा के साढ़े तीनि सै रानी श्री बाल्मीकि मुनिने कहाहै अरु महा रामायणमें तीनि सैसाठि कहाहै तिनमें चारिभेद हैं महिषी परिब्रता वावाता पालाकली जो प्रथमब्याहि आई सो महिषी अरु पाछे जो बिवाही जाहि सो परिव्रता तहां यज्ञ दानबिषे महिषी अधिकारिणी है महिषी के पाछे परिब्रता अधिकारिणी अरु बिना बिवाही जेहैं जिन्हैं राजैं रीझिकै अंगीकार कीनहै सोई वावाताहै वह यज्ञ दानमें राजाकेसंग अधिकारिणी नहीं है पुनि पालाकली तिनकी दासी संज्ञा है परराजाकी सबपर प्रीति है तहां दशरथ महाराज के महिषी परिब्रता हैं अरु रानिनकी सेवाहेतु अपरभीहैं काहेते रघुबंश कुलबिषे बिना बिवाही से रतिकी प्रीति नहीं है ताते कौशल्यादिक जे रानीहैं ते पा-

तिव्रत इत्यादिक जितने परमधर्म हैं तिनमें अति प्रवीणहैं अरु हरिजो श्रीरामचन्द्र तिनके पद कमलबिषे अति प्रवीण प्रीति जानब (१)

१८८ एकबारभूपतिमनमाहीं *। भैगलानिमोरे * * १
गुरुगृहगयउतुरतमहिपाला । चरणलागिकरिबिनयविशाला २
निजदुखसुखसबगुरुहिंसुनावा।कहिबशिष्ठबहुबिधिसमुझावा ३
धरहुधीरह्वोइहैंसुतचारी * । त्रिभुवनबिदितभक्तभयहारी ४
शृङ्गीऋषिहिंबशिष्ठबुलावा। पुत्रकाजशुभयज्ञकरावा * ५
भक्तिसहितमुनिआहुतिदीन्हें।प्रकटेअगिनिचारुचरुलीन्हें ६
जोबशिष्ठकछुहृदयबिचारा । सकलका ७
यहहबिबांटिदेहुनृपजाई *। यथायोगयजेहिभागबनाई * ८

दो० तबअदृश्य पावक भये सकल सभहि समुझाइ ॥
नन्द मगन मन हर्ष न हृदय

१८८ एक बार राजा के मनमें ग्लानि आई कि हमारे पुत्रनहीं भयो अरु बिना पुत्र लोकमें सुख अरु यश की हानि है सुख यश जो होबहूकरै तो शोभितहै पर स्वर्ग अरु वंशकी हानिहै (१) इहै बिचारिकै वशिष्ठजीके इहां जातभये चरणागहिकै बिनय कीन प्रभु सर्वज्ञहौ ताते हमारे पुत्र होइगो कि न होइगो (२) आपन दुःख सुखसब कहत भये बशिष्ठजू प्रसन्न होइकै बोलत भये (३) हे राजन् तुम धैर्यधरहु तुम्हारेचारि पुत्र होहिंगे त्रैलोक्य विदित बिजयी यशमान् अरु भक्तनके क्लेश जन्म मरणका भय हरेंगे तब बशिष्ठजू आज्ञा देतभये हे राजन् सर्व द्वीप अरु सर्व देशनके राजन को निमंत्रण पठवहु अरु सर्व ऋषि मुनि वर्ष दिनबिषे आवहिं अरु यज्ञशाला मुनिन अरु राजनके निवासको मन्दिर बिस्तार समेत बनवावहु अरु यज्ञको सरंजाम करहु राजमहल के उत्तर सरयू पार मनोरमा नदी अति पबित्र निर्मल सर्व फलदायिनी तेहिके दक्षिण किनारे रचना करहु वर्ष दिनताईं यज्ञ होइहि तब तुम्हारे पुत्र होहिंगे यहराजा सुनिकै परमानन्द को प्राप्तह्वैकै राजसभा में आइकै सब मंत्रिन को बोलाइकै आज्ञा देतभये कि सरयू में सेतु बँधावहु श्री महाराज गुरुकी आज्ञा लैकै मनोरमाके किनारे यज्ञशाला अरु सुवर्ण मणिन के अनेक मन्दिरन की बिस्तार पूर्वक रचना करहु तब चिरंजीव कहिकै वशिष्ठ की आज्ञा लैकै रचनाकी तैयारी करने लगे (४) शृंगी ऋषि को श्री वशिष्ठजी बोलावत भये अरु पुत्रके कार्य शुभयज्ञ करावत भये शृंगीऋषि कहां रहते हैं वे कैसे श्री अयोध्याको आये हैं श्री गंगाभागीरथी के किनारे जाको शृंगीरामपुर कहौ सोई स्थानहै बिभांडक मुनिके पुत्र शृंगीऋषिहैं तिनके आश्रमबिषे गम्भीर बन सुन्दर कन्दमूल फलफूल अंकुरसदारहैं बिषय रसको संचारनहीं रहै तेही समयबिषे पटना शहर जो मगध देशमें है तेहिको राजा रोमपाद तिनके देशबिषे महादुकाल

परेउ तब बिद्वान् जो ब्राह्मण तिन्होंनेराजासेकहाकि शृंगीऋषिआवैं यज्ञकरैंतो बर्षा होइ पर वेब लनेष्ठी बिरक्तहैं जो इंद्रकी अ सरा आवहिं तो शृंगीऋषिको लैआवैंतबराजानेइन्द्र की प्रार्थनाकरी तत्कालही अप्सराआइ प्राप्तभईं राजाकी आज्ञाभई कि शृंगीऋषि को लै आवहु तब शृंगीऋषिके आश्रमको जातभईं तहां शृंगीऋषिके पिता कहूं अन्यत्र गयेरहैं तहां वेश्या बाजा गान नृत्य करने लगीं तहां शृंगी मुनिकेस्त्री पुरुषको ज्ञान नहींहै तिनके समीप आवत भईं यह जानत भये कि ये किसी देशके मुनिहैं कोई अपूर्व विद्याध्ययन करते हैं तब शृंगी मुनिने प्रसन्नह्वैकै तिनको कन्दमूल फल दीन्ह आइ तब तिनने कहा कि जेहि बनबिषे हमरहत हैं तेहि बनके फल कन्द हमदेतहैं तुम लेहु भगवत् अर्पण करिकै प्रसादकरहु तब तिन कन्दमूलके आकार अनेक स्वादु के लड्डू पेड़ा इत्यादिक अनेकन प्रकारकी मिठाई शृंगीमुनिको दीन तब मुनिने भोग लगाइकै प्रसाद कीन अति स्वादु रसस्वरूप मधुर पुष्टता सुन्दर पाइकै प्रसन्न होइकै तिनके पास आये तुम कहां रहत हो अरु यह फल तुमने कहांपायो है तब उनकहा कि हमारोदेश पूर्व है अरु हमारे बनबिषे यहित नीकनीक फल हैं अरु बारह मास फलतेहैं कोकिला मयूर शुक सारस बोलते हैं अरु शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहते हैं अरु श्री गंगा के किनारे हमारो आश्रम नजीकही है तुम चलिकै देखहु तो बहुत प्रसन्न होहुगे उनकी नावमें अनेकन मेवालगी हैं अमृत इव फल के रस हैं तब मुनिसंग चले नावपर चढ़े परन्तु उनपर बाटिक फल अनेक सरंजाम की रचना देखिकै मग्न होइ गये तब तिन तुरंत नाव चलाइ दई मुनि के पिता का भय मानिकै अति आतुर लै चलीं तब इहां राजा को खबरि भई कि शृंगी ऋषि आवते हैं तब राजा बड़े उत्सवसे आगे लैकै धूप दीप नैवेद्य आरती करिकै महल में लै गये अनेकन प्रकार से सेवाकीन कछु दिन विषे यज्ञ करायो राज्य सुखीभई इहां वसिष्ठजी दशरथजू से बोले हे राजन् बीरसिंह तुम्हारे भाई हैं तिन को पठवहु शृंगीऋषि रोमपाद राजा के इहां हैं तिनको अच्छी भाव भक्ति समेत बोलाइ ल्यावहिं तब वसिष्ठ की आज्ञा जैसे भई तैसेही बीर-सिंहजू नव सुवर्ण मणिनते रचित बहुतसी नावन सहित बड़े सरंजामसे गान नृत्य करावते मुनि को लेआये तब वसिष्ठ अरु राजा बड़े भावते मुनिको आगेलेत भये अर्घ्य पाद्य धूप दीप नैवेद्य आरती करिकै सुन्दर आश्रम विषे आसन दीन्ह तब घोड़ाबिदा कियो आगे बर्षदिनताईं घोड़ालैकै पृथ्वी मण्डल फिरि आये अरु तेहिवर्ष दिनमें यज्ञ शाला बनिकै तैयार भई बसन्तऋतु चैत्रमास शुक्लपक्ष अष्टमी को सर्व योग उत्तम शुभ दिन शोधिकै उत्तम मुहूर्त में घोड़ा चल्यउ है अरु बर्ष दिन पूरे अष्टमी को आयो है तब शृङ्गीऋषि को लैकै यज्ञ शालाको गयो तहाँ ब्रह्माण्ड भरे के राजा ऋषि मुनि ब्रह्मा शिवादिक देवता आये हैं तहां वेदकी विधि विधानते बर्ष दिन ताईं यज्ञ भई (५) समस्त मुनिन विषे यज्ञ के आचार्य शृङ्गीऋषि होत भये शृंगीऋषि अरु वसिष्ठादिक मुनि भक्ति सहित श्री रघुनाथजी की प्राप्ति हेतु अग्नि विषे प्रीति समेत बर्ष दिन ताईं वेद बिधिते आहुति देतभये तब चैत्र शुक्लाष्टमी मध्याह्न सूर्यजात सोमवार नक्षत्र योग लग्न ग्रह मुहूर्त समस्त उत्तम मंगल भय तेही साइत अग्नि मूर्तिमान् अति सुन्दर

तेजो मय धृतालङ्कार यथा योग्य किशोर बिग्रह प्रत्यक्ष भये दोऊ करकञ्ज कहे कंचन को थार प्रकाश मय तामें चारु सुन्दर चरु कहो परम दिव्य पायस परिपूर्ण भरे (६) अग्नि बोले हे वशिष्ठ जो कार्य तुम हृदय विषे बिचार कीनहै सो सर्व सिद्ध भयो (७) हे वशिष्ठ यह हवि तुम राजाकोदेहु बशिष्ठजूने कह्यो कि हे राजन् तुम यथायोग्य भाग करिकै रनिवासन को देहु जाइ यह प्रसंग विषे यह अभिप्राय है कि परब्रह्मने अग्निके हाथ पायस को प्रस्थान पठायो है कि राजा श्रीदशरथजूके इहां यहप्रस्थान धरिआवहु हम आवते हैं (८) दोहार्थ ॥ तब सकल सभाको समुझाइ कै पावक अन्तर्द्धान भये तहां पावक के मङ्गलमय बचन सुनिकै समस्त सभा आनन्द को प्राप्त भई आगे यज्ञ बिषे जो सरंजाम बचेउ सो सब ब्राह्मणन अरु याचकन को देतभये श्री रामप्रसादी सब ही लीन पुनि चैत्रशुक्ल नवमीको समस्त समाज राज सभामें आई मह राज श्रीदशरथ जी यथायोग्य सबको आस्रम देतभये (९) ॥

१८९ गुरुपदबन्दिभूपगृहआये। मंजुलमंगलमोदबधाये * * १
तबहिंराउप्रियनारिबोलाई। कौशल्यादितहांचलिआई २
अर्द्धभागकौशल्यहिदीन्हा। उभयभागआधेकरकीन्हा * ३
कैकेयीकहँसोनृपदयऊ *। रह्यउसोउभयभागपुनिभयऊ ४
कौशल्याकेकयीहाथधरि। दीन्हसुमित्रहिमनप्रसन्नकरि ५
यहिविधिगर्भसहितसबनारी। भयउहृदयहर्षितसुखभारी ६
जादिनतेहरिगर्भहिआये। सकललोकसुखसम्पतिछाये ७
मन्दिरमहँराजहिंसबरानी। शोभाशीलतेजकीखानी * * ८
सुखयुतकछुककालचलिगयऊ। जेहिप्रभुप्रकटसोअवसरभयऊ ९

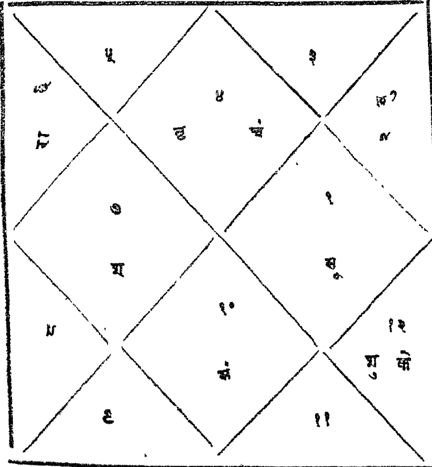
दो० योग लगन ग्रह वार तिथि सकल भये अनुकूल ॥
चर अरु अचर हर्ष युत राम जन्म सुख मूल १

१८९ तब राजा गुरुपद बन्दिकै अत्यानन्द मङ्गलते भरे मञ्जु कही निर्मल मनते आज्ञा पाइकै राजमन्दिर को आवत भये (१) तब राजाने प्रियनारि जो हैं श्री कौशल्या जी कैकेयीजी सुमित्रा जी तहां सब रानी प्रियहैं पर तीनि परम प्रियहैं तिन को बोलावत भये (२) आगे राजा के समीप तीनिहूं रानी अति हर्ष समेत आवती भईं तब राजा संपूर्ण पायस से अर्द्ध भाग श्री कौशल्या जीको देत भये पुनि आधेके दुइ भाग कीन्ह (३) तामें एक भाग कैकेयीजीको दीन पुनि आधेमें आधा जो चौथ भाग रहा ताके दुइभागकीन(४) एक कौशल्या अरु एक कैकयी के हाथधरेउ राजाकी आज्ञा पाइकै अति प्रसन्नता संयुक्त दोउन रानिन सुमित्राजीको दीन प्रथम श्रीकौशल्या जी दीन सो श्री लक्ष्मणजी होहिंगे पुनि कैकेयी देतभईं ताते शत्रुहन अवतीर्ण होहिंगे जेहिरीतिते वशिष्ठजी ने आज्ञादीन्ह तेही रीतिसे राजा रानिनको देतभये (५) तब

रानिन पायस भोजन कीन्ह रानिनके गर्भ विषे भरत लक्ष्मण संयुक्त श्रीरामचन्द्रजी को दिव्य प्रस्थान शोभित भयो तब रनिवास अति आनन्द को प्राप्त भयो (६) जादिन ते हरिको आगमन गर्भ विषे भयो तादिन ते तीनिहु लोक चौदहो भुवन अरु त्रैलोक्य भुवनको जो अन्तराय है तहां तहां सुखसम्पत्ति छाय रह्यो है हरिकहो विष्णु को विष्णु नामपायस को जबते पायस गर्भविषे आई तबते सुख सम्पत्ति छाई (७) मन्दिरनविषे शोभा शील तेज की खानि रनिवास शोभित हैं (८) येहो प्रकार परमानन्द संयुक्त बारह मास बीततभये जौन समय प्रभुके आविर्भाव होबेको है सोई समय आय प्राप्त भयो जौनी साइतको हविष्यान्नदियोहै सोई मास तिथि ग्रह लग्न योग इत्यादिक मङ्गल मयअवसर श्रीरामचन्द्रके आविर्भावको प्राप्तभयो (६) दोहार्थ ॥ श्रीरामजन्मके समय सर्वमंगलकेमूल उत्तम योग लग्न ग्रह बार तिथि इत्यादिक प्राप्तभये ब्रह्माण्डबिषे जेतेजीव चराचर ते सब परमानन्दको प्राप्तभये आगे श्रीरामजन्मके समयबिषे पंचग्रहउच्चस्थान बिषे प्राप्तभये मेषकेसूर्य मकरकेमंगल तुलाके शनैश्चर कर्कके बृहस्पति सहित चन्द्रमा मीनकेशुक्र कर्कलग्न उदयहोतसन्ते तनभवनबिषे अरु पुनर्वसुनक्षत्र चतुर्थचरण बिषे रामजन्मभयो पांचोग्रहउच्चबिषे जन्मसमय जिसकेहोइँ सो अखिल लोकनायकहोइ सो श्रीराम के जन्मबिषे सबयोगपरेहैं प्रथमस्थानमें कर्कके चन्द्रमा अरु बृहस्पति द्वितीय स्थानबिषे केवल सिंहराशि तृतीयस्थानबिषे कन्याकेराहु चतुर्थस्थानबिषे तुलाकेशनैश्चर पंचमस्थान केवल बृश्चिकराशि छठयें केवलधन सतयेंस्थानबिषे मकरके मंगल अठयें केवलकुम्भराशि नवमस्थानबिषे मीनकेशुक्रअरुकेतु दशयेंस्थानबिषे मेषकेसूर्य ग्यारहवें स्थानबिषे वृषकेबुध बारहवेंस्थान केवल मिथुन राशिनाम प्रथम मेष १ वृष २ मिथुन ३ कर्क ४ सिंह ५ कन्या ६ तुला ७ बृश्चिक ८ धन ९ मकर १० कुम्भ ११ मीन १२ ग्रह नव प्रथम सूर्य १ चन्द्र २ मंगल ३ बुध ४ बृहस्पति ५ शुक्र ६ शनैश्चर ७ राहु ८ केतु ९ तन १ धन २ सहज ३ सुहृद ४ सुत ५ रिपु ६ जाया ७ मृत्यु ८ धर्म्म ९ कर्म्म १० आयु ११ व्यय १२ श्रीराम जन्मबिषे पंचग्रह उच्चस्थानमें प्राप्तभये बाल्मीकीयमें शिव-लालपाठकको तिलक ॥ पंचमग्रहेषु रविभौमशनिगुरुभार्गवेषु स्वोच्चसंस्थेषु निजोच्चराशि संस्थेषु मेषमकरतुलाकर्कमीनस्थेषुसत्सु कर्कटाख्यलग्ने राश्युदये वाक्पतीइन्दुनासहप्रो द्यमाने उदयतिजगन्नाथंपंचोच्चैर्लोकनायकः ॥ हिरण्यंहिरण्मयंब्रह्माण्डङ्गर्भे यस्यैवतद र्थकं हिरण्यनाभेति जन्मनाम प्रतिष्ठितम् ॥ श्री पंचग्रह उच्चस्थानबिषे प्राप्तभये मेषकेसूर्य मकरकेमंगल तुलाके शनैश्चर कर्कलग्न उदयहोतसंते बृहस्पतिसहित चन्द्रमा कर्कराशि के भयेसंते तनभवनबिषे प्राप्तभये मीनकेशुक्र पंचग्रह उच्चबिषे रामका जन्मभयो पांचो ग्रह उच्चस्थसमयमें जिसका जन्महोइ सो अखिललोक नायकहोइ तहां रामजन्मबिषे पांचो उच्चग्रह परेहैं औरे भगवान्के अवतारहूमें नहींपरेहैं अपरदेवता मनुष्यादिकन की काचली है अरु श्रीरामजन्म बिषे पुनर्बसु नक्षत्र चौथे चरण पर्यो है पुनि कोई (ज्योतिष श्लोकः) उच्चस्थेग्रहपंचकेसुरगुरौसेन्दौनवम्यांतिथौ लग्नेकर्कटकेपुनर्वसुदिने मेषस्थितेभास्वति ॥ निर्दग्धानिखिलःपलाशसमिधोमेध्यादयोध्यारणे राविर्भूतमभूत्तपूर्व विभवंनीलस्वभावंमहः १ (अथयोगानाहकनकदण्डः श्लोकः) एकःकनकदण्डाख्यो

देवानामपिदुर्लभः ॥ मीनेमेषेवृषेचैव तुलायांचस्थितेग्रहे २ (इतिकनकदण्ड:) ॥

रामजन्मकुण्डली ॥ अथचतु सागरयोगः ॥ चतुर्षुकेन्द्रस्थानेषुसौम्याःपापस्थिताग्रहाः॥ चतुःसागरयोगोऽयं राजसिंहासनेविशेत् ३ ॥ परमोच्चगताःसर्वेस्वोच्चांशेयदिसोमपः त्रै-लोक्याधिपतिंकुर्युः देवदानवपूजितः ४ सातग्रह उच्चकेहोतहैं अजकहीमेष तेहिके सूर्य वृषके चन्द्रमा मृगकही मकर तेहिके मंगल अंगनाकहीकन्या तेहिके बुध कुलीर कही कर्क तेहिकेबृहस्पति मीनके शुक्र तुलाके शनैश्चर येसातौं उच्चके उच्चकीराशि से सतई राशि जोपरैं तो नीचके होइजात हैं (श्लोकः) अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरमीनतौलिनो



दिवाकरादिकग्रहाःक्रमेणसंस्थिताहिचेत् ॥ इमानिभानितूरयोवदन्तिचोच्चकानिवै यथे भ्यएवनीचकान् रसातलंगतान्विदुः ५ पुनि राशिनके पति क्रमते कहते ॥ मेष वृश्चिककेपति मंगल वृष अरु तुलाकेपति शुक्र मिथुन कन्याकेपति बुध कर्कके पति चन्द्रमा सिंहकेपति सूर्य धन मीनके पति बृहस्पति मकर कुम्भ के पति शनैश्चर (श्लोकः) कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्य चन्द्रमा कविभौमजीवशनिसौरियोगुरुः ॥ इहराशि पाःक्रियमृगास्यतौलिकं दुभतोनवांशवि धिरुच्यतेबुधैः ६ श्रीरामके जन्मबिषे चन्द्रमा कर्कमें प्राप्तहै अरु सबग्रह लग्न नक्षत्र मुहूर्त योग काल इत्यादिक श्रीराम जन्मबिषे प्राप्तहोइकै सबमंगल मयभये (१) ॥

१९० नवमीतिथिमधुमासपुनीता । शुक्लपक्षअभिजितहरिप्रीता १
मध्यदिवसअतिशीतनघामा । पावनकाललोकबिश्रामा २
शीतलमन्दसुरभिबहबाऊ * । हर्षितसुरसन्तनमनचाऊ * ३
बनकुसुमितगिरिगणमणिआरा । स्रवहिंसकलसरितामृतधारा **४**
सोअवसरबिरंचिजबजाना । चलेसकलसुरसाजिबिमाना ५
गगनबिमलसंकुलसुरयूथा । गावहिंगुणगन्धर्बबरूथा * ६
बर्षहिंसुमनसुअंजलिसाजी । गहगहगगनदुन्दुभीबाजी * ७
अस्तुतिकरहिंनागमुनिदेवा । बहुबिधिलावहिंनिजनिजसेवा ८
दो० सुरसमूहकरि बीनती पहुंचे निजनिज धाम ॥
जगनिवासप्रभुप्रकटभे अखिललोकबिश्राम १

१९० बसन्तऋतु ब्रह्माण्ड मण्डलबिषे अरु मधुमास अतिपुनीत अरु नवमीतिथि शुक्लपक्ष अभिजित उपनक्षत्र अरु मुहूर्त हरिप्रीता उत्तम उपयोग किन्तु हरिप्रीता कही

हरिविषे प्रीति उपजावनेवाले हरिकी प्राप्ति करने वारे सर्व आइ प्राप्तभये (१) दुइदण्ड ऊन मध्याह्न बिषे सूर्य तेहिसमयबिषे नतौ अतिशीतल न घाम मातदिल मंगलमय समय ब्रह्माण्ड भरेको मंगलदाता सम्पूर्ण लोक को बिश्रामकर्ता ऐसो पावनकाल प्राप्त भयो (२) शीतलमन्द सुगन्ध पवन बहुतभयो सम्पूर्ण ब्रह्माशिवादिक देवता हर्षको प्राप्तभये अरु ऋषिमुनि इत्यादिक सन्तजननके तनमन बिषे परमउत्सवभयो (३) ब्रह्माण्ड मण्डलबिषे जेते तृणतरुहैं ते सब नवीन पल्लव फूल फल समयपाय शोभितभये अरु सुमेरु उदयास्तादि सम्पूर्ण पर्वतनबिषे मणिमाणिक प्रकटतभये अनेकन जगमगाइ रहेहैं अरु नदी सर सागर समुद्रनते सब अमृतमय धाराबहती हैं अरु भरिरहे हैं यथा योग्यजहां जसचाही तहां कमल फूलेहैं हंसादिक बिहंगबोलतेहैं (४) सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मण्डल प्रकाशमानभयो चराचरजीव परमानन्दको प्राप्तभये ब्रह्मा समस्त देवतन संयुक्त अपने अपने बिमाननपर चढ़िचढ़ि हर्षसंयुक्त श्री अयोध्यापुरीके समीप नभ बिषे प्राप्त भये (५) नभबिषे बिमान बिलम्बितकही स्थिरभये सकलदेवता गन्धर्व यूथकेयूथ श्री राम अरु दशरथ महाराजके परमदिव्य गुणगावतेहैं जिनराजाके परमेश्वर पुत्रहैं (६) अरु कल्पतरुके फूल अंजलिन भरिभरि बर्षतेहैं सर्व देवता अरु गन्धर्व परमेश्वरके आनन्दमें प्राप्तह्वैकै गगनबिषे गहगहे दुन्दुभी कही बड़े बड़े नगारा बजावतभये गहगहे कही गम्भीर (७) देवता मुनि नाग स्तुति करतेहैं अरु अपनी अपनी सेवा पृथक् पृथक् जनावतेहैं (८) ब्रह्मादिक देवताओंके समूह बिनय संयुक्त स्तुतिकरिकै निजनिज स्थान को प्राप्तभये जग निवास कही सम्पूर्ण जग बिषे अन्तर्यामी रूप सर्व साक्षी भूत सर्व नियन्तास्वरूप जगबिषे निवासकियेहैं किन्तु सम्पूर्ण जगत् जिनबिषे निवासकिये हैं (सूत्रेमणिगणाइव) किन्तु जगबिषे निवासकरिबेको प्राप्तभये यह बिशेषार्थहै (९) ॥

छन्दचौपय्या ॥

१९१ भयप्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्याहितकारी ॥
हर्षित महतारी मुनिमनहारी अद्भुतरूप निहारी १
लोचनअभिरामा तनुघनश्यामा निज आयुधभुजचारी ॥
भूषण बनमाला नयन बिशाला शोभासिंधु खरारी २
कहदोउकरजोरी अस्तुतितोरी केहिबिधि करौंअनन्ता ॥
माया गुणज्ञाना तीतअमाना वेदपुराण भनन्ता ३
करुणासुखसागरसबगुणआगरजेहिगावहिंश्रुतिसंता ।
सो ममहितलागी जनअनुरागी भयेप्रकट श्रीकंता ४
ब्रह्माण्डनिकाया निर्मितमाया रोमरोमप्रतिवेदकहै ।
ममउरसोबासी यह उपहासी सुनतधीरमति थिरनरहै ५
उपजाजबज्ञानाप्रभुमुसकानाचरितबहुतबिधिकीनचहै।

सुनि बचनसुजाना रोदनठाना होइ बालक नररूपा ॥
यहचरितजेगावहिं हरिपदपावहिं तेनपरैंभवकूपा ८
दो० बिप्रधेनु सुरसंत हित लीन्ह मनुज अवतार ॥
निजइच्छा निर्मित तनु माया गुण गोपार १

१९१ छन्दार्थ ॥ श्रीरामचन्द्रजी प्रकटभये दीननके दयालुहैं बिशेष श्री कौशल्या जीके हितकारीहैं अपनी शोभाकरके मुनीशनके मनहरते हैं ऐसी अद्‌भुत शोभादेखिकै माता अतिहर्षको प्राप्तभई अद्‌भुतकही योगीशन मुनीशन के देखिबे सुनिबे में ध्यान समाधि मन बचन कर्मते अगमहैं सो स्वरूप श्री कौशल्याजू देखतीभई (१) घनश्याम स्वरूप कोटन कन्दर्पको शोभा लोचनको अभिराम कही बांछत परमानन्द फलदाता निज आयुध भुजचारी चरगति भक्षणयोः धातुहै गति प्राप्तिबिषे होतहै तातेनिज आयुधजो धनुषबाण सो द्वौभुजबिषे ग्रहणकियो है किन्तु चरगमन बिषे होतहै धनुषबाण द्वौभुजबिषे फेरतेहैं किन्तु धनुषबाण ग्रहण किहे चरकही महिबिषे बिचरिबेको प्रकट भयेहैं तहां भाषाबिषे जहां छन्दनके चरणके अन्तबिषे कोई स्वरप्राप्त भयेहैं अरु पद के अर्थबिषे वे स्वरबिरोधकरते हैं तहां स्वरनको पादपूर्णार्थ जानब अरु कोई सूत्रकरिकै लुप्त होइ जाते हैं ताते चरपद सिद्ध है किन्तु निज आयुध भुजचारी चारि भुजाबिषे गदा पद्म शङ्ख चक्र धरे हैं काहे ते कि श्रीरामचन्द्र जी ने विष्णु भगवान्‌को पालन शक्ति दीनि है ताते श्रीरामचन्द्रजी विष्णुस्वरूप प्रकटत भये जाते सबजानें कि विष्णु भगवान् अवतीर्ण भये ताते चतुर्भुज प्रकटे बनमाला इत्यादिक भूषण नखशिखलौं अङ्गअङ्ग प्रति शोभित हैं अरु नयन बिशाल अरुण कञ्जइव शोभाके समुद्र हैं खरारि नाम परम्परा से कहा है (२) श्री कौशल्या द्वौकर जोरिकै बोलती भईं हे प्रभु मैं तुम्हारी स्तुति केहि प्रकारते करूं काहेते तुम अनन्त हौ अरु माया के जेते गुण हैं अरु ज्ञान हैं तेहिते तुम अतीत कही परेहौ अरु तुम अमान हौ कैसे जानिये आप को स्वरूप कार्य कारणके परे सो स्वरूप जीवनको केवल कृपा करिकै प्राप्त होत है यह वेद पुराण कहते हैं (३) आपु करुणा अरु सुखके सागरहौ अरु परम दिव्य गुणनके आगर कही स्थानहौ ऐसे तुमको जानिकै वेदसंत गावते हैं सो प्रभु मेरे हितलागिकै प्रकटत भये काहेते तुम अपने जननके बिशेष करिकै अनुरागीहौ काहे ते आप श्रीकान्त अरु सर्वजीव तत्त्व श्रीजूके पुत्रहौ किन्तु श्री कही ऐश्वर्य यश तेज प्रताप बल बीर्य उदारता दयाज्ञान बैराग्य योग ध्यान समाधि मोक्ष भक्ति इत्यादिक सबके तुम पति हौ किन्तु कोटि ब्रह्मांडको श्री अरु पर बिभूति त्रिपाद तेहि सबके तुम पतिहौ सकल जीवन के ऊपर कृपा करहु (४) पुनि श्रीकौशल्या जी कहती हैं हे प्रभु तुम्हारे स्वरूप के आश्रय

तुम्हारी माया मोको कैसी देखि परैहै कि अपने रोम रोम प्रति निकाय कही समूह ब्रह्मांड निर्मित किये है अरु निर्मित करती है जो हमने वेदन विषे सुन्योहै सो प्रत्यक्ष देखियत है ऐसी तुम्हारी माया को विशेष प्रभाव है अथवा ऐसो वेद कहते हैं अब सामान्य अर्थ तुम्हारे रोम रोम प्रति तुम्हारी मायाने निकाय ब्रह्माण्ड निर्मित किये हैं हे प्रभु तुम सर्वोपरि ब्रह्म तुम्हारो स्वरूप है जो तुम ऐसेही स्वरूप बने रहोगे तौ काहूके प्रतीति न आवैगी कि ये कौशल्याके पुत्र हैं अरु बड़ो उपहास है जे तुम्हारे प्रभावको जानै हैं बड़े बड़े धीर तिनकी मति थिर नहीं रहैगी विश्वास नहीं आवैगो अरु मैं तुम्हारी कृपाते तुमको जानती हौं जो नैमिषारण्य बिषे मोहिं संयुक्त राजा को बरदान है सोई करिये (५) जब ऐसो श्रीकौशल्याजूको पूर्व ज्ञान उत्पन्न भयो तब प्रभु मुसुकाने यह जानिकै कि माता हमारो स्वरूप जानती हैं काहेते अनेक चरित्र कीन्ह चाहते हैं ताते माता सों कहते हैं हे माता मैं बिष्णुरूप अनेक लीला करौंगो तुम मोको परम पुरुष जाने रहौ अब जामें तुमको पुत्र प्रेम उपजै सो कहो वह मैं करौं जामें तुमको आनन्द सुखहोइ (६) माता पुनि बोली जो कोई कहै कि अबहीं तौ लोक वेदहू की रीति ते श्री कौशल्या माता नहीं हैं अरु गोसाईं ने माता कहा तहां श्री रामचन्द्र ने पूर्वही माता राजा मनु के प्रसङ्ग में कहा है ॥ चौपाई ॥ मातु बिबेक अलौकिक तोरे ॥ अरु वर्तमान में जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ताते प्रथमै माता कहा पुनि बोलती भईं सो मति पूर्वही श्री राम ऐश्वर्य्य मय निश्चय भई है प्रभु की प्रेरणा ते अब वह मति डोलि गई वह मति ऐश्वर्य्य शांत रसते टरि गई बात्स-ल्य रस में निश्चय भई ताते कहा ॥ तजहु तात यह रूपा ॥ अब बाल लीला करिये यह अति प्रिय शीला कही अतिशय प्रीति को स्थान है अरु यह सुख परम अनूप है सो करिये (७) हे पार्वती कौशल्या के बचन सुजान कही अति प्रवीण बाणी श्री रामचन्द्रजी सुनते भये किन्तु श्रीरामचन्द्रने अति सुजान माताकी बाणी सुनी सुजान कही जेहिकी बाणी विषे अनेक अभिप्राय होइँ सो सुजान अरु तेहिको जो समुझै सो सुजान सुजान बाणी सुनिकै बिहँसिकै नरभूप जो राजा दशरथ तिनको कहूं कहूं पाठ सुरभूपा है बालकका स्वरूप होइकै रोदन करने लगे यह चरित्र जो गावे सो हरि को बिशेषकै प्राप्त होइ फेरि भवकूप में न परै (८) दोहार्थ ॥ ब्राह्मण गऊ सन्त के हेतु मनुज अवतार लीन्ह मनुज अवतार कही नित्य किशोर विग्रहते बालक भये निज इच्छा निर्मित बाल तनुभये प्राकृत इव बाललीला करहिंगे ताते निज इच्छा निर्मित तनु कहा माया के तीनि गुण इन्द्री मन सहित सबते परे किन्तु माया के गुण इन्द्री मनते परे नित्य किशोर मूर्ति बालक भये इहै अर्थ जानब (९) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुष विध्वंसनेबालकांडे श्रीपरमपुरुषआविर्भाव श्रीकौशल्यादर्शननामएकत्रिं-शः ॥ ३१ ॥

दो० बत्तिस सुभग तरङ्ग महँ रामजन्म उत्साह ॥
रामचरण आनन्द जग बालचरित अवगाह ३२

१९२ सुनि शिशुरुदनपरमप्रियबानी । संभ्रमचलिआईसबरानी * १
हर्षितजहँतहँधाईदासी * । आनंदमगनसकलपुरवासी २
दशरथपुत्रजन्मसुनिकाना * । मानहुँब्रह्मानन्दसमाना * ३
परमप्रेममनपुलकशरीरा * । चाहतउठनकरतमतिधीरा * ४
जाकरनामसुनतशुभहोई * । मोरेगृहआवाप्रभुसोई * * ५
परमानन्दपूरिमनराजा * । कहाबोलायबजावहुबाजा ६
गुरुवशिष्ठकहँगयउहँकारा । आयेद्विजनसहितनृपद्वारा ७
अनुपमबालकदेखिनजाई । रूपराशिगुणकहिनसिराई .. ८

दो० नान्दीमुख शुभश्राद्धकरि जातकर्म सबकीन्ह ॥
हाटकधेनु बसनमणि नृपबिप्रन कहँदीन्ह १

१९२ शिशुरोदन परममाधुर्य्य बात्सल्य रसमय सबके श्रवण मन को परमानन्द रसदाता चित्ताकर्षण रोदनबाणी परमप्रिय पुरी भरमें मह्ल मह्लमें सबको सुनि परीहै मधुर मधुर सो बाणी सुनिकै सम्भ्रम कही निर्भर प्रेमते जे जैसेहैं ते तैसही सबै रनिवास उठि धावती भईं आरती सजे अरु जो सम्भ्रम भ्रमको कहै कि पुत्रकै कन्या यह अर्थ ग्रामीण है (१) पुनि परमहर्ष संयुक्त जहां तहां ते दासी धाइ धाइ आवतीभईं परमानन्द विषे सम्पूर्ण पुरवासी मग्नहैं मग्न कही डूबिजावे को जैसे कोई मर्जीवा होतेहैं समुद्र में डूबिजातेहैं रत्नकाढ़िल्यावतेहैं तैसे सम्पूर्ण अयोध्यावासी ब्रह्मानन्द समुद्रमें मग्न कही डूबिकै श्रीराम बालस्वरूपरूपरत्नलेते हैं तहां बात्सल्य रस रत्नको छदामहै (२) श्री दशरथमहाराज ने पुत्रकोजन्म श्रवणनसुन्यो इहांउत्प्रेक्षालंकारहै ॥ मानहुं ब्रह्मानन्द समाना ॥ श्रीरामजन्म जिनने राजाको सुनायो उनको बचन ब्रह्मानन्द समान राजाके श्रवणद्वार होइकै हृदय में समातभयो किन्तु श्रीरामजन्म होतसन्ते राजमह्ल ब्रह्मानन्द समान होतभयो जेहि मन्दिर बिषे राजाकोमन समातभयो प्रवेश करतभयो किन्तु पुत्रजन्म सुनिकै राजाब्रह्मानन्दसमान भये तब परमानन्द स्वरूप बालक श्रीरामचन्द्रजी तिनके देखिबेकी प्राप्ति हेतु राजाकोमन बालकके समीप चलतभयो (३) राजाको मन परमप्रेम ते पूरिरह्यो शरीर पुलकि आयोहै प्रेमकही जो सद्गुरुनकी बाक्यकरिकै तत्त्वउद्दीपनबिषे प्रेमहोइ सो प्रेमकही अरु जो गुरुनकी बाक्यबिषे आत्मअनुभव पर स्वरूपाकार प्रेम सो परम प्रेम कही आगे राजाके परमप्रेमबिषे पुत्रके देखिबेकोअनुसन्धानबनाहै ताते पुत्रके देखिबेको उठा चाहतेहैं पर अपनो मतिको धीरकरिकै (४) पुनि श्रीरामचन्द्रकी प्रेरणाते राजा के अन्तःकरणबिषे शांतरस ऐश्वर्य्य आइगयो मनमें राजा कहतेहैं देखिये तो जेहि प्रभु को नाम कहतसुमिरत सुनतसन्ते सबैअमंगल नाशहोइकै परममंगल परमशुभहोतेहैं सदा जाके नामको शिवसनकादि इत्यादिक अहर्निश जपतेहैं सो परमपुरुष मेरेगृहबिषे अवतीर्णभयो मैं अपनो भाग्यको कहांतक कहौं अरु कोई नहीं कहिसकै (५) राजाकोमन

परमानन्द में पूरिरहाहै आज्ञादेतेहैं कि बाजाबजावहु तहां सन्देहहै कि शास्त्रनबिषे प्रमाणहै कि जब परमानन्दकी दशाभई तब मन क्रम बचनके व्यवहारवाहू आनन्दमें शांतकही स्थिर होइजातेहैं तहां व्यवहारके द्वैभेदहैं स्वार्थिक परमार्थिक स्वार्थिकबिषयानन्दमयहै परमार्थिक परमानन्द मयहै तहां श्रीदशरथमहाराजको व्यवहार परमानन्दमयहै जिन राजाको पुत्र परमात्मा परब्रह्मभयो है जैसे क्षारसमुद्र अरु क्षीरसमुद्र दूनौमें जलचरहैं पर जलचरनको व्यवहार समुद्रके भीतर समुद्रभरेमेंहै तैसे राजाकोव्यवहार परमानन्दहिमेंहै पुरीभरि श्रीरामचन्द्रहि बिषे आनन्दहै (६) गुरुगरिष्ठ सर्वोपरि श्रीबशिष्ठजीके बोलाइबेको सुमन्त आज्ञानुकूल तुरन्तजातभये सुमन्त्रकी बाणी सुनतसन्ते बाणीके सङ्गही श्री बशिष्ठ ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणोंके सङ्ग राजद्वारपर आये राजा मिलिकै भवनको चले (७) अनुपम श्रीरामचन्द्र बालस्वरूप तिनकी शोभा छबि लालित्यगुण इत्यादिकन की राशि ऐसे अनूप बालकदेखते भये जिनकी उपमा देबेको चौदहौभुवन तीनिहूं लोकमें ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड बिषे न कोईहै न रहा न होइगो ताते अनूपकहा पुनि अनन्त गुणबालकमें कैसेलक्ष्य कीन्ह तहां श्रीबशिष्ठ इत्यादिकनको जो राजमहलमें समाजहै सो सर्वजीवन्मुक्तहै ताते श्रीरामस्वरूप के अधिकारी हैं ताते सबजानते हैं कहिबेकी सामर्थ्य नहींहै (८) दोहार्थ ॥ नान्दीमुख श्राद्ध जातकर्म करिकै हाटक धेनु बसन मणि इत्यादिक पदार्थ राजा ब्राह्मण अरु याचकनको देतभये तेहिसमयके श्राद्धको नान्दीमुख नामहै तहां युक्तिको अर्थ करतेहैं तेहिश्राद्धमें पितृनको मुख नाँदको ऐसो होतहै पितृआनन्दसों सन्मुख आवतेहैं आगे जब ब्राह्मण क्षत्रीके पुत्रजन्मतभयो जबताईं नारनहीं छीनगयो तब ताईं के समयमें देव पितृ ब्राह्मण अपरयाचक एते पिता औ पुत्रहुके सन्मुख होतेहैं बहुत पदार्थहेतु मन और मुखकोबिस्तार करतेहैं आनन्दित होतेहैं देवयज्ञहेतु पितृश्राद्ध तर्पणहेतु देव ब्राह्मण अरु याचक दानहेतु राजादशरथ महाराजने सर्व वेदबिधान करिकै सबको सन्तुष्ट कीन्ह (९) ॥

१९३ध्वजपताकतोरणपुरछावा। कहिनजायजेहिभांतिबनावा १
सुमनवृष्टिआकाशतेहोई । ब्रह्मानन्दमगनसबकोई * * २
वृन्दवृन्दमिलिचलींलोगाईं। सहजशृँगारकियेउठिधाईं* ३
कनककलशमंगलभरिथारा। गावतपैठहिंभूपदुवारा * * ४
करिआरतीनिछावरिकरहीं । बारबारशिशुचरणनपरहीं ५
मागधसूतबंदिगुणगायक । पावनगुणगावहिंरघुनायक ६
सर्बसदानदीनसबकाहू * । जिनपावारखानहिंताहू * ७
मृगमदचन्दनकुंकुमकीचा । मचीसकलबीथिनबिचबीचा ८
दो० गृहगृह बाज बधावशुभ प्रकटभये सुखकन्द ॥
हर्षवन्त सब जहँ तहँ नगर नारि नर वृन्द १

समस्त नगरमें घरघर ध्वजाकही बड़े बड़े निशान पताका छोटे छोटे अरु तोरण बन्दनवार भूमिमें महलपर यथायोग्य छाइरहेहैं मानों आगेहीते बनिरहेहैं सो रचना कहिबे योग्यनहींहै (१) देवता आकाशते कल्पतरुके फूल बर्षातेहैं सर्वब्रह्मानन्द में मग्नहैं ब्रह्मानन्दकी अर्थपाछेके दोहामें कहि आयेहैं (२) वृन्द वृन्द मिलिकै स्त्रीचलतीभईं परसहज शृङ्गार जो सर्व कालमें शृङ्गार कि हे किन्तु सहजही शृङ्गारमयहैं ते सब उठिधा:-वतीभईं (३) कोई हजारन कंचनके कलश मोतिनतेछुहे आगेही बनिरहे हैं अरु हेम मणिमयथार तामें मंगलमय पदार्थभरे तुलसीपीत श्वेत चाउरदधि हरदी केशरि चन्दन दूर्बा गुलाल अबीर कुंकुम छोटे छोटे कलश जामें रोरी अतर फुलेल गुलाब इत्यादिकसुग-न्धमोती पंचरत्न इत्यादिकभरे धूपदीप नैवेद्य ताम्बूलआरती युवतीलिहे धावतीभईं (४) सम्पूर्ण जो रानी अरु नगर की स्त्री ये सब बालक जो श्रीरामचन्द्र तिनकी आरती करतीहैं बारबार शिशुके चरणन परती हैं यह सन्देह है कि तुरन्तभयो बालक अरु तेहिकेचरणपरैं यहपरिपाटी कैसे सम्भवै तहां जब राजामनुको श्रीरामचन्द्रने बरदीन है कि हम तुम्हारे पुत्रहोहिंगे तब यहकहिकै अन्तर्द्धानहोइकै परमदिव्य विभूतिको जातरहे जब राजाके पुत्रहोनेको समयआयो तब प्रथम श्रीअयोध्या पुनि अवधवासिन को आज्ञादीन कि तुम एकस्वरूप सहित ऐश्वर्य ब्रह्माण्ड मण्डलमें जाहु हमआवते हैं तहां इतनाबीच परिगयउ अब अवतीर्णभये ताते बारबार शिशु चरणन परहीं (५) मागधकही कथिक कलावतादि पदकरिकै गावतेहैं सूतकही जे पुराणकरिकै गावतेहैं बन्दी भाट कबित्तकरिकै गावतेहैं श्रीरघुनाथके नित्यपावन गुणगावते हैं इहां रघुनाथ कही श्रीरामचन्द्र तोहीपर श्रीदशरथ महाराजको कही (६) सर्बसकही मनबांछित दान दीन पुनि सर्बसकही एकएक शरीरको बस्त्रकादिपट निर्बाहमात्र रहिगयो अपरघर बाहर को सरंजाम सर्वसदान जाको उचित तिनतिनहूं जो दानलीन अरु सर्बघरको दानदीन तहां सबहूं दीन लीन किन तहां ब्रह्मादिकदेवता याचकरूपह्वैकै श्रीरामजन्मके उत्सव का प्रसादलेतेहैं(७)मृगमद चन्दन केशरि कुंकुमादि सुगन्ध रंगनकी बीथिनबिषे कीच मचिरहीहै(८)दोहार्थ॥ गृहगृहबिषे बधाई बाजतीहैं काहेते सर्बसुखके कन्दकही मूर्त्ति श्रीरामचन्द्र प्रकटे जहां तहां नगरके नरनारि वृन्दवृन्द हर्षको प्राप्तहैं (९)॥

१९४ कैकयसुतासुमित्रादोऊ * । सुंदरसुतजन्मतभईंबोऊ * * १

वहसुखसम्पतिसमयसमाजा। कहिनसकहिंशारदअहिराजा २

अवधपुरीसोहैयहिभांती * । प्रभुहिंमिलनआईजनुराती * ३

देखिभानुजनुमनसकुचानी । तदपिबनीसंध्याअनुमानी * ४

अगरधूपजनुबहुअँधियारी * । उड़हिंअबीरमनहुंअरुणारी * ५

मन्दिरमणिसमूहजनुतारा । नृपगृहकलशसोइन्दुउदारा ६

भवनबेदध्वनिअतिमृदुबानी । जनुखगमुखरसमयअनुमानी ७

कौतुकदेखिपतंगभुलाने *। एकमासतेइँजातनजाने * * ८
दो० मासदिवसकर दिवसभा मर्म न जानैकोइ ॥
रथसमेतरबिथाकेउ निशाकवनिबिधिहोइ १

१९४ जब श्रीराम जन्मभयोहै तेहिके चारिदण्डबीते श्रीकैकेयीके श्रीभरत जी आविर्भावभयेहैं पुनि चारिदण्डबीते श्रीसुमित्राजीके श्रीलक्ष्मणजी आविर्भावभये पुनि यहीरीतिसे शत्रुहन प्रकटे जेहिजेहि समयमें भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न प्रकटे हैं तेहीसमयनमें नगरभरेमें घरघरप्रति एकएक बालक प्रकटतभये अतिसुन्दर श्रीरामचन्द्रजी के सखादासहैं घरघर परमउत्सव बधाई बाजिरहीहैं (१)हे पार्वती वहिसमयमें सुखसम्पत्ति अरु समाज जो भईहै श्रीरामजन्मके अवसरविषे सो शारदा अरु अहिराज नहीं कहि सकै (२) अवधपुरी ते इसमय बिषे यहिभांति शोभितभई जनु प्रभुके मिलिबेको रात्री आईहै(३)वह जनु भानुको देखिकै सकुचाइगई तदपि अनुमानिकै सन्ध्यारूपबनी (४) अगर धूप इत्यादिक सुगन्धमय होमकी धुआं सोई अँधियारीहै अरु अबीर जो बहुत उड़तीहै सोई सन्ध्यासमयकी अरुणाईहै (५) मन्दिरनबिषे मणिनके समूहलगे हैं सोई नखतकहे तारागणहैं राजमन्दिरको कलश सोईमानों पूर्णचन्द्र है(६)भवनविषे ब्राह्मण मृदुबाणीते वेदध्वनि करतेहैं जनु सन्ध्यासमयके बिहंगबोलतेहैं(७) कौतुक श्रीरामजन्मके अद्भुत चरित्रको देखिकै सूर्यभूलिगये एकमहीना जातेही नहींजान्यो(८) दोहार्थ ॥ एकमासको एकदिवसभयो पर यहमर्म किसूने नहींजान्यो काहेते कि श्रीरामजन्मको उत्सव देखिकै सहित घोड़े रविके चित्तकी वृत्ति श्रीराम चरित में लगि रही है ताते रथ एक मास थँभि गयो तो रात्री कैसे होइ तहां मास कैसे जान्यो श्रीरामचन्द्र की कृपाते साधु कबीश्वर जानते हैं (९) ॥

१९५ यहरहस्यकाहूनहिंजाना । दिनमणिचलेकरतगुणगाना १
देखिमहोत्सवसुरमुनिनागा । चलेभवनवर्णतनिजभागा * २
औरौएककहौंनिजचोरी *। सुनुगिरिजाअतिदृढमतितोरी ३
काकभुशुण्डिसंगहमदोऊ *। मनुजरूपजानैनहिकोऊ ४
परमानन्दप्रेमसुखफूले * *। बीथिनफिरहिंमगनमनभूले ५
यहशुभचरितजानपैसोई *। कृपारामकैजापरहोई * *
तेहिअवसरजोजेहिबिधिआवा। दीनभूपजोजेहिमनभावा ७
गजरथतुरगहेमगोहीरा * *। दीन्हेनृपनानाबिधिचीरा ८
दो० मनसंतोषे सबनकर जहँतहँदेहिं अशीश ॥
सुचारिउतनय तुलसिदासके ईश १

१९५ यह रहस्य काहूने नहीं जान्यो एकमास सूर्यको रथ टिकिरह्यो श्रीराम

जन्मोत्सवानन्द में किसूको शरीरादिक व्यवहारकी सुधि नहीं रही दिनमणि श्रीराम गुण गान करत चलते भये (१) यह महानन्द महोत्सव देखिकै सुर मुनि नाग इत्यादिक श्रीराम गुण गान करत संते अपने भाग्य सराहत अपने अपने भवन को चलते भये (२) महादेव कहते हैं हे गिरिजा हमारी एक चोरी सुनहु काहे ते कि तुम्हारी दृढ़ बुद्धि है (३) हम अरु काग भुशुण्डि मनुष्य रूप तनु धरे हमारी गति को कोई जानै नहीं (४) परमानन्द प्रेममें फूले श्रीअवध की बीथिन में भूले फिरैं यह चोरी काहेते की कि यह श्रीरामजन्म बाल इत्यादिक उत्सव मनुष्यहि तनु ते निकट प्राप्त है (५) हे पार्वती यह शुभ चरित सोई जानैगो जेहिपर श्रीरामचन्द्र कै कृपा होइ गी (६) तेहि अवसर बिषे जो जौनी रीति से आये ताको तैसही राजा मन भावित पदार्थ देतभये (७) हाथी घोड़े रथ गज हेम रत्न हीरा इत्यादिक अरु नाना बिधि के जरावनके अनेकन पट सबको देतभये (८) दोहार्थ ॥ सबके मनको संतोष करिदीन ते सब जहां तहां आशीर्बाद देते हैं महाराज श्रीदशरथ के चारिउ तनय चिरंजीव रहैं चिरञ्जीव क्योंकहा श्रीरामचन्द्र तौ परमेश्वर हैं इहां राजपुत्र करिकै आशीर्बाद देते हैं श्रीतुलसीदास कहतेहैं मेरे ईश्वरको आशीर्बाद देतेहैं (९) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डेश्रीरामजन्मउत्सवलीलावर्णनोनामद्वात्रिंशतिस्तरंगः ३२॥

दो० रामचरण तेंतिस लहरि लीला बालकराम ॥
नामकरणादै विविध सुख छायरह्यो गृहग्राम ३३

कछुदिवसबीतेयहि [illegible] १

नामकरणकर [illegible] ।

करिपूजाभूपतिअसभाषा ॥ । धरियराम [illegible]

इनकेरनामअनेकअनूपा ॥ ॥ । मैंनृपकहबस्वमतिअनुरूपा ४

[illegible] र्दसिंधुसुखरासी ॥ । सोकातेत्रैलोकप्रकासी ॥ ५

जोसुखधामरामअसनामा । अखिललोकदायकबिश्रामा

[illegible] ॥ ७

[illegible] । [illegible] ॥ ८

[illegible] जगत आधार ॥

[illegible] हैराखेउ लक्ष्मण नाम उदार १

१९६ कछुक दिवस बीते यहि भांती जो पाछे श्रीरामचन्द्र की परमानन्द मय बाललीला कहि आयेहैं यह बारह दिनकी प्रथम बाललीला गोसाईं जीने वर्णन कियो है तहां आनन्दमें भरे राति दिन काहूको नहीं जानि परेउ तब नामकरण को अवसर जानिकै वैशाख बदी पंचमी शुभ योग लग्न मुहूर्त बिषे पूर्ण ज्ञानी श्रीवशिष्ठजीको अति आदरते बुलावते भये पुनि अति आदर कीन (२) पूजा करिकै राजा बोलते भये हे

मुनीश चरित्र बालकनके नाम आपु बिचारि राखा होइ सो धरिये (३) बशिष्ठ जी बोले हे राजन् इनके नाम अनन्त हैं अरु सब नाम अनूप हैं मैं आपनी मतिके अनुरूप कहौंगो (४) जो परमतत्व परमात्मा परब्रह्म परमानन्द स्वरूप परम सुख की पूर्ण राशि ऐसो परम पुरुष आनन्द सुख को समुद्र जेहिके एकशीकर अंश भागते त्रैलोक्य प्रकाशित है सो चैतन्य रूप निर्विकार सर्वान्तर्यामी सर्वव्यापी सर्वसाक्षी है (५) जो आनन्द सिन्धु सुखकी राशि तिनको राम असनाम सो रामनाम कैसो है अखिल कही समूह लोक जोहै अतल बितल सुतल तलातल महातल रसातल पाताल भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यलोक इत्यादिक चौदहौ भुवन तीनिहूं लोक किन्तु अखिल कही अनन्त ब्रह्माण्डको बिश्रामदाता केवल एक श्रीराम नामही है तहां यह प्रसिद्ध निगमागम कहते हैं (६) अरु हे राजन् ये जो कैकेयी को पुत्र है तिन को भरत ऐसो नाम कहो काहेते संपूर्ण बिश्वको भरण पोषण करैहै ताते भरत कहो तहां जिन बालक को रामकही तिनको जो बिश्व भरण गुणहै अरु भरण शक्तिहै सो गुणशक्ति परम दिब्य अनादि मूर्ति भरतजू हैं पुनि दूसर अर्थ भरण कही पदार्थकी प्राप्ति पोषणकही सन्तोष सो दोनों एकही बार कोई पदार्थमें नहीं होतहै काहेते जीवन के राजा होबे की इच्छा राजाके इन्द्र होबेकी इन्द्रके ब्रह्मा होबेकी ब्रह्माके परमेश्वर इन्हींमें संतोष नहींहै अरु भोजनादिक करनेहारे देवता अमृत पान किये हैं तोभी संतोष नहीं है अरु कर्मी तपस्वी कहते हैं कि मैं इन्द्र ब्रह्मा होउँ अरु परमार्थिक बिषे योगी कहते हैं कि हम कालको जीतिलेहिं अरु ज्ञानी कहते हैं कि हमहीं ईश्वर ब्रह्महैं तहां भरण पैतो जहां तहां कछु कछुहै पर पोषण नहींहै काहेते काल अजितहै जीव ईश्वर ब्रह्म नहीं होइहै तहां भरण पोषण दूनों एकही संग होतहैं श्रीरामचन्द्र के प्रेम बिषे जैसे सुष्ठु भोजन करत सन्ते तुष्टि पुष्टि एकही संगहै तैसे जब श्रीराम प्रेम में मत्त भयो तब परमानन्द भरण पोषण संगही है (प्रमाण चौपाई) अवध राज सुरराज सिहाहीं। दशरथ धन लखि धनद लजाहीं॥ तेहि पुर बसत भरत बिनुरागा। चंचरीक जिमि चंपक बागा॥ रमा बिलास राम अनुरागी। तज तवनम इव जन बड़ भागी॥ ताते श्री रामचन्द्र विषे जो साधुन कर अरु संतन बिषे श्री रामचन्द्र जीको प्रेम है ताहीकै मूर्ति श्री भरत जी हैं (भरद्वाज वाक्य) मोरे जान भरत तुम राहू। धरेउ देह जनु राम सनेहू (७) ये जो सुमित्राके छोटे पुत्र हैं जेहिके सुमिरेते शत्रुन को नाश होत है ताते शत्रुहन कहो जिन बालक को राम कहो तिनमें जो शत्रु नाशक शक्ति है तेहिकी मूर्त्ति यह बालक है ताते शत्रुहन कहो पुनि संतन को शत्रु काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य्य इत्यादिक नाश होते हैं जे सन्त श्रीराम का सुमिरण करते हैं अरु श्री राम सन्तन को सुमिरण करते हैं तेहिकै अनादि मूर्त्ति शत्रुहन हैं (८) दोहार्थ॥ जो सन्तन के लक्षण श्रीरामचन्द्र को प्रिय हैं तेहिके धाम अरु संपूर्ण जगत् की आधार शक्ति श्री रामचन्द्र की जोहै अनादि मूर्त्ति येबालक हैं तहां साधुन के लक्षण सामुद्रिक ग्रन्थ के लक्षणात लाक्षित हान हैं वैराग्य योग ज्ञान बिज्ञान शान्ति सन्तोष शील करुणा दया शम दम विवेक समता श्रद्धा ध्यान समाधि समाधान

नवधा भक्ति प्रेमापरा इत्यादिक अनंत लक्षण सन्तन में हैं सो श्री रामचन्द्रकी कृपा करुणा दयाते अरु येही लक्षण सर्ब जगत् को आधार हैं तिन सबकी समष्टी मूर्ति अखण्ड एक रस येई बालक हैं ताते लक्ष्मण कही ते सर्वजीवन के कल्याण हेतु आचार्य हैं अरु जो अपर अर्थकरते हैं शंख चक्र शेष करिकै सो गुसाईं तुलसीदास के मत करिकै प्रमाण है (१)॥

१९७ धरेउनामगुरुहृदयबिचारी । वेदतत्वनृपतवसुतचारी
मुनि [illegible]नधनसर्वसशिव[illegible] । [illegible]सुखमाना।
बारेहितेनिजहितपतिजानी । लक्ष्मणरामचरणरतिमानी
[illegible]दूनोंभ[illegible] * * । प्रभुसेवकयशप्रीति * ४
श्यामगौरसुंदरदोउजोरी * । निरखहिंछबिजननीतृणतोरी ।
चारिउशीलरूपगुणधामा । तदपिअधिकसुखसागररामा ॥
[illegible]रामनोहरहासा ७
[illegible]हुँबरपलना । मातुदुलारहिकहिप्रियललना ८

दो० ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुण बिगत बिनोद ॥
[illegible] कौशल्या को गोद १

१९७ गुरु ने अपनेहृदयमें बिचारिकै चारिहू भाइनके गुणनाम धरेउ तहांनाम चारि प्रकार के होतेहैं लाड़ रूप क्रिया गुण तहां लाड़के नाम लाल लालन छगन मगन बबुआ इत्यादिक रूप नाम श्यामगौर सुन्दर इत्यादिक क्रियानाम रघुबर खरारि रावणारि धनुर्द्धर इत्यादिक गुण नाम राम कृष्ण वासुदेव भगवान् इत्यादिक ताते गुरुन इहां चारिहू भाइनके गुण नाम कहे हैं मुनिने कहा हे राजन् जो वेदन विषे सारभूत तत्व है सोई चारिहू तुम्हारे पुत्र हैं जेहि तत्व को परम हंस योगेश्वर भक्तजन संसार को जीतिकै ध्यावते हैं सो तुम्हारे पुत्र ऐसे हैं आपु बड़ भागी हौ सुनिकै राजाका सुख कहिबे योग्य नहींहै (१) ये बालक मुनीश्वरन के जीवन सर्वसहैं शिवजी को प्राणहीहैं जो बालही लीला ते किशोर ताईं के रस में पगेहैं (२) बाल कही बालही अवस्था ते निजहित पति जानि कै लक्ष्मण ने श्री रामचन्द्रके चरणोंमें रति मानी है इहां शांत रस है (३) अरु शत्रुहनकी भरत के संग प्रीति अरु दूनों भाई मिलिकै श्री रामकी सेवाही में अति प्रीति करिकै यश बड़ाई को सदा प्राप्त हैं (४) श्रीरामचन्द्र भरत श्याममयूरकेकंठइव अरु लक्ष्मण शत्रुहन गौर जनु द्वौ बालक स्वरूप शृंगाररसके सेवक बीररस द्वौ बालकस्वरूपहैं चारिहू स्वरूपकी अनूप छबि निरखि माता तृणतोरती है अथवा राजा अरु गुरु समाजके आगे तृण नाम घूंघट लज्जा को तोरिकै देखती है (५) चारिहू बालक शील रूप गुण के धाम हैं तदपि श्री रामचन्द्र अधिक सुख के सागर हैं छः चौपाई को एकही अन्वय जानब अरु यहि चौपाई ते ॥ वेदतत्व

रूप सब सुतचारी । यहि चौपाई ताई ॥ तदपिअधिक सुखसागररामा ॥ (६) प्रमाण वशिष्ठसंहितायां श्री वशिष्ठ वाक्यं भरद्वाजम्प्रति) जयश्रीमन्महाराजकुमाररघुनन्दन ॥ रामचन्द्रमहाबाहो सच्चितानन्दविग्रह १ गुणातीतपरब्रह्म परात्परतमप्रभो ॥ वात्सल्यादिपरानन्त कल्याणगुणसागर २ जयमत्स्याद्यसंख्येयाऽवतारोद्भवकारण ॥ ब्रह्म विष्णुमहेशादिसंसेव्यचरणांबुज ३ राघवेंद्रमहाराज पुरुषत्तमहाद्युते ॥ सौमित्रेमातृवात्सल्यसिन्धुचन्द्रजयप्रभो ४ रामप्राणमनःपक्षिरक्षपञ्जरलक्ष्मण: ॥ जयासंख्येयसौन्दर्यवात्सल्यादिगुणार्णव ५ जयानन्तधराधार शेषकारणविग्रह ॥ कोटिकन्दर्पदर्पघ्न सच्चिदानन्दरूपधृक् ६ जयश्रीराजराजेन्द्र भोग्यभूलोकभूषण ॥ भरतानन्तमाधुर्य परमानन्दविग्रह ७ जयश्रीरामपादाब्जभ्रमरभ्रातृवत्सल ॥ गाम्भीर्यौदार्यसौशील्य वात्सल्यादिगुणांबुधे ८ सुमित्राब्धिमहाचन्द्र शत्रुघ्नभ्रातृभूषण ॥ जयश्रीलक्ष्मणामेय गूढवात्सल्यविग्रह ६ राजेन्द्रहृदयाम्भोजमार्तण्डमधुरद्युते ॥ जयत्वंसच्चिदानन्द स्वरूपगुणमन्दिर १० इत्यर्थः (६) हृदय अनुग्रह रूप हृदय में जनु शीतल अमृतमय इन्दुको प्रकाश है अरु हास्य जोहै सो किरणि की अति मनोहर सूचनिका जनावति है (७) माता कबहूं उछङ्ग लैकै हलरावती है कबहूं मणि जटित रेशम सहित पालनेमें आनन्दभरी प्रियललना कहि कहि झुलावती है (८) दोहार्थ ॥ व्यापक ब्रह्म अपने घनस्तेज रूप करिकै बृहद् व्याप्त अनेक ब्रह्माण्ड बिषे जैसे आकाश व्याप्त सोई तेज ज्योतिस्स्वरूप जाको योगीश समाधिकरिकै ध्यावतेहैं अरु ज्ञानी चित्तकी वृत्ति एकाग्र करिकै आत्मा ब्रह्माकार आनन्द में रहते हैं अरु जाको ऐसो परम दिव्य तेज गुण तेही बालक को भक्तजन प्रेम लक्षण भक्ति करिकै ध्यावते हैं परमा नन्दको लहते हैं निरंजन कही मायारहित निर्गुण कही तीनिहूं गुणन के परे विगत बिनोद कही शोक हर्ष रहित अज कही अजन्मा गर्भ में नहीं आवे ऐसे परमेश्वर सर्बजीव ब्रह्मादिकन के पिता ते प्रेम अरु भक्ति बश श्री कौशल्या की गोद में बालक स्वरूप परमानन्द देते हैं (१) ॥

१९८ कामकोटिछबि   । नीलकंजबारदगम्भीरा १
अरुणचरणपंकजनखज्योती । कमलदलनबैठेजनुमोती २
रेखकुलिशध्वजअंकुशसोहे । नूपुरधुनिसुनिमुनिमनमोहै
कटिकिंकिणीउदरत्रयरेखा । नाभिगँभीरजानुजेहिदेखा ४
भुजबिशालभूषणयुतभूरी * । हियहरिनखशोभाअतिरूरी ५
उरमणिहारपदिककीशोभा । विप्रचरणदेखतमनलोभा *६
कम्बुकंठअतिचिबुकसोहाई । आननअमितमदनछबिछाई ७
दुइदुइदशनअधरअरुणारे * । नासातिलककोबरणैपारे ८
सुंदरश्रवणसुचारुकपोला * । अतिप्रियमधुरतोतरेबोला ९
कुंचितकचभुवारे । बहुप्रकाररचिमातुसँवारे १०

तनुपहिराई। जानुपाणिबिचरनिमोहिभाई ११
रूपसकहिंनहिंकहिश्रुतिशेषा। सोजानैसपनेहुंजे। ६
दो० सुखसंदोह मोह पर ज्ञान गिरा गोतीत ॥
दम्पतिपरमप्रेमबश करशिशुचरितपुनीत २

१९८ कोटिन कामकी छबि हरते हैं श्याम शरीरमें कोटिन काम की उपमा क्योंदियो जो एक कामकी छबि सोई कोटिन बिषे तहां जैसे एक मणि धरो तो एकही मणिकी शोभा प्रकाशित होती है अरु जो कोटिन धरो तो महा शोभा प्रकाश होती है ताते कोटिन कहा है कैसो श्याम शरीर है नीलकंज इव कोमल सुगन्ध मकरन्द भरे पुनि नीलबारिद गम्भीर शोभा परमार्थ भरे (१) पुनि अरुण चरण पंकज के दलतल अंगुली शोभित हैं तापर नखनकी ज्योति जनु अरुण नील पंकजके दलन पर मोतिन की पंक्ति बैठी है (२) पुनि अरुण चरणतल विषे कुलिश ध्वज अंकुश इत्यादिक चालिस अरु आठ अंक भक्तन के मंगलदाता शोभित हैं महारामायण में शिवजीने कहा है आठ अरु चालिस अध्याय विषे पुनि नूपुर हेम मणिकनिन से जटित हैं जाकी स्वाभाविक ध्वनि प्रणव होतिहै जेहिको सुनकै मुनिन के मन मोहित होत हैं (३) कटि विषे किंकिणी का अति मधुर शब्द होत है अरु उदर बिषे तीनि रेखाहैं जनु शोभाकी तीनि लीकै हैं अरु नाभि गंभीर दहिनावर्त रसिक भक्तनके मनको विश्रामस्थली है जे मुनीश्वर ध्यानबिषे देखते हैं ते वहि शोभाको जानते हैं (४) भुज बिशाल हैं बाजूबंद कंकण इत्यादिक भूषणन संयुक्त अति शोभित हैं अरु हृदय के बिषे सिंहको नख पहिरे हैं जाते कोई की कुदृष्टि नहीं लगै तहां अति सुन्दर शोभा है (५) उर बिषे मणिनको हारहै पँचरंग मणि हैं पीत श्वेत अरुण हरित नील ताके बीचमें पदिक चौकोण चहुंफेर मोती मणिकनी जटित हैं जनु नवग्रह अरु नक्षत्रन के मण्डल के मध्य में पूर्णचन्द्र एक रस चौकोण शोभित है बक्षस्थल विषे भृगुलता अति शोभित है तहां विष्णु भगवान्के लक्षण अपने बिषे सबको देखावते हैं तहां यह भेद श्रीदशरथ कौशल्या जानतेहैं अपर नहीं जानतेहैं सो पूर्व यहि प्रसंगमें कहि आये हैं ॥ चौपाई ॥ कश्यप अदिति महा तप कीन्हा। तिनकहँ मैं पूरब बरदीन्हा ॥ सो जानब (६) कंबु कंठ शंखकी ऐसी ग्रीवबिषे तीनि रेखा हैं जनु शृङ्गारके मर्याद की तीनि लीकै हैं पुनि चिबुक नीलमणि इव गोल ता मध्य पीत बिंदु जनु रसिक योगेश्वरन के चितको आकर्षण यंत्र है पुनि मुखपर अमित कामकी छबि छाय रहीहै (७) पुनि सदा प्रसन्न रूप जब किलकिकै बोलते हैं चारिउ भाइनके दुइ दुइ दशन अरु अरुण अधर की कैसी शोभा होती है जनु पूर्णचन्द्र के मध्य एक एक अरुण कमल फूल्योहै चारिउ कमलके कोश जनु दुइ दुइ हीरा प्रसव भये हैं तिन बिषे जनु दामिनी की छटा प्रकाश करती है यह अभूत उपमा है (८) सम सुन्दर श्रवणनमें अनूप गोल कुण्डल झलझलात हैं जनु चारु कपोलन बिषे निर्मल आदर्शके मध्य युग मयूर नृत्य करते हैं अति मधुर तोतरी बोली सबके मनको हरती है (९) सचिक्कण कचहैं कुंचित कहीं टेढ़ेहैं गभुआरे

कहीं बाल अवस्था के बहु प्रकारते माता जो है सो सँवारती भई कहूं फूलन की कली गूंथी कहूं छोटी छोटी मोती गूंथी कहूं रत्नन की कणी गूंथी जनु सघन अंधकार बिषे खद्योत चमकते हैं (१०) अति महीन पीत अँगुली माताने पहिराई है कछुक अलंकार अँगुलीके तरे परे हैं कछुक ऊपर परेहैं तेहिकी शोभा कहते हैं जनु दामिनी झुंड के अवांतर नील मेघ झलकते हैं अरु तेहि मेघपर नक्षत्रन की प्रभा झलकति है अरु अँगुलीके बाहर अनूप भूषण हैं (११) रूप कही ये जो शरीर को प्रकाश तेहिकी छटा सो अनूप है जाको श्रुति शेष नहीं कहिसकै वहशोभा सो जाने जेहि मुनीश्वर योगेश्वरनको मन सपनेहु बिषे देख्यो होइ (१२) दोहार्थ ॥ श्रीरामचन्द्र कैसे हैं सुखके संदोह कही समूह हैं अरु मोह जो कारण माया तेहिके परे हैं अरु ज्ञान बाणी इन्द्रिय तिन सबनते परे हैं ते श्रीरामचन्द्र पति जो राजा रानी हैं तिनके परम प्रेम बश ह्वैकै परम पुनीत बाललीला अनेक तरहकी करते हैं (१) ॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुपबिध्वंसनेबालकांडेबाललीलावर्णनंनामत्रयस्त्रिंशतितस्तरंगः ॥ ३३ ॥

दो० चौंतिस सुभग तरंग बल बालचरित रघुनन्द ॥
अद्भुत रस जननिहि दरश रामचरण सुखकंद ३४

१९९ यहिबिधिरामजगतपितुमाता। कोशलपुरबासिनसुखदाता १
जिनरघुनाथचरणरतिमानी। तिनकीयहगतिप्रकटभवानी २
रघुपतिबिमुखयतनकरिकोरी । कवनसकैभवबंधनछोरी ३
जीवचराचरबशकरिराखे । सोमायाप्रभुसोंभयभाखे ४
भृकुटिबिलासनचावैजाही। असप्रभुछांडिभजियकहुकाही ५
मनक्रमबचनछांडिचतुराई । भजतकृपाकरिहैंरघुराई ६
यहिबिधिशिशुबिनोदप्रभुकीन्हा। सकलनगरबासिनसुखदीन्हा ७
लैउछंगकबहुँक हलरावै कबहुँपालनेघालिझुलावै ८
दो० कौशल्या निशि दिनजात नजान ॥
सनेहबश माता बालचरित्त करै गान १

१९९ यहिबिधिते श्रीरामचन्द्र परमेश्वर सर्बोपरि सबके कारण सबजगत्के सुखदाता ते कोशलपुर बासिनको बाललीला करिकै बिशेष सुखदेतेहैं(१)जिनने श्रीरामचन्द्र के चरणारबिंद बिषे रतिमानीहै तिनकी यहगति प्रकटहै कौनगति श्रीरामकी परमेश्वरत्व अरुबाललीला भक्तवात्सल्य गुण वे जानतेहैं (२)अरु रघुपतिते बिमुख जे प्राणी ते अनेक यत्नकरिकै योगज्ञान वैराग्य इत्यादि अरु अपर देवकी उपासना करै तब ···भवबन्धनते नहीं छूटतेहैं(३)हे पार्वती जीव अरु सम्पूर्ण देव चराचर बशिकरि राख्यो है वही माया प्रभुसे भयसंयुक्त बोलतीहै किंतु सो श्रीरामचन्द्रकी मायाहै वह कैसीहै सर्बजीव अरु ब्रह्मादिकनकी भयदायकहै सो हमकहा(४)ऐसी जोमायाहै सो श्रीरामचन्द्र

को भृकुटी बिलाससे नाचती है हे पार्वती ऐसेप्रभुको छांड़िकै कौन्हिकोभजी (५) मन क्रम बचन ते चतुराईकहो कहावत श्रीरामचन्द्रके हैं अरु औरौ कर्म धर्म देवतादिकनकी उपेक्षाकरतेहैं सो छाँड़िकै श्रीरामचन्द्रका भजनकरो कृपाजरूर करहिंगे(६) यहिप्रकारते बाललीला करतेहैं सम्पूर्ण पुरबासिनको परमानन्द सुखदेतेहैं(७)माताजो है सो कबहुंक हलरावती हैं कबहुंक पालना में झुलावती हैं (८) दोहार्थ ॥ प्रेमते मगन कौशल्याजी निशिदिन जात नहीं जानती हैं सुतकेस्नेह बश होइकै माता बालचरित बारम्बार गान करतीहैं किंतु सुतके स्नेहसे प्रेमबशह्वैकै कौशल्या राति दिन जात नहीं जानती हैं हे पार्वती यह बालचरित तुमसे गानकीन्ह(१) ॥

२०० एकबारजननीअन्हवाये * । करिशृंगारपलँगपौढ़ाये * १
निजकुलइष्टदेवभगवाना * । पूजाहेतुकीन्हअसनाना * २
करिपूजानैवेद्यचढ़ावा * । आपुगईजहँपाकबनावा * ३
बहुरिमातुतहँवांचलिआई । भोजनकरतदीखसुतजाई * ४
गइजननीशिशुपहँभयभीता । देखाबालकशयनपुनीता ५
बहुरिआइदेखासुतसोई । हृदयकम्पमनधीरनहोई * ६
इहांउहांदुइबालकदेखा । मतिभ्रमभोरिकिआनबिशेषा ७
देखिरामजननीअकुलानी । प्रभुहँसिदीनमधुरमुसुकानी ८
देखरावामातहिनिज अद्भुतरूपअखण्ड ॥
रोमरोमप्रतिलागेउ कोटिकोटिब्रह्मण्ड १

२०० महादेव बोलतेभये हे प्रिया ऐसेही अनेक प्रकारकी शिशुलीला करतसंते जन्मते लैकै एकबर्ष बारहदिन बीततभये तब एकबार श्रीकौशल्याजू श्रीरघुनन्दनजूको अगर चन्दन केशरि इत्यादिकसे उबटन करिकै सुगन्धमय जलते स्नान कराइकै सब बिधिते शृंगारकरिकै अनुपम पलंगमें पौढ़ावती भईं (१) पुनि आप स्नान करिकै बिधि संयुक्त निजकुलके इष्टदेव जो श्रीरंगनाथ भगवान् तिनकी पूजाकेहेतु अनेक प्रकार के पक्वान व्यंजन बनावतीभईं (२)तिसके उपरांत श्रीरंगनाथके मंदिरमें जाइकै सबबिधि पूजाकरिकै अमिय सरिस मिष्ठान्न पक्वान्न व्यंजन अनेक प्रकारके समर्पण करिकै सर्वविधि पूजा करिकै आप पाकशाला बिषे आतभईं (३) पुनि पक्वशाला की सामग्री संभारिकै श्रीरंगनाथजी के मन्दिर में आवतीभईं तहां एक आश्चर्यदेखा जैसे रघुनन्दनजूको पलंगपर पौढ़ाइगईरहैं तैसेही स्वरूप श्रीरंगनाथजूके मन्दिरमें अनेक पदार्थ कौशल्या जूने समर्पण कीनरहै सो रघुनन्दनजू भोजन करते हैं (४)श्रीरघुनन्दनजूको मन्दिर में भोजन करत देखिकै माताभय संयुक्त जहां पौढ़ाइ आईरहैं तहांको जातभईं सोई बालक पलंगपर पौढ़े किलकत आनन्द संयुक्त देखतीभईं (५)हृदय कम्पायमान भयो धैर्य्य नहींहोत है (६)तुरंत पुनि फिरीं मन्दिरमें पुनि उसी बालकको भोजन करत

देखा पुनि तुरन्त फिरीं पलंगपर देखा पुनि फिरीं मंदिरमें ऐसेही चारिबार इहां उहां दुइबालक देखिकै कौशल्याजू कहतीहैं कि मेरीमतिको भ्रमभयो कि कौनोज्ञान विशेषहै यहि चरित्र विषे यह विशेष अभिप्राय है कि माताने निजकुल इष्टदेव रंगनाथ को मानिकै पूजाकरी तब रघुनन्दनजूने कृपाकरिकै माताको यह जनायदियो कि हम तुम्हारे कुलइष्टदेव विद्यमानहैं तुम और किसकी भावना करतीहौ हमहीमें सबैहैं (७) तब रघुनन्दनजूने जाना कि माता अकुलायउठी तब मधुर मुसुकायकै हँसि दीन (८) दोहार्थ ॥ तब श्रीरामचन्द्र अद्भुतरस अखण्ड सो स्वरूप माता को अपने मुख बिषे दिखावते हैं अपनीमायाके रोमरोम प्रति कोटिकोटि ब्रह्माण्डबर्त्तमान देखावतेहैं (९)

२०१ अगणितरबिशशिशिवचतुरानन । बहुगिरिसरितसिंधुमहिकानन १

कालकर्मगुणज्ञानस्वभाऊ । सोदेखाजोसुनानकाऊ * * २

देखीमायासबबिधिगाढ़ी । अतिसभीतजोरेकरठाढ़ी * ३

देखाजीवनचावैजाही * । देखाभक्तिजोछोरैताही * ४

तनपुलकितमुखबचननआवा । नयनमूंदिचरणनशिरनावा ५

बिस्मयवन्तदेखिमहतारी * । भयेबहुरिशिशुरूपखरारी *६

स्तुतिकरिनजायभयमाना । जगतपितामैंसुतकरिजाना ७

हरिजननीबहुबिधिसमुझाई ।यहजनिकतहुंकहसिसुनुमाई ८

दो० बार बार कौशल्या बिनय करी कर जोरि ॥
अब जनि कबहूं व्यापई प्रभु यह माया तोरि १

२०१ तहां श्रीरघुनाथजू के उदर बिषे श्रीकौशल्या जू ने अनेक ब्रह्माण्डन प्रति अगणित रविशशिशिव चतुराननदेखे अरु अगणितगिरि सरितसिन्धु महि कानन तहां देखतीभईं (१) काल के स्वरूप कर्मको स्वरूप तीनिउ गुणको स्वरूप ज्ञानको स्वरूप अरु जीवनको स्वभावकही जो अनेक जन्मनके संचित संस्कार सूक्ष्म स्वाभाविकबर्त्तमान होतेहैं सो स्वभावको स्वरूप अद्भुतदेखे जो देखिबे कहिबे अरु सुनिबेमें कभी नहीं आयो सो आश्चर्य देखा (२) पुनि माया को स्वरूप अति गाढ़ी काहूके उल्लंघन करिबेयोग्य नहींहै सो देखी अतिसभीत करजोरे ठाढ़ीहै (३) पुनि अनेकजीव देखे जो मायाके बश नाचतेहैं अहंमम सूत्रबंधिकै पुनिभक्तिको स्वरूप देखा जो अपनी दयालुताते जीवनको बन्धनते छोरतीहै (४) यह परमदिव्य ऐश्वर्य बिभूति श्रीरामचन्द्र माताको देखावते भये कि हमको तुम ऐसो परमेश्वर जानहु अपर समस्त हमारी चिद्चिद्विभूति हैं सो परम आश्चर्य ऐश्वर्य मातादेखिकै तनकम्पित अंग अंग पुलकित वाक्यबन्द होगई नयनमूंदिकै रघुनाथजू के चरणनमें माथ नावतीभईं (५) तब श्री रामचन्द्र माताको बिस्मयवंत देखिकै अपनी बिभूतिको आकर्षण करिलीन वहै शिशु रूप ह्वैकै माताको देखावतेभये (६) तब श्री कौशल्याजू अपनेमन बिषे अति भय

मानिकै स्तुतिनहीं करसकोहैं देखोतो अज्ञानता अनेक ब्रह्माण्डके कारण ऐसेपरमेश्वर तिनको मैंने अपनापुत्र करिके माना (७) तब श्रीरामचन्द्र जी जननीको बहुतप्रकार ते समुझावतेभये कि हे मातु तुम यह काहूसों कहौ नहीं कहना (८) दोहार्थ ॥ तब श्रीकौशल्याजू धीरज धरिकै बार बार बिनयकरिकै हाथ जोरिकै कहतीहैं कि महूं एक बर मांगतीहूं कि यह जो तुम्हारी प्रबलमाया है सो मोको कबहूं न व्यापै अरु मेरी प्रीति आपुबिषे सब प्रकार ते बनीरहै (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकाण्डे श्रीरामबालचरित्र अद्भुतरस बर्णननाम चतुस्त्रिंशतिस्तरंगः ३४॥

दो० रामचरणप्रीतिसलहरि प्रभुलीलापौगण्ड ॥
आनँदभक्तिबिवेकमय पूरैरह्माब्रह्मण्ड ३५

२०२बालचरितहरिबहुबिधिकीन्हा सकलनगरबासिनसुखदीन्हा १

*। बड़े *

।

परममनोहरचरितअपारा *। करतफिरतचारिउसुकुमारा ४
मनक्रमबचनअगोचरजोई *। दशरथअजिरबिचरप्रभुसोई ५
करतबालजबराजा *। नहिं
कौशल्याजबबोलनजाई *। ठुमुकि चलैंपराई ७
[illegible] । [illegible] ठिधावा ८
रघुबिभरेतनआये * *। सगोदबैठाये * ९

दो० भोजन करत चपलचित इत उत अवसर पाइ ॥
दकाल्लमुख दधि ओदन लपटाइ १

२०२ श्रीरामचन्द्र बालचरित्र बहुबिचित्र करिकै सम्पूर्ण पुरबासिनको सुखदेते भये (१) यहीप्रकार ते बालचरित्र करतसंते संपूर्ण परिजनके सुखदाता चारिउ भाई कछुक सयान भये (२) उपरांत श्री बशिष्ठजी बिप्रन समेत आइकै चूड़ाकर्ण करतभये चूड़ाकर्ण कहे मूड़नकर्ण बेध पुनि ब्राह्मणनको राजा अनेक दक्षिणा देतभये (३) चारिउ सुकुमारजो हैं सो परममनोहर चरित्र अजिर अरु बाहेरमें करत फिरतेहैं (४) हे पार्बती मन क्रम बचनते अगोचर ऐसे जे परब्रह्म परमेश्वर श्री रामचन्द्र ते भक्तबशहै श्रीदशरथके अजिरमें बिचरतेहैं अरु बाहेर छोटे छोटे बालकनके संगखेलते हैं (५) जब राजा जेवनार बिषे बोलावतेहैं तब बालकनकी समाज तजिकै नहीं आवते (६) पुनि जब कौशल्याजू बोलाइबेको जातीहैं तब ठुमुकि ठुमुकि भागिजातेहैं (७) जब रघुनाथजू ठुमुकि ठुमुकि भागि चलते हैं तब माता धरिबे को दौरती है देखिये तो जिनको निगम नेति नेति करि कै गावते हैं अरु शिव के ध्यान में नहीं आवते तिन्हके धरिबे को माता धावती है यह आश्चर्य है (८) तब रघुनाथजू बिहँसि कै माता को धराई

दीन धूसर कही बिना बस्त्र तन धूरि सों भरे राजाके समीप रानी लावती भई तब राजा बिहँसि कै आनन्द संयुक्त गोदमें बैठावते भये (६) दं हार्थ । तब राजा के सं ा में भोजन करने लगे तहां बाल केलि करिबेके हेतु चित्त को चपल करकै इत उत अवसर पायकै बालकन की समाज में किलकत भागि चले मुख में दधि ओदन कही भात लपटान है (९) ॥

२०३ बालचरितअतिसरलसुहाये । शारदशेषशम्भुश्रुतिगाये १
जिनकरमनयहचरितनराता । तेजनबंचककिये बिधाता * २
भयेकुमारजबहिंसबभ्राता । दीन्हजनेऊगुरुपितुमाता * ३
गुरुगृहगयेपढ़नरघुराई * । अल्पकालविद्यासबपाई * ४
। सोहरिपढ़यहकौतुकभारी * ५
ि ... ा ६
...नुजअतिसोहा * ७
जेहिबीथिनबिहरैंसबभाई । थकितहोहिंसबलोगलोगाई ८
कोशल पुरबासी नर नारि बृद्ध अरु बाल ॥
प्राणहु ते प्रिय ... १

ई बालचरित्र जो है सो अति सरल स्वाभाविक परमानन्द रसमय सिद्धांत अति शोभायमान है जाको शेष श्रुति शारदा गाइ गाइ परमानन्द रस को प्राप्त होते हैं (१) जिनकर मन श्रीराम जीके बालचरित्र में नहीं रम्यो तिनको बिधाते बंचक कीन्ह जगत् उनको छलिछीन किन्तु जगत् विषे वे छलो हैं (२) अब चारिउ भाई बाल अवस्थाते कौमार अवस्था में प्राप्त भये बर्षदिन गर्भाधान संयुक्त श्रीरघुनाथ जी अनेक परम चरित्र करत सन्ते आठ वर्षके भये तब चैत्र शुक्लपक्षनवमी तिथि सर्व मङ्गल मय नक्षत्र योग कर्ण लग्न मुहूर्त इत्यादिक शुभ दिन बिषे मातापितागुरुमिलिकै चारिउ भाइन के यज्ञोपवीत करते भये अरु अनेक ब्राह्मणन को दक्षिणा देते भये (३) यज्ञो पवीत के अनन्तर श्री रघुनाथ जी गुरुन के पास विद्या पढ़ने को गये चौदहौ बिद्या चौंसठ कला सम्पूर्ण व्याकरण काव्य कोष पुराण ज्योतिष कोक संहिता उपनिषद् शास्त्र श्रुति स्मृति इत्यादिक समस्त अल्पही कालमें चारिउ भाई पढ़ते भये (४) जिन श्रीराम चन्द्रको जो बिश्व रूप है तेहिको सहज श्वासा हैं चारिउ बेदते श्रीराम-चन्द्र पढ़तभये यह कौतुक आश्चर्य लीला है किसूके जानिबे योग्य नहीं है (५) विद्या जो है तेहि बिषे बिनय जोहै नम्रता तेहिविषे अति निपुण हैं अरु परम दिव्य गुणन के शील कही स्थान हैं यह सब राजनके लरिकनका खेल खेलते हैं (६) करतल बिषे अति सुन्दर धनुषबाण चारिउ भाई सखन संयुक्त अरु कटि बिषे पीतपट दामिनी की द्युतिहरत तापर तूण हेम रत्न ते जटित अरु सम्पूर्ण शृंगार कियेहैं सो स्वरूप देखिकै

चराचर मोहि जाते हैं (७) जेहि बीथिन विषे चारिउ भाई बिचरते हैं तेहि बीथिन के लोग लोगाई स्वरूप चरित्र देखिकै थकित कही चित्रवत् रहिजाते हैं (८) दोहार्थ॥ कोशल पुरबासी नरनारि दिनके वृद्धावस्था के किशोर अरु बाल इन सबन को श्रीरामचन्द्र कृपालु प्राणहुते प्रिय लागते हैं (१)॥

२०४ बंधुसखासबलेहिंबुलाई । बनमृगयानितखेलहिंजाई १
पावनमृगमारहिंजियजानी । दिनप्रतिनृपहिंदेखावहिंआनी २
जेमृगरामबाणकेमारे * । तेतनतजिहरिलोकसिधारे * ३
अनुजसखायुतभोजनकरहीं । मातुपिताआज्ञाअनुसरहीं * ४
जेहिविधिसुखीहोहिंसबलोगा । करहिंकृपानिधिसोइसंयोगा ५
वेदपुराणसुनहिंमनलाई * । आपुकहहिंअनुजनसमुझाई ६
प्रातकालउठिकैरघुनाथा * । मातुपितागुरुनावहिंमाथा ७
आयसुमांगिकरहिंपुरकाजा । देखिचरितहर्षहिंमनराजा ८
दो० व्यापक अकल अनीह अज निर्गुणनाम स्वरूप॥
भक्त हेतु नानाविधि कर शिशु चरित अनूप १

२०४ पुनि श्रीरामचन्द्र तीनिउ भाइन अरु सब सखन को बुलाइ लेते हैं सुन्दर शृंगार किये धनुष बाण तूण बांधे अरु घोड़नके सुवर्ण रत्नके शृंगार संयुक्त तिन पर सम्पूर्ण अनुज सखा हज़ारन असवारन सहित चढ़ि शिकार खेलिबेको जाते हैं देवता फूलनकी वृष्टि करते जाते हैं नक़ीब बोलते जाते हैं अरु कौशल्याजू ने हज़ारन भार पक्वान्न मिष्ठान्न पाछेसे पठये हैं श्री रघुनाथजी शिकार खेलते हैं (१) पावन मृग जेहैं तिनको मारते हैं यही प्रकार ते प्रतिदिन श्रीदशरथ महाराज जीको आनिकै दिखावते हैं (२) जे मृग श्री रामबाणके मारे मरते हैं तेदिव्य तन धरिकै विमाननपर चढ़िकै श्री रामधाममें प्राप्त होते हैं (३) तिन मृगन के मांस पक्वशाला विषे पक्व होते हैं अनुज सखायुत भोजन करते हैं माता पिताकी आज्ञानुसार सब करते हैं (४) जेहिप्रकार तेसबलोग सुखी होहिं सो संयोग कृपानिधि करते हैं (५) श्रीवशिष्ठजू सों मनलाइ कै वेद पुराण सुनते हैं फिरि आपु वहे सुनिकै अनुजन सों समुझाइ कै कहते हैं (६) प्रातःकाल उठिकै श्री रघुनाथ जी माता पिता गुरु को मस्तक नवावते हैं (७) अरु आज्ञा पाइकै पुरका कार्य यथा योग्य करतेहैं श्रीरामचन्द्र के बिलक्षण जो चरित्र तिनको देखिकै राजा अति हर्षको प्राप्त होतेहैं (८) दोहार्थ॥ हे पार्वतीश्रीरामचन्द्र अपने घनस्तेज महत् गुण करिकै चराचर बिषे व्याप्त हैं पुनि अकलकही सम्पूर्ण कलनते रहित हैं अनीहकही चेष्टा रहित हैं अजकही अजन्मा गर्भमें नहीं आवैं स्वेच्छित आविर्भाव होतेहैं निर्गुण कही तीनिउ गुणनके परे जिनकर नाम अरु स्वरूप है अपने भक्तन के भक्तिहेतु सुष्ठु पुनीत अनूप अनेक चरित्र करते हैं कहूं यह पाठ है

निर्गुणनामनरूप निर्गुणकही नामरूप करिकै रहितहैं तहां जिनको नामरूप पंचतत्त्व तीनगुण करिकै रहित है यह सुन्दर चरित्र पौगण्ड अवस्था विषे करते भये आगेअ.दि किशोर अवस्था आई ग्यारहवर्ष पांच महीना छः दिनके रघुनन्दनजू होत भये पुनि कुवार बदी छठिते हे पार्वती और चरित्र सुनहु (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे श्रीरामचन्द्रकौमारपौगण्डपरमविचित्रचरित्रवर्णनं नामपंचत्रिंशतिस्तरंगः ३५ ॥

दोहा छतिस सुभग तरंग सुन रामचरण गुणगाथ ॥
आये बिश्वामित्र जू चले साथ रघुनाथ ३६

२०५ यहसबचरितकहोचरमैंगाई। आगिलकथासुनहुमनलाई १
बिश्वामित्रमहामुनिज्ञानी। बसहिंबिपिनशुभआश्रमजानी२
जहँजपयोगयज्ञमुनिकरहीं। अतिमारीचसुबाहुहिडरहीं ३
देखतयज्ञनिशाचरधावहिं*। करहिंउपद्रवमुनिदुखपावहिं४
गाधितनयमनचिन्ताब्यापी। हरिबिनुमरहिंननिशिचरपापी५
तबमुनिवरमनकीनबिचारा। प्रभुअवतरेउहरणमहिभारा ६
यहिमिसुदेखौंप्रभुपदजाई। करिबिनतीआनौंदोउभाई *७
ज्ञानबिरागसकलगुणअयना। सोप्रभुमैंदेखौंभरिनयना * ८
दो० बहुविधि करत मनोरथ जात न लागी बार ॥
करिमज्जन सरयू सलिल गये भूपदरबार १

२०५ हे प्रिये यह जो सुन्दर रुचिर चरित्र हैं सो मैंने कहा अब आगे को सुन्दर चरित्र मनलाइकै सुनहु (१) बिश्वामित्र जो हैं महा मुनीश्वर ज्ञानवान्ते सिद्धाश्रम बनमें शुभ चरित्र जानिकै बसते हैं वह श्री अयोध्याके पूर्व षोड़शयोजन भागीरथी के तटपर (२) जेहि आश्रम में जप योग यज्ञ मुनि करते हैं परन्तु अतिशय ताड़का मारीच सुबाहु को डरते हैं (३) काहेते डरतेहैं कि यज्ञ धूमजो है तेहिको देखिकै धावते हैं तहां उपद्रव अरु यज्ञभंग करते हैं मुनिन को दुःख देते हैं (४) यह उपद्रव जानिकै गाधितनयके मनमें चिन्ताब्यापी कि बिनाहरि ये निशिचर पापी नहीं मरहिंगे (५) तब मुनिवर बिचारकीन कि परमेश्वर पृथ्वीके भार हरिबे को अवतीर्ण भयेहैं (६) यही मिसु कीन मिसु कि परमेश्वर दशरथकेगृहबिषे अवतीर्णभये राक्षसन को बध करहिंगे पृथ्वीको भार ज़रूर उतारहिंगे परमैं ताड़काके बधमिसु करिकै हरिके चरणारबिन्द देखौंजाइ अरु विनय करिकै दशरथ महाराज जूसों दोउ भाइन को लै आवउँ (७) कैसेहैं दोउ भाई वैराग्य ज्ञान इत्यादिक अनन्त दिव्य गुणनके अयनकही स्थान ऐसे प्रभुको मैं नेत्रन भरिकै देखिहौं मेरो अहोभाग्यहै (८) दोहार्थ ॥ कुवारबदी छठिको बिश्वामित्र यह मनोरथ करिकै श्री अयोध्याजीको चलतभये एकहज़ार मुनीश

विश्वामित्रके संग श्री रघुनाथजूके दर्शनहेतु अनेक मनोरथ करत चलत भये कुवार बदीनौमीको दुइदगड दिनचढ़ेश्रीअयोध्याको देखाकैसीहै श्रीअयोध्याजीहेमरत्नमय महल तिनके शृंग स्वर्गको स्पर्शकरतेहैं शृंगनपर कलश मानहु लाखन चन्द्र सूर्य एकरस उदित हैं अरु शृंगन पर मयूर नृत्य करतेहैं अति शोभा पावते हैं अरु मणिमय सर्वभूमि अरु गृह गृहप्रति कल्पतरु कामधेनु अरु ब्रह्मादिक देवता पुरीकी शोभा देखत मोहित होते हैं अरु राजमहल के उत्तर दिशि सरयू की प्रवाह बहती है मणिमय घाटबँधेहैं जहांतहां पंचरंगके कमल फूलेहैं तिनपर भ्रमरनकी अवली गुंजार करती हैं हंसन की अवली बिहरती हैं बोलती हैं अरु जहां तहां नरनारि स्नान करते हैं अरु श्री रघुनाथजीको करुणामय निर्मलजल त्रयताप हरणहार शोभित है तहां विश्वामित्रजी ऐसी पुरीकी शोभा देखिकै अति अनुराग भरे श्री सरयू स्नान करते भये सम्पूर्ण नेम करिकै राजदर- बारको चलत भये (१)॥

२०६ मुनिआगमनसुनाजबराजा । मिलनगयेलैबिप्रसमाजा * १
करिदण्डवतमुनिहिसनमानी। निजआसनबैठारेआनी * २
चरणपखारिकीन्हअतिपूजा । मोहिंसमधन्यआजुनहिंदूजा ३
बिबिधभांतिभोजनकरवाये । मुनिवरहृदयहर्षअतिपाये ४
पुनिचरणनमेलेसुतचारी * । रामदेखिमुनिदेहबिसारी * ५
भयेमगनदेखतमुखशोभा * । जनुचकोरपूरणशशिलोभा ६
तबमनहर्षिबचनकहराऊ * । मुनिअसकृपानकीन्हेउकाऊ ७
केहिकारणआगमनतुम्हारा। कहहुसोकरतनलावौंबारा ८
असुरसमूहसतावहिंमोहीं * । मैंयाचनआयउँ नृपतोहीं * ९
अनुजसमेतदेहुरघुनाथा * । निशिचरबधमैंहोहुंसनाथा १०
दो० देह भूप मन हर्षिकरि तजहु मोह अज्ञान ॥
१

२०६ तहां दशरथ महाराज बिश्वामित्रको आगमन सुनिकै प्रेमसंयुक्त बिप्रनसमेत सप्रेम आगे लेनचले (१) जाइकै साष्टांग दण्डवत् करिकै अर्घ्यपाद्य देतसन्ते निज आसनपर बैठाये (२) पुनि चरण प्रक्षालिकै पुष्पादिकनते पूजाकरिकै धूप दीप आर- ती दण्डवत् करिकै सब प्रकारते सन्मानकीन व कहा कि सहित समाज आजु मैं सर्बोपरि धन्यहौं (३) पुनि बिबिध प्रकारके पक्वान्न मिष्टान्न अनेक प्रकारके व्यंजन राजा भोजन करावते भये पुनि सुष्टु आसन देते भये राजाकी भक्तिभाव अपने बिषे देखिकै मुनि बहुत प्रसन्नभये (४) तेहि समयबिषे श्रीराम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न चा- रिउभाई आवतभये सो देखिकै सम्पूर्णसभा आदरदेते भये तब राजा चारिउ सुतनको मुनीशके चरणनमें डारतभये मुनि अति हर्षते अति आदरदीन श्रीरामचन्द्रको देखत

सन्ते तप योग वैराग्य ज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिकके फलको प्राप्तभये देहकी दशाभूलि गई बिदेहभये (५) श्रीरामचन्द्र को पूर्ण चन्द्रमुख देखिकै सम्पूर्ण मुनिनकी मण्डली चकोर इवलोभिकै देखिरहीं (६) तब मनमें हर्षिकै राजाबोले हे मुनीश्वर आपुकी ऐसी कृपा कबहूं नहीं कीन्हि (७) आपको आगमन जेहि कारण होय सो आज्ञा दीजै मैं तुरन्तकरों (८) तब बिश्वामित्र बोले हेराजन् असुरनके जो समूहहैं सो मोको सतावतेहैं मैं तुमसे याचतहौं (९) लक्ष्मणजी संयुक्त श्रीरामचन्द्र मोकोदेहु ये दोऊ बालक निशिचरनको बधकरैं मैं सनाथहोउँ (१०) दोहार्थ ॥ हे पार्वती यह बचनमुनिकै राजाके बाणसरीखेलगे व्याकुलह्वै गये तब बिश्वामित्र अति प्रसन्नभये कि राजा धन्यहैं जो श्रीरघुनाथजी बिषे यह परात्पर प्रेमबात्सल्यरस दशरथ महाराजको प्राप्तहै तब बिश्वामित्र राजाको सावधान करतेहैं हे राजन् श्रीरघुनाथजी बिषे प्राकृत पुत्रभाव ऐसी मोह अज्ञान त्यागकरहु हर्षिकै श्रीरघुनाथजी को देहु तुमको धर्मसुयश है अरु इनको कल्याणहै ये सर्बजीवनके कल्याणहेतु तुम्हारे पुत्रहैं (१) ॥

२०७ सुनिराजाअतिअप्रियबानी। हृदयकंपमुखद्युतिकुम्हिलानी १

॥*। कहयविचननाहिंकहेउबिचारी २

...हुभूमिधेनुधन ... सर्बसदेहुँआजुसहरोषा ** ३

...हप्राणतेंप्रियकछुनाहीं । सोउमुनिदेहूँनिमिषयकमाहीं ४

सबसुतमोहिंप्रियप्राणकिनाईं । रामदेतनहिंबनैगोसाईं * ५

।

...मुनिनृपगिराप्रेमरससानी *। हृदयहर्षमानामुनिज्ञानी * ७

तबवशिष्ठबहुबिधिसमुझावा। नृपसन्देहनाशकहँपावा * ८

...आदरदोउतनयबोलाये। हृदयलायबहुभांतिसिखाये ९

मेरेप्राणनाथसुतदोऊ *। तुमसुनिपिताआननहिंकोऊ १०

दो० सौंपे भूपति ऋषिहि सुत बहुबिधि देइ असीश ॥
जननी भवन गये प्रभु चले नाइ पद शीश १

सो० पुरुष सिंह दोउ वीर हर्षि चले मुनि भय हरण ॥
कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिश्व कारणकरण १

२०७ बिश्वामित्र बहुप्रकार बोधकरतेहैं पर राजा अप्रियबाणी सुनिकै हृदयमें कम्पायमानहै मुखकीद्युति कुम्हिलाइ गईहै तनकी सुधि नहींहै (१) अन्तःकरण में अति क्लेशसंयुक्त धीर्य्यधरि बिचार करिकै राजाबोलते भये हे मुनि चौथेपन बिषे मैं चारि पुत्रपायउँ आप बिचारिकै बचन न कहा (२) हे मुनि जेतो चहौ तेती भूमि मांगहु बहुधेनु मांगहु बहु कोषकही द्रव्यमांगहु संपूर्ण राज्यमांगहु सो मैं सबदेउँ सह-

रोषकही सत्यसंकल्प करिकै कहतहौं (३) देह प्राणते और वस्तुपदार्थ प्रियनहीं है सो आप मांगहु तौ निमिष एकमेंदेउँ अरु आपकी यज्ञकी रक्षाके हेतु मैं सम्पूर्णसेना समेतचलौं (४) अरु मैंजो सब कहेउँ सो आपके मनमें नहीं आवे तौ चारिउ पुत्र मोको प्राणकी समानहैं पर हे गोसाईं श्रीरामचन्द्र को देतनहीं बनै (५) हे मुनीश कहां निशिचर अति घोर कठोर अरु कहां ये सुन्दर परमकिशोर अति कोमल तिनके संग युद्धके निमित्त तुम मांगतेहौ यह बड़ो आश्चर्यहै (६) राजाके बचन श्रीरामचन्द्रबिषे अतिप्रेममय सुनिकै मुनिअति हर्षको प्राप्तभये (७) तब राजाको वशिष्ठजू बहुप्रकारते समुझावतभये हे राजन् ये तुम्हारेपुत्र श्रीरामचन्द्र परब्रह्म परमेश्वरहैं ये महिगऊ मुनिसंत इन सबकी रक्षाकेहेतु अवतीर्ण भयेहैं अरु बिश्वामित्रके हेतु करिकै राजाजनक के यहां इनको बिवाह होइगो यह सुनिकै राजाको संदेह नाशभयो परम सुखको प्राप्तभये (८) तहां श्रीराम लक्ष्मण तौ समीपहीहैं तब राजा दोऊ पुत्रनको बोलाइकै हृदयमें लगावतभये अरु बहुत प्रकारते सिखावन देते भये कि सब प्रकारते मुनीशकी आज्ञाके अनुकूल रहब (९) हे मुनीशदोऊ पुत्र मेरे प्राणहीहैं औ तुममोसों अधिक पिताहौ आननहीं हौ (१०) दोहार्थ॥ हेगरुड़राज अति हर्षसंयुक्तदूनों पुत्रनको बिश्वामित्रको सौंपतभये आशीर्बाददीन तबदोऊभाई जननीके भवनको गयेहेमातु हमको राजा अतिहर्ष संयुक्त महामुनीश बिश्वामित्र तिनके संगपठावतेहैं हम आपकी आज्ञा लेनेको आयेहैं तब सुमित्रा संयुक्त माता कौशल्याजू बोलतीहैं हेतात एवमस्तु जाहु मुनिके संगसदा मंगल है तबमाताको दण्डवत् करिकै आशीर्बाद लैकै पिताके समीप आये पिताकी आज्ञालैकै दण्डवत् करिकै बिश्वामित्रके संगचले तीनरात्रि बिश्वामित्र अयोध्यामेंरहे कुवारबदी द्वादशीको प्रातःकालकरिकै चारिदण्ड दिनचढ़े अपने आश्रमको श्रीराम लक्ष्मणको लैकै गमनकीन (१)सोरठार्थ॥ कैसेहैं पुरुषवर्ग जे नर असुरसुर परमेश्वरताईं तिनमें दोऊभाई सिंहहैं वीरहैं मुनिकी भय हरनेको हर्षिकै चले कृपाके समुद्रहैं मतिसे धीरवान्हैं अखिल जो संपूर्ण विश्वहै तेहिके कारण अरु कर्ताहैं ऐसे मध्यकिशोर श्रीरघुनाथजी सदाहैं अरु नैमित्यलीलामें बाल पौगंड किशोर सबनित्य करतेहैं(१) तत्रप्रमाणमाह अन्यच्च श्लोकैकादशाः)श्रीरामोबालकौमारपौगंडेषुवयःसुच ॥ चकारविविधाःक्रीड़ाअयोध्यानगरेप्रभुः १ मिथिलाप्राप्तकालेचधनुर्भंगविवाहयोः ॥ वयौ मध्यकिशोरादिरामस्यातिमनोहरम् २ अयोध्यांपुनरागम्य जानक्यासहराघवः ॥ अनंता भिःसखीभिश्चवनेषूपवनेषुच ३ सरयूकूलकुंजेषुरत्नप्रासादपंक्तिषु ॥ विजह्वरवसंतादीनृतून्द्वादशवत्सरम् ४ तदामध्यकिशोरस्यवयसोमध्यमास्थितः ॥ यौवराज्यागमेचैवतद्विघ्नं दण्डकान्प्रति ५ गमनेचखरादीनांबधेसुग्रीवसख्यके ॥ कुम्भकर्णदशास्यादियुद्धेतद्विजये पुनः ६ अयोध्यागमनेचैवराज्यप्राप्तौचसुन्दर ॥ दशवर्षसहस्राणिप्रजापालनकर्मणि ७ विविधेषुविहारेषुतथावर्षसहस्रकं ॥ यज्ञानुष्ठानकालेचसाकेतगमनावधौ ८ तत्रनित्यविहारेचरामस्यपरमात्मनः ॥ वयोमध्यकिशोरान्तंसर्वदास्तिनसंशयः ९ लीलानानाविधाःकृत्वा बाल्यादिषुवयस्स्वपि ॥ वयोमध्यकिशोरादिजानकीसर्वदास्थिता १० अतोऽधिकंवयोयेऽन्यवदत्यज्ञानमोहिताः ॥ जानक्याश्चैवरामस्यवालिशास्तेसुलोचने ११ इत्यर्थः(१) इति

श्रीरामचरितमानससकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेविश्वामित्रगमनं श्रीरामयात्रावर्णनं नामषट्त्रिंशतिस्तरङ्गः ॥ ३६ ॥

दोहा रामचरणसैंतिसलहरि मुनिमखराख्योराम ॥
तरीअहल्या पापमय तुरतगई पतिधाम ३७

२०८ अरुणनयनउरबाहुविशाला। नीलजलजतनश्यामतमाला १
कटिपटपीतकसेकटिभाथा *। रुचिरचापशायकदुहुंहाथा २
श्यामगौरसुन्दरदोउभ *। * *३
*।
चलेजातमुनिदीनदेखाई *। सुनिताड़काक्रोधकरिधाई *५
एकहिबाणप्राणहरिलीन्हा। दीनजानितेहिनिजपददीन्हा ६
तबऋषिनिजनाथहिजयचीन्हा। विद्यानिधिकहँविद्यादीन्हा ७
८

१

विश्वामित्रजू श्रीरघुनाथजूको लैकै चले दशरथ महाराजने बारबार बिनय करिकै सौंप्यो श्रीरघुनाथजू कैसेहैं जनुबीररस शृंगारकी मूर्ति बन्योहै अरुण कमलइव बिशालनेत्रहैं आजानबाहुहैं अरु नील जो मेघहै अरु तमाल तरु जोहै तद्वत् श्यामते द्वौजनु तड़ित नक्षत्र करिकै भूषितहैं (१) कटि बिषे पीतपट पहिरे हैं जनुनील घनपर बालसूर्य उदय है अरु तूण हेम रत्नमय जटित सो कसेहैं अरु रुचिरकहो अतिसुन्दर हरित पीत अरुण धनुष है पीत अरुण हरित श्वेत क्वचित् कहीं नीलहू है ऐसे धनुष बाण बाम दक्षिण कर बिषे लिये हैं (२, ऐसेही श्याम गौर दोऊ भाइनको परम निधि पाइकै बिश्वामित्र आनन्द संयुक्त चले जाते हैं (निधिकहो नव निधिनके नाम) पद्म १ महापद्म २ शंख ३ मकर ४ कच्छप ५ मुकुन्द ६ कुन्द ७ नील ८ खर्व ९ (अथ खर्वसंख्या प्रमाणम्) अंक एक अरु तेहिपर सुन्नदश तेहिपर सुन्न एकसौ तेहिपर सुन्न हज़ार तेहि पर सुन्न दशहज़ार तेहिपर सुन्न एक लाख तेहिपर सुन्न दशलाख तेहिपर सुन्न कोटि तेहि पर सुन्न दशकोटि तेहिपर सुन्न एक अर्बुद तेहिपर सुन्न दश अर्बुद तेहिपर सुन्न एकपद्म तेहिपर सुन्न दशपद्म तेहिपर सुन्न एक महापद्म तेहिपर सुन्न दश महापद्म आगे यही क्रमते महापद्मको एकशंख तेहि सौको एक मकर तेहि सौको एक कच्छप तेहिसौको एक मुकुन्द तेहि सौको एक नील तेहि सौ नीलको एक खर्व और परम निधि परमेश्वर हैं (३) अपने मनमें बिश्वामित्र यह कहते हैं कि प्रभु केवल ब्रह्मण्य देव हैं यह मैंने जाना काहेते परमानन्द्य दशरथ महाराज जिनके ऐसे पुत्र हैं जिन पिताको मेरे निमित्त

त्याग कीन ऐसे भगवान् ब्रह्मण्य देवहैं (४) कुंवारबदी अमावास्याको चारि दण्ड दिन चढ़े कछुक दूरि आश्रम रहा तहां आकाश मार्गमें सहित सहाय ताड़काचली आवे है मानो कालेमेघकी घटा चलीआवतीहै तिनके आयुध मानहुंदामिनी दमकती है तिनकी बोली मानहुंमेघ गर्जतेहैं त्यहिको देखिकै रघुनाथ जीने मुनिते पूछा कि मेघ घमंड नभ बिषेका होइहै तब मुनि कही हेरघुनाथजी यही ताड़का है तब रघुनाथजूकहा स्त्रीजो है तब मुनिकहाआततायीको वधे दोष नहींहै यह बार्त्तासुनिकै ताड़का क्रोध करिकैधावत भई (५) तबरघुनाथजी ने एकबाण संधानकरिकै मारा सो बाण लाखन होइकै ताड़काकी सेना संयुक्त आकाशते मारिकै गिराइदीन मानो नीलपर्वतपर बज्रपर्योहै तब तेहिकोदीन जानिकै ब्रह्माको आज्ञाभई लाखन बिमान पर चढ़ाइकै परमपद को प्राप्तकीन्ह प्रथम ताड़काको बधकीन्ह मानोसंपूर्ण राक्षसनकी माया निवृत्त कीन्ह (६) तब मुनिअच्छी तरह चीन्हा कि मोहिंआदिक सर्वऋषिनके नाथ यहीहैं हैं तो सर्वकेनाथ पर आपन कार्य्य सिद्धिभये निजनाथ कहाहै तब विद्यानिधि जो रामचन्द्र तिनको अपनेबिषे जो बिद्यारही सो समर्पण कीन्ह (७) जा विद्याते क्षुधा तृषा न लगै अतुलित बल अरु तनमें तेजको प्रकाशहोइ (८) दोहार्थ॥ अरु बला अतिबला द्वौ विद्या जिनते सबशस्त्रास्त्रउत्पन्न भयेहैं सो सब आयुध बिश्वामित्रने समर्पणकीन पुनि अपने आश्रममें आनिकै दोऊ भाइनको भक्तिभाव संयुक्त कन्दमूल फल सुधाइव समर्पण कीन (९)॥

२०९ प्रातकहा * ।

* । आयुरहेमखकीरखवारी *२

* । लैसहायधावामुनिद्रोही *३

* । शतयोजनगासागरपारा *४

पावकशरसुबाहुपुनिमारा *। अनुजनिशाचरकटकसँहारा ५

मारिअसुरसुरनिर्भयकारी *। अस्तुतिकरहिंदेव

तहँपुनिकछुकदिवसरघुराया। रहेकीन्हबिप्रनपरदाया * ७

भक्तिहेतुबहुकथापुराना * प्रभुजाना ८

*

निरघुकुलनाथा । हरषिचलमुनिवरकेसाथा १०

आश्रमएकदीखमगमाहीं *। खगमृगजीवजन्तुतहँनाहीं ११

पूछामुनिहिंशिलाप्रभुदेखी।सकलकथामुनिकहेउबिशेषी १२

दो० गौतम नारी शाप बश उपल देह धरि धीर॥
चरण कमल रज चाहती कृपा करहु रघुबीर १

टी० तबरात्रि बसिकै श्रीरामचन्द्रने कुंवारसुदी परेवाको प्रातःकाल मुनिसन

कहा कि हे मुनीश गुरोनिर्भय यज्ञकरो (१) तब हजारन मुनि जो रहैं सो सब होम करनेलगे आपु दोऊ भाई यज्ञकी रक्षापरहे (२) तब दूतनते सुनिकै अरु आकाश बिषे यज्ञको धूम देखिकै अतिक्रोधी मुनिनको द्रोही जो मारीच निशाचरहै सो आपन सहायलैकै धावतभयो (३) तब बिना गाँसीको बाण श्रीरामचन्द्रने मारा यह शतयोजन समुद्रपार लंकाको प्राप्तभयो पुनि जब सावधानभयो तब लज्जित ह्वैकै यहिपार आनिकै बास करतभयो (४) पुनि सुबाहुनाम राक्षसजोहै सो अपनी सैन्य लैकै आयो तब श्रीरामचन्द्रने अग्निबाण करिकै सुबाहुको भस्मकीन अरु लक्ष्मणजू अग्निबाण करिकै सम्पूर्ण सैन्यभस्म कीन्हि (५) असुरनको मारिकै परमपद दीन्ह देवतनको निर्भयकीन्ह तब ब्रह्मादिक देवमुनि सिद्ध चारण गुह्यक विद्याधर गन्धर्व समस्त स्तुति करते अरु गानकरतेहैं पुष्पनकी वर्षाकरतेहैं (६) तहां बिश्वामित्रके आश्रमबिषे कछुक दिवस रहे ब्राह्मणनपर दयाकीन्ह (७) भक्ति पूर्वक बिश्वामित्र श्रुतिस्मृति शास्त्रपुराण इत्यादिक कहतेहैं श्रीरामचन्द्र सब जानतेहैं पर प्रीतिपूर्वक सुनतेहैं (८) तब बिश्वामित्रजी आदरते कहतेहैं हे श्रीरामचन्द्र एकचरित्र जनकपुर बिषे राजाजनकजूने धनुष यज्ञरचना कीन्हिहै सो चलिकै देखिये (९) यह सुनिकै रघुनाथजी अति प्रसन्नता सहित कुंवारसुदी सप्तमी को स्नाननेम करिकै बिश्वामित्रके संगपूर्वदिशाको गमनकीन्ह (१०) बिश्वामित्रके संगमें चलेजातेहैं तहां मगमें एक आश्रम देखा वहां नतौपक्षी हैं नतौमृगहैं न कोई जीवजन्तुकी जातिही है काहेते मुनिशाप महा अग्निरूपहै ताते जीवनहीं रहसक्तेहैं (११) तहां एकशिला प्रभुने देखिकै मुनितेबूझा यहशिला कैसीहै मुनि सब प्रसंग कहते हैं (१२) दोहार्थ ॥ हे श्रीरामचन्द्र यह गौतम मुनिको आश्रम है तिनकी पत्नी अहल्या तेहिते कछु अपराधभयो तब महामुनि शापदीन्ह ताते शाप के बश ह्वैकै शिलाह्वैरहो है पुनिकृपा करिकै शापानुग्रह कीन्ह त्रेताके चौथे चरणमें श्री अयोध्याविषे महाराज श्रीदशरथके गृहमें परमेश्वर अवतीर्ण होहिंगे जनकपुरमें गमनकरतसंते चरणकी रज तेरेतनमें स्पर्श होतही मोक्षहोइगी ताते आपुके चरणकी रजचाहती है सो कृपाकरिकै दीजिये (१) ॥

साक्षाभिभंगीछन्द ॥

२१० परसत पदपावन शोक नशावन प्रकट भई तप पुंज सही ।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सम्मुखह्वै कर जोरिरही ॥
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुखनहिं आवतबचनकही ।
अतिशय बड़भागी चरणनलागी पुलकनयनजलधारबही १
धीरज मनकीन्हा प्रभुकहँ चीन्हा रघुपति कृपा भक्तिपाई ।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई ॥
मैं नारि अपावनि प्रभु जगपावन रावण रिपुजन सुखदाई ।
राजीवबिलोचन भवभयमोचन पाहिपाहि शरणहिआई २

मुनिशाप जो दीन्हा अतिभलकीन्हा परमअनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरिलोचन प्रभु भव मोचन यहैलाभ शंकर जाना ॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न माँगौं बर आना।
पद पद्म परागा रस अनुरागा ममसन मधुप करै पाना ३
जे पद सुर सरिता परम पुनीता प्रकट भई शिव शीशधरी।
सोई पदपंकज जेहि पूजतअज ममशिर धरेहु कृपालुहरी॥
यहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरण परी।
जो अति मनभावा सो बरदावा गइ पतिलोक अनन्द भरी ४
दो० अस प्रभु दीनदयाल हरि कारण रहित कृपाल॥
तुलसिदास शठ ताहि भज छाँड़ि कपट जंजाल १

२१० छन्दार्थ ॥ तब रघुनाथ जीने कहा कि ब्राह्मणी जोहै मुनिने कहा कि अपना को अपराध योजित होइ अरु वह कर्म किहेते और को कल्याण होइ तौ महत्पुण्य है ताते आपुके चरण परसेते यहिकर शापमोचन होइगो श्री रघुनाथजी के चरण अतिपावन शोकनशावन शिलामें स्पर्श करत सन्ते परम दिव्य तपकी मूर्ति आदि किशोरी अवस्था अति सुन्दर स्त्री शिला प्रकटी तब श्री रघुनाथ जीको देखत भई अत्यन्त सुन्दर शृङ्गार की मूर्ति परम कृपालु जनसुखदायक तिनके सम्मुख दोऊकर जोरिकै रहिगई अति प्रेम ते शरीर पुलकि आयो है मुख ते कछु बचन नहीं आवै चित्रवत् ह्वै रही है हे पार्वती अहल्या बड़भागिनी है तब श्री रघुनाथ जीकी प्रेरणा ते अपना को बड़भागी मानि कै चरणन में परत भई अति पुलक ते नेत्रन सों जल की धारा बहल भई (१) तब मन बिषे धैर्य धरिकै प्रभुको चीन्हत भई कि ये परब्रह्म हैं संपूर्ण मुनीश्वर ब्रह्मा शिवादिक इन्हीं को ध्यावते हैं सो मेरे नयन गोचर भये अहो भाग्य मानिकै श्री रघुपति की कृपाते रघुपति की भक्ति प्राप्त भई अति निर्मल मरा बाणीते स्तुति करती है हे रघुराई आपु ज्ञानकरिकै गम्य कहीं प्राप्त हौ अरु मैं स्त्री सब प्रकार ते अपावनि अरु आप सम्पूर्ण जगत् के पावन कर्त्ता सो मोको चरणकी रजदीन्हि जो ब्रह्मादिक देवतन को दुर्लभ है आप रावणादिक जो रिपु हैं बिमुख तिनको सुखदायी हौ अरु अपने जनन को तौ सुख रूपही हौ हे राजीव लोचन भव भय मोचन मैं पाहि पाहि आपुकी शरण योग्य नहींहौं पर आपु अपनीकृपाते अपनी शरणकीन (२) अरु मुनि शाप जो दीन सो अतिनीक शाप मोको अनुग्रह रूप होत भयो जो मुनिशाप न देते तौ इन नेत्रन भरिकै मुनिनको दुर्लभ जो आपुको स्वरूपसोकैसे देखती यह दर्शन को लाभ शंकर जानतेहैं शंकरको साची दिया काहेते यह स्वरूपको परम रसिक अहर्निश शङ्करहो हैं हे प्रभु मैं मतिको मन्द हौं परआपु कृपाकरिकै यह देः कि आपुके पद कमलविषे मेरे चित्तकी वृत्ति रसिक मधुकर इव होइ (३) जिन

पदनके मकरंदते परम पुनीत सुरसरिता प्रकट भई जाको महेशने शीशपर राखा सोई पद पङ्कज ब्रह्मादिकन करिकै पूजनीय हैं सो पद मेरे शीशपर धरेउ ऐसे कृपालुहौ श्री रामचन्द्रकी कृपाते श्री रामचन्द्र की भक्ति प्राप्तिहै कै स्तुति करिकै यहिभांति सिधारि परम दिव्य स्वरूप परम दिव्य विमान पर आरूढ़ ह्वैकै जन लोकको जात भई तहां गौतम ऋषि रहैं आनन्द संयुक्त श्री रामके परमधामको प्राप्त भई (४) दोहार्थ ॥ गोसाईं तुलसीदास कहते हैं ऐसे प्रभु दीनबन्धु कारण रहित कृपालु हैं हे मन शठ सब जंजाल छांड़िकै इन प्रभुको भजु (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डेविश्वामित्रयज्ञरक्षणअहल्यातारणवर्णनंनामसप्तत्रिंशतिस्तरंगः ॥ ३७ ॥

दो० अरतिस शुभग तरङ्ग में रामचरण शुभ देश ॥
रामलषण मुनि संग लै मिथिला कियो प्रवेश ३८

२११ चलेराम लक्ष्मण मुनिसंगा । गयेजहांजगपावनिगंगा * १
गाधिसूनुसबकथासुनाई । जेहिप्रकारसुरसरिमहिआई ४
तबप्रभुरिषिनसमेतनहाये । बिबिधदानमहिदेवनपाये *५
हरषिचलेमुनिबृन्दसहाया । बेगिविदेहनगरनियराया * ६
पुररम्यताराम जबदेखी * * । हरषेअनुजसमेतबिशेषी * ७
बापीकूपसरितसरनाना * । सलिलसुधासममणिसोपाना ८
गुंजतमंजुमत्तरसभृङ्गा * * । कूजतकलबहुबरणविहंगा ९
बरणबरणबिकसेबनजाता । त्रिबिधसमीरसदासुखदाता १०

दो० सुमन बाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास ॥
फूलत फलत सुपल्लवित सोहत पुर चहुंपास १

२१५ हे पार्वती अहल्या को तारि कै पुनि मुनिके सङ्ग श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण जी जनकपुरको चलतभये चलिकै गंगाके किनारे ठाढ़भये(१)सहित अनुज प्रणामकीन्ह बहुसुखको प्राप्तभये(२)पुनि सुरसरीजीकी उत्पत्ति अरु माहात्म्य बिश्वामित्रको प्रणाम करिकै रघुनाथजी बूझतेहैं (३)राजागाधिके तनय जो बिश्वामित्र सो कहतेहैं हे रघुनाथजी आप सब जानतेहौ आपके चरणारबिंदते उत्पन्नहैं सो हमकहते हैं किसी कल्प बिषे आप एकस्वरूप बामन अवतार भये तब बामनजू ने राजाबलिसों तीनिपग पृथ्वी मांगिलीन अपने पगते नापतसंते एकपग सम्पूर्ण पाताल कीन्ह अरु एकपग मृत्युलोक कीन्ह अरु एकपग आकाशको गयो तेहिपग के अंगुष्ठ ते सातो आवरण ब्रह्माण्ड भेदि गयो तब गोलोकते बिरजा गङ्गाजोहैं सो वही अंगुष्ठके नखते अवतभई परमदिव्य रूप शब्दब्रह्म स्वरूप बासुदेव पुरुष के लोकको प्राप्तभई पुनि महाशम्भु लोकको प्राप्त भई

पुनि महाविष्णु के लोकको प्राप्तभईं पुनि महाविष्णु के लोकते ब्रह्मा के कमण्डलुम प्राप्तभईं हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारे वंशविषे राजासगर भये तिनके साठिहज़ारपुत्र कपिल देवके शापते भस्मभये तिनहीकी पँचईं पुस्तविषे राजा भगीरथ भये तिन राज्यको त्यागिकै श्रीगङ्गाजूके हेतु परम तपस्या कीन्ह गङ्गाजी प्राप्तभईं तेहि गङ्गाजू करिकै साठिउ हज़ार मोक्षभये हे श्रीरामचन्द्र ऐसी गङ्गाजी हैं ऐसो माहात्म्यहै (४)तब श्री गङ्गाजीकी उत्पत्ति माहात्म्य सुनिकै श्रीरघुनाथजी सहित मुनिके स्नानकरतेभये बिबिध प्रकारके दान रघुनाथजी ब्राह्मणको देतेभये (५) तब सुन्दरी नावैं आवतीभईं संपूर्ण ऋषिन समेत श्रीरघुनाथजी एकही खेवा उतरतेभये तब मुनिनके बृन्द तिनके सहा-यक श्रीरघुनाथजी हर्षिकै जनकपुरको सहित समाज चलतेभये बेगिकहो शीघ्र कुंवार सुदी एकादशीको बिदेह के पुरको नियरात भये (६) पुरके बाहरकी रम्यता श्रीराम लक्ष्मण देखिकै बिशेष हर्षको प्राप्तभये(७)प्रथम पुरबाहरके चौफेरकी रम्यता देखते हैं तहां बावली कूप सरित सर अनेकन हैं तिनके मणिमय घाट किनारे सोपान अति चित्र बिचित्र सुन्दर बनेहैं अरु सुधासम जल पूर्णहै(८)तिनकेबिषे रसतेमत्त भ्रमरगुञ्जार करतेहैं अरु अनेक बर्ण बर्णके बिहंग अतिमधुर बोलतेहैं(९)पंचरंगके कमल बिकसे हैं नीलहरित अरुण श्वेत पीत तिनबिषे सुगन्धकी लपटैचली आवैहैं अरु सबप्रकार सुख-दायी त्रिबिधिसमीर शीतलमन्द सुगन्ध बहतिहै(१०)॥ दोहार्थ ॥ पुरके चहुंपास श्रीर-घुनाथजी मुनिनसमेत देखतेहैं कहूं कहूं फलनकी बाटिकालगी हैं कहूं कहूं बहुबागैं लगीहैं रसाल पनस कदली इत्यादिक तिनबिषे मयूर कोकिल शुक श्यामा इत्यादिक बिपुल बिहंग मधुर मधुर बोलतेहैं अरु बनहैं जामें नानाप्रकार के बृक्षसघन शोभित हैं सो बसंत इव सदा पुरके चहुंपास फूलते फलते पल्लवतेहैं यहि प्रकारते शोभितहै सो देखते भये (१) ॥

२१२ बनैनबरणातनगरनिकाई * । जहांजाइमनतहँइँलोभाई * १
चारुबजारबिचित्रअटारी । मणिमयजनुबिधिस्वकरसवाँरी २
धनिकबणिकबरधनदसम बैठेसकलबस्तुलियेनाना
चौहटसुन्दरगलीसुहाई * * । सन्ततरहैंसुगन्धसिंचाई * ४
मंगलमयमन्दिरसबकेरे * * । चित्रितजनुरतिनाथचितेरे ५
पुरनरनारिसुभगशुचिसन्ता * । धर्मशीलज्ञानीगुणवन्ता ६
अतिअनूपजहँजनककोनिवासू । बिथकेबिबुधबिलोकिबिलासू ७
होतचकितचि [illegible] कौ ।

दो० धवल धाम [illegible] पुरट पट सुघटित नाना भांति ॥
सिय निवास सुंदर [illegible]

नगरके चहुंफेर कोट तेहिकीशोभा बर्णबेमें नहीं आवै काहेते जहां

जातेहैं तहां देखतेहैं देखिकै मुनिनके मन रघुनाथजूको मोहिजाते हैं (१)पुनि बहुंफेर नगर देखिकै पश्चिम दरवाजेसे नगरमें प्रवेशकीन्ह तहां चारुकही अति सुन्दर चौपर की बजारेहैं अनेक अरु बिचित्रकही बहुरंगके रत्न सुवर्णमें जटितहैं अवारीकही पंक्ति की पंक्ति जनु बिधाताने सूत्रधारिकै निजकरते मणिमय बनायोहै (२) तहां धनिककही सराफ जो केवल द्रब्यैधरेहैं अरु बणिककही जो अनेकन बस्तु संचित कियेहैं सो कैसेहैं सब कुबेरहीके समान हैं अनेकन अनेक बस्तुलिये बैठेहैं(३)चौहटाकही चौपरकी बजार तिनकी अति सुंदरगली संततकही निरंतर सुगन्ध अगरकपूर केशरि चन्दन इत्यादिक सुगन्धते स्वाभाविकै सींचीरहतीहैं (४) औसबके मन्दिर मंगलमयहैं ध्वजा पताकायुक्त हेममय फहरातेहैं अरु अनेक प्रकारके चित्रबनेहैं जनु रतिनाथने निजहाथ से बनाये हैं (५) पुर के नरनारि सुभगकही अतिसुन्दरहैं शुचिपवित्र निर्मल संत हैं श्रीसीतारामो-पासक परमानन्यहैं अरु धर्मशील वैराग्य योग ज्ञान इत्यादिक गुणमयहैं (६) अरु राजा जनकजूको मंदिर अति अनूप उपमा रहितहै जाको बिलासकही प्रकाश सुख आनन्द देखिकै ब्रह्मादिक देवता मोहितहोतेहैं (७)कोटके भीतर आश्चर्ययंत रचना बिलोकिकै चित्तचकित होइगयो जनु सकल ब्रह्मांडभरेनकी शोभारोकि दियोहै(८) ॥ दोहार्थ ॥ श्री जानकीजी जहां बिराजतीहैं सो मन्दिर स्फटिक मणिन करिकै रचित है कंचन विषे अरु अनेक रंगनकी मणिलगी हैं सो शोभा अनूपहै कबिके बर्णबेको अगमहै (१) ॥

२१३ सुभगद्वारसबकुलिशकपाटा । भूपभीरनटमागधभाटा * १
बनीबिशालबाजिगजशाला । हयगजरथसंकुलसबकाला २
शूरसचिवसेनपबहुतेरे * * । नृपगृहसरिससदनसबकेरे * ३
.... सरसरितसमीपा * । उतरेजहँतहँबिपुलमहीपा * ४
देखिअनूपएकअमराई * * । सबसुपाससबभांतिसुहाई * ५
कौशिककह्यउमोरमनमा । यहांरहियरघुबीरसुजाना * ६
भलेहिनाथकहिकृपानिकेता । उतरेतहँमुनिवृन्दसमेता * ७
बिश्वामित्रमहामुनिआये * । समाचारमिथिलापतिपाये ८
दो० संग सचिव शुचि भूरि भट भूसुरबर गुरुज्ञाति ॥
चलेमिलन मुनिनायकहि मुदितराउ यहिभांति १

२१३ राजा जनकजू के मन्दिर के दरवाजे में कंचन मणिनमय केवाड़ अति शोभित हैं तेहि दरवाजे पर राजन की भीर अनेकन हाथी घोड़े रथ सुखपाल संयुक्त अरु अनेकन नट अरु अनेकन कला नृत्य करने वाले अरु मागध कही कलावत कथिक गान विद्या वाले अरु भाट अनेक कवितन करिकै यश बिरदावली बर्णतेहैं तिनकी भीर अति शोभित देखते भये (१) गज बाजि रथन के शाला अति बिशाल बिस्तरे सुन्दर अनेक बने हैं अरु गज बाजि रथ सुखपाल इत्यादि बाहन सब काल में संकुल कही

तैयार हैं (२) अरु शूरबीर मंत्री सेनापति तिनसबके गृह जैसोराजाको भवनहैतैसेही सबकेहैं (३) यही रीति सों देखते पश्चिम दरवाजे में प्रवेश कीन सूधही पूर्व दरवाजे से पुरके बाहर गये तहां सर सरितन के समीप अनेकनराजा उतरे हैं जे धनुष यज्ञको आये हैं (४) तहां एक अमराई अति अनूप कौशिकी नदी के तीर अति सुन्दर सब प्रकार ते सुपास है (५) तेहिको देखि कै विश्वामित्र बोले हे रघुबीर कृपालु मोरमन बहुत प्रसन्न भयो है यहां टिकिये (६) कृपाके निकेत श्रीरामचन्द्र बोले हे नाथ भली आपु कही सहित मुनिवृन्द श्रीरघुनाथजी उतरते भये (७) तब विश्वामित्र के आगमनको समाचार राजा जनक जू पावते भये (८) दोहार्थ ॥ बिश्वामित्रके मिलिबे को राजा जनक जू हर्षि कै चले संग बिषे सचिव हैं शुचि कही निर्मल बुद्धि जिनकी अरु भट भूरि कही समूह है अरु ब्राह्मणन की मण्डली पण्डित तत्त्ववेत्ता अरु गुरु कही श्रेष्ठ सतानन्द आदिक अरु ज्ञाति कही जाति सम्बन्धी इन सबनको बिश्वामित्र के दर्शनकी अति लालसा है मुदितमन ते चले (९) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डेरघुवरमुनिमुनीशमिथिलाप्रवेशवर्णननामअष्टत्रिंशतिस्तरंगः ३८ ॥

दो० रामचरण उन्तालिसैं नृप मुनि मिलन बिलास ॥
बहुरि राम मुनि बाक्य सुख नगर बिलोकनिआश ३९

२१४ कीन्हप्रणामचरणधरिमाथा । दीन्हअशीषमुदितमुनिनाथा १
विप्रवृन्दसबसादरबन्दे * * । जानिभाग्यबड़िराउअनन्दे २
कुशलप्रश्नकहिबारहिबारा । बिश्वामित्रराउबैठारा * * ३
तेहिअवसरआयेदोउभाई * । गयेरहेदेखनफुलवाई * * ४
श्यामगौरमृदुबैसकिशोरा । लोचनसुखदविश्वचितचोरा ५
उठेसकलजबरघुपतिआये । बिश्वामित्रनिकटबैठाये * ६
भेसबसुखीदेखिदोउभ्राता * । बारिविलोचनपुलकितगाता ७
मूरतिमधुरमनोहरदेखी * । भयेविदेहबिदेहबिशेषी * ८

दो० प्रेम मगन मनजानि नृप करि बिवेक मतिधीर ॥
बोले मुनि पद नाइ शिर गदगद गिरा गँभीर १

२१४ राजा जाइ कै बिश्वामित्र के चरणारविंद बिषे मस्तक धरते भये मुनिनाथने हर्षि कै आशीर्बाद दीन्ह (१) संपूर्ण मुनिनकी राजा आदर पूर्बक बंदना करते भये अपनी बड़ी भाग्य जानि कै राजापरमानन्दको प्राप्त भये (२) बारबार कुशलप्रश्न परस्पर करते हैं बिश्वामित्र राजाको बैठारते भये (३) तेहि अवसर में दोऊ भाई आये फुलवारी देखने गये रहे (४) कैसे हैं श्याम गौरहैं अति कोमलहैं अरु अवस्था मध्य किशोर हैं सुन्दर कैसे हैं लोचन के सुखद हैं अपनी शोभा करिकै संपूर्ण बिश्वके चित्त को चुराइ लेते हैं (५) जब रघुपति आये तब राजा जनक समाज समेत उठत भये

किंतु सकल कही दोऊ समाज उठत भये काहे ते सब तत्त्वज्ञाता हैं तब बिश्वामित्र अपने दक्षिण भाग के समीप बैठारते भये (६) दोऊ भ्रातन की छवि देखिकै संपूर्ण समाज अति सुखी भयो प्रेम करिकै नेत्रन से जल बहत है अंग अंग पुलकित होते हैं (७) श्री रघुनन्दनजू मधुर मनोहर मूर्ति मधुर कही जिनको देखत संते नेत्र नहीं तृप्त होतेहैं अरु मनोहर कही जिनकी शोभा मुनीश्वरन के चित्त बुद्धि मनको आकर्षण करती है तिनको देखिकै विदेह बिशेष के विदेह ह्वै गये राजा निमि ते राजाकी तीनि पदबी चली आवैहैं श्रीबशिष्ठ जू के शाप ते राजानिमिको शरीर पतन भयो तबमुनीश्वरन राजा का शरीर मथिकै एक पुत्र उत्पन्न कीन्ह तेहिको तीन पदवी दीन्ह मथेते उत्पन्न भयो ताते राजाको मिथिलेश कहा अरु केवल पिता ते उत्पन्न भये ताते जनक कहा अरुमैथुनते नहीं उत्पन्नहैं ताते विदेह कहा अरु मुनीश्वरन आशीर्बाद दीन्ह कि यह बंश योग ज्ञान भक्ति करिकै सदायुक्त रहै ताते राजाको ज्ञान करिकै राज्य को विषय नहीं स्पर्श करै ताते ज्ञान विदेह कही तहां रघुनन्दनको अति मधुर मनोहर देखिकै इन्द्रिनको व्यवहार रहित भयो ताते ज्ञान विदेह तौ सदारहैं अब ज्ञान विदेह देह विदेह दूनोंभये ताते बिशेष विदेह भये (८) दोहार्थ ॥ राजाने श्रीरामचन्द्र के स्वरूप विषे अपनी आत्माको प्रेमते मगन जान्यउ तब अंतष्करण में बिवेकसे मति को धीर करिकै योगकेबलते अरु अपनी आत्माते श्री रामचन्द्रको परमेश्वर निश्चयजाना पर बिश्वामित्र जो सद्गुरु तिनते विशेष जाना चाहते हैं ताते धीर्य्य धरिकै मुनि के पद कमल गहिकै प्रेमते भरी गद्गद गम्भीर बाणी बोलते भये (९) ॥

२१५ **कहहुनाथसुन्दरदोउबालक।मुनिकुलतिलककिनृप**कुलपालक १

ब्रह्मजोनिगमनेतिकहिगावा। उभयवेषधरिकीसोइआवा २

सहजविरागरूपमनमोरा *। थकितहोतजिमिचंदचकोरा ३

तिभाऊ * *। कहहुनाथजनिकरहुदुराऊ ४

इनहिंबिलोकतअतिअनुरागा। बरबशब्रह्मसुखहिमनलागा ५

कहमुनिबिहँसिकह्यउनृपनीका।बचनतुम्हारकहोइअलीका **६**

येप्रियसबहिजहांलगिप्रानी। मनमुसुकाहिंरामसुनिबानी ७

रघुकुलमणिदशरथकेजाये । मखहितलागिनरेशपठाये ८

दो० राम लषण दोउ बंधुबर रूपशील गुणधाम॥

मखराख्यउ सबसाखिजग जीतिअसुरसंग्राम १

२१५ हे नाथ ये दोऊ बालक अति सुन्दर मुनिनके कुलके तिलक हैं कि नृपन के कुलके बालकहैं इहां श्लेषालंकार है मुनिकुल तिलक कही कोई मुनिके बालक हैं नृपकुल पालक कहो कोई राजाके बालक हैं पुनि मुनिकुल तिलक कही सम्पूर्ण मुनिनके तिलक परमेश्वर हैं सोई तौ न होइँ नृपकुल पालक कही राजनके कुल मनुष्य

देवतादिक राजन के पालकरूपते ईश सोई तौ न होंहिं यह धुनि अर्थ है (१) अरु हे नाथ ब्रह्म जेहिको निगम नेति नेति कहिकै गावते हैं सोई तौ न होईँ वेषकही दुइ स्वरूप करिकै हमारे इहां कृपा कियो है इहां संदेहालंकार है काहेते राजा जनक निरवयव ब्रह्मनेष्ठी हैं ताते यहकहा कि ब्रह्मतौ न होईँ दुइ बिग्रह धरिकै प्राप्तभयो अरु ये सावयव ब्रह्ममूर्त्ति हैं ताते संदेह कहा (२) हे नाथ यहि संसारते मोर मन सहजै बिरागरूप है अरु इनको देखिकै मोरमन अति अनुरागको प्राप्तभयो जैसे चन्द्रमा को देखिकै चकोर लोभित होतहै तैसेही मेरो मन थकित भयो है (३) ताते हे नाथ मैं सत्य भावते बूझतहौं दुराव न करौ यथार्थ कहहु (४) हे नाथ काहेते कि इनको बिलोकत संते मन अत्यन्त अनुरागको प्राप्तभयो मोरमन ब्रह्मानन्द सुखसमुद्र में सदा मग्नरहै अरु इनको देखिकै बरबश ब्रह्म सुखको त्यागिदियो है ताते जनकजूके बचन में यह सिद्धार्थ है कि प्रथम बिज्ञान निरवयव ब्रह्मसुखको प्राप्तहोइ तब श्री रामचन्द्रस.व-यव परब्रह्म मूर्त्ति तेहिके सुखको अधिकारी होइ कैसे जैसे सूर्यहीके प्रकाशते सूर्यदृश्य मान होते हैं जैसे निज अनुभव ते अपनी आत्मा दृश्यमान होति है तैसे आत्मा के दृश्यते परमात्मा जो श्री रामचन्द्रहैं ते दृश्यमान होते हैं पूर्व चौपाई जो कहा कि भये विदेह बिदेह बिशेषी ताको अर्थ यहांभी कहते हैं राजाजनक सदा बिदेह रहै काहेते कि अपनो स्वरूप आत्मा शुद्धब्रह्म चेतनरूप तामें सदा आरूढ़ रहैं अरु श्रीराम-चन्द्र परब्रह्म बिग्रह तिनको जब देखा तब आत्माते वृत्ति छूटिकै श्री रामचन्द्र के स्वरूपमें डूबी ताते आत्माते बिदेह भते ताते बिशेष बि.के कही (५) तब मुनीश बिहँसिकै बोले हे राजन् तुमतौ बिशेष ज्ञानवान् हौ जो तुम कह्यउ अरु जान्यउ इन बालकनको सो तुम्हारे बचन वेदतत्त्व बिषे लीकहैं सत्य हैं (६) हे राजन् ये दोऊ बालक जहांतक प्राणीकही प्राणनको धारण किये हैं सो स्थूल सूक्ष्म करिकै चराचरको प्राणी कही तिन सबनको ये प्रिय हैं मुनिन अरु भक्तनको परम प्रियहैं इन्हीं करिकै सर्व जीवनको कल्याण है जनक बिश्वामित्र दोऊतत्त्व वेत्तानकी बाणीमें अनेकन अभिप्राय सुनिकै श्री रामचन्द्र मुसुकातेहैं (७) हे जनकजू रघुबंश कुलके मणि राजा दशरथ तिनके ये पुत्रहैं तहां यह धुनिहै कि ऐसे रामचन्द्र हैं जस तुम समुझेउ है अरु जस कहेउ ते दशरथके पुत्र हैं ऐसे राजा दशरथ हैं कि ऐसे तुम जिनके इहां आपु चलि आये हैं अरु राजा ऐसे परमार्थी कि ऐसे श्रीरामचन्द्रको पाइकै मेरे हितके हेतु संगपठा-वते भये (८) दोहार्थ ॥ ये जो श्यामसुन्दर हैं रूप शील बलके स्थान तिनको राम ऐसो नामहै अरु ये जो गौरहैं सोई गुणनके स्थान श्रीरामचन्द्र के लघुभ्राता हैं ल-क्ष्मण ऐसो नाम है ये दोऊ बालकन संग्राम में महा असुरन को जीतिकै हमारे यज्ञ की रक्षा कीनहै यह बात वर्त्तमान सब जानत हैं (९)॥

२१९ मुनितवचरणदेखिकहराऊ। कहिनसकौंनिजपुण्यप्रभाऊ१

*** । आनंदहुकेआनँददाता * * २**

।* । कहिनजायमनहींमनभावनि३

सुनहुनाथकहमुदितबिदेहू * । ब्रह्मजीवइवसहजसनेहू * ४

॥कउछा। ५

। लहाबासलैदानसुआला * ७

करिपूजासबबिधिसेवकाई * । गयेराउगृहबिदाकराई * ८

दो० ऋषय संग रघुबंश मणि करि भोजन बिश्राम ॥
प्रभु भ्राता सहित दिवस रहा भरि याम १

पार्वती राजा जनक बोलते भये हे मुनीश तुम्हारे आगमनके दर्शनते मैं अपने पुण्यका प्रभाव कछु नाहीं कहि सकतहौं (१) हे मुनीश श्याम गौर सुन्दर भ्राता जोहैं ते आनंद जो ब्रह्मानंद है ताहूको आनंद जोहै परमानंद तेहिके दाता हैं अस मोको समुझि परैहै (२) इनके बिषे जे जीव प्रीति करते हैं अरु जेहि जीव पर ये प्रीति करते हैं सो परस्पर अति पावन है परम कल्याण रूपही है सो मनही मन कही मनके अन्तर्भूत आत्मा ताहीको भावैहै किंतु दोऊ भाइनकी प्रीति परस्पर अतिपावनि है (३) हे भरद्वाज बिदेह कहते हैं हे नाथ ये दोऊ बालक ब्रह्म अरु शुद्ध जीव इव नित्य सहजही एक संगी स्नेही हैं इव पदकै तवापन्हुति अलंकारको बाचक मिसु है (४) बारम्बार श्रीरघुनाथ जीको स्वरूप अति सुंदर तिनको देखि देखि राजा को अङ्ग २ अति पुलकित है अन्तःकरण में अति उत्साह होत है (५) बिश्वामित्र की प्रशंसा करिकै चरणारबिंद गहिकै हाथ जोरिकै नगर के भीतर निज मंदिर को लेवाय चले (६) अति सुंदर सदा सुखदाता सर्वकाल में एकरस ऐसे मंदिर में समस्त मुनिन अरु श्रीराम लक्ष्मण जीको राजाने बास दीन्ह (७) सब प्रकारते मुनिनकी पूजा अरु सेवकाई करिकै राजा मुनीश से बिदा मांगिकै गृहको गये (८) दोहार्थ॥ बिश्वामित्रके संग रघुबंश मणिने भोजन करिकै बिश्राम कीन्ह पुनि पहर दिनरहे भ्राता सहित उठे (१)॥

२१७ लषणहृदयलालसाबिशेषी । जाइजनकपुरआइयदेखी १

प्रभुभयबहुरिमुनिहिसकुचाहीं।प्रकटनकहहिंमनहिंमुसुकाहीं २

रामअनुजमनकीगतिजानी । भक्तबछलताहियहुलसानी

परमबिनीतसकुचमुसुकाई * । बोलेगुरुअनुशासनपाई * ४

नाथलषणपुरदेखनचहहीं । प्रभुसकोचडरप्रकटनकहहीं ५

अनुशासनपावों * । नगरदे * ६

।

धर्मसेतुपालकतुमताता * । प्रेमबिबशसेवकसुखदाता ८

दो० जाइ देखि आवहु नगर सुख निधान दोउ भाइ॥

२१७ लक्ष्मण जूके हृदयमें यह लालसा विशेष भई कि जनकपुर देखि आवों (१) प्रभुके डर अरु मुनियों के संकोच ते प्रकट नहीं कहते मन में हुलास होत है (२) श्रीरामचन्द्र अनुजके मनकी गति जानते भये कि लक्ष्मण जूके अन्तःकरण को मनोरथ सफल किया चाहिये काहेते प्रभु भक्तबत्सल हैं (३) तब परम विनीत कही अति प्रवीण संकोचकै मुसुकाने तब गुरु न जाना अरु कहा कि जो कछु इच्छाहोइ तो कहिये तब श्रीरामच द्र अति मधुर बचन बोलते भये (४) हे नाथ लछमणजू जनकपुर देखा चाहते हैं सो हमारे अरु आपके संकोच डरते प्रकट नहीं कहसक्ते (५) जो र उर की आज्ञा होइ तो नगरको देखायकै तुरन्त ले आवों आगे यह अभिप्राय है कि रघुनाथहूजूकी सबको अपनो स्वरूप देखाइबे अरु नगर देखिबेकी इच्छा है (६) श्रीरामचंद्रके बचन अतिशय कोमल माधुर्य रसभरे सुनिकै मुनि बोले हे श्रीरामचंद्र तुम यह नीति कस न कहहु तुमने हम को पूंछा सो जगत् में गुरु शिष्य अरु वेद की मर्याद राखी है (७) हे तात तुम धर्मसेतु के पालक हौ औ प्रेमके बशहौ अपने सेवकन के सुखदाता (८) दोहार्थ ॥ हे तात जाहु नगर देखि आवहु तुम दोऊ भाई सुख के निधान कही स्थानहौ संपूर्ण पुरबासिन के नेत्र सुन्दर चंद्र बदन देखाइकै सुफलकरहु (९) ॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकांडेजनक बिश्वामित्रपरम रहस्यसंवादेश्रीराममुनिवाक्यपरमरसबर्णनंनामएकोनचत्वारिंशतितरंगः (३९) ॥

दो० चत्वारिंश तरङ्ग में नगर गये रघुनन्द ॥
रामचरण पुर प्रेमबश मोद उछाह अनन्द ४० ॥

२१८ मुनिपदकमलबंदिदोउभ्राता। चलेलोकलोचनसुखदाता १
बालकवृन्ददेखिअतिशोभा *। लगेसंगलोचनमनलोभा २
पीतबसनपरिकरकटिभाथा *। रुचिरचापशरसोहतहाथा ३
तनअनुहरतसुचंदनखोरी * *। श्यामलगौरमनोहरजोरी ४
रनागमर्गः

श्रवणनकनकफूलछबिदेहीं। चितवतचितचोरिचितलेहीं ७
चितवनिचारुभृकुटिबरबांकी। तिलकरेखशोभाजनुचांकी ८
दो तनौ सुभग शिर मेचक कुंचित केश ॥
नख शिख सुन्दर बन्धु दोउ शोभा सकल सुदेश १

२१८ हे गरुड़ मुनिपद बंदिकै दोऊ भाई संपूर्ण लोकन के लोचनन के सुखदाता जनक पुर देखिबे को चलते भये (१) तहां बालकन के बृन्दके बृन्द श्री राम लक्ष्मणजू की अति शोभा देखिकै संग चलतभये मन अरु नयन ते रूपाशक्त भये (२)

कैसे हैं दोऊ भाई पीताम्बर पहिरे हैं अरु पीताम्बर कांधाशोती है अरु कटि विषे जराव मय पटुकाहै तेहिपर कनक रत्नमय तूण है रुचिर कही अति सुन्दर धनुबाण हाथविषे शोभित है (३) अरु तनके अनुहारित पीतसुष्टु केशरि युक्त चन्दन कै खौरि दिये हैं श्याम श्री रामचन्द्र गौर श्री लक्ष्मणजू अपनी शोभाकरि कै सबके मनको हरतेहैं (४) अरु केहरि कही सिंह किशोरके ऐसे उच्चकन्ध हैं अरु आजानु भुजहैं अरु बक्षस्थल विषे गज मुक्तन के माला हैं (५) अरु सुभग अति सुन्दर शोण कही प्रातसमय के अरुण कमल तद्वत् नेत्रहैं अरु पूर्ण मयङ्क निर्मल एक रस तद्वत् वदन है सो देखत बाह्य हृदय के नेत्रन ते अध्यात्म अधिभूत अधिदैवता तीनिहूं ताप छूटि जातेहैं (६) अरु श्रवण विषे सुवर्ण के फूल कही झुमका हैं छोटे छोटे प्रकाश मय मोती लगे हैं अलक संयुक्त कपोलन पर हलकत अरु झलकत हैं वे अतिशय अनूप छबि देतेहैं अरु जो इनके मुँहतन चितवत है अरु जेहिकी दिशि ये चितवते हैं तेहिके चितको चुराय लेते हैं (७) अरु चारु चितवनि है अरु भृकुटी बरनाम भ्रू बांकी है जनु काम को धनुष है अरु भालपर युग रेख पीत केशरिको तिलक है जनु असमशरके शर हैं पुनि जनु विधाताने त्रिभुवनकी शोभा समेटिकै चाकी कही छापि दियो है (८) दोहार्थ॥ पुनि सुन्दर शीश विषे सुन्दर चौतनी कही अरुण किन्तु पीत पगड़ी गोल तेहिके चहुंफेर चारि चारि अंगुल चौड़े रेशमी पट तेहिपर सुवर्ण कलित मणि मोती जटित एक अग्र भाग दुइ दूनों बगल एक पच भाग चारिहूकी तनी मध्य पगड़ी पर बँधी हैं जनु बाल रविके चहुंफेर चारिहूं कामिनी पर दिब्य लघु नक्षत्र उदितहैं अरु मेचककही श्याम सचिक्कण सूक्ष्म सघन कुञ्चित कही टेढ़े घुंघुवारे ऐसे केश हैं यही प्रकारते दोऊ भाइनकी नखशिख पर्यंत सुदेश कही अंग अंग अति शोभा बनि रही है (९)॥

२१९ देखननगरभूपसुतआये * *। समाचारपुरबासिनपाये * १
धायेधामकामसबत्यागी * *। मनहुंरंकनिधिलूटनलागी २
निरखिसहजसुन्दरदोउभाई । होहिंसुखीलोचनफलपाई ३
युवतीभवनझरोखनलागी *। निरखहिंरामरूपअनुरागी ४
कहहिंपरस्परवचनसप्रीती। सखिइनकोटिकामछबिजीती ५
सुरनरअसुरनागमुनिमाहीं *। शोभाअसकहुंसुनियतनाहीं ६
। विकटवेषमुखपंचपुरारी * ७
।।माहीं *। यहछबिसखिपटतरियेजाही ८

दो० वय किशोर सुखमा सदन श्याम गौर सुखधाम॥
अंग अंग पर वारिये कोटि कोटि शत काम १

२१९ यह बात सम्पूर्ण पुर में भासि गई परस्पर कि दोऊ भूप के कुमार जो मुनिके संग हैं सो नगर देखिबे को आये हैं (१) सर्व पुरबासी धामके काम त्यागित्यागि

देखन धाये जेजैसही रहैं ते तैसही धाये बस्त्र अलंकार काहूने सँभार नहीं कियो जैसे रंक निधि कही समूह द्रव्य रत्न इत्यादिक तेहिके लूटिबेको धावैं तैसेही सब श्रीराम-चन्द्र के देखिबे को धाये (२) सहज सुन्दर कही एक रस सर्वकाल तिन दोऊ भाइन को निरखते हैं लोचननके फलको पाइकै परमानन्द सुख को प्राप्त होते हैं (३) अरु युवती गण जो अतिसुंदरी चन्द्रमुखी हेमांगी नित्य किशोरी हैं तेहेम मणिन महलन के झरोखन में लागि लागि अति अनुरागते दोऊ भाइनको देखती हैं (४) परस्पर अति प्रीति संयुक्त बचन कहती हैं हे सखी इन दोऊ कुमारों ने कोटिन कामकी छबि को जीति लीन है (५) संसार विषे सुर इन्द्रादिक अरु असुरनाग मुनि इत्यादिक जेते हैं त्रैलोक्य विषे ऐसी शोभा देखिबे में नहीं आवै है (६) सुन्दरता विषे जो त्रयदेव श्रेष्ठ हैं तिनकी उपमा देइ तौ विष्णु चारिभुज विधि चारि मुख शिव पञ्च मुख बिकट हैं ताते इन राज कुमारन की उपमा कैसे दीजिये यह अयोग्य होतहै (७) इनते अधिक अपर देव ऐसो जगत् में कौन है जिहिको इनकी छबिकी पटतर दीजिये ताते हे सखि हमारे समुझिबे में देव ईश्वर ये नहीं हैं को जानै कोहैं (८) दोहार्थ ॥ हे सखी इनकी बय कही अवस्था आदि किशोरहै अरु सुखमा कही शोभा तेहिके स्थानहैं पुनि श्याम गौर सुखके धाम हैं हे सखि इनके अंग अंगन प्रतिकोटिकोटिन काम निछावरि हैं ताते हेसखी जो विधिदे हमारी चलती तौ इनको नेत्रनते भिन्न न करतीं (९)॥

२२० कहहुसखीअसकोतनुधारी । जोनमोहयहरूपनिहारी * १
कोउसप्रेमबोलीमृदुबानी * । जोमैंसुनासोसुनहुसयानी * २
येसखिदोउदशरथकेढोटा * । बालमरालनकेकलजोटा * ३
मुनिकौशिकमखकेरखवारे । जिनरणअजिरनिशाचरमारे ४
श्यामगातकलकंजबिलोचन । जोमारीचसुभुजमदमोचन ५
कौशल्यासुतसोसुखखानी । नामरामधनुशायकपानी * ६
गौरकिशोरबेषबरकाछे * । करशरचापरामकेपाछे * * ७
लक्ष्मणनामरामलघुभ्राता * । सुनुसखितासुसुमित्रामाता * ८
दो० बिप्रकाजकरि बंधुदोउ मग मुनि बधू उधारि ॥
आये देखन चाप मख सुनि हर्षीं सब नारि १

२२० हे सखी ऐसो कौन तन धारी है जो इनके स्वरूपको देखिकै न मोहै यामें काकोक्ति अलंकार है हेसखि इनको देखि कै चराचर मोहि जाते हैं (१) कोई सखी प्रेम संयुक्त मृदुबाणी ते बोलती भई हे सखि हे सयानी जो हम सुना है सो सुनहु दोऊ प्रौढ़ा हैं (२) हे सखि ये दोऊ कुमार श्रीअवधपति राजा दशरथ के पुत्र हैं हंस के ऐसे छौना कलकही अति सुन्दर जोरी है (३) पुनि बड़े तेजस्वीहैं इन्हहिन बिश्वामित्र के रक्षा कीन्ह है अजिर कही आंगन सो इहां न लेव अजिरकही बिस्तार रणभूमि

ताहु बिष महा महा भट निशिचरन को नाश कीन्ह है ऐसे प्रतापी वली हैं (४) हे सखी जिनकर श्याम गात है कल कही अति सुन्दर कमल नेत्र हैं ते मारीच अरु सुभुज कही सुवाहु नाम राक्षस तिनके मदके मोचन कर्त्ता हैं मारिकै परमपद दीन्ह ऐसे हैं यहां अर्थावृत्ति अलंकार है (५) हे सखी जिनकी माता श्री कौशल्याजू जो सम्पूर्णगुण की खानिही हैं तिनको राम ऐसो नाम है राम कहत संते सखी शान्त रस विषे शृंगार रस यह सूचित करैहै कि चराचर बिषे येई रमे हैं अरु योगी मुनीश्वर इनहीं के चरणारविन्द विषे रमते हैं अरु अपने स्वरूप छबि शोभा सुन्दरता करिकै सब रसिकन के चित्तको रमावते हैं ताते राम कहा अरु धनुर्बाण हाथ बिषे लयेहैं यह कहतसंते वीररस सूचित करै है यामें यह अभिप्राय सखी कहै है कि धनुष येई तोरेंगे यहि चौपाई मे यह ध्वनि है (६) अरु जो दूसर कुमार है गौर आदि किशोरबेष कही सुन्दर पट आभूषण काछेहैं धनुर्वाण लिये है श्रीरामचन्द्र के पाछे है (७) हे सखी त्यहिको लक्ष्मण नाम है श्रीरामचन्द्रको लघुभ्राता है हे सखि रानी कौशल्याजू ते लघु रानी सुमित्राजू हैं सो यहिकी माता हैं (८) दोहार्थ ॥ विप्रन कर काज करिकै दूनों बन्धु मुनिबधू अहल्या पापमय ताको कृतार्थ करिकै अब धनुषयज्ञ देखिबे को मुनिके संग आये हैं हे सखि ऐसी श्री कौशल्या सुमित्राजी हैं जिनके ऐसे पुत्र हैं यह सुनिकै संपूर्ण नारी जो हैं सो अति हर्षको प्राप्त भई (९) ॥

रामछबिसखियककहई । योग्यजानकीयहबरअहई १
जोसखिइनहिंदेखुनरनाहू । प्रणपरिहरिहठिकरहिबिवाहू २
कोउकहइनहिंभूपपहिंचाने । मुनिसमेतसादरसनमाने * * ३
सखिपरन्तुप्रणराउनतजई । बिधिबशहठिअविवेकहिभजई ४
कोउकहजोभलअहैबिधाता । सबकहँसुनियउचितफलदाता ५
तौजानकिहिमिलीबरयेहू * । नाहिनआलीयहसंदेहू * ६
जोबिधिबशयहबनैसँयोगू * । तौकृतकृत्यहोहिंसबलोगू * ७
सखिहमरेआतिआरतताते । कबहुंकयेआवहिंयहिनाते * ८

दो० नाहिंतो हमकहँ सुनहुसखि इनकर दर्शनदूरि ॥
यह संघट तब जब पराय पराकृत भूरि १

२२१ अपर एक प्रौढ़ा सखी श्रीरामचन्द्रकी छबि नेत्रन भरि देखि कै बोलती भई हे सखि ये श्री जानकीही के योग्य हैं (१) हे सखी जो इनकी शोभा राजा जनकजू देखैंगे तो बशीभूत ह्वै जाहिंगे तब प्रण तजिकै हठ करिकै बिवाह करहिंगे यामें मध्या नायका जो है सो श्रीरघुनाथके स्वरूप में आसक्त भई है तहां प्रौढ़ाने वाको समाधानकीन है (२) तब दूसरी नायका जो प्रवीण है सो बोली हे सखी इनको नरनाह जानते हैं सहित मुनि इनको सम्मान कीनहै (३) हे सखी इनको चीन्हो

तो है परंतु प्रणको नहीं तजहिंगे काहे ते बिधि के बश ते बिधि जो परमेश्वर हैं तिन के बश जनकको प्रण अरु राजा ओहै सो तौ बिबेकमान है इनकी शोभा देखि कै ऐसो कौनहै जो प्रणको न त्याग करै राजा तौ प्रणको त्यागि कै बिवाह करते पर राजाको प्रण बिधिके बशहै ताते राजा हठ करिकै अबिबेकको भजत कही अबिवेक-ही को ग्रहण किये है देखिये तो सखी की चातुरता राजा को तो विवेकमान् किये है अरु प्रण को अविवेकमान किये है काहे ते शृंगार रस के भावते पुनि सखी की बाणी में यह अभिप्राय है (४) कि कर्म धर्म नेष्ठी योगी ज्ञानी इत्यादिक इनकी शोभा देखिकै अपने नेम धर्म कर्म ध्यान समाधि इत्यादिक जो प्रण न त्यागि देइ ऐस कौन अज्ञानी है काहेते कि सबके फल येई हैं अरुराजा के प्रण द्वार ह्वै के परमेश्वर अपनी ईश्वरता जनावा चाहते हैं ताते राजा को प्रण ई-श्वराधीनहै (५) कोई सखी बोली कि जो बिधाता ऐसो भलो सबको उचितफलदा-ता है तौ श्री जानकीजूको यही बर निश्चयकरिकै मिलहिगा हे आली यामें संदेहनहीं है अली कही भ्रमरी अरु श्री रामचन्द्र को स्वरूप नील कमल है छबिकेशर है शोभा मकरंदहै ताको पान करती है ताते अली कही (६) अपर सखीबोली कि जो बिधिके वश ते यह संयोगबनै बिधि कही बिधाता किंतु बिधि कही कर्महमारे कर्म भाग्य ते यह संयोग बनै तौ हम लोगनकी कृत्य कृतार्थ अरु आनन्दित होइ (७) हेसखी बि-वाह के सम्बन्ध अरु हमारी आरत के नातेते कबहों कबहीं ये फेरि आवहिंगेकाहे ते दशरथ नन्दन करुणानिधान हैं (८) दोहार्थ ॥ जो यह सम्बन्ध न होइ तौ हमको इनके दर्शन दूरिहैं श्रीजानकी जी अरु इनकेबिवाहको जो संघट्टहोइ तौ जानिये कि हमारो सुकृत पुण्य अमितहै (१) ॥

पुनि कह्योसखिनीका। यहबिवाहअतिहितसबहीका १
कोउकहशंकरचापकठोरा। येश्यामलमृदुगातकिशोरा २
सबअसमंजसअहैसयानी। यहसुनिअपरकहैमृदुबानी ३
सखिइनकहँकोउकोउअसकहहीं। बड़प्रभावदेखतलघुअहहीं ४
परसिजासुपदपंकजधूरी। तरीअहल्याकृतअघभूरी ५
सोकिरहैबिनुशिवधनुतोरे। यहप्रतीतिपरिहरियननभोरे ६
जेहिबिरंचिरचिसीयसवाँरी। तेहिश्यामलबररच्योबिचारी ७
तासुवचनसुनिसबहरषानी। ऐसेयइहोउकहइँमृदुबानी ८
दो० हियहरषहिंवरषहिं सुमन सुमुखिसुलोचनिवृन्द ॥
जहँ जहँ जाहिँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानन्द १

२२२ अपरसखी बोली हे सखी तू अतिनीक कहैहै यह बिवाह जब होइ तब अतिशय हितकार सबकोहै (१) पुनि कोई सखी हृदयते प्रेमबिषे गद्गदह्वै कै बोली

कि विधाता अरु शंकर अरु जनक इनकाहू में विवेक नहीं है कहां धनुष अतिकठोर अरु कहां ये सुन्दर किशोर अति कोमल इनको धनुषके तोरिवेको प्रण न चाही ताते जाको धनुष अरु जिन प्रणकीन्ह अरु जो यह बिधाताने लिखा सो तीनों अविवेकीहैं (२) हे सखी हे सयानि सब असमंजसै देखिपरतहै हमारो कीन्ह कछु नहीं होतहै यह सुनिकै अपरसखी मृदुबाणी ते बोली (३) हे सखी तुम सब बिह्वल न होहुइनको कोई कोई असकहते हैं कि देखतकै बालकहैं पर तेजप्रताप बड़ो है (४) ऐसे तेज स्वीहैं जिनके पदपंकजके स्पर्शते अहल्या जो अघकी भूरिरही सो कृतार्थ भई (५) हे सखि जिनके चरणकी रजबिषे इतनो प्रतापहै ते शिवको धनुषतोरे बिना न रहैंगे न तु विशेष तोरहिंगे हे सखी यह प्रतीति भूलिहू न त्यागकरो ताते बिक्षेप बिश्वास न करहु (६) हे सखी यह तौ बिचारकरहु ज्यहिंबिरञ्चिने श्रीजानकी जी को रच्योहै त्यहीने श्यामल बरभी बिचारिकै रच्योहै हे पार्वती इहां सखी ऐश्वर्य माधुर्यबिषे कहैहैं (७) तेहिसखी के बचन सुनिकै सबहर्षको प्राप्तह्वैकै मृदुबाणीते आशीर्बाद देतीहैं कि तेरेबचन परमेश्वर सत्यकरैंहैं (८) दोहार्थ ॥ ऐसेबचन परस्पर सुमुखीसुलोचनी कहतीहैं हृदयबिषे हर्षतीहैं फलबर्षातीहैं यही प्रकारते जहां जहां दूनों बन्धु जाते हैं तहां तहां संपूर्ण नगरमें ऐसेही परमानन्द होतहै इहां सखिनके बचनबिषे अनेकन अभिप्रायसंयुक्त रसहैं मैंने अपनी मति अनुसार कहेहैं (९) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकांडेपरस्परनुनन्दनाबिषयिकंसखीनांदश्वारसबाक्यबिलासवर्णनंनामचत्वारिंशतितरंगः ४० ॥

दो० चालिसएक तरंगबर रामचरण सुख धाम ॥
धनुष भूमिदर्शन गये सुमन बाटिका राम ४१

। जहांधनुषमखभूमिबनाई * १
अतिबिस्तारचारुगचढारी । बिमलबेदिकारुचिरसँवारी २
चहुँदिशिकंचनमंचबिशाला । रचेजहांबैठहिंमहिपाला ३
तेहिपाछेसमीपचहुंपासा । अपरमंचमंडलीबिलासा ४
कछुकऊँचसबभांतिसोहाई । बैठहिंनगरलोगजहँजाई * ५
तिनकेनिकटबिशालसोहाये । धवलधामबहुबरणबनाये ६
जहँबैठीदेखहिंसबनारी । यथायोग्यनिजकुलअनुहारी ७
पुरबालककहिकहिमृदुबचना । सादरप्रभुहिंदेखावहिंरचना ८
दो० सब शिशु यहि मिस प्रेमबश परसिमनोहरगात ॥
तनु पुलकित अति हर्षहिय देखि मनोहर गात १

२२३ हे भरद्वाज पुरके पूर्वदिशि जहां धनुष यज्ञकी भूमि बनीहै तहां को दूनों भाई जातभये (१) अति बिस्तारहै चारु अति सुंदरहै कंचन मणिनकरिकै गचसुढारि

रहीहै तेहिके मध्यमें परमदिव्य वेदिका बनीहै (२) पुनि चहुंफेर कंचन मणिनमय मंचान बहुबिशाल बनेहैं जहां संपूर्ण देशदेशनके महिपाल बैठहिं सो प्रथम आवरणहै (३) तेहिके समीपही उनते कछुक ऊंच जापर राजाजनककी सजातीय मण्डली बैठहिंसो द्वितीय आवरणके मंचहैं (४) अरु द्वितीय आवरणके पाछे तेहिते कछुकऊंच तृतीय आबरणके मंचानबने हैं जहां समग्रीनगरके लोगबैठहिं (५) तृतीय आवरणके पाछे चतुर्थ आवरणहै वाते कछुक ऊंच स्फटिक मणिनमय चहुंफेर अनेकनधाम अति सुन्दर बनेहैं (६) जहां बैठिकै नगरकी संपूर्णस्त्री देखहिं यथायोग्य निजकुलके अनुहारि बैठहिं (७) अरु रघुनाथजी के संग पुरके बालकहैं ते अपनी अपनी रुचिते अति मधुर बाणीते कहिकहि श्रीरघुनाथजी को अतिप्रीतिते रचना देखावतेहैं (८) दोहार्थ॥ संपूर्ण जेशिशुहैं ते देखावनेके मिसुते मनोहरगात स्पर्श करतेहैं तनमें पुलकतेहैं हृदय में अति हर्षतेहैं दोऊ भाइनकै शोभा अंगअंग निरखते हैं अरु विशाल भुजधरिकै अपनीअपनी रुचिते लैजातेहैं रचना देखावतेहैं अरु रघुनाथजीने बालकनके प्रेम बश ह्वैकै जितने बालक हैं तितनेही स्वरूप धारण कीन्ह एक २ बालक जानत हैं कि हमारेही संग रघुनाथजी हैं ताते बालकनके परमानन्द होत है (१)

।तनिकेतबखाने * १
निजनिजरुचिसबलेहिंबोलाई। सहितसनेहजाहिंदोउभाई २
रामदेखावहिंअनुजहिरचना। कहिंप्रियमधुरमनोहरबचना ३
लवनिमेषमहँभुवननिकाया। रचैजासुअनुशासनमाया * ४
भक्तिहेतुसोइदीनदयाला। चितवतचकितधनुषमखशाला ५
कौतुकदेखिचलेगुरुपाहीं। जानिबिलंबत्रासमनमाहीं * ६
जासुत्रासडरकहँडरहोई *। भजनप्रभावदेखावतसोई * ७
कहिबातैंमृदुमधुरसुहाई *। कियेबिदाबालकबरिआई *८
[illegible]

सब शिशुन को रघुनाथजी प्रेम बश जानिकै पृथक् पृथक् बालकन ते मन्दिरन की शोभा बारम्बार बखानते हैं (१) पुनि निज निज रुचिसे सब बुलाइ लेते हैं स्नेह समेत दोऊ भाई जाते हैं (२) तहां श्रीरामचंद्र मधुर मनोहर बचन ते कहते हैं कि हे श्रीलक्ष्मणजू देखौ तौ अद्भुत रचना बनि रही है (३) हे पार्बती जिन श्रीरामचंद्रके एक निमेष के लव मात्रमें माया अनेकन ब्रह्मांडनको रचै है जिनकी आज्ञानुकूल (४) सो दीनदयालु श्रीरामचंद्र अपनी भक्तबात्सल्यता ते चकित ह्वैकै धनुषयज्ञकी रचना देखते अरु देखावते हैं बालकन को आनन्द देते हैं काहेते यह रचना माया ते भिन्न है (५) यह परमदिव्य कौतुक देखिकै बिलम्ब जानिकै वेद मर्य्यादसे त्रासमानि

के गुरुके समीप चले (६) हे गरुड़जी देखिये तो जिन श्रीरामचंद्र के त्रासते कालहूको त्रास होत है ते प्रभु विश्वामित्र की चाल मानते हैं कि संसारी देव दानव मनुष्य मेरे वशहैं अरु जे मेरो भजन करते हैं तिनके मैं वशहौं (७) तब मृदु मधुर शोभायमान् बचन कहिकै बालकन को बरिआई विदा कीन्ह (८) दोहार्थ ॥ जनकपुर की रचना देखिकै बहुत आनन्दित हैं सो भय करिके गुरुन विषे अति प्रेम अरु विनीत कही अधीन अति संकोचत दोऊ भाई गुरुनके चरणारविंद गहत भये आयसु पायकै बैठे प्रेम यह जानिकै कि गुरुन बड़ी कृपा कीन जो जनकपुर हमको देखायो दीन बचन अरु संकोच कछु बिलम्ब मानिकै (१) ॥

२२५ निशिप्रवेशमुनिआयसुदीन्हा । सबहीसंध्याबंदनकीन्हा १
कहतकथाइतिहासपुरानी । रुचिररजनीयुगयामसिरानी *२
मुनिवरशयनकीन्हतबजाई * । लगेचरणचापनदोउभाई * ३
जिनकेचरणसरोरुहलागी । करतविविधजपयोगबिरागी ४
तेदोउबन्धुप्रेमजनुजीते * * । गुरुपदपद्मपलोटतप्रीते * * ५
बारबारमुनिआज्ञादीन्हा । रघुबरजाइशयनतबकीन्हा * ६
लाये * । सभयसप्रेमपरमसचुपाये * ७
ताता * । पौढ़िअधरिउरपदजलजाता * ८
दो० उठेलषणनिशिविगतसुनि अरुणशिखाधुनिकान ।
गुरुते पहिले जगतपति जागे राम सुजान १

२२५ तब निशिको प्रवेश जानिकै मुनि आयसु दीन सब बिधिते सबहिन संध्या बंदन कीन्ह (१) संध्या बंदन करिकै विश्वामित्र पुराण पुरुषकी कथा कहने लगे सब मुनीश्वरन सहित रघुनाथजी सुनते हैं ऐसेही सुख पूर्वक दुइ याम रात्री व्यतीत भई (२) तब विश्वामित्रजी शयन करतेभये दोऊभाई चरण चापने लगे (३) हे भरद्वाज जिन श्रीरामचन्द्रके चरण कमलनके निमित्त योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिक अनेक क्लेश करिकै जेहिचरण विषे प्रीति चाहतेहैं सो अनेकन जन्ममें सिद्धि होतीहै (भगवद्गीतायांश्लोकार्द्ध । अनेकजन्मसंसिद्धिस्ततोयातिपरांगतिं ॥ (४) ते दोऊ बन्धु प्रेमलक्षणा भक्ति करिकै जीतेगयेहैं देखिये तो मुनीशको गुरुकरिकै प्रीति समेत चरण पलोटतेहैं विश्वामित्र तौ जानतेहैं कि परमेश्वरस्वामी हैं अरु अपने चरणनकी सेवा क्योंकरावतेहैं तहां जे आत्मसमर्पण शरणागत लीनहैं ते यह जानतेहैं कि जाही में स्वामी प्रसन्नहोहिं सोई करना शीश कर पद धन धर्म कर्म सबस्वामीकोहै चाहे सो करै (५) तब बारम्बार मुनीश आज्ञादेतेहैं बारम्बार कहेते दोऊ जननकी प्रीति अति सूचित होतीहै तब रघुबरने जाइकै शयनकीन्ह (६) तब रघुनाथजीके चरणारविंदकी सेवा लक्ष्मणजी करतेहैं हृदयमें लगायकै भयसंयुक्त कहेकही करैरे हाथ न लगैं सेवकाई को यहीधर्महै ताते प्रेमसमेत चरण कमल सेवतसन्ते परमानन्दको प्राप्तहैं (७) न्हि

पुनि प्रभुकहते हैं हे तात सोवहुजाइ तब लक्ष्मणजूने प्रभुकी आज्ञा मानिकै कमल पद हृदयमें धरिकै आराम कीन्ह (८) दोहार्थ ॥ हे पार्वति निशिबीती अरु शिखा मुरगा बोले तिनकी धुनि सुनिकै लक्ष्मणजू उठे पुनि जगत्केपति रघुनाथजी गुरुनते प्रथमहीजागे काहेते सुजान हैं गुरुनते प्रथमही जागना मर्य्यादहै (१) ॥

२२६सकलशौचकरि

समयजानिगुरुआयसुपाई * । लेनप्रसूनचलेदोउभाई ** २

* * । जहँबसन्तऋतुरहीलुभाई * ३

लागेबिटपमनोहरनाना * । बरणबरणबरबेलिबिताना * ४

नवपल्लवफलसुमनसुहाए * । निजसम्पतिसुररूखलजाए ५

चातककोकिलकीरचकोरा । कूजतबिहँगनचतकलमोरा ६

हावा * । ७

बहुरंगा । जलखगकूजतगुंजतभृङ्गा * ८

२२६ प्रात:क्रिया सबकरिकै स्नानकीन्ह नित्यनेमकरिकै गुरुन को प्रणाम कीन्ह जाइ (१) तब सुन्दर समय जानिकै कुवारशुदी चतुर्दशी दुइदण्ड दिनचढ़े गुरुन आज्ञादीन्ह तब दोऊभाई फुलवाईमें फूललेबेको चले कौन समय जानिकै गुरुन आज्ञा दीन्ह कि माताकी प्रेरणाते गौरीपूजन हेतु जानकीजू फुलवारीको जाहिंगी ताते यहबिचारिकै मुनि रघुनाथजीको फुलवाईमें प्रथमहिं पठावतभये कि रघुनाथजी को जानकीजू देखहिंगी अरुरघुनाथजू जानकीजूको देखहिंगे शोभादेखिकै जानकीजू की प्राप्तिहेतु धनुषको तृणइवजानहिंगे अरुरघुनाथजीकी शोभादेखिकै रघुनाथजीकीप्राप्तिहेतु जानकीजू अति आरतिहोहिंगी तब रघुनाथजी जानकीजीकी आरततानहीं सहिसकेंगे तब धनुषको तोरहिंगे ताते यह समय जानिकै आज्ञा दीन्ह है (२) तहां रघुनाथजी जायकै राजाकोबाग वर श्रेष्ठ देखते भये जेहि बागको देखिकै बसन्तऋतु लोभि रही है हे भरद्वाज जहां शोभा बर्णिबे में आवति है तहां यह कहतेहैं कि यहि बन बाटिका में सदा बसंत ह्वै रह्योहै अरु जेहिबाटिका बिषे बसंतै मोहितहै तेहिकी शोभा कोकहै (३) तहां अनेक जाति के बिटप मनोहर लागे हैं चत्राकार अति ललित तिन पर बेली चढ़ि रही हैं ते बितान इव शोभित हैं [४] तेतरु कैसे हैं सदा नवीन पल्लवित कि छहूं ऋतुमें एकरस तिन पल्लवन की शोभा निर्म्मलता सचिक्कणता लालित्य सुन्दरताई इत्यादिक अनेकन छबि सहितहै आवर्ण रहित जैसे बनाई नील मणि कछु अरुणता युक्तहोइ अरु तैसेई फल पृथक्पृथक् पांचहूं रंगनकी मणिनील हरित अरुणश्वेत पीत अरुअपरको कछु रंगमिलित मणि तद्वत्फलहै प्रकाश शोभाकी मति रसमें तद्रूप इहांपूर्णोपमा लंकार

जानव इहां उत्प्रेक्षा लंकार कहत हैं पुनि पुष्पकैसेहैं जनु बृहस्पति शुक्र मङ्गल अगस्त्य शनैश्चर इत्यादिक नक्षत्र सर्व ग्रह अनेकन रूप धरि धरि श्री जनकजू को बगीचा देखिवेको आये मदन के कहिते देखिकै मोहिकै बसि रहे अपने अपने एक एक अंश अंश आकाश को पठै दिये आपु अचल ह्वै बैठे तहां प्रकाश प्रकाशै परमार्थ कोमलता यशमाल सुगन्ध गुण रस ऐसे फूल हैं पहिल पद चौपाई के अन्त में जो सुहाय पद है ताते पण फल फलन की उपमा दीन्ह है सो जानब अरु जिनके पर्ण फूल फल ऐसे हैं ते तरु कैसे हैं अपनी सम्पति करिकै सुर रूखकी सम्पति को लज्जित करते हैं काहे ते कल्प तरु अर्थ धर्म्म काम तीनिही फलको दाताहै अरु जनक जीकी फुलवारी चारिहू फलनकी दाता है काहेते जनक इव ज्ञान मय जनक पुर सर्व है तृण तरु मृग बिहंग इत्यादिक हैं ताते पुरीभरि मोक्ष दाता है तहां राजा की फुलवारी के तरु तृण खग मृग इत्यादिक श्री जानकी जीके हाथसे स्पर्शित हैं ताते अर्थ धर्म काम मुक्ति भुक्ति सबके दाता हैं फुलवारी में सर्व तरु कल्प वृक्ष को लज्जित करते हैं अरु दूसर पद विषे कह्यो सुर रूख लजाय तहां फुलवारी के बृक्षन की शोभा देखिकै रस मयी कल्प वृक्षकी शोभा रूखी रस रहित सब कविन की दृष्टि परी है ताते रूख कह्यो (५) तेहि फुलवारी विषे विहङ्ग शोभित हैं चातक कोकिल मोर चकोर कीर इत्यादिक अनेकन विहङ्ग उत्तमोत्तम हैं ते शुक शारिका कोकिल भृङ्ग बिहङ्ग राग रागिनी स्वर संयुक्त मनोहर बाणी ते जनु गान करते हैं अरु मयूर नृत्य करते हैं अरु चातक चकोर श्यामा कोयल राय मुनियां पारावत येतेबिहंग जनु तालसंयुक्त बाजा बजावते हैं तमूरा सितार बीणा सारंगी मंजीर मृदंग इत्यादिक क्रमहीते जानब जनु बसंत अपनी कैयो अति सुन्दर समाज साजिकै श्रीरघुनाथजीको रिझावतहैं (६) बाटिकाकी मर्याद योजन पर्य्यन्त है मणिनमय भीति है कलश संयुक्त कंगूरा जनु अनेक रूपधरे नवग्रह उदितहैं तेहिबाग के मध्यमें सुन्दर सरहैं चहूंफेर मणिनमय सोपान विचित्र बनेहैं (७) अति निर्मल जाको जलहै बहुरंग के कमलफूलेहैं तिनपर भृङ्ग गुंजारतेहैं अरु हंस मधुर मधुर बोलते हैं ऐसेही सुभग अपर बिहंग बोलतेहैं जनु रघुनाथजीको बुलावते हैं (८) दोहार्थ ॥ बगीचाके चहुंफेर रंगरंगके फूलनकी अवली लगीहैं जनु मदन ने सूत्रधरिकै निजहाथ बनायो है ऐसो बागहै तेहिके मध्यमें तड़ाग तिनकी शोभा देखिके श्रीरघुनाथजी बंधुसमेत हर्षे हे पार्वती रम्यकही यह बाटिका परम रमणीक है आरामकही बाग काहेते सर्वजीवनको श्रीराम चन्द्रसुखदेते हैं अरु यह बाटिका श्रीरामचन्द्रको सुखदेतिहै ताते अनूपरम्यहै १ इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डेधनुषयज्ञदर्शनबाटिकागमनवर्णनं नामएकचत्वारिंशतिस्तरंगः ४१ ॥

दोहा रामलषण बरबाटिका चालिसयुग्म तरंग ॥
रामचरन लहि जानकी दरशअनन्द उमंग ४२

२२७ चहुंदिशिचितैपूंछिमालीगन । लगेलेनदलफूलमुदितमन १
तातहँआई ॥ । गिरिजापूजनजननिपठाई २

। गावहिं

सरसमीपगिरिजागृहसोहा॥ । बरनिनजाइदेखिमनमोहा ॥ ४

मज्जनकरिसरसखिनसमेता। गईमुदितमनगौरिनिकेता ॥ ५

।

एकसखीसियसंगबिहाई ॥ । गईरहीदेखनफुलवाई ॥ ॥ ७

कथउजाई ॥ । प्रेमबिबससीतापहँआई ॥ ॥ ८

देखी सखिन पुलकगात जलनयन ॥

कहुकारण निजहर्षकर बूझहिं सब मृदुबयन १

२२७ बगीचाकी चारिहूं दिशि देखिबे को दोऊ भाई चलेहैं तबकी कैसी शोभा है जनु मदन अरु बसन्त अपने हाथन से बगीचाकी रचना करिकै अपनी सुघराई देखत फिरते अरु रक्षा करते हैं पुनि दोऊ भाइनकी छटा तरुन में फल फूल पत्रनमें झल-झलाइ रही है जनु मदन अरु बसन्त श्री रघुनाथ जी अरु श्री लक्ष्मण जी तिनके देखिबे अरु जीतिबे को अनेक नरूप धरिकै आयेहैं देखिकै तृप्त नहीं होते चाहतहैं कि सम्पूर्ण शोभाकी राशि हमहीं लूट लेहिं ताते चंचल ह्वैकै देखत हैं अरु कोई अंगमें जीतिबेकी सन्धि नहीं पावैं ताते चंचल ह्वैकै निहारत हैं ऐसो शोभा बगीचाकी ह्वै रही है आश्चर्यवत् चहुं दिशि बगीचा देखिकै मालिनके गण जेहैं ते कैसे हैं जनु विश्वकर्मा अनेक रूप धरिकै अपनी सुघराई के फलहेतु टिकाहैं तिन मालिनते रघुनाथजी पूछते भये कि हम गुरुनकी पूजा हेतु फूललेहिं जो तुम कहौ नतु न लेहिं तब रघुनाथजीकी शोभा देखिकै बचन सुनिकै मालीगण अति प्रेमते धाये अति आतुर कोई फूलफल लिहे अरु कोई खालीही आये प्रेममें सँभार नहीं है आइकै रघुनाथजी को चहुं दिशिते देखते हैं अरु हे लाल फूल फल दल इत्यादिक की जो आज्ञा होइ तौ हम आनि देहिं तब रघुनाथ जीने कहा कि गुरुन के हेतु हमहीं लेहिंगे उन कह्यो हे लाल आपुकी इच्छा तब लगे लेन दलफल मुदित मन तब मुदित मनते दलफूल इत्यादिक लेनेलगे मालीगण चन्द चकोर इव देखते हैं (१) यही विधिसे बाटिका में दोऊभाई विहरते हैं तेही अवसर विषे सुनयना जीने गौरी पूजन हेतु सखिन समेत जानकीजी को फुलवारी विषे पठायो है (२) संगविषे बहु सखी हैं सुभग कही अति सुंदरीआदि मध्य अन्त किशोरी सदा एक रस सदा सुहाग षोड़शो शृङ्गार बारहों आभूषण जहां स्वा-भाविक सदा बनाहै परम दिव्य एक रस ताको सुभग अरु सयानोकही जिनकी चातुर्यता के आगे सरस्वती मन्द हैं पुनि अपनी अपनी चातुर्यताते श्री जानकी जीको सेवाकरती हैं प्रौढ़ा मध्या मुग्धा दशाते एक आज्ञा नुकूल सेवा एक अपनी रुचिसे सेवा अरु एक स्वामिनी के अन्तष्करण से आनन्द पूर्वक सेवा तिनमें अनेक भेद सेवाके हैं ऐसी सयानी सखी विषे जेहैं सदातेई सखी मनोहर बाणीते गीत गावती हैं जेहि गान में श्रनके मन मोहित होत हैं जनु सम्पूर्ण रागिनी अरु उप रागिनी मनोहर रूप

धरिकै श्री जानकी जीकी सेवा में आई अरु गान करती हैं ऐसेही महाआनन्द गान होत बाटिका के विषे प्राप्ति भई (३) पुनि मध्य बाग में सागर ताके निकट पश्चिम तटपर गिरिजा को गृह है वह कनक मणिनमय रचित अनूपम शोभित है बर्णिबे योग्य नहीं है देखिकै कवीश्वरन के मन मोहि जाते हैं फिरि को कहै जनु बसन्त ने अपनी नाभि पर्यंत पदिक भूषण पहिरेउ है (४) तेहि अवसर विषे सखिन समेत जानकी जी स्नान करती हैं परस्पर जल क्रीड़ा करती हैं फूलनके गेंद खेलती हैं कोई हंस धरिलेती हैं कोई मीन धरि लेती हैं चुम्बन करती हैं पुनि उड़ाइ छोड़ि देती हैं ऐसेही अनेक कल्लोल करिकै निकसिकै षोड़शो श्रृङ्गार बारहो भूषण करती हैं पुनि मणिनके आभूषणन के बीच बीच फूलन के आभूषण अष्टसखी श्री जानकी जीके करती भई तैसेही श्रृङ्गार सब सखिन के जनब सर्वांग श्रृङ्गार करिकै षोड़शो प्रकार पूजनकी विधिलैकै आनन्द पूर्वक श्री जानकी जीसखिन समेत गौरिके मन्दिर विषे प्रवेश करती भई (५) तहां अति अनुरागते गौरी की पूजा कीन्ह अनुरूप सुभग बर मांगती भई निज अनुरूप कही जो अपनेको रुचै किन्तु निज अवस्था अनुरूप वरमांगो (६) तहां जब श्री जानकीजी ने फुलवारी में प्रवेश कीन्हहै तबहीं एकसखी सयानिन विषे समाज बिहायकै फुलवारी देखिबे को गई रहै किन्तु पार्वती सखी को रूपधरिकै श्रीराम जानकी को संयोग श्रृङ्गार को दूतपन करतीहैं (७) सोई सखी दोउ बन्धुन को फूललेत सन्ते विलोकत भई शोभा देखि कै विवर्ण भावको प्राप्त भई अञ्चल केश मोतिन के हार शरीर पर बिथरि रहे हैं प्रेमकी बिह्वलताते अश्रुपात कज्जलयुत चुइ रहेहैं जनु चन्द्रमा अरु मदनसे युद्ध भयो है बाणनकी चोटते यह हाल ह्वै रहो है मगविषे पग डगमगात विह्वल दशाते जानकी जीके समीप को आवत भई (८) दोहार्थ ॥ ताकी दशा सखी देखती भई गात गात पुल कितहैं हार पीठि पर परेहैं केश मुख अरु कपोलन पर परे हैं अञ्चल कन्ध पर परेहैं अलङ्कार जहां के तहां ह्वैरहेहैं उश्वास लेती है देहकी सुधि भूलि गईहै ऐसेही देखिकै बिहँसि कै मृदुबैनते सखी पूछती हैं हेप्रवीण सखीधीर्य धरिकै अपने हर्षकी ब्यवस्था कहहु यह कहा भयो है कोई तेरी दृष्टि में परेउ है किन्तु किसीकी दृष्टि लगी है किन्तु तोरे ऊपर कोईने बशी करण मंत्र डारेउ है किन्तु मदनके समाज के भँवर में परि गयसि सो कहु (९) ॥

देखनबागकुअँरदुइआये । बयकिशोरसबभांतिसुहाये ॥ १
स्याम गौरकिमिकहौंबखानी । गिराअनयननयनबिनुबानी २
सुनिहरषींसबसखीसयानी । सियहियअतिउतकराठाजानी ३
एककहइंनृपसुततेआली । सुनेजेमुनिसँगआयेकाली ॥ ४
जिननिजरूपमोहिनीडारी ॥ कीन्हेस्ववशनगरनरनारी ॥ ५
बरणतछबिजहंतहंसबलोगू । अवशिदेखियेदेखनयोगू ॥ ६
तासुबचनअतिसियहिसोहाने । दरशलागिलोचनअकुलाने ७

चली अग्रकरि प्रियसखि सोई । प्रीति पुरातन लखै न कोई ॥

दो० सुमिरि सिया नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत ॥

कलदिशि जनु १

२२८ तब धीर्य्य धरिकै गद गद बाणी से बोलती भई हे सखि दुइ राजकुवँर बाग देखिबे को आये हैं वे किशोर अवस्था में प्राप्त अरु सब भांति ते सुन्दर हैं (१) श्याम गौर हैं तिनकी शोभा बखानिकै किमि कहौं काहेते जेहिरसना ते बखानि कै कहौं सो तौ अनेत्री है अरु नेत्र जे देखते हैं ते बचनरहित हैं तहांदेखै और कहै यथार्थ है ऐसे ते देखत बनै कहि नहीं जाइ जिनको देखिकै मेरी दशा ऐसी भई है ऐसे वे कुमार हैं (२) यह सुनिकै सखी हर्षी कोई सखी वहि सखी के अलंकार सुधारती भई अरु प्रवीण सखी श्री जानकीजी के हृदय बिषे उत्कण्ठा जानती भई उत्कण्ठा कही ज्यहिको सुनिकै देषिबे अरु मिलिबेकी आरति अति आतुर होई (३) एकप्रौढ़ा नायका कहती है हेसखिहु जो तुम सब मिलि काल्हि सुन्योहै कि मुनिकेसंग दुइ राजकुमार आये हैं (४) कैसे हैं वे जिन अपने रूपकी मोहनी यंत्र डारिकै सम्पूर्ण नगर के बाल युवा बृद्ध इत्यादिकन को बशीभूत करिलियो है (५) जिनकी छबि जहां तहां सब लोग वर्णते हैं परस्पर पुरी भरे में यही चरचा ह्वै रही है ताते हे सखिहु अवश्य देखिये देखन योग्यहैं (६) त्यहि सखी के बचन श्रीजानकीजीको बहुत सोहाने दर्शनके निमित्त लोचन अति ललचाइ रहे हैं तहां यह प्रौढ़ा सखी को बचन है प्रौढ़ा में तीनि भेद हैं एक तौ स्वामिनी के अन्तष्करणकी रुचि जो सेर भरेकी होइ तो मनके कार्य सुख उत्पन्न युक्तसों करनेवाली है अरु एक स्वामिनीको प्रसिद्ध शिक्षा करै है अरु एकै स्वामिनी की आज्ञानुकूल के कार्य करती हैं यही रीति से स्वामिनी के कार्यमें मध्या मुग्धा बिषे तीनि भेद जानि लेव तहां रघुनाथजी के देखिबेको श्रीजानकी जी के नेत्र सखिन संयुक्त अति आरति हैं (७) तब जो सखी रघुनाथ जी को देखिआईहै ताहीको अग्र करिकै जानकी जी सखिन सहित चलती भई तहां पुरातनि प्रीति जानकी जू की रघुनाथ जी बिषे काहूके लखिबे योग्य नहीं है पुरातनि प्रीति कौनि है नित्य संयोग शृंगार तामें आई है ताते पुरातनि प्रीति कहा पुनि जब दोऊ कुमार जनकपुर गयेहैं तब श्रीजानकी जी ने नहीं देख्यो अब देखिबेको समय प्राप्त भयोहै तातेपुरातनिकहा जो सखी अग्र चली है सो जनु श्रीजानकीजी के बियोग शृंगारकी मूर्त्ति है श्रीरघुनाथ जी बिषे संयोग शृंगार करिबेको चली है (८) दोहार्थ ॥ श्रीजानकीजी से बालही अवस्था में नारदजी कहि गये रहैं कि फुलवारी में रघुनाथजीका दर्शन होइगो पुनिधनुष तोरेपर संयोग होइगो यह नारदका पूर्व कथित बचन स्मरण करिकै जब अति पुनीत प्रीति उपजती भई तब चकित ह्वैकै रघुनाथ जीको सकलदिशि बिलोकती हैं कैसी आतुरता देखिबेकी है जैसे मृगीके शावक को अपने समाज ते बिच्छेप परिगयो है अति चंचल नयन फेरत है सबै दिशि सभीत ह्वैकै अपनी समाज हेरतहै तैसे जानकीजी हैं इहांबियोग शृंगारको संयोगके योगमें संचारी भाव होत है १ ॥

२२९ कंकणकिंकिणिनूपुरधुनिसुनि। कहतलषणसनरामहृदयगुनि १
मानहुमदनदुंदुभीदीन्ही * । मनसाबिश्वबिजयकहँकीन्ही २
असकहिफिरिचितयेतेहिओरा। सियमुखशशिभेनयनचकोरा ३
भयेबिलोचनचारुअचंचल। मनहुँसकुचिनिमितजेउदृगंचल ४
देखिसीयशोभासुखपावा। हृदयसराहतबचननआवा * ५
जनुबिरंचिसबनिजनिपुणाई। बिरचिबिश्वकहँप्रगटदेखाई ६
सुन्दरताकहँसुन्दरकरई * * । छबिगृहदीपशिखाजनुबरई ७
सबउपमाकबिरहेजुठारी * । केहिपटतरियबिदेहकुमारी * ८
दो० सियशोभा हिय बरणिप्रभु आपन दशा बिचारि ॥
बोले शुचिमन सन बचन समय अनुहारि १

२२९ श्रीजानकी जी सखिन सहित हंस गमन चली जाती हैं अतिमधुर गान ताल बंधान समेत कंकण तालदेत संते किंतु कंकणको रव स्वाभाविक अरु किंकिणी नूपुरको रव गमन बिषे एक ताल होतहै तिनको अरु गानको मधुर शब्दशृंगार रसको परम उद्दीपन करत है सो रस मय धुनि सुनिकै श्रीरामचन्द्र ने लक्ष्मणजू से बिचारिकै बिहंसिकै कह्यो (१) हे तात मानहुं मदन अपनी सेना साजिकै नगाराबजाय कै बिश्वको बिजय हेतु चल्यो यहि अर्थमें यह अभिप्रायहै कि हे तात काम दुन्दुभीबजाइकैजनु मेरे जीतिबे को चल्योहै (२) इतनकहिकै जेहिओर गानधुनि होतिहै तेहिओर चितये तहां श्री जानकीजीको मुखपूर्णचन्द्र निर्मलसदा एकरस रूप शोभा प्रसन्नता छबि क्रमते उज्ज्वलताप्रकाश शीतलता अमृतमय ऐसो चन्द्रमय मुखदेखिकै श्रीरामचन्द्र के नेत्र चकोर भयेहैं (३) श्रीरघुनाथजी के चारु कहो अतिसुन्दर नेत्र जानकीजी के मुख की शोभा देखिकै चंचल रहेहैं पलक नहीं चलती चकोरवत् दशा रहीहै जनु राजानिमि अपनेबंशमें जानकीजीको जानिकै अरु रघुनाथजी को जानकी जीके मुखको अवलोकन देखिकै सकुचिकै पलकनपर जो बासरह्यो सो छोड़िगये (४) हे पार्वति श्रीजानकीजीकी शोभा रघुनाथजी देखिकै अतिसुख पावते भये हृदयमें शोभा सराहतेहैं बचनमें नहीं कहि आवत वह शोभा और को कविकहै (५) श्रीरामचन्द्र अपने हृदयमें सराहतेहैं कि जनु बिरंचिने अपनी सब निपुणाई कहो सुघरईकी एकमूर्ति बनाइकै सारेबिश्वको देखाइदियो है कि हम ऐसे सुघरहैं (६) तहां श्री जानकी जीकी शोभासुन्दरता जो है ताहूको सुन्दरकरै है जनु छबिको शीशमहलहै ताके मध्यमें दीपकी शिखा बरै है जगमगाइ रह्योहै तहां सबसखी छबिकी भवनहैं श्रीजानकीजी मध्यमें दीपकी शिखाहैं (७) जेती उपमा वेदन अरु शास्त्रनमें कहीहै सो कविन जुठारि कही सब कह्यो है जब श्री जानकी जीकी उपमा नहीं पाई तब जुठारि डारेउ काहेते जेती उपमा हैं सो देहधारिनमें होतीहैं अरु ये विदेह कुमारी हैं ताते उपमा रहितहैं अब कहिकी

पटतर दीजिये इनकी समान येई हैं [८] दोहार्थ ॥ हे तात श्रीजानकीजी की शोभा श्री रघुनाथजीने अपने हृदयमें अत्यन्तिरह अनूप वर्णनकीन्ह पुनि अपनी दशाका बि-चारकीन्ह कि हम रघुवंशी सत्यसन्ध सत्यहीको सदा बिचारो तहां यह का भयो तहां अपनी दशाको विपर्यय मानिके पुलिकजी पवित्रतासे अनुजसो लक्ष्मणजी तिनसे प्रभु समयकी अनुसारि बोलतेभये यहिसमयमें श्रीजानकी जीकी शोभा देखि कै कैसी दशाभई है सोअनुजसे कहतेहैं अब कोई दोहा का यह अर्थ कहतेहैं कि आपनि दशा सो रघुवंश कुलकी दशा रघुनाथजी को जानकीजी को देखिकै बिसरिगई १ ॥

तातजनकतनयायहसोई। धनुषयज्ञजेहिकारनहोई १
पूजनगौरिसखीलैआईं ॥ करतप्रकाशफिरतिफुलवाईं
जासुबिलोकिअलौकिकशोभा। सहजपुनीतमोरमनछोभा
सोसबकारणजानबिधाता। फरकहिंसुभगअंगसुनुभ्राता
रघुबंशिनकरसहजसुभाऊ । मनकुपंथपगधरहिनकाऊ
मोहिंअतिशयप्रतीतिमनकेरी। जेहिंसपनेहुपरनारिन
जिनकेलहैंनरिपुरणपीठी । नहिंलावहिंपरतियमन
मंगनलहैंनजिनकेनाहीं ॥ तेनरबरथोरेजगमाहीं ॥ ॥

दो० करतबतकही अनुजसन मन सिय रूप लोभान ॥
मुखसरोज मकरंद छबि करत मधुप इव पान २

२३० रघुनाथ जी बोले हे तात यही जनक जूकी तनया है जेहि के निमित्त धनुष यज्ञ होतो है राजा जनक यह प्रण कीन्हहै कि जो धनुष को तोरै तासों बिवाह करैं [१] वह जनक तनया सखिन संयुत पार्वती जी के पूजन को आईहै पूजा करिकै फुलवारी देखत फिरती है प्रकाश कही फुलवारी को शोभित करती है [२] जासुकही जिन जानकी जी की शोभा अलौकिक देखिकै अलौकिक कही ब्रह्माकी सृष्टिके लोकन बिषे ऐसी शोभा नहीं है जो शोभा देखि कै मोर मन अति पुनीत सो क्षोभ कही लोभि गयो है ताते संदेह है [३] सो सब कारण बिधाता जानै पर हे तात हमारे सुभग कही दक्षिण अंग फरकते हैं श्रीरघुनाथजी के बचन में यह अभिप्राय है कि श्री जानकी जी हमहीं को मिलैंगी [४] काहे ते कि रघुबंशिनको यह सहज स्वभाव है कि कुमार्ग बिषे भूलिहू कै मन पग नहीं धरैं काऊ कहे कबहूं नहींधरैं [५] अरु त्यहि कुल बिषे मैं अपने मनकी प्रतीति राखत हौं कि परनारि बिषे स्वप्नहूं में तीनिहू काल बिषे नहीं जाइ अरु जनकतनया की शोभा देखिकै हमारो मन मोहि गयो है यह धुनि है कि धनुष हमहीं तोरैंगे [६] अरु हे तात यह मर्याद है कि रिपुन के रणबिषे जे कबी पीठि नहीं देहिं अरु पराई स्त्री बिषे दृष्टि नहीं देते [७] अरु जिनके याचकनके याचना का नाहीं नहीं है सर्व देते हैं ऐसे धर्मज्ञ नर जगत् बिषे

कौरे हैं यहि वचन में [illegible] विषे [illegible] चक्रिन को मकु [illegible] उपदेश कीन्ह [८] दोहार्थ ॥ हे पार्वति ऐसी बातें चतुरन से कहते हैं [illegible] श्रीजानकीजी के रूपमें लोभि रह्योहै मुख सरोज जो है तेहिके मकरंद को [illegible] नेत्र मधुप [illegible] पान करते हैं यहि स्थान बिषे रघुनाथ जी को [illegible] अभिप्राय [illegible] [१] इतिश्री रामचरितमानसे [illegible] ॥ ८२ ॥

दो० [illegible] रामचरण यह आय ॥

[illegible] सिय हर्षयुत राम गमन गुरुपास ४३

श्रीसिय [illegible] ।१

चौ० [illegible] अनी २

[illegible] ॥ ३

[illegible] ॥ ४

[illegible] ॥ ५

[illegible]

[illegible]

[illegible] ८

दो० लता भवनते प्रकटभे [illegible] अवसर दोउ भाइ ॥

निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ १

२३१ हे पार्वती [illegible] श्री [illegible] की ओर सुनिये जानकीजी रघुनाथ जीकी ओर चकित ह्वैकै देखतीहैं कि नृपकिशोर कहांगये कहांहैं यह चित्तबिषे आतुर चितवतिहै [१] जेहि स्थानबिषे [illegible] नयनी जो श्री जानकीजी श्रीरघुनाथजी को चहुंफेर देखतीहैं तहां नयननकी [illegible] अरु मनकी आतुरता सो कहतेहैं तहां जानकीजीके नेत्र [illegible] [illegible] कमल [illegible] मृगन बिहंग [illegible] को सम्पूर्ण आदर्शवत् निर्मलहैं तिनबिषे [illegible] छटाछाइ रहीहै झलझलाइ रहीहै जनु तहँ कहो सम्पूर्ण बाटिका बिषे [illegible] उत्पन्न भयेहैं अभूत अनेकन कमल तिनकी वर्षा होतीहै पुनि जनु तहां तेहि स्थान बिषे कमलासिन जो ब्रह्मा हैं तिनके वर्षके वर्ष श्री जानकीजीको पलपल श्रीरघुनाथजी के देखे बिना बीतते हैं तहां यहि अवसरबिषे श्री जानकीजीको बियोग शृङ्गारहै कछुक संयोगकी संधिहै सो कहते हैं प्रथम बियोगको संचारी पांच उत्कण्ठा चिंता चपलता भ्रम बितर्क पुनि अवस्था त्रयभई अभिलाष चिंत सुमिरण पुनि सात्विकभाव एक स्वेद तनमें [illegible] पुनि हाव एक मोटाइत दर्शकी इच्छाहै अरु दशा बिलक्षण है [२] श्री जानकीजीकी ऐसीदशा देखिकै तब सयानी सखी जे हैं ते

दकुकरता आवतहैं तहां श्यामगौर सुन्दर किशोर रघुनाथजीको देखावतीभईं (३) तब श्री जानकी जीके लोचन रघुनाथजीको रूपदेखिकै अत्यन्त हर्षको पाय ललचाइरहे हैं जनु निजनिधि पहिचानि निजनिधि कही नेत्रनकी निधि यहैं ते दोऊ कुमार जनु उदितबाल सूर्यहैं वाटिकाको प्रकाशकियहैं पुनि नेत्रनके निधिरूपहैं तिनको पहिचानिकै यहै (४) श्रीरघुनाथजी को देखतसंते श्रीजानकीजीके नेत्रथकितरहे पलकन निमिषको तजि दीन्हहै तहां पुनि रघुनाथजी जानकीजीको निमेषनको त्यागिकै देखतेहैं दोऊ जनेनके स्वरूप बिषे इतउत नेत्रनके तार कैसेशोभितहैं जनु अनङ्गने शृंगारके सूत्रकरि कै तानतान्योहै मन वस्त्र संभोगपट बिनतहै संयोग शृंगार स्पर्श सम्भोग पहिराइबेके हेतु (५) रघुनाथजीको देखतसन्ते श्री जानकीजीको अतिस्नेह भयोहै देह भोरीकही बिह्वल दशा ह्वैगई है जैसे शरद पूर्णमासीके चन्द्रको चकोरीदेखै अङ्ग अङ्गको सुधिमुख चन्द्र मकरन्द पानकरतसन्ते भूलिजाइ (६) तहां श्रीरघुनाथ जीको स्वरूप जानकी जी अपने नेत्रनके द्वारते हृदयमें आनिकै पलकनके कपाटदैकै बैठिगईं इहां सयानी प्रेमके बशकीन्ह काहेते कछु ओट न परिजाय किंतु चले न जाहिं (७) जबसखिन जानकीजी को अति प्रेमबश जान्यो तब कछु कहिनहीं सकतीं काहेते कि जेहिफलके सुखहेतु गौरीकी पूजनकरै हैं तेहिफलको सुख में जानकीजी मग्न हैं ताते जो हम कछु कहैं तौ बिक्षेप रसाभास ह्वै जाइ ताते मनमें संकोच करिकै कछुनहीं कहैं यह उत्तम नायकनको बिचारहै (८) दोहार्थ ॥ तेहि अवसर बिषे लतारूप भवनते दोऊ भाई न्यारे ह्वैकै प्रत्यक्ष प्रकटभये कैसे जैसे जलदको पटल बिलगाइकै जनु दुइ चन्द्रमा प्रकटे पुनि तहां लता घनस्थाने दोऊकुमार पूर्णमयंक हैं (९) ॥

२शोभासींवसुभगदोउबीरा । नीलपीतजलजातशरीरा * १
काकपक्षशिरसोहतनीके । गुच्छाबिचबिचकुसुमकलीके २
भालतिलकश्रमबिंदुसुहाये । श्रवणसुभगभूषणछबिछाये ३
बिकटभृकुटिकचघूंघुरवारे । नवसरोजलोचनरतनारे * ४
चारुचिबुकनासिकाकपोला । हासबिलासलेतमनमोला ५
मुखछबिकहिनजातमोहिंपाहीं जोहिबिलोकिबहुकामलजाहीं ६
उरमणिमालकम्बुकलग्रीवा । कामकलभकरभुजबलसींवा ७
सुमनसमेतबामकरदोना । सांवरकुवँरसखीसुठिलोना * ८
दो० केहरि कटिपट पीत धर सुखमा शील निधान ॥

शोभाके अरु सुभग इहां शुभलक्षण को कही तेहिके सींव कही मर्याद है ब्रह्माण्डके बाह्यान्तरमें जेतीशोभा शुभलक्षण है किन्तु शोभाके शुभलक्षण जेतेहैं तिन सबनके ये कारणहैं दोऊ वीर इहां वीरकह्याहै सो कहा वीररस न जानिये इहां

दोऊ कुमारको शोभाके बीर कह्यो है जिन अपनी शोभा करिकै लोकोत्पन्न कामा-दिककी शोभाको पराजय करिकै अपने आश्रय कीन्हे हैं सब की शोभाकी मर्यादयथा योग्य राखेहैं अरु अपनी शोभा करिकै सखिन सहित जानकीजी के मनको विजयकीन्ह है ताते बीर कह्यो है कैसेहैं दोउबीर नील जलजात तद्वत् श्री रामचन्द्र हैं अरु पीतक-मल तद्वत् लक्ष्मणजीहैं किन्तु दोऊभाई मिलिकै ठाढ़ेहैं नीलपीत रङ्गयुक्त कमलतद्वत हैं परस्पर आभास भासैहै ताते नीलपीत कह्यो [१] काकपक्ष कहौ शीशविषे दोऊ ओर बारनके पट्टा अति सुन्दर सूक्ष्म स्निग्धता काकपक्षइव शोभितहैं तेहि पट्टनविषे फूलनकी कली यथार्थ गूंथीहैं जनु श्रृङ्गार रसने अपनी श्रृङ्गार आपुहीते कीन्ह्योहै [२] भालविषे केसरिकै युगरेखाको तिलकहै जनु नीलमणिके शृङ्गपर सूर्य बैठेहैं तिनकेकछु अर्द्ध तेहिविषे तड़ितके युगरेख थिरशोभितहै पुनि जनु क्रोधित मैनने युगबाण सूर्यन के सम्मुख सन्धान कीनहै पुनि जनु मधुकर सूर्यके भोरहेतु ढूंढ़ि फिर यालायेहैं इहां सूर्य्य को मदनको भँवरको निशिको कमलको लक्षणा करिबेव अरु बागके फिरिबे के श्रम करिकै मुखपर पसेवबिन्दु शोभितहै जनु नील अरुण युत कमलके दलपर चन्द्रमा के दुइबिन्दु अमृतके झलकत शोभितहैं अरु श्रवणनविषे हेमके गोलकुण्डल प्रकाश मयरत्नकी कणिन अरु लघुमोतिनते जटितहैं अति छबिको देतहैं स्वभाविक हलतहैं जनु मयन कुण्डलरूप ह्वैकै चन्द्रमाके दुइदिशि नृत्यकरते हैं अरु बंक अलक कपालन परशोभितहैं हलतीहैं जनु सर्पनके छौना लटकि लटकि चन्द्रमाके अमृतको पानकरते हैं पुनि कुण्डल अलक मिलिजातेहैं जनु रबिराहु स्रवन झगरि झगरि सुधापान करते हैं अरु दोऊकी झलक बाह्यान्तर जगमगाइकै छबिछाइरहीहै [३] बिकट भृकुटीहैं जनु मदनको धनुषहै अरु शीशके कच घुंघुवारेहैं जनु मधुपनकी समाजमिलिकै नयन मुख कञ्जके मकरन्दके हेतु घेटिरहेहैं अरु अरुणनवीन सरोजकी जो प्रथम कली बिकसीहै ऐसे रतनारे लोचनहैं जिन नेत्रनकी श्यामता श्वेतता अरुणता कछुक कमलन ने पाईहै [४] अरु चारुचिबुक जैसे गोल नीलमणि तेहिमध्य एकपीत बिन्दुहै जनु जानकीजूको चिन्हहै नासिका अति सुन्दरिहै जनु मदनके शुकशावकनको निन्दतिहै अरु कपोल श्याम आदर्शवत्हैं अरु हास्यको बिलास मनको मोललैलेत है अधर अरुण हैं बिम्बफलको निन्दतहैं बिहँसत बदन में दशननकी द्युति वज्र दाड़िमको निन्दति है [५] सम्पूर्ण मुखकी शोभा मोपै कही नहीं जाइ जेहि मुखकी शोभा देखिकै बहु काम लज्जित होतहैं [६] उरबिषे मणिनको हारहै बैजयन्ती पञ्चरंगकी मणिलगी हैं अरु मोतिनको मालहै अरु उरपर पदिक चौकोणहै अरु मणिनकी कणी लगी हैं जनु पूर्ण चन्द्रके निकट नक्षत्रनकी सभा बैठीहै पुनि ग्रीवबिषे मुक्तनके कंठा अरुकौस्तु-भमणि अरु गुञ्ज शोभितहै अरु कम्बुकहौ शंखकी ऐसी ग्रीवबिषे रेखात्रयहैं अरुकाम को गज तेहिको शावक तेहिको शुण्ड तद्वत् दोउभुज छबिबलकी सींवहैं [७] हेसखि हरितमणि इव पत्र तेहिको दोना तिम पुष्प पूर्णको बामकर में लिहे दोऊभाई जनु अरुण कमलपर हरितकमल तेहिके कोषमें पुष्प अनूप शोभितहै पुनि जनु मदन अरु बसंत श्रृंगार करिकै दोनामें फूलभरिकै जानकीजीकी पूजा करिबेको आयेहैं सखिनयुक्त

जानकी जीकी शोभा देखिकै मोहिगये पूजा भूलिगई [८] दोहार्थ ॥ देखि जिनकी केहरिकी [illegible]सी कटि है अरु पीतपट धरितहैं जनु लघुघन नीलमध्य बाल सूर्य उदित हैं पुनि कुँवर कैसेहैं सुखमाकही शोभा अरु स्नेहशील तेहिके निधानकही स्थानहैं हे पार्वति भानुकुल भूषण श्रीरामलक्ष्मण दोउकुँवर जोहैं तिनकी शोभा देखिकै सखिनको अपान कही अपनपौ भूलिगयो [१] ॥

[illegible]कसखीस[illegible]

[illegible]ध्यानक[illegible] । [illegible] * २

सकुचि [illegible]तनयनउघारे । सम्मुखदोउरघुबीरनिहारे * ३

[illegible]खिरामकीशोभासुमिरिपितापनमन अतिछोभा ४

[illegible]

पुनिआउबयहिबेरियाकाली।असकहिमनबिहँसीयकआली ६

[illegible]चानी । भयउबिलम्बमातुभयमानी ७

धरिबड़िधीररामउरआनी । फिरीअपनपौपितुबशजानी * ८

दो० देखन मिसुमृगबिहँगतरु फिरत बहोरि बहोरि ॥
निरखिनिरखि रघुबीर छबि बाढ़ीप्रीति न थोरि १

२३३ तब तो एक सखी जो सयानिहै सो धीरज धरिकै देख्यो कि यह तौ सम्पूर्णसमाज परबश भई तब सीताजीसे मृदुबाणी व्यंग्य युक्तिसमेत बोली [१] इहां गूढ़ोक्तिअलंकार व्यञ्जनाहै गौरीके ध्यानमिसु करिकै जानकी जीको ध्यान छुड़ावती है तहां गौरीको ध्यान बहुरिकही पुनिकिह्यो जिनके देखिबे को आईहौ ते दोऊ कुमार प्रत्यक्षदेखौ [२] यह व्यंग्यबचन ध्यानकी बिक्षेपकारी प्रत्यक्षकी करनहारी सुनिकै सकुचिकै जानकीजू नेत्र खोलतभईं सम्मुख दोउ रघुबीर कही दोऊकुमार देखती भईं इहां बीरनाम लाड़प्रीति को रघुकुलबिषे दोऊ अति दुलारे अतिप्रिय सबके ताते रघुबीर कहा अरु जहां रघुसिंह निहारे यह पाठहै तहां सम्मुख तौ द्वौहैं पर रघुवंशकुलमें सिंह श्रीरामचन्द्र हैं तिनको देखतीभईं सिंहकही बीररस देखाये जाते जानकीजीको धनुष तोरबेकी प्रतीति होइ तहां जानकीजी अति प्रीतिसे देखतीभईं [३] तहांनख शिखलौं श्रीरामचन्द्रकी शोभा विशेष देखतीभईं तहां पिताकर प्रण अति कठिन अरु इनकी अति माधुर्यता समुझिकै देखिकै मनमें छोभकही संदेह होतहै [४] तब सखिन श्रीजानकी जी को श्रीरामचन्द्र की शोभामें परवश जान्यो तब एक मध्यासखी जानकी जीके संकोच भयते बोली कि विलंब बहुत भयो [५] पुनि एक मध्यासखी बिहँसि कै बोलती भई कि यही बेर फुलवारी में काल्हि फिरि आवहिंगी इहां वाक्य विदग्धा करिकै आलंबन शृंगार बिषे दोनों सखी ने अपने वाक्यविषे लक्षणा व्यंजना बहुत कियोहै पुनि अपने वाक्यविषे जानकी रामके जन नित्य मिलापको स्वयंदूतपन

करती हैं (६) ऐसी गूढ़ गिरा सखी की श्री जानकीजी सुनति भईं [illegible] हावभावरस राज उद्दीपन उत्कण्ठा अभीसार संभोग पूर्ण है तिहिसंभोगमें चारिभेद प्रथमवाक्सम्भोगवाक्य करिकै मन संभोग स्रनपरचक्षुसंभोग चक्षुपरस्पर्शसंभोग पुनिशृंगाररसको स्थायी अतिप्रीति अरु संचारी ब्यंग्यतामें अनुभाव विभाव संचारी बहुत लक्षणहैं पुनिशृंगार रसके मर्ममें अनेकसहायक अरु परिणाम रसकी सिद्धि ऐसी अगूढ़ वाणी सखीकीसुनि कै जानकीजी सकुचाइ गईं अरु माताको भयमान्यो कि आज बिलंब [illegible]गयो पुनि यह जानिकै कि जो सखीने गूढ़ बाणी कही है सो ऐसेही कदाचित् माता न जानै तातेभय माना (७) पुनि बड़ो धीर धरिकै श्रीरामचन्द्र की अति मधुरमूर्त्ति हृदय में आनिकै अरु आपनि प्राप्ति श्री रामचन्द्रको अरु श्री रामचन्द्रको प्राप्ति अपनाको यह पिता के बशजाना (८) दोहार्थ ॥ तब नयन खोलिकै उठिकै सखिन संयुत चलतीभईं बारबार फिरिफिरि रघुनाथ जीको मृग बिहंग तरुन के मिसु करिकै देखती हैं रघुवीरकी छबि देखि देखि अतिप्रीति उपजति है इहां क्रिया बिदग्धा दशा है (१) ॥

[illegible] । २५८

प्रभुजबजातजानकीजानी * । सुखसनेहशोभाकीखानी * २

परमप्रेममयमृदुमसिकीन्ही । चारुचित्तभीतरलिखिलीन्ही ३

[illegible] * । [illegible] * ४

[illegible]जकिशोरी । जयमहेशमुखचन्दचकोरी ५

जयगजबदनषडाननमाता । जगतजननिदामिनिद्युतिगाता ६

नहिंतवआदिमध्यअवसाना । अमितप्रभाववेदनहिंजाना * ७

भवभवविभवपराभवकारिणि । विश्वविमोहनिस्वबशविहारिणि ८

दो० पति देवता सुतीय महँ मातु प्रथम तव रेख ॥

महिमाअमितनक[illegible] सहसशारदाशेष १

३५ तहां महादेवको चाप अति कठिन अरु श्रीरामरूपअतिही कोमल जानिकै अपने मनमें जानकीजी बसूरति कही चिन्तवन करतीहैं कि धौं परमेश्वर का करैंगो किंतु शम्भुको चाप बिसूरति है कि बेढब है अरु ये मूर्त्ति कि कही बिशेषिकै मूर्त्ति कही सुन्दर कोमलहैं पुनि धीरज धरिकै किशोर श्यामल मूर्त्ति हृदयमें राखिकै पुनि पार्वती के मन्दिरको चलती भईं (१) पुनि रामचन्द्रने जब जानकी जीको जातजान्योहै कैसी हैं जानकीजी सुखस्नेह शोभा सो षोड़शो शृंगार बारहो आभूषण अरु पातिब्रत इत्यादिक गुणनकी खानिहैं (२) तब श्री रामचन्द्र परमप्रेमको मृदु मसिकीन्ह अरु अपनो चित्त अति सुन्दर ताको कागज़ कीन्ह अरु शृंगार रसको कलम कीन्ह जानकीजी की मूर्त्ति लिखिलीन्ह परम प्रेमकही तैलवत्धार अखण्ड (३) बहुरिकै श्री जानकीजी सखिन संयुक्त पार्वती के मन्दिर को जातीभईं भवानी के चरणबन्दि अरु दोउ कर

जोरिकै बोलती भई [४] जय कही अति श्रेष्ठ बाणी पुनि जय कही सदा जयमान पुनि जयकही सदा सब प्रकार सामर्थ्य पुनि श्री जानकीजी श्री पार्वतीकी स्तुति करती हैं हे गिरिराज किशोरी तुम्हारो जय तुमसदा जयमान हौ महेशको चन्द्रमुख तेहिकी तुम चकोरी हौ यामें यह अभिप्रायहै महेशके मुखते अमृतमय जो रामतत्त्व निकसतहै सो तुम चकोरी ह्वैकै पान करतीहौ [५] पुनि तुम ऐसी जयमानहौ मंगलमय गणेश तिनकी तुम माताहौ अरु सुरासुर सबके विजय करने वाले स्वामिकार्तिक ऐसे ऐसे जय मान वीररस युक्त तिनकी तुम माताहौ पुनि सम्पूर्ण जगत्की कारण हौ अरु तुम्हारो अंग अंग गात दामिनी इवहैं किंतु दामिनी की द्युतिको देखावतेहैं [६] हे भवानी तुम्हारोआदि मध्य अवसान कही परिणाम तीनिहू कालमें अति प्रभावहै जा प्रभाव को वेदभी नहीं जानि सक्ते [७] पुनि आपु कैसीहौ भवजो संसार तेहिको भवकही उत्पन्न करती हौ पुनि विभव कही पालन करती हौ पुनि पराभव कही संहार करती हौ अरु सम्पूर्ण विश्वदेवदानव मनुष्य इत्यादिकनको अपने गुणनते व्यामोहित करती हौ अरु स्ववश कही स्वतन्त्र सम्पूर्ण विश्वमें विहार करतीहौ [८] दोहार्थ ॥ हे मातु जहांतक पतिव्रता सुन्दरी हैं तिन विषे प्रथम आपकी रेखाहै आपुकी महिमा अमित है हजारन शेषशारदा श्रुति नहीं कहिसक्ते [९] ॥

२३५ सेवततें सुलभफलचारी ।

देविपूजिपदकमलतुम्हारे । सुरनरमुनिसबहोहिं सुखारे * २

मोरमनोरथजानहुनीके * । बसहुसदाउरपुरसबहीके * ३

कीन्ह्योप्रकटनकारणतेही * । असकहि चरणगहेवैदेही * ४

बिनयप्रेमबशभईभवानी * । खसीमालमूरतिमुसुकानी * ५

सादरसियप्रसादउरधरेऊ * । बोलीगौरिहर्षउरभरेऊ * ६

सुनुसियसत्यअशीशहमारी । पूजीमनकामनातुम्हारी * ७

नारदवचनसदाशुचिसांचा। सोइबरमिलिहिजाहिमनरांचा८

॥

मन जाहि रांच्यो मिलिहि सोवर सहज सुन्दर सांवरो ॥

करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो * १

यहिभांति गौरि अशीशसुनि सियसहितहिय हर्षीअलीं ॥

तुलसीभवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदितमन मंदिरचलीं २

सो० जानि गौरि अनुकूल सियहिय हर्ष न जाय कहि ॥

मंजुल मंगल मूल बामअंग फरकन लगे १

२३५ हे अम्ब तुमको सेवतसन्ते चारिहू फल सुलभ हैं तुमको निष्काम सेवै सो

मोक्ष होइ काहेते तुम महादेवकी अति प्रियहौ अरु अनन्यसत् संगिनिहौ ताते मोक्ष दाताहौ अरु जे सकाम सेवतेहैं ते अर्थ धर्म काम पावते हैं ऐसी वरदायिनि तुम हौ अरु त्रिपुरारिको अति प्रियहौ[१]हे देवि तुम्हारे चरण कमल सेइकै सुर नर मुनि सब सुखी होते हैं [२] हे अम्ब मोर मनोरथ नीकी प्रकारते जानती हौ काहेते सब कर जोहै उरपुर तामें तुम बसती हौ आद्या शक्ति रूप हौ[३] हे गरुड़ जानकी जीने आपन मनोरथ प्रकट नहीं कहा यहि कारण ते कि तुम सबके मनकी जानतीहौ अरु मेरे मनोरथ को बिशेष जानतीहौ इतना कहिकै भवानी के चरण गहतभई [४] तहां प्रेम संयुक्त जानकीजूकी बिनय सुनिकै पार्वतीजू बश ह्वैगई तहां यह चौपाईमें लक्षणा ब्यंजना दूनौ हैं प्रथम लक्षणाकी जब जानकी जी पार्वतीके चरणनमें परने लगीं तब फूलनकी माला पार्वतीको पहिरावने लगी हैं तहां माला अरु दण्डवत् एकही बारभये तहां माला ग्रीवा में नहीं परेउ काहेते कि जानकीजीके चित्तकै वृत्ति प्रेमयुक्त श्रीरघु-नाथजीके स्वरूप में रहै पार्वती कै पूजा कैसे बनै तब भवानी यह ब्यंग्य जानिकै कि सुरति तो रघुनन्दन बिषे है हमारी पूजा कैसे बनै यह जानिकै मूर्त्ति मुसुकातभई अपर अर्थ जो करते हैं सो सामान्य है [५] जब माला खसिपरेउ तब जानकी उठाइ लीन्ह उर बिषे बड़े आदरते धारण करिलीन कि भवानी मोको प्रसाद दीन्हहै तहां जानकीजी जानती हैं कि मैंने पार्वतीको माला पहिरायो है सो माला मोको प्रसाद दीन्ह है अरु माला पहिलेही खसिपरेउ ताते मुसुकाइकै हर्षिकै बोलती भईं [६] हेभरद्वाज पार्वती जी बिचार करती हैं कि जानकी जीकै प्रेमभरी सुरति रघुनाथजी बिषे अतिशय लगी है जाते हमको माला पहिरावत नहींबन्यो है ताते बिहँसिकै सोई आशीर्बाद देतीहैं हे जानकी जी हमारो आशीर्बाद सत्य मानिकै सुनो तुम्हारो मनोरथ सिद्धि होइगो[७] नारदजूने जो तुमते पूर्बही कह्यहै सो उनके बचन बेद करिकै शुचिकहौ अति पबित्र हैं अरु सदा सत्य हैं मुनीशकी बाक्य अरु हमारो आशीर्बाद सत्य जानिकै जोबर तु-म्हारे मनमें रचेउ है सो बिशेषि मिलहिंगे [८] छन्दार्थ ॥ जो तुम्हारे मनमें रचेउहै सहज सुन्दर श्यामल बर सो तुमको जरूर प्राप्त होहिंगे काहेते वे करुणा निधान हैं अरु सबकी गति जानतेहैं अपने जनन को शीलस्नेह जानते हैं मनोरथ पूर्ण करते हैं [१] यहि प्रकारते पार्वती का आशीर्बाद सुनिकै सखिन सहित जानकीजी अति हर्षको प्राप्तभईं गोसाईं जी कहते हैं कि अति हर्ष संयुक्त पार्वतीजीकी पूजा पुनि पुनि करत भईं पुनि पार्वतीते बिदा ह्वैकै मुदित मनते निज मन्दिर को चलत भईं [२] सोरठार्थ ॥ गौरिको अनुकूल जानिकै श्री जानकीजीके हृदयको हर्ष कबिनको अगोचर है कहा नहीं जाइ मंजुल मंगल के मूल श्रीजानकीजीके बामांग बारबार फरकते हैं [१] इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकाण्डे श्रीरामजानकीबा-टिकाबिहारगौरिसत्यवरबर्णनंनामत्रिचत्वारिंशतितरंगः ४३ ॥

दोहा चौवालिसशुभ लहरि में रामचरण आनन्द ॥
बिरहरामसियप्राप्तहित हियहुलसतसुखकन्द ४४

२३६ हृदयसराहतसीयलुनाई ॐ । गुरुसमीपगमनेदोउभाई ॐ १
रामकहासबकौशिकपाहीं । सरलस्वभावछुआछलनाहीं २
सुमनपाइमुनिपूजाकीन्ही । पुनिअशीषदोउभाइनदीन्ही ३
सुफलमनोरथहोहिंतुम्हारे । रामलषणसुनिभयेसुखारे ॐ ४
करिभोजनमुनिवरबिज्ञानी । लगेकहनकछुकथापुरानी ॐ ५
बिगतदिवसगुरुआयसुपाई । संध्याकरनचलेदोउभाई ० ६
प्राचीदिशिशशिउयउसोहावा।सियमुखसरिसदेखिसुखपावा ७
बहुरिबिचारकीन्हमनमाहीं । सीयबदनसमहिमकरनाहीं ८
दो० जन्मसिंधु पुनि बंधु बिष दिन मलीन सकलंक ॥
सियमुख समता पाव किमि चंद्र बापुरो रंक १

२३६ हे पार्वती श्री जानकीजी की लुनाई कही सुन्दरता हृदय में सराहत श्री रामचन्द्रजी लक्ष्मण सहित गुरुनके समीप गमन करतेभये (१) जो कछु फुलवारी विषे भयोहै सो श्री रामचन्द्र गुरुनते सब कहते भये जावाणीमें लेशहू छलनाहिं छुइ गयो (२) तब गुरु प्रसन्न ह्वैकै सुमन पाइकै मनमें श्री रामचन्द्रही की पूजा करते भये काहेते श्री रामचन्द्र मुनि विषे आप को शिष्यभाव मानते हैं ताते परोक्ष पूजा कीन्ह पुनि दोऊ भाइनको आशीर्वाद देते भये (३) मुनिने कहा कि तुम्हारे मनोरथ सिद्ध होहिंगे सो सुनिकै रामलक्ष्मण बहुत सुखी भये (४) दोऊ भाइन संयुक्त मुनि बिज्ञानी भोजन करिकै कछु विश्राम करिकै पुरानिकथा जो वेदविषे सिद्धान्त रामतत्त्व वर्णनहै सो युक्तिसे मुनि वर्णन करते हैं (५) दिन अन्त होतभयो गुरुनकी आज्ञापाइ कै दोऊ भाई संध्या करने को चले (६) तहां जानकी जीकी शोभा विषे रघुनाथजीको चित्त अतिशय आसक्त ह्वै रह्यो है ताते सन्ध्या करन भूलि गये कुवारसुदी पूर्णमासी को पूर्वदिशि चन्द्रमा उदय भयो अतिसुन्दर जानकी जीके मुख सदृश देखिकै श्री रघुनाथ जीने अति सुखपायो (७) बहुरि अपने मनमें विचार कीन्ह कि जानकी जीके मुखके सम चन्द्रमा नहीं है (८) आगे न्यूनाधिक्य रूपकालङ्कार कहतेहैं ॥ दोहार्थ ॥ काहेते सिन्धु जो समुद्र तेहिते चन्द्रमा को जन्म है अरु बन्धु विष है अरु दिनमें मलीन है अरुगुरुन की स्त्री तेगमन कीन्ह है ताते सकलङ्क है श्री जानकी जीके मुखकी समता किमि पावै शोभा करिकै रङ्क है (१) ॥

२३७ घटैबढैबिरहिनिदुखदाई ॐ । ग्रसैराहुनिजसंधिहिपाई १
कोकशोकप्रदपंकजद्रोही ॐ । अवगुणबहुतचंद्रमातोही २
वैदेहीमुखपटतरदीन्हे ॐ ॐ । होइदोषबडअनुचितकीन्हे ३
सियमुखछबिबिधुब्याजबखानी । गुरुपहँचलेनिशाबड़िजानी ४

कीन्हिमुनिचरणसरोजप्रणामा । आयसुपाइकीन्हविश्रामा ५
बिगतनिशारघुनायकजागे । बंधुबिलोकिकहनअसलागे ६
उयउअरुणअवलोकहुताता । पंकजकोकलोकसुखदाता ७
बोलेलषणजोरियुगपाणी * । प्रभुप्रभावसूचकमृदुबाणी ८

दो० अरुणोदय सकुचे कुमुद उडुगण ज्योति मलीन ॥
जिमितुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन १

२३७ पुनि घटत बढ़त है अरु बिरहिनिन को दुःख दाता है अरु राहु अपनी संधि पाइकै ग्रसत है [१] अरु कोक को शोक प्रद है अरु पङ्कज को द्रोही है हे चन्द्रमा तेरे विषे अवगुण बहुत हैं [२] अरु जानकीजी को मुख निर्दोष निर्विकार निर्मल एक रस नित्य सुधा शोभाते पूर्ण तिहवैदेही के मुखकी उपमा हमने दियासो अति अनुचित किया कि जो प्रथम मुखके सम कहा है [३] हे भरद्वाज यहां यह अभिप्राय है कि चन्द्रमा के व्याजसों मिस करि कै जानकी के मुखकी अतिशय छबि अपने मनमें कहा सो छबि हृदय में धरिकै निशा बढ़ि जानिकै बढ़ि कही चारि दण्डतक संध्याको प्रमाण है तहां छः दण्ड रात्रि बीति गई ताते यह कहा निशा बढ़ि जानी अरु जो जानकी के मुखकी छबिके व्यवहार विषे मन रह्यो संध्याको नेम कोकरै तब निशाबढ़ी जानि गुरुनके समीप को चले [४] जाइकै मुनिके पदपंकज को प्रणाम कीन्ह आज्ञा पाइकै जाइ विश्राम कीन्ह आजु प्रणाम मात्र गुरुन की सेवकाई भई जानकी जीकी छबि में मग्न हैं ताते तहां श्रीरामचन्द्र के मनकी सेवाकी गति लक्ष्मणजी जानते हैं काहे ते प्रौढ़ सेवक हैं चौकी में आरूढ़ हैं [५] याही रसमें रात्री व्यतीत भई भोर भयो रघुनाथ जी जागे बन्धुको ठाढ़े बिलोकिकै अस कहन लगे [६] कि हे तात पंकज कोक सर्व लोकके सुखदाता ऐसे अरुण कही सूर्य सो देखो तौ उदय भये [७] तब दोनों पाणि जोरिकै लक्ष्मणजी बोलने भये प्रभुकर प्रभाव यह वाणी में सूचकहै सूचक कही प्रभुके प्रभाव को जनावते हैं श्री रघुनाथ जीने लक्ष्मण जीते बूझा कि हे तात सूर्य उदय भये तहां यह वाणी में लक्ष्मणजू को यह अभिप्राय समुझि परेउ कि रघुनाथ जीको मन श्री जानकी जीकी शोभाके बश है ताते यहबचन कहा कि जानकी जीकी प्राप्ति धनुषके अधीन है जामें सूर्य के उदय होत सन्ते धनुष के समीप कोई राजा नहीं जाइ हमहीं गुरु आज्ञाते प्रथम जाहिं [८] दोहार्थ ॥ ताते श्रीराम प्रताप अरु सूर्य अरु दोऊ कर विशेषण एकही संग तुल्य योग्यता लंकार करिकै कहते हैं लक्ष्मणजी बोले हे नाथ अरुणोदय भये कुमुद सकुचे उडुगणकी ज्योति किमि मलीन भई जिमि तुम्हारे आगमन को प्रताप सुनिकै समस्त राजा बल करिकै हीन भये [१]॥

२३८ नृपसबनखतकरहिंउजियारी । टारिनसकहिंचापतमभारी १
कमलकोकमधुकरखगनाना । हर्षेसकलनिशाअवसाना २

हारे * * । होइहैंटूटेधनुषसुखारे * ३
* । दूरेनखतजगतेजप्रकाशा ४
रबिनिजउदयब्याजरघुराया । प्रभुप्रतापसबनृपनदेखाया ५
तवभुजबलमहिमाउदघाटी । प्रकटीधनुबिघटनिपरिपाटी ६
बंधुबचनसुनिप्रभुमुसुकाने । होइशुचिसहजपुनीतनहाने ७
नित्यक्रियाकरिगुरुपहँआये । चरणसरोजसुभगशिरनाये ८
सतानंदतबजनकबोलाये । कौशिकमुनिपहँतुरतपठाये * ९
जनकबिनयतिनआयसुनाई । हर्षेबोलिलियेदोउभाई * १०

दो० सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुरु पहँ जाय ॥
चलहुतातमुनिकहेउ तब पठवा जनक बोलाय १

२३८ हे नाथ जो आपु बिचारते हौ कि कदापि कोई राजा धनुषको तोरि न डारै सो राजन के तोरिबे योग्य नहीं है कैसे जैसे अनेक नक्षत्रन के उदय होत संते रात्रो नहीं मिटै तैसे राजन कर बल नक्षत्र है अरु तम धनुष जानिये (१) हे नाथ रबि उदय भये निशा अवसान कही ब्यतीत भई तब कमल कोक मधुकरके गण और खग हर्षित भये (२) हे प्रभु ऐसे तुम्हारे सब भक्त जन धनुषके टूटे ते सुखी होहिंगे (३) हे श्रीरामचन्द्र भानु उदय भये बिना श्रमही तम नाश भयो नक्षत्र दुरि गये जगत् बिषे तेज प्रकाश पूरि रह्यो है कैसे जब आपु रंगभूमिको जाहुगे तब आपको प्रताप रूप सूर्यके उदय होतही बिना श्रमही धनुष तम नाश होहिगो नक्षत्र नृप मलीन ह्वै हैंगे संतदेव कोकनद कोक सुखी ह्वै हैंगे (४) हे पार्वती रबिको उदय ब्याज मात्र करिकै निज जो रघुराय तिनको अरु नृपनको प्रभाव जैसे पाछे कहि आयेहैं सो लक्ष्मणजू कहत भये आगे जो यह अर्थ करते हैं कि निज कही अपने उदय करिकै प्रभुको प्रभाव सब नृपनको देखावते हैं सो यह अर्थ नहीं बनै रबि उदय करिकै प्रभु को प्रभाव सब नृपनके देखायबेको कछु बिशेषण नहीं निकसै ताते प्रथम जो अर्थ कहाहै सोई सिद्ध है (५) लक्ष्मण जी पुनि बोले हे श्रीरामचन्द्र जो तुम यह कही कि तुम हमको अपनो स्वामी जानिकै बड़ाई करतेहौ जो इहां धनुष को कोई औरै राजा तोरै सो लक्ष्मणजू कहतेहैं कि ऐसो नहीं होइगो काहेते कि तव भुज बल महिमा उदघाटी ॥ तुम्हारे भुजनके बल की महिमा जोहै तेहिकी उदघाट कही उद्योत करिबे को यह धनुष प्रगट्योहै कब जब तुम्हारे भुजन करिकै धनुष को बिघटनि कही नाश होइ अरु जो कहो कि हमारे भुजनते कदापि धनुष नहीं टूटैतहांआपके भुजन करिकै धनुष टूटैगो परिपाटी कही परम्परा है किंतु तुम्हारे भुजा उदघाटी कही उदयाचलकी घाटी हैं अरु तुम्हारे भुजन के बलको प्रताप सूर्यहै अरु तमरूप धनुष प्रकट्यो है सो बिघटनि कही नाश होइगो अरु परिपाटी कही सूर्यके परम्परा दृष्टांत

करिकै [६] हे पार्वती बंधुके वचन यथार्थ उक्ति सहित सुनिकै प्रभु विहँसिकै आपु नित्य पुनीत प्रातःक्रिया करिकै स्नान करते भये [७] पुनि श्रीराम लक्ष्मण नित्य नेम करिकै गुरुनके पद पंकज बिषे जाइकै शीश नावते भये [८] तब तेहि अवसर बिषे जनकजू सतानंदको बुलाइकै श्री विश्वामित्र के पास पठावते भये [९] तिन सतानंद जी जनककी विनय मुनिको सुनावते भये सो सुनिकै मुनीश हर्षिकै दोउ भाइनको बोलावते भये [१०] दोहार्थ ॥ श्रीरघुनाथजी आइकै सतानंदके पद बंदिकै गुरुन के समीप बैठेजाइ तब मुनि ने कहा हेतात रंगभूमिको चलिये जनकजीने बोलायो है [१] ॥

२३९ सीयस्वयम्बरदेखियजाई । ईशकाहिधौंदेहिबड़ाई * * १

लषणकहाय शभाजनसोई । नाथकृपातवजापरहोई * * २

हर्षेमुनिसबसुनिबरबानी * । दीन्हअशीषसबहिसुखमानी ३

पुनिमुनिवृंदसमेतकृपाला । देखनचलेधनुषमखशाला * ४

रंगभूमिआयेदोउभाई * । असिसुधिसबपुरबासिनपाई * ५

चलेसकलगृहकाजबिसारी । बालकयुवाजरठनरनारी * ६

देखाजनकभीरभइभारी * । शुचिसेवकसबलियेहँकारी * ७

तुरतसकललोगनपहँजाहू * । आसनउचितदेहु सबकाहू * ८

दो० कहि मृदुबचन बिनीत तिन बैठारे नर नारि ॥

उत्तम मध्यमनीचलघु निजनिज थलअनुहारि १

२३९ हे तात श्रीजानकीजी को स्वयम्बर देखी जाइ ईश जो महादेव सो धौं केहिको बड़ाई देहिं किन्तु ईश तौ परमेश्वरहैं [१] तब लक्ष्मणजी बोले हे नाथ यश को भाजन सोई है जापर तुम्हारी कृपा होइ यामें यह धुनिहै कि तुम्हारी कृपा रघुनाथजी पर है ताते हमहीं यशके भाजन होइंगे [२] बिश्वामित्र आदिक समस्त मुनिवरोंकी बखानी बाणी सुनिकै अति हर्षको प्राप्त भये और अति शुभ मानिकै सबहिन आशीर्बाद दीन्ह कि लक्ष्मणजी को बचन सत्य है [३] इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे श्रीरघुनाथस्यजानक्यासहगोष्ठ्यविरहस्तापसतानंदकौशिकबार्त्ताबर्णननामचतुश्चत्वारिंशतिस्तरंगः ४४ ॥

दो० चालिस पांच तरंगमें रंगभूमि प्रभु जाइ ॥
रामचरण रस सबनको यथा योग्य दरशाइ ४५

हे भरद्वाज पुनि मुनिनके बृन्द समेत कृपालु श्रीरामचन्द्र धनुषयज्ञ देखने को चले [४] रंगभूमि को दोऊ भाई आये यह सुधि सम्पूर्ण पुरबासी पावते भये [५] तब बालक जेहैं युवा जेहैं बृद्ध जेहैं ते सम्पूर्ण गृह अरु तनुको कार्य बिसारिकै शीघ्र चले रंगभूमि के समीप श्रीरघुनाथजी को अति आनंद संयुक्त देखते भये [६] तहां जनकजीने देखा कि भारी भीरभई तब शुचि सेवक बोलाइ लेते भये [७] तब कहा हे सेवकहु तुरन्त

सब लोगन के पास जाहु सबको उचित आसन देहु (८) दोहा.र्थ ॥ तिन सेवकन सबनते बिनती कही प्रवीण मृदुबचन कहिकहि उत्तम मध्यम नीच लघु नर नारिन को यथा योग्य निज निज थल अनुहारि बैठारते भये (१) ॥

२४० राजकुवँरत्यहिअवसरआये । मनहु मनोहरताछबिछाये १
गुणसागरनागरवरबीरा * । सुन्दरश्यामलगौरशरीरा * * २
राजसमाजबिराजतरूरे * । उडुगणमहँजनुबिधुयुगपूरे * ३
जिनकेरहीभावनाजैसी * । प्रभुमूरतिदेखीतिनतैसी * * ४
देखहिंभूपमहारणधीरा * । मनहु बीररसधरेशरीरा * * ५
डरेकुटिलनृपप्रभुहिंनिहारी । मनहु भयानकमूरतिभारी * ६
रहेअसुरछलजोनृपभेषा * । तिनप्रभुप्रकटकालसमदेखा ७
पुरबासिनदेखेदोउभाई * । नरभूषणलोचनसुखदाई * ८
दो० नारिबिलोकहिंहरषिहिय निजनिज रुचिअनुरूप ॥
जनु सोहत शृंगार धरि मूरति परम अनूप १

२४० त्यहि अवसर बिषे मुनि संयुक्त दोऊ राजकुँवर रंग भूमि बिषे प्राप्त भये जनु मनोहरता कही शोभा अरु छबि रंगभूमि की समाज बिषे छाइ अरु जगमगाइ रही है (१) कैसे दोऊ भाई हैं परम दिव्य गुणनके सागर अरु नागर कहीये सर्वोपरि प्रवीण हैं अरु परम बल परम बीरता तिन सबन के सागर हैं पुनि कैसे हैं अति सुन्दर श्याम गौर शरीर हैं (२) राजन की समाज में दोऊ कुँवर रूरे कही सुन्दर कैसे बिराजते हैं जानो अनेकन उडुगणके मध्य में दुइ बिधु निर्दोष निर्मलपूर्ण बिराजते हैं (३) जेते सब मण्डली में राजा इत्यादिक अरु सब पुरबासी रहे ते सर्वमिलिके श्री रघुनाथजी को देखते हैं जिनके जस भावना रही तिन को तैसे रसरूप मूर्ति देखावते भये (४) तहां जे महा महा रणधीर राजा हैं ते श्रीरघुनाथजीको बीररसकी मूर्ति देखते हैं बीर रसको गौर रंग ताको स्थायी भाव हर्षता में दुइ भेद एक मृत्यु लोक से स्वर्गादिक बिषकी प्राप्तिको हर्ष अरु एक भगवान् के प्राप्तको हर्ष काहेते कि जब आत्मा को अपने स्वस्वरूपको ज्ञानभयो सोई बीररस जब ऐसो बीर रस प्राप्तहोइ तव शरीर बिषे जे ज्ञान भक्ति के बिरोधी हैं ते अपने बिषयन समेत नाशको प्राप्त होहिं अरु ज्ञान भक्ति के विरोधी तिनके नाश बिना आत्मा शांतिको नहीं प्राप्त होतो है अरु बिना शान्त रस ब्रह्म ज्ञान अरु भक्ति नहीं सिद्धि होइ तबलगि द्वौ साधन हैं अरु जब शांत रस भयो तब बिज्ञान कही ब्रह्मज्ञान सिद्ध भयो तव प्रेमापरा भक्ति सिद्धि भई काहेते बीर रस चारि स्थान में सूचित होत है दान संग्राम तप ज्ञान तहां चारोइन्द्रिन के दमन बिना नहीं होत अरु जो यह चारि इन्द्रिन के दमन भयो तब परमात्मा को

चोन्हि के आत्मा को हर्ष भयो पुनि संचारी भाव गर्बमद अंग अंगको फरकन. पुनिरस के तीन कारण भाव अनुभाव विभाव सब रसन विषे होतहै जो मनमें रसकी चाह उठै तेहिको भावकहो अरु जो रसको चाहको बढ़ावै ते हको विभावकहो अरु जो रस को प्राप्त करै तेहको अनुभाव कहो ऐसेही सब रसन में जानिये (प्रमाणरसकल्लोलग्रन्थ विषे श्लोक) भावाना मनुभावानां विभावानांचसंश्रयः ॥ जायतेय पदार्थेस्तु तमाहुर्नुनयो रसं १ पुनि भाव कहो रस के हेतु मनमें जल तरंग सम विकारका उठना अरु विभाव कहो उद्दीपन अरु अनुभाव कहो स्त्रियाको कटाक्ष पुनि आनन लोचन वाक्यते प्रसन्नता निकसै सोई भाव अनुभाव विभाव पुनि सब रसन में जैसेचरत है सोसंचारी सोयकतीस कहते हैं आठविन आलंब्य तामें रहै सो कौन हैं दैन्य १ असूया २ स्मृत ३ मद ४ आलस ५ श्रम ६ उन्माद ७ ब्रीड़ा ८ जड़ता ९ चित हर्ष १० मति आवेग ११ आकृति गोपन १२ चपल १३ अपसमार १४ भय १५ उत्कण्ठा १६ निद्रा १७ स्वप्न १८ बोध १९ उग्रता २० व्याधि २१ प्रमाधि २२ वितर्क २३ भ्रम २४ निर्वेद २५ ग्लानि २६ गर्व २७ चिन्ता २८ मोह [illegible] ३० शंका ३१ इत्यर्थः (५) कुटिल राजा जे हैं तप्रभुका निहारिके डरे [illegible] रसकी भागे मूर्ति देखताको नीलरंग कुटिलकहो टेढ़ मन कर्मवचन [illegible] पुनि भय नकरनका स्थायी भाव भीति त्याहमें दुइ भद लौकिक वैदिक [illegible] संचारी कम्प स्वरभंग चिन्ता मोह विषाद (६) अरु जे असुर राजाके बेष बनाइके रंग भूमि में आये हैं ते प्रभु को कालके समान रौद्र रस अंग अंग विकराल देखते हैं ताको रंग अति रक्त कैसे देखते हैं प्रभुकी माया डुमरि को पेड़ है अनेक ब्रह्माण्ड फल हैं तिन विषे लगे हैं बहुत हैं पकतहैं झरत हैं काल भक्षण करत है यह प्रभु विषे नित्य देखि रौद्र रस को स्थायी भाव क्रोध मद मान अहंकार रौद्र रस के संचारी नेत्र लाल अधर फरकन उग्रता शंका श्रम (७) पुनि संपूर्ण पुरबासिन दोऊ भाइन को देखिँ मध्य रस रूप सब नगन विषे भूषण लोचन के सुखदाता ताको रंग अरुण क्वचित् श्वेत मिलित पुनि मध्यरसको स्थायीभाव आनन्द पुनि संचारी दोऊ भाइन के स्वरूपमें नेत्रक्रीड़ा करतेहैं अरु तृप्त नहींहोते हैं अरु चाह अतिशय है (८) दोहार्थ ॥ जनक पुरकी नारि जेहैं ते छपिकै लज्जानिवारण करिकै निजनिज रुचिके अनुरूप दोऊ भाइनको बिलोकतीहैं जनु शृंगार रसपरम अनूप मूर्ति धरि कहो मूर्तिमान् ह्वैकै सोहत है शृंगार रसको श्याम रंग किंतु जनक पुरकी नारि जे हैं ते परम शृंगारके अनेक रूप धरिकै परम अनूप मूर्ति जो श्री रघुनाथ जी तिनको देखती हैं तहां जनकपुरकी नारिन में तीनि भेद हैं मुग्धा मध्या प्रौढ़ा ये तीनिहूं निज निज रुचि से देखती हैं तहां अज्ञात मुग्धा शृङ्गार रसकी मूर्ति देखती है केवल चक्षु संभोगके सुखको प्राप्ति है तेहिको स्थायी आनन्द संचारी अंग अंगन विषे लोचनन की चपलता अरु आकृति गोपान भय स्वप्न पुनि मध्याजेहैं ते श्रीरघुनाथजी को देखतीहैं जनु परम शृंगारकी मूर्ति परम कहो शृंगारहूके शृंगार की मूर्ति देखती भई परम शृंगार को स्थायी रति अरु परस्पर संभोग की चाहना अरु तेहिको संचारी चिन्ता लज्जा स्मृति अवलोकन पुनि प्रौढ़ा जेहैं ते श्रीरघुनाथ जीकी परम अनूप मूर्ति देखती हैं जहां शृंगारहू की उपमा

नहीं दई जाइ तहां मन संभोग प्रधान है अरु प्रीति स्थायी भाव है अरु तेहि को संचारी चितहर्ष आवे उत्कण्ठा (१)॥

२४१ बिदुषनप्रभुबिराटमयदीशा। बहुमुखकरपगलोचनशीशा १
जनकजातिअवलोकहिंकैसे। सजनसगेप्रियलागहिंजैसे *२
सहितबिदेहबिलोकहिंरानी। शिशुसमप्रीतिनजायबखानी ३
योगिनपरमतत्त्वमयभासा *। शांतशुद्धसमसहजप्रकाशा ४
हरिभक्तनदेखेदोउभ्राता * *। इष्टदेवइवसबसुखदाता * ५
रामहिंचितवभावजेहिसीया। सोसनेहसुखनहिंकथनीया६
उरअनुभवतिनकहिसकसोऊ। कवनिप्रकारकहैकबिकोऊ७
येहिबिधिरहाजाहिजसभाऊ।तेहितसदेखेउकोशलराऊ ८

दो० राजत राजसमाज महँ कोशलराज किशोर ॥
सुंदर श्यामल गौर तन बिश्व बिलोचन चोर १

२४१ पुनि विदुष जनजे हैं विद्यमान ते प्रभु को बिराट् मय अद्भुत रसरूप देखत हैं ताको रंग पिंगल पीत अरु मिलित अनेकन सर्वत्र पगकर मुख लोचन शीश पुनि बिराट् रूप कैसे देख्यो पद कीतल अरु पगपृष्ठि अरु गुल्फः अरु पिडुरी अरु गांठी अरु जंघा अरु स्तंभ नीचे के सातहू लोकन को क्रम होत सातो अंग जानव पाताल रसातल महातल तलातल सुतल बितल अतल पुनि ऊर्द्ध्व कटिते शीशताईं सातो अंग जानब कटि नाभि उदर हृदय बक्षस्थल ग्रीव शीश अंग क्रमही ते ऊर्द्ध्वके सातो लोक जानब भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनलोक तप लोक सत्य लोक अरु महतत्त्व तीनौं गुण चारिउकी एकता सोई त्वक है अरु मोह बस्त्र है अरु पृथ्वी तत्त्व मांसहै जल शोणित है अग्नि तत्त्व जठराग्नि है पवन तत्त्व श्वासा है वेद बचन है नभ तत्त्व पांचौ नभ हैं शीश नभ कण्ठ नभ हृदय नभ उदर नख कटिनभ सातहू समुद्र आँतै हैं सातहू द्वीप सातहू चकहैं दिगपाल इन्द्र भुजहैं सब देवता अँगुलीहैं अरु नव रत्न नख हैं दशौ दिशा श्रवण हैं शशि सूर्य नेत्र हैं कालके धनुबाण भृकुटी तीव्र अवलोकनि है चारिउ युग पलक हैं रात्रि दिन निमेष है काल मुख है लोभ अधर है बरुण रसना है बज्र गदा इत्यादिक संयुक्त यमराज दशन है अश्विनी कुमार नासिका है नक्षत्र अलंकार हैं यमपुरी गुदा है काम लिङ्ग है संपूर्ण नदीनस जाल है सम्पूर्ण बनस्पति रोम हैं अरु ब्रह्मा जाकी बुद्धि हैं अहंकार शिव है चित विष्णु है अरु मन चन्द्रमा है अरु संकल्प जाको विशेषण है अरु पञ्च प्राण रामनाम है रेफ रेफको अकार अरु दीर्घ अकार अरु मकार को अकार अरु हल मकार अरु राम नामही रकार मकार ब्रह्म जीव है कुबेर ऐश्वर्य है इति बिराट् विश्वरूप अद्भुत रस रूप सर्बांग देखे जो श्री कौशल्या जी अरु कागभुशुण्डिजीको अद्भुत रसरूप देखाये हैं सो ऐसो बिराट् बिश्वरूप श्रीरामचन्द्रको

विदुषन देखा (प्रमाणभगवद्गीतायां श्लोकएक) स त.पाणिपादंतत्सर्वतोक्षि शिरोमुखं सर्वत:श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्तितिष्ठति १ जनक जातिजे सम्पूर्ण निमिबंशी हैं ते श्रीरघुनाथजीकोसगे जामाता इवशंकर स्वरूप देखते हैं बात्सल्य सख्यरस मिश्रित तेहिको रंग अरुण पीत मिश्रित तेहिको स्थायीभाव बिलास अरु संचारी प्रीति हास्य (२) अरु विदेह संयुक्त रनिवास श्रीअवधनन्दन रघुनन्दनजीको शिशुसम अतिप्रीति से वात्सल्य रसरूप देखती हैं ताको सुवर्णको रंग ताको स्थायी पोषण अरु संचारी लाड़ दुलार (३) अरु योगी जनजेहैं ते श्रीरघुनाथ जीको परमतत्त्व परमप्रकाश समकही एकरस परमशुद्ध शांतरस देखते हैं तेहिकोरंग शुद्धश्वेत अरु स्थायी शुद्ध ज्ञान ब्रह्मान द तेहिको संचारी निन्दास्तुति हर्षकर रहित क्रिया समदृष्टि (४) अरु हरिभक्त दोऊ भाइन को इष्टदेव सर्व सुखदाता दास्यरस की मूर्ति देखते हैं किन्तु सदा दास्यरसकी मूर्तिही ह्वैके परम इष्टदेव देखते हैं तेहिको विचित्ररंग अरु स्थायी परम सुख अरुसंचारी अनेककैंकर्य (५) अरु श्रीरघुनाथजीको जेहिभावतेजानकीजी देखती हैं सो स्नेह सुख अकथनीय है इहां करुणा रसरूप सूचित होतहै तेहिको रंग शुद्धवैजनी अरु स्थायी शुद्धदया अरु संचारी कल्पना कृपा उदारता पोषण (६) जेहि भावते श्री जानकीजी श्रीरामलालको देखती हैं सो सद्कविनके हृदयमें अनुभवित होतहै परकहि नहीं सक्ते कौनो प्रकार कहैं काहेते कि रामलाल विषे जानकीजीको शृङ्गारभाव अवलोकन परस्पर तहां कविनको कर्ममनवाणी अगोचरहै कवि कैसेकहैं किन्तु जानकीजीके मननें बहुसुख स्नेह अनुभवित होतहै पर कहि नहीं सक्तीं सखिन प्रति सो कवि कौनी प्रकारते कहै किन्तु जानकीजीके रामलालको कत जो स्नेह सुख भयोहै सोश्रीरामचन्द्र के अंतष्करण में अनुभवित होतहै परकहिनहीं सक्ते सो कवि कौनी प्रकारतेकहैं ७) जिनके जस भावना रही तिन तस कोशल राजकुमार को देखा ताते कोशलराज कुमार सब रसनके कारण हैं उपादान अरु निमित कारण दूनों हैं अरु आपन अंशकला विभूति अवतारन करिके सब रसनके देवता भी हैं तहां धनुषलीला बिषे श्री रघुनाथ जी राजन बिषे हास्यरस अरु वीभत्सरस देखावहिं तब राजा धनुषको उठावहिंगे अरु नहीं उठेगो अरु फिरि उठावहिंगे नहीं उठेगो तब गिरि गिरि परहिंगे हँसी होइगी तहां उनकी मूर्खता देखिके सब हँसहिंगे तब हास्य रस उन्हीं को लज्जा आवैगी सब निन्दा करहिंगे तब वीभत्सरस अरु स्थायी संचारी याहीमें जानिबे अरु हास्यरसको पांडुररंगको बिषइव अरुवीभत्सको काल.रंग (८) दोहार्थ ॥ तहां सातहू द्वीपके राजा अरु देव दानव जे राजवेष बनाइ कै आये हैं तिनके समाज विषे कोमल राजकिशोर अतिसुन्दर श्यामलगौर अपनी शोभा करिकै सबके विलोचन अरु चित्तके चुरावनेवाले सर्वोपरि बिराजित हैं इहां प्रथम उल्लेषालंकार कहाहै (१) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकाण्डे द्वामशरससंपूर्ण श्रीरामाश्रयवर्णनंनामपंचचत्वारिंश तिस्तरंग: ४५ ॥

दो० चालिस षष्ठतरंग में शोभा सिन्धु अपार ॥
रामचरण मिथिलेशलै बैठारे सुखसार ४६

२४२ सहजमनोहरमूरतिदोऊ। कोटिकामउपमालघुसोऊ १
शरदचंदनिन्दकमुखनीके। नीरजनयनभावतेजीके ✻ ✻ २
चितवनिचारुमारमनहरनी। भावतहृदयजातनहिंबरनी ३
कलकपोलश्रुतिकुंडललोला। चिबुकअधरसुन्दरमृदुबोला ४
कुमुदबंधुकरनिन्दकहांसा ✻। भृकुटीबिकटमनोहरनासा ५
भालबिशालतिलकझलकाहीं। कचबिलोकिअलिअवलिलजाहीं ६
पीतचौतनीशिरनसोहाईं ✻। कुसुमकलीबिचबीचबनाईं ७
रे खारुचिरकंबुकलग्रीवां। जनुत्रिभुवनसुखमाकीसीवां ८
दो० कुंजर मनि कंठा कलित उर तुलसी की माल॥
केहरि ठवनि बलनिधि बाहुबिसाल॥२

टी०: आगे पदार्थन्तत: सिद्धिहै सहजही कहो कौन्यों श्रृंगार के आश्रय सौं शोभा नहींहै सहजै मनोहर मूर्ति है परमहंस मुनीश्वरन के मनको आकर्षण करेहै तिनकी शोभा कैसीहै कोटिन काम की उपमा देबेको लघुहै (१) अरु मुखकी निकाई शरदपूर्ण चन्द्रकी छविको निन्दतहै मुखकी निर्मलता प्रकाश ईषद्धास मधुरबोल शशिकी उज्ज्वलता प्रकाशकिरण शीतलताको निन्दत न्यूनाधिक्य रूपकालंकार व्यतिरेकालंकार है नीरज श्वेत अरुण नीलवर्णवत् हैं सुगन्ध मकरन्द लालित्य अतिकृपा शोभामय नेत्रहैं कैसेहैं कर्मेन्द्रिन वचनअगोचर हैं जीव जो आत्माको गोचर है भावनहैं (२) चितवन की चितवनि चारु कही अति सुन्दरि बांकीहै मार जो काम तेहिके सुमनके बाण तेहिके स्वरूप गुणक्रियाको हरतहै कहूं मारमन हरणी पाठहै सो चितवनि मारकेमन को हरतीहै भावत हृदय अष्टदल कमल मध्यगुह्यसात्त्विक स्वरूप आत्मापर, वाणीको भावन है पश्यन्ती मध्यमा वैखरी तीनोंको लैकै वह चितवनि नहीं बरणी जाय [३] कल कही अति सुन्दर नीलमणि आदर्शवत् सचिक्कण निर्मल कपोल हैं श्रुतिकही श्रवणनविषे कुंडल हैं इहां हेम विषे झलकालिव मणिन की कणी मोतिन की अवली मधुर प्रकाशमय ऐसे कुण्डल स्वाभाविक लोल कही कपोलनपर झूलत हैं जनुमयूर आरोहणन अंगार पर नृत्य करत है पुनि चिबुक गोल मणिइव तामें एक पीत बिन्दु है जनु श्रृंगार रसको श्रृंगार है पुनिजनु रसिकनकी बुद्धि निश्चय करिकै स्थित ह्वै रही है अरु अधर युग बिम्बकी अरुणता हरत हैं अरु सुन्दर मृदु मधुर मनोहर बोलतहैं अरु बोलत सन्ते दशनननकी शोभा जनुतड़ितके रंगतेबोरे लघुलघु हीरनकी अवलीहैं पुनि जनु पक्वदाड़िमके बीजकी अवली शोभितहै [४]पुनि कुमुदिनी तेहिको बन्धु इंदु तेहिकी करकही अमृत मय प्रकाशरूप किरणि तेहिकी निन्दा करतहै मन्दमधुर हास्य रसिक जनन को बाह्यांतर प्रफुल्लित करत है काहेते बिहँसत सन्ते दशन अधर रसना की लालित्य एक है जातिहै अरु षोड़शकला पूर्ण चन्द्रविषे किरणि है अरु इहां अधर रसना मिलिकै

पैतिसकला पूर्ण चन्द्रमाको हास्यहै ताते हास्य शशिको करको निन्दतहै अरु भृकुटी बिकट कही बांकी हैं जनु कामदेव युग धनुष हैं चितवनि बाण हैं रसिकन को चित हरतु है अरु नासिका मनोहर जनु श्याम अरुणतल शुक है [५] अरु भाल बिशाल शोभामयहै तेहि बिष तिलक की युगरेख झलकत हैं जनु नीलमणि आदर्श के मध्य में ताड़ित की युगरेख झलकत है तिलक के मध्य में कस्तूरी को बिन्दु है जनु मदन के भुवनमें युगसर अतिसुन्दर नारिन्ह मुनिदेव के जीतिबे को संधान कीन है पुनि जनु तमाल के पत्रको अपने हितहेतु रति पूजन कीनहै पुनि जनु अति सूक्ष्म अपने सुख हेतु कुछ किरणि मांगिनायेहैं कावजे कुसुम अति चिक्कण कोमल कछुक छूटे कछुक लटुरीहैं ते सघन के पल्लव की अरु अलिकी पंक्ति को अपनी शोभा करिकै लज्जित करते हैं जनु अलि अरु बालक के उदर हुवो भूमि भूमि पान करते हैं [६] पीत चौतनी जोहै सो शीशपर शोभितहै तेहिके बीच बीच कुसुमनकीकली अति शोभित अरु जगमगाइ रहीहैं [७] अरु ग्रीवाबिषे तीनिरेखाहैं कम्बु कही अतिसुन्दर शंखकी रेखाको निन्दत हैं जनुतीनिउ भुवनकी सुखमा कही शोभा तेहिकी मर्यादहैं [८] दोहार्थ ॥ गजमुक्तनके कंठा आभूषणहैं जनु गजमणि तथा मुक्तनको माला शोभितहै अरु हरित श्वेत पीत सुमन अरु तुलसीदल करिकै युक्त बनमाला अति शोभित है जनु तमालतरु की सायबें श्वेत पीत हरित शुककी पंक्ति बैठीहै अरु वृषभकी समदण्ड कहेहैं अरु बीहरकी उपनिकही निर्भय गम्भीर अरु बिशाल भुजाहैं बलनिधि कही बलको समुद्र हैं अलंकार तरंग है (१) ॥

२४३ कटितूनीरपीतपटबांधे । करसरधनुषबामबरकांधे * १
पीतजग्यउपबीतसुहाई । नखशिखमंजुमहाछबिछाई * २
देखिलोगसबभयेसुखारे । एकटकलोचनचलतनतारे *
हर्षेजनकदेखिदोउभाई । मुनिपदकमलगहेतबजाई * ४
करिबिनतीनिजकथासुनाई । रंगअवनिसबमुनिहिंदेखाई ५
जहँजहँजाहिंकुअँरबरदोऊ । तहँतहँचकितचितवसबकोऊ ६
निजनिजरुखरामहिंसबदेखा । कोउनजानकछुमरमबिसेषा ७
भलिरचनामुनिनृपसनकहेऊ । राजामुदितमहासुखलहेऊ ८

दो० सब मंचनते मंचएक सुन्दर बिशद बिशाल ॥
मुनि समेत दोउबंधु तहँ बैठारे महिपाल १

२४३ पुनि कटि बिषे पीतपटपर हेममणिनमय तूणीर बांधेहैं अरु करबिषे बाण लिहेहैं अति सुन्दर व मकन्ध बिषे धनुषहै [१] पुनि पीतयज्ञोपवीत जनु नील मधुर घनबिषे ताड़ितकी तीनिरेखा स्थिर ह्वै रहीहैं अति शोभितहैं नखते शिखलौं मंजुकही अति निर्मल छबिछाइ रहीहै [२] अद्भुत छबि देखिकै सबलोग अति सुखको प्राप्त

भये लोचन सबके एकटक रहिगये जैसे पूर्ण चन्द्रको अनेक चकोर चितरहैं [३] दोउ भाइनको देखिकै जनकजीने अति हर्ष संयुत मुनिके पद कमल जाइगहे [४] बिनय करिकै अपने प्रणकी संपूर्ण कथा सुनायकै राजासंपूर्ण रंगभूमि देखावते भये [५] जहां जहां दोउ कुंवर बर जातेहैं तहां तहां सब लोग चकित ह्वैकै देखते हैं [६] सब रसनके खानि सब रसनके रूप श्रीरामचन्द्र को अपनी अपनी रुचि अनुसार सब देखते भये जिन जसदेखा तिन तैसेमाना बिशेषकै अपरमर्म काहूनाहिं जाना [७] बिश्वामित्रने संपूर्ण रचना देखिकै राजासे प्रसन्न ह्वैकै कहा कि अतिसुन्दर बिचित्रबन्यो है सो सुनिकै राजाको अति आनन्दभयो [८] दोहार्थ ॥ सब मंचाननते एकमञ्चान बिशालकहो अति उच्च बिस्तार अति सुन्दर बिशद तहां राजा जनकजूने मुनिसमेत दोउ बंधुनको आसन दीन [१] ॥

२४४ प्रभुहिदेखिसबनृपहियहारे। जिमिराकेशउदयभयेतारे १
असिप्रतीतिसबकेमनमाहीं। रामचापतोरबशकनाहीं * २
बिनुभंजेभवधनुषबिशाला। मेलिहैंसियारामउरमाला * ३
असबिचारिगवनहुघरभाई। यशप्रतापबलतेजगँवाई * ४
बिहँसेअपरभूपसुनिबानी। जेअबिबेकअधमअभिमानी ५
तोरेहुधनुषब्याहअवगाहा। बिनुतोरेकोकुँवरिबिवाहा ६
एकबारकालौकिनहोऊ। सियहितसमरकरबहमसोऊ ७
यहसुनिअपरभूपमुसुकाने। धर्मशीलहरिभक्तसयाने * ८
सो० सीय बिवाहब राम गर्ब तोरि सब नृपन के ॥
जीति को सकसंग्राम दशरथ के रण बाँकुरे १

२४४ प्रभुको देखिकै सब राजा हृदयमें हारे जैसे राकेश जो पूर्णमासी को चन्द्र तेहिके उदयभये संते नक्षत्रनके तेजमन्द ह्वै जाते हैं [१] असप्रतीति सबके मन में होतभई कि श्रीरामचन्द्र धनुष तोरिहैंगे यहिमें शककहो संदेह नहींहै [२] अरु जो रामचन्द्र धनुषको भंजबकहो नहीं तोरिहैंगे तबहूं श्रीरामचन्द्र के उरबिषे श्रीजानकी जी जयमाला मेलिहैंगी [३] बिबेकी राजाकहते हैं कि ऐसेही बिचारिकै अपने अपने गृहको जाहु अपन अपन यश प्रताप बल तेज प्रतापकहे जेहिके हुकुमनामते कार्यसिद्धि होइ पुनि बलकहो अपने पराक्रमते कार्य सिद्धिकरै पुनि तेजकहो जाको देखिकै सब डरैं सो येते सब रघुनाथजी के यशप्रताप बलतेजबिषे गवाइकै अपने अपने गृहकोजाहु [४] यह सुनिकै जे राजा अबिबेकी अज्ञानी अधम अभिमानी ते बिहँसे [५] अबिबेकी राजा बोले कि जो कदाचित् ये धनुषको तोरिहैंगे तबहूं बिवाह होना दुर्लभहै अरु बिना धनुष तोरे बिवाह कौनकरि सकैहै (६) एकबार कालहु जो आवै तौ जानकीके हेतु हम समर करैं (७) यह सुनिकै अपरभूप जे धर्म शील हरिकेभक्त सयानेहैं ते

मुसुकाने (८) सोरठार्थ ॥ अरु प्रणकारिकै कहतेहैं कि श्रीजनकीजी को श्रीरामचन्द्र सब राजनके गर्वतोरिकै बिवाहहिंगे तिनते संग्रामबिषे कौनसमर्त्थ है जो जीतिसकैगो राजा दशरथके कुमारहैं रणबिषे बांकेहैं राजा दशरथ कैसेहैं जिनको देखिकै इन्द्र आधा सिंहासन छोड़िदेइ (१) ॥

२४५ वृथामरहुजनिगालबजाई। मनमोदकनहिंभूखबुताई * १
सिखहमारिसुनिपरमपुनीता। जगदम्बाजानहुजियसीता २
जगतपितारघुपतिहिबिचारी। भरिलोचनछबिलेहुनिहारी ३
सुन्दरसुखदसकलगुणराशी *। येदोउबंधुशंभुउरबासी * ४
सुधासमुद्रसमीपबिहाई। मृगजलनिरखिमरहुकतधाई * ५
करहुजाइजाकहँजसभावा। हमतौआजुपरमफलपावा * ६
असकहिभलेभूपअनुरागे *। रूपअनूपबिलोकनलागे * ७
देखहिंसुरनभचढ़ेबिमाना। बरषहिंसुमनकरहिंकलगाना ८

दो० जानि सुअवसर जनक तब पठई सीयबुलाइ॥
चतुर सखीसुंदरि सकल सादर चलींलिवाइ १

२४५ वृथा क्यों गाल बजावतेहौ मनोरथके लड्डू खाये कहूंक्षुधा मिटती है (१) परम पुनीत हमार सिखापन मानहु श्री जानकीजी को जगदम्बा जानहु (२) अरु जगत् के पिता रघुपतिको नेत्रन भरिकै बिचारहु छवि निहारिकै अपन कल्याणकरहु (३) अति सुन्दर सुखके दाता अरु परम दिव्य गुणन की राशि अरु जेते तुम सब समाज हौ सो यह जानहु कि ये दोऊ बन्धु महादेव के हृदय में अहर्निश बसते हैं (४) तुम अपने अज्ञान ते सुधासमुद्र को निकट बिहाइकै मृगतृष्णा को जल तुम्हारी तृष्णा तेहिको क्यों दौरि मरते हौ (५) हमने तौ तुमसे भला कहा है आगे जाके जस मनमें भावै सो तस बृथा करहु हमतौ मनुष्यतन धरेके फलको प्राप्त भये (६) अस कहिकै भले कही भक्तराजा अति अनुराग संयुक्त श्रीरामचन्द्रको अनूपरूप देखते हैं (७) पुनि देवतन के गण नभ विषे बिमानन पर चढ़े श्रीरामचन्द्र को अनूप रूप देखते हैं कल्प वृक्ष के फूल बर्षते हैं श्री सीता रामचन्द्र के परम दिव्य पुनीत चरित्र कल अति मधुर रागिनी सुरताल संयुक्त गान करते हैं (८) दोहार्थ ॥ तब सुन्दर मंगल मय अवसर जानिकै जनकजी श्रीजानकीजीको बुलावते भये तहां सतानन्द बचन सुनिकै प्रवीण जे सखी हैं अति आदर ते रंगभूमि में श्री जानकी जीको लयवाइ चलती भईं (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेगुरुसंयुक्तश्रीरघुनाथजीरंगभूमिप्राप्तिबर्णनंनामषष्ठचत्वारिंशतिस्तरंगः ॥ ४६ ॥

दो० चालिस सात तरंग में रामचरण धरि धीर ॥
सियउपमा बाणीजनक लषणबाक्य रस वीर ४७

सियशोभानहिंजाइबखानी । जगदंबिकारूपगुणखानी १
उपमासोहिंसकललघुलागी । प्राकृतनारिअंगअनुरागी * २
सियवर्णियेतेइउपमादेई । कुकविकहाइअजसकोलेई ३
जोपटतरियतियसमसीया । जगअसियुवतिकहांकमनीया ४
गिरामुखरतनअर्द्धभवानी । रतिअतिदुखितअतनुपतिजानी ५
[illegible] । कहियरमासमकिमिवैदेही ६
[illegible]पयोनिधिहोई * । परमरूपमयकच्छपसोई ७
शोभारजुमंदरशृंगारू * । मथैपाणिपंकजनिजमारू * ८
दो० याहिविधिउपजैलक्षिजबसुन्दरतासुखमूल ॥
[illegible]सेतकविकहहिंसीयसमतूल १

टी० सखिन संयुक्त श्री जानकी जी रंग भूमिको चलीं श्री जानकी जी की शोभा कही नहीं जाइ काहेते जगदम्बिका हैं रूप शोभा सुन्दरता इनगुणनकी खानि हैं [१] तहां जानकी जीकी उपमा देबेको मोको सब उपमा लघुलागती हैं काहेते प्राकृत नारिनके अंग विषे सब उपमा अनुराग किहेहैं ताते लघुहैं यहते कविन करिकै झूठी ह्वै गईं काहेते कविन प्राकृत नारिनके अंग विषे सब उपमनको अनुराग कीन्हहै ताते लघुहैं [२] श्री जानकी जीको किसूकी पटतर दैकै वर्णन करै कुकवि कहाइ को सुकविन विषे को अयशलेइ [३] प्राकृत स्त्रिनमहँ जो श्री जानकी जीको पटतर कहो उपमा देई तौ ब्रह्माण्ड कोष में ऐसी युवती कमनीय कहां सुन्दरि कहां नहीं है [४] जो कोई कहै कि देव स्त्रिन महँ उपमा देहु तहां सोभी नहीं बनै काहेते कि येते देव स्त्रीन विषे श्रेष्ठ हैं शारदा पार्वती रति रमा जो शारदाकी उपमा देई तौ गिरा मुखर कही वाक्य चञ्चल है ताते दूषण है अरु जो पार्वती की उपमा देई तौ अर्द्धांगी आधा अंग पुरुष चिन्हते युक्त है ताते दूषण है अरु जो रतिकी उपमा देई तौ अतनु पति जानिकै रति दुःखितहै ताते तेज मन्दहै [५] अरु जो लक्ष्मीजी की उपमा देई तौ विष बारुणी तिनको बन्धु है अति प्रिय मानिकै ग्रहण किहेहै ताते दूषण है तिनकी सम न वैदेही को किमि कहिये काहेते बिदेह जनक तिनके योग्य ज्ञान भक्ति ते आविर्भाव हैं [६] जो छवि सुधा क्षांति पय सिंधु होई छवि कही शोभा की क्षांति तिहिकी द्युति शोभाक्रांति द्युतिःछविरित्यमरः अरु छविमें जो आह्लाद है सोई सुधा को गुण स्वाद पुष्टि है अरु परम रूप कच्छप होइ तहां रूप कही नील हरित अरुण श्वेत पीत सो प्रकृति करिकै ब्रह्मा के रचे हैं अरु रूप कही अंग अंगकी बरोबरि यथायोग्य सोभी त्रय गुण करिकै ब्रह्माके रचेहैं अरु परम रूप कही स्वयं सम अंग रंग सोई कच्छप होइ [७] पुनि शोभा की रज्जु होइ शोभा कही शरीर को प्रकाश लालित्य अरु शृंगार रसको मंदराचलहोइ अरु मारजो है काम सो ऐसे समुद्रको अपने कर पंकजसे मथै (८)

टोहायँ॥ चीरसमुद्र देव दानव मथतभये तब कछुनहीं प्राप्तिभयो तब विष्णुभगवान् निजह थते मथतभये तब रत्नप्रकटे यहांतात्पर्य लक्ष्मीको है अरु इतैछबिरूप समुद्र को कामममथै यहि विधिते जब लक्ष्मी प्रकटै सुन्दरता कहीं ज कोदेखिकै देव दानव मनुष्यादिक चराचरके मन मोहिजाहिं अरु सुखकही लौकिक पर लौकिक आनन्द जोहै ऐसोसुन्दरता अरु सुखते इनको मूलकही कारण ऐसी लक्ष्मी उपजै तदपि सुकवि जेहैं ते अत संकोच सहित लजायकै तेहिलक्ष्मीकी श्रीसीताजूकी समतु यता कहहिं देखिये तौ जब समुद्रते लक्ष्मी प्राप्तभई तब समुद्र कच्छप रज्जु आनै शेष अरु मंदरा-चल इनते कछु प्रयोजन नहींहै प्रयोजन लक्ष्मीतेहै तैसे छविपरमरूप शोभाशृंगार इन के मथेते परमानन्दस्वरूप अनूप लक्ष्मी निकसी पर तिनलक्ष्मी को श्रीजानकीजी की उपमा तुल्य कहतसंते कविनकी मति सकुचातिहै तिम श्रीजानकीजी को शोभा त्रय-लोक्य विषे को कहिसकै [१]॥

२४७ चलींसंगलैसखींसयानी ॥ गावतगीतमनोहरबानी ॥ १
सोहनवलतनुसुन्दरसारी। जगतजननिअतुलितछबिभारी २
भूषणसकलसुदेशसुहाये ॥ अंगअंगरचिसखिन्हबनाये ॥ ३
रंगभूमिजबसियपगुधारी ॥ देखिरूपमोहेनरनारी ॥ ४
हरषिसुरनदुंदुभीबजाई ॥ ॥ बरषिप्रसूनअप्सरागाई ॥ ॥
पानिसरोजसोहजयमाला। अवचटचितएसकलभुआला ६
सीयचकितचितरामहिंचाहा। भयेमोहबससबनरनाहा ॥ ७
मुनिसमीपदेखेदोउभाई ॥ लगेललकिलोचननिधिपाई ॥ ८
दो० गुरुजन लाज समाज बड़ देखि सीय सकुचानि ॥
लागि बिलोकन सखिनतन रघुबीरहि उरआनि १

२४७ सखीजे सयानीहैं ते श्रीजानकीजी को मनोहर गीत गानकरत संते रंग भूमिको लैचलीं [१] नवलतनु विषे सारी अतिशोभा देत है श्रीजानकीजी जगत्की जननीहैं तिनकी अतुलित छबिहै कोकहिसकै यहांनवलतनु सुन्दरसारी शृंगाररसकहा पुनि जगत् जननि कहिकै शृङ्गाररसविषे शांतरस योजितकीन्ह है किंतु सारीको विशेषणहै जगत्विषे अतुलितछबि जे भारीहैं तेहिकी जननीसारी है केवल शृङ्ग रहो पूर्ण भयो [२] श्रीजानकीजूके सकल भूषण सुदेशकही अंग अंग सुदेश विषे जहांजस चाही तहां तस चतुरसखी रचिकै पहिरावती भई [३] जब श्रीजानकीजी रंगभूमिको जाती भई तबरूप देखिकै नरनारी मोहितभये [४] श्रीजानकीजीको देखिकै हर्षसंयुक्त देवता दुन्दुभी बजावतेहैं कल्पवृक्ष के पुष्प बर्षते हैं अप्सरा गावतीहैं [५] श्रीजानकीजी के हस्तकमल विषे जयमाला सोहतहै सो देखिकै अवचटकही अज्ञानकेबश हूके कुटिल राजा कुदृष्टिते एकटक चितैरहे [६] श्रीजानकीजी चकित शीघ्रचित्त एकाग्र करिकै श्री

रामचन्द्रको चाहती हैं अरु अज्ञानी नरनारि मोहके वशभये [७] मुनिके समीप दोउ भाइनको देखिकै श्रीजानकीजी के लोचन ललकिकै निज निधिपाइकै अति आनन्दभरे [८] दोहार्थ ॥ श्रीजानकीजी रघुनाथजीको रूपदेखिरहीं तब समाज विषे गुरुजनजेहैं महत् जन तिनकी लाज करिकै सकुचाइकै श्रीरघुनाथजीको हृदयमें राखिकै सखिनकी दिशि देखनेलगीं [१]॥

२४८ रामरूपअरुसियछबिदेखी । नरनारिनपरिहरीनिमेषी १
सोचहिँसकलकहतसकुचाहीं। बिधिसनबिनयकरहिंमनमाहीं २
हरुबिधिबेगिजनककजड़ताई । मतिहमारिअसिदेहुसुहाई ३
बिनबिचारप्रणतजिनरनाहू । सीयरामकरकरहिंबिवाहू * ४
जगभलकहैंभावसबकाहू * । हठकीन्हेअन्तहुपछिताहू * ५
यहिलालसामगनसबलोगू * । बरसाँवरोजानकीयोगू * ६
तबबन्दीजनजनकबोलाये । बिरदावलीबदतचलिआये * ७
कहनृपजाइकहहुप्रणमोरा * । चलेभाटहियहर्षनथोरा * ८

दो० बोले बन्दी बचन बर सुनहु सकल महिपाल ॥
प्रणबिदेहकर कहहिंहम भुजाउठाइबिशाल १

२४८ रंगभूमिविषे श्रीसीतारामकी छबि देखिकै नरनारिन निमेषको त्यागकीन्ह (१) सकल शोचको करिकै पछितातेहैं बिधातासे करजोरिकै मनविषे विनय करतेहैं (२) हे बिधाता यहि धनुषविषे जनक के प्रणकी जो जड़ताई है सो बेगिहरहु हमारी ऐसी सुन्दर मतिदेहु (३) राजा बिचार न करैं प्रणको तजिकै श्रीसीताराम को बिवाह करहिं ऐसी मतिदेहु यहां शुद्ध सात्विक भावकहतीहैं (४) जो राजा यहकरहिं तौसब जगत्में लाभहै अरुसबको यहै भावतहै अरु यह प्रणको हठकीन्हें ते अन्त विषे पछितावहै काहेते कि जानकीके योग्य यईबरहैं अति सुन्दर सुकुमार कोमल धनुपतोरिबे योग्यनहीं हैं ताते प्रण तजिकै बिवाह करहिं (५) हे भरद्वाज यह अति माधुर्य्यलालसा बिषे सब लोग मगनहैं बारबार यहै मन क्रम बचनते कहते हैं कि श्रीजानकीके योग्य यह साँवरा बरहै (६)तब तेहि अवसर बिषे जनकजीबन्दीजन को बुलावते भये ते बंश बिरदावली बर्णतआवते भये (७) राजा बोले हे प्रवीण बन्दीजनहु मोरप्रण सबराजनको समाज में कहहु जाइ तब जय जीव कहिकै हृदय में अतिहर्ष संयुक्त अनेकन भाट चले (८) दोहार्थ ॥ राजनकी समाजन बिषे बंदीजन जनककी बिरदावली कहिकै बोलते भये हे समस्त महीपहु सुनहु हम बिशालभुजा उठाइकै बिदेहको बिशाल प्रण कहतेहैं (१)॥

[illegible] भुजबलबिधुशिवधनुराहू । गरुअकठो[illegible] [illegible]
देखिभारा[illegible]
सोपुरारिकोदण्डकठोरा * * । राजसमाजआजुजेहिंतोरा ३

जयसमेतबैदेही * बिनहिंबिचारबरहिंहठितेहीं ४

सुनिप्रणसकलभूपअभिलाषे । भटमानीअतिशयमनमाखे ५

परिकरबांधिउठेअकुलाई * * । चलेइष्टदेवनशिरनाई * ६

तमकितमकितकिशिवधनुधरहीं । उठैनकोटिभांतिबलकरहीं ७

जिनकेकछुबिचारमनमाहीं * । चापसमीपमहीपनजाहीं ८

दो० तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठै न चलहिं लजाइ ॥

मनहुं पाइ भट बाहुबल अधिक अधिक गरुआइ १

२४९ वन्दीजन अति हर्ष ते पुकारिकै कहते हैं यहि समाज में देव दानव जे राजाका बेष करिआये हैं अरु सातहू द्वीपके भूप अरु भरतखंड के देश देशके भूप ते हे सर्व भूपहु सुनहु सर्व राजनको बल सम्मिष्टी करिकै पूर्ण उज्जल प्रकाशमय चंद्र है पर रुद्रको धनुष राहु है अति गरू कठोर है यह त्रयलोक्य में सबको बिदित है यहां व्याजस्तुति निन्दा लंकार है [१] काहेते रावण बाणासुर जिनको महा भटन में लीक है ते पिनाक को अति दुर्घट देखिकै अपनी गर्वहिं ते सिधारि गये [२] सोई पुरारि को दण्ड है अति कठोर है तेहिको राजन की समाज में जो कोई आजु तोरै [३] सो त्रिभुवन में जयको प्राप्त होइ अरु वैदेहीको विना बिचारे राजा बरहिंगे यहि बचन में अभिमानी राजनको भय दरश करायो अरु श्रीरामचन्द्रको बीर रस उत्सव सिद्धांत जनायो [४] हे पार्वती वन्दीजननके मर्म संयुक्त बचन सुनिकै मानी भूप अज्ञान अभिलाषा करिकै मनमें माखि उठे [५] परिकर कहो कटिमे पट बांधिकै अकुलाइकै धनुष तोरिवे को उठत भये अपने अपने इष्टदेवको शिरनाइकै चले [६] शीघ्र धनुषके समीप जाइकै दण्डकरिकै तालठोंकिकै तमकि तमकि तकि तकि शिवके धनुषको धरतेहैं कोटि उपाय ते बलकरतेहैं पर नेकहु नहीं उठै बारबार धरते उठावते हैं गिरिगिरि परतेहैं श्रम करतेहैं पसेवा चलते हैं अविद्याके वशहैं [७] जिनभूपनके कछुक मनमें बिचार है ते चापके समीप नहीं जाते [८] दोहार्थ ॥ बार बार तमकि तमकि मूढ़ राजा धनुष को धरते हैं नेकहू नहीं उठै तब लज्जित ह्वैकै निज निज आसनको जात भये मानहु भटनके बल पाइकै वे भट कैसेहैं काहूके शत हाथिन के तुल्य बलहै काहू के हजार हाथिनके तुल्यबलहै काहूके दशहज़ार हाथिनके तुल्य बलहै काहूके लक्षहाथिन के तुल्य बलहै ऐसे २ अनेकन भट धनुषको उठावते हैं अरु नहीं उठै मानहु भटनका बल पायकै अधिकगरुवाइ है [९] ॥

२५० भूपसहसदशएकहिबारा * । लगेउठावनटरैनटारा * * १

डिगैनशंभुशरासनकैसे * । कामीबचनसतीमनजैसे * २

सबनृपभयेयोगउपहासी * । जैसेबिनुबिरागसंन्यासी * ३

कीरतिबिजयबीरताभारी । चलेचापकरबरबशहारी * ४

श्रीहतभयेहारिहिअराजा * । [illegible] ५
नृपनबिलोकिजनककुलाने । बोलेबचनरोषजनुसाने * ६
[illegible]दीपदिमाला * * । आयेसुनिजोहमप्रणाठाना ७
देवदनुजधरिमनुजशरीरा * * । बिपुल बीरआयेरणधीरा ८

दो० कुंवरि मनोहरि बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय ॥
पावन हार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय १

O पुनि अपने मूढ़तालते दश हजार राजा एकही बार उठावन लगे सो धनुष नेकहू नहीं टरै पुनिबार कही एकदिनमें दशहजार भटलगे सोअर्थ सामान्य है (१) शंभु शरासन कैसे नहीं डिगै जैसे कामी पुरुष सतीते काम के वचन कहै पर सती को मन नहीं डिगै (२) सब राजा उपहास कही हँसीवा औ निन्दा के योग्य भये कैसे जैसे बिना वैराग्यको संन्यास (३) समस्त राजा जे हैं ते अपनी अपनी कीर्ति विजय भारी बीर्य इत्यादिक चापके हाथ बरबश कही अपने अपने अभिमानते हारि चले अब इन राजनमें कीर्ति विजय बीर्य इत्यादिक भारी एकहू नहीं रही (४) जे राजा धनुष उ-ठाइ उठाइ आयेहैं अपने अपने आसन पर बैठेहैं ते किसूको मुख नहीं देखावते हैं मा-नहुं ब्रह्महत्या किये हैं हृदय में हारि गये हैं सम्पूर्ण श्रीहत ह्वै गई है (५) धनुष बिषे सब नृपनकै हारि देखिकै जनकजी अकुलाइ उठे मानहु क्रोध के रसते मानिकै यथार्थ बचन जनकजू बोले (६) कि सातहू द्वीपके राजा हमारो प्रण सुनिकै आवतेभये (७) देवता दनुज मनुजको शरीर धरिधरि बड़े बड़े रणधीर बीर अनेकनआये (८) दोहार्थ ॥ कुँ-वरि जो मनोहरिहै अरु विजय अरु कीर्तिजो कमनीय कही सुन्दरि यह तीनिउ तिन को प्राप्तहोइ जो धनुषको दमनकरै सोविरञ्चिने नहीं रच्योहै तहां राजाजनकको वचन में यह अभिप्राय है कि श्री रामचन्द्रको ब्रह्मारचिवे नहीं कीन्ह जो कहो कि जनकजू कुँवरि मनोहरि कैसे कहैंगे यहां वीररस को उत्सव बढ़ावना है ताते दूषण नहीं है किन्तु कुंवरि मनोहरि बिजयरूप जो मनोहरि कुंवरिहै किन्तु कीर्तिरूप जो कुंवरि मनोहरि कमनीयहै तेहिको कहाहै (९) ॥

२५१कहहुकाहियहलाभनभावा । काहुनशंकरचापचढ़ावा * १
रहाचढ़ाउबतोरबभाई * । तिलभरिभूमिनसकछुडाई * २
[illegible]रखैभटमानी * । बीरबिहीनमहीमैंजानी * ३
तजहुआशा [illegible] । [illegible]लिखानबिधिबैदेहिबिवाहू ४
सुकृतजायजोप्रणपरिहरऊं । कुंवरिकुंवारिरहेकाकरऊं ५
जोजनतेउंबिनुभटमहिभाई । तौप्रणकरिनहिंहोतिहँसाई ६
जनकबचनसुनिसबनरनारी । देखिजानकिहिभयेदुखारी ७

माखे लखन कुटिल भइँ भौंहें। रदपुट फरकत नयन रिसौंहें * ८

दो० कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बाण॥
सिरबोले गिरा प्रमाण १

२५१ कोई काकरै यह लाभके हेको नहींभावै पर शङ्करको चाप काहू न चढ़ावा यह वचनमें व्यंग्यहै कि बिना पौरुष के लालसा का करतेहौ (१) चढ़ाउब तोरब यहतौ रहा पर तिलभरि भूमिहूतौ कोऊ नहीं छुड़ाइ सक्यो (२) यह जनकजू कहतेहैं कि जेतेभटहौ जिनके बीरत्वकर मानहै ते सब कोई अब माख न मानैं काहेते कि बीर विहीन तीनिहू लोक को हमनेजाना (३) अब आश तजितजि अपने अपने गृहको जाहु काहेते विधातैं अपनी सृष्टिविषे वैदेहीको विवाहै नहीं लिख्योहै (४) अरु जो अपने प्रण को छाँडिदेउँ तौ सुकृतऊ जाइ ताते कुंवरि जो कुँवारि रहै तौ मैंका करौं परमेश्वरकी यही इच्छाहै ५ जो प्रथमही मैं जानतो कि बिनाभटकी पृथ्वीहै तौ यह प्रणकरिकै अपन अरु सबको हँसौवा काहेको करावतो (६) यह जनकजीको बचन दीनतालिहे सुनिकै पुरके सम्पूर्ण नरनारि श्री जानकीजीको देखिकै दुःखित भये यहां वात्सल्यरस है (७) हे पार्वती यह जनकको बचन सुनिकै लक्ष्मणजू माखिउठे भृकुटी अधिक टेढ़ी ह्वैगईं रदकही दशनके पट दोउअधर फरकनेलगे अरु नयन रिससे रूपसंयुक्त अरुणारे ह्वैआये यही बीररसके सञ्चारीहैं (८) दोहार्थ॥ रघुबीर को डराइकै कछुबोलि नहीं सकते पर जनकने बचन जो कहा कि बिनाबीर पृथ्वीहै सो सुनिकै बाणसारिखेलगे तथापि नहीं रहिगयो श्री रामचन्द्रके पदपद्मबिषे माथनाइकै करजोरिकै प्रमाणकही यथार्थवाणी बोलतेभये (१)॥

२५२ रघुबंसिन महँ जहँ कोउ होई। ज्योंहिसमाजअसकहैनकोई १
कहीजनकजसअनुचितबानी। बिद्यमानरघुकुलमणिजानी २
सुनहुभानुकुलपंकजभानू *। कहौंस्वभावनकछुअभिमानू ३
जोतुम्हारअनुशासनपाऊं *। कंदुकइवब्रह्मांडउठाऊं * ४
काचेघटजिमिडारौंफोरी *। सकौंमेरुमूलकइवतोरी * ५
तवप्रतापमहिमाभगवाना *। कोबापुरोपिनाकपुराना * ६
नाथजानिअसआयसुहोई। कौतुककरौंबिलोकियसोई ७
कमलनालजिमिचापचढ़ावौं। योजनशतप्रमाणलैधावौं ८

दो० तोरौं छत्रक दण्डजिमि तव प्रताप बलनाथ॥
जोनकरौं प्रभुपदशपथ कर नधरौं धनुभाथ १

२५२ लक्ष्मणजू बोले हे जनकजू जेहि समाजमें रघुबंशी एक कोई होइ तेहि में अस कोई न कहै जस तुमने कहाहै (१) जस अनुचित तुमने कहा सो अस नचा-

हिये काहेते तुम योगेश्वर त्रिकालज्ञहौ अरु विद्यमान रघुकुलकी सोभा श्रीरामचन्द्र सो तुम सब जानतहौ तहां अज्ञान की ऐसी बात कहना यह अनुचित है (२) अब श्री रघुनाथजूते लक्ष्मणजू कहते हैं बाक्य विषे यथार्थ वीर रसको उद्दीपन करते हैं हे श्री रामचन्द्र भानुकुल पङ्कज भानु मैं सहज स्वभावते कहतहौं कछु अभिमान करिकैनहीं (३) जो आपुकी अनुशासन कही आज्ञा पावौं तौ यहि ब्रह्मांडको फूलके गेंदके समान उठाइकै उड़ाइ देउँ (४) किंतु अस नहीं करौं तौ कच्चे घटकी नाईं ब्रह्मांडको फोरि डारौं जो कदाचित् सुमेरु आड़करै तौ प्रथमैं मेरुको मूरीकी जरकी समान उखारिडारौं (५) पर तुम्हारे प्रतापते हे भगवान् यह पिनाक पुराना बापुरो कौन बात है (६) हे नाथ अस मोको जानिकै जो आपुकी आयसु होइ तौ यह कौतुक मैं करौं आपुदेखिये (७) यहि चापको जो आपुकी आज्ञा तोरिबे की होइ तौ कमल के नाल की नाईं चढ़ाइकै करमें लैकै सौ योजन पर्यंत धाइकै पुनि तोरिकै फेंकि देउं (८) दोहार्थ ॥ हे नाथ यहि धनुषको कैसे तोरौं जैसे वर्षा ऋतु विषे मढ़िमें फूल छत्राकार होत है तेहिके दण्डकी समान तुम्हारे प्रताप ते मींजिडारौं जो अस नहीं करौं तौ आपुके चरणार बिन्दकी शपथ करिकै कहत हौं पुनि कर मैं धनुष बाण अरु तूण न धारण करौं (९) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलि कलुषविध्वंसनेबालकांडे श्रीजानकीउपमावि लक्षण जनकबाक्यंलक्ष्मणवीररसबाक्यउद्दीपन वर्णनंनामसप्तचत्वारिंशतिस्तरंगः ४० ॥

दो० धनुष भंग श्री राम कर एक जन उच्चास ॥
रामचरण जय जय जगत पूरण सबकी आश ॥ ८ ॥

लखणसकोपबचनजबबोले । डगमगानिमहिदिग्गजडोले १
सकललोकसबभूपडेराने * । सियहियहर्षजनकसकुचाने २
गुरुरघुपतिसब [illegible] काहीं ३
सैनहिंरघुपतिलखणनिवारे । प्रेमसमेतनिकटबैठारे * * ४
बिश्वामित्रसमयशुभजानी । बोलेअतिसनेहमयबानी * ५
उठहुरामभंजहुभवचापा * । मेटहुतातजनकपरितापा * ६
सुनिगुरुबचनचरणशिरनावा । हर्षबिषादनकछुउरआवा ७
ठाढ़भयेउठिसहजस्वभाये । ठवनियुवामृगराजलजाये * ८

दो० उदित उदय गिरि मंचपर रघुबर बाल पतंग ॥
बिकसे सन्त सरोज सब हरषे लोचन भृङ्ग १

२५३ हे भरद्वाज लक्ष्मणजू जब सकोप बचन बोले तब सम्पूर्ण पृथ्वी डगमगाइ उठी समस्त पर्वत कम्पायमान भये दिशन के दिग्गज हालि उठे कमठ शेष कलमलाइउठे (१) सर्व लोक सर्व भूप डेराइ उठे भय को प्राप्त भये रनिवास में सखिन संयुक्त श्री जानकी जीके अति हर्ष भयो अरु जनकजू सकुचाइ गये लक्ष्मण जीके तेज

व्याप्त भयो (२) विश्वामित्र मुनिन समेत आनन्द संयुक्त बार बार पुलकते हैं (३) लक्ष्मण के बचन करिकै राजन को भय उप जाइकै पुर वासिन को सुख दैकै तब श्री रघुनाथजी ने सैनविषे लक्ष्मण जूको निवारण कीन्ह प्रेम समेत निकट बैठाइ लीन्ह (४) तब विश्वामित्र मंगल मय समय जानि कै अति स्नेह मय बाणी बोलते भये (५) हे राम हे तात उठहु महेश को चाप भंजहु जनक को परिताप मेटहु (६) गुरु के बचन सुनिकै पद पंकज में शीश नइकै न तौ कछु हर्ष भयो न कछु बिषाद भयो (७) चाप तोरिबे को सहज स्वभाव उठि ठाढ़भये टवनि कही अति धीर निर्भय तेहि समय की उपमा को देखि कै युवा मृगराज लज्जित होत हैं (८) दोहार्थ ॥ ठाढ़े भये तहां रघुबर कैसे शोभित हैं जनु भस्वान उदयाचल पर्वतहै त्यहिपर रघुबर बाल सूर्य हैं रंगभूमि सरहै सन्त जे राजा मुनि इत्यादिक ते कमल बिकसे हैं अरु सबके लोचन भृङ्ग हैं रघुनाथ जीके स्वरूप की अवलोकनि जो है सो सन्तन के हृदय कंज विषे सो मकरन्द है सोई आनन्द मकरन्द पान करतेहैं अंतर चक्षु भृङ्ग ते अरु सुख सोई पराग है त्यहिते भरि रहेहैं इहां धर्म सम्बन्ध की उपमा है (१) ॥

२५४ नृपनकेरिआशानिशिनाशी। बचननखतअवलीनप्रकाशी १

मूढ़महीपकुमुदसकुचाने ※। कपटीभूपउलूकलुकाने ※ २

भयेबिशोककोकमुनिदेवा । बरषहिंसुमनजनावहिंसेवा ३

गुरुपदबन्दिसहितअनुरागा । राममुनिनसनआयसुमांगा ४

सहजहिचलेसकलजगस्वामी। मत्तमंजुबरकुंजरगामी ※ ५

चलतरामसबपुरनरनारी ※ । पुलकपूरितनभयेसुखारी ६

बन्दिपितरसुरसुकृतसँभारे ※ । जोकछुपुण्यप्रभावहमारे ७

तौशिवधनुषमृणालकिनाई । तोरहिंरामगणेशगोसाईं ८

दो० रामहिं प्रेम समेत लखि सखिन समीप बोलाइ ॥

सीता मातु सनेह बश बचन कहै बिलखाइ १

२५४ श्री रामचन्द्र रूपी बाल सूर्य्य उदय होत सन्ते दुर्बुद्धी राजनकै आशा निशि नाश भई अरु उनहिनको बचन नखतनकी अवलीन प्रकाशि कहो नकारके हल भयेते अप्रकाशी ह्वैगये जो बचन मोह के बश कहते रहे सो बन्द होइगये (१) अरु मूढ़ महीप जो रहे सो कुमुदते सम्पुट होइगये अरु कपटी कहो जे देव दानव राजन कर वेष करिकै आये हैं ते उलूक इव लुकाने (२) सात्विकी देव अरु मुनीश्वर सो चकवा चकई बिशोक भये देवता सुमन बर्षते हैं अपनी सेवा जनावते हैं (३) सहित अनुराग गुरुनके पद बन्दिकै श्रीरामचन्द्र मुनिनते आयसु मांगिकै (४) संपूर्ण जगत् के स्वामी श्रीरामचन्द्र सहजही चले मत्तमंजु कहो निर्मल मस्त कुञ्जर वर कहो श्रेष्ठ तद्वत् सबको आनन्द देत धनुष तोरिबे को चले (५) हे पार्बती श्रीरामचन्द्र के चलत

संते समस्त पुरके नरनारि पुनकावली ते तन पूरित [illegible] सुखी भये (६) सब मिलिके अपने अपने पितर बन्दते हैं स य सुकृत सँभारते हैं अरु मनमें यह कहते हैं कि जो पुण्य प्रभाव होइ (७) तौ हे गणेश गोसाईं शिवकर धनुष मृणाल की कमल नाल की नाईं श्रीरामचन्द्र तोरि डारेंगे (८) दोहार्थ ॥ श्रीजानकी जीकी माता प्रेम समेत श्रीरामचन्द्र को देखिकै सयानी सखिनको समीप बोलाइकै स्नेहके बश [illegible] बिलखाय कही शोच संयुक्त वचन कहती हैं (१) ॥

सखि [illegible] * । जेउ कहावत हितू हमा[illegible] * १
कोउ [illegible] * । ए बालक अस हठ भल नाहीं २
रावण बाण छुवा नहिं चापा * । हारे सकल बीर करि दापा ३
[illegible] देहीं * * । बालमराल कि मंदर लेहीं ४
भूपसयानप सकल सिरानी । सखि बिधिगति कछु जाय न जानी ५
* * । तेजवंत लघु गनिय न रानी ६
कुम्भज कहाँ सिंधु अपारा * । सोखेउ सुयश सकल संसारा ७
रविमण्डल देखत लघु लागा * । उदय तासु त्रिभुवन तम भागा ८
० मंत्र परम लघु जासु बश बिधि हरि हर सुर सर्व ॥
महामत्त गजराज कहँ बश करि अंकुश खर्व १

२५५ श्री सुनयना कहती हैं हे सखि जे हमारे हितकारी हैं तेऊ कौतुक देखने वाले हैं (१) राजाते कोऊ समुझायकै नहीं कहत कि ये बालक हैं अस हठ किये ते नहीं भलोहै (२) यह चाप अति गरुहै जेहिको रावण बाणासुर इत्यादिकने नहीं छुवा अरु संपूर्ण बीर जे हैं दाप कहो अनेक बल करिकै हारि गये (३) सो धनुष राजकुवँरके कर देतेहैं हे सखी कहूं मराल के बालक मंदराचल लेते हैं जो कोई तर्क करै कि बड़े मरालश्यामंदराचल लेहिंगे सो यह तर्क वृथाहै काव्यन विषे ऐसेही कहिबे की परिपाटी है (४) भूपकर सयानप सब सिराइ गयोहै सखी बिधाता की गति कछु नहीं जानी जाइ इहां रानी राजाको तिरस्कारित बचन कह्यो पतिव्रत धर्ममें बिरोध है पर इहां वात्सल्य रस ताते बिरोध नहीं है अथवा ईश्वर पक्षमें सबकर त्यागहै (५) तब एक प्रवीण सखी मृदु बाणीते बोलती भई हे महाराणी तेजवंत को लघु करिकै न जानो (६) देखिये तौ कहां अगस्त्यजी अरु कहां अपार समुद्र तेहिको सोखि गये सुयश संसारमें छाइ रह्यो (७) रविकर मण्डल देखत कै लघु लागत है तिनके उदय होत संते तीनिहू भुवन को तम नाश होतहै जहां जहां उदय होतहैं तहां तहां को तम नाश होतहै किंतु तीनिउं भुवन दीपमणि इत्यादिकन विषे जेते प्रकाश हैं सो सब सूर्य जानब किंतु (भूर्भुवःस्वः) तीनिलोक किंतु बारह कला सूर्य सब प्रकाश किये हैं (८) दोहार्थ ॥ हे महाराणी मंत्र परम लघुहै तेहिके बश बिधि हरि हर इत्यादिक

सब देवता हैं अरु अंकुश रूपं कहो लघुहै तेहिं महामत जे गजहैं तिनको बश करि राख्यो है [१] ॥

[illegible]

देवि तजिय संशय अस जानी * । भंजब धनुष राम सुनु रानी *
सखी बचन सुनि भइ परतीती । मिटा बिषाद बढ़ी अति प्रीती ३
तब रामहिं बिलोकि बैदेही । सभय हृदय बिनवत जेहि तेही ४
मनहीं मन मनाय अकुलानी * । होहु प्रसन्न महेश भवानी * ५
करहु सफल आपनी सेवकाई * । करि हित हरहु चाप गरुवाई ६
गणनायक बरदायक देवा । आ ... कीन्ह तव सेवा ७
बार बार बिनती सुनि मोरी * * । करहु चाप गरुवाई थोरी * ८
दो० देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर ॥
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली शरीर १

२५६ काम जो है सो फूलको धनुष बाण लिहेहै तेहिते सकल भुवन आपने बश कीनहै [१] हे देवि ऐसे जानिकै संशय त्याग करहु श्रीरामचन्द्र धनुष को जरूर भञ्जेंगे [२] हे पार्वती सखीके बचन सुनिकै रानीके प्रतीति भई बिषाद मिटिगयो सखीके बचन विषे अति प्रीति बाढ़ी [३] तब कही तेहि समयमें श्रीरामचन्द्र को श्रीजानकीजी भय संयुक्त देखती भईं जेहि तेहि देवताको विनय करती हैं जो कोई कहै कि श्रीजानकी जी तो त्रिकालज्ञ हैं इहां भय क्यों करती हैं तहां शृंगार रस विषे शांतरस लय ह्वै जात है यहि प्रसंगमें वियोग संयोग शृङ्गारके योग है आगे संयोग की मुख्यता होइगी ताते श्रीजानकीजी के मनको संकल्प सब उचित है ताते सभय विनय करती हैं कि धनुष टूटै कि न टूटै [४] श्रीजानकीजी अपने मनमें अकुलाइकै मनावती हैं हे महेश भवानी प्रसन्न होहु [५] हम आपुकी सेवकाई कीन्हिहै ताको सुफलकरहु हमारो हित करो चापकी गरुवाई हरहु [६] हे गणनायक समस्त वरदायक देव आजुही लगि तुम्हारी सेवा कीन्हि है [७] हे गणेश बार बार हमारी विनती सुनहु चापकी गरुवाई थोरी करहु [८] दोहार्थ ॥ बार बार रघुबीरके तन देखिकै धीर्य्य धरिकै देवतन को मनावती हैं वि कहो दुइको दोऊ नेत्रविषे प्रेमजल भरि रह्योहै शरीर पुलकि रह्यो [१] ॥

। पितु प्रण सुमिरि बहोरि मन छोभा १
अहह तात दारुण प्रण ठानी । समुझत नहिं कछु लाभ न हानी २
सचिव सभय शिष देइ न कोई । बुध समाज बड़ अनुचित होई ३
कहँ धनु कुलिशहु चाहि कठोरा । कहँ श्यामल मृदु गात किशोरा ४

अधिकेहिभांतिधरौंउरधीरा । सिरससुमनकतबेधियहीरा ५
सकलसभाकैमतिभइभोरी । अबमोहिंशंभुचापगतितोरी ६
निजजड़तालोगनपरडारी । होहुहरुअरघुपतिहिनिहारी ७
अतिपरितापसीयमनमाहीं । लवनिमेषजनुयुगशतजाहीं ८

दो० प्रभुहिचितय पुनिचितयमहि राजतलोचनलोल ॥
खेलतमनसिजमीनयुग जनुबिधु मण्डल डोल १

२५७ नीकीप्रकार रघुनाथजी की नयनभरि शोभा देखिकै पुनि पिताकर प्रण समुभिकै मनमें चोभ भयो इहां चोभकही आवरण को रघुनाथजीकी शोभा के सुख विषे जनकको प्रण मनमें आवरण करिदियो (१) जानकीजी परम दिव्य वियोग शृंगार विषे व्यथा करती हैं यामें बाह्यांतर की समस्त क्रिया वृतिलय ह्वै जातीहै यहिको यहै स्वरूप है अहह कही अति क्लेशते मनमें कहती हैं हेतात तुम दारुण प्रण कीन तुमको कछु लाभहानि नहीं समुझि परेउ (२) देखिये तौ अनेक बुद्धिमान सचिव राजाके संगहैं पर भय करिकै कोई शिक्षा नहीं करै ताते बुधनके समाज में यह वड़ा अनुचित है (३) काहेते कहां कुलिशहुते अधिक कठोर धनुष चाहि कही निश्चय करिकै अरु कहां श्यामल मृदुगात मध्यकिशोर मूर्ति (४) हे विधाता मैं कौनीप्रकारते उरमें धीर्य्यधरौं सिरस के सुमनते कहूं हीरा बेधाजात है सिरस कही सिरसा तेहिका फूल अति सूक्ष्म नर्महोतहै (५) अब मैंने जाना कि सकल सभाकै मति भोरी ह्वै गई है ताते हेमहेश के चाप अब मोको तेरी गतिहै (६) हेचाप अपनी जड़ता कठोरता अरु गरुआई सबलोगन पर डारिकै श्रीरघुनाथजीको देखिके अति हलुक ह्वै जाहु (७) श्रीजानकी जीके मन बिषे अति परिताप कही अतिबिरहको क्लेशसो एक एक निमेष लवसैकरों युगके समान जातेहैं (८) दोहार्थ ॥ तहां हेपार्वती श्रीजानकी जी प्रभुकी ओर पुनि महिकी ओर देखतीहैं बियोग शृङ्गार की एहीदशा है तहां दोऊ दर्शविषे श्रीजानकी जीके नेत्रनकी लोलता कैसी शोभतहै जन चन्द्रमाके मण्डलविषे अमृत के डोलकही युगकुण्डहैं तेहिबिषे जनु कामदुइ मीनह्वै कै कल्लोल करतहैं तहां मुख चन्द्रबन्दो मण्डलहै नेत्र सुधा कुण्ड पुतरी मानहु कामको युगमीन किन्तु रामचन्द्र को स्वरूप नीलमणिइव अरु मणिमय रंगभूमि तहां श्रीरामचन्द्र चन्द्र हैं रंगभूमिचन्द्र मण्डल है उभयको एकता जनु डोलकही सुधाको कुण्डहै तेहिविषे कामयुग मीनरूप ह्वैकै कल्लोल करतेहैं श्रीरामचन्द्र के रूपमें अरु रंगभूमिमें श्रीजानकी जीके नेत्र अति चपल झलझलाइ रहेहैं गुरुजननकी लाजदर्शकी आतुरताते आश्चर्य शोभापावतेहै (१)॥

२५८ गिराअलिनिमुखपंकजरोकी। प्रकटनलाजनिशाअवलोकी १
लोचनजलरहलोचनकोना । मानहुंपरमकृपणकरसोना २
सकुचीव्याकुलताबड़िजानी । धरिधीरजप्रतीतउरआनी ३

तनमनबचनमोरप्रणसाँचा। रघुपतिपदसरोजमनराँचा ४
तौभगवानसकलउरबासी। करहिंमोहिंरघुपतिकैदासी ५
जाकरजेहिपरसत्यसनेहू। सोतेहिमिलइनकछुसंदेहू * ६
प्रभुतनचितइप्रेमप्रणठाना। कृपानिधानरामसबजाना ७
सियहिबिलोकितकेउधनुकैसे। चितवगरुड़लघुब्यालहिजैसे ८

दो० लखनलखेउरघुबं ताकेउ हरकोदंड॥
पुलकिगातबोलेबचन चरणचापि ब्रह्मांड १

२५८ वियोग शृङ्गारकी दशा योगसम्बन्ध कहे अब दास्यरस कहतेहैं तहां श्रीजानकीजी गिरा अलिनि कह्यो भ्रामरीभई मुख पंकजभयो गुरजनकी लज्जा निशाभई जानकीजी बोलि नहींसकतीं (१) लोचनमें प्रेमभरोजल समाज को लाजते गिरिनहीं सकता लोचनके कोनमें भरिरहेहैं कैसे गड़िरहेहैं मानहुं परम कृपण को सोनहै (२) अपने हृदयमें अपनेको बड़ी व्याकुलता जानिकै कछु कहिबेको मन उमग्यो तब तुरन्त संकोच बश धीर्यको धरिकै प्रतीति उरमें लावतीभई (३) जो तनमन बचनते मोर मन सांचाहै कै रघुपतिके पदपद्म बिषे रचाहोय (४) तौभगवान्जो सबकेउर अन्तरके बासीहैं ते रघुपतिकै दासी करहिंगे यामें यह अभिप्रायहै कि रघुपतिमोको आपनिदासी करहिंगे काहेते सबके अन्तष्करण की प्रीति जानतेहैं इहां अभिप्रायमें शांत रस सूचित होतहै (५) अरु शास्त्र यहसत्य कहतहै कि जाकर जेहिपर सत्यस्नेह है सो तेहिको मिलताहै यामें संदेह नहींहै (६) श्री जानकीजी प्रभुतन चितैकै प्रेमको प्रणठानती भईं तब कृपा निधान श्री रामचन्द्र सब जानतेभये (७) तब श्रीजानकीजीकी आर्तता देखिकै धनुषको श्रीरामचन्द्रने कैसे तकयउ जैसे गरुड़ लघु व्यालको निशंकतकै (८) दोहार्थ॥ तबलक्ष्मण लखयउ कि रघुबंशमणि हर कोदण्ड ताकेउ तोरा चाहतेहैं तब गात पुलकिकै ब्रह्माण्डको चरणते दाबिकै बचन बोले (१)॥

२५९ दिशिकुंजरहुकमठअहिकोला। धरहुधरणिधरिधीरनडोला १
जबाहोहुसुनिआयसुमोरा * २
चापसमीपरामजबआये *। नरनारिनसुरसुकृतमनाये * ३
सबकरसंशयअरुअज्ञाना। मंदमहीपनकरअभिमाना * ४
भृगुपतिकेरिगर्बगरुवाई। सुरमुनिबरनकेरिकदराई * ५
सियकरशोचजनककपछितावा। रानिनकरदारुणदुखदावा ६
शंभुचापबड़बोहितपाई *। चढ़ेजाइसबसंगबनाई * ७
रामबाहुबलसिंधुअपारा। चाहतपारनकोउकनहारा * ८

दो० राम बिलोके लोग सब चित्रलिखे से देखि॥

[illegible]

।९ लक्ष्मणजी ऐसो वाणीबोले यामें जेहिको आज्ञादेते हैं ते सब कोई सुनै हैं कुंजरहु कमठ अहिराज वराह पृथ्वीको धीरजधरिकै धरहु डोलै न पावै (१) श्रीरामचन्द्र शंकरकर धनुष तोराचाहतेहैं धनुषके सगमाहू उलाट न आइ तातें हमा-रीआज्ञा मानिकै तुम सजग होहु संभारहु धरहु इहां यहसमुझि परतहै कि येते सबके अधिष्ठाता श्रीलक्ष्मणजीहैं तातें आज्ञादेतेहैं (२) हे गरुड़ जब श्रीरामचन्द्र चापकेसमीप आये तब समस्त नर नारि सुर सुकृत मनावतभये (३) तहां जिनके संशयहै कि वि-धाता धौंकाकरै अरुजिनको अज्ञानहै कि ये धनुषको का तोरिसकैंगे अरु मन्दमहीपन कर अभिमान जो है (४) अरु भृगुपतिके गर्वकर गरुवाई जो है देवतन अरु मुनि-वरनकी कादर्यता जोहै कि ये बालकहैं धनुष कैसे टूटैगो (५) अरु श्रीजानकीजीको शोच जनककर पछितावा अरु रानिनकर दारुणदुख दावरूप (६) शंभुके चापको बड़ोबोहित जानिकै ये सबसंग बनाई कही मिलिकै जो चढ़िआये तिनसबको अन्धक-रणको छोड़ तहां कहाउरूप धनुष तापर चाढ़ भयेजाइ (७) तहां श्रीरामचन्द्र के बाहुको बल समुद्र तामें धनुष बोहित तापर सबचढ़े पारजावा चाहतहैं पर कणडहार को करणवार कोई नहींहै यामें यह अभिप्रायहै कि श्रीरामचन्द्र के भुजनके बलको समुद्रको कोपार पाइसकैहै जो कोई बड़ेबड़े वीर तेजस्वी महान् पारको इच्छाकरतेहैं सो बीचहीमें डूबिजाते हैं पारनहीं पावते (८) दोहार्थ॥ तब श्रीरामचन्द्रने सब लोगनको देखा कि येतौ सब चित्रकेसे लिखेहैं देहाभ्यास बिस्मरगयाहै पर कृपाके मन्दिर श्रीरामचन्द्रने श्री जानकीजीको बिशेष बिकलदेखा (९)॥

२६० देखीबिपुलबिकलबैदेही। निमिषबिहातकलपसमतेही १

तृषितबारिबिनुजोतनुत्यागा। मुयेकरइकासुधातड़ागा २

काबर्षाजोकृषीसुखाने। समयचूकिपुनिकापछिताने * ३

असजियजानिजानकीदेखी। प्रभुपुलकेलखिप्रीतिबिशेषी ४

गुरुहिंप्रणाममनहिंमनकीन्हा। अतिलाघवउठाइधनुलीन्हा ५

दमकेउदामिनिजिमिजबलयऊ। पुनिधनुनभमंडलसमभयऊ ६

लेतचढ़ावतखैंचतगाढ़े। काहुनलखादेखसबठाढ़े * ७

तेहिछनराममध्यधनुतोरा। भरेउभुवनधुनिघोरकठोरा ८

हरिगीतिकाछन्द॥

भरिभुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारग चले॥
चिक्करहिंदिग्गजडोलमहि अहि कोल कूरमकलमले १
सुरअसुरमुनिकर कानदीन्हे सकल बिकल बिचारहीं॥

कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं २

दो० झांझर [illegible] [illegible]

[illegible] समाज चढ़े जे प्रथमहिं मोहबश १

श्रीरामचन्द्रने वैदेहीको अतिविकाल देखा एकएकनिमिष कल्प समबीततहै (१) श्रीरामचन्द्र विचारते हैं कि जो प्राणि तृषितहै अरु वारिविना तनुको त्यागिदियो फिर जो सुधाको तड़ाग मिल्यौ तौ काम्यो सुधातड़ाग जलको (२) पुनि कही धान इत्यादिक को सूखेको तब का नाहू सूखिगे पीछे फिर वर्षाभयेते कौन प्रयोजनहै ताते जो कोई कार्यसमय अवसर पर चूकिगयो कार्यनाशु होइगयो तौ पछिताव वृथा है (३) ऐसे हृदयमें जानिकै श्रीजानकी जीकी अतिप्रीति अपनेविषे देखिकै प्रभुपुलके (४) तब श्रीरामचन्द्रने मनहिंमें गुरुनके प्रणामकरिकै अति लाघवकहो अति शीघ्रते धनुषको उठाइलीन्ह (५) (अन्यच्चदोहा) पियलखि तियकी मधुरीतृषा तोरन की चाह ॥ कुकितृषा धनुकर रुचिरगति रसरंग रकोलाह १ जब श्रीरघुनाथजी ने धनुषको उठाइलीन्ह तब श्रीरामचन्द्रके घनश्याम स्वरूप विषे दामिनी इव दमकयउ पुनि जब खैंचयउ तब धनुष नभविषे मण्डलाकार भयो (६) जब श्रीरामचन्द्रने धनुष को उठायो दामिनीसम दुतिमयउ भयो तब सबके नेत्रनविषे चाखाचौंधी हैगई तब लेतकै उठावतकै खैंचतकै गाढ़ेकही बलकरतकै ऐसी शीघ्रताभई सब खड़ेहैं परकाहू ने लेशहू नहीं लख्यो है किन्तु जितचढ़ावत सन्ते बड़े बड़े गाढ़ेकहो त्रिकालज्ञ त्रैलोक्य दृष्टी सिद्ध मुनिनर देव इत्यादिक काहूनेलेशहू नहीं लख्यो देखिये तौ चुद्र इन्द्रजाल विद्या को कोई नहीं लखिसकै अरु श्रीरामचन्द्र की विद्याको कौन लखि सकैहै छुअतै टूटिगयो (७) त्यहि अवसर चणमात्र में श्रीरामचन्द्रने मध्य से धनुष तोरिकै डारि दीन्ह त्यहि तोरिबे को महाघोर कठोररव तेहिकी ध्वनि तीनिहूं भुवन में परिपूर्ण भरि रहीहै (८) छन्दार्थ ॥ धनुष तूटिबेको रव अति घोर कठोर संपूर्ण भुवन में भरि रहा सो रव सुनिकै सूर्यके घोड़े राह छोंड़ भागे मही अति कम्पायमानभई दिशन के दिग्गज दांतन अरु पगन ते दाबते हैं चिक्कार करते हैं अति शोर होइ रहाहै अरु अहिराज कलमलाते हैं औ हजारहू मुखन के दशनन ते कमठ की पीठि पकरते हैं पकरि नहीं जाइ पृष्ठिपर दशनन की लीक है जाती है मानहुं श्रीराम जानकीके स्वयम्बरको यश लिखते हैं अरु कमठ कलमलाइकै चारिहु पगन के चंगुल अरु बदनते बाराह को पकरते हैं अरु बाराह अकुलाइकै शब्द करिकै चारिहू पगन अरु कांखते पाताल अरु भूमिको पकरते हैं ऐसेही सब कलमलाइ रहेहैं (९) अरु सुर असुर मुनि इत्यादिक जनु बहिर है गये अपने अपने कानन में अपनी अपनी अंगुली दाबिकै सकल बिकल ह्वैकै बिचार करते हैं हे बिधाता यह का होत है देवतन के बिमान आकाश में भगे भगे फिरते हैं तब ब्रह्मा शिवादिक बिचारिकै भुजा उठाइ कै पुकारिकै कहते हैं कि सब मिलि धैर्य्यधरो श्रीरामचन्द्रने कोदण्डको खण्डन कीन्ह है त्यहिको रवहै तब सुनिकै धैर्य धरिकै जयति बचन उच्चारण करिकै कहते हैं यह श्री

गोसाईं तुलसीदासजी कहते हैं कि धनुष भंगमें विचित्र रचना भई (२) सोरठार्थ ॥ श्रीरामचन्द्रके भुजनको बल समुद्र है राजा जनकको प्रण गम्भीर भँवर है अरु शंकर को चाप जहाज है त्यहि भँवर विषे जे प्रथम मोहके वशचढ़े तिन संयुक्त डूबिगये कार्तिक बदी प्रतिपदाको मध्य सूर्य समय में श्रीरामचन्द्रने धनुष को भङ्ग कीन्ह (१) इतिश्री रामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकांडे श्रीरामकरधनुषभङ्गस्वयंबरविजयोनाम अष्टचत्वारिंशतितरङ्गः ४८॥

दो० लहरि उँचासे अनँद प्रभु सिय पहिराई माल ॥
राम चरण सुनि परशुधर आये कठिन कराल ४९

[प्रभु दोउ चापखंड महि डारे] । देखि लोग सब भये सुखारे १
कौशिकरूप पयोनिधि पावन । प्रेम बारि अवगाह सोहावन २
रामरूप राकेश निहारी । बढ़त बीचि पुलकावलि भारी * ३
बाजे नभ गहगहे निशाना * । देवबधू नाचहिं करि गाना * ४
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा । प्रभुहिं प्रशंसहिं देहिं अशीशा ५
बरषहिं सुमन रंग बहु माला । गावहिं किन्नर गीत रसाला * ६
[रही भुवन भरि] जय जय बानी । धनुष भंग धुनि जात न जानी ७
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी । भंजेउ राम शंभु धनु भारी * ८

दो० बंदी मागध सूतगण बिरद वदहिं मतिधीर ॥
करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मणि चीर १

२६१ हे भरद्वाज प्रभुने चापको दोउ खण्ड करिके महि में डारिदीन्ह सो देखिके सब लोग सुखको प्राप्त भये (१) तहां कौशिक को स्वरूप अति पावन क्षीर समुद्र भयो अरु प्रेममय वारिका अवगाह सोहावन भयो (२) श्रीरामचन्द्रको स्वरूप पूर्णचन्द्र सम निहारिकै पुलकावली तरङ्गनकी माला उठती है अरु सब तमुनि सज्जन चकोर भये हैं (३) नभ विषे गह गह कहौ गम्भीर बहु निशान भेरी मृदङ्ग इत्यादिक देवन के बाजा बजे देववधू नृत्यपूर्वक गानकरती हैं ब्रह्मादिक देवता सिद्धजन मुनीश जन प्रभु की प्रशंसा करते हैं आशीर्वाद देते हैं (५) अरु सर्वदेव कल्पवृक्ष के रंग रंग के सुमन माल अरु छूटे फलनके मालके मालबर्षते हैं अरु किन्नर गन्धर्व इत्यादिक रसालगीत गावते हैं (६) अरु संपूर्ण भुवन में जय जयकार बाणी भरिरही धनुषके भंगकी ध्वनि जात न जानी धौं कहां गई किन्तु जा कहौ यमदग्निके तनय तिननें धनुष भंगकी ध्वनि जानी (७) मुदित कहौ आनन्द भरे जहां तहां नर नारि कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र शंकर को भारी धनुष भंजत भये (८) दोहार्थ ॥ बन्दीगण जे हैं मागध कहौ कलांवत जे हैं सूतकहौ पौराणिक जे हैं तिनके गण बड़े बड़े मतिके धीर श्रीरघुवंश कुल

की विरदावली वदते हैं अरु सब लोग घोड़े हाथी रथ कंचन रत्न अनेक वस्त्रादिक श्रीरामचन्द्रकी न्योछावरि करते हैं (१) ॥

... * ... हाई * १
बाजहिंबहुबाजनेसोहाये * । जहँतहँयुवतिनमंगलगाये २
सखिनसहितहर्षी अतिरानी * । सूखतधानपराजनुपानी ३
हाई । ... हजनुपाई * * ४
श्रीहतभयेभूपधनुटूटे * * । जैसेदिवसदीपछबिछूटे * ५
सियसुखहियबरणीकिहिभाँती। जनुचातकीपाइजलस्वाती ६
रामहिंलषणविलोकतकैसे। शशिहिंचकोरकिशोरकजैसे ७
शतानंदतबआयसुदीन्हा । सीतागमनरामपहँकीन्हा * ८
दो० संग सखी सुंदरिचतुर गावहिं मंगलचार ॥
गवनी राजमराल गति सुखमा अंग अपार १

२६२ झाँझ मृदङ्ग शंख सहनाई भेरि ढोल दुंदुभी शोभायमान सितार तमूरा मुरचंग सारङ्गी बीणा वेणु इत्यादिक अनेक बाजा अति शोभित पृथक् पृथक् ताल स्वर संयुक्त एक संग अति सोहावने मधुर मधुर बाजते हैं (१) जहँ तहँ युवती संपूर्ण राग रागिनी से यथा योग्य मंगल गावती हैं (२) अरु सखिन संयुक्त रनिवास अति ललित हर्षित है जैसे धान सूखत सन्ते बर्षा को जल यथा योग्य प्राप्त भयो (३) अरु राजाजनक निशोच सुखको प्राप्त भये जैसे अथाह जलमें कोई पैरत सन्ते डूबने लग्यो तब तुरन्त थाहपायो जैसे उसको आनन्द सुखभयो तैसे जनकजू को सुख भयो (४) धनुष टूटेते अज्ञानी राजा श्रीहत ह्वैगये जैसे दिवस विषे दीपकन की छबि छूटिजाती है (५) श्री जानकी जीको जो सुखभयो सो क्यहि भांतिते बरण्यो जाइ जनु बर्ष दिनकी तृषित चातृकी स्वातीके जलको प्राप्ति भई (६) श्री रामचन्द्रको विलोकत सन्ते लक्ष्मण जूको कैसे सुख होतहै जैसे चकोर को किशोर पूर्णचन्द्र देखत है (७) त्यहि आनन्द मङ्गल के समय विषे शतानन्द की आज्ञा अरु रनिवास की प्रेरणाते श्री जानकी जी श्रीरघुनाथ जीके समीप गमन करती भई (८) दोहार्थ ॥ संग विषे सखिन की समाज अनेकन रतिते अति सुन्दरी आदि अन्त मध्य में नवलकिशोरी वय अनेकन शारदा की चतुराई षोड़शो शृंगार कीन्हें संपूर्ण राग रागिनी स्वरताल संयुक्त ग्राम भेद मूर्छना प्रबन्ध इत्यादिक गान करत मंगलाचार अति अपार आनन्द संयुक्त राज मरालकी गति चलत भई (१) ॥

२६३ सखिनमध्यसियसोहतकैसी । छबिगणमध्यमहाछबिजैसी १
करकमलनजयमालसोहाई । विश्वविजयशोभाज्यहिपाई २

तनुसकोचमनपरमउछाहू * । गूढ़प्रेमलखिपरैनकाहू * ३
जाइसमीपरामछबिदेखी * । रहिजनुकुँअरिचित्रअवरेखी ४
चतुरसखीलखिकहासमुझाई । पहिरावहुजयमालसुहाई * ५
[illegible]रमालउठाई * । प्रेमबिबसपहिराइनजाई ६
[illegible] । शशिहिसभीतदेतजयमाला ७
गावहिंछबिअवलोकिसहेली । सियजयमालरामउरमेली ८
सो० रघुबर उर जयमाल देखि देव बरषहिं सुमन ॥
सकुचेसकलभुआलजनुबिलोकिरबिकुमुदगण ॥ १

२६३ सम्पूर्ण सखिनके मध्य में श्री जानकी जी कैसी शोभित हैं मानहुं छबिके गणके मध्य में महाछबि शोभित होइ पुनि जैसे निर्मल नक्षत्र के मध्यमें निर्मल चन्द्रमा शोभित होइ महाछबि कही सम्पूर्ण छबिन को छबि देइ अनेक मणिगन के मध्य में जैसे चिन्तामणि शोभित होइतैसे (१) श्रीजानकी जीके कर कमल विषे जयमाल शोभित है विश्वके विजय करन हारी जो शोभा है त्यहि ज्यहि जयमालते शोभा पाईहै किन्तु बिश्व विजय जो श्री जानकी जीहैं ते ज्यहि जयमालते शोभापावती हैं काहेते जयमाल करिकै विवाह होतहै किन्तु विश्व बिजय जो श्री रामचन्द्र को बीर रस है ज्यहि जयमाल ते शोभित होतहै काहेते जयमाल करिकै श्री जानकीजी की प्राप्ति है इहां भविष्य वर्त्तमान एकही सा है किन्तु श्रीरामचन्द्र श्री जानकी जी करिकै सम्पूर्ण विश्वके बिजयकी शोभाज्यहि जयमाल को प्राप्ति है काहेते मणिद्रव सुमन पञ्च-रंगकी जयमाल है जनु मदन श्री रामचन्द्रकी शोभा देखिकै अपनी शोभा हारि कै लज्जित ह्वै कै अपने पांचहूं सुमन बाणकी जयमाल बनाइकै श्रीजानकी जीके करकमल करिकै श्री रामचन्द्र को समर्पण चहतहै कि धौं जयमाल शृंगार रसके पांचहू आलंबन सुमन रूप हैं उद्दीपन उत्कण्ठा अभीसार प्रीति सभोग कि धौं पञ्चरस भाव को जयमाल है शान्त दास्य वात्सल्य सख्य शृंगार काहेते सब रसिकनके मनको विजय करत है ताते विश्व बिजय शोभा जेहि पाई अरु कहूं छाई पाठहै सो जयमाल विषे बिश्व बिजयको शोभा छाइ रहीहै (२) श्री जानकी जीके गुरु जनको समाज करिकै तनुको संकोच है मन विषे परम उत्सवहै गूढ़ कही लज्जा करिकै छिपा प्रेम सो काहूको लखि नहीं परै (३) श्री जानकीजी श्री रामचन्द्र के समीप जाइकै छबिदेखिकै चित्रवत् रहिगईं (४)जब चतुर सखिन लखा कि जानकीजी तौ श्रीरामकी शोभा स्वरूपाकार ह्वैकै विदेहदशा को प्राप्त भईं तब समुझाइकै कहतीहैं कि रूपासक्त न होहु समय और है अब तुरन्त सुन्दर जयमाल श्री रामचन्द्रको पहिरावहु (५) मंगल मयवचन सुनिकै दोऊकरते जयमाल उठावती भईं तथापि संयोग शृंगारको संयोग है तेहिके प्रेम बश ह्वैकै जयमाल पहिराइ नहीं जाइ तहां दोऊ कर उठेते जयमाल कैसी शोभित है (६) जनु सनाल कहीं नालसहित द्वै कमल जनु शशिके भीतिते दोऊ करन ते जय माल देतिहैं जानकी

जीको तहां दोऊ भुज नालहैं करकमली कमल हैं कमली कही हथोरी अरु अँगुली दल हैं दोऊ करकी अँगुलिन ते जयमाल ग्रहण किये हैं ताते कर संपुट ह्वै रहेहैं जनु रामचंद्र को देखिकै भय करिकै कमल संकुचित ह्वै रहे हैं ऐसी भुजनकी शोभाते श्री जानकी जी श्री रामचन्द्र को जयमाल देती हैं (७) ऐसही अति हर्ष भरी श्री जानकी जी श्रीरामचन्द्र के उरमें जयमाल मेलती भईं सो छबि अवलोकिकै सखी मंगल गान करती हैं (८) सोरठा ॥ श्री रघुबरके उरविषे अति सुन्दर जयमाल मंगल मय देखिकै देवतासुमन बर्षतेहैं तहांमलीनराजा सकुचिगये जैसेसूर्यके प्रकाशते कुमुदकेगणसंपुटित ह्वैजातेहैं १ ॥

२६४ पुरअरुब्योमबाजनेबाजे । खलभयेमलिनसाधुसबराजे * १
सुरकिन्नरनरनागमुनीशा । जयजयजयकहिदेहिंअशीशा २
नाचहिंगावहिंबिबुधबधूटी । बारबारकुसुमावलिछूटी * ३
जहँतहँविप्रवेदधुनिकरहीं * । बंदीबिरदावलिउच्चरहीं ४
महिपातालनाकयशव्यापा । रामवरीसियभंजेउचापा ५
करहिंआरतीपुरनरनारी * । देहिंनिछावरिवित्तबिसारी ६
सोहतसियारामकीजोरी * । छबिशृंगारमनहुँएकठोरी * ७
सखीकहहिंप्रभुपदगहुसीता । करतिनचरणपरसअतिभीता ८
दो० गौतमतियगतिसुरतिकरिनहिंपरसतिपदपानि ॥
मनबिहँसे रघुवंशमणि प्रीति अलौकिकजानि १

२६४ पुर अरु व्योमविषे बाजनकी ध्वनि ह्वैरही है खल मलीनभये सब साधु आनन्दभरे गाजते हैं (१) सुर किन्नर नरनाग मुनीश जयजयकार कहिकै अशीर्वाद देतेहैं (२) देवतनकी बधूटी नाचती गावती हैं बारबार फूलनकी अवली वृष्टि करती हैं (३) जहां तहां ब्राह्मण वेदध्वनि करतेहैं अरु बन्दीजन विरदावली उच्चारण करते हैं चापतोरिकै श्रीरामचन्द्रने श्रीजानकीजीको बरेउ यह उज्ज्वल यशको प्रकाश त्रैलोक्य विषे महि अरु पातालमें व्यापिरह्यो है (५) पुरके नरनारि वित्त बिसारिकै आरतीकरते हैं वित्तबिसारि कह्यो मनबचन कर्म सदेस धन धर्म्मादकनको श्रीजानकी अरु रामके सबकी सुधि रहित न्योछावरि कीन्हि पुनि युग कृपाते भरइ देखियत है (६) रंगभूमि के मध्यविषे श्रीजनकनन्दिनी अरु श्रीरघुनन्दनजी की जोरी अतिशोभित है मानहुं छबि अरु शृंगारकी मूर्त्ति एकठौर शोभित है यह समयको उत्सव अरु परमानन्दसुख अरु युगुल जोरीकी शोभापर रामचरण कहतेहैं कि हमारीमति से त्रैलोक्यकी शोभा न्योछावरि है (७) तब चतुरसखी कहती हैं हे जानकी प्रभुके पदपंकज दोऊ करनते स्पर्शकरहु तहां हे पार्वती अति भीतिते जानकीजी प्रभुकेपद नहीं स्पर्श करतीं इहां अतिभीतिको अर्थ दोहामें सिद्ध होइगो (८) दोहार्थ ॥ पदपाणि कहिते नहीं स्पर्श करतीं गौतमकी तियाकी गति सुरति करिकै तब रघुबंशमणि अलौकिक प्रीतिजानिकै

बिहँसे इहां योगवियोग शृङ्गारकीदशा एकहीसंग होती है तहां श्रीजानकीजी के मन बिषे बियोगको अभावहै अरु संयोग बिषे विच्छितहावको प्राप्ति है ताते गौतमकी तिय कीगति सुरतिकीन्हि कि इनपदनको परसिकै गौतमकी तिय परमपदको प्राप्तभई किंतु निजपति लोकको गई इन चरणनको ऐसई प्रभावहै कदाचित् मेरे मोहूंको न होइ यहीभय करिकै पदपाणिते नहीं परसती यह बिचार करतीहैं कि पदपाणि परसौं अरु गौतमकी तियकी गति ऐसी मोहूंको प्राप्तिहोइ तौ बिक्षेपको प्राप्तहोउँ अरु मनी लौकिक वैदिकरीति करिकै पदपरसिबेको कहतो हैं ताते इनके संयोग हेतु मैंने लोक वेद दूनोंको त्यागकीन्ह ताते जानकीजी श्रीरघुनाथजी के पदनहीं स्पर्श करतीं यह लौकिकरहित अलौकिक प्रीति अतिगूढ़ लखिकै रघुवंशमणि मनर्वि बिहँसे यहि प्रकरणबिषे श्रीजानकीजी बिषे मानसीव्यथा आरोपण करी शृङ्गाररसकी यहदशा है अरु जो कहतेहैं कि जानकीजी ने गौतमकी तियकीगति यह सुरतिकीन्ह कि पापाणकी स्त्री ह्वैगई ताते जो मैं पदपरसौं तौ मेरेकंकण मुद्रिका की मणि मय स्त्री ह्वैजाहिंगी जो यह सिद्धिकरिये तौ जो कंकण मुद्रकाकी मणि स्त्रीह्वै जाइ तो यामें जानकीजी कीका हरकति है श्रीजानकीजी तौ पटबंधनी परम मुख्य हैं अरु श्रीजानकीजी की आज्ञानुकूल अनेकसखी दासीहैं अरु अनेकहोहिं तौ यामें श्रीजानकीजीको कौनभय है जो कहो कि कंकण मुद्रकाकी मणि अंगसंगी है सवति भावको प्राप्तहो इंगी तौ सम्पूर्णसखी जानकीजीको अंगही हैं अरु अहल्या पापाणते स्त्रीह्वैकै परमपदको प्राप्त भई तहां जो कंकण मुद्रकाकी मणि स्त्रीह्वै जाहिं तौ येभी परमपदको प्राप्तहोहिं तौ श्रीजानकीजीको कौन अकारर्य है अनेकन हेम मणिन मय अलंकार भरेधरेहैं जबचाहैं तब तौन तैयारहै ताते यह अर्थ कल्पना है (१)॥

देखिभूपअभिलाखे * । कूरकुपूतमूढ़मनमाखे * १

उठिउठिपहिरिसनाहअभागे । जहँतहँगालबजावनलागे * २

लेहुछुड़ाइसीयकहकोऊ । धरिबाँधहुनृपबालकदोऊ * ३

तोरेधनुषकाजनहिंसरई । जीवतहमहिंकुँवरिकोवरई * ४

जोविदेहकछुकरहिंसहाई । जीतहुसमरसहितदोउभाई ५

साधुभूपबोलेसुनिबानी * । राजसमाजहि लाजलजानी * ६

बलप्रतापबीरताबड़ाई * । नाकपिनाकहिसंगसिधाई ७

सोइसूरताकिअबकहुँपाई । असिबुधितवबिधिमुँहमसिलाई ८

दो० देखहु रामहिं नयन भरि तजि ईर्षा मद कोहु ॥

लषणरोष पावकप्रबल जानिशलभ जनिहोहु १

२६५ तब श्रीजानकीजी को देखिकै मिथ्या अभिलाष करिकै कूरकुपूत मूढ़भूप मनमें माखे (१) उठि उठि सनाह पहिरिकै अभागे जहां तहां गाल बजावनेलगे (२)

ऐसे मूर्ख कहते हैं कि जानकीजी को छीनलेहु अरु दोऊ बालकन को बांधि लेहु (३) धनुष के तोरेते कार्य सिद्धि ह्वैगे जो हमारे जियत कुँवरि को बिवाहैगो (४) मूर्ख राजा बोलते हैं कि जो बिदेह इनको कछु सहाय करैं तौ उनके सहित इनको समर में जीतिलेहु (५) मूर्ख राजनको बाणी सुनिकै साधु राजा बोले हे मूर्खहु राजनको समाज में तुम्हारी लज्जा लजाय जातीहै अरु तुमको धिक्कारनहीं आवती (६) तुम्हाराबल प्रताप बीरता बड़ाई अरु नाक तौ पिनाकहि के संगगई (७) जो धनुष तोरिबे में बीरता तुम कीन्हिहै सोई बीरता है कि औरि कहूं पाईहै ऐसोही बुद्धिते बिधाता ने तुम्हारे मुंहमें स्याही लगाई है (८) दोहार्थ ॥ हे अभागिहु ईर्षा मद कोहको तजिकै श्रीरामचन्द्रको नयननभरि देखहु लक्ष्मणजूको रोष प्रबल पावक तामें पतंग जनि होहु (१)॥

२६६ बैनतेयबलिजिमिचहकागा । जिमिशशचहैनागअरिभागा १

जिमिचहकुशलअकारणकोही । सुखसंपदाचहैशिवद्रोही २

* । निकलंकताकिकामीलहई ३

हरिपदबिमुखपरमगतिचाहा । तसतुम्हारलालचनरनाहा ४

कोलाहलसुनिसीयसकानी * । सखीलेवाइगईजहँरानी ५

रामसुभायचलेगुरुपाहीं * । सियसनेहबर्णतमनमाहीं ६

रानिनसहितशोचबशसीया । अबधौंबिधिहिकहाकरणीया ७

* इतउतबकहीं । लषणरामडरबोलनसकहीं ८

दो॰ अरुण नयन भृकुटीकुटिल चितवत नृपनसकोप ॥
मनहुँ मत्तगजगण निरखि सिंहकिशोरहिचोप १

२६६ साधु राजा कहतेहैं हे मूर्खहु तुम्हारी वासना कैसी बृथाहै जैसे गरुड़ के यज्ञ भागको काग चाहै अरु जैसे शशा कहो खरहा सिंह के भागको चाहै (१) पुनि अकारण क्रोधी जेहैं ते जैसे अपनी कुशल चाहैं अरु शिवसे द्रोह करते हैं पुनि सुख सम्पदा चाहते हैं ते बड़े मूर्ख हैं (२) अरु जैसे लोभी अरु लोलुप कहो झूंठे ये दोऊ बृथा कीर्तिको चाहते हैं अरु जैसे कामी चाहते हैं कि मैं निष्कलंक रहौं (३) अरु हरिके पदते विमुख हैं परन्तु परमपदको चाहते हैं हे राजहु ऐसेही तुम्हारी बृथा लालसाहै (४) राजन के गलबा को कोलाहल सुनिकै श्रीजानकीजी सकाय उठीं तब सखी रानीके पासको लेवाय लैगई (५) तब श्रीरामचन्द्र सहजही गुरुन के समीप को श्रीजानकीजीकी शोभा अरु स्नेह मनमें वर्णत चले (६) श्रीजानकीजी अरु सब रनिवास शोचके बश हैं अब धौं बिधाताको काकर्तव्यहै (७) खल राजा जे हैं ते इतउत बकतेहैं सो सुनिकै लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रके डरते बोलिनहीं सकते हैं (८) दोहार्थ ॥ खल राजाजेहैं ते इतउत बकतेहैं सोसुनिकै लक्ष्मणजू कोप संयुक्त देखतेहैं अरुण नेत्र

हैं भृकुटी कुटिल हैं मानहुँ मत्तगजनके गण्डको चीरबे सिंह की किशोर हुनी हैं (९)

२६७ खरभरदेखिबिकलपुरनारी। सबमिलिदेहिंमहीपनगारी १

त्यहिअवसर सुनिशिवधनुभंगा। आयेभृगुकुलकमलपतंगा २

देखिमहीपसकलसकुचाने। बाजझपटजनुलवालुकाने ३

गौरशरीरभूतिभलिभ्राजा। भालबिशालत्रिपुण्डबिराजा ४

शीशजटाशशिवदनसुहावा। रिसबशकछुकअरुणह्वैआवा ५

भृकुटीकुटिलनयनरिसराते। सहजहुँचितवतमनहुँरिसाते ६

वृषभकंधउरबाहुबिशाला। चारुजनेउमालमृगछाला ＊ ७

कटिमुनिबसनतूणदुइबाँधे। धनुशरकरकुठारकलकाँधे ＊ ८

दो० शान्तवेष करणी कठिन बरणि न जाइ स्वरूप॥
धरि मुनि तनु जनु वीर रस आये जहँ सब भूप १

२६७ मन्द महीपन को खरभर देखिकै पुरके सब नरनारि गारी देहिं (१) धनुष के भंगको शब्द सुनिकै अपने आश्रमते परशुराम चले चले त्यहि अवसर में आय प्राप्त भये कैसे हैं भृगुबंश कमल को वनहै त्यहिके प्रफुल्लित करिबेको पतंग कही सूर्य हैं (२) परशुरामको देखिकै सब महीप सकुचाय गये जैसे बाजके झपटे ते बटेर छिपिजाय (३) गौरशरीर बिषे बिभूति अति शोभित है अरु बिशाल भाल बिषे त्रि-पुण्ड विराजत है (४) शीशविषे जटा शोभित है तिनके अग्रभाग दामिनिको द्युति का देतहैं अरु चन्द्रवदन शोभतहै रिसके बशते कछु अरुण होइ आयेहैं (५) रिसके बशते भृकुटी कुटिल ह्वैरहीहैं अरु नयन रिसके सन्ते आरक्त ह्वैरहेहैं जाकीओर सह-जहू देखते हैं ताको क्रोधित लक्षित होते हैं (६) अरु वृषभ के ऐसे कन्धहैं उर भुज विशाल हैं सुन्दर यज्ञोपवीत है जनु धूम्र रंग घनपर तड़ितन की तीनि रेखा हैं अरु मृगन विषे मालसिंह तेहिको चर्म धारित है किन्तु मृग चर्मकी माला इव धारण है (७) कटि विषे मुनि वस्त्र धारण कियेहैं तापर दुइतूण बांधे हैं कर विषे धनुष बाणहै अरु कलकही शोभित कुठार कन्ध विषेहै (८) दोहार्थ ॥ शांतरसको तो वेष है अरु करणी कठिन है यह विलक्षण स्वरूप कहा नहीं जाइ जनु वीररस मुनि वेष को तनु धारिकै राजनको समाज में आयो है (१) इतिश्रीरामचरित्रमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबा-लकांडेश्रीजानकीकरजयमालग्रहणउत्सवउपरांत परशुरामआगमनसक्रोधवर्णनन्नामएको-नपंचाशत्तरंगः ४९ ॥

दो० रामचरण पञ्चासवीं लहरि अनन्द अन्हाइ ॥
रामलषण पाई बिजय भृगुपतिगे सुखपाइ ५०

२६८ देखतभृगुपतिवेषकराला। उठेसकलभयबिकलभुआला १

पितुसमेतकहिकहिनिजनामा। लगेकरनसबदंडप्रणामा २

उर्यानिहस्वभावअचितहिंहितजानीसोजानैजनुआयुखोटानी ३
जनकबहोरिआ सिरनावा। सीयबोलायप्रणामकरावा ४
आसिषदीन्हस । निजसमाजलैगईंसयानी ॥
॥। पदसरोजमेलेदोउभाई ॥
लपणदसरथकेढोटा ॥ । दीन्हअसीसदेखिभलजोटा ७
रामहिंचितैरहेथकिलोचन। रूपअपारमारमदमोचन ॥ ८

दो० ब

पूछतजानअजान जिमि व्यापेउकोप शरीर १

२९८ भृगुपति को कराल वेष देखिकै सकल राजा भय करिकै उठे (१) पिता समेत निज निज नाम कहिकै परशुरामजीको दंड प्रणाम करने लगे (२) जाको स्वाभाविक अपनो हित जानिकै देखते हैं ते भय करिकै जानत हैं कि हमारी मृत्यु भई (३) तब परशुरामजी के समीप जनकजू जाइकै पगमें शिर नाइकै जानकी जी को बोलाइकै प्रणाम करावते भये (४) परशुरामने आशीर्वाद दीन्ह हर्ष संयुक्त सयानी सखी निज समाज को लैगईं यहां सयानी कहो प्रवीण सखिन जाना कि परशुराम क्रोधित हैं ये कदाचित् शाप न देहिं (५) पुनि परशुरामजीको बिश्वामित्र परस्पर प्रीति ते मिलेजाइ अरु दोऊ भाइनको परशुरामके पगमें डारते भये (६) पुनि बिश्वामित्र बोले हे महामुनि अवध पति राजा दशरथ तिनके ये दोऊ कुमार हैं अरु ताड़का सुबाहु इत्यादिक राक्षसनको बध करिकै मेरे यज्ञकी रक्षा करिकै अपने चरण रजते अहल्या को कृतार्थकरिकै धनुषयज्ञ देखिवेको आये हैं तहां स्वहिं समेत दोऊ कुमारन को आपहू को दर्शन भयो यह बड़ो लाभभयो यहां विश्वामित्र की बाणी बिषे अनेकन अभिप्राय हैं को कहिसकै तहां परशुराम जीने दोऊ कुमारनको अति शोभा देखिकै आशीर्वाद दीन कि तुम चिरंजीवि सदा जयमान रहो परशुराम के आशीर्वाद में अनेकन अभिप्राय हैं आशीर्वादके संगही परशुराम जूको ईश्वरत्व श्री रामचन्द्र बिषे प्राप्त भयो जाइ कैसे जैसे मुखके द्वार ह्वैकै पवन हृदय में प्रवेश करै (७) तहां श्रीरामचन्द्र को स्वरूप देखिकै परशुरामजी के नेत्रनकी पलकैं थकि रहीं श्रीरामचन्द्र के रूप की अपार शोभा सो कोटिन मारकी शोभाके समुद्रको हरति है सो शोभा परशुराम के देखत अवलोकनिकी राह ह्वैकै परशुराम जीको ब्रह्मतेज श्रीरामचन्द्र बिषे प्राप्त भयो पुनि पश्चात् तपको जाहिगे अरु आप तौ सदा शुद्धहैं ताते बिश्वामित्र की वाणी में ध्वनि अच्छी तरह न जाना काहेते श्रीरामचन्द्रजी की शोभा अच्छी तरह देखि रहे (८) दोहार्थ॥ तहां श्रीरामचन्द्रजीको अति सुन्दर स्वरूप नेत्रन के अन्तर राखिकै अरु नेत्रनके गोलकन ते बिदेहकी ओर देखते भये हे बिदेह यह कहा भीरहै हे गरुड़ देखो तौ जानिकै अजानकी नाईं बूझते हैं यामें सत्य वाक्य की कछुक न्यूनता है तहां परशुरामजीको त्रिकालज्ञ जानिकै जनकजू नहीं बोले तव परशुरामजीने शरीर में

कोप उत्पन्न कीन्ह कारेते श्रीरामचन्द्रजी परशुराम जी के द्वार ह्वैके यह परम दिव्य अलौकिक लीला करते हैं (१) ॥

२६९ समाचारकहिजनकसुनाये । ज्यहिकारणमहीपसबआये १
सुनतबचनपुनिअनततनिहारे * । देखाचापखंडमहिडारे * २
अतिरिसबोलेबचनकठोरा । कहुजड़जनकधनुषक्यहितोरा ३
बेगिदिखावमूढ़नतुआजू । उलटौंमहिजहँलगितवराजू ४
अतिडरउतरदेतनृपनाहीं * । कुटिलभूपहर्षेमनमाहीं * ५
सुरमुनिनागसकलनरनारी । शोचहिंसकलत्रासउरभारी * ६
मनपछितातिसीयमहतारी । बिधिसँवारिसबबातबिगारी ७
भृगुपतिकरस्वभाव सुनिसीता । अर्द्धनिमेषकलपसमबीता ८

दो० सभय बिलोके लोगसब देखिजानकिहिभीर ॥
हृदय न हर्ष बिषाद कछु बोले श्री रघुबीर १

२६९ तब क्रोध करिकै बारम्बार परशुराम जी जनकजूते बूझते हैं तब जनकजीने महीपनके आइबेके सब समाचार कहि सुनायो (१) जनकजू के वचन सुनिकै इतै उतै निहारेउ महि विषे चापको खण्डित देख्यो (२) तब अति रिसते कठोर बचन बोले हे जड़ जनक कहु धनुषको किसने तोराहै तहां रौद्र रसको संचारी क्रोध अरु क्रोधको संचारी कटु वचन ताते जनकजूको जड़ कहा अरु रे खल अभिप्राय में ज्ञानीकी अरु जड़की एक दशा है ताते जनकको जड़ कहा किंतु खण्डान्वय करिकै अर्थ करते हैं हे जनक कहु यह जड़ धनुष क्यहिं तोरा यह अर्थ ध्वनि करिकै है (३) पुनि भृगुपतिबोले हे मूढ़ ज्यहिं धनुषतोरा है त्यहि को वेगि बताउ नतु जहां तक तेरीराज्य है सो महि उलटिकै पातालको पठैदेहौं यहां जनक को जड़ अरु मूढ़कहा दूनों शब्दके अर्थको एकही सम्बन्धाभिप्राय है (४) तहां अतिशय डरते राजा परशुरामजी के वाक्यको उतरनहीं देते यहां राजा डराने कि परशुराम महातेजस्वी बीरहैं अरु इनको क्षत्रिनपर दण्डहै पुनि महामुनिहैं तातेडरे तहां परशुरामको क्रोधित जानिकै कुटिल भूप मनमेंहर्षे (५) अरु सुर मुनि नाग नगरके नरनारि सबअति त्रासते शोच करतेहैं (६) सुनयना पछितातो है कि विधाता सबबात सुधारिकै बिगारतहैं (७) तहां भृगुपतिकर स्वभाव समुझिकै जानकीजीको अर्द्ध निमेष कल्पसम बीतत है (८) दोहार्थ ॥ तब श्रीरामचन्द्रजीने सबको भयसंयुक्त देख्यो अरुजानकीजीको भीरु कही अतिभय संयुक्तदेख्यो तब हर्ष विषाद रहित श्रीरघुबीर परशुरामजी से बोले यहां बीरकही रघुवंशकुलके प्रियभूषण किन्तु रघुसंज्ञा सर्वजीवकी है तिनके बीरकही प्रिय हैं किन्तु यहां परशुरामजीको बल तेज प्रताप परास्तहोइगो ताते बीरकहा (१) ॥

२७० नाथशम्भुधनुभंजनहारा । होइहिकोउयकदासतुम्हारा * १

हयकिंनसोही। सुनिरिसाइबोलेमुनिकोही २
से * । अरिकरणीकरिकरियलराई ३
। हुस । ४
समाजा * । नतुमारेजैहैंसबराजा * * ५
सुनिमुनिबचनलखणमुसुकाने । बोलेपरशुधरहिंअपमाने * ६
बहुधनुहींतोरींलरिकाईं * * । कबहुंनअसरिसकीन्हगुसाईं ७
यहिधनुपरममताकेहिहेतू * । सुनिरिसाइकहभृगुकुलकेतू ८
दो० रेनृपबालक कालबश बोलत त्वहि न सँभार ॥
धनुहीसम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार १

२७० तब श्रीरामचन्द्रजी दोऊ करजोरिकै बोले हे नाथ ज्यहिं शंभुको धनुभंज्यउहै सो तुम्हारो कोई एकदास होइगो यामें यह अभिप्रायहै कि धनुष हमने तोरा है [१] अब जो आयसुहोइ सो मोपर करिये यह सुनिकै मुनिक्रोही रिसायकै बोलतभये [२] हे राम सेवक तौ वाकोकह्यो जो सेवकाई करै अरु अरिकी करणीकरै सो लराई का कार्यहै [३] तहां परशुराम सब जानिजानि औरके मिसु रामचन्द्रको कहतेहैं हेराम ज्यहिं शिवको धनुष तोरा होइ सो सहस्राबाहु की समान हमारो रिपुहै [४] ज्यहिं धनुष तोराहोइ सो समाजते अलगाइकै ठाढ़होय नतु सब राजा मारेजाहिंगे [५]तब मुनिके बचन सुनिकै लक्ष्मणजू मुसुकाइकै परशुधरका अपमान करिकै बोले परशुराम लक्ष्मण दोऊ समर्थके सम्बादमें अपमान बाणीहै अरु श्रीरामराम परस्पर पूर्व परःतुति वाणी [६] लक्ष्मणजी बोले हे मुनि लरिकाईमें हमने ऐसी ऐसी धनुहीं बहुत तोरीहैं पर ऐसीरिस आपकबहूं नहीं कीन्ह यह व्यंग्यापमान बचन है [७] अरु यहि धनुपर आपको कौनेहेतु बड़ी ममत्व है यह हमनहीं जानते इतना सुनिकै परशुराम क्रोध करिकै बोले [८] दोहार्थ ॥ रे नृपबालक तैं कालके बशभयस जो सँभारिकै नहीं बोलै जैसे सब धनुष तैसे त्रिपुरारिको धनुष जो त्रैलोक्यमें बिदित है [१]॥

२७१ लखणकहाहँसिहमरेजाना । सुनहुदेवसबधनुषसमाना * १
कालक्षतिलाभजीर्णधनुतोरे * । देखारामनयनकेभोरे * २
छुवतटूटरघुपतिहिनदोषू । मुनिबिनुकाजकरियकतरोषू * ३
बोलेचितैपरशुकीओरा * । रेशठसुनेस्वभावनमोरा * * ४
बालकजानिबधौंनहिंतोहीं । केवलमुनिकरिजानेसिमोहीं ५
बालब्रह्मचारीअतिकोही । बिश्वबिदितक्षत्रीकुलद्रोही * ६
भुजबलभूमिभूपबिनकीन्हे । बिपुलबारमहिदेवनदीन्हे * ७

सहस्रबाहुभुजछेदनहारा ॐ। परशुबिलोकुमहीपकुमारा ॐ ८

दो० मातुपितहि जनि शोचबश करसि महीप किशोर ॥
गर्बिन के अर्भक दलन परशु मोर अति घोर १

५ लक्ष्मणजू हँसिकै कहतेहैं कि हमारे जान यह देशबाणीहै तहां रे पद यह जोहै सो अद्यापि श्रीअयोध्या मण्डलमें बोलतेहैं तहां जो कोईकहै कि रे पद यहजोहै सो परायेको अपमान करतहै तहां हमकहतेहैं कि रे पद यह जोहै सो सर्वोपरि उत्तम बाणीहै काहेते कि श्रीअयोध्यापुरी सहित मण्डल वैकुण्ठादिक सब पुरिनको मस्तकहै तहांके बासी श्रीरामचन्द्रजी के अनन्य भक्त सूचित होत हैं काहेते कि रे शब्द मत्र स्वाभाविकै बोलते हैं सो सबको श्रीअयोध्याकी उपमाको अभाव सूचित है किन्तु दूसरा अर्थ पाछे समीपही श्रीगोसाईंजी ने कह्योहै [चौपाई] बोलेपरशुधरहिंअपमाने ॥ हे पार्वति परशुधरहिं कही परशुधरको अपमान करिकै बोले ताते हमारे जान याहिपद में अपमान अन्वयहै तहां लक्ष्मणजूने पूर्वही अपमान बाणीकही है हेरे ब्राह्मण हमनेसब धनुषन की समानै जानिकै तोराहै काहेते कि एक श्रीरामशार्ङ्ग छोड़िकै अपर जे धनुषहैं दशौदिगपाल चन्द्र सूर्यदेव दानव मनुष्य अरु बिधिहरि हर देव शिरोमणितिन सबनके धनुषको हम सम सामान्य मानते हैं न्यूनाधिक प्राकृत गुणनके संयोग ते सामान्य है अरु श्रीरामचन्द्रको शार्ङ्ग बिशेष गुणातीत है ताते कहाहै रे महिदेव हमने सब धनुषनके सम जाना याहि चौपाई बिषे अक्षरार्थ अन्वयभाव जानब परम सुन्दर अभिप्रायहै अरु लोक वेद अनुभव अनेक युक्ति उक्ति अलंकार इत्यादिक लक्षणा व्यंजना मिश्रित अन्वय है [१] पुनि लक्ष्मणजी कहते हैं हे मुनि यह जीर्ण धनुष तोरेते कहा करी प्रत्यक्ष सो कहहित हमको हानि लाभ है श्रीरामचन्द्र नयनके ओरे देखने लगे [२] तहां धनुष छुवतै टूटि गयो है श्रीरघुबरको दोष नहीं है मुनि बिना प्रयोजन काहे को रोष करतेहौ यहां व्यंजना तर्क युत प्रताप बाणीहै [३] तब परशुराम परशा की ओर चितैकै बोले रे शठ मोर स्वभाव तैंने नहीं सुना [४] बालक जानिकै तोको बचावत हौं अरु तैं केवल मोको मुनिही जानैहै [५] मैं अस मुनिहौं कि बाल ब्रह्मचारी अरु बालही ते अति कोहीहौं अरु बिश्वमें बिदित क्षत्री कुलको द्रोहीहौं [६] अपने भुजनके बल करिकै बिना भूपकी भूमिकरि बिपुल बार ब्राह्मणन को मैं दीन्हिहै [७] हे महीप कुमार सहस्राबाहुके भुजनको छेदन हारा परशा सो तू बिलोकु [८] दोहार्थ ॥ हे महीप किशोर सो काम तैं न कर जाते मैं तोको मारौं तेरे मारते तेरे माता पिता शोचके बश मरिहिंगे अरु जेते गर्बी पुरुष हैं तिनको गर्व अर्भक कही बालकहै तिनके दलिबे को मोर परशा अतिघोर है यहां मुनिकी बाणी बिषे प्रसिद्ध तिरस्कार है [१]॥

२७२ बिहँसिलषणबोलेमृदुबानी । अहोमुनीशमहाभटमानी १
पुनिपुनिमोहिंदेखाउकुठारू । चहतउड़ावनफूंकपहारू २
यहांकुम्हड़बतियाकोउनाहीं । जोतरजनीदेखिमरिजाहीं ३

देख   । मैंक   हतश्रभिमाना ४

भृगुसुतसमुझिजनेउबिलोकी । जोकछुकहहुसहौंरिसरोकी । ५

सुरमहिसुरहरिजनश्ररुगाई * । हमरेकुलइनपरनसुराई * ६

बधेपापश्रपकीरतिहारे * * । मारतहूं पांपरियतुम्हारे * ७

कोटिकुलिशसमबचनतुम्हारा । वृथाधरहुधनुबाणकुठारा ८

दो० जो बिलोकि अनुचित कहेउँ क्षमहु महा मुनिधीर ॥
सुनि सरोष भृगुबंश मुनि बोले गिरा गंभीर १

२७२ तब लक्ष्मण जू व्यंग्यमृदु बाणी ते परशुराम को उत्तर देते हैं हे महामुनीश अहो आश्चर्य महाभट तुम आपको माने हौ (१) अरु पुनिपुनिकहौ बारम्बार हमको कुठार देखावते हौ फूंककरिकै पहाड़ उड़ाबा चाहते हौ (२) हे मुनि यहां कुम्हड़ाकी बतिया कोई नहींहै जो तर्जनी देखत संते मरिजाय (३) मैंने तुमको जोकछु अभिमान भरी बातैं कहीहैं सो परशा धनुबाण बांधे देखिकै काहेते अस्त्र शस्त्र हमारो क्षत्रिन को धर्महै (४) हेमुनि एक तौ ब्राह्मण दूजे उत्तम कुल भृगुबंश यह समुझि कै जो कछु कहौ सो रिसरोकि कै सब सहैंगे (५) काहेते कि सुर महिसुर हरिजन कहौ वैष्णव को तिलकमात्र अथवा गुणान करिकै अरु गऊ इनके ऊपर हमारे रघुवंश कुल भरि शूरता नहीं करते इनको सात्विकी मानिकै टेढ़ो कर्त्तव्य देखिकै क्षमाकरि जाते हैं (६) काहेते इनको तयार ह्वैकै बधिये तौ पापहै अरु जो पछरि अर्थात् हारिजाइये तौ जगत् में अपकीर्त्ति होइ ताते कदाचित् जो तुम हमको मारौ तबहूं हम तुम्हारे पांयन परैं (७) हे महा मुनीश तुम्हारे कोप संयुक्त जो बचन हैं सो कोटिन बज्रकी समानहैं कोटिबज्र क्यों कहा जेती कोटिबज्र के पौरुष करिकै विनाश होइ तेतीसामर्थ्य ब्राह्मणान के एक बचन में है पर जो अपने ब्रह्मत्व में नीकी प्रकारते दुरुस्त होइ तब ताते तुम धनुष बाण कुठार वृथा धारण करते हौ इन बाणिन बिषय व्यञ्जना लक्षणा की युक्ति उक्ति मोपै नहीं कही जाइ तहां अनेक ध्वनिपर एकध्वनि मैं कहत हौं यहां यह ध्वनिहै कि हे परशुराम शस्त्र बांधना तुम्हारो धर्मनहीं है जाते तुम अपने धर्म के अधर्मीहौ ताते तुम्हारो कोपभी बृथाहै कैसेजाना कि कोपायुध करिकै सदातुम पापही कीन्ह्योहै काहेते ज्यहि क्रिया विषेकेवल पापहीहोइ सोकर्म बृथाहै काहेते परिणाममें क्लेशहै यामें यह ध्वनि भई कि हेमुनि तुम्हारो सर्बकर्तब्य बृथाहै काहेते श्रीरामचन्द्रते कुवाद करतेहौ वृथा धरहु धनुबाण कुठारा यहि चौपाईके अनेकन अभिप्रायमें एक अभिप्रायहमने कहा (८) दोहार्थ ॥ देखियेतौ शस्त्रधारी कहतेहैं अरु महामुनि धीर कहतेहैं यामें मुनि पदकी निन्दा भई यहि दोहा में स्तुति रूपा निंदा की व्यञ्जना कहते हैं लक्ष्मणजीबोले हे महा मुनि धीर आप को आयुध बांधे देखिकै जो अनुचित हमने कहा होय सो क्षमा करहु यामें यह व्यंग्ययुक्त भई कि परशुधरको वेष ब्रह्मधर्म क्षत्री धर्म लिहेहैं ताते लक्ष्मणजीने देखिकै अपने मनमें कहा कि आजुलौं यह संकरबर्ण वेष

किसू में नहीं देखा लोक वेद विरोधीवेष किये हैं ताते यह वेद विरोधी ब्राह्मणने श्री रामचन्द्रजीको प्रथमहिं दुर्वचन जानिके कह्यो (चौपाई) सुनहु राम जो शिव धनु तोरा। सहसबाहु समसो रिपु मोरा॥ यहि बाणी में श्रीरामचन्द्रको तिरस्कार लक्ष्मणजीको समुझि परेउ वह लक्ष्मणजू नहीं सहिसके ताते प्रथमहिते खण्डन करनेलगेपरशुरामको वाक्य बीर रसते खण्डिके अंतमें नाश करि दीन्हयह सेवक स्वामी के अनन्य भावकी रीति है यह सुनिके भृगुपति कोप करिके गंभीर बाणी बोले (१)॥

२७३ कौशिकसुनहुमन्दयहबालक। कुटिलकालबशनिजकुलघालक १
भानुबंशराकेशकलंकू * * । निपटनिरंकुशअबुधअशंकू २
कालकवरहोइहैछणमाहीं। कहौंपुकारिखोरिमोहिंनाहीं ३
तुमहटकहुजोचहौउबारा *। कहिप्रतापबलरोषहमारा ४
लषणकहामुनिसुयशतुम्हारा। तुमहिंअछतकोबरणैपारा ५
अपनेमुखतुमआपनिकरणी । बारअनेकभांतिबहुबरणी ६
नहिंसंतोषतौपुनिकछुकहहू। जनिरिसरोकिदुसहदुखसहहू ७
बीरब्रतीतुमधीरअछोभा *। गारीदेतनपावहुशोभा * * ८
दो० शूर समर करणी करहिं कहि न जनावहिं आपु॥
विद्यमान रिपु पाइ रण कायर करहिं प्रलापु १

२७३ हे कौशिक यह बालक मंदहै अरु कुटिल है कालके बशहै निजकुल को घालकहै (१) सूर्यबंश सोई राकेशहै त्यहिविषे यहबालक कलंकहै निपट निरंकुशहै अबुध " अशंक " (२) यहि क्षण विषे यह बालक कालको कवर होवा चाहतहै मैं पुकारिकै कहत हौं मेरोदोष नहींहै (३) जो यहि बालकको तुम उबारा चाहौ तो हमारो प्रताप बलरोष जनाइकै याको हटकहु (४) तब लक्ष्मणजू कहतेहैं हेमुनि तुम्हार सुयश तुमहीं जो अपने मुखते कहत हौ औरको कहिसकै (५) अपने मुखते तुम अपनी करणी अनेक भांतिने बारम्बार कहते हौ (६) अरु जो यतना कहते संतोष नहीं भयोहोय पुनि कछु कहौ अपने हृदय में रिस रोकिकै दुसह दुःख काहेको सहते हौ (७) अरु बीरब्रती कहौ बीररस तुम्हारो ब्रत है अरु तुम धीरमान हौ अरु अछोभ कहो संदेह रहित हौ ताते गारीकहौ तिरस्कारित बचन कहेते शोभा नहीं पावहुगे (८) दोहार्थ॥ हे मुनि जे शूरहैं अरु समर विषे करणी करते हैं ते अपने मुखते कहिकै नहीं जनावते अरु रिपु को विद्यमान पायकै कादर जेहैं ते अनेकन कल्पना करते हैं तात्पर्य्य यह कि जो कहते हौ सो करि देखावहु यह दोहा भरेमें व्यंग्यहै (१)॥

२७४ तुमतौकालहांकिजनुलावा। बारबारमोहिंलागिबुलावा १
सुनतलषणकेबचनकठोरा। परशुसुधारिधरेउकरघोरा * २

अबजनिहिं दोषदेहिं जनिलोगू । कटुब

बालबिलोकिबहुतमैंबांचा । अबयहमरनिहारभासांचा * ४

कौशिककहछमियअपराधू । बालदोषगुणगनहिं नसाधू ५

कर [illegible] मकोही * । आगेअपराधीगुरुद्रोही *

उत्तरदेतछांड़ोंबिनुमारे * । केवलकौशिकशीलतुम्हारे * ७

नतुयहिकाटिकुठारकठोरे । गुरहिंउऋणहोत्यउंश्रमथोरे ८

दो० गाधिसुवन कह हृदय हँसि मुनिहिं हरिअरै सूझ ॥
अजगव खांडेउ ऊख मय अजहुं न बूझ अबूझ १

२७४ लक्ष्मणजू कहते हैं मुनि तुमने तौ मानौ कालको हांकिलगाइ राखा है हमारे निमित्त वारम्वार बोलावते हौ(१)यह श्रीलक्ष्मणजूकी बाणी अति कठोर व्यंग्य सहित मुनिके घोर परशा करमें सुधारिकै धरते भये (२) यह पुकारिके कहते हैं कि अब मेरो दोष कोई न देइ यह बालक कटुवादी है याहीते बध योग्यहै (३)याको मैंने बालक विलोकि कै बहुत बचायो अब यह सांचहु मरणहार भयो (४)तब हे गरुड़ कौशिक मुनि बोले हे मुनीश बालकको दोषगुण साधु नहीं गनते (५)हे कौशिक देखिये घोर परशा तौ मेरे हाथ में है अरु तुम जानते हौ मैं अकारण क्रोधी हौं तहां एक अकारण है अरु एक कारण है तहां कारण कहो जो कछु कहिकै करिकै क्रोध करावते हैं अरु एक अकारण है बिना कारणै क्रोधकरै ताहि अकारण कहो तहां मैं अकारण क्रोधी हौं बिना कारण क्षत्रिन को नाशकरि दियो है अरु यहां तौ महाक्रोध को कारण है सो असमय अरु त्यहिके आगे यह मेरो गुरुनको द्रोही बालक ठाढ़ कटुबाद करत है (६) अरु मेरे वचन में उत्तर प्रत्युत्तर तर्क करैहै अरु हे कौशिक ताहूपर मैं बिनामारे छांड़त हौं केवल तुम्हारेही शीलते (७) जो तुम्हार शील न करत्यहुं तौ यहिको कठोर कुठारते काटिके बिनाश्रमहि थोरे महँ गुरुनते उऋण होत्यहुं (८) दोहार्थ॥ तब गाधिसुवन कहो बिश्वामित्र अति धीर बहँसि कै हृदय में कहते हैं कि मुनिको सावन को हरिअरै सूझत है जैसे सब क्षत्रिनको जानतेहैं तैसे इनको भी जानते हैं किन्तु मुनि को हरिअरै सूझत है हरिअरै कहो सब काल में हरित अरु हरित कहो अति लालित्य कोमल सुन्दर हृदय को आह्लादरूप नित्य प्रसन्न एकरस इत्यादिक हरित के विशेषण हैं हरित बिशेष्य है अरु हरित के गुण शील उदार दया करुणा कृपा इत्यादिक अनेक अरु हरित नित्य हरिअरै कहो कवन्यहु काल में सूखै नहीं एकरस नित्य ऐसो तौ एक परमेश्वर है एकरस नित्य अखण्ड हरित जामें अनंत बिशेषण अरु गुण हैं सो मुनिको कृपारूप श्रीरामचन्द्र हरिअरै सूझिपरे जो कहौ कि मुनिको श्रीरामचन्द्र परमेश्वर सूझिपरेउ पुनि कटुबाद क्यों करते हौ तहां परीक्षालैकै निश्चय करते हैं अरु जो यह अर्थ करते है कि मुनिहि हरिअरै सूझ कि हरि जो श्रीरामचन्द्रते मुनिको अरि सूझत हैं यहि अर्थमें दुइचारि दूषण हमने देखे ताते सामान्य

मानत हैं बिश्वामित्र कहते हैं कि मुनिको केवल राजबालकै श्रीराम लक्ष्मण सूझते हैं यह नहीं बिचार करते कि अपनंज्ञा धातुकी त्यचिमें धनुष अतिकठोर ताको उग्र भूमि खण्डनकीन्ह रघुनाथजी के छुअतही धनुष उपमय ह्वैगयो जैसे बालक रसकेहेतु नर्मऊख तोरिडारत हैं तैसेही श्रीरामचन्द्रने श्रीजानकीजी के बिवाह रसहेतु धनुषको तोर्यो ऐसहु पराक्रम श्रीरामचन्द्रको देखिकै मुनिनहीं बूझत ऐसेअबूझ ह्वैगयेहैं किंतु दोऊबालक अयकही धातुमयखण्ड कही खांड़ा हैं ऊषने खांड़ नहीं है जाको मुनि पीजाइँ इतना बूझबेमें अबूझहै (१) ॥

२७५ कह्यउलषणमुनिसीलतुम्हारा।कोनहिंजानबिदितसंसारा १
मातुहिपितहिउऋणभयनीके । गुरुऋणरहासोचबड़जीके २
सोजनुहमरेमाथेकाढ़ा । दिनचलिगयउब्याजबहुबाढ़ा * ३
अबआनहुब्यवहरियाबोली * । तुरतदेहुँमैंथैलीखोली * ४
सुनिकटुबचनकुठारसुधारा * । हायहायसबसभापुकारा * ५
भृगुबरपरशुदेखावहुमोही * । बिप्रबिचारिबचहुनृपद्रोही ६
मिलेनकबहुँसुभटरणगाढ़े * । द्विजदेवताघरहिकेबाढ़े * ७
[illegible] । रघुपतिसैनहिं[illegible]

दो० लषणा उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपकृशानु ॥
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु १

२७५ यहां स्तुति व्याजनिन्दा है लक्ष्मणजी बिहँसिकै कहते हैं हे मुनि तुम्हारो शील कोकहिसकै संसारमें बिदित है (१) अरु माताको बधिकै पिताते उऋण भयहु अब गुरनकी ऋणरहो है सो आपु के हृदय में बड़ोशोच है (२) सो उनकै ऋणा जनु हमरेमाथे काढ़िराख्यो है तहां दिन बहुत बीतिगये ताते ब्याज बहुत बढ़ोहोई (३) अब ब्यवहरियाको बोलाइल्यावहु तुरन्त थैलीखोलिकै चुकाइदेहिंगे यहां लक्ष्मणजूकी बाणीबिषे यह ध्वनिहै कि हे मुनि धनुष तोरिबेको बदला हमसे लेनेको तुम्हारी सामर्थ्य नहींहै ताते तुम्हारे गुरु महादेवहैं तिनको बोलाइलेहु धनुष तोरिबेको दाँव हमसेलेहिं आइ (४) यह लक्ष्मणजू की अति कटुबाणी सुनिकै परशुराम अतिक्रोध भरे कुठारको सुधारिकै उठावतेभये तब हाय हाय करिकै सबलोग पुकारते भये (५) हे पार्बति जब भृगुपतिको लक्ष्मणजूने अति तामसभरे देखा तब अति तिरस्कारत बचन बोले हे द्विज भृगुमुनि जो हैं बरकहो अतिश्रेष्ठ शुद्धसात्वकी क्रिया जिनकी त्यहिबंश बिषे तुममहा तामसी उत्पन्न भये सो हे नृपद्रोही मोको परशा देखावतहौ अरु मैं ब्राह्मण जानिकै बचावतहौं (६) हे द्विज तुम घरहीके देवता बाढ़ेहौ तुमको कबहूं सुभटनके गाढ़े रणनहीं परेहैं (७) जब येती उत्कर्षण बाणी लक्ष्मणजू ने परशुरामको कही तब सब लोग पुकारिकै कहते हैं कि यह कहना बड़ेको अनुचित है तब श्रीरघुनाथजीने सैनसो

ते लक्ष्मणजूको निवारण कीन्ह (८) दोहार्थ ॥ हे गरुड़ तहां लक्ष्मणजूको वचन घृत को आहुतिसम है अरु भृगुबरकोप कृशानु सम है तब अग्निकी ज्वाला अतिबढ़त कर श्रीराम सुजान जलइव वचन बोले याने सर्व देश दृष्टान्त पूर्णहै (१)॥

नाथकरियबालकपरछोहू। सूधदूधमुखकरियनकोहू * १
जोपैप्रभुप्रभावकछुजाना *। तौकिबराबरिकरतअयाना * २
जोलरिकाकछुअनुचितकरहीं। गुरुपितुमातु हीं ३
 मसमशीलधीरमुनिज्ञानी ४
रामबचनसुनिकछुकजुड़ाने। कहिकछुबचनलषणमुसुकाने ५
हँसतदेखिनखशिखरिसब्यापी। रामतोरभ्राताबड़पापी * ६
गौरशरीरश्यामसनमाहीं *। ... * ७
सहजटेढ़अनुहरैनतोहीं * *। नी * ८

दो० लषण कहउहँसिसुनहुमुनि क्रोधपापकर मूल ॥
जेहिबशजनअनुचितकरहिंचरहिंबिश्वप्रतिकूल १

२९६ श्रीरामचन्द्र बोले हे नाथ बालकपर छोहकरहु काहेते बालक सूधे दूध मुखहोतेहैं तिनपर कोह न करो (१) जो प्रभुकर प्रभाव जानत तौ अयान लरिका आपु की बराबरी काहेको करत (२) हे मुनीश जो लरिका अनुचित करतहैं तौ गुरु माता पिता हृदयमें आनन्द पावत हैं (३) शिशु सेवक जानिकै कृपाकरिये आपु शील धीर ज्ञानवान् मुनीशहो (४) हे पार्वती श्रीरामचन्द्र के बचन सुनिकै मुनि कछुक जुड़ातेभये पुनि मुसुकाइकै लक्ष्मणजू कछुक टेढ़े बचन कहते भये (५) तब लक्ष्मणजूको हँसत देखिकै नखते शिखलों क्रोधकरि परशुराम बोलतभये हे राम तेरभ्राता बड़ापापी है(६) गौर तौ शरीर है पर मनबिषे श्याम है इहां यह ध्वनि है कि श्रीरामचन्द्र श्याम ते लक्ष्मणके मनमें बसते हैं अरु यहिके मुखमें बिषहै दूध मुखनहीं है काहेते बिष बचन बोलत है (७) यह सहजही है टेढ़ तोको नहीं अनुहरत अरु ऐसो नीचबुद्धी है कि अपनी मीचुकी सम मोको नहीं देखैहै (८) दोहार्थ ॥ पुनि लक्ष्मणजी हँसिकै बोले हे मुनि क्रोध न करिये क्रोध पापको मूलहै जेहि क्रोधके बशह्वैकै जनजोहैं प्राणी ते अनुचित करतेहैं विश्वमें प्रतिकूल ह्वैकै चरते कहीं बिचरते हैं जगत् में प्रतिकूल कहीं सूकर कूकर बिषधर इत्यादिक का तनु धरिकै बिचरते हैं (१)॥

२९७मैंतुम्हारअनुचरमुनिराया। परिहरिकोपकरियअबदाया १
टूटचापनहिंजुरहिरिसाने। बैठियहवैहहिं पाँयपिराने २
जोअतिप्रियतौकरियउपाई। जोरियकोइ
बोलतलषणहिंजनकडेराहीं मष्टकरहु अनुचितभलनाहीं ४

थरथरकाँपहिं पुरनरनारी ॥ छोटकुमारखोटबड़भारी ॥ ५
भृगुपतिसुनिसुनिनिर्भयबानी । रिसितनुजरहिहोयबलहानी ६
...हिं ... ॥ बचौंबिचारिबन्धुलघुतोरा ॥ ७
... ॥ बिषरसभराकनकघटजैसे ॥ ८

दो० सुनि लक्ष्मण बिहँसे बहुरि नयन तरेरे राम ॥
गुरुसमीप गमनेसकुचि परिहरि बाणीबाम १

२७७ हे मुनिराय मैं तुम्हार अनुचर हौं कोप परिहरि कै दया करहु (१) चाप जो टूटि गयोहै सो रिसानेते अब नहीं जुरि सकैहै ठाढ़े ठाढ़े आपके पांय पिराते होंहिं गे ताते बैठि जाइये (२) अरु जो यह धनुष आपुको अति प्रिय होइ तो कोई बड़ा गुणी बोलाइके उपाय करिके जोराइ देई (३) यह लक्ष्मणजीकी विषय व्यंग्य बाणी सुनत संते जनकजू डरिकै बोलत भये हे लक्ष्मणजू मत कहौ चुपरहो यह अति अनुचित बाणीहै भली नहीं है (४) अरु पुरके नरनारि लक्ष्मणजूके बोलत संते थर थर कांपते हैं अरु परस्पर कहते हैं कि कुमार तौ छोटहै पर खोट बड़ोहै (५) हे भरद्वाज भृगुपति लक्ष्मणजी की निर्भय बाणी जस जस सुनते हैं तस तस रिसते याभ्यांतर जरत हैं अरु बलकी हानि होती जाती है (६) तब परशुराम जी श्रीरामचन्द्र को निहारि कै बोले कि तोर लघु बन्धु जानिकै बचावतहौं नतु मारिडारौं (७) यह कैसोहै तन गौर अति सुन्दर है पर मन विषै मलीनहै कैसे जैसे कंचनके घटमें विष भरा होइ (८) दोहार्थ ॥ यह बाणी सुनिकै पुनि बिहँसिकै लक्ष्मणजीने कछु कहने की इच्छा कीन्ह तब श्रीराम-चन्द्रजी नयन तरेरिकै वर्जित कीन्ह तब लक्ष्मणजीने सकुचि के वामबाणी परिहरि कै गुरुन के समीप गमन कीन्ह (१) ॥

२७८ अतिबिनीतमृदुशीतलबाणी । बोलेरामजोरियुगपाणी ॥ १
सुनहुनाथतुमसहजसुजाना । बालकबचनकरियनहिंकाना २
बररैबालकएकसुभाऊ ॥ ॥ इनहिंनसन्तबिदूषहिंकाऊ ३
त्यहिंनाहिकछुकाजबिगारा । अपराधीमैंनाथतुम्हारा ४
कृपाकोपबधबन्धगोसाईं ॥ मोपरकरियदासकीनाईं ॥ ५
कहियबेगिजेहिबिधिरिसजाईमुनिनायकसोइकरियउपाई ६
कहमुनिरामजाइरिसकैसे ॥ अजहुँअनुजतवचितवअनैसे ७
यहिकेकंठकुठारनदीन्हा ॥ तौमुनिकहाकोपकरकीन्हा ८

दो० गर्भश्रवहिं अवनीपरनि सुनिकुठार गतिघोर ॥
परशु अछत देखौं जियत बैरीभूपकिशोर १

२७९ तब अच्युतम अति बिनीत कही सुन्दरि मृदु कही कोमल अति शीतल

ऐसी बाणी दूनौं करजोरिकै श्रीरामचन्द्र बोलते भये (१) हे नाथ तुम सहज सुजान हौ बालककी बचन प्रवीण जन नहीं कान करते (२) हेनाथ बर बालक का एकही स्वभाव है इनकी अनीतिको सन्तजन दूषण नहीं धरते (३) अरु हेनाथ त्यहिं कछु काजनहीं बिगारा धनुष तौ मैंने तोरा है अपराधी तौ मैं हौं (४) कृपा कोप बध ब · न जो क-रिये सो मोहींपर अपनो सेवक जानिकै करिये (५) हे मुनिनायक जेहि प्रकार ते आपु की रिस शीघ्र जाय आज्ञा दीजिये सो हम करें (६) तब मुनीश बोले हे राम रिस कैसे जाइ तव अनुज अद्यापि अनैसे चितवत है (७) जो यहिके कंठमें कुठार मैं नहीं दीन्ह तौ कोप करिकै काह कीन्ह (८) दोहार्थ ॥ मेरे कुठार को घोर गति समुझि कै राजनकी स्त्री गर्भ श्रवती हैं सो परशा अछत बिद्यमान अरु यह भूप किशोर बैरी तेहिको मैं जियत देखतहौं यह आश्चर्य है (९)॥

२७९ बहैनहायदहैरिसछाती * । भाकुठारकुंठितनृपघाती * १
भयेबामबिधिफिरेउसुभाऊ । मोरेहृदयकृपाकसिकाऊ * २
आजुदैवदुखदुसहसहावा । सुनिसौमित्रिबिहँसिशिरनावा ३
बाउकृपामूरतिअनुकूला * । बोलतबचनझरतजनुफूला ४
जोपैकृपाजरहिंमुनिगाता * । क्रोधभयेतनुराखुबिधाता * ५
देखुजनककटुबालकयेहू * । कीन्हचहतजडयमपुरगेहू * ६
बेगिकरहुकिनआँखिनओटा । देखतछोटखोटनृपढोटा * ७
बिहँसेलषणकहामुनिपाहीं । मूंदहुनयनकतहुँकोउनाहीं ८
दो० परशुराम तबराम प्रति बोले बचन सक्रोध ॥
शंभु शरासन तोरिशठ करसिहमार प्रबोध १

२७९ परशुराम बोले को जानैयहि साइति को काल हमारो हाथ नहीं चलै अरु रिसते छाती जरै है यह नृपनकर घाती कुठार कुण्ठित है गयोहै (१) अब मोको यह जानि परेउ कि इहां बिधाता कही परमेश्वर सो मोपर कछु टेढ़भयो यह मोको समुझि परेउ काहेते मेरे हृदय में चत्रिन पर कृपाकसि [२] इहां दइउ कही कर्त्तार त्यहिं आजु मोको दुस्सह दुःख सहायो यह बचन सुनिकै सौमित्रि हास्य रस व्यंग्य संयुक्त कर जोरि शिर नायकै कहते हैं [३] हे मुनि आपु कृपानुकूल की मूर्ति हौ काहेते लक्षित होत है कि जो बचन आपु बोलते हौ सो मानहु फूल झरते हैं [४] तहां यह बड़ा आश्चर्यहै कि जो कृपाते आपुके गात जरतेहैं तौ क्रोध भयेते तनु ब्रह्मै राखै तौ रहै [५] हे भरद्वाज लक्ष्मण जीको बचन सुनिकै परशुरामजू बोले हे जनक ये कटु-बादी बालक यमपुर विषे घरकीन्ह चाहत है [६] हे जनक ताते तुम मेरी आँखिन के आगेते शीघ्र यहिको ओट करहु काहेते यह नृप ढोटा देखतको छोटा है पर बड़ो खोटहै [७] तब लक्ष्मणजू बिहँसि कै बोले हे मुनि अपने नेत्र मूंदि लीजिये तुम्हारे

लेखे कोई कहूं नहीं है [८] दोहार्थ ॥ लक्ष्मणजू के सतर्क बचन सुनिके क्रोध करिके परशुरामजी श्री रामचन्द्रजी से कोपकरिके बोलते भये हे शठ शम्भुको शरासन तोरिके तैं हमार प्रबोध करत है अरु वाणी में यह अर्थ सिद्ध होतहै कि शम्भुकर शरासन जो शठहै ताको तोरिके मेरो प्रबोध करत है [९] ॥

२८०बन्धुकहैकटुसम्मततोरे * । तूछलबिनयकरसिकरजोरे १
करुपरितोषमोरसंग्रामा * । नाहिंतछांडुकहाउबरामा * २
छलतजिसमरकरहुशिवद्रोही । बन्धुसहिततनुमारौंतोही * ३
भृगुपतिकहैंकुठारउठाये * । मनमुसुकाहिंरामशिरनाये * ४
गुनहु लषणकरहमपररोषू । कतहुंसुधाइहुतेबड़दोषू * ५
टेढ़जानिशंकासबकाहू * * । बक्रचन्द्रमहिंग्रसैनराहू * ६
रामकहारिसतजहुमुनीशा * । करकुठारआगेयहशीशा * ७
जेहिरिसजाइकरियसोइस्वामी । मोहिंजानिआपनअनुगामी ८
दो० प्रभु सेवकहि समरकस तजहु बिप्र बर रोष ॥
बेष बिलोकि कहाउ कछु बालकहू नहिं दोष १

२८० अब यह मैंने जाना कि तोर बन्धु कटु कहतहै सोतेरी सम्मति ते अरु तू छल संयुक्त मोसे बिनय करत है [१] अब तू संग्राम करिके मोर परितोष करु किंतो रामकर कहावना छोंड़िदे राम तो एक मैं हों [२] ताते अब छल तजि के समर करु काहेते तैंने धनुष तोरिकै हमारे गुरु शिव तिनको द्रोह किया किंतो समर करु नातु बन्धु समेत तोको मारि डारोंगो [३] हे पार्वति भृगुपति कुठार उठाये ऐसे दुर्बचन कहते हैं अरु श्री रामचन्द्र निर्भय मनमें मुसुकाते हैं करजोरि कै माथ नावते हैं जैसे जल करिके पूर्ण घड़ा नहीं छलकै [४] पुनि जैसे पवन सुगन्ध लैकै चलै तैसे श्री रामचन्द्र अपनी बाणी बिषे सूक्ष्म ऐश्वर्य्य जनावतेहैं हे मुनि गुनहु कहो चूक तौ लक्ष्मणजीकी है अरु हमपर रोष करते हौ ताते कतहुं सुधाइहु ते बड़ादोष होत है (५) काहे ते टेढ़ जानिकै सबको शंका होति है देखिये तौ बक्र चन्द्रमा को राहु भी नहीं ग्रसिसकै है [६] पुनि श्री रामचन्द्र कहते हैं हे मुनीश रिसको तजहु तुम्हारे करमें कुठार है अरु आगे हमारो शीश है इहां शीश कहो अधीनता यामें यह अभिप्राय है कि हम इतना अधीन होतेहैं अरु आपु क्रोध करते हौ यामें अज्ञान सूचित होतहै ताते रिस को त्यागि दीजिये किन्तु तुम परशा उठावते हौ अरु हम शीश नवावतेहैं सो तुम्हारो परशा चलै नहीं ताते बृथा क्रोध क्यों करते हौ [७] हे स्वामी मोको आपन अनुगामी जानिकै जामें रिस जाइ सो आज्ञा दीजिये [८] दोहार्थ ॥ अरु आपु जो कहते हौ कि हमते समर करु तहां तुम प्रभु मैं सेवक प्रभु अरु सेवकहि समर कैसो यह अनुचितहै

तातै हे विप्रवर रोषको त्याग करहु अरु आपुको वेरबेष बिलोकिकै कछु कहे सहै तातै बालक हूको दोष नहीं है [१]॥

२८१ देखिकुठारबाणधनुधारी। भइलरिकहिंरिसबीरबिचारी १

नामजानपैतुमहिंनचीन्हा। बंशसुभावउतरत्यहिंदीन्हा २

। पदरज आमुह

छमहुचूकअनजानतकेरी। चहियबिप्रउरकृपाघनेरी * ४

हमहिंतु

रामभाथलघुनामहमारा *। तवङनामतुम्हारा ६

देवएकगुणधनुषहमारे *। नवगुणपरमपुनीततुम्हारे * ७

सबप्रकारहमतुमसनहारे *। छमहुबिप्रअपराधहमारे * ८

दो० बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम॥

बोले भृगुपति सरुष ह्वै तुहूं बन्धु सम बाम १

२८१ श्री रामचन्द्र बोले हे मुनीश आपुको कुठार धनुष बाण धारण किये देखिकै आपको रहस्य नहीं जान्यो तातै बाल बुद्धितै आपुने लरकाई की बातैं कह्यो है अरु आपु तौ धीर हौ वीरहौ रिस बिचारि के करौ यह बातहू में व्यंग्यहै कि मुनिबेषको शांतरसचाही अरु हथियार बांधे वीररसचाही आपुमें दोनों बिपर्ययदेखिकै तातै इतनी बात कहीगईहै (१) अरु आपको नाम तौ जानतरह्यों है पर चीन्ह्यों नहीं है कि परशुराम येईहैं अरु हमारे रघुबंशको स्वभावहै कि जो काहू को हथियार बाँधेदेखैं तौ निर्भय उत्तरदेतेहैं यामें यह आशयहै कि जैसा सब चरित्रनको जानतेहौ तैसा हमको न जानिये (२) अरु जो केवल आपुमुनिके वेषमें आवते तौ आपके पद की रजशिशुमाथे पर धरत इहां रघुनाथजीकी बाणीबिषे अनेक व्यंग्यतर्कहैं जामें परशुरामके वीररसका परास्तहोइ [३] हेबिप्र अजान बालककी चूकक्षमा करिये ब्राह्मण को केवलकृपैमें अधिक रहै यामें यह व्यंग्यहै कि ब्राह्मणको शम दम तप शौच शांति आर्जव ज्ञान विज्ञान आस्तिक ये नव चाहिये अरु नवकर त्यागचाही काम क्रोध लोभ मोह मद मान मात्सर्य्य शोक चिन्ता सो परशुराम बिषे दूनौशंकरहैं तातै श्रीरामचन्द्र तर्क व्यंग्यकहिकै केवल ब्राह्मण धर्म राखा चाहतेहैं [४] हे नाथ हमतै तुमतै सरबरि कहौ बराबरि कैसेहोइ काहेतै कि कहां तुम्हारचरण कहांहमार माथ यामें यह ध्वनिहै कि तुम ब्राह्मणहौ अरु हमक्षत्रीहैं क्षत्रनकर यह धर्महै कि ब्राह्मणके चरण कहँसदा पूजिये सदामाथ नाइये तातै आप स्वामीहौ हमसेवक हैं सेवककी स्वामीतै सरबरि नहींहै इहां यह अभिप्राय है। परशुराम

ब्राह्मणत्व सिद्धकरना अरु वीररसको अभावकरना अरु हेनाथ तुम हम चरण हैं तातै तुम ब्राह्मण बड़ेहौ हमक्षत्री तुमतै लघुहैं [५] अरु हे मुनीश आप नामहूं

करिकै बड़ेहौ हमारे द्वै वर्णकरिकै केवल रामनामहै अरु आपको परशुसंयुत पांचवर्णको परशुराम नामहै ताते आप सब प्रकारते बड़े हौ इहां यह व्यंग्यहै यही जो दुइ अक्षरहैं रामतेई चराचर जल थल नभ पवन अग्नि इत्यादिक सबमें रमेहैं अरु इन्हींदुइ अक्षरविषे मुनीश योगीश परमहंस रमेहैं अरु हेमुनीश तुम परशाविषे रमेहौ ताते परशुराम कहिये [६] हे देव हमारे एकगुण धनुषहै अरु आपके नवगुण परम पुनीत कोमल १ तप औ २ संतोष ३ क्षमा ४ अतृष्णा ५ जितेन्द्रिय ६ दानकोलेइ ७ अरु सर्वदाता ८ अरु दयालु ६ येतेस्वाभाविक गुणयुक्त तुमहौ किंतु कहूं यज्ञोपवीतको नवगुण कहतेहैं [७] ताते सब प्रकारते हम तुमते हारेहैं हे विप्रवर हमारा अपराध क्षमा करौ [८] दोहार्थ ॥ हे पार्वति श्रीरामचन्द्रजीने बार बार परशुरामजी को मुनिविप्र बर श्रेष्ठ मुनि ब्राह्मण कह्यउ तब परशुरामजी क्रोधित ह्वैके बोलतभये किंच धुक समान तुहूं बामहै तहां परशुराम जी क्रोधकीन्ह सो यह समुझिकै कि हमारो अभिनिवेश सदावीर रसविषे अरु इनक्षत्रिनके बालकन हमको केवल ब्राह्मण शांतरसविषे जान्योहै ताते क्रोधकियो अरु परशुरामके क्रोधविषे यह अभिप्राय सूचितहै कि क्रोधविषे श्री रामचन्द्रजी को परत्वजाना चाहतेहैं [१] ॥

२८२ निपटहिंद्विजकरिजानयहु मोहीं । मैंजसबिप्रसुनावौंतोहीं १
चापश्रुवाशरआहुतिजानू । कोपमोरअतिघोरकृशानू * २
समिधसेनचतुरंगसुहाई * । महामहीपभयेपशुआई * ३
मैंयहिपरशुकाटिबलिदीन्हे । समरयज्ञजपकोटिनकीन्हे *४
मोरप्रभावविदितनहिंतोरे । बोलसिनिदरिबिप्रकेभोरे * ५
भंजेहुचापदापबड़बाढ़ा * । अहमितमनहुँजीतिजगठाढ़ा ६
रामकहामुनिकहहु बिचारी । रिसअतिबड़िलघुचूकहमारी ७
छुवतहिंटूटपिनाकपुराना * । मैंकेहिहेतुकरौंअभिमाना ८

दो० जोहम निदरहिं बिप्रबर सत्य सुनहु भृगुनाथ ॥
तोअसको जग सुभटजेहि भयबश नावहिंमाथ १

२८२ श्रीरामचन्द्रके बचनविषे वीररसको निरादर आपुविषे जानिकै परशुराम वीररस संयुक्त बोलते भये सुनु तू हमको निपट द्विजकरिकै जानत भयसि अरु मैं जस बिप्रहौं तसतू सुनु [१] मोरचाप श्रुवाजानु घृतसाकल्य युतशर आहुति अरु मोरकोप घोर कृशानुजानु [२] अरु समिधकहे होमकी लकरी आक पलाश खैर लहचिचिरा पीपर गूलरि शमी दूब कुश येतै नवै होमकै समिधाहैं सो सातहूद्वीप नवोखण्ड जेती सेना कहीफौज चतुरंगिनी कहो दशहाथी एकरथ तुरंग हजार पैदर पचीसरथ यहिके ऊपर जेता होई सो सर्व चतुरंगिनी तेसमिध जानु अरु महा महाराजा पशुजानु [३] तिनको यहि फरसासों काटिकाटि कालदेवताको बलिचढ़ाइ दिअउँहै कोटिनबार ऐसो

समरयज्ञ जगतमें मैं कीन्हिहै (४) मोरप्रभाव तोको विदित नहींहै मोको केवल ब्राह्मण भोरे जानताहै ताते तू निरादर निडर बोलैहै (५) तुम चापभंजयउ ताते तुम का दापकहो अभिमान बहुत बढ़यउहै मानहु सब जग जीतिके ठाढ़ेहौ (६) हेभर-द्वाज तब श्रीरामचन्द्रबोले हे मुनि तुमतौ मननशील त्रिकालज्ञहौ विचारिकै बोलहु हमारी तौ लघुचूक अरु आपको कोप येता बड़ाहै यहबड़ो अनुचित है (७) अरु हे मुनीश तुमको कहाउ कि चापतौ रकै तुम अभिमानते भरेहौ सो अभिमानको कछु-कारण नहींहै काहेते कि पिनाक छुवतहि टूट्योहै तहाँ मोको असमुझि परतहै कि बहुत कालको पुरान लगि रह्योहै ताते छुवतहि टूटगयो है तहां अभिमानको कारण कहाहै इहां रघुनाथजीकी बाणी व्यंग्यतेयुक्तहै छुवतहि टूटिगयो सो सत्यहै अरु पुरानकहा सो बहुत कालको हई है अरु छुवतहि टूटिकहिके मुनिको आपनो प्रभाव जनाव है पुरान कहिके परशुरामको गुरु अभिमान निवारतेहैं (८) दोहार्थ ॥ हे बिप्र-वर जो हम कदाचित्तुम्हार निरादर करैं तौ ऐसो जगतमें कौन सुभट है जाके भयते हम माथ नावैं इहां ध्वनि है कि हे भृगुपति तुम ब्राह्मण काहेते खेद पावतहौ अरु हमने तुम्हारे वंशको चरण अपने वक्षस्थल विषे अंगीकार कीन्हसो काहूके डरसे नहीं केवल ब्राह्मणभक्तिसे ताते तुम सदा मानिबे योग्य हौ (९) ॥

२८२ देवदनुजभूपतिभटनाना । समबलअधिकहोउबलवाना १
जौंरनहमहिंप्रचारैकोऊ * । लरहिंसुखेनकालकिनहोऊ २
छत्रीतनुधरिसमरसकाना * । कुलकलंकतेहिपावँरजाना * ३
कहउँसुभावनकुलहिप्रशंसी । कालहुडरैंनरणरघुवंशी * ४
बिप्रवंशकीअसप्रभुताई * । अभयहोयसोतुमहिंडेराई * ५
सुनिमृदुगूढ़बचनरघुपतिके * । उघरेपटलपरशुधरमतिके ६
रामरमापतिकरधनुलेहू * । खैंचहुमोरमिटैसंदेहू * ७
देतचापआपुहिंचलिगयऊ * । परशुरामसनबिस्मयभयऊ ८
दो० जाना रामप्र पलक पु त गात ॥

बालबचन प्रसंगहृदय समाप्त १

२८३ हे मुनि देवता दशो दिग्पाल चन्द्र सूर्य ब्रह्मा शिवादिक अरु राक्षस दानव भूप ब्रह्मांड भरेके जे महा महाभट ते सब हमारे सम बलवान् होहिं किन्तु हमते अधिक होहिं (१) तिन सबनमें कोई होइ किन्तु सब मिलिकै हमको रणमें प्रचारैं तौ हम निर्भय आनन्दपूर्वक समर में संतुष्ट करि देई अरु जो कालहू सम्मुख समर करै तौ संतोष करिदेई (२) हे मुनीश जो क्षत्री ह्वैकै समर बिषे भयमानै तौ वह अपने कुलको कलंक भयो वहिको पामर जानिये (३) हेमुनि हम रघुवंश कुल को यह सहज स्वभाव कहते हैं सत्य जानो रघुवंशी रण बिषे कालहुको नहीं डरते (४)

हे भृगुनाथ द्विजके बंशकी यह प्रभुताई कहौ प्रभाव है कि जो तुमको डरै सो सदा निर्भय होइ हे विप्र अस तुम्हार प्रभाव है किंतु जे सब प्रकारते अभय हैं तेऊ तुमको ब्राह्मण जानिकै डरते हैं ऐसे ब्राह्मणहैं सो कहते तुम क्योंकोप करतेहौ [५] ऐसावेति श्रीरामचन्द्रके मृदु बचन अति गूढ़ सुनिकै हृदय विषे जो मति रही सो मोह अभिमान कपाट रूप तेहित ढांपिरही श्रीरामचन्द्र के गूढ़ बचन सुनिके मोह अभिमान मति के पटल सो खुलिगये तब त्यहि सुमतिते श्रीरामचन्द्रको परमेश्वर जानते भये श्रीरामचंद्र गूढ़मृदु कही कोमल कर जोरिके परशुराम की बड़ाई करते हैं अरु गूढ़ कही रघुबंशी कालहुको जीति सक्तेहैं यहि बचन में श्रीरामचंद्र अपनो स्वरूप सर्वोपरि जनावते हैं अरु यह कहा कि हम तुमको ब्राह्मण जानिकै माथ नवावते हैं नतु क्षत्रियमें ऐसो कौन बीरहै जाको हम डरिकै माथ नवावैं यहि वाक्यमें अपनो परत्व जनायो है ऐसो अनेक मर्मकी बातैं कही ताते गूढ़ कही [६] हे गरुड़ तब परशुराम सावधान होइकै बोले हे राम यह रमापतिको धनुष जो है सो ऐंचिकै चढ़ावो तब मेरो संदेह दूरिहोइ यह धनुष विष्णु भगवान्ने महादेवके द्वारा भृगुकी मोको दीनहै अरु यह कहि दीन है कि यह धनुष जब ताहि जो चढ़ावै तब तुम पूर्णावतार जान्यहु [७] तब परशुराम ने श्रीरामचन्द्रको चापदीन छुवत सन्ते चाप चढ़िगयो तब परशुराम के मनमें विस्मय भई कि यह अज्ञान कहांते आइगयो जाते मैंने परमेश्वर परमात्मा को अनेक दुर्वचन कह्यो तेहूपर मेरे ऊपर कृपा कीन्हि ऐसे पूर्ण ब्रह्महैं [८] दोहार्थ॥ जब श्रीरामचंद्र के प्रतापको परशुराम जान्यो तब अति पुलक प्रफुल्लित गातते दोऊ कर जोरिकै स्तुति करने लगे [९]॥

जयरघुबंशबनजबनभानू ॥ गहनदनुजकुलदहनकृशानू १
हितकारी ॥ जयमदमोहकोहभ्रमहारी २
बिनयशीलकरुणागुणसागर।जयतिबचनरचनाअतिनागर ३
सेवकसुखदसुभगसबअंगा ॥ जयशरीरछबिकोटिअनंगा ४
कहौंकाहमुखएकप्रशंसा ॥ जयमहेशमनमानसहंसा ॥ ५
अनुचितबहुतकह्यउँअज्ञाता । क्षमहुक्षमामंदिरदउभ्राता ६
कहिजयजयजयरघुकुलकेतू। भृगुपतिगयेबनहिंतपहेतू ॥ ७
अपभयकुटिलमहीपडराने। जहँतहँकायरगवँहिंपराने ॥ ८

दो० देवन दीन्हीं दुंदुभी प्रभु पर बर्षहिंफूल ॥
हर्षे पुरनर नारि सब मिटी मोहमय शूल १

२८४ हे भरद्वाज श्रीरामचंद्रको परशुराम परमेश्वर सर्वोपरि निश्चय करिकै स्तुति करते हैं जय कही सर्वोपरि कल्याणरूप अरु जय कही सदा जयमान जाकी पराजय कालहूते नहीं है हे श्रीरामचंद्रजू तुम्हारी जय रघुबंश कुल कमल हैं ताको आनंद

कर्ता आपु भानु हैं अरु दनुज के कुलगहन कहो बनहैं तिनके दहन करिबे को तुम कृ-शानुहौ [१] हे सुरधेनु संत हितकारी तुम्हारी जय अरु मद मोह कोह भ्रम के हरैया हमारी तौ तुरंत भय हरेहु अरु सबको भय हरतेहौ ते तुम्हारी जय [२] अरु बिनय कही सबको यथार्थ आदर देना अरु सर्व करिके बिनय योग्यहौ अरु शील करुणादिक दिव्य गुणन के सागरहौ अरु वचननकी रचनामें आपु अति नागर हौ [३] अरु सेवक को सर्व सुखदाता हौ अरु सर्वांग अति सुभग हौ अरु तुम्हार अंग अंगकी छबि निरखि कै कोटिन अनंग लज्जित हैं ते तुम्हारी जय [४] हे श्रीरामचंद्र अनंत सहस्र मुख स्वामिकार्तिक के षट्मुख ब्रह्मा चार मुख महादेव पंचमुख सरस्वती इत्यादिक सबै मिलिकै आपुकी शोभा गुण प्रताप आदिक नहीं कहिसकैं मैं एक मुखते आपकी प्रशं-सा नहीं कर सकौं आपु महादेवके मनमानसके हंसहौ ते तुम्हारी जयहोय [५] अरु मैंने आपुको बहुत अनुचित वचन अपने अज्ञानते कह्यउँ अरु आपु दोनों भ्राता क्षमा के मन्दिरहौ पृथ्वीते अधिकहौ ताते मेरी अज्ञानता को क्षमाकरो [६] अरु एक जय चिरंजीवि वाचक अरु एक जय अजय बाचक है अरु एक जय सर्व परि बाचक है जैसे सनातन श्रीरामचंद्र हैं तैसे परशुराम को आशीर्वाद है यह आशीर्वाद दैकै अरु यह कहिकै हे रघुकुलकेतु अपने चरणारविंद बिषे भक्तिदेहु अन्तर्भाव एवमस्तु वर पाइकै भृगुनाथ आनन्दपूर्वक भजन अरु तप हेतु बन कहँ गये [७] परशुराम को बन गमन देखिकै कुटिल राजा जे रहेते आप भयको प्राप्तभये डरिगये जहां तहां कायर जे रहे ते अपनी गँवरिहंते पराइ गये [८] दोहार्थ ॥ तब देवता दुंदुभी वजावते भये फूल बर्षते हैं नभ अरु नगरमें जहां तहां जय जय ध्वनि ह्वैरही है पुरके नरनारि अति हर्ष को प्राप्तभये मोह रूपी शूल मिटि गई [९] इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने बालकांडेलक्ष्मणपरशुरामश्रीरामचंद्रसंवादे अनेकव्यंजनालक्षणायुक्तिउक्तिकर्पूरसवर्णनं नामपंचाशतरंगः ॥ ५० ॥

दो० इक्यावन शुभ तरँग में रामचरण हितकाज ॥
सजि बरात तिरहुत चले श्रीदशरथ महराज ५१

२८५ अतिगहगहेबाजनेबाजे * । सबहिंमनोहरमंगलसाजे * १
यूथयूथमिलिसुमुखिसुनयनी । करहिंगानकलकोकिलबयनी २
सुखविदेहकरबरणिनजाई * । जन्मदरिद्रमनहुँनिधिपाई ३
बिगतत्रासभइसीयसुखारी । जिमिबिधुउदयचकोरकुमारी ४
जनककीन्हकौशिकहिप्रणामा । प्रभुप्रतापधनुभंजेउरामा ५
मोहिंकृतकृत्यकीन्हदोउभाई । अबजोउचितसोकहियगोसाईं ६
कहमुनिसुनुनरनाहप्रबीना * । रहाबिवाहचापआधीना * ७
टूटतहीधनुभयउबिवाहू * * । सुरनरनागबिदितसबकाहू * ८
दो० तदपि जाइ तुम करहु अब यथा बंश व्यवहार ॥

बूझि बिप्र कुलवृद्ध गुरु बेद बिदित आचार ९

२८५ यहि दोहा भरेमें पदार्थ सिद्धि है गम्भीर कहो बहु गम्भीर बाजा बाजे सबही घर घर मनोहर मंगल साजे [१] यूथ यूथ मिलिकै सुमुखि कहो सुन्दर मुख नयन सर्वाङ्ग हैं जिनका ऐसी जो स्त्री कल कहो सुन्दर कोकिलाकी ऐसी बाणी गान करती हैं [२] अरु विदेह कर परमानन्दजन्य सुख बर्णिबे योग्य नहीं है मानहुँ कहीं जैसे कोई जन्मको दरिद्री पारसनिधि कहो चिन्तामणि पावै तैसहि परमानन्दजन्यसुख जनकजीको भयो [३] सीतानको जो त्रास करिकै विगत भई सुखको प्राप्त भई जैसे पूर्णमासीके चंद्रमाको देखिकै चकोरी आनन्दित होतिहै [४] जनकजू विश्वामित्रको प्रणाम कीन्ह हे मुनीश आपुके प्रतापते श्रीरामचंद्रजूने धनुषको भंज्यउ [५] मोको दूनों भाइन कृत कृत्य कहो कृतार्थ कीन्ह अब जो उचित होइ सो कहियें आज्ञा दीजिये हम करैं [६] मुनि बोले हे नरनाह प्रवीण सुनिये विवाह तौ चाप जो अधीन रह्यो [७] हे नरेश धनुषके टूटतही विवाह भयो यह सुर नर नाग सबको विदित है [८] दोहार्थ ॥ तदपि अब तुम जाइकै जस वंश व्यवहार है तस करहु अरु विप्र गुरु वेद कुल वृद्ध बूझिकै आचार पूर्वक करहु जाइ [९]

२८६ दूतअवधपुरपठवहुजाई * आनहिंनृपदशरथहिबोलाई १
मुदितराउकहिभलेहिंकृपाला । पठएदूतबोलितेहिकाला २
बहुरिमहाजनसकलबोलाये । आइसबन्हिसादरसिरनाये * ३
हाटबाटमंदिरसुरबासा * * । नगरसँवारहुचारिहुँपासा * ४
हरषिचलेनिजनिजगृहआये । पुनिपरिचारकबोलिपठाये ५
रचहुबिचित्रबितानबनाई * । सिरधरिबचनचलेसचुपाई ६
पठएबोलिगुनीतिननाना । जेबितानबिधिकुशलसुजाना ७
बिधिहिबंदितिनकीन्हअरंभा । बिरचेकनककदलिकेखंभा ८

मणिन को पत्र फल पद्मराग के फूल ॥
रचना देखि विचित्र अति मन विरंचि कर भूल २

२८६ हे राजन् अवधपुर विषे दूत पठैकै राजा दशरथ को बोलाइ लेहु [१] तब आनन्द समेत राजा पत्रिका लिखिकै श्रीअवधको दूत पठावते भये [२] पुनि आइकै सचिव महाजन सब राजाके शिर नावते भये [३] अरु हाट बाट सुर मन्दिर सुरबास नगर सम्पूर्ण सँवारहु जाइ यह आज्ञा दीन्हि [४] ते सब निज निज गृहमें आइकै हर्षितै चले पुनि परिचारक कहो अपने अपने काज कामिन को बुलावते भये [५] तब यह आज्ञा दीन्हि कि राजा की आज्ञा है कि बितान कहो माड़व की रचना करहु करावहु तबते आज्ञाशीश पर धरिकै सचुपायकहो आनन्द पूर्वक चलतेभये [६] ते सब आज्ञालैकै नानाप्रकारके गुणी बोलावतेभये जे बितानकी विधिमें

कुशलकाही बड़े प्रवीणहैं [७] तिन गुणदानन विधिकेपद बन्दिके आरम्भ कीन प्रथम कनक कदलीके खम्भा विरचतभये [८] दोहार्थ ॥ तेहिकदली के खम्भविषे हरितमणिनके पत्र फल अरु पद्मराग मणिके फूलबनाये तेहि कदलीके खम्भकी रचनादेखि कै विरंचिकी मन भूलिगयो काहेते आपनी रचना ते भिन्नदेख्यो [१] ॥

२८८ बेनुहरितमणिमयसबकीन्हे । सरलसपरबपरैंनहिंचीन्हे १
कनककलितअहिबेलिबनाई । लखिनहिंपरैसपर्णसोहाई २
तेहिकेरचिपचिबंधबनाये ॥ बिचबिचमुक्तादामसोहाये ३
माणिकमर्कतकुलिशपिरोजा । चीरकोरिपचिरच्योसरोजा ४
कियेभृंगबहुरंगविहंगा ॥ ॥ गुंजहिंकूजहिंपवनप्रसंगा ५
सुरप्र [illegible] खम्भनगढ़ि [illegible] ठाढ़ी ॥ ६
चौकैंभांतिअनेकपुराई ॥ ॥ सिंधुरमणिमयसहजसुहाई ७
० सौरभ पल्लव सुभग सुठि किये नीलमणि कोरि ॥
हेमबौर मर्कत घवरि लसत पाटमय डोरि १

२८८ हरित मणिनमय बाँससहित पूर्णसरल ज्योंका त्यों चीन्हिनहीं परैं अनुदिव्यासही है [१] हरितमणिन विषे सुवर्ण कलित अहिबेलि कही पान तेहिते मण्डपछाये लखिनहीं परैहै मानो शोभायमान पानहीहैं [२] तेहि सुवर्ण के तारनतेरचिकै पचिकरिकै गुहि बंधनबनाये अरु बीचबीच मुक्तानके दामबनाये दामकही माला अरु मुक्तनके झंझनीबिषे मखतूनके फूल छोटे छोटे बनाये [३] अरु माणिककही अरुणमणि मर्कतकही श्यामममणि पिरोजकही पीलमणि कुलिश कही हीरा तिनको कोरि कोरि जमाइ जमाइ कमलरचे [४] अरु नीलमणिके भँवरबनाये अरु बहुत रंगकीमणि अरु सुवर्ण तेहितेरचिकै बिहंग बनाये अरु हंसमोर कोकिला पारावत शुक बनाये [५] अरु देवतनकी प्रतिमा मणिमय खम्भनविषे गढ़िगढ़ि काढ़ीहैं तेसब मांगलिक द्रव्यपदार्थ लियेठाढ़ी हैं (६) अरु अनेकभांतिकी गजमुक्तनते अतिसुन्दर चौकपूरीगई [७] दोहार्थ ॥ सौरभ कही आँबके पल्लव सो नीलमणिनके कोरि कोरि अति सुभग बनाये अरु हेमके बौर बनाये अरु मर्कत मणिके फल तेहिते घवरि बनाये अरु रेशम जरावमय तेहिकी डोरि [१] ॥

२८९ रचेरुचिरबरबन्दनवारे ॥ मनहुँमनोभवफंदसँवारे ॥ ॥ १
मंगलकलशअनेकबनाये । ध्वजपताकपटचमरसुहाये ॥ २
दीपमनोहरमणिमयनाना । जाइनबरणिविचित्रबिताना ३
जेहिमंडपदुलहिनवैदेही । सोबरणैअसमतिकबिकेही ॥ ४
दूलहरामरूपगुणसागर ॥ सोबितानतिहुँलोकउजागर ॥ ५

जनकभुवनकैशोभाजैसी * *। गृहगृहप्रतिपुरदेखिअसैसी ६
जिनतिरहुतिहअहिसमयनिहारी। त्यहिलघुलगोभुवनदशचारी ७
जोसंपदानीचगृहसोहा * । त्यहिविलोकिसुरनायकमोहा ८
दो० बसै नगर ज्यहि लक्षि करि कपट नारिवरवेष ॥
त्यहिपुरकी शोभाकहत सकुचहिं शारद शेष १

२६८ रुचिरत्र बन्धनवाररचे मनहुँ मनोभव कही कामने फंदसँवारे हैं काहेको मुनीश योगीश देवतादिकनके मनको फँदायबेको (१) अरु मंगलमय कलश अनेकध्वजाकही बड़े बड़े निशान पताकाकही छोटे छोटे सो रेशमके पटनमें सुवर्ण मणिन की कणिनते जटित अनेकनरचे (२) अरु मणिनमय मनोहर अनेक दीपकरचे तहां मण्डप तौ मणिनमय स्वाभाविकै प्रकाशमय है अरु मणिनके दीपकन पृथक् पृथक् भावकीन्ह है सो चित्रविचित्र बितान वर्णवेयोग्य नहींहै (३) जेहि मण्डप विषे दुलहिन वैदेहीकही विदेहकी कन्या विदेह कही त्रैलोक्य बिषयानन्द की अभाव ब्रह्मानन्द की प्राप्ति तेहिको सुख परमानन्द सो वैदेही जहां दुलहिनिहै तेहिमण्डपकी शोभा कौन कवि कहिसकै (४) अरु जेहिमण्डप को दूलह श्रीरामचन्द्र सच्चिदानन्द जिनको विशेषण अरु परब्रह्म विग्रह विशेष्य ते रामचन्द्र जहां दूलह परमदिव्य गुणनके सागर सो वितान उजागर कही त्रैलोक्य प्रकाशवान् (५) अरु जैसी जनक भुवनकी शोभाहै तैसी ही गृहगृह प्रति बितान संयुक्त जनकपुर शोभितहै (६) जिनकेहूं तेहिसमय में तिरहुतिको प्रत्यक्ष देख्यो किन्तु ध्यानमें देख्यो तिनकहँ चौदहौ भुवनमें त्रैलोक्य की शोभा अतिलघु लागीहै (७) जनकपुर विषे जो संपदा नीचके गृहविषे शोभितहै तेहिको बिलोकिकै सुरनायक इत्यादि दशौदिग्पाल मोहित होतेहैं (८) दोहार्थ ॥ जेहि मिथिलानगर में बसतीहैं लक्षिकर लक्षिकही लक्ष्मी तेहिकी करकही कर्ता अरु कपट कही प्राकृत राजनकी कन्याकी ऐसी लीलाकर्तव्य अरु वेष तौवर कही सर्वोपरि श्रेष्ठ स्वयंसनातनहै ते श्री जानकीजी जहां बिराजमान तेहिपुरकी शोभा कहत सन्ते शारद शेष इत्यादिक सकुचत हैं (१)॥

२६९ पहुंचेदूतरामपुरपावन * । हर्षेनगरबिलोकिसुहावन * १
भूपद्वारतिनखबरिजनाई * । दशरथनृपसुनिलियबुलाई * २
करिप्रणामतिनपातीदीन्ही । मुदितमहीपआपुउठिलीन्ही ३
बारिबिलोचनबांचतपाती । पुलकगातआईभरिछाती * ४
रामलषणउरकरवरचीठी * । रहिगयेकहतनखाटीमीठी * ५
पुनिधरिधीरपत्रिकाबांची । हरषीसभाबातसुनिसांची * ६
खेलतरहेतहांसुधिपाई * *। आयेभरतसहितलघुभाई * ७
पूछतअतिसनेहसकुचाई * । तातकहांतेपातीआई * * ८

बा० का०　　　　दुवोउ अहहिं कहहु केहि देश ॥

दो०　　ची०　　　　　　हु　　　१

टी० । ४ । हे भरद्वाज जनकके दूनोंदूत रामपुर पावनमें पहुंचेजाइ पावनकही अति-पवित्र ब्रह्मस्वरूप [तत्प्रमाणंपाद्मे] अयोध्याच परब्रह्म सरयू सगुणः पुमान् ॥ तन्निवा-सी जगन्नाथः सत्यमेतद्ब्रवीमिते १ नगर अति सुहावन कही अति मनोहर देखिकै अति हर्षको प्राप्तभये कैसीहै अयोध्या राजमहलते तीनि योजनपूर्व तीनियोजन पश्चिम डेढ़ योजन दक्षिण डेढ़योजन उत्तर सरयूपार इतना नगरका विस्तारहै अरु एक योजनपूर्व बिल्वहरिहैं अरु एकयोजन पश्चिम गुप्तहरिहैं अरु दक्षिण उत्तर अर्द्ध अर्द्ध योजन यह अंतःपुर है तहां अनेक हेम रत्नमय महलहैं अरु महलनके शृंग स्वर्गलोक को चुम्बन करतहैं अरु अनेक चौहट्टबनेहैं अरु शृङ्गनपर अनेक कलश शोभितहैं जनुअनेक-नचन्द्र सूर्यएकरस उदितहैं अरु मयूर कोकिला पारावत इत्यादिक मनोहर विहंगबो-लतेहैं अरु गृह गृह कल्पतरु कामधेनु बिराजमान हैं अरु महलन बिषे अनेक विचित्र चित्र बनिरहेहैं अरु पुरके बाहर बावली तड़ागोंमें मणिनमय घाट बँधे हैं अमृतमय जलभरे हैं अरु हंस बिहरतेहैं मनोहर बोलतेहैं अरु अनेकन बाटिका लगीहैं अरु अनेक तरहके मनोहर वृक्ष सदा फलफूल संयुक्त सदाएकरस शोभितहैं अरु मयूर को-किला शुक सारस पारावतादिक विहंग मनोहर बोलकरिकै बाटिकानमें शोभितहैं अरु सरयूके दूनोंकूलन पर मणिनते घाट बँधेहैं अरु विचित्र सरयूमें पञ्चरंग के कमलफूलि रहेहैं भ्रमरनकी अवली गुञ्जार करतीहैं अरु हंसनकी अवली मधुर मधुर बोलती हैं ऐसी श्री अयोध्या मंगलमय देखिकै दूनोंदूत आनन्दित भये कार्त्तिकवदी पञ्चमीको दूत अवधपुरमें पहुंचे [१) तेदोऊ दूत भूपके द्वारमें खबरि जनावते भये तब राजाद-शरथ मुनिकै बुलाइलेते भये (२) ते दोऊ दूतन प्रणाम करिकै यह कहा कि हेमहा-राज यह पत्रिका राजा जनकजू पठवा है तब अति हर्षते राजा आपु उठिकै लेतभये हैं (३) तब राजा पत्रिका बाँचतभये बाँचतसन्ते नेत्रनमें जल भरि आयो अरु गात पुलकि आये पुलकते छातीभरि आई मानों स्फटिक मणिके शीशामें अतरभरा बारबार उफनात अरु बैठत है (४) हे पार्वती पत्रिका बांचतसंते राम लषण उरकही ध्यानमें आइगये अरु करमें पत्रिकाहै उरकही श्रेष्ठ सोमनहिंमें बांचिकै मौनहोइरहे न खट्टीक-हिगई न मीठी कहिगई तहां खट्टी मीठी काहै पत्रिकामें यह लिखाहै कि श्रीराम-चन्द्र धनुषको तोरा आपु आइकै श्रीरामजानकी को बिवाह करिये तब यह समुभि कै कि रामचन्द्रतो बालकहैं अरु धनुष महाघोर कठोर सो कैसे तोरिनिहोई तहां यह अप्रतीति सोखट्टी है अरु जनकको बचनसत्य प्रतीति सो मीठोहै दूनों समुझिकै कछु नहीं कहिगई अरु दूसर पाठ रामलषण कर वरकै चीठी श्रीरामलषण कै कर कही कर्तव्य तेहिकै चीठी और उहैअर्थ (५) पुनि धीर्य्य धरिकै प्रकट पत्रिका बांचते भये पत्रिका सुनिकै सब सभासांची बात मानिकै हर्षितभई (६) तहां भरत शत्रु-हन दूनोंभाई खेलतरहे पत्रिकाकी खबरि पाइकै हर्षिकै राजाके पास दौरिआये (७)

अति स्नेहभरे संकोच सहित राजाते पूंछतभये हे तात महाराज यह पत्रिका कहांते आई है हम सुनाहै कि जनकपुर तेआईहै (८) दोहार्थ ॥ हे तात प्राणप्रिय दोऊबंधु कुशल संयुक्त कहहु कौने देश में हैं तब अति प्रेमभरी बाणीसुनिके राजाने बहुरिके पत्रिका बांचिसुनाई [१]॥

२९० सुनिपातीपुलकेदोउभ्राता । अधिकसनेहसमातनगाता १

प्रीतिपुनीतभरतकैदेखी * । सकलसभासुखलहेउविशेखी २

तबनृपदूतनिकटबैठारे * । मधुरमनोहरबचनउचारे * * ३

भैयाकहहुकुशलदोउबारे * । तुमनीकेनिजनयननिहारे * ४

श्यामलगौरधरेधनुभाथा । बयकिशोरकौशिकमुनिसाथा ५

पहिंचानेहुतुमकहहुसुभाऊ । प्रेमविवशपुनिपुनिकहराऊ ६

जादिनतेमुनिगयेलेबाई * । तबतेआजसांचिसुधिपाई * ७

कहहुविदेहकवनिबिधिजाने । सुनिप्रियबचनदूतमुसकाने ८

दो० सुनहुमहीपतिमुकुटमणि तुमसम धन्यनकोउ ॥

रामलषण जाकेतनय बिश्व बिभूषण दोउ १

२९० पत्रिका सुनिके अति स्नेहभरे दोऊभाई पुलके गातमें नहीं समातेहैं [१] अति पुनीत प्रीतिभरत कै देखिकै संपूर्णसभा विशेष सुखको प्राप्त भई (२) तब राजा दूतनको निकट बैठारिकै प्रीति सहित मधुर मनोहर बचन बोलतभये [३] भैया कहौ अति आदर पूर्वक राजा पूंछते हैं कि दोऊ बारे कुशल आनंद हैं तुम नीके अपने नेत्रनते देख्याहै (४) दोऊ बालक श्याम गौरहैं छोटे छोटे धनुषबाण अरु तरकश धरेहैं अरु बहिक्रम आदिकिशोर हैं अरु कौशिक मुनिके साथहैं (५) यह रीति स्वभावते दोऊ कुमारनको तुम नीके निजनयननते देख्यउहै हे भरद्वाज बारम्बार पुलकि पुलकि राजा पूंछतेहैं (६) राजा कहतेभये जादिनते मुनिलेवाइ गये तबते सांची सुधि आजुपाई है तहां सुखितौ सदा पावते रहेहैं काहेते दूतलगे रहेहैं पर विश्वामित्र विवाहके हेतु राजाते संज्ञा जनाइगयेहैं सो बिवाहको सुधि आजुपाई ताते सांचीकह्यो (७) राजा पूंछतेहैं कहहु बिदेहने कवन प्रकार जानाहै यह प्रियबचन सुनिके दूतमुसकाने (८) दोहार्थ ॥ दूत यह समुझिकै मुसकाने कि जिनके ऐसेपुत्र ते कहतेहैं कि कैसे चीन्हे यह समुझिकै दूतबोले हे सर्व महीपनको मुकुटमणि तुमसम धन्य न कोई है काहेते जाके रामलषण दोऊ तनय संपूर्ण बिश्वके भूषणहैं यहां ध्वनि है कि बिश्वके बिभूषण कहो चैतन्य कर्ता ब्रह्माजीव तेहूमूर्ति अखण्ड एकरस प्रत्यक्ष तुम्हारेतनय ताते तुम धन्यहौ (१)॥

२९१ पूंछनयोग्यनतनयतुम्हारे । पुरुषसिंहतिहुंपुरउजियारे १

जिनकेयशप्रतापकेआगे । शशिमलीनरबिशीतललागे २

तिनकहँकहियनाथकिमिचीन्हे। देखियरबिकिदीपकरलीन्हे ३

सीयस्वयम्बरभूपअनेका * । सिमटेसुभटएकतेएका * ४

शंभुसरासनकाहुनटारा * । हारेसकलबीरबरियारा * ५

तीनिलोकमहँजेभटमानी । सबकैशक्तिशंभुधनुभानी *

सकैउठायसुरासुरमेरू । सोउहियहारिगयेकरिफेरू * ७

जेहिकौतुकशिवशैलउठावा । सोउतेहिसभापराभवपावा ८

दो० तहां राम रघुबंसमणि सुनिय महा महिपाल ॥

भञ्जेउचाप प्रयासबिनु जिमिगजपंकज नाल

२९१ तब दूतोंने हे राजन् तुम्हारे तनय पूंछिबे योग्य नहीं हैं अरु पुरुष संज्ञा में जितने हैं तिनविषे तुम्हारे दोऊ तनय सिंह हैं अरु तीनिहू लोकविषे उजियार कही प्रकाशमान अरु प्रकाश करत हैं (१) जिनके यश उज्ज्वलता प्रकाश शीतलताकी मधुरताके आगे शशिमलीन है अरु जिनके प्रताप तेज निर्मल प्रकाशके आगे सूर्यमन्द है जस श्रीरामचन्द्रजीका प्रताप तैसेही श्रीलक्ष्मणजीका (२) हे नाथ तिनकहँकहहु किमि चीन्हे अरु दीपकके प्रकाशतेकहूं सूर्यको देखिये है (३) श्रीजानकीजीके स्वयंवरविषे सातहूद्वीपके राजा सिमटे कही इकट्ठा भये परएकते एक महाभट (४) तहां शंभुको शरासन उठावनकीका कहिये काहूसों नेकहू न टरेउ अरु बड़े बड़े वीर बरियार हारिगये (५) अरु तीनिलोक विषे जेभट जिनके वीरता करमान तिनसबकी शक्ति धनुष हरिलियो (६) अरु जेवीर देवदानव नरजानिये सुमेरु उठाइबेको समर्थ तेऊ हेरिकै हृदयमें हारिकै फिरिगये (७) अरु जेहि रावण कौतुकही में कैलास उठाय लियो है अरु बाणासुर पृथ्वीको उठाय लियो है तेऊ तेहि सभामें धनुषके द्वारा पराभवको प्राप्तभये हैं (८) दोहार्थ ॥ तहां तेहि सभाविषे हे महाराज श्रीरघुवंशमणिने धनुषको भंज्यउ किमि जिमि पंकजकी नालको गजखण्ड खण्ड करिकै डारिदेइ ऐसे तुम्हारे पुत्र हैं (९) ॥

२९२ सुनिसरोषभृगुनायकआये। बहुतभांतितिनआँखिदेखाये १

देखिरामबलनिजधनुदीन्हा। करिबहुबिनयगमनबनकीन्हा २

राजनरामअतुलबलजैसे । तेजनिधानलषणपुनितैसे * ३

कम्पहिंभूपबिलोकतजाके । जिमिगजहरिकिशोरकेताके ४

देवदेखितवबालकदोऊ । अबनआँखितरआवतकोऊ * ५

दूतबचनरचनाप्रियलागे * । प्रेमप्रतापबीररसपागे *

सभासमेतराउअनुरागे * । दूतनदेननिछावरिलागे * ७

कहिअनीतितेमूँदहिंकाना । धर्मबिचारिसबहिंसुखमाना ८

दो० तब उठि भूप वशिष्ठ कहँ दीन्हि पत्रिका जाइ ॥
कथा सुनाई गुरुहिसब सादर दूत बोलाइ १

हे राजन् धनुषभंग सुनिकै भृगुनायक आये बहुत प्रकारते आंखि देखावते भये (१) श्रीरामचन्द्र को बलदेखि कै अपनो धनुष दैकै बिनय करिकै वनगमनकीन्ह (२) हे राजन् जैसे श्रीरामचन्द्रका बलअतुलहै तैसेही अतुलबल तेजके निधान लक्ष्मण जू हैं (३) जिनलक्ष्मण के बिलोकत सबैमानी भूप कांपतेहैं किमि जिमि सिंह के किशोर के ताकेते गजकम्पहिं (४) हे देव तुम्हारे बालकनको जबते देखा तबतेकोऊ की शोभा प्रताप वीरता मेरे अब आंखिनतरे नहीं आवति कि इनके सम तौ कोईवीर हुईनहीं है अधिक कहांते होइगो (५) तब दूतनके अति रचना संयुक्त बचन सुनिकै अति प्रियलागे सो वह बचन कैसा है प्रेम प्रताप वीररसते पागाहै (६) हे भरद्वाज दूतनकी बाणी सुनिकै राजा सहित सभा अनुरागको प्राप्तभये तब दूतनको निछावरि देनेलगे (७) तब दूतन अनीति कहिकै कानमूंदे धर्म बिचारिकै सबहिन सुखमानिकै बड़ाई दीन्ह साबसि बिदेहके तुमदूत हौ (८) दोहार्थ ॥ तब भूपने उठिकै हर्षते पत्रिका वशिष्ठजूको दीन्हि जाइ अरु दूतनको बुलाइकै दूतन के मुखते सब कथा सुनावते भये (१) ॥

२९३ मुनिबोलेगुरुअतिसुखपाई। पुण्यपुरुषकहँसुखमहिछाई १
जिमिसरितासागरमहँजाहीं । यद्यपिताहिकामनानाहीं २
तिमिसुखसम्पतिबिनहिंबुलाये। धर्मशीलपहँजाहिंसुभाये ३
तुमगुरुबिप्रधेनुसुरसेवी * । तसपुनीतकौशल्यादेवी * * ४
सुकृतीतुमसमानजगमाहीं । भयेनहैंकोउहोन्यउनाहीं ५
तुमतेअधिकपुण्यबड़काके । राजनरामसरिससुतजाके * * ६
वीरबिनीतधर्मब्रतधारी * । गुणसागरबरबालकचारी * ७
तुमकहँसर्बकालकल्याना । सजहुबरातबजाइनिशाना * ८

दो० चलहु बेगि सुनि गुरुबचन भलेहि नाथ शिरनाइ ॥
भूपति गमने भवन तब दूतन बास दिवाइ १

२९३ तब वशिष्ठजू अति सुखपाइकै बोले हे राजन् पुण्य पुरुष कहँ महि बिषे सुखछाइ रहेउहै (१) किमि सुखछाइ रहेउ है जिमि संपूर्ण नदी समुद्रको जाती हैं यद्यपि समुद्रकी कामना नहींहै (२) तदपि तिमि तेहीप्रकार सुख संपत्ति बिना बुलाये धर्म शील पुरुष के पास जाते हैं (३) अरु तुमतौ धर्मशील रूपैहौ अरु तुम सुर गुरु बिप्र धेनु सेवीहौ अरु तैसोही पुनीत श्रीकौशल्या देवीहैं (४) हे राजन् तुम्हारे समान सुकृती न कोई भयोहै न है न होइगो (५) अरु तुम्हारे सम पुण्य किसू के तीनिहु काल में नहींहै अधिक कहांते होइगो काहेते जिनके राम ऐसे पुत्र हैं जिनको परम

हंस आदिक ध्यावते हैं (६) कैसेहैं तुम्हारे चारिउपुत्र वीर विनीत कहो प्रवीण अरु सर्व धर्मके धरैया (७) हे राजन् तुमकहँ सर्वकाल में कल्याण है अब बरातको साजिकै नगारा बजाइकै चलहु (८) दोहार्थ ॥ हे भरद्वाज तब गुरुनको शीघ्र चलहु यह बचन सुनिकै दूतनको वास दिवायकै अति हर्षते भवन को आये (९) ॥

२९४ राजासबरनिवासबुलाई । * बाँचिसुनाई * १

सुनिसंदेशसकलहरषानी । अपरकथासबभूपबखानी * * २

प्रेमप्रफुल्लितराजहिंरानी । मनहुँशिखिनसुनिबारिदवानी ३

मुदितअशीशदेहिंगुरुनारी । अतिआनंदमगनमहतारी * ४

लेहिंपरस्परअतिप्रियपाती । हृदयलगायजुड़ावहिंछाती ५

रामलषणकैकीरतिकरणी । बारहिंबारभूपवरबरणी * * ६

मुनिप्रतापकहिद्वारसिधाये । रानिनतबमहिदेवबुलाये * ७

दियेदानआनंदसमेता * * । चलेविप्रवरआशिषदेता * * ८

सो० याचक लिये हँकारि दिये निछावरि कोटिबिधि ॥
चिरजीवहु सुत चारि चक्रवर्त्ति दशरत्थ के १

२९४ तब राजाने सब रनिवासको बुलाइकै जनक की पत्रिका बाँचिकै सुनाइ दीन्ह (१) तब सुनिकै सब रानी हर्षीं अपर कथा भूप सुखागर कहते भये (२) राजा रानी प्रेमते प्रफुल्लित हैं जैसे बारिदकर शब्द सुनकै मयूरमयूरीके आनन्द होतहै [३] अरुगुरुन की स्त्री इत्यादिक ब्राह्मणनकी स्त्री आशीर्वाद देतीहैं अरु माता सब आनन्दित हैं [४] और परस्पर पाती लेतीहैं हृदय में लगाइ कै श्रीरामचन्द्र के बिक्षेप के बिरहकी अग्निको शीतल करती हैं [५] अरु राम लक्ष्मण की करणी कै कीर्त्ति बर कहो श्रेष्ठ बार बार राजा बर्णते हैं [६] अरु सब कौशिक मुनिको प्रताप है यहकहिकै राजा सभाको जाते भये तब रानिन ब्राह्मणनको बुलाय [७] आनन्दपूर्वक अनेकदान देती भईं तब वर बिप्र आशीर्बाद देतचले [८] सोरठार्थ ॥ अरु अनेक याचक बुलाइ कै कोटिन बिधि निछावरि देती भईं तब वे आशीर्बाद देत भये कि चक्रवर्ती राजा दशरथ तिनके पुत्र चिरञ्जीव होहिं [९] ॥

२९५ कहतचलेपहिरेपटनाना । हर्षिहनेगहगहेनिशाना * * १

समाचारपुरलोगनपाये * । लागेघरघरहोनबधाये * * * २

भुवनचारिदशभयउउछाहू । जनकसुतारघुवीरबिवाहू * * ३

सुनिशुभकथालोगअनुरागे । मगगृहगलीसँवारनलागे * * ४

यद्यपिअवधसदैवसुहावनि । रामपुरीमंगलमयपावनि * * ५

तदपिप्रीतिकीरीतिसुहाई । मंगलरचनार * * ६

ध्वजपताकपटचामरचारू। छावापरमविचित्रबजारू ॥ ७
कनककलश तोरण मणिजाला। हरदिदूबदधिअक्षतमाला ॥ ८
दो० मंगलमय निज निज भवन लोगन रचे बनाइ ॥
बीथी सींचीं चतुर सम चौकें चारु पुराइ ॥ १

२९५ तब पाइकै नानाप्रकार के पट पहिरि पहिरि सहजही हर्षकै चले तब हर्षिकै गहगहे कहो सघन गम्भीर निशान कहो नगारे बाजते भये [ ] श्रीरामचन्द्र के बिवाह के उत्सवको समाचार सब लोगन पायो घर घर बधाई बाजने लगी हैं [२] श्रीराम जानकी के बिवाह के उत्सव को मंगल चौदहो भुवनन में होनेलगो [३] यह सब कथा सुनिकै लोग अनुरागको प्राप्त है कै मग गृह गली सवँारने लगे [४] अरु यद्यपि अयोध्या सदै एक रस शोभित है काहेते श्री रामचन्द्र की पुरी है मंगलमय अति पावनि शोभित हैं [५] तदपि श्री रामचन्द्रके बिवाहकी प्रीतिरीति ते सब उत्सव को साज सजते अरु रचना करतेहैं [६] अरु ध्वजा पताका चामर पट इत्यादिक करिकै विचित्र चारु कही सुन्दर बाजार की रचना करते भये [७] पुनिकनक कलश अरु तोरण कही मणिनके बन्दनवार तेहिकर जालरचा अरु हर्दी दूब अक्षत दधि इत्यादिक मालकी माल कही पंक्ति की पंक्ति रचना करते भये [८] दोहार्थ ॥ अरु लोग मंगलमय निज निज भवन बनावतेभये अरु चतुर जन बीथी कही गली अगर कर्पूर कस्तूरी केशरि अतर फुलेल इत्यादिकनते सींचते भये अरु गजमुक्तन की चारु चौकें पूरते भये [९] ॥

२९६ जहँतहँ यूथयूथमिलिभामिनि। सजिनवसप्तसकलद्युतिदामिनि ॥ १
बिधुबदनीमृगशावकलोचनि। निजस्वरूपरतिमानविमोचनि ॥ २
गावहिंमंगलमंजुलबानी ॥। सुनिकलरवकलकंठलजानी ॥ ३
भूपभवनकिमिजाइबखाना। बिश्वबिमोहनरचेउबिताना ॥ ४
मंगलद्रव्यमनोहरनाना ॥। राजतबाजतबिपुलनिशाना ॥ ५
कतहुंबिरदबन्दीउचरहीं ॥। कहुंवेदध्वनिभूसुरकरहीं ॥ ६
गावहिंसुन्दरिमंगलगीता। लैलैनामरामअरुसीता ॥ ७
बहुतउछाहभवनअतिथोरा। मानहुंउमँगिचलेउचहुंओरा ॥ ८
दो० शोभा दशरथ भवन कै को कवि बरणै पार ॥
जहां सकल सुर शीशमणि राम लीन्ह अवतार ॥ १

२९६ जहां तहां यूथ यूथ भामिनी मिलिकै नवसप्त कही सोरहो शृङ्गार किहे सकल कही संपूर्ण किन्तु सकल कहे स्वरूप दामिनी की द्युति कही शोभा को हरतु है [१] सब चन्द्र बदनी मृगशावक नयनी अपनो छवि स्वरूप करिकै रतिको मान

मर्दन करती हैं [२] ते सब मङ्गल मञ्जुल कही निर्मल बाणी ते गान करती हैं कल कही शोभितरव सुनिकै काल कही कोकिलाको कंठ लज्जित होते हैं [३] अरु भूपकर भवन कैसे बखानिये जहां बिश्व विमोहन बितान रचेउ है जैसे जनकके भवनमें बित न शोभित है रचना भई है तैसे राजा दशरथ के भवन में बितान शोभितहै रचना भई है [४] अरु मंगल द्रव्य कही रत्न सुबर्ण बद्रुम नाना प्रकारके पट अरु गज तुरङ्ग रथ इत्यादिक मनोहर राजते हैं अरु निशान इत्यादिक बाजते हैं [५] अरु कतहुं कही जहां तहां बन्दी बिरदावली छन्दन करिकै उच्चारण करते हैं अरु जहां तहां ब्राह्मण वेदध्वनि करते हैं [६] तहां राम अरु सीता का नाम कहि २ सब सुंदरी मंगल मय गीत गावती हैं [७] हे गरुड़ जनु बहुत उत्साह छोटे घरमें तेहि समय विषे उमँगि चल्यो है [८] दोहार्थ ॥ हे पार्वती राजा दशरथके भवन की शोभा ऐसो कौन कवि है जो बर्णन करै काहेते जिन दशरथ के ब्रह्मा शिवादिक देवतनके शिरोमणि श्री रामचन्द्र अवतार लीन्ह [१] ॥

२९७ भूपभरतपुनिलियेबुलाई ❋ । हयगजस्यंदनसाजहुजाई ❋ १
चलहुवेगिरघुबीरबराता ❋ । सुनतपुलकपूरेदोउभ्राता ❋ २
भरतसकलसाहनीबुलाये ❋ । आयसुदीन्हमुदितउठिधाये ३
रुचिरुचिजीनतुरँगतिनसाजे । वर्णावर्णवरबाजिबिराजे ❋ ४
सुभगसकलसुठिचंचलकरणी । अयइवजरतधरतपगधरणी ५
नानाजातिनजाहिंबखाने ❋ । निदरिपवनजनुचहतउड़ाने ६
तिनपरछैलभयेअसवारा ❋ ❋ । भरतसरिससबराजकुमारा ७
सुन्दरसबबहुभूषणधारी ❋ ❋ । करशरचापतूणकटिभारी ८
दो० करे छबीले छैल सब शूर सुजान नवीन ॥
युग पदचर असवार प्रति जे असि कला प्रवीन १

२९७ पुनि राजा भरतजी को बुलावते भये अरु आज्ञादीन्ह कि घोड़े हाथी स्यन की तय्यारी करावो [१] बेग कही शीघ्र रघुनाथ जीके विवाह की बरात सजिकै चलहु यह सुनिकै भरत दोऊ भाई पुलके आनन्द भरिकै धाये [२] तब भरतजू सकल साहनी कही दरोगन को बुलावते भये यह आज्ञा दीन्ह कि घोड़े रथ पैदर समूह रचिकै सब तय्यारी करो शीघ्रही श्री रघुनाथ जीके विवाहार्थ जनक पुरको चलैंगे [३] ते सब हर्षिकै तय्यारी करावते भये नाना वर्ण कही नाना रङ्ग रङ्ग के घोड़नके [सु]ङ्गार जीन अ.बर्ण इत्यादिक अङ्ग अङ्ग प्रति यथा योग्य हेम मणि मोती पाटम्बर जराकनते सजत भये [४] ते घोड़े कैसे हैं सुभग कही अति सुंदर सदा नवीन अरु सुठि चंचल करणी जैसे कुम्हारके आवां जरत में पग धरै शीघ्र उठै तैसेही

निन्दा करिकै आकाश बिषे उड़िजावा चाहतेहैं (६) तिन घोड़न पर रघुवंशिनके बालक अति सुंदर किशोर नख शिखलौं परम सुंदर दिव्य अलंकार किहे छैल असवार होतेभये सो सब राजकुमार भरत लक्ष्मण शत्रुहन के सरिस कही सदृश हैं [७] अरु रूपजही अति सुंदरस्वरूप अनेकभूषण उनतेशोभा पावतेहैं अरु करविषे धनुषबाण कटिविषे तूणचित्र बिचित्र शोभित है अरु शीश बिषे जरावनके चीर. कनक मोतिन की कलँगी कटि अरु कांधे बिषे पीताम्बर अति शोभित है गौर श्यामरूप है (८) दोहार्थ ॥ अरु छरे कही कछु और बस्तु नहीं लीन्हे छबीले कही अति हर्ष प्रसन्न मन सब श्रीराघवजी के सखा दास सबके पियारे दुलारे एकरस अरु दान संग्राम बिषे अति शूर अरु सुजान कही सर्व वेद बेत्ता सर्व नीति में प्रवीण अरु नित्य नवीन तिन संग बिषे सवार प्रति दुइ दुइ पैदर जे असि कला में अति प्रवीण (१) ॥

२९८ बांधेबिरदबीररणगाढ़े । निकसिभयेपुरबाहरठाढ़े ** १
फेरहिंचतुरतुरँगगतिनाना। हर्षहिंसुनिसुनिपणवनिशाना २
रथसारथिनबिचित्रबनाये । ध्वजपताकमणिभूषणछाये ३
चमरचारुकिंकिणिध्वनिकरहीं ।भानुयानशोभाअपहरहीं ४
श्यामकर्णअगणिततहयहोते । तेतिनरथनसारथिनजोते * ५
सुंदरसकलअलंकृतसोहैं * । जिन्हहिंबिलोकतमुनिमनमोहैं ६
जेजलचलहिंथलहिंकीनाई । टापनबूड़बेगअधिकाई * ७
अस्त्रशस्त्रसबसाजबनाई ** । रथीसारथिनलियेबुलाई ८

दो० चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर लागी जुरन बरात ॥
होत शकुन सुन्दर सबहिं जो जेहि कारज जात १

२९८ अरु गाढ़े गाढ़े वीर रणके बिरद बांधेहैं तय्यार होइकै पुरके बाहर निकसि निकसि ठाढ़े भये (१) चतुर सवार नाना गतिके तुरंगन को फेरते हैं अरु पणव कही ढोल निशान कही नगाराके शब्द सुनिकै हर्षते हैं (२) अरु सारथिन ने रथको चित्र विचित्र अनेकन हेम मणि मुक्तन करिकै सजे अरु मणिनके भूषणन करिकै ध्वजा पताका छायेहैं (३) अरु चारु चमर शोभित हैं अरु किंकणी ध्वनि करती हैं सो रथ कैसो है भानु यानके बेगकी शोभा को अपहरत है (४) जिन घोड़न को रथ में सारथिन जोतेहैं तिनते अगणित श्यामकर्ण होते हैं किंतु कदापि दैवयोग ते अगणित घोड़न बिषे कहूं दुइ एक श्यामकर्ण होते हैं और इहां अगणित श्यामकर्ण रथन में जोते गयेहैं (५) अरु सकल घोड़े अति सुन्दर अलंकार करिकै शोभा युक्त जिनको देखिकै मुनि विरक्त हैं तिनकेर मन मोहि जातेहैं (६) ते घोड़े जैसे थलमें चलतेहैं तैसे ही जलमें चलते हैं बेगको आधिक्यता ते टाप नहीं बूड़े है (७) अरु अस्त्र शस्त्र सब साज बनाइकै ऐसा रथ सजिकै सारथिन रथिनको बोलाइ लियो (८) दोहार्थ ॥ तब

रथन घोड़न पर चढ़ि चढ़ि बरात बाहर जुरन लागी अति सुन्दर शकुन होत हैं जो जेहि कार्यको जातहै सबकर कार्य श्रीरामचन्द्र कर दर्शन अरु राम निछावरि अरु काहू काहूके बिवाह की बासना किंतु जौन जौन कार्य जाको चाही सो धाइ धाइ करते हैं (१) ॥

२९९ कलितकरिवरनपरींअँबारी। कहिनजाइजेहिभांतिसँवारी १
चलेमत्तगजघंटबिराजे ❋ ❋। मनहुसुभगश्रावणघनराजे २
बाहनअपरअनेकबिधाना। शिबिकासुभगसुखासनयाना ३
तिनचढ़िचलेबिप्रवरवृन्दा ❋। जनुतनुधरेसकलश्रुतिछंदा ४
मागधसूतबंदिगुणगायक। चलेयानचढ़िजोजेहिलायक ५
बेसरऊंटवृषभबहुजाती ❋ ❋। चलेबस्तुभरिअगणितभाँती ६
कोटिनकांवरिचलेकहारा ❋। बिबिधबस्तुकोबरणैपारा ७
चलेसकलसेवकसमुदाई ❋। निजनिजसाजसमाजबनाई ८

दो० सबके उर निर्भर हरष पूरित पुलक शरीर ॥
कबहुं कि देखब नयन भरि रामलषण दोउवीर १

२९९ अनेक तरहके रत्न कंचन मुक्तन करिकै कलित पाटम्बर इन पटन पर कलित परम सुन्दर अम्बारी जेहि भांति हाथिन पर परीहैं सो कही नहीं जाइ (१) मत्त मत्त गजन के घटाके घटा चले इंद्रके गजनको निंदा करतेहैं श्रीरामचन्द्र की सवारी के हाथीको नाम शत्रुंजय तेहिकी सम यूथके यूथ चले मानों श्रावण की घन घमण्ड घटामें अनेक दामिनी दमकत जनु तापर तारा गण उदित एक रस मधुर मधुर गर्जत चलेहैं (२) अरु अपर अनेक बाहन बिबिध बिधानकी शिबिका कही नालकी पालकी चौपहलू मियाना इत्यादिक अरु सुखासन सुखपाल यान कही रथ (३) तिन पर चढ़ि चढ़ि वृद्ध ब्राह्मण जनु श्रुतिनके छंदनकी ऋचा रूप धरि चले हैं (४) मागध कही कलावत सूत पुराण गावते हैं बंदीजन इत्यादिक जे जैसे लायक ते तैसे बाहन पर चढ़ि चढ़ि चले (५) अन्यच्च ॥ सूताः पौराणिकाज्ञेयामागधावंशवर्णकाः ॥ बंदिभिर्वीररसभिः पूर्मुक्तैर्महौजसं ॥ १ ॥ बेसर कही खच्चर अरु ऊंट वृषभ इत्यादिक भार बाहक अनेकन पदार्थ भरि भरि चले (६) अरु कोटिन कहार अनेक पक्वान्न मिठाई कांवरिन में भरि भरि चले (७) अरु सकल सेवक आपन आपन साज साजि साजि चले [८] दोहार्थ ॥ सबके उर बिषे निर्भर कही औरि एकौ सुधि नहींहै प्रेमते भरे आतुर कब पहुंची पुलकते शरीर पूरि रह्यो है दुहुन नयननते श्रीराम लषणको कब देखब (१) ॥

३०० गर्जहिंगजघंटाध्वनिघोरा। रथरवबाजिहासचहुंओरा ❋ १
निदरिघनहिंघुर्मरहिंनिशाना। निजपरावकछुसुनियनकाना २

महाभीरभूपतिकेद्वारे ** । रजहोइजाइपखानपँवारे ** ३
चढ़ीअटारिन्हदेखहिंनारी । लिएआरतीमंगलथारी ** ४
गावहिंगीतमनोहरनाना * । अतिआनंदनजाइबखाना * ५
तबसुमंतदुइस्यंदनसाजी * । जोतेहयरविहयनिंदकबाजी * ६
दोउरथरुचिरभूपपहँआने * । नहिंशारदपहँजाहिंबखाने * ७
राजसमाजएकरथसाजा * । दूसरतेजपुंजअतिभ्राजा ** ८

दो० तेहि रथ रुचिर वशिष्ठ कहँ हरषि चढ़ाइ नरेश ॥
आपु चढ़े स्यंदन सुमिरि हर गुरु गौरि गणेश १

३०० अरु हाथी गर्जतेहैं घंटनकी ध्वनि हूँ अति घोरहोती हैं अरु रथन को रव अरु घोड़नकी हिंसकही हिहनाव चारिउदिशा में पूरिरह्यो है (१) अरु मेघ के शब्दकी निन्दाकरिकै निशान घुमरतेकही बाजतेहैं तहां अपनी पराई बोलीनहीं सुनि परती है (२) हे भरद्वाज भूपकेद्वारे महाभीर भई हाथी घोड़ रथ पैदरन करिकै जो पाषाण पँवारिदेइ तौ रजहोइ जाइ (३) तहां महलनपर चढ़ी चन्द्रमुखी देखती हैं थारिनमें मंगलमय आरती लिहेहैं (४) आनन्दपूर्वक मनोहर गीत गावती हैं बखान करिबे योग्यनहीं हैं (५) तब सुमन्त दुइरथ चन्दन साजतेभये तेहिमें रविके घोड़न के निन्दक घोड़े जोतते भये (६) अरु ते दोऊरथ रुचिरकही सुन्दर भूपपहँ आनत भये तिनकी शोभा शारदा शेषपहँ नहीं बखानते बनैहै (७) राजसाज संयुत एकरथ राज समाजकही राजाकेहेतु साजागया है अरु दूसर तेजपुंज अतिशोभित भ्राजतहै (८) दोहार्थ ॥ तेहि रथपर हर्षिकै राजा वशिष्ठकहँ चढ़ावते भये अरु आपु हर गुरु गौरि गणेश कहँ सुमिरिकै चढ़तेभये (१) ॥

३०१ सहितवशिष्ठसोहनृपकैसे । सुरगुरुसंगपुरन्दरजैसे *** १
करिकुलरीतिवेदविधिराऊ । देखिसबहिंसबभांतिबनाऊ * २
सुमिरिरामगुरुआयसुपाई * । चलेमहीपतिशंखबजाई * ३
हरषेविबुधविलोकिबराता * । बरषहिंसुमनसुमंगलदाता * ४
भयउकोलाहलहयगजगाजे । व्योमबरातबाजनेबाजे ** ५
सुरनरनारिसुमंगलगाई * । सरसरागबाजहिंसहनाई * ६
घंटघंटध्वनिबरणिनजाई * । सरोकरैंपायकफहराई ** ७
करहिंविदूषककौतुकनाना । हास्यकुशलकलगानसुजाना ८

दो० तुरंग नचावहिं कुंवर वर अकनि मृदंग निशान ॥
नागरनट चितवहिंचकित डिगहि न तालबँधान १

३०१ सहित बशिष्ठ राजा कैसे शोभित हैं जैसे बृहस्पति संयुक्त इन्द्र सोहते हैं [१] सबभांतिते बरातकर बनाव देखिकै राजा वेदविधिसे सब कुलरीति कीन्हि [२] पुनि श्रीरामचन्द्रको हृदयमें सुमिरिकै राजा गुरुनकी आज्ञापायकै पाञ्चजन्य शंखध्वनि करिकै चलतेभये [३] तब बरात बिलोकिकै देवता हर्ष कल्पवृक्षके फूल बर्षतेहैं कैसे फूल मंगलदाता किन्तु अपनो मंगलदाता बरातको देखिकै फूल बर्षतेहैं [४] तब कोलाहल कही सबको मंगलमय शब्द अति उत्कर्ष गजघोर इत्यादिकन के अरु आकाश बरात्त दोऊविषे अनेकन बाजे बाजतेभये [५] तहां सुर नर नारि अनेकन मंगल गावती हैं अरु सुरराग रागिनी लिहे सहनाई बाजती हैं [६] अरु घण्टा घण्टिनकी ध्वनि बर्णी नहीं जाती है अरु मल्ल सरोकरते हैं ताल देतेहैं कूदते हैं फहराते हैं किन्तु मल्लसरो करते हैं कूदते हैं अरु पायक नभ बिषे कूदते हैं फहराते हैं [७] अरु बिदूषक कही भँाड़ ते अनेक कौतुक करते हैं अरु हास्यरस में कुशलकही अति प्रवीण हैं अरु सब राग रागिनी तालस्वर प्रबन्ध अरु नृत्य में अति प्रवीणहैं [८] दोहार्थ ॥ तहां कुंवर कही रघुबंशिन के बालक ते बरकही श्रेष्ठ तुरंग नचावते हैं अरु अकनि कही मृदंग निशाननकी टंकोर सुनिकै नागरकही चतुरनटते चकितकही चंचलनेत्रनते आश्चर्ययुत घोड़े बाजनम की गति लखिकै तेहिपर आपु नृत्य करतेहैं ताल बन्धानते नहीं डिगैं नाम नहीं चूकैंहैं [९] ॥

३०२ बनैनबरणातबनीबराता ॥ होहिंशकुनसुन्दरशुभदाता ॥ १
चाराचाषबामदिशिलेहीं ॥ मनहुंसकलमंगलकहिदेहीं ॥ २
दाहिनकागसुखेतसुहावा ॥ नकुलदरशसबकाहूपावा ॥ ३
सानुकूलबहत्रिबिधबयारी ॥ सघटसबालआवबरनारी ॥ ४
लोवाफिरिफिरदरशदेखावा । सुरभीसंमुखशिशुहिपियावा ५
मृगमालाफिरिदाहिनआई ॥ मंगलगणजनुदीनदिखाई ॥ ६
क्षेमकरीकहक्षेमबिशेषी ॥ श्यामाबामसुतरुपरदेखी ॥ ७
सन्मुखआयउदधिअरुमीना ॥ करपुस्तकदुइबिप्रप्रवीना ॥ ८

दो० मंगल मय कल्याण मय अभिमत फल दातार ॥
जनु सब सांचे होन हित भये शकुन यक बार १

३०२ हे भरद्वाज बरातका ऐश्वर्य शोभा बनाव बर्णिबे योग्य नहींहै बरात के आगे सुन्दर अति शुभदाता शकुन होतेहैं [१] चाष कही नीलकण्ठ सो चारालिहे बायें दिशा देखिपरैं सो मानहुं संपूर्ण मंगल कहे देतेहैं [२] अरु दाहिनी दिशा में काग सुखेत बिषे सुन्दर बाणी बोलत पुनि नकुल कही नेउरा तेहिकर दर्शन सब काहुन पावा [३] अरु सानुकूल कही पूर्व को जातेहैं पश्चिम के पवन त्रिविध कही शीतल मन्द सुगन्ध पवन श्रीअयोध्याते जनकपुर ताईं बहति है मानहुं बरातकै दूतपन करति

है अरु दुइघट सरयू निर्मल जल भरे बर नारि किशोरी चन्द्रमुखी अरु बालक लिये यही प्रकार दुइ स्त्री आगे आवती भई [४] पुनि लोवा कही लोखरी घूमि घूमि दर्शन देतीहै अरु सम्मुख सुन्दर नवीन गऊ शिशु बत्स पियावती है [५] पुनि मृग हरिणनकी माला कही पांतिकी पांति सबको दहिनी दिशा में देखि परीं मानहुं मंगल के गण कहो समूह देखाये देती हैं [६] पुनि छेमकरी छेमकी करनिहारी सो देखि परी बोली अरु श्याम बिहंग आम्र बृक्षपर देखिपरी [७] पुनि सम्मुख दधि अरु मीन भारके भार देखि परे पुनि दुइ ब्राह्मण प्रवीण सुन्दर हाथ बिषे श्रीमद्रामायणके पुस्तक लिये देखि परे [८] दोहार्थ ॥ श्रीदशरथ महाराजके बरात कैसीहै स्वाभाविके मंगल अरु कल्याण मयहै अरु इच्छित फलकी देनहारी है तेहि बरात की यात्रा बिषे सब शकुन मानहुं अपने सत्यहोबेके निमित्त प्राप्त भये [९]॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वं-सनेबालकांडेश्रीदशरथमहाराजबरातप्रस्थानवर्णनंनामएकपंचाशतमस्तरंगः ॥ ५१ ॥

दो० युग्म पचास तरंग में चली बरात उमंग ॥
रामचरण मिथिलाजलधि मिलनचली जनुगंग ५२

३०२ मंगलशकुनसुगमसबताके । सगुणब्रह्मसुन्दरसुतजाके ॥ १
रामसरिसबरदुलहिनसीता । समधीदशरथजनकपुनीता ॥ २
सुनिअसब्याहशकुनसबनाचे । अबकीन्हेविरंचिहमसांचे ॥ ३
यहिविधिकीन्हबरातपयाना । हयगजगाजेहनेनिशाना ॥ ४
आवतजानिभानुकुलकेतू ॥ सरितनजनकबंधायोसेतू ॥ ५
बीचबीचबरबासबनाये ॥ ॥ सुरपुरसरिससंपदाछाये ॥ ६
अशनशयनबरबसनसोहाये । पावहिंसबनिजनिजमनभाये ॥ ७
नितनूतनसुखलखिअनुकूले । सकलबरातिनमन्दिरभूले ॥ ८

दो० आवत जानि बरात बर सुनि गह गहे निशान ॥
सजि गजरथ पदचर तुरँग लेन चले अगवान १

३०३ हे गरुड़ जोराजाकी बरातमें इतने शकुन भये तौकौन आश्चर्य है राजा को सब शकुन मंगल सहजही सुलभ हैं काहेते जिनके परब्रह्म परमदिव्य गुण मूर्ति पुत्र हैं [१] जेहि बरात बिषे श्रीरामचन्द्रबरहैं औ परमानन्द मूर्ति श्रीजानकीजी दुल-हिनि हैं अरु दशरथ जनक समधी हैं जिनके श्रीरामजानकी तनय तनया हैं जे ऐसे पुनीत हैं तिनकी बरात मंगल रूपही है [२] तहां यह ब्याह सुनिके शकुन सब नाचे हैं कि अब बिरञ्चि हमको सांचे कीन्हेहैं [३] ऐसे बरातने यही प्रकारते पयान कीन्हे है अरु हाथी घोड़े निशान गाजते हैं [४] तहां भानुकुल केतुकै बरात आवत जानिके जनकजी सरितन बिषे सेतु बँधावते भये [५] अरु बीच बीचमें बरबास बनावते भये तहां सुरपुरते अधिक सम्पदा छायरहीहै [६] अशन भोजन अरु शयन कही निवास

श्वर्या वरवसन इत्यादिक मनभावित सबको प्राप्त हैं [७] अरु नित्य मंजिल मंजिल पर नवीन नवीन अधिक अधिक सुख प्राप्त हैं सो सुख देखि देखि अपने अपने मन्दिर कर सुख भूलि गये हैं [८] दोहार्थ ॥ आवत जानि बरातबर---जब बरात जनकपुरके समीप पहुँची तब जनकजीकोओर बरातकर आगमन सुनिके अनेकन बाहन गजरथ तुरंग इत्यादिक साजिके अनेक बाजा बाजत संते अगवानी लेबेको चलते भये [१] ॥

*। भाँतिभाँतिनहिं [illegible] बखाने * २

फलअनेकबरबस्तुसोहाई * । हरषिभेंटहितभूपपठाई * ३

भूषणबसनमहामणिनाना । खगमृगहयगजबहुबिधियाना ४

मंगलशकुनसुगन्धसुहाये । बिबिधभाँतिमहिपालपठाये * ५

दधिचूराउपहारअपारा * । भरिभरिकाँवरिचलेकहारा * ६

अगवानिनजबदीखबराता । उरआनंदपुलकिभरिगाता * ७

देखिबनावसहितअगवाना । मुदितबरातिनहनेनिशाना * ८

दो० हरषि परस्पर मिलन हित कछुक चले बगमेल ॥
जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत बिहाय सुबेल १

३०४ तबजनकजीकी आज्ञाते अनेक सोनेके कलश कोपरथार इत्यादिक भाजन अनेक पदार्थ के भोजन पक्वान्न मिठाई इत्यादिक [१] ते सब सुधा के समान तिन पात्रनमें भरेहैं अनेक भांतिभांतिके पक्वान्न बख निबे योग्य नहींहैं (२) अरु अनेक प्रकार के फल औ अनेकबस्तु मेवा गरी छोहारा बादाम पिस्ता किसमिस सेव नासपाती अनार खवानी अंगूर पनस रसाल इत्यादिक अनेक मेवा अनेकन भारन भरि भरि भेंटके निमित्त जनकजी पठावते भये (३) अरु अनेक भूषण कंचन अरु जरिनके अनेकनबस्त्र अरु अनेकन महा मणि मणि अनेकन जाति जाति के खग मृग अरु यान (४) मंगल शकुन सुगन्ध सुहाये अरु मंगल मय शकुन के पदार्थ अरु अनेक सुगन्ध अतर गुलाब फुलेल इत्यादिक सुन्दर बिबिध प्रकार के पठावते भये (५) अरु दधि चिउरा चर्वण इत्यादिक उपहार कही सो अनेक काँवरि भरि भरि कहार लैचले हैं (६) पुनि जब अगवानिन बरातकहँ देखिन तब अति आनन्दते पुलकिकै गात भरि आये (७) पुनि बराती बनावसहित अगवानिन कहँ देखिकै अति आनन्द पूर्वक निशान आदिक बाजा बजावते भये [८] दोहार्थ ॥ तबहर्षिकै नगारेदै परस्पर मिलन हेतु बगमेलकही हाथी घोड़े रथनकी बागैं दोऊ दिशिते छूटती भई जनु आनन्द के दुइ समुद्र बेला बिहायकै संगम करते भये सुष्ठु बेला कही मर्याद कहँ (१) ॥

३०५ बर्षिसुमनसुरसुन्दरिगावहिं । मुदितदेवदुन्दुभीबजावहिं * १

बस्तुसकलराखीनृपआगे *। बिनयकीनतिनअतिअनुरागे २

प्रेमसमेतरायसबलीन्हे * । भइबकसीसयाचकनदीन्हे * ३
करिपूजामान्यताबड़ाई । जनवासेकहँचलेलयवाई * * ४
बसनबिचित्रपांवड़े परहीं । नृपदशरथतापरपगधरहीं * * ५
अतिसुंदरदीन्हेजनवासा । जहँसबकहँसबभांतिसुपासा * ६
जानीसियबरातपुरआई । निजमहिमाकछुप्रकटजनाई * ७
हृदयसुमिरिसबसिद्धिबोलाई । भूपपहुनईकरनपठाई * * ८

दो० सिधि सबसिय आयसु अकनि गई जहां जनवास ॥
लिये संपदा सकल सुख सुर पुर भोग बिलास १

३०५ तेहि समय कर सुखदेखिकै देवता फूल बर्षते हैं सुर सुन्दरी गान करती हैं अरु देवता मुदित दुन्दुभी कहीछोटे छोटे नगारनकी नौबति बजावतेहैं (१) जो सरंजाम भेंटहेतु गया सो राजाके आगे राखिकै कर जोरिकै बहुत प्रकारते विनय कीन्ह २) तब राजा प्रेम समेत सब लैकै याचकन को बख्सीस देते भये (३) तब जे अगवानी बरातके लेबेको गयेहैं ते राजा की पूजा मान्यता बड़ाई करिकै हाथ जोरिकै जनवासे को लेवाइ चले (४) तहां राह विषे चित्र विचित्र वस्त्रन के पांवड़े परते जातेहैं तेहिपर दशरथमहाराज अरु सब बराती पग धरि धरि चले जातेहैं (५) तहां सहित बरात राजा को अति सुन्दर जनवास दीनजाइ जहां सब कहँ सबभांति सुपास है (६) जब श्री जानाकीजी ने जाना कि बरात पुरविषे आई तबकछु अपनी महिमा प्रकटिकै जनावा चाहतीहैं (७) तब सब सिद्धिनको हृदय महँ स्मरण कीन्ह तब सब सिद्धि करजोरिकै ठाढ़ी भई तब श्री जानकी जी आज्ञा दीन्ह कि अवधेश महाराज की पहुनाई करहु जाइ (८) दोहार्थ ॥ तबसब सिद्धियां श्रीजानकी जीके बचन अकनि कही सुनिकै जनवासे कहँ जाती भईं नवनिधि इत्यादिक संपदा सब सुखलिहे जो सुर पुरके भोग बिलास ते सरस है (१)॥

३०६ निजनिजबासबिलोकिबराती।सुरसुखसकलसुलभसबभांती १
बिभवभेदकछुकाहुनजाना । सकलजनककरकरहिंबखाना २
सियमहिमारघुनायकजानी । हरषेहृदयहेतुपहिचानी * ३
पितुआगमनसुनतदोउभाई । हृदयनअतिआनंदसमाई * ४
सकुचतकहिनसकतगुरुपाहीं । पितुदर्शनलालसमनमाहीं ५
विश्वामित्रविनयबड़िदेखी । उरउपजाआनंदविशेषी * ६
हरषिबंधुदोउहृदयलगाये । पुलकअंगअंबकजलछाये * ७
चलेजहांदशरथजनवासे * । मनहुंसरोवरतकेउपियासे * ८

दो० भूप बिलोके जबहि मुनि आवत सुतन समेत ॥
उठे हरषि सुख सिंधु महँ चले थाहसी लेत १

३०६ तहां बराती अपने अपने बास बिलोकते भये जहां सुर इन्द्रादिककर सुख सब भांतिते सहज में सुलभ है मंदिर प्रति कल्पतरु कामधेनु त्रिविधपवनको देखत संते इन्द्रादिक दिग्पालन के ऐश्वर्य अरु सुखसे आनन्द अधिक अधिकतर है (१) यह विभव कर भेद काहू नहीं जाना सम्पूर्ण जनकजूकरबखान करतेहैं (२) यह महिमा श्री जानकी कीकी श्री रघुनाथ जीने जानी है तब श्रीरघुनाथजी हेतु कही प्रीति पहिचानिकै हर्षे (३) तहां पितुकर आगमन सुनिकै दोऊ भाइन के आनन्द हृदय में नहींसमात है (४) तहां संकोच के बश गुरुन ते नहीं कहि सकते हैं (५) तहां बिश्वामित्र श्रीरामचन्द्रके हृदयकै बड़ी बिनय पहिंचानिकै उर बिषे बिशेषकै आनन्दित होत भये (६) तब दोऊ बन्धुन को हर्षिकै हृदय में लगायो पुलकते दोऊ नेत्रन में जल भरिआयो (७) तब समाज संयुक्त दोऊ बन्धुन समेत बिश्वामित्र जहां राजाको जनवास रहै तहांको अतिशीघ्र चलते भये कैसे चले मानहुंअति तृषित सरोवर ताकिकै चलोहै (८) दोहार्थ ॥ तबराजा दशरथ सुतन समेत बिश्वामित्रको आवते देखिकै आनन्दतेभरे मुनीशके मिलिबेको आपु शीघ्र उठिचले शीघ्रपग नहीं उठै हैं सुखके समुद्रमें थाहसीलेत चलेहैं (१) ॥

३०७ मुनिहिंदराडवतकीन्हमहीशा । बारबारपदरजधरिशीशा १
कौशिकराउलियेउरलाई । कैअशीषपूंछीकुशलाई * २
पुनिदराडवतकरतदोउभाई । देखिनृपतिउरसुखनसमाई ३
सुतहियलाइदुसहदुखमेटे । मृतकशरीरप्राराजनुभेटे * ४
पुनिबशिष्ठपदशिरतिननावा । प्रेममुदितमुनिवरउरलावा ५
बिप्रबृन्दबंदेदोउभाई * । मनभावतीअशीषैंपाई * ६
भरतसहानुजकीन्हप्रणामा । हियउठायलायेउरराम * ७
हर्षेलषणदेखिदोउभ्राता । मिलेप्रेमपरिपूरणगाता * ८

दो० पुरजन परिजन जातिजन याचक मंत्री मीत ॥
मिलेयथाबिधिसबहिंप्रभुपरमकृपालुविनीत १

३०७ हे भरद्वाज बिश्वामित्रको राजा दराडवत् करिकै बार बार पदरज शीशमें धरते भयेहैं (१) तब बिश्वामित्र राजाको उरमें लगाइकै बारम्बार कुशल पूंछते हैं (२) पुनि दोऊ भाई राजाको दराडवत् करतेहैं तहां श्रीराम लक्ष्मणको देखिकै राजा के हृदयमें सुखनहीं समात है (३) तब राजाका श्रीराम लक्ष्मणको हृदयमें लगाइकै श्रीरामचन्द्र के बिछोहको दुःख दुसह कहो सहिबे योग्य नहीं सो मिटि गयो (४) पुनि दोऊ भाइन बशिष्ठके चरण गहिनि प्रेम सहित मुनि उरमें लगावते भये (५) पुनि अ-

नेक ब्राह्मणनको नमस्कार करते भये तब ब्राह्मण प्रेमते आशीर्वाद देते भये (६) जब भरत शत्रुहन श्रीरामचन्द्रको साष्टांग दण्डवत् करते भये श्रीरामचन्द्र उठाइकै उरमें लगावते भये (७) तब दोऊ भाइन को लक्ष्मणजू देखिकै प्रेम परिपूर्ण गात ते मिलत भये (८) दोहार्थ ॥ पुनि पुरजन अरु परिजन बाहेर के प्रजाजन अरु अपने सजातीय जन अरु याचक मन्त्री मित्रादिकनते तब यथा विधि श्रीरामचन्द्र सबको एक ही बार अनन्त रूप छोड़के मिल काहेते परम कृपालु विनीत हैं (९) ॥

३०८ रामहिंदेखिबरातजुड़ानी । प्रीतिकिरीतिनजाइबखानी १
नृपसमीपसोहैंसुतचारी * । जनुधनधर्मादिकतनुधारी * २
सुतनसमेतदशरथहिदेखी । मुदितसकलनरनारिविशेषी ३
सुमनबरषिसुरहनहिंनिशाना । नाकनटीनाचहिंकरिगाना ४
शतानंदअरुविप्रसचिवगन * । मागधसूतविदुषबंदीजन *५
सहितबरातराउसनमाना * । आयसुमांगिफिरेअगवाना * ६
प्रथमबरात लगनतेआई * * । तातेपुरप्रमोदअधिकाई * ७
ब्रह्मानंदलोगसबलहहीं । बढ़हुदिवसनिशिविधिसनकहहीं ८
दो० रामसिया शोभा अवधि सुकृत अवधि दोउराज ॥
जहँतहँ पुरजनकहहिं सब मिलिनर नारि समाज १

३०८ तहां श्रीरामचन्द्रको देखिकै बरात शीतल भई विदेशको विरह की अग्नि शांत भई प्रीतिकी रीति बखानी नहीं जाय (१) राजा के समीप चारिउ सुत कैसे सोहते हैं जनु धनकही अर्थ धर्म काम मोक्ष मूर्तिमान् शोभित हैं (२) तहां पुत्रन समेत दशरथको देखिकै पुरके नरनारि मुदित कही विशेष करिकै आनंद को प्राप्त भये (३) तहां देवता सुमन बर्षिकै निशान बजावते हैं अरु नाक कही स्वर्ग में नटी जे हैं गन्धर्विनी किन्नरी अप्सरा नृत्य गान करती हैं (४) तहां शतानन्द इत्यादिक विप्र अरु सचिवगण अरु मागध कही वंशवर्णक अरु सूत कही पुराण गवैया अरु विदुष कही पण्डित ज्योतिषी अरु विदूषक कही भाट बन्दीजन कही जो वीररस वर्णन करते हैं (५) ते सब मिलिकै सहित बरात राजा दशरथ को सब प्रकारते सन्मान करिकै आज्ञा लैकै अगवानीते फिरते भये (६) हे पार्वती लग्न अबहीं नहीं धरीगई है अरु बरात प्रथमहि आई ताते जनक पुरविषे अति प्रमोदकी अधिकता भई है (७) तहां सब लोग सहजही ब्रह्मानन्दको प्राप्तहैं अरु यह मनावते हैं कि हे विधि रात्रि दिवस की अति वृद्धि होइ किंतु लग्न के दिन राति और बढ़िजाहि अबहीं लग्न न आवै (८) दोहार्थ ॥ तहां दशबीस नरनारि मिलिकै आनन्द पूर्वक जहां तहां कहते हैं कि अस आनन्द पुरमें कैसे न होइ काहेते कि राम सीता सब सुख शोभा की अवधि हो हैं अरु दोउ राजा सुकृतिकी मूर्त्ति हैं तहां सब सुलभ हैं (९) ॥

३०९ जनकसुकृतिमूरतिबैदेही * । दशरथसुकृतिरामधरदेही * १
इनसमकाहुनशिवअवराधे । काहुनइनसमानफललाधे * २
इनसमकोउनभयोजगमाहीं । हैनहिंकतहुंकाहोनिउनाहीं ३
हमसबसकलसुकृतिकेराशी । भयेजगजनमिजनकपुरबासी ४
जिनजानकीरामछबिदेखी । कोसुकृतीहमसरिसबिशेखी * ५
पुनिदेखबरघुबीरबिवाहू * । लेबभलीबिधिलोचनलाहू * ६
कहहिंपरस्परकोकिलबयनी । यहिंबिवाहबडलाभसुनयनी ७
बडेभाग्यबिधिबातबनाई * । नयनअतिथिहोइहैंदोउभाई ८

दो० बारहिबार सनेहबश जनक बोलाउब सीय ॥
लेन आइहैं बन्धुदउ कोटिकाम कमनीय १

३०९ पुरके लोग परस्पर कहते हैं कि जनकके सुकृतिकी मूर्ति श्रीजानकीजी अरु दशरथ के सुकृति की मूर्ति श्रीरामचन्द्र हैं [१] दशरथ अरु जनक की बराबरि शवकी अवराधना काहू नाहीं कीन्हि है अरु इनके समान काहू शिव को फल नहीं लाध्यो लाध्यो कही सघन फरिकै लदि रहेहैं रसमय प्राप्तभये हैं काहेते श्रीराम जानकीके प्राप्त फल प्रदाता केवल रामानन्य शिवहैं [२] अरु इनके समान जगत्में कोई नहीं भयो है अरु न कोई है अरु न कोई तीनिहू कालमें होइगो [३] अरु जनकपुरबासी कहते हैं कि हम सब तिरहुतपुर में बसिकै सकल सुकृतिकी राशिभये [४] याही ते हमारे समान जगत्में कोहै तात्पर्य्य कोई नहींहै काहेते कि श्रीरामचन्द्र अरु श्रीजानकीजीकी छवि देखते हैं [५] पुनि श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी जी को बिवाह भली प्रकारते देखैंगे लोचनको लाहु लेहिंगे अरु ऐसे त्रैलोक्य की बिभूति लोचनन कहँ बृथा है [६] कोकिल बयनी जी स्त्रीहैं सो परस्पर कहती हैं कि हे सखी यहि बिवाहबिषे बड़ा लाभहै यह कहिकै गद्गद ह्वै जाती भई [७] यह बात बिधातैं बड़े भाग्य ते बनावा है काहेते इन नेत्रनके द्वौ भाई अतिथि ह्वैहिंगे जैसे धनाढ्य गृही को अभ्यागत प्रिय होतेहैं [८] दोहार्थ ॥ कब द्वौभाई अतिथि की नाईं प्रिय होहिंगे जब बिवाह के उपरांत राजा श्रीजानकी जीको बार बार बोलावहिंगे तब दूनों भाई कोटिन काम ते कमनीय कही सुन्दर हैं [१] ॥

३१० बिबिधभांतिहोइहिपहुनाई । प्रियनकाहिअससासुरसाई १
तबतबरामलषणहिनिहारी । होइहैंसबपुरलोगसुखारी * २
सखिजसरामलषणकरजोटा । तैसइभूपसंगदुइढोटा * * ३
श्यामगौरसबअंगसुहाये * । तेसबकहहिंदेखिजेआये * ४
कहेउएकमैंआजुनिहारे * । जनुबिरंचिनिजहाथसँवारे ५

भरतरामहीकीअनुहारी । सहसालखिनसकहिंनरनारी * ६
लषणशत्रुसूदनयकरूपा । नखशिखतेसबअंगअनूपा * ७
मनभावहिंमुखबरणिनजाहीं। उपमाकहँत्रिभुवनकोउनाहीं ८

हरिगीतिकाछन्द ॥

उपमा न कोउकह दासतुलसी कतहुं कवि कोविदकहैं ॥
बल विनय बिद्या शील शोभा सिंधु इनसम यइअहैं १
पुरनारि सकल पसारि अंचल बिधिहि बचन सुनावहीं ॥
ब्याहिये चारिउ भाइ यहिपुर हम सुमंगल गावहीं २
सो० कहहिं परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलकतन ॥
सखिसब करब पुरारि पुण्य पयोनिधि भूपदोउ २

३१० तब रामलषण की अनेक प्रकार पहुनाई होइगी हे माई अस ससुरारि क्यहिको नहीं प्रिय है माई कही बड़े पदको (१) जब रामचन्द्र जनकपुरको आवैंगे पहुनाई होइगी तब तब हम सब पुरबासी रामलषणको देखि देखि सुखी होइंगे [२] तब एक सखी हर्षिके बोलती भई कि हे सखी जैसे रामलषण कर जोटाहै तैसइ राजा के संगमें और दुइ ढोटाहैं [३] हेसखी एक श्याम अरु एक गौर हैं अरु सर्वांग नख शिख अति सुन्दर हैं हे सखी जे देखि आयेहैं ते सब कहते हैं [४] पुनि एक सखी कहती है कि हे सखी मैं आजु निहारि आईहौं जनु बिरंचि ने अपने हाथन संवारेहैं [५] भरत रामचन्द्रही की अनुहारी हैं उन्हैं नरनारि सहसा कही शीघ्र नहीं पहिंचानि सकैहैं [६] हे सखी लक्ष्मण शत्रुहन एकही रूपहैं जे नख शिखते अति अनूप कोकहि सकै [७] हेसखी मनमें अति भावते हैं पर जीभ से बर्णे नहीं जाते हैं इनकी उपमा को कोउ त्रिभुवनमें नहीं है [८] छंदार्थ ॥ इनकी उपमा सम कोई काहे नहींहै उपमान हुई नहीं है श्रीगोसाईं तुलसीदास कहते हैं सो कवि कैसे कहिसकें कैसे ये चारौं भाई हैं बल अरु बिनय कही नम्रता प्रवीणता विद्या शील शोभा इत्यादिक के समुद्र हैं ताते इनके समान यई हैं [१] एकनते एक सखी अस कहिकेअंचल पसारि कै बिधिते मनावती हैं कि हे बिधि चारिउ भाइन कर विवाह जनकपुर में निर्विघ्न होइजाय हम सब मंगल गावहिं यह बर देहु (२) सोरठार्थ ॥ हे पार्वती परस्पर नारि यह कहती हैं तनु पुलक ते नेत्रनमें जल भरो है तब एक प्रवीण सखी बोली कि हे सखिहु तुम सब प्रेम के बश चिंता न करहु काहेते कि दोऊ राजा सुकृति के समुद्र हैं तिनके पुण्यते तुम्हार मनोरथ महादेव सिद्ध करिहैं (१) इतिश्रीरामचरित मानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडे महाराजश्रीदशरथस्यामिथिलापुरप्राप्तिबरातपुर-
जनआनन्दवर्णनंनाम...

दो० तीनि पचास तरंगमें जनकपुरी के लोग ॥
रामचरणजो सुख लह्यो योगिन दुर्लभ भोग ५३

३११यहिबिधिसकलमनोरथकरहीं।आनँद

सीयस्वयम्बरजेनृपआये । देखिबन्धुसबतिनसुखपाये * २
कहतरामयशबिशदबिशाला । निजनिजगेहगयेमहिपाला ३
गयेबीतिकछुदिनयहिभांती । प्रमुदितपुरजनसकलबराती ४
मंगलमूललगनदिनआवा * । ७ ऋ हिममाससोहावा ५
ग्रहतिथिनखतयोगबरबारू।लगनशोधिबिधिकीन्हबिचारू ६
पठैदीननारदकरसोई * * । गनीजनककेगणकनजोई * ७
सुनीसकललोगनयहबाता । कहैंज्योतिषीअपरबिधाता * ८

दो० धेनु धूरि बेला बिमल सकल सुमंगल मूल ॥
बिप्रनकह्यो बिदेह सन जानि समय अनुकूल १

३११ ते सब मनोरथ को करतेहैं प्रेम अरु आनन्द को उमँगि उमँगि उर महँ भरते हैं (१) श्री जानकी जीके स्वयम्बर में जे राजा आये हैं तहां विवेकी जे राजा रहें ते चारिउ भाइन को देखिकै अति सुखको प्राप्त भये (२) पुनि श्री रामचन्द्र को यश अति उज्ज्वल बिशालकही ब्रह्माण्ड भरेमें परिपूर्णसो यश कहतकहत अपने अपने गृह को जातेभये हैं गृह कही आसन को (३)तहां यहि प्रकारते पुरजन बरातिनके कछु दिन बीति गये प्रकही उत्कर्ष करिकै आनन्द हैं (४) मंगल को मूल अति शोभित मास दिन लग्न प्राप्त भये तहां हिमऋतु अरु बारह महीनों में शिरोमणि अतिशोभित अगहनका महीना (प्रमाणभगवद्गीतायांभगवद्वाक्यम्) (मासानांमार्गशीर्षोऽहं) (५) शुभग्रह तिथि नक्षत्र योगबार इत्यादिक बरकही श्रेष्ठ मंगलमय आइप्राप्त भये ज्यतनी बिधि श्री रामचन्द्रके जन्ममें सो स पूर्ण प्राप्त भये इहां शुक्लपक्षकी पञ्चमी तिथि अरु वृश्चिक के सूर्य अरु महा मंगल मय मूर्ति मीनलग्न यह सब बिचा रिकै शोधतेभये (६) जो साइति ब्रह्मा बिचारिकै शोधी सो पत्रिका में लिखिकै नारदके हाथ पठैदीन्हि तबनै साइ.त जनकके ज्योतिषियों ने साधिराखी ब्रह्माकी पत्रिका अरु जनक के ज्योतिषिन की साइति कै एकै वि धिमिली यह जानिकै सर्वलोग कहते भये कि ज्योतिषी दूसर ब्रह्माहैं (७) तहां जनक के दूत श्री अयोध्या को गये रहैं कार्तिक बदी पंचमी को पहुंचे तहां अष्टमी को बरात साजिकै चलते भये अरु त्रयोदशी को जनक पुरमें प्राप्त भये पुनि अगहन सुदी पञ्चमी को बिव.ह की तय्यारी भई (८)दोहार्थ ॥ हे पार्वती गोधू.ल बेलाकी अ.तिबिमल सब मंगल मय मूल वेद कहते हैं सो ब्राह्मणन बिचारिकै जनकजूते समय अनुकूल जानिकै कहिदीनि (१) ॥

३१२उपरोहितहिकह्यउनरनाहा । अबबिलम्बकरकारणकाहा १

[illegible] ॥ मंगलमय [illegible] लैआये २
[illegible] ॥ मंगलसगुनसकलसुभसाजे ३
सुभगसुआसिनिगावहिंगीता । करहिंबेदध्वनिबिप्रपुनीता ॥ ४
लेनचलेसादरयहिभांती ॥ । गयेजहांजनवासबराती ॥ ५
कोशलपतिकरदेखिसमाजू । अतिलघुलागतिनहिंसुरराजू ६
भयउसमयअबधारियपाऊ । यहसुनिपरानिसानघाऊ ७
गुरुहिंपूंछिकरिकुलबिधिराजा । चलेसंगमुनिसाधुसमाजा ८

दो० भाग्य बिभव अवधेश कर देखि देव ब्रह्मादि ॥
लगे सराहन सहस मुख जानि जन्म निज बादि १

३१२ तब जनक ने हर्षिके उपरोहित शतानन्दते कह्यउ कि अब बिलम्ब काहे को करते हौ (१) तब शतानन्दने मंत्रिनको बोलायो वेसकल मंगलकी सामग्री तय्यारी करिके लैआये (२) तब शंख निशान कहौ नगारा पणव कहौ ढोल इत्यादिक अनेक बाजा बाजते भये अरु मंगलमय सगुन सकल प्रकार ते साजते भये (३) तब सुभग सुआसिनी कहौ पुरकी लड़किनी इत्यादिक मंगलमय गीत गावतीहैं अरु बिप्र अतिपुनीत वेदध्वनि करते हैं (४) यहिभांति सादर ते चले जहां जनवास में बराती हैं तहां को गये (५) कौशल पति जे दशरथ हैं तिनकर समाज देखिकै जनक पुरबासिनको इन्द्र-पुर अति लघु लागत है (६) तब शतानन्द कहतेहैं हे महाराज अब बिवाहका समय प्राप्त भयो मण्डप में शीघ्र पांउ धरिये इतना सुनिकै निशानन पर घाव कहौ चोपकी चोटैं परती भईं (७) तब राजा गुरुनसे पूंछिकै वेदकी रीति करिकै साधु कहौ जिनका जाहीमें साधुता आवै विश्वामित्र की समाज संयुक्त अत्यानन्द भरेचले (८) दोहार्थ॥ तहां ब्रह्मादिक देवता दशरथमहाराज की भाग्य बिभव देखिकै सराहतेहैं अपने जन्म को बादि कहौ बृथा मानते हैं [१]॥

३१३ सुरनसुमंगलअवसरजाना । बरषहिंसुमनबजाइनिशाना १
शिवब्रह्मादिकबिबुधबरूथा । चढ़ेबिमाननानायूथा ॥ २
प्रेमपुलकतनुहृदयउछाहू ॥ । चलेबिलोकनरामबिवाहू ३
देखिजनकपुरसुरअनुरागे ॥ । निजनिजलोकसबहिंलघुलागे४
चितवहिंचकितबिचित्रबिताना । रचनासकलअलौकिकनाना५
नगरनारिनररूपनिधाना ॥ । सुघरसुधर्मसुशीलसुजाना ॥ ६
तिन्हहिंदेखिसबसुरसुरनारी ॥ । भईनखतजनुबिधुउजियारी ७
बिधिहिभयउआश्चर्यबिशेषी । निजकरणीकछुकतहुँनदेखी ८

० । [illegible]

हृदय बिचारहु धीरधरि सिय रघुबीर बिबाहु १

३१३ तब देवता सुमङ्गल अवसर जानिकै नगारा बजाइ कै फूल बर्षाते हैं [१] तहां शिव ब्रह्मादिक देवता बरूथके बरूथ ते नाना प्रकारके यूथ विमान पर चढ़े हैं [२] तिन देवतनके प्रेमते देहनें पुलकावली भई अरु हृदयमें उछाह यहि प्रकार ते श्री रामचन्द्रका विवाह देखिबेको चले [३] जनक पुरको देखिकै देवतनको अनुराग भयो इहां अनुराग कही मोहित भये तहां आपन आपन लोक सब देवतन को लघु लागत भयो [४] पुनि बितान जो मण्डप की चित्र विचित्र रचना सो अलौकिक देखि कै देवता चकित भये अलौकिक कही त्रैलोक्य के बाहर ऐश्वर्यवत् देखिकै चकित भये [५] अरु नगर के स्त्री पुरुष सब सुघर हैं सुन्दर हैं अपने धर्म्म मय हैं सुशील हैं सुजान कही प्रवीण हैं [६] हे गरुड़ तिन तिन जनक पुरकी स्त्रिन कहँ सुर पुरकी स्त्री देखिकै मन्द परगईं जैसे पूर्ण चन्द्रके प्रकाश में नक्षत्र मन्द परते हैं [७] श्री जनकपुर कै रचना देखिकै ब्रह्मा के आश्चर्य भयो काहेते तहां अपनी करणी एकहू नहीं देखै हैं [८] दोहार्थ ॥ तब शिवजी ब्रह्मादिक देवतन को समुझावते हैं कि हे देवतहु यहि आश्चर्य में न भूलहु नेत्रन भरिकै बिचार करि धैर्य्य धरिकै सीतारामचंद्र कार विवाह देखहु यह चरित्र ब्रह्माकी सृष्टिते भिन्न है [९]॥

३१४ जिनकर नाम लेत जग माहीं । सकल अमंगल मूल नशाहीं * १

करतलहोंहिं पदारथ चारी । ते सियराम कहेउ कामारी * २

यहिबिधि शम्भु सुरन समुझावा । पुनि आगे बर बसह चलावा ३

दशरथ जाता * । * [illegible]

साधु समाज संग महिदेवा * । जनु तनु धरे करहिं सुर सेवा * ५

सोहत साथ सुभग सुत चारी । जनु अपवर्ग सकल तनु धारी * ६

मर्कत कनक बरण बर जोरी * । देखि सुरन भइ प्रीति न थोरी * ७

पुनि रामहिं बिलोकि हिय हर्षे । नृपहि सराहि सुमन सुर बर्षे * ८

दो० राम रूप नखशिख निरखि बारहि बार निहारि ॥

पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि १

३१५ महादेव कहतेहैं हे देवतहु इनकर नाम लेत सन्ते संपूर्ण अमङ्गल के मूल नाश होतेहैं [१] अरु चारिपदार्थ सालोक्य सारूप्य सामीप्य सायुज्य किन्तु सकाम अर्थ धर्म्म काम मोक्ष येते सब जिनके नामस्मरण मात्रते सहजही प्राप्त होतेहैं ऐसे सीता राम हैं ताते तुम्हारो बड़ो भाग्य है यह कामारि कही शिवने कहा तहां जो सम्पूर्ण कामना को नाशकरै तब सीता राम को देखै [२] यहिविधि शम्भु सुरनको समुझावते भये पुनिअपनो बाहन बैल आगे चलावते भये [३] तब देवतन महाराज दशरथ को

समाज पुत्रन सहित जालदेखा तहां महाआनन्द पुलकित गात चले जाते हैं किन्तु देवता आनन्दते पुलकते हैं [४] तहां राजाके सङ्ग मा... अरु मण्डिदवन की समाज अनु राजाकी सब देवता तनु धरिके सेवा करते हैं [५] अरु राजा के सङ्ग में चारिहपुत्र शोभित हैं जनु सकलकही चारिउ अपवर्गकही मोक्ष तनु को धारण किहे शोभा करते हैं सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य शत्रुहन लक्ष्मण भरत श्रीरामचन्द्रादिकनको क्रमते जानव [६] ऐसेहैं श्री रामचन्द्र अरु भरतको मर्कत मणि कही नीलमणि आभरण रहित भल झलात प्रकाश मय तद्वत् वर्ण है पुनि लक्ष्मण शत्रुहन तैसे कंचन वर्ण हैं निर्मल वर कही सर्वोपरि देखिके देवतनके अत्यन्त प्रीति भई है [७] हे भरद्वाज पुनि श्री रामचन्द्र को बिलोकि हृदय में अति हर्षिके राजादशरथ को सराहते हैं अरु धन्य धन्य करते हैं अरु फूलनकी वृष्टिकरते हैं [८] दोहार्थ ॥ तब पार्वती अरु महादेव श्रीराम-चन्द्र को देखिके अति हर्षिके गात पुलकि प्रेमानन्द भरे बारम्बार मग्न हैं [१] ॥

३१५ केकिकंठद्युतिश्यामलअंगा । तड़ितबिनिन्दकबसनसुरंगा १
ब्याहबिभूषणबिबिधबनाये ✻ । मंगलमयसबभांतिसोहाये २
शरदबिमलबिधुबदनसोहावन । नयननवलराजीवलजावन ३
सकलअलौ... सुन्दरताई ✻ । कहिनजाइमनहींमनभाई ४
बन्धुमनोहरसोहहिंसंगा ✻ ✻ । जातनचावतचपलतुरंगा ५
राजकुँवरबरबाजिदेखावहिं । बंशप्रशंसकबिरदसुनावहिं ✻ ६
जेहितुरंगपरराममिराजे ✻ । गतिबिलोकिखगनायकलाजे ७
कहिनजाइसबभांतिसोहावा । बाजिबेषजनुकामबनावा ✻ ८
छं० जनुबाजिबेषबनाइ मनसिज राम हित अति सोहई ।
आपनवय बल रूपगुण गति सकल भुवन बिमोहई १
जगमगतजीनजराबज्योतिसुमोतिमणिमाणिकलगे ॥
किंकिणिललामलगामललितबिलोकिसुरनरमुनिठगे २
दो० प्रभुमनसहि लयलीनमन चलत बाजिछबिपाव ॥
भूषित उडुगण तड़ितघन जनुबर बरहि नचाव १

३१५ कैसे श्रीरामचन्द्र हैं केकीकेकण्ठ तद्वत शरीरकी श्यामल द्युति है सुरङ्ग जो पीताम्बर तड़ित् की निन्दा करनहार सो धारणकिहे हैं [१] अरु बिबिध प्रकार बिवाहके भूषण परमाढ्य बनहैं सो पहिरेहैं कैसे भूषणहैं परमाढ्य मंगल प्रकाशमय सब प्रकारते शोभित हैं [२] अरु शरदऋतुके पूर्णमासीको चन्द्रमा बिमलकही कलंक बिनु एकरस ऐसोमुख सो शुभ शोभित है अरु अरुण नील श्वेत संयुक्त नवीन कमल कैसे जो जो प्रथम बिकसेहैं तिनको लजावनहारे नेत्रहैं [३] कहांतक कहिये अंग अंग

की सुन्दरता सकल अलौकिक है हे गरुड़ ऐसी जो सुन्दरता है सो कहीनहीं जाती मनहिंमन भावती है मनकोमन आत्मा तिनको भावत है [४] मनको हरणहारि सुन्दरता ऐसे कछु संगपिये सोहतेहैं ते अति चंचल घोड़ा नचावत चले जातेहैं [५] तहां अनेकन राजकुमारहैं ते घोड़ा देखावत कहीं नचावतेहैं अरु अंशप्रशंसक इत्यादिकहैं ते सब तिनके बिरदकी प्रशंसा करते जाते हैं तहां मध्यमें श्रीरघुनायजी को घोड़ाहै अरु दाहिने बायें पीछे सखन के घोड़नकी पंक्तिकी पंक्ति असवारी बागैं तनी अरु नखते शिखलों हेम मणिनके भूषणका शृंगारकिहे घोड़न संयुक्त अति शोभाको पावत चलेजाते हैं जेहिसमाजको देखिकै सिद्ध मुनि देवता कामादिक मोहतेहैं [६] अरु जेहि तुरंगपर श्रीरामचन्द्र बिराजते हैं तेहि तुरंगकै वेगगति विलोकिकै खगनायक लज्जित होतेहैं [७] सो तुरंगकी शोभा कही नहीं जातीहै नखशिखलों सब भांतिते शोभितहैं जनु कामने बाजिकर बेषबनायो है [८] छन्दार्थ ॥ जनु बाजिकर बेषबनाकै कामहीं आइ प्राप्तभयो है श्रीरामचन्द्रके हितकही निमित्त प्रीतिते अति सोहतहै तहां घोड़ा कैसोहै आपनबय कही वहिक्रम करिकै अरु बपुरूप गुण गति इन सबै करिकै सकल विश्वको विमोहित करत है [१] तेहि घोड़ पर जीन जगमगाति है सुष्टु मोती मणिमाणिक्यते जटित हैं अरु घोड़ेकी किंकिणी ललाम कहीं अति लालित्य सुन्दर अरु तैसही ललाम जेहिको देखिकै सुरनर मुनिनको मन ठगिरह्यो है ठगिकही देखिकै देहकीदशा भूलिगई है [२] दोहार्थ ॥ त्यहिघोड़ा ने प्रभुके मनमें अपने मनको लय कही प्रीतिसमेत लीनकरि दियो है सो प्रभुके मन माफ़िक चलतसन्ते अति छबि को पावतहै तहां कैसे घोड़ा नाचत चलोजातहै जनु नक्षत्रन अरु तड़ित् करिकै मेघ भूषित है तेहिको देखिकै मयूर नाचतेहैं तहां श्रीरामचन्द्रको रूप मेघहै अरु भूषण नक्षत्रहैं यज्ञोपवीत अरु मणिमाला तड़ित् है घोड़ामयूर है अलंकार संयुक्त यहि प्रकारते अद्भुत शोभाको प्राप्त हैं [१] ॥

३१६ जेहिबरबाजिरामअसवारा । तेहिशारदहुनबरणौपारा * १
शंकररामरूपअनुरागे * । नयनपंचदशअतिप्रियलागे * २
हरिहितसहितरामजबजोहे * । रमासमेतरमापतिमोहे * * ३
निरखिरामछबिबिधिहरषाने । आठैनयनजानिपछिताने ४
सुरसेनपमनबहुतउछाहू * । बिधितेडेवढ़लोचनलाहू * * ५
रामहिंचितवसुरेशसुजाना । गौतमशापपरमहितमाना * ६
देवसकलसुरपतिहिंसिहाहीं । आजुपुरंदरसमकोउनाहीं * ७
मुदितदेवगणरामहिंदेखी * । नृपसमाजदुहुहर्षबिशेषी * ८

हरिगीतिकाछन्द ॥

अतिहर्षराज समाज दुहुँदिशि दुंदुभी बाजहिं घनी ॥

बरषहिंसुमनसुरहरषियकहिजयजयतिजयरघुकुलमनी १
यहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ॥
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं २
दो० साजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल सवाँरि ॥
चलींमुदित परिछन करन गजगामिनि बरनारि १

३१६ ॥ जेहि बर बाजिपर श्रीरामचन्द्र असवार हैं तेहि घोड़की शोभा चाहै जो शारदा हजारन रसना करिकै बर्णी चाहैं तौ नहीं बर्णिसकैं [१] तहां तेहि घोड़ेपर असवार श्रीरामचन्द्रको स्वरूप देखिकै शंकर अनुराग करि मोहगये तहां महादेवके पंचमुख मुखप्रति तीनितीनि नेत्र ते पन्द्रहोनेत्र अति प्रियलागे [२] पुनि हरि विष्णु भगवान् श्रीरामचन्द्रको हितकरी प्रीतिसों जोहतेभये तब रमासमेत रमापति मोहित भये अपरअर्थ जो करतेहैं यहि चौपाईको तहां समय समाज पदार्थ में विरोध होत है [३] पुनि श्रीराम छबि देखिकै ब्रह्मा अति हर्षितभये तहां आठैनयन जानिकै पछिताते हैं [४] पुनि सुरनके सेनापति षटमुख स्वामिकार्तिक तिनके मनमें परम उत्साह भयो काहेते ब्रह्मा ते डेवढ़नेत्र जानिकै कि मुख्य रामदर्शन तहां मैं ब्रह्माते श्रेष्ठभयों [५] तहां सुरेश जो सुजानहैं ते श्रीरामचन्द्रको हजारन नेत्रनसे अतिप्रीति सहित देखतेभये तब गौतमके शापको परमहित मानतेभये [६] तहां सब देवता इन्द्रहूको सिहाते हैं कि आजु पुरन्दरके समान कोई नहीं है इहां एकवार सुरपति कहा अरु एकवार पुरन्दर कहा तहां अर्थ पुनरुक्ति भासमान होतहै सो दोष न मानव काहेते कि युक्ति दुइनी हैं एक याज्ञवल्क्यकी अरु एक देवतनकी (७) तहां देवतनकेगण अति आनन्दते श्रीरामचन्द्रको देखतेहैं देखिकै सबनको अपनी अपनी दशा भूलिगई है अरु दोउराजनकी समाज अति हर्षको प्राप्तहै (८) छन्दार्थ ॥ दोउराजनकी समाज अति हर्षको प्राप्त है अरु दुन्दुभी घनीबाजती हैं अरु देवता अतिहर्षते फूलबर्षाते हैं अरु बार बार रघुकुल मणिके यशको जयजय करतेहैं (१) हे गरुड़ यहि भांतिते बरात आवत जानिकै अनेकवाजा बाजतभये अरु रानी सुआसिनि को बोलायकै परिछन के निमित मङ्गलमय आरतीकी तय्यारी करतीभईं (२) दोहार्थ ॥ अनेक विधिते आरती मङ्गल भई मङ्गलके पदार्थ थारनमें भरि भरि रत्न तुलसीदल फूल फलादि मुदितमनते गजगामिनी परिछन करबेको चलतीभईं (१) ॥

३१७बिधुवदनीमृगशावकलोचनि।सबनिजछबिरतिमानबिमोचनि १
पहिरेबरणबरणबरचीरा। सकलबिभूषणसजेशरीरा * २
सकलसुमंगलअंगबनाये। करहिंगानकलकंठलजाये * ३
कंकणकिंकिणिनूपुरबाजहिं।चालबिलोकिकामगजलाजहिं ४
बाजहिंबाजनबिबिधप्रकारा । नभअरुनगरसुमंगलचारा ५

शचीशारदारमाभवानी । जेसुरतियशुचिसहजसयानी * ६
कपटनारिबरबेषबना । मिलींसकलरनिवासनजाई * ७
[गा]वहिं मंगलमंजुलबानी । हर्षविवशसबकाहुनजानी * ८
छं० कोजानि केहि आनंदबशसब ब्रह्मबरपरिछनचली ॥
कलगानमधुरनिशानबरषहिं सुमनसुरशोभाभली १
आनंदकंदबिलोकिदूलह सकलहियहर्षितभई ॥
अंभोजअंबकअंबुउमँगि सुअंग पुलकावलि छई २
दो० जोसुखभा सियमातु मन देखि राम बरबेष ॥
सो न सकहिंकहि कल्पशत सहस शारदा शेष १

३१७ कैसी वे सखीहैं सब चन्द्रबदनी हैं अरु मृगशावक कैसे नेत्रहैं अपनीशोभा के आगे रतिकी सुन्दरताको मान मर्द्दन करतीहैं (१) पुनिवर्ण वर्णके चीरापहिरे हैं बहुती तौ गोरीहैं ते सुवर्णतारन अरु मणिनकी कणिनते जटित नीलाम्बर पहिरे हैं अरु बहुती श्यामहैं ते शुद्धधातु केतार अरु बहुरंग मणिनकी कणिनते जटित अरुण सारी पहिरेहैं अरु बहुतसी श्याम अरुण मिलितरंगहैं ते चित्रबिचित्र जरावनकी सारी तनुके अनुहरित पहिरे हैं अरु सब अंगअंग विषे परमदिव्य भूषण पहिरेहैं अरु आदि-मध्यअन्त किशोरी सबहैं मुग्धामध्य प्रौढ़ा नायका सबहैं ते परिछन करिबेको चलीं (२) पुनि ते सब सकल मङ्गलमय अंगबनाये कलकहो सुन्दर गानकरत चलीहैं जेहि गानको सुनिकै कोकिलाकी बाणी लज्जित है [३] तहां कङ्कण किङ्किणी नूपुरनको यकताल ध्वनिहोति अरु जिनकी चाल बिलोकिकै काम गजरूप ह्वैकै लज्जितह्वै जात है [४] तहां नभ अरु नगरमें सुठु मङ्गलके आचरण पूर्णह्वै रहे हैं अनेकबाजा बाजतेहैं [५] तेहि समाज बिषे शची जो इन्द्राणीहैं अरु शारदा अरु पार्वती अरु रमा-कही लक्ष्मी इत्यादिक अरु जे दशौदिग्पाल इत्यादिक अरु जे देवतनकी स्त्री प्रवी-णहैं [६] ते सब देवतनकी देवी कपटकहो अपनेवेषको छोड़िकै उत्तम नरनारिन के परमदिव्य बेष बनायकै नित्यकिशोरी रूपते सब रनिवासनकी मिलींआय [७] ते सब देवी मङ्गलमय कलमनोहर गानकरती हैं तहां परमहर्षके बश काहूनहीं जाना [८] छन्दार्थ ॥ तहां आनन्दके बश को केहिको चीन्हतहै काहेते कि परब्रह्म मूर्त्ति के परिछनको चलीहैं जहां तहां कलगान होतहै निशान आदिक बाजतेहैं अरु देवता फूलबर्षतेहैं तहां भले प्रकारते शोभा बनिरहीहै [१] ऐसो मङ्गलमय होतसन्ते श्री रामचन्द्रके समीप प्राप्तभईं परमानन्द कन्दकी मूर्त्ति श्रीराम दूलहको देखिकै हृदयमें परमहर्षको प्राप्तभईं अम्भोजके मूर्त्ति श्रीरामदूलह को देखिके हृदयमें परम हर्ष को प्राप्तभईं अम्भोज कहो कमल अम्बक कहो नेत्र अम्बुजो जल तहां जेतीस्त्री रहीहैं तिनके श्रीरामचन्द्र सहजसुन्दर दूलहरूप देखिकै कमल नयनन ते जल उमगतभयो

अरु अंग अंगबिषे पुलकावली छाइरहीहै [२] दोहार्थ ॥ हे पार्वती श्रीरामचन्द्र की बरवेष देखिकै किन्तु दरकहीं दूलह देखिकै जो सुख श्रीसीताजीकी मातको भयो है सो सुख जो सौ कल्पताईं सहस्र शारदा सहस्रशेष कहाचाहैं तौ नहीं कहिसकैं तहां कविकैसे कहिसकै [१] ॥

३१८ नयननीरहटिमंगलजानी । परिछनकरहिंमुदितमनरानी ॥ १
बेदबिहितअरुकुलआचारू । कीन्हभलीबिधिसबब्यवहारू ॥ २
पंचशब्दध्वनिमंगलगाना । पटपांवरेपरहिंबिधिनाना ॥ ३
करिआरतीअरघ्यतिनदीन्हा । रामगवनमण्डपतबकीन्हा ॥ ४
दशरथसहितसमाजबिराजे । बिभवबिलोकिलोकपतिलाजे ॥ ५
समयसमयसुरबरषहिंफूला । शांतिपढहिंमहिसुरअनुकूला ॥ ६
नभअरुनगरकोलाहलहोई । आपनपरकछुसुनैनकोई ॥ ७
यहिबिधिरामगण्डपहिंआये । अरघ्यदेइआसनबैठाये ॥ ८

छं० बैठारि आसन आरती करि निरखि बर सुखपावहीं ॥
मणि बसन भूषण भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं १
ब्रह्मादि सुर बर बिप्र बेष बनाइ कौतुक देखहीं ॥
अवलोकिरघुकुलकमलरबिछबिसुफलजीवनलेखहीं २

दो० नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ ॥
मुदित अशीषहिं नाइ शिर हर्ष न हृदय समाइ १

३१८ तब सब रनिवास इत्यादिकनके राजन्यानके दूलह देखिकै प्रेमसे नेत्रन में जल भरि आये सो मंगल समय जानिकै हटिकै नेत्रन को जल रोकि दीन्ह तहां अति आनन्दते रनिवास परिछन करती हैं (१) पुनि वेद अरु कुल विधिके जे आचरण रहे ते सब बिधि विधानते व्यवहार पूर्वक कीन्ह (२) पञ्च शब्द तत् वितत् अनध धन सुकिया तत् कही तार जामें लागे वितत् कही मञ्जीर झांझ करताल अनध कही सींकते थारी में जल भरिकै बजावते हैं उसे जल तरंग भी कहो अरु करताल करसे काष्ठनमें छोटी झांझ लगी अरु तालीके शब्द घन कही नगारा मृदंग इत्यादिक सुकिया कही सहनाई मुरचंग नरसिंहा भेरी वंशी इत्यादिक पंचशब्द की ध्वनि अरु मंगल गान होतहै तहांपट कहो नाना प्रकारके बस्त्रनके पांवरे परतेहैं (३) तिन युवतिनने आरती करिकै अर्घ्य दीन मंगल गान करती हैं श्रीरामचन्द्र मण्डप को गमन करते भये (४) दशरथ महाराज सहित समाज बिराजमान हैं तेहि समय की विभव देखिकै दशौ दिग्पाल लज्जित भये (५) अरु समय समय बिषे सुर जे देवता हैं ते फूल बर्षते हैं तहां बिप्र जो हैं तेहि समयके अनुकूल शांति कही बेदन की

ऋचा करिकै स्वस्त्ययन पढ़ते हैं (६) तहां नभ अरु नगर बिषे मंगल मय कोलाहल हूं रह्यो है आपन और परावा शब्द किसूको सुनि नहीं परैहै (७) यहि प्रकार ते श्री रामचन्द्र सुगन्ध मय अर्घ्यको देते संते मंडप कहँ आये तहां अर्घ्य दैकै आसन पर बैठावते भये (८) छन्दार्थ ॥ तहां श्रीरामचन्द्रको आसन पर बैठाइ करि धूप दीप नैवेद्य आचमन तांबूलादि से पूजन करि आरती करती भईं अति सुन्दर रूप निरखि निरखि बर कह्यो अति सुख पावती हैं अरु अनेकन मणि बस्त्र निछावरि करती हैं मंगल गावती हैं (१) दशौ दिग्पाल ब्रह्मा शिवादिक ब्राह्मणनके रूप धरिकै श्रीरामचंद्र के बिवाह देखिबे के हेतु मंडप तर प्राप्त भयेहैं तहां यह अति आनंदते कौतुक मंगल देखते हैं तहां रघुबंश कुल कमल तेहिके प्रकाश कर्ता श्रीरामचन्द्र तिनकै छबि देखि कै अपने जीवनको सुफल मानते हैं (२) दोहार्थ ॥ तेहि समय में नाऊ बारी भाट नट इत्यादिक श्रीरामचन्द्र की मन भावित निछावरि पाइकै मुदित आशीर्बाद देते हैं (१)॥

३१९ मिलेजनकदसरथअतिप्रीती। करिबैदिकलौकिकसबरीती १
मिलतमहादोउराजबिराजे। उपमाखोजिखोजिकबिलाजे २
लहीनकतहुंहारिहियमानी। इनसमयइउपमाउरआनी ३
समधीदेखिदेवअनुरागे *। सुमनबर्षिजसगावनलागे * ४
जगबिरंचिउपजावाजबते *। देखेसुनेब्याहबहुतबते * * ५
सकलभांतिसमसाजसमाजू *। समसमधीदेखेहमआजू * ६
देवगिरासुनिसुन्दरसांची। प्रीतिअलौकिकदुहुंदिसिमाची ७
देतपांवरेअर्घ्यसुहाये * *। सादरजनकमंडपहिआये * * ८
मंडप बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनि मनहरे॥
निजपाणि जनकसुजान सबकहँ आनि सिंहासनधरे॥
कुलइष्ट सरिस बशिष्ठपूजे बिनय करि आशिष लही॥
कौशिकहि पूजत परमप्रीति कि रीति तौ न परैकही १
दो० बामदेव आदिक ऋषय पूजे मुदित महीश॥
दिये दिव्य आसन सबहि सब सन लही अशीश १

३१९ तहां राजा जनक अरु दशरथ द्वौ महाराज अति प्रीतिते मिलते भये लोक वेदकी मर्याद संयुक्त मिले (१) हे पार्वती द्वौ महाराज मिलतकै अति शोभित हैं तहां द्वौ राजनके मिलापकी उपमा देबेको व्यास बाल्मीकि इत्यादिक कबि खोजि खोजि हारिगे पर नहीं मिली (२) तहां तीनिउ लोक चौदहौ भुवन के कबिन की बाणी खोजि खोजि थकि रही तब हृदयमें हारिकै अन्वयालंकार करिकै कहतेहैं कि

इनके समान इनहींकी परस्पर उपमा है (३) तहां हे भरद्वाज द्वौ समधिन कहँ देखिके किंतु समधी कहो सम कहो बरोबरि है धौ कहो बुद्धि दोऊ राजनकी तिनको देखिके देवता अनुरागे तहां सुमन बर्षिके दोऊ राजनके यश देवता गावते हैं (४) देवता परस्पर कहते हैं कि जगत्में जब ते बिरञ्चि ने हमको उपजायो है तबते बहुत बिवाह देखा है औ सुना है (५) पर सकल भांतिते सब साज समाज सजे बरोबरि सम समधी हम आजुही देखा है (६) तहां देवतनकी बाणी सुन्दरि सांची दोऊ राज समाज समेत सुनिके परस्पर अलौकिक प्रीति मचि रहीहै [७] तहां पांवरे कहो मार्गमें पट परत अर्घ्य देत दशरथ महाराज अति आदर पूर्वक जनकके मंडप को आवत भये [८] छन्दार्थ ॥ मंडपकी बिचित्ररचना जो मुनिनके मनकोहरै सोसब बिलोकतभये तब जनकजीने अपने हाथन सबकी यथा योग्य विनय कीन्ह अरु उन्हें सिंहासन देत भये [१] पुनि जनकजी कुल इष्टदेव के सरिस बशिष्ठ को पूजते भये अरु महामुनिने हर्षिके आशीर्वाद दीन्ह पुनिपरम प्रीतिते कौशिक मुनिकी पूजा कीन्हि सो रीति प्रीति कही नहीं परैहै [२] दोहार्थ ॥ बामदेव आदिक सब ऋषिन की पूजन कीन्ह बशिष्ठ बिश्वामित्र के समान राजा पूजत भये सुन्दरदिव्य आसन सबको देतभये सबते आशीर्वाद पावते भये [१] ॥

३२० बहुरिकीन्हकोशलपतिपूजा। जानिईशसमभावनदूजा * १
कीन्हिजोरिपाणिकरिविनयबड़ाई। कहिनिजभाग्यबिभवबहुताई२
पूजेभूपतिसकलबराती * । समधीसमसादरसबभांती * ३
आसनउचितदीन्हसबकाहू । कहौंकहामुखएकउछाहू * ४
सकलबरातजनकसनमानी । दानमानबिनतीवरबानी * ५
बिधिहरिहरदिशपतिदिनराऊ । जेजानहिंरघुवीरप्रभाऊ ६
कपटबिप्रबरवेषबनाये * । कौतुकदेखहिंअतिसचुपाये ७
पूजेजनकदेवसमजाने * * । दियेसुआसनबिनपहिंचाने ८

छं० पहिंचानको केहिजान सबहिंअपानसुधि भोरीभई ॥
आनंद कंद बिलोकिदूलह उभय दिशि आनँदमई १
सुरलखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये ॥
अवलोकिशीलसुभाव प्रभुको बिबुधमनप्रमुदितभये २

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र छबि लोचन चारु चकोर ॥
करतपान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर १

३२० बहु राजा दशरथकी पूजा करत भये तहां ईश कहो महादेव के समान जानिकै पूजा करत भये दूसरभाव नहीं [१]तब जनकजू हाथ जोरिकै बारबार बिनय

अरु बड़ाई करते हैं मेरे भाग्यको बिभव को कहिसकै [२] हे भरद्वाज भूपतिने दशरथ महाराजही के समान अति प्रीतिते सब बरातिन को पूज्यो [३] तहां लघुमध्य बड़े इत्यादिक समस्त बरातिन को यथायोग्य आसन देतभये तहां हे गरुड़ महाउत्साह एक मुखते नहीं कहा जात है [४] बिबध प्रकारते समस्त बरातियों को पृथक् पृथक् दानमान बिनय बाणीते सन्मान कीन्ह [५] बिधि हरिहर दिशिपति कही दशौदिग्पाल चन्द्र सूर्यजे श्रीरघुनाथजीके प्रभावको जानते हैं [६] जे सब ईश्वर कोटि देवता हैं ते सब कपट कही अपनो वेष दुराइकै ब्राह्मण का रूप वेष सुन्दर बनिबनि श्रीरघुनाथ जीके बिवाहको कौतुक अत्यानन्दते देखते हैं [७] तहां जनकजीने जैसे ये देवता हैं तैसेही पूजन कीन्ह अरु बिन पहिंचाने दिव्य आसन दीन्ह [८] छन्दार्थ ॥ हे गरुड़ को केहिको पहिंचानत है काहेते सबको अपनपौ कही अपनो सुधि भोरी ह्वैगई काहते आनन्द के कन्द श्रीरामचन्द्र दूलह तिनको बिलोकिकै सबकी दशा बिदेह ह्वै गई उभय दिशि दोऊ राजनकी समाज आनन्द मग्न भई [१] तब श्रीरामचन्द्र सुजान देखत भये कि ब्रह्मा बिष्णु शिवादिक बिप्रवेष बनाइ कै आयेहैं तब तिनको मानसी दिव्यासन दीन्ह तहां प्रभुको शील स्वभाव स्नेह अवलोकिकै देवता परम आनन्द समेत नमस्कार करिकै बैठते भये [२] दोहार्थ ॥ तहां श्रीरामचन्द्र को मुख पूर्णचन्द्र है सबके सन्मुख ते सब चहुंफेरते छबि अमृत को पान करते हैं जैसे पूर्णचन्द्र के सुधा को चकोर पान करतेहैं तहां कैसे तनकी सुधिरहै [१] ॥

३२१ समयबिलोकिबशिष्ठबुलाये । सादरशतानंदमुनिआये * १

बेगिकुंवरिअबआनहुजाई । चलेमुदितमनआयसुपाई * * २

रानीसुनिउपरोहितबानी । प्रमुदितसखिनसमेतसयानी * ३

बिप्रबधूकुलवृद्धबोलाई । करिकुलरीतिसुमंगलगाई * * ४

नारिवेषजेसुरबरबामा * । सकलसुभायसुन्दरीश्यामा * ५

तिनहिंदेखिसुखपावहिंनारी । बिनुपहिंचानप्राणतेप्यारी ६

बारबारसन्मानहिंरानी * । उमारमाशारदसमजानी * * ७

सियसँवारिसबसाजबनाई । मुदितमंडपहिचलींल्यवाई * ८

छं० चलींल्याइसीतहिंसखीसादर सजिसुमंगलभामिनी ॥
नवसप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुंजर गामिनी १
कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिंकामकोकिललाजहीं ॥
मंजीर नूपुर कलित कंकण ताल गति बर बाजहीं २

दो० सोहति बनिता वृन्द महँ सहज सुहावनि सीय ।
छबिललनागण मध्यजनु सुखमा अतिकमनीय

छं२१ तहां बशिष्ठजीने उत्तम समय बिलोकि कै शतानन्द को बुलायो सुनिकै आदर पूर्वक आवते भये [१] तब बशिष्ठजी ने कहा कि शीघ्र कुंवरि को लैआवहु आज्ञा पाइकै मंडपको लैचले [२] तहां शतानन्दने रनिवासनते कहा कि जानकीजीको मंडपमें लैचलो [३] तब उपरोहितकी बाणीसुनिकै सखिन संयुक्त आनन्दभई तब रनिवास में बिप्रन की बधुन को अरु कुल की तिन बृद्धन को बोलाये जे सब कुल की रीति जानती हैं तिनते पूंछि पूंछि कुल की रीति करिकै सुष्टु मंगलमय गीत गावतीहैं (४) तहां बर नारिन करवेष बनाइ जे सुरन की बामा कही स्त्री जे सहज स्वभाये सुन्दरीहैं अरु श्यामा कहो नित्य किशोरी हैं (५) तिनको देखिकै रनिवास अरु सबनारी अतिसुख पावती हैं अरु बिनापहिचाने सबको प्राणते प्यारी लगतीहैं [६] तिनको रानी बार बार सन्मान करतीहैं जैसी वेहैं तैसेही उमा रमा शारदाके समान जानिकै आदर करतीहैं (७) ते सब मिलिकै श्रीजानकी जीको साजसाजिकै मुदितमन कही आनन्दते मण्डपको ल्यवाइ चलींहैं (८) छन्दार्थ॥ तहां हे भरद्वाज श्रीजानकी जीको सजिकै सखी आदर पूर्वक मण्डपको ल्यवाइचलीं तहां नखसतकही सोरहौ शृंगार करिकै अरु सोई सब सखी अपने अपने अंगमें शृंगार साजिकै सब सुन्दरी मत्त कुंजरकै तुल्य गमन करतभईं तहां सोरहौ शृङ्गार अरु बारहौ आभूषण कहतेहैं तहां सुनयना की आज्ञानुरूप सखी जे हैं ते श्रीजानकी जीको मज्जन करावती भईं अगर कपूर चन्दन केसरि इत्यादिक अनेक सुगन्ध श्री कमल जल मिश्रित ते स्नान करावती भईं शृङ्गारमें प्रथम मज्जनहै तहां सोरहौ शृङ्गार श्रीजानकी जीको पट्अष्ट मुख्य सखी पुनि षोड़शमुख्य सखी पुनि श्रीरघुनाथजीकी पट्अष्ट मुख्य सखी पुनिषोड़शमुख्यसखी ते सब श्रीसुनयनाजी की आज्ञा लैकै श्रीजानकीजी को शृङ्गार करती हैं सखिनके नाम आह्लादिनी ह्रींदेवी सहजानन्दिनी मदनमंजरी चन्द्रकला चन्द्रवती चन्द्रमुखी इति षट् पुनि अष्ट बिमला उत्कर्षिनी क्रिया योगा पार्वी ईशाना ज्ञाना सत्या (इत्यष्टसखी) पुनि षोड़श उज्ज्वला कांचनी चित्रा चित्ररेखा सुधामुखी हंसी प्रहंसी कमला विशदाक्षी सुदर्शना चन्द्रानना चन्द्रभद्रा माधुर्या शालनी कर्पूरांगी वरारोहा (इतिषोड़श) श्रीजानकी जीकी सखीहैं और भी अनन्तसखी हैं अब श्री रघुनाथजी की सखी सो जानकी जीके संगहैं पट्सखी आह्लादिनी ह्रींदिषी चारुशीला अतिशीला सुशीला हेमा लक्ष्मणा (इतिषट्) (पुनिअष्ट) वागीशा माधवी हरिप्रिया सनजीवा नित्या विद्या सुविद्या कूटरूपा (इत्यष्टसखी) (पुनिषोड़श) शोभना शुभदा शांतासंतोषा सुखदा सत्यवती चारुस्मिता चारुरूपा चार्वंगी चारुलोचना क्षेमांगी क्षेमाक्षेमदाश्री धात्री धीरा धरास्मृता (इतिषोड़श) इत्यादिक अनन्तसखी ते सब श्रीजानकी जी का शृंगार करतीहैं सब युगलसेवामें तत्परहैं भूत भविष्य बर्तमान में क्रमते जानब प्रथम स्नान कराये पुनि नीलसारी जामें सुवर्ण मणिनके फूलरचेहैं किनारी करावनते जटितहै सो पहिरावती भईं दोऊ पगनमें जावकजस चाही तस रचतीभईं नूपुरतीनि आवृत्तिते पहिरावती भईं अंगराग जहां जसचाही तहांतस करती भईं कटिमेंक्षुद्र घंटिका तीनि आवृत्तिते पहिराय दोऊ करमें कंकण पहिराये मुक्तनके हार पहिरावती

भई अगर कपूर चन्दन कस्तूरी लेपन करतीभई कवरीकी रचना चित्र विचित्र करती भई हैं वेसरि अधरपर शोभितहै श्रवणमें ताटंक शोभितहै भालमें विन्दुशोभित है नेत्रन में काजर देतभई बेनीमुक्तन ते गुहतभई येते षोड़शी शृङ्गार करती भई पुनि उपशृंगार कहे भूषण कहतेहैं द्वौचरण अँगुलिनमें तप्तइव कंचन तामें हरितमणि पीतमणि नीलमणिनकी कनी जटित ऐसो मंजीर कही बिछिया पहिरावती भई (मंजीरं द्वसूपकं । इत्यमरः ॥ पुनि दोऊ करनमें चूरी चित्र विचित्र हेम मणि कणिनते जटित शोभितहै मुद्रका शोभितहैद्वौ भुजनमें अंगद बिचित्रहै पुनि ग्रीवाकलीजवाकार है पुनि पचलरीपुनि पंचकली पदिक जैसे श्रीरामचन्द्रकेहैं पुनि चन्द्रहार कैसोहै मध्यमें पूर्णचन्द्रवत् मणिलगीहै पुनिक्रमहीते दाहिनी ओर शुक्लपक्षकी चतुर्दशी बामदिशि कृष्णपक्षकी परिवा यही प्रकारते जानिलेव शुक्लपक्षकी द्वितीया कृष्णपक्षकी तेरसि ताही को सुमेरु स्थाने ऐसोहारहै पुनि मणिनकी कनी कइउ रंगनके लघुमोती ताको रचित मणि जारसारी किनारीतई जैसे श्रीरघुनन्दन जूके बनमालाहै तैसे श्रीजनकनन्दिनी जूके मणिजारहै पुनि दुइ लरकी बन्दी ताटंक मिलित बन्दी तरटीका सुवर्ण प्रकाशमय ताके द्वौ ओठत रंगरंगकी मणि कणी ताके मध्यमें ये मणिनीचे भुकित ललाट पर अत्यन्त शोभित है टीकापर चन्द्रिका सो दाहिनीदिशि भुकित सो सुवर्णके मध्यमें एक मणि चढ़ा उतार कछुक बड़ीहै अरु द्वौकिनारे मणि कणिनते रचितहै ऐसीचन्द्रिका अनेक चन्द्र सूर्य दामिनीकी द्युति को प्रकाश करतिहै जेते श्रीसीताराम के भूषणहैं तेचैतन्यरूपहैं पुनिनित्य जीवहैं जे जौने रसमें अनन्यहैं ते ताहीमें सायुज्य होइके अंग अंगसेवन करतेहैं रस तौ नवहैं पुनि तीनिमिलि बारहहैं तिनमें पंच भक्तिरस हैं शांत वात्सल्य दास्य सख्य शृंगाररस अथवा सबरसै माधुर्य भूषणरूप नित्य अंगअंग सेवन करतेहैं अथवा एक शृंगाररस अनेक अलंकाररूप नित्य दम्पति अंगसेवन करतुहै ऐसे परम दिव्य भूषण श्रीसीताराम जूके अंग अंगनमें अतिही परम शोभाको पावते हैं ऐसे नव सप्त षोड़शी शृङ्गार बारहौ आभूषण श्रीजानकीजीके अंग अंगमें सजिकै अरु सोई आपु करिकै नयका मुग्धा मध्या प्रौढ़ा तिनमें अनेक भेद जे शृङ्गार रसादिक सर्व सेवा में अति प्रवीण ते सब सखि नर्म प्रिय निज अति सुन्दरी आदि मध्य अन्त किशोरीतें सखी जानकी जीको मंडपको लिवाय चलीं (१) तहां श्रीजानकी जीको सखी कल गान करत लयवाय चलीं जो सुनिकै मुनिन को ध्यान छूटिजाइ अरु जो सुनिकै कामै कोकिला को रूप धरिकै बोलै तौ वह भी लज्जित ह्वैजाइ तहां मञ्जीर कहो बिछुवा अरु नूपुर अरु सुन्दर कंकण सो इन सबके स्वर अरु गान एक तालगतिलिहे बाजते हैं (२) दोहार्थ ॥ तहां बनितन के बृन्द के मध्य विषे श्रीजानकीजी सहजही शोभित हैं सो कैसे शोभित हैं जनु छबिकही शोभाको भांति तेहिकी द्युति कहो छटा तेहिकी मूर्त्ति ललनाके गणहैं तेहो छबिके मध्य बिषे जो परमानन्द सुखहै सोई मूर्त्ति मान् कमनीय कहो अति सुन्दरि शोभित है तथापि यह उपमा श्रीजानकीजीके समान आगे तहां

३२२ सिय सुन्दरता बरनि न जाई । लघुमति बहुत मनोहरताई * १
आवत दीख बरातिन सीता * । रूपराशि सबभांति पुनीता * २
सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रणामा । देखि राम भये पूरणकामा ३
हरषे दशरथ सुतन समेता * * । कहि न जाय उर आनँद जेता *४
सुर प्रणाम करि बर्षहिं फू ा । मुनि अशीष ध्वनि मंगलमूला ५
गान निशान कोलाहल भारी । प्रेम प्रमोद मगन नर नारी * * ६
यहिबिधि सीय मंडपहि आई । प्रमुदित शांति पढ़हिं मुनिराई ७
तेहि अवसर कर विधि व्यवहारू । दुहुं कुलगुरु सब कीन्ह अचारू ८

छं० आचार करि गुरु गौरि गणपति मुदित विप्र पुजावहीं ॥
सुर प्रकट पूजा लेहिं देहिं अशीष अति सुख पावहीं १
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मनमें चहैं ॥
भरे कनक कोपर कलश सोतौ लिये परिचारक रहैं २
कुलरीति प्रीति समेत रवि कहि देत सब सादर किये ॥
यहि भांति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासन दिये ३
सियराम अवलोकनि परस्पर प्रेम काहु न लखिपरै ॥
मन बुद्धि बर बाणी अगोचर प्रकट कवि कैसे करै ४

दो० होम समय तनु धरि अनल अति सुख आहुति लेहिं ॥
विप्र वेष धरि वेद सब कहि विवाह विधि देहिं १

३२२ हे भरद्वाज श्रीजानकीजी की शोभा ब्रह्मादिक कविनको दुर्ल्लभहै काहेते कि जेते ब्रह्माण्ड मण्डल में कवि हैं तिनकी मति गुणाभिमानी है ताते लघु है अरु श्रीजानकीजी की मनोहरता गुणातीत है ताते कवि कैसे कहैं (१) तहां बरातिन श्री सीताजीको आवत देखा रूपकी राशि सो रूप सब भांतिते निर्मल पुनीत (२) तब तिन मुनिन अरु देवतन मनहीं मन में प्रणाम कीन्ह तहां प्रकट प्रणाम क्यों नहीं कीन्ह इहां यथार्थ श्रीजानकीजीको परमेश्वरी जानिकै शांतरस विषे मनमें नमस्कार कीन्ह अरु स्वेच्छित नाट्यलीला में जानिकै वात्सल्य रसमें प्राप्तिह्वैकै प्रत्यक्ष प्रणाम नहीं कीन्ह पुनि श्रीजानकी रामके बिवाहके सम्बन्ध में एकत्र देखा तब कामकही सबकी कामना पूर्ण भई (३) तहां श्रीदशरथ महाराजको निज पुत्रन सहित सखिन संयुक्त श्रीजानकीजीको देखिकै जैसो सुखभयो है सो नहीं कह जाइ (४) तब देवता श्रीराम जानकीको प्रणाम करिकै फूलनकी वृष्टि करतेहैं अरु मुनिन के आशीर्वादनकी मंगल मय ध्वनिहोती है (५) तहां गान निशान इत्यादिक शब्दन करिकै कोलाहल कही

शोर ह्वै रह्योहै नगर के नरनारि प्रेम करिकै प्रमोद कही आनन्दमें भरि रहेहैं (६) यहि प्रकारते श्रीजानकीजी मंडपको आवती भईं तहां प्रमुदित कही आनन्द ते मुनि राय शतानन्द बशिष्ठादिक शांति कही स्वस्त्ययन पढ़ते भये (७) तेहि अवसर कर विधि बिधान जो व्यवहार है सो दोउकुलके गुरु शतानन्द बशिष्ठ आचार पूर्वक इते उते हर्षिकै करते हैं (८) छन्दार्थ ॥ तब सम्पूर्ण आचार्य पूर्वक बिप्राचेन सहित गुरु कही श्रेष्ठ जो गौरि गणपति हैं तिनकी प्रथम पूजा करावते भये तहां जैसो रूप देवतन के वेद बर्णे हैं ते तैसेही स्वरूपते अपने अपने समय समय बिषे प्रत्यक्ष श्री सीताराम के कर कमल करिकै अपनो अपनो भाग पूजामें लेते हैं तुरन्त पाइ जाते हैं अपना को धन्य मानते हैं अरु आशीर्बाद देते हैं आशीर्बाद सुनिकै सब अति सुख पावते हैं (१) मधुपर्क कही गोघृत अरु मिश्रित मिश्री दधि अरु मंगल की द्रब्य कही पूगी फल पान अक्षत हरिद्रा दूब रत्न इत्यादिक बिवाहके जो सरंजाम जौनी समय जोमुनि मनमें चाहते हैं सो सब अरु तहां कंचन के कलशन महँ अनेक तीर्थनके जल अरु कंचनके कोपरन महँ अनेक पदार्थ भरे परिचारक कही शुचि सेवक लिहे ठाढ़े हैं (२) तहां सूर्य जोहैं सो प्रकट आदर पूर्वक अपने कुलकै रीति सब कहि देते हैं अरु ब्रह्मा जो हैं सो वेदकी रीति सब कहि देतेहैं तहां यही प्रकारते श्रीजानकीजीसे सब देवतन को पुजाइकै सुन्दर सिंहासन पर बैठावते भये (३) तहां श्रीजानकीजी श्री रघुनाथ जी को अवलोकन करती हैं अरु श्री रघुनाथ जी श्रीजानकी जीको अवलोकन करते हैं तहां परस्पर चक्षु संभोगकी प्रीतिते अपने अपने तनु को अपनपौ भूलि गयेहैं तहां परस्पर कर प्रेम काहूको लखि नहीं परै तहां कविनकी मन बुद्धि बाणी जोहै बरकही श्रेष्ठ तेहिते अगोचर वह प्रीति कवि कैसे प्रकट करैं (४) दोहार्थ ॥ तहां होमके समय बिषे अग्नि मूर्तिमान् ह्वैकै अति प्रीतिते प्रत्यक्ष भोजन करते हैं अरु चारिउ वेद ब्राह्मणन के रूप धरिकै बिवाह की विधि कहि देतहैं (५) ॥

३२३ जनकपाटमहिषीजगजानी। सीयमातुकिमिजाइबखानी १

सुयशसुकृतसुखसुन्दरताई। सबसमेटिबिधिरचीबनाई * २

समयजानिमुनिवरनबोलाई। सुनतसुआसिनिसादरल्याई ३

जनकवामदिशिसोहसुनैना। हिमगिरिसंगबनीजसमैना ४

कनककलशमणिकोपररूरे। शुचिसुगंधमंगलजलपूरे * ५

निजकरमुदितराउअरुरानी। धरेरामकेआगेआनी * * ६

पढ़हिंवेदमुनिमंगलबानी। गगनसुमनझरिअवसरजानी *७

बरबिलोकिदम्पतिअनुरागे। पायँपुनीतपखारनलागे * ८

छं० लागे पखारन पायँ पंकज प्रेम तनु पुलकावली॥

नभनगरगानानिशानजयध्वनिउमँगिजनुच

जे पदसरोज मनोज अरिउर सहस दैव बिराजहीं ॥
जयसुकृतसुमिरतविमलतामन सकलकलिमलभाजहीं २
जेपरसि मुनि बनिता लही गतिरही जो पातक मयी ॥
मकरंद जिनको शंभुशिर शुचिता अवधि सुरबरनयी ३
करिमधुपमन योगीशजन जेहिसेइ अभिमत गतिलहैं ॥
तेपदपखारत भाग्य भाजन जनकजयजय सबकहैं ४
बर कुँवरि करतल जोरि शाखोचार दौकुल गुरु करैं ॥
भयोपाणिग्रहणविलोकिविधिसुरमनुजमुनिआनँदभरैं ५
सुखमूल दूलह देखि दम्पति पुलक तनु हुलस्यो हियो ॥
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृप भूषण कियो ६
हिमवंतजिमिगिरिजा महेशहिं हरिहिं श्री सागरदयी ॥
तिमिजनकसियरामहिं समर्पीविश्वकलकीरतिनयी ७
क्योंकरै विनय विदेह कियो विदेह मूरति सांवरी ॥
करि होम विधिवत गाँठि जोरी होन लागीं भाँवरी ८
दो० जय ध्वनि बंदी वेद ध्वनि मंगल गान निशान ॥
सुनि हर्षहिं बर्षहिं बिबुध सुरतरुसुमन सुजान १

३२३ तहां राजा जनककी महिषी कहौ पट बंधनी रानी श्रीसुनयना जैसे जनक योगेश्वर तैसे रानी भी सब प्रकारते दिव्यगुण अरु परम शोभा की समुद्र जिनकी उपमा को कोई हुई नहीं है इनकी समान यई हैं ते रानी श्रीजानकी जी की माता तिनको बखानिकै ऐसो कौन कवि है जो कहै [१] कैसी हैं श्रीजानकी जी की माता अस समुझिबे में आवत है कि ब्रह्माण्ड भरेमें सुयश जोहै अरु सुकृत जोहै अरु परमसुख जोहै अरु परम सुन्दरता जो है चारिउ सुष्ठु समेटिकै शील ते सानिकै बिधातैं एक सुनयनाजी की मूर्ति बनावाहै रचना करिकै अपनी सुघराई जगत्में दिखाइ दीन्हि [२] तहां समय जानिकै तिनको मुनीश्वर बुलावते भये तब मुनिकै सुआमिनी कहौ नगरकी कन्या छोटी बड़ी मध्य इत्यादिक रानीको मण्डप में लै आवती भई [३] तहां सुनयना को दिव्य आसन पर बैठावत भये तहां जनक बाम दिशि सुनयना के बामदिशि जनक अरु जनकके दक्षिण दिशि बिषे सुनयना शोभित हैं पुण्यकालमें ऐसेही चाहिये जैसे पार्वतीके विवाहमें हिमाचलके दक्षिणांग में मैना शोभित भई हैं [४] जहां कनकके कलश अरु मणिन के कोपर करे कहौ अति सुन्दर तिन विषे अगर कपूर चन्दन केसरि इत्यादिक सुगन्ध मिश्रित मंगल मय जल भरेहैं [५] रानी समेत राजा जनक अपने हाथन श्री रामचन्द्र के आगे धरत भये [६] तहां संपूर्ण

मुनीश्वर मंगल वाणी करिकै वेद पढ़तेहैं तहां अवसर जानिकै आकाश ते देवता बर्षते हैं [७] तब वरको बिलोकि कै दम्पति अति अनुरागको प्राप्त ह्वैकै अति पुनीत चरण पखारने लगे [८] छन्दार्थ ॥ तब दम्पति श्रीरामचन्द्रके युगल चरण कमल पखारने लगे अति प्रेमते तनु पुलकि आयो चरण धोवत जानिकै नभ अरु नगर में गान निशान जय ध्वनि चहुं दिशि में ह्वै रही है (१) जे पदसरोज मनोज अरि जो महादेव हैं तिनको हृदय मानसर है तहां सदैव कही सदा विराजते हैं जिन चरणों के सुकृत कही एकबार लव मात्र सुमिरण करत संते संपूर्ण कलिको मल नाशवन्त होतहै (२) जिन चरणन को परसकै गौतम की पत्नी तरिगई जो पापमय रही जेहि चरणको मकरंद कही रस अति शुचि पवित्र महादेवके मस्तक पर शोभित है सुरसरि जी पवित्रता की अवधि हैं (३) पुनि जेहि पद पंकजके मकरंदको अपने मनको मधुप कीन्हहै योगीश्वर मुनि परमहंस जेहिको सेइकै अभिमत कही बांछित फल को प्राप्त होतेहैं जनकजी ते चरणारविंद पखारते हैं ताते भाग्य के भाजन हैं तहां जनक की स्तुति जय जयकार सब देवता मुनि सिद्धादिक करते हैं (४) हे भरद्वाज बर जो श्री रामचन्द्र अरु कुँवरि श्रीजानकीजी तहां दोऊ कुँवर कुँवरि को करतल जोरिकै श्री रामचन्द्र के दक्षिण करतल पर श्रीजानकी जी को दक्षिण कर धरावते भये तहां शाखोच्चार द्वौ कुल गुरु करते हैं (प्रमाणंश्रुतिः) यामाच्यदक्षिणकरोपरि कन्यादक्षिण करन्निधाय (१) शाखोच्चार कही वेद की शाखा तेहि को उच्चारण द्वौ कुल के गुरु द्वौ दिशिते करते हैं वशिष्ठजी श्रीरामचन्द्रकी दिशि अरु शतानन्द श्रीजानकी जी की दिशि तहां प्रमाण है स्वस्तिश्रीमत्सकलजगदघध्वंसन परमोदार विनोद विचार सदारसच्छास्त्राध्ययनविद्वज्जनगोष्ठीप्रकाशवर्मणः प्रपौत्रः पौत्रः पुत्रः प्रयतपाणिशरणम्प्रपद्ये स्वस्ति-स्सम्बादेषूभयोर्बरकन्ययोर्मंगलमास्ताम् (इति बरपक्षे बारत्रयम्पठेत्) (अथ कन्यापक्षे) स्वस्तिश्रीमत्सदाचाराचरण परिलब्धगर्गवशिष्ठादिमुनिगणयोगीश मानयशश्चन्द्रकर धवली कृतजगत्त्रयस्य अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्रीपौत्रीपुत्रीस्वस्ति सम्बादेषूभयोर्वरकन्ययोर्मंगलमास्ताम् (इतिकन्यापक्षेबारत्रयम्पठेत्)(२) तब पाणिग्रहण होत भयो सो बिलोकिकै सुर मनुज मुनि आनंदको प्राप्त होत भये (५) तहां सुखको मूल दूलह जो श्रीरामचन्द्र तिनको अति प्रीतिते नयन भरि विलोकिकै दम्पतिको तन पुलकि आयो हृदयमें हुलास भयो तब लोक वेद विधान करिकै राजनके भूषण श्रीजनक जी रानी संयुक्त कन्यादान करत भये (६) जिमि हिमाचल गिरिजाको महेश को समर्पण कीन्हहै अरु जिमि क्षीरसागरने लक्ष्मीजीको विष्णु भगवान्को समर्पण कीन्हहै तिमि तेहि प्रकारते जनकजीने श्रीजानकीजी को श्रीरामचन्द्रजी को समर्पण कीन्ह है कीर्ति सम्पूर्ण विश्वमें कल कही सुन्दर नवीन भरि रहीहै (७) तब विदेह को विनय करिबे की सामर्थ्य नहीं रही काहेते कि सॅांवरि मूर्त्तिने अपनी शोभा करिकै विदेहको विदेह करि दीन्ह तहां विनय को करिसकै पुनि सावधान होइकै बिबिध विधान ते होम करिकै गांठि जोरिकै भांवरी की तयारी होतभई (८) दोहार्थ ॥ तब नगरमेंजय मंगलगानकी ध्वनि होतभई सो सुनिकै देवता अतिहर्षसंयुक्तकल्पवृक्षके फूलबर्षतेहैं(९)॥

३२४ कुँवरिकुँवरकलभाँवरिदेहीं। नयनलाभसबसादरलेहीं १
जाइनबरणिमनोहरजोरी * । जोउपमाकछुकहौंसोथोरी २
रामसीयसुन्दरप्रतिछाहीं। जगमगातिमणिखम्भनमाहीं ३
मनहुँमदनरतिधरिबहुरूपा * । देखतरामविवाहअनूपा * ४
दरशलालसासकुचनथोरी * । प्रकटतदुरतबहोरिबहोरी * ५
भयेमगनसबदेखनहारे * * । जनकसमानअपानबिसारे ६
प्रमुदितमुनिनभाँवरीफेरी * । नेगसहितसबरीतिनिबेरी * ७
रामसीयशिरसेंदुरदेहीं * * । उपमाकहिनजायकविकेहीं ८
अरुणपरागजलजभरिनीके। शशिहिभूषअहिलोभअमीके ९
बहुरिवशिष्ठदीन्हअनुशासन। बरदुलहिनबैठहिंयकआसन १०

छं० बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये ॥
तनुपुलकि पुनिपुनि देखिअपने सुकृत सुरतरुफल नये १
भरि भुवन रहा उछाह राम बिवाह भा सबही कहा ॥
केहिभाँति बरणि सिरातरसना एक यह मंगलमहा २
तब जनकपाय वशिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारिकै ॥
मांडवीश्रुतिकीरति उर्मिला कुँवरिलइय हँकारिकै ३
कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुणशीलसुख शोभामयी ॥
सबरीति प्रीतिसमेत करि सो ब्याहि नृपभरतहिदयी ४
जानकी लघुभगिनी सकलसुन्दरि शिरोमणि जानिकै ॥
सोजनक दीन्हीं ब्याहि लषणहिं सकलविधिसनमानिकै ५
जेहिनामश्रुतिकीरतिसुलोचनिसुमुखिसबगुणआगरी ॥
सो दयी रिपुसूदनहिं भूपति रूप शील उजागरी ६
अनुरूपबर दुलहिनि परस्परलखिसकुचि हियहर्षहीं ॥
सबमुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगण बर्षहीं ७
सुन्दरी सुन्दर बरण सह सब एक मण्डप राजहीं ॥
जनु जीवउर चारिउअवस्था विभुनसहित विराजहीं ८
मुदित अवधपति निहारि ..
जनुपाये महिपालमणि कियन सहित फलचारि १

३२४ तब कुँवरि श्रीजानकीजी आगे अरु कुँवर श्रीरघुनाथ जी पाछे यहि रीतिते भाँवरी होनेलगीं तहां देव नर मुनि इत्यादिक सब नयननको लाभ सादरलेते हैं [१] तहां देखिकै सबके मन हारिगये काहेते मनोहर जोरी बर्णिबे को कवि न को अगम है जो उपमा ब्रह्मांड भरमें है सो कवि ढूंढ़िकै कहैं सो सब थोरीहै तहां सत्कविनकै बाणी सकोचिकै सीतारामकी प्रतिछाहीं की उपमा कछु कहतीहै [२] जबसीताराम भाँवरी फिरने लगे तबतिनकी प्रतिछाहीं मणिनके खम्भनमें जगमगाइ रही है [३] तिन प्रतिछाँहिनकी उपमा कछु कहतेहैं मानो मदन अरु रतिबहुरूप धरिकै श्रीरामचन्द्र को बिवाह जो अनूप सो देखतहैं[४] तहां दर्शनकी लालसा बहुतहै अरु अपनी शोभाको महत् समुझिकै अति संकोच पावतहैं अरु बिना दर्शननहीं रहाजाइहै ताते जनु बारबार प्रकटत अरु दुरतहैं जब खम्भनमें प्रतिछाहीं परतीहै तब मानहु रति अरु कामप्रकटतहै अरु जब खम्भन के बीच बीच प्रतिछाहीं परती जाती है तब मानहुं दुरि कहो छपि छपि जातहै यहि उपमाते मानहुं बारबार प्रकटत है दुरत है तहां देखिये तौ श्रीगोसाईं तुलसीदास की रचना कि काम श्रृंगार रसको मूर्तिही है अरु रति श्रृङ्गार रसको मुख्यस्थायी है तिन दोऊकी उपमा श्रीरामजानकी को प्रति छाहींकी दीन्हिहै पुनि द्वौ जनु अनेकरूप धरिकै श्रीसीतारामकी शोभा देखत हैं तदपि तृप्त नहीं होतहैं तहां सीतारामजूकै शोभा कवि कैसे कहै नाम नहीं कहिसकै(५)तहां देव मुनि मनुष्य इत्यादिक तेहिसमय में सीतारामजीकी सम्पूर्ण शोभा देखिकै मग्न ह्वै गये हैं कैसे मग्न भये राजा जनक के समान अपनपौ सबको भूलि गयोहै तेहि समय में जनक बिदेह ते बिदेह भये तैसही सब चित्रते रहिगये (६) तहां प्रमुदित कही आनन्दते मुनि भाँवरी फेरते भये अरु अपनो नेग लैलै प्रीति सों सबरीति निवेरी कहो करत भये (७) पुनि मुनिनकी आज्ञाते श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजीके भालमें सिन्दूर देतेहैं सो उपमाकै शोभा केहिबिधिते कही जाइ कोई बिधिते नहीं कही जातिहै (८) तहां कछुक सत्कवि कहते हैं इहां बाचक लुप्तालंकार की उपमा देतेहैं अरुण जो पराग कहो सिन्दूर सो श्रीरामचन्द्रने कमलकरते पाँचहु अंगुलिन करिकै भरि लीन्ह श्रीजानकीजीके ललाट के ऊपर भूषित करते हैं जनु पराग किंजल्क संयुक्त कमल लैकै श्याम सर्प पूर्ण चन्द्रमाकी अमृत की प्राप्तिहेतु पूजा करतहै तहां श्रीजानकीजीको मुख सोई पूर्णचन्द्रहै अरु श्रीरामचन्द्र की भुजा सोई श्याम सर्पहै हथोरी कमल है अंगुली दल हैं सिन्दूर पराग किंजल्क है ऐसी अभुत उपमा है किन्तु भुजग सर्पहै अरु कमलइव करतल फणाहै अरु सिन्दूर मुख में मणिहै तेहि मणिते अहि सीतामुख चन्द्रको अमिय हेतु पूजत है (९) बहुरि कै वशिष्ठ आज्ञा देतभये कि वर दुलहिनि एक आसनपर बैठहिं (१०) छन्दार्थ ॥ श्रीरामचन्द्र जानकीजी वरासन पर बैठे दशरथ महाराज देखि देखि परमानन्द को प्राप्त हैं बारबार तनु पुलकत हैं काहेते अपने नवीन सुकृत सुरतरु को नित्य नवीन फलित देखिकै (१) तहां तीनिउ भुवन में परम उत्साह भरि रह्योहै हे भरद्वाज तहां यह महामङ्गल एकरस ताते केहि भांतिते कहाजाय (२) तब जनकजी वशिष्ठकी आज्ञा पाइ कै बहुरिकै बिवाहकी रचना सरञ्जाम शीघ्र सवाँरिकै पुनि आंडवी श्रुतिकीर्ति उर्मिला

तीनिहुं कुंवरिको सखिन करिकै हँकारि लीन्ह जैसे समाज संयुक्त श्रीजानकीजी मंडपमें आईहैं तैसेही तीनिउँ कुंवरि मण्डपको आवती भई (३) राजा जनकके छोटेभाई कुश-केतु तिनकी ज्येठी कन्या उत्तम गुण शीलशोभा मय मांडवी उसेमवरीति प्रीति समेत करिकै भरतजूको ब्याहि दीन्ह [४] पुनि श्रीजानकीजीकी लघु भगिनी राजाकी कन्या उर्मिला सकल सुन्दरीनकी शिरोमणि सोसब रीतिप्रीति करिकै आनन्द पूर्वक राजाने श्री लक्ष्मणजूको विवाहि दीन्ह [५] पुनि कुशकेतुकी छोटी कन्या श्रुतिकीर्ति नामकैसी है सुमुखि सुलोचनि अरु उत्तम गुणन की जे गुणी शारदा उमा रमा इत्यादिक तिन विषे आगरी कही अग्रगणीय हैं तिनको सब रीति प्रीति समेत करिकै श्रीशत्रुहन को विवाहि दीन्ह [६] तहां चारिउ कुंवरि अरु चारों कुमारन को अत्यानन्द पूर्वक विवाह करत भये ते एक स्थान में विराजमान हैं वरके अनुरूप दुलहिनि श्रीरामचन्द्र श्याम श्री-जानकीजी गौरी भरतजू श्याम अरु मांडवीजी गौरी अरु लषण शत्रुहन गौर उर्मिला अरु श्रुति कीर्ति श्याम तहां शृङ्गाररस श्यामहै अरु शृङ्गार रसको स्थायी मुख्य रतिसो आह्लादकारी गौरी है तहां लक्ष्मणजू उर्मिला के आह्लादकारी अरु शत्रुहन श्रुति-कीर्तिके आह्लादकारी अरु श्रीजानकीजी श्रीरामचन्द्र के आह्लादकारी अरु मांडवी श्रीभरतजीके आह्लाद कारी हैं तहां शास्त्रन के अनुरूप यह कहा जात है नतुरस अरु स्थायी अन्योन्य पर पर आह्लाद कारी हैं तहां चारिउ कुंवरि अरु चारों कुमार अपने २ सम्बन्ध में परस्पर अतिहर्ष संयुक्त अवलोकन करते हैं सो रस कहिबेको मन बुद्धि वाणी कविन की अगोचर है तेहि समय में देखिकै सब कोई सुन्दरता सराहते हैं अरु नभते देवतन के गण फूल बर्षते हैं [७] सुन्दरी जो चारिउ कुंवरि अरु सुन्दर चारों कुमार सहकही कुंवरि कुंवर किन्तु सहकही राजाते सब एक मण्डप में राजते हैं जनु जीवके अन्तर्भूत बिधे चारिउ अवस्था बिभुकही सामर्थ्य तहां अपने अपने पति देव-तन संयुक्त विराजती हैं तहां अवस्थन के अरु तिनके देवता अरु जीव तिन सबकी गुण क्रिया स्वरूप कहतेहैं तहां जनपदजोहै सो वस्तु उत्प्रेक्षालंकारको वाचकहै सो सब कहतेहैं तहां अवस्था चारि जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीय अरु तिनके देवता क्रमतेविश्वतैजस प्राज्ञ अन्तर्यामी जानब तहां जाग्रतअवस्था चौबिस तत्त्व करिकै है पृथ्वी अप तेज वायु आकाशये पांच तत्त्व अरु पांच ज्ञान इन्द्रिय श्रवणनयनत्वक् रसना नासिका पुनि पांच कर्म इन्द्रिय मुख पाणि पद लिंग गुदा अरु पांच ज्ञानइन्द्रियको विषय शब्द स्पर्शरूप रस गन्ध पुनि चतुष्टय अन्तःकरण चित्त बुद्धि मन अहंकार यहि चौबिसतत्त्व करिकै स्थूल शरीर प्रत्यक्षभोग जाग्रतअवस्था विश्वदेवता सत्वगुण तहां जाग्रतअवस्था उर्मिलाजी विश्वरूप लक्ष्मण जी पुनि स्वप्नावस्था सत्रहतत्त्वकरिकै पांचज्ञानइन्द्रियको विषय जो कहिआये श्रवणको विषय शब्द नेत्रको विषयरूप त्वक्को विषय स्पर्श जीभको विषयरस घ्राणको विषयगन्ध इतिपंच पुनि कर्मइन्द्रियको विषय मुखको विषय भक्षण हाथको विषय व्यवहार पदको विषय गमन लिंगकोविषय मैथुन मूत्रगुदाको विषय बिसर्ग बिसर्ग कही मलको त्याग इतिपंच ॥ पुनि पंचप्राण अपान समानव्यान उदान इति पञ्चवायु पुनि मन बुद्धि यते सत्रहतत्त्व करिकै लिंग शरीर तेहिको सूक्ष्म भोग स्वप्न अवस्था

तैजसदेवता रजोगुण तहां दिव्यस्वप्नअवस्था श्रुतिकीर्तिकोजानिये अरु तैजस देवताशत्रुहन कोजानिये पुनि सुषुप्तिअवस्थाकही जहां जाग्रत अवस्थाको चौबिस ततत्व अरु स्वप्नअवस्थाके सत्रह ततत्व जे हकालमें सुखविषे लय होइ जाहिं तहां करण शरीर अरु आनन्दभोग प्राज्ञदेवता विमल तमोगुण प्राज्ञकही ज्ञानके स्वरूपकी प्राप्ति तहां सुषुप्तिअवस्था मांडवीको जानब अरु प्राज्ञ देवता श्रीभरतजी को जानब पुनितुरीय अरु कोई मुनीश सुषुप्ति अवस्थाको सत्वगुणमय कहतेहैं जाग्रतको रजोमय कहते हैं अरु स्वप्न अवस्थाको तमोमय कहतेहैं ताते जो कोई सुषुप्ति अवस्थाको अज्ञान देशमें कहते हैं उनको स्वरूप भलीबिधि नहीं जानि परयोहै अरु तुरीयावस्था कही जहां स्थूललिंग कारण तीनिउ शरीर को अभाव अरु सुषुप्ति इत्यादिक तीनिउ अवस्था रहित होइ सच्चिदानन्द वृतिहोइ सो तुरीय अवस्था गुणातीत आनन्द विग्रह ब्रह्मानन्द भोग सो श्रीजानकी जीको जानब अरु तुरीयको देवता ब्रह्म सर्व व्यापक शुद्ध चैतन्य अन्तर्यामी रूपराम जो सर्वमें रमिरहेहैं सो श्रीरामचन्द्र को जानब तहां चारिउ अवस्था शुद्ध चारिउ कुंवरि अरु अवस्थन के विभुकही देवता चारिहु कुंवर अरु जीवस्थाने राजा अरु शरीर स्थाने मंडप तहां यह कहा कि जनु जीव अरु चारिउ अवस्था को साम्यता करिकै रहना यह विरोध भासित होतहै काहेते कि कोईमुनि यह कहतेहैं कि जाग्रत अवस्था सतत्व गुणमें है अरु तुरीयावस्था गुणातीत है तहां तीनिउ गुणनमें भेदहै एक सतत्व एकशुद्ध सतत्व एकरजः एकशुद्धरजः एकतमः एक शुद्धतमः तैसे इनके देवता जानब तहां श्रीगोसाईं तुलसीदास जीने यह उत्प्रेक्षा कीन्ह कि चारिउ अवस्था अरु तिनके देवता तहां चारिउ कुंवरि अरु चारों कुंवरन का दृष्टान्त दीन्हहै तहां शुद्ध अवस्था शुद्धदेवता जानब काहेते कि जहां जाग्रत अवस्था तहां स्वप्न सुषुप्तिकर विरोधहै अरु जहां स्वप्न अवस्थाहै तहां जाग्रत सुषुप्ति को अभावहै अरु जहां सुषुप्ति है तहां जाग्रत स्वप्नको अभावहै अरु जहां तुरीयावस्था है तहां तीनिहूंको अभावहै अरु यहां गोसाईं श्रीतुलसी दासने कहा कि जीवके अन्तर्भूत चारिउ अवस्था सहित देवतन एकही संगविराजतेहैं ताते तीनिउं अवस्थाको देवतन संयुक्त इहां शुद्धजानब अरु यहां जीवस्थाने कोई मंडपको कहते हैं तहां धर्मके सम्बन्धविषे विरोध आवत है ताते जीवस्थाने दशरथ महाराजको जानिये काहेते चारिउ अवस्था अवस्थन के देवता यहिसमय महँ एकही वेर दशरथ महाराजके बाह्यान्तर सुखपूर्बक विराजतेहैं देखिये तौ जाग्रत अवस्थाको स्थूलशरीर अरु तेहिकी क्रिया तनुको व्यवहार अरुअवस्थाको देवता विश्वतहां दशरथ महाराज सब क्रिया कर्म करते हैं तेहि समयमें वेद विधिते व्यवहार करतेहैं अरु सपूर्ण विश्व राजाकी बड़ाई करतहैं पुनि स्वप्न अवस्थाकी क्रियामन को व्यवहार मनबुद्ध्यादिक सत्रहौ ततत्व करिकै अन्तःकरण में करतेहैं अरु तेही समयमें तेजवान् प्रकाशवान् राजा विराजमान हैं पुनि सुषुप्ति अवस्थाकी क्रिया में आनन्द करिकै किसी कर्तव्यकी सुधि नहीं है अरु प्राज्ञ कहौ तेही समयमें प्राणायाम उत्कर्ष करिकै ज्ञानकही अपने स्व स्वरूप की प्राप्ति अरु तुरीयावस्था की क्रिया निर्विकल्प समाधि अरु तेहिकर देवता अन्तर्यामी श्रीरामचन्द्र तिनके स्वरूपविषे राजा

के चित्तकी वृत्ति अखण्ड लगीहै ताते दशरथ महाराज के बाह्यान्तर विषे चारिउ अवस्था चारिउकुंवर हैं पुनि चारिउ देवता चारिउ कुंवरहैं एकहीबेर आनन्दपूर्वक राजाके उरबिषे बिराजमान हैं पुनि तत्त्वसार ग्रन्थ है तिसकी उक्तिकहते हैं ऐप लोक मृत्युलोक स्वर्गलोक तीनिहूं लोकनके कर्म वासनासंयुक्त सो स्वप्न वस्थाहै अरुतेहि को देवता अष्टांग योगहै काहेते योगकर्मको लिहेहै तहां अवस्थारूपी श्रुतकीर्त्ति सो राजाके कर्म राजाके वासनाकी कीर्त्ति श्रुतिगावते हैं अरु त्रैलोक्यमें पूरिरही है काहेते राजाकी कर्म वासनाको परमदिव्य श्रीरामते सम्बन्ध योग है पुनि जो कर्म करै तेहिके फलकी वासना नहीं सो जाग्रत अवस्थाकही अरु तेहिको देवता वैराग्यकही त्याग सो जाग्रत अवस्था उर्मिला अरु वैराग्यरूप लक्ष्मण तहां दशरथ महाराज सर्व निर्वासिक अरु सर्वस्वदान करतेहैं सोवैराग्य पुनि सुखविषे मवलीनहै सोसुषुप्ति अवस्था मांडवी अरु तेहिको देवता विवेक लिहे ज्ञान सो राजाके आनन्द विवक पूर्णहै पुनि जहां दुःख सुख हर्ष शोक हानि लाभ समहैं अरु ब्रह्मानन्दमें आरूढ़ सो तुरीयावस्था श्रीजानकी जी अरु तुरीयको देवता विज्ञान स्वरूप सोश्रीरामचन्द्र हैं ऐते परमदिव्य मूर्तिमान् अवस्था देवता दशरथ महाराजके अन्तर्भूत एकहीबेर एकमगडप बिषे बिराजमान हैं तहां यहिछन्द के यहि चरणमें अनेक अर्थ अनेकभाव हैं परन्तु मैंने अपनी मतिके अनुसार कहाहै (८) दोहार्थ॥ हेगरुड़ अवधपति सकल सुतनवधुन को एकही स्थानबिषे अपने समीप देखिके अति मुदितहैं जनुक्रियन सहित चारिउ फल एकहीबेर महिपाल मणि पावतेभये तहां फलकही अर्थ धर्म काम मोक्ष तहां अर्थ कही द्रव्यरत्न सुवर्ण हाथीघोड़े रथ पैदर अन्नवस्त्र इत्यादिकन को द्रव्यकही तेहि की क्रिया तपदानते अर्थ सिद्धहोतहै किन्तु प्रारब्धके आश्रय पुरुषार्थते सिद्धहोतहै तहां अर्थ शत्रुहनका जानब काहेते जो शत्रुको नाशकरै तौ अर्थ सिद्ध होय तहां शत्रुहन में दुइभेद एक अपने शरीरहीमें शत्रुहैं काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इत्यादिक जो इनको नाशकरै तो परमार्थ सिद्धहोइ अरु एक शत्रु बाहरकेहैं जीव जीवके जातिनको नाशकरै तौ संसारमें स्वार्थ सिद्धहोइ ताते परमार्थ स्वार्थदूनों अर्थरूप शत्रुहनहैं अर्थ की क्रिया तप दान पुरुषार्थ कहेहैं इनको जो निर्वासिककरै तौ परमार्थ मुक्ति सिद्धहोइ अरु जो सवासिक करै तौ मृत्युलोक किन्तु स्वर्गलोकमें स्वार्थ कीर्त्ति सिद्धहोइ तहांनिर्वासिक क्रियामें उत्तम कीर्त्ति है अरु सवासिकमें मध्यम कीर्त्तिहै तहांअर्थक क्रियाश्रुतिकीर्त्ति को जानब निर्वासिक क्रियाकी कीर्त्ति उनको स्वरूप जानब अरु सवासिक क्रिया की कीर्त्ति उनकी शक्ति जानब अर्थ क्रिया युक्त कहेहैं पुनि धर्म कहते हैं धर्म कही सत्य शौच तपदान तहां ब्राह्मणन को चारिउ चाही तामें दान सामान्य है अरुक्षत्री को चारिउ चाही तेहि में शौच सामान्य है अरु वैश्यमें तीनि चाही सत्य शौच दान तेहि में शौच सामान्य है अरु शूद्र में दुइ चाही सत्य दान तहां दान सामान्य है इति चारिवर्ण पुनि चारि आश्रम कहते हैं ब्रह्म चर्य गृहस्थ बानप्रस्थ संन्यास ब्रह्मचारी को चारिउ चाही सत्य शौच तप दान तहां दान सामान्य है अरु गृहस्थ को दान बिशेष तीनिउ सामान्य हैं अरु जो ब्रह्मचारी विषे सोई बानप्रस्थ बिषे अरु संन्यासी

विषे सत्य शौच विशेष तेहि धर्म्म बिषे निर्वासिक सवासिक निर्वासिक मोक्षदाता सवासिक मृत्यु अरु स्वर्गलोक दाता तहां निर्वासिक धर्मकी मूर्ति श्री लक्ष्मणजू को जानिये पुनि धर्म की क्रिया अपने अपने बर्णाश्रम के कर्म ब्राह्मण के कर्म शम दम शौच शान्ति आर्जव कह्यो दया ज्ञान विज्ञान इति नव पुनि क्षत्री की क्रिया शूर तेजस्वी धैर्यदक्ष कह्यो शास्त्रादिकन में प्रवीण अरु युद्ध में अचल अरु दान में उदार इति षट् पुनि वैश्य की क्रिया कृषी बाणिज्य कर्म गोरक्षण इतित्रय पुनि शूद्रकी क्रिया तीनिउ बर्णकी परिचर्या इति एक पुनि आश्रम की क्रिया ब्रह्मचारी विद्याध्ययन गुरु सेवा भिक्षा भोजन पुनि गृहस्थ की क्रिया गृहस्थो करै जो उत्पन्न करै तेहिके सत्रहवें भाग में एक भाग दान करिकै तुरन्त ब्राह्मण को देइ गृहस्थी करै पुनि निज योषिता रत पुनि एक एक सोधा पूर्णमासी अमावास्या प्रति देइ पुनि जब रसोई होइ तब भगवदर्पण करिकै पंचग्रास देइ गऊ अरु ब्राह्मण को बालक शूद्रको बालक अरु श्वान को अरु पाँचवां क्षुधित कोई होइ अपनी शक्ति प्रमाण अतिथि की सेवा करै इत्यादिक अनेक हैं पुनि बानप्रस्थ की क्रिया स्त्री संयुक्त बनको जाइ किन्तु अकेलैजाइ तप करै इन्द्रिन के विषय को जीतै पुनि संन्यासकी क्रिया बिषय ते वैराग्य ग्राम के बासको त्याग भिक्षा भोजन दिनमें करै इन सबकी क्रियन में एक निर्वासिक एक सवासिक स्वर्ग मृत्यु लोक निर्वासिक मुक्त है सो क्रिया उर्मिला जीको जानिये पुनि काम काम कह्यो कामना ऋद्धि सिद्धिन की चाहना सो भरत जीको जानब निर्वासिक आपुही ते सब प्राप्ति है तेहिकी क्रिया शक्तिन सहित पंचदेवता की आराधना निर्वासिक सो मांडवी जीको जानिये पुनि अर्थ धर्म काम मोक्ष कह्यो कैवल्य मूर्ति श्री रामचन्द्र अरु कैवल्य की क्रिया योग वैराग्य ज्ञान नवधा प्रेमापराभक्ति सो श्री जानकी जी को जानिये तहां निर्वासिक अर्थ धर्म काम मोक्ष चारिउ कुंवरहैं अरु चारिउ फलकी क्रिया द्रव्य चारिउ कुंवरि हैं तहां देखिये तौ क्रियाफल यक ठाईं नहीं सिद्धि होतेहैं तहां दशरथ महाराज के फल अरु फलकी क्रिया तेहिसमय एकही बार सब प्राप्तहैं (१)॥

३२५ जसरघुवीरब्याहविधिबरणी। सकलकुंवरब्याहेतेहिकरणी १

कहिनजातकछुदायजभूरी। रहाकनकमणिमंडपपूरी * २

कंबलबसनविचित्रपटोरे *। भांतिभांतिबहुमोलनथोरे *

गजरथतुरगदासअरुदासी। धेनुअलंकृतकामदुहासी * * ४

बस्तुअनेककरियकिमिलेखा। कहिनजाइजानहिंजिनदेखा५

लोकपालअवलोकिसिहाने। लीन्हअवधपतिसबसुखमाने६

दीन्हयाचकनजोजेहिभावा। उबरासोजनवासहिआवा * ७

तबकरजोरिजनकमृदुबानी *। बोलेसबबरातसनमानी * ८

दो० सनमानि सकलबरात आदर दान विनय बड़ाइकै॥

प्रमुदित महामुनि वृन्द वन्दे पूजिप्रेमलगाइकै १
आरताइदेवसनाइ सब सन कहत करसंपुटकिये ॥
सुर साधुचाहतभावसिंधुकि तोय जलअंजलि दिये २
करजोरिजनकबहोरिबन्धुन सहितकोशलरायसों ॥
बोले मनोहर बैन सानि सनेह शील सुभाय सों ३
सम्बन्धराजन रावरे हमबड़े अबसब विधि भये ॥
ये राजसाज समेत सेवक जानकी बिनु मोल लये ४
ये दारिका परिचारिका करिपालवी करुणामयी ॥
अपराध क्षमिबोबोलि पठये बहुतहौं ढीठी दयी ५
पुनिभानुकुलभूषणसकल सनमानविधिसमधीकियो ॥
कहि जातनहिंविनती परस्परप्रेमपरिपूरणहियो ६
वृंदारका गण सुमनबर्षहिं राउ जनवासहिंचले ॥
दुन्दुभी ध्वनि वेद ध्वनि नभ नगर कौतूहलभले ७
तब सखी मंगल गानकरत मुनीश आयसु पाइकै ॥
दूलहदुलहिनिनसहितसुन्दरि चलींकोहबरल्याइकै ८
दो० पुनिपुनिरामहिं चितवसिय सकुचतिमन सकुचैन ॥
हरत मनोहर मीन छबि प्रेम पियासे नैन १

३२५ हे भरद्वाज जेहि बिधि बिधान ते श्री रामचन्द्र की विवाह वर्णन कीन्हहै तेहि बिधिते तीनिउँ कुंवरनको बिवाह दोऊ राजन आनन्दपूर्वक कीन्हहै (१) तहां जो अतिसमूह दायज जनकजूने दीन्ह है सो कहिबे योग्य नहींहै कनक मणिन ते मंडप परिपूर्ण ह्वै रह्यो है [२] तहां कंबल कहो ऊर्णा वस्त्र बनात पट्ट दुशाला इत्यादिक अरु खानि खानि के पट्टाम्बर अरु खानि खानि के सूत्रवस्त्र कितने साधारण कितने जरावनते जटित ऐसे अनेकन अरु कितने भांति भांतिके जिनके मोल थोड़ेनहीं हैं अनन्तहैं कहिबे योग्यनहीं हैं [३] अरु अनेकन गज तुरंग अरु तिनहींके रथ बहु दासदासी अनेक अलंकार संयुक्त श्रीरघुनाथजी अरु श्रीजानकीजी के हेतु देतेभये अरु अनेक धेनु कहो अति दुग्धवती सवत्सा कामधेनु के सदृश सदा फलदात्री ऐसी धेनु श्रीराजा जनकजू श्रीराजाधिराज दशरथ महाराज को देतेभये [४] हे भरद्वाज राजा जनक अनेकवस्त्र दायजमें दीन्ह सो कहाँताईं लेखा करिये वह तो अकथनीयहै तेहि समय बिषे जिनदेखा होइ सो जानहिं तौ जानहिं [५] सो बिभूति देखिकै लोकपाल सिहाते हैं सो सब पदार्थ अतिसुख मानिकै दशरथ महाराज लेतेभये [६] तहां सो

सकलरंजाम राजादशरथ याचकनको मन वांछित देतेभये जो उबरेउ सो जनवासे को जातभयो [७] तब राजाजनक संपूर्ण बरातका सन्मान करिकै कर जोरिकै बोलते भये [८] छन्दार्थ ॥ संपूर्ण आदरदान अरु मान विनय पूर्वक बड़ाई ते यथायोग्य सम्पूर्ण बरातिन को सन्मान करिकै परमानन्दते सम्पूर्ण मुनीश्वरनको बन्दत भये अति प्रेमते सबकी पूजाकीन्हि है [१] पुनि जो देवता ब्राह्मणको रूपकिहे मण्डपबिषे श्रीरघुनाथजी के बिवाह देखिबेको आयेहैं ब्रह्मा शिव भगवान् अरु दशौ दिग्पालादिक तिन सबनको सर्वज्ञ राजाजनकजी करजोरिकै शीशनवाइकै बिनय करतेहैं हे देव मैं तुम्हारो सन्मान अरु आदर केहि प्रकारतेकरौं क्योंकि जो समुद्रको एकअंजलि दीजिये तो समुद्रको क्या सन्तोष होतहै तैसेही आपके सन्मान योग्य मैं नहींहौं पर मोको इतना बोध है कि आपु भावग्राहकहौ [२] पुनि बहोरि करजोरिकै राजाकुशध्वज बन्धुसहित कोशलराय सों बिनय करते हैं तब जनकजू प्रेमतेभरे शील स्वभावते सनिकै मनोहर [३] मधुर बचन बोलतेभये हे महाराज आपके सम्बन्धभयेते अबहम सब प्रकारते बड़ाईको प्राप्त भये हे महाराज यह जो मेरो राज्य समाज है उससहित समस्त परिवार समेत मोको अपनो सेवक बिनामोलको जानिये [४] हे महाराज ये जो मेरी चारिउ दारिका कही कन्याहैं तिनको परिचारिका कही टहलुई जानिकै इनको प्रतिपाल करब काहेते आपु सहित पुत्रन करुणामयहौ आपको बिनय करतहौं कि मैंने आपुको बोल इ भेजा है यह बहुत ढिठाई कीन्हहै मेरो सेवकको धर्म तौ यहहै कि कन्यनको लैकै चलिकै श्री अवधमहँ बिवाह करि आवत्यउँ ताते अब इहां बोल इबेको अपराध क्षमाकरब क्योंकि आपु करुणामयहौ [५] तब भानुकुल के भूषण दशरथ महाराज जनकजी के बचनन को रचनाते अति सन्मान बड़ाई आदर समधीको करतेभये तहां हे भरद्वाज द्वौ महाराज भक्त राजनको बिनय प्रीति परस्पर नहीं कहीजाती है प्रेमते पुलक अतिपूर्ण होइ रहेहैं [६] तब वृन्दारका कही देवतनके गण द्वौराजनकी बड़ाई करिकै फूल बर्षते हैं यहि प्रकारते राजा दशरथ महाराज बिदाह्वैकै जनवासे को चलत भये तब नभ अरु नगरमें दुन्दुभी बजीहैं जयध्वनि होतीहै द्वौदिशि आनन्दको कौतूहल भरि रह्यउ है [७] तब त्यहिअवसर बिषे मुनीशकी आयसु पाइकै मंगलगान करत सन्ते दूलह दुलहिनिनको अवलोकत चलीजाती हैं सखी कोहबरको लिवाइ चलीहैं [८] दोहार्थ ॥ कोहबरको दुलहिनि दुलहा चलतसन्ते श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथजी पर मनमें संकोच सहित तेहि संकोचमहँ आनन्द होतजात है किन्तु मन सकुचत है अरु नहीं सकुचत अरु मनमें चैनहै इहां मुग्धा नायकाके अवस्था कही है तहां श्रीरघुनाथ जी को रूप शृंगारसागर तेहि बिषे श्रीजानकीजी के नयन मनोहर मीनह्वैकै कलोल करते हैं काहेते प्रेमके पियासे हैं [१] ॥

३२६ श्याम शरीरसुभायसुहावन। शोभाकोटिमनोजलजावन * १

जावकयुतपदकमलसुहाये *। मुनिमनमधुपरहतजहँछाये * २

पीतपुनीतमनोहरधोती * *। हरतबालरबिदामिनिज्योती ३

कलकिंकिणिकटिसत्रमनोहर। बाहुबिशालबिभूषणसुन्दर ४
पीतजनेउमहाछबिदेई * । करमुद्रिकाचोरिचितलेई * * ५
सोहतब्याहसाजसबसाजे * । उरआयतउरभूषणराजे * * ६
पीतउपरनाकांखासोती * । दुहुँआँचरनलगेमणिमोती * ७
नयनकमलकलकुण्डलकाना । बदनसकलसौन्दर्यनिधाना ८
सुन्दरभृकुटिमनोहरनासा । भालतिलकरुचिरुचिरनिवासा ९
सोहतमौरमनोहरमाथे * । मंगलमयमुक्तामणिगाथे * १०

छं० गाथे महामणि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ॥
पुरनारि सुर सुन्दरी बरहि बिलोकि सब तृण तोरहीं १
मणि बसन भूषणवारि आरतिकरहिं मंगल गावहीं ॥
सुर सुमन बरषहिं सूतमागध बंदि सुयश सुनावहीं २
कोहबरहिंआने कुंवर कुंवरि सुआसिनिन सुखपाइकै ॥
अति प्रीति लौकिक रीतिलागीं करन मंगलगाइकै ३
लहकवरि गौरि सिखाव रामहिं सीयसन शारदकहैं ॥
रनिवास हास बिलास रसवश जन्मको फल सबलहैं ४
निजपाणिमणिमहँ देखिप्रति मूरतिस्वरूप निधानकी ॥
चालतिन भुजवल्ली बिलोकति बिरहवश भइजानकी ५
कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम नजाइकहि जानहिं अलीं ॥
बरकुँवरि सुन्दरिसकलसखीलिवाइ जनवासहिंचलीं ६
तेहिसमयसुनिय असीय जहँतहँ नगरनभ आनँदमहा ॥
चिरजीव जोरी चारुचारौं मुदित मन सबही कहा ७
योगीन्द्र सिद्ध मुनीश देव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ॥
चलेहरषिबरषिप्रसूननिजनिज लोकजयजयजयभनी ८

दो० सहित बधूटिन कुंवर सबतब आयेपितु पास ॥
शोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनवास १

३२६ कैसी श्रीरघुनाथजीको रूपहै श्याम मयूरके कण्ठइव सुभाय अतिशोभित हैं कैसी शोभाहै कोटिन कामके लजावन हारी है (१) जावक कही महाबर संयुत पदकमल अति शोभित जहां मुनिनके मन भ्रमर ह्वैके छाइरहेहैं (२) अरु पीत अति

पुनीत मनको हरनहरी कटिमें धोती पहिरेहैं कैसीधोती है बालसूर्य अरु दामिनीकी ज्योतिको हरतीहै (३) कटिबिषे किंकिणी अरु कटुनी बहु मुनिन के मनको हरती हैं अरु भुजाबिशाल तिनबिषे अतिसुन्दर विभूषण पहिरे हैं (४) अरु पीत यज्ञोपवीत महाछबिको देतहै जनु नीलघनपर बिजुलीकी रेखाथिर ह्वैरही है अरु करबिषे मुद्रिका है सो चित्तकी वृत्तिको चोरावती है (५) व्याहकरसाज सबसाजे अति शोभित हैं अरु उर आयतहै उरके भूषण अति शोभितहैं (६) अरु पीत उपरना कांपासोती डारेहैं तेहिके दूनों अंचरनमें मोती अरु मणिनकी कनीलगी हैं (७) अरु इन्दीनील कमल कछु अरुण श्वेतलिये ऐसे नयनहैं अरु श्रवणविषे प्रकाशमय गोल मणिनकी कणिनते जटित कुण्डलहैं अरु छोटे छोटे मोतीलगेहैं सो कुण्डल अति शोभितहैं जनु पूर्णचन्द्र के दूनोंदिशि मीन नाचिनाचि अमृतपान करतहै अरु बदन सकल सुन्दरताका निधान कही स्थानहै (८) अरु भृकुटी अतिसुन्दरी मैनके धनुषकी छबिको हरतीहैं अरु मनो हर नासिका है अरु भालमें जो तिलकहै सो रुचिराईको निवास है (९) अति सुन्दर शीशपर मनोहर मौर सोहत है अति जगमगाइ रह्यो है जेहिमें मंगलमय मणिमुक्ता गुथेहैं (१०) छन्दार्थ ॥ महामणि कही रंग रंगके अमोल चिन्तामणि मौर बिषे गुथेहैं मंजुलकही निर्मल अंग अंगकी छवि सबके चित चोरावतेहैं पुरकी स्त्री अरु देवतनकी सुन्दरीजेहैं ते सब दूलह दुलहिनिकी सुन्दरताको देखिके तिनुकातोरती हैं जाते दृष्टि नहींलगै किन्तु तृणकहो लाज सो गुरुजननकी लाजतोरिकै दुलहिनिको देखतीहैं[१] मणि अरु मणिनके भूषण अरु बस्त्र इत्यादिक अनेकन निछावरि करिकै मंगलके गीत गावतीहैं अरु देवता फूल बर्षतेहैं अरु सूतमागध बंदीजन ये सब उत्तम यशको गावते अरु सुनावतेहैं[२]सुआसिनी जोहैं सो सुखपाइकै दुलहिनि दुलहाको कोहबरको ल्या वतीभई अति प्रीतिते लोककी रीति सुआसिनी करतीं अरु करावतीं हैं [३] हे भर द्वाज लहकवरि के मंगल समय विषे पार्वतीजी श्रीरामचन्द्रजी को सिखावती हैं हे रघुनन्दनजी जनकनन्दनीजी को दधि मिश्री मिश्रित लहकवरि अपने हाथसों खवावहु तहां श्रीरघुनाथजी मुसुकाइ अरु सकुचाइकै कर नहीं उठावते तब पार्बती अपने करसों श्रीरघुनाथजीको दक्षिणकर धरिकै जानकीजीके मुखचन्द्र विषे खवावती हैं जनु सर्प अपनी मणिको प्रकटकिये शशिके मध्यमें अमृत रसको ग्रहण करतहै अरु अपनी मणिदेतहै ऐसेही तीनिबार कर मुख शोभा पावते हैं पुनि यहीरीतिते शारदा जनकनन्दनीको सिखावती हैं कि रघुनन्दनजीको लहकवरि खिआवो तब जानकीजी अपनो जूठ जानिकै अति संकोचित होती हैं कर नहीं उठावती हैं तब शारदा अपने करते जानकीजीको करधरिकै रघुनन्दनजीको मधुपर्क खिआवती हैं जनुफूली कनक की बल्ली तमाल तरु के फलको चुम्बन करति है तहां यह समय की उपमा अनूप है कबिनके मनमहँ नहीं समाती हैं तेहि मंगल समय बिषे रनिवास अनेकन हास्यरस बिलास करतीहैं अरु हास्यरस संयुक्त यहकहती हैं कि हे रघुनन्दनजी यह लहकवरि खाहु ऐसो स्वाद तुमको कबहूं नहीं प्राप्तिभयो होइगो यद्यपि रानी कौशल्या कैकयी सुमित्राजी के तुम अति प्रियहो तदपि हमारी लड़किनी जनकनन्दनीजी को जूठनि

अति दुर्लभहै है लालजी प्रीति करु तहां यह विचारकरी वदन मूंन कुनि श्रीरघु-नाथजी बार बार मुसुकातेहैं [४] पुनि कहति शारदा करिके जानकीजी की कर रघु नाथजी के खाइबेको मधुपर्क लिबेको पारमें प्राप्तभये तहां कररूपि मणिमय अंगुलिन में आरसी तेहि बिषे पति जो रघुनन्दन शोभा स्वरूप के निधान तिनकर प्रतिबिम्ब आरसी महँ जानकीजी देखिकै मग्न होइगईं अरु जानकीजी के मनमें कछु यह है कि शारदाजी हमारी भुजाको कदाचित उठावें नहीं तहां भुजनकी बही जो अंगुरी हैं सो चलती नहीं थिर है रही हैं काहेते नग में श्रीरामचन्द्रजी को स्वरूप देखिकै बिरहके बशभईं तब श्रीरघुनन्दन जानकीजी की दशा देखिकै आपौ मग्न होइगये तैसेही सब रनिवास समाज संयुक्त विदेह दशाको प्राप्तभया तहां तेहि समय को सुख बिलास मत् कविन को अगोचर है [५] तेहि समय विषे विनोद कही हर्षयुत बिलास परस्पर प्रमोद कही आनन्द कर कौतुक कही आश्चर्य कर्तव्य प्रेम संयुत सो किसू के कहबे योग्य नहीं है संगकी सखी जानती हैं ते सब सखी आनन्द पूर्वक मंगल गानकरत चारिउ सुन्दर दूलह दुलहिन तिनको जनवासे को लिये चलीं हैं (६) तेहि समय बिषे आशीर्वाद अरु जय जयकार ध्वनि नगर अरु नभमें परिपूर्ण ह्वै रही है तहां सुर मुनि यह आशीर्वाद देत भये कि सुन्दर जो चारौं जोरी हैं सो सदा चिरंजीव रहैं [७] योगीन्द्र सिद्ध मुनीश देवता ये सब श्रीरामचन्द्रजीको देखिके दुन्दुभी बजावते भये तब देवता सिद्ध इत्यादिक हर्षित है फूलन बर्षिकै जय जयकार करत अपने अपने लोकन को जात भये [८] दोहार्थ ॥ तब चारिउ कुमारिन संयुत चारिउ कुमार श्रीदशरथ महाराज के पास आये तहां चारिउ भाई शोभा अरु रूप के पूर्ण चन्द्र तिनको आवत देखिकै संपूर्ण जनवास उठत भयो मानों मंगल मोदको समुद्र उमँग्यो है [९] इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकांडेश्रीसीताराम बिबाहउत्सवत्रैलोक्यमंगलवर्णननामचतुष्पंचाशत्तरंगः ५४ ॥

दो० पंचपचाश तरंग में भो बिबाह सुख कन्द ॥
रामचरण लीला करहिं पलपल होत अनन्द ५५

३२७ पुनिजेवनारभईयहिभांती । पठयेजनकबोलाइबराती * १
परतपांवड़ेबसनअनूपा * । सुतनसमेतगवनकियोभूपा * २
सादरसबकेपायँपखारे * । यथायोग्यपीढ़नबैठारे * * ३
धोयेजनकअवधपतिचरणा। शीलसनेहजाइनहिंबरणा * ४
बहुरिरामपदपंकजधोये * । जेहरहृदयकमलमहंगोये * ५
तीनिउभाइरामसमजानी * । धोयेजनकचरणनिजपानी * ६
आसनउचितसबहिंनृपदीन्हें । बोलिसुपकारीसबलीन्हें * ७
सादरपरनलगेपनवारे * * । कनककीलमणिपानसँवारे * ८

दो० सूपोदन सुरभी सरपि सुन्दर　　　दु

३२७ तहांदुलहिनि दुलहाजनवासेको गये जाइके लोकवेदकी रीति करिकै वरवासमें राखिकै सखी जोहैं सो दुलहिनि को मण्डप में लेवाइ गईं तब अनेक प्रकारकी जेवनार भई तब जनक महाराज को बोलाइ पठ्यो (१) अनूप अनूप जे वस्त्र हैं तेपांवड़े कही राहमें परत तिनपर पुत्रन सहित राजा दशरथ चलत भये (२) तब आदर पूर्वक जनक सबकर पाँव धोवत भये अरु यथोचित सबको बैठिबे को देत भये (३) तब जनक दशरथ महाराजकर पाँव धोवत भये तिन जनककर शील औ स्नेह वर्णी नहीं जात है [४] तब श्रीरामचन्द्रजीके चरण कमल धोवत भये कैसे रामचन्द्रजीके चरण कमल हैं जिन्हैं महादेव अपने हृदय कमल महं जैसे रंक धनको छिपावत है तैसेही छिपाये हैं [५] तब राजा जनक विवेकसागर ते तीनिहूं भाइन को श्रीरामसम जानि कै अपने हाथते पादप्रक्षालन करते हैं [६] अरु उचित आसन सबको देत भये पुनि सूपकारी कही रसोई के करनहारनको राजा जनकने बोलाइ लियो [७]तहां आदरपूर्वक पनवारे पड़ने लगे सो हरित मणिन के पत्रहैं अरु सुवर्णकी कीलैं लगीहैं ऐसे पनवारे हैं [८] दोहार्थ। सूपकहो पहिली ओदन कही भात सर्पि कही सुरभी का घृत सो अति सुन्दर कही निर्मल पुनीत कही सबकाल में शुद्ध सुभग है तेहिको सुआर कही रसोई को कर्ता सबके पनवारन पर क्षणमात्र में परुस करते भये काहेते सुआर अनेकन हैं अरु अति चतुर हैं [९] ॥

३२८ पंचकवरकरिजेवनलागे । गारिगानसुनिअतिअनुरागे ＊ १
भांतिअनेकपरेपकवाने ＊ । सुधासरिसनहिंजाहिंबखाने ＊ २
परसन लागसुआरसुजाना । व्यंजनविविधिनामकोजाना ＊ ३
चारिभांतिभोजनबिधिगाई । एकएकबिधिबरणिनजाई ＊ ४
छरसरुचिरव्यंजनबहुजाती । एकएकरसअगणितभांती ＊ ५
जेंवतदेहिंमधुरध्वनिगारी । लैलैनामपुरुषअरुनारी ＊ ＊ ६
समयसुहावनिगारिबिराजा । हंसतराउसुनिसहितसमाजा ७
यहिबिधिसबहींभोजनकीन्हाआदरसहितआचमनलीन्हा ८

दो० देइ पान पूजे जनक दशरथ सहित समाज ॥
जनवासेगमने मुदित सकल भूपशिरताज १

३२८ तब पंचकवर कही पंचवलिभाग करिकै जेवनलगे तहांस्त्री गान विषेगारी देतीहैं सोसुनि सुनि राजा आदिक बरातिनके अति अनुराग होत भयो (१) तहां अनेक भांतिके पकवान अरु भांति भांति की मिठाई जिनके स्वाद सुधाते सरसबखानिबे योग्य

नहीं इन सबन की पाकस होतिहै (२) तहां अनेक प्रकार कही रसोई के करता ते अनेक पाकस करतेहैं तहांअनेक व्यंजन तेहिके नामको जानिसकै (३) तहां चारिप्रकारके भोजन वेद गाते हैं एकते एक अधिक सुंदर जिनका स्वाद बर्णा नहीं जाय चारिप्रकारका भोजन भक्ष्य भोज्य लेह्यचोष्य भक्ष्यकही बुंदिया इत्यादिक जो चावनेमें आवै अरु भोज्य कही पूरी मिठाईदालि भात इत्यादिक अरु लेह्य कही मोहन भोग इत्यादिक चौर चोष्य कही जो चोइकिके खाने में आवै कोई डारकी तरकारी इत्यादिक (४) पुनः छः रस कही खट्टा मिट्ठा चरफरा कटु खार कषाय तहां खट्टा कही खटाई इत्यादिक मीठा कही मिठाई शरबत मेवा इत्यादिक चरफरा कही मिर्च शोंठि इत्यादिक अरु कटु मिरचा इत्यादिक अरु खार कही लोन इत्यादिक अरु कषाय कही बाकठ आँवरा हर्राको अचार इत्यादिक तहां छः रस विषे इन एक जातिके अनेक भेद हैं अति पुनीत अनेक व्यञ्जननकी पाकस होति है (५) तहां बर तिन की जेंवत सन्ते अनेकनस्त्री स्त्री पुरुषके नाम लै लै व्यंग्य संयुक्त जहां जस चाही मधुर ध्वनि से गारी देती हैं (६) सखिन के मुखन की बिवाह के समय की गारी सुनि सुनि बरातिन को अति आनन्द होतहै (७) तहां यहि प्रकार राजा समाज समेत आनन्द पूर्वक भोजन करत भये पुनि राजाजनक के आदर पूर्वक आचमन कही बरातिन प्रति टहलू हाथ विधि विधान ते धोवावत भये (८) दोहार्थ ॥ तब राजाजनक अपने हाथ पुत्रन अरु समाजसहित राजादशरथादि सबनको आदरते सुगन्धमिश्रित पान देते भये विधि विधानते सन्मान करिकै बरात जनवासेको गई (९) ॥

३२९ नितनूतनमंगलपुरमाहीं । निमिषसरिसदिनयामिनिजाहीं १
बड़भोरभूपतिमणिजागे । याचकगुणगणगावनलागे * २
देखिकुवँरसबबधुनसमेता । किमिकहिजातमोदमनजेता * ३
प्रातक्रियाकरिगेगुरुपाहीं । महाप्रमोदप्रेममनमाहीं * ४
करिप्रणामपूजाकरजोरी * । बोलेगिराअमियजनुबोरी * ५
तुम्हरीकृपासुनहुमुनिराजा । भयोआजुममपूरणकाजा * ६
अबसबबिप्रबोलाइगोसाई * । देहुधेनुसबभांतिसुहाई ** ७
सुनिगुरुकरिमहिपालबड़ाई । पुनिपठयेमुनिवृन्दबुलाई * ८
दो० बामदेव अरु देवऋषि बालमीक जाबालि ॥
आयेमुनिबरनिकरतबकौशिकादितपशालि १

३२९ हे गरुड़ यही विधिते नित्य नवीन मङ्गल पुरविषे होतहै परमानन्द मय बराती अरु पुरवासिन को राति दिन निमिष सम जाते हैं (१) तहां बड़े भोरही राजनके मणि राजादशरथ महाराज जागते भये तब अनेक याचक राजा के श्री राम सम्बन्ध परम दिब्य गुणन के गण गावते हैं (२) ऐसेही दिनप्रति चारिउ पुत्रन को बधुन समेत देखते हैं सो आनन्द कहा नहीं जाय (३) तबराजा स्नानादिक प्रातःक्रिया

करिके महा आनन्दभरे वशिष्ठजी के समीप जातभये (४) तहां गुरुन की पूजा करिके प्रणाम कही साष्टांग दण्डवत् कीन्ह पुनि कर जोरिके सुन्दर वचन बोलते भये (५) राजा बोले हे महा मुनीश तुम्हारी कृपाते मेरी संपूर्ण कामना पूर्ण भई (६) ताते हे गोसाईं अब समस्त विप्रनको बोलाइके सबत्सा दुग्ध करिके पूर्ण गौवनको नखशिख हेम मणि पट्टाम्बरनते श्रृङ्गार कराइ मुनीशन को देहु यद्यपि मुनि अचाही हैं तदपि मेरो भाव राखहिंगे [७] यह सुनिके वशिष्ठजी राजाके बड़ाई करत भये धन्य राजन् ऐसे चाहिये [८] दोहार्थ ॥ वशिष्ठके बोलायेते मुनि आवते भये बामदेव और देवर्षि नारदादिक अरु बाल्मीकि अरु याज्ञवल्क्य तहां कौशिकादिक अनेकन मुनि तप केयालि कही स्थान हैं ते सब आवते भये [९] ॥

३३० दंडप्रणामसबहिंनृपकीन्हा। पूजिसप्रेमबरासनदीन्हा ॥ १
चारिलक्षबरधेनुमंगाई ॥ कामसुरभिसमशीलसोहाई २
सबबिधिसकलअलंकृतकीन्हे। मुदितमहीपमहीपनकहँदीन्हे ३
करतविनयबहुबिधिनरनाहू। लहेउँआजुजगजीवनलाहू ॥ ४
पाइअशीषमहीशअनंदे ॥ लियेबोलिपुनियाचकबृन्दे ॥ ५
कनकबसनमणिहयगजस्यंदन। दियेबूझिरुचिरविकुलनंदन ६
चलेपढतगावतगुणगाथा। जयजयजयदिनकरकुलनाथा ७
यहिविधिरामविवाहउछाहू। सकैनबरणिसहसमुखजाहू ८
दो० बार बार कौशिक चरण शीशनाइ कह राउ ॥
यह सब सुख मुनिराज तव कृपा कटाक्ष प्रभाउ १

३३० तब मुनिन को राजा दशरथ अच्छे भावते दण्डप्रणाम कीन्ह पुनि सब मुनीश्वरन को भाव प्रीति ते पूजि के वर कहो श्रेष्ठ आसन देत भये [१] तब राजा दशरथ ने चारिलक्ष बत्सा धेनु मँगाये नित्ययुवा सब प्रकारते शील सुन्दर गुण कामधेनु के समान [२] सबविधिविधानते पट्टसुबर्ण अनेकन रत्नादिकनते अलंकृत करिके मुदित अति हर्ष समेत ऋषिन कहँदेत भये तहां ऋषि तौ विरक्त हैं तिन्होंने गौवनको क्यों लिया तहां श्रीरामचन्द्रके विवाहके उत्सवको प्रसाद जानिके लीन्ह [३] तब नरनाह मुनिन ते अनेक विनयकरत भये कि आजु मैं धन्य अपने जीवन के फलको प्राप्त भयउँ [४] तब सब मुनिन आशीर्बाददीन्ह कि ऐसेआनन्द तुमको सर्व कालमें बनारहै यह आशीर्बाद सुनिके राजा को आनन्दभयो तब मुनि बशिष्ठ जीनेबृन्दके वृन्द याचकन कहँ बोलाय लीन्ह (५) तब वशिष्ठ जीने राजा दशरथको आज्ञा दीन्ह कि इनको मन बाञ्छित दानदेहु तब रघुकुल नन्दन दशरथ महाराज कनक बसन मणि घोड़े हाथी रथ अनेकन मन बाञ्छित सब को देत भये (६) ते सब याचक अनेक अलंकार पहिरे बाहनन पर चढ़े अरु दिनकर कुलनाथ की जय जयकार करत चले (७) यहि प्रकारते

विवाह की उत्साह जो कोटिन शेषकोटिन मुख करिके वर्णा चाहें तो नहीं वर्णि सकैं (८) दोहार्थ। तहां बार बार राजा दशरथ कौशिक मुनिके पद कमल में माथ नवावते हैं अरु कर जोरिकै यह कहते हैं कि यह परम सुख अतिशय सबको दुर्लभ सो आपकी कृपाकटाक्षते लाभ भयो (१)॥

३३४ जनकसनेहशीलकरतूती * । नृप सबभांति सराहविभूती * १

दिनउठिविदाअवधपतिमांगा। राखहिंजनकसहितअनुरागा २

नितनूतनआदरअधिकाई। दिनप्रतिसहसभांतिपहुनाई * ३

नितनवनगरअनन्दउछाहू। दशरथगमनसुहाहिनकाहू * ४

बहुतदिवसबीतेयहिभांती। * जनुसनेहरजुबंधेबराती * * ५

कौशिकशतानन्दतबजाई। कहेउविदेहनृपहिसमुझाई * ६

अबदशरथकहँआयसुदेहू ।यद्यपिछांड़िनसकहुसनेहू * * ७

भलेहिनाथकहिसचिवबोलाये।कहिजयजीवशीशतिननाये८

दो० अवधनाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाउ॥

भये प्रेम बश सचिव सुनि विप्र सभासद राउ १

३३५ जनक शील स्नेह करतूति अरु विभूति राजा दशरथ की अपनी समाज महँ सबरीति सराहत बीतति भई काहेते जनककी योग बलते शील स्नेह अरु श्रीजानकी जीकी प्रेरणाते ऋद्धिसिद्धिन करिकै करतूति अरु विभूति सराहते हैं (१) जब भोरभयो प्रातः क्रिया करिकै ब्राह्मणनकर सम्मान करि वशिष्ठ को पठैकै दशरथ महाराज बिदा माँगते भये तब जनक जी अति अनुराग ते बार बार राखते हैं (२) नित्य नवीन आदर अधिकात जातहै दिनप्रति हज़ार हज़ार की आधिक्यता पहुनाई होति है (३) नगर विषे नित्य नवीन उत्साह होतिहै दशरथ महाराज को बिदाहोन काहूको नहीं सोहात है (४) यहि भांतिते बहुत दिन बीते मानों स्नेहरूपी रसरी में सब बँधिरहे हैं (५) तब कौशिक अरु शतानन्द जाइकै विदेह ते समुझाइकै कहत भये (६) हेराजन् अब दशरथ महाराज को आयसु देहु यद्यपि तुम स्नेह नहीं छांड़ि सकते हौ तदपि अब ऐसै उचितहै [७] तब जनकजी ने कहा कि हे नाथ आपकी आज्ञा माथेपर है तब विश्वामित्र अपनी समाज को आये अरु जनक जी मंत्रिनको बोलावते भये तब तिन जयजीव कही चिरंजीव अरु आप सर्व भुवन के जय कर्ता होहु यहकहिकै राजा को माथ नवावते भये [८] दोहार्थ तब मंत्रिनको जनक जी आज्ञा दीन्ह कि महाराज दशरथ जी बिदाहुआ चाहते हैं ताते तुम महलन में जनाइ देहु अरु सब सरंजाम की तैयारी करहु यह सुनिकै सब मंत्री अरु विप्रनसहित राजा प्रेमते बिकल भये [१]॥

३३६ पुरवासिनसुनिचलीबराता। बूझतबिकलपरस्परबाता * १

सत्यगमनसुनिसबबिलखाने। मनहुसांझसरसिजसकुचाने २

हँजहँआवत बराती * । तहँतहँसीधचलेबहुभांती * ३

...तिभै । भोजनसाजनजायबखाना * ४

* । पठयेजनकअनेकसुआरा * ५

।९४। । सकलसवाँरेनखअरुशीशा ६

। जिनहिंदेखिदिशकुंजरलाजे ७

कनकवस । महिषीधेनुबस्तुविधिनाना ८

दो० दायजअमित न जाय कहि दीन्ह विदेह बहोरि ॥
लोक पति लोक सम्पदा थोरि १

ऽ२ तहां पुरबासी बरातकर चलब सुनिके बिह्वल ह्वैके बूझते परस्पर बात कहत हैं [१] कि निश्चय सुनाहै कि बरात बिदा होति है ते सब अति बिलखाने कही शोच को प्राप्त होतेभये मानहुं संध्या समय विषे कमल सकुचाइ रह्यो है [२] पुनिजहां बराती आवतेके बसहैं तहां तहां जनक जी सीधा अरु अनेक प्रकारके सरंजाम पठावते भये [३] तहां विविध भांतिके मेवा अनेक पक्वान्न भोजन कर साज बखानिबे योग्य नहीं है [४] तहां अनेक गाड़ी बैल कहार भरिभरि चले अरु अनेक सुआर चले तहां लक्ष तुरंग अरु पचीस हज़ार रथ [५] ते संपूर्ण नख शिखलौं कञ्चन मणिन ते सवाँरे हैं जिनहिं देखिके सूर्य के घोड़े अरु देवतनके विमान लज्जित होतेहैं [६] अरु दश हज़ार हाथी साजे जे नख शिखलौं सुवर्ण के शृङ्गार ते सजेहैं जिनके आगे दिशनके कुञ्जर लज्जित होतेहैं [७] अरु सुवर्ण के जरावनके अनेक बस्त्र अरु अनेक खानि खानि की मणि ये सब गाड़िन में भरि भरि पठावते भये अरु अनेक महिषी अरु अनेक गऊ ऐसेही अनेक बस्तु पठावते भये [८] दोहार्थ ॥ हे भरद्वाज बहोरिके जनक जी दायज दीन्ह सो कहा नहीं जाइ जेहिके अवलोकन सन्ते लोकपतिन को अपनी सम्पदा लघु लागती है [१] ॥

ऽ३सबसमाजयहिभांतिबनाई । जनकअवधपुरदीन्हपठाई * १

चलिहिबरातसुनतसबरानी । बिकलमीनगणजिमिलघुपानी २

पुनिपुनिसीयगोदकरिलेहीं । देइअशीशसिखावनदेहीं * ३

होइहौसंततपियहिपियारी । चिरअहिवातअशीशहमारी ४

सासुश्वशुरगुरुसेवाकरेहू । पतिरुखलखिआयसुअनुसरेहू ५

अतिसनेहवशसखीसयानी । नारिधर्मसिखवहिंमृदुबानी ६

सादरसकलकुवँरिसमुझाई * । राननबारबारउरलाई * ७

बहुरिबहुरिभेंटहिंमहतारी । कहहिंबिरंचिरचीकतनारी ८

दो० तेहि अवसर भाइन सहित राम भानु कुल केतु ॥
चले जनक मंदिर मुदित बिदा करावन हेतु १

३३३ यहि प्रकारते सब समाज जनकजीने बनाइकै श्रीअयोध्याजीको पठवाइदीन्ह (१) रानिन सुना कि अब बरात चलिहि यह सुनिकै सब बिकलभई जैसे थोरेजल में मीननके गण बिकलहोइ जातहैं (२) पुनि पुनि श्रीजानकी जीको अरु तीनिहूकुवँरिनको गोदमें लैकै आशीर्बाद दैकै सिखावन देतभई (३) यह आशीर्बाद देत भई कि संतत कहो निरंतर अपने अपने पतिनको पियारी होइहो अरु सदा अहिवात बनारहै यह आशिष हमारीहै (४) अरु सासु श्वशुर गुरुकहो बड़े वशिष्ठादिक इन सबनकै सेवा करेहु अरु पतिकै रुख लखिकै अरु आज्ञापाइकै सेवाकिहेहु (५) सयानी जे सखीहैं अति प्रीतिके वशहोइकै कोमल वाणी ते चारिउ कुवँरिनको स्त्रीन के धर्म सिखावती भई (६) यहि प्रकारते आदर पूर्वक सब कुवँरिनको समुझाइकै रानी बार बार हृदयमें लगावत भई (७) बहुरि कहो फेरि फेरि महतारी मिलतभई अरु यह कहतभई कि ब्रह्मै स्त्रीन कहँ काहेको रचा यह कहिकै पश्चाताप करतभई (८) दोहार्थ ॥ जेहि अवसरमें रनिवास कन्यनको सिखावन देतरही तेहिसमय में भाइन समेत श्रीरामचन्द्र विदाहोवेकेहेतु आवत भये (१) ॥

३३४ चारिउभाइसुभायसुहाये ✻ । नगरनारिनरदेखनधाये ✻ १
कोउकहचलनचहतहैंआजू । कीन्हविदेहबिदाकरसाजू २
लेहुनयनभरिरूपनिहारी ✻ । प्रियपाहुनेभूपसुतचारी ✻ ३
कोजानैकेहिसुकृतसयानी । नयनअतिथिकीन्हेविधिआनी ४
मरणशीलजिमिपावपियूषा । सुरतरुलहैजन्मकरभूखा ५
पावनारकीहरिपदजैसे ✻ । इनकरदरशनहमकहँतैसे ✻ ६
निरखिरामशोभाउरधरहू । निजमनफणिमूरतिमणिकरहू ७
यहिबिधिसबहिंनयनफलदेता । गयेकुवँरसबराजनिकेता ८

दो० रूप सिंधु सब बंधु लखि हरषि उठी रनिवासु ॥
करहिं निछावरि आरती महा मुदित मनमासु १

३३४ सहजही अति सुन्दर चारिउभाई जनकके मन्दिरमें आवतभये तब नगर के नरनारि देखनको धावतभये (१) कोई असकहते हैं कि आजु रघुनाथजी चलाचाहतेहैं राजाजनकै विदाकै तैयारी कीन्हहै (२) ताते शोभाके समुद्र जे रघुनाथजीहैं तिनको स्वरूप नयननभरि देखिलेहु काहेते राजाके चारिउ पुत्र प्रियपाहुनेहैं तातेदेखि लेहु (३) हे सखिहु को जानै कौने सुकृतते विधातै चारिउ भाइनको नेत्रन के अतिथिकहो प्रियकीन्ह है (४) हे सखिहु इनके दर्शन हम कहँ दुर्लभहैं कैसे जैसे मरणशील कहो मृतकस्थान बिषे कोई अमृतको प्राप्त होइ अरु जैसे कोई जन्मकर भूखा

कल्पतरु को प्राप्तहोइ (५) जैसे कोई नरकी कहौ पापी हरिके पदको प्राप्तहोइ हे सखी तैसेही इनके दर्शन हमको हैं (६) ताते श्रीरामचन्द्रकी शोभा निरखिकै उरमें धारण करहु हे सखिहु अपने मन कहँ फणिकरहु रामचन्द्रकी मूर्तिको मणि करहु (७) हे गरुड़ सबको नेत्रनके फल देत चारिउभाई राजमहलको जातभये (८) दोहार्थ॥ तब रूपके समुद्र चारिउ भाइन को देखिकै रनिवास निर्भर हर्षते उठतभईं उठिकै चारिउ भाइनकी अनेकन निछावरि करिकै अति हर्षते आरती करतीहैं (१)॥

३३५ देखिरामछबिअतिअनुरागीं । प्रेमबिवशपुनिपुनिपगलागीं १
रहीनलाजप्रीतिउरछाई * । सहजसनेहबरणिनहिंजाई २
चारिउभाययउबटिअन्हवाये । छरसअशनअतिहेतजेंवाये ३
बोलेरामसुअवसरजानी * । शीलसनेहसकुचमयबानी * ४
ासिधाये । विदाहोनहितहमहिंपठाये * ५
मातुमुदितमनआयसुदेहू * । बालकजानिकरबनितनेहू * ६
सुनतबचनबिलखेउरनिवासू । बोलिनसकहिंप्रेमवशसासू ७
हृदयलगाइकुवँरिसबलीन्हीं । पतिनसौंपिबिनतीअतिकीन्हीं ८
छं० करिबिनयसियरामहिंसमर्पीजोरिकरपुनिपुनिकहै ॥
बलिजाउँतातसुजानतुमकहँविदितगतिसबकीअहै १
परिवारपुरजनमोहिंराजहिं प्राणप्रियसियजानबी॥
तुलसीसुशीलसनेहलखिनिज किंकरीकरिमानबी २
सो० तुम परिपूरण काम जान शिरोमणि भाव प्रिय ॥
जन गुण गाहक राम दोष दलन करुणायतन १

३३५ श्री रामचन्द्रकै छबि देखिकै रानी अति आनन्द को प्राप्त भईं प्रेम के वश ह्वैकै पुनि पुनि श्री रामचन्द्र के पग लागती भईं [१] इहां लाज संकोच चाही तहां लाज संकोच न रह्यो काहेते अति प्रीति उरमें छाय रही है तहां लाज को करै तहां सहज स्नेह नहीं कहाजाय सहज स्नेह कहौ जैसे अग्निके समीप घृत सहजहीं द्रवत है तैसे मुनीश्वर जे हैं तिनके श्री रामचन्द्र कर ध्यान करत सन्ते स्नेहते अश्रुपात होतहैं अरु इहां तौ विद्यमान श्री रघुनाथजी हैं तहां सहज स्नेह स्वाभाविक है [२] पुनि रनिवास धीर्य्य धरिकै चारिउ भाइनके उबटन करतीभईं अगर कपूर केसरि इत्यादिक सुगन्ध करिकै शुचि स्नान करावती भईं पीताम्बर पहिरावती भईं नखते शिख लौं शृंगार करतीभईं परम दिव्य आसन पर बैठारिकै धूप दीप नैवेद्य षटरस चारि प्रकार के भोजन जेंवावती भईं सखी मधुरमधुर गान हास्य रसते परस्पर की बातैं करतीहैं तहां रघुनाथजी बिहँसि बिहँसि पावतेहैं संकोचते उत्तर नहीं देतेहैं [३] श्री रामचन्द्र अँचै कै

पानलैके सुष्ठु अवसर जानिके शील स्नेह सकुच मय वाणी बोलते भये [४] अब महाराज श्री अयोध्या जीको चलाचाहते हैं हमको विदा होवेको आपुको यहां पठायोहै [५] हे मातु अब आनन्दमनतेआज्ञा देहु अरु अपने बालक जानिके स्नेहको न छांड़व[६] ऐसे मधुरप्रीतिमय वचन सुनिके रनिवास बिलखबकही दुःखी होतभयो प्रेमके वश सासु बोलि नहीं सकतीहैं [७] तब चारिउ कुमारन को माता हृदय महँ लगाइके अति प्रीतिते पुनि पुनि कहती हैं चारिउ कन्यन को चारिउ कुमारन को सौंपती भईं [८] छन्दार्थ ॥ तात कही अति प्रिय हे तात मैं तुम्हारी बलिजाउं तुम बड़े सुजान हौ अरु तुमको सब जीवन की गति विदित है [१] हे तात हमारो परिवार अरु परिजन अरु पुरजन राजा अरु मैं सबको श्री जानकी जी प्राणहुते प्रियजानब गोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि श्री सुनयना जी कहती हैं कि हे तात हमार शील स्नेह श्री जानकीजी में जैसो है तैसो आपु जानते हौ तातेमेरी ओरते जानकीको अपनी किंकरी निज करिके जानब अरु इनकी चूक सदा क्षमा करब [२] सोरठार्थ ॥ हे श्री रामचन्द्रजी तुम चारिउ पदार्थ की कामना ते परिपूर्ण हौ चारिउ पदार्थकी कामना औरन को देते हौ अरु जहांतक सुजान हैं त्रिकालज्ञ तिनके शिरोमणि हौ अरु तुमको केवल भावप्रिय है अरु जन जो तुम्हारे दासहैं तिनके गुण को ग्रहण करते हौ अरु अनेकन अवगुणनको देखते नहीं हौ काहेते तुम करुणाके आयतन कहौ स्थान हौ [३] ॥

असकहिरहींचरणगहिरानी । प्रेमपंकजनुगिरासमानी * १
सुनि सनेहसानी बर बानी * । बहुविधिरामसासुसनमानी २
रामबिदामांगेउकरजोरी * * । कीन्हप्रणामबहोरिबहोरी ३
पाइअशीशबहुरिशिरनाई * । भाइनसहितचलेरघुराई * ४
मंजुमधुरमूरतिउरआनी * * । भईंसनेहशिथिलसबरानी ५
पुनिधीरजधरिकुंवरिहँकारी । बारबारभेंटतमहतारी * * ६
पहुंचावहिंपुनिमिलहिंबहोरी । बढ़ीपरस्परप्रीतिनथोरी * ७
पुनिपुनिमिलतसखीबिलगाई । बालबत्सजनुधेनुलवाई * ८

दो० प्रेम बिबश नर नारिसब सखिन सहित रनिवास ॥
मानहु कीन्ह बिदेह पुर करुणा बिरह निवास १

अस कहिकै परम प्रेम संयुक्त रघुनाथ जीके चरणन को गहिरहीं हैं कछु कहि नहीं आवे जनु गिरा जो है वाणी सोई मीन है अरु प्रेम जो है सोई कीच है ताते वाणी मीन रूपी फँसि रही है [१] तब रानीकी रस स्नेह ते सानी बर वाणी सुनिकै श्री रामचन्द्र जी अति प्रसन्न प्रेमते सासुकर बहु प्रकारते सन्मान करते भये [२] तब कर जोरिकै श्री रामचन्द्र बार बार प्रणाम करते भये [३] तब रानी अति हर्ष ते आशीर्वाद देती भईं पुनि श्री रामचन्द्र रानिन को प्रणाम करिकै दशरथ महाराज के

समीप जाते भये [४] तब मञ्जु कही निर्मल मधुर परमानन्द मूर्ति चारिउ भाइन की हृदय में राखिके रानी स्नेहते शिथिल गई [५] पुनि रनिवास धैर्य्य धरिके चारिउ कुमारिनको बोलाइ लीन [६] बोलाइकै जनवासे को पहुंचावती हैं अरु परस्पर बार बार मिलती हैं थोरी प्रीति नहीं है अकथनीय है [७] हे गरुड़ पुनि पुनि कही बार बार छुड़ाय छुड़ाय चारिउ कुंवरि मातन को मिलती हैं तहां यह उपमा है कि अति स्नेही लवाय धेनु बत्सको दौरै अरु बत्स धेनु को दौरै तहां कोई धरि धरि अलगावै [८] दोहार्थ ॥ तहां तेहि समाज में जेते नर नारि रहे सहित रनिवास ते सब प्रेम ते विह्वल हैं तहां तेहि समय में विदेहके पुर विषे मानहु करुणा अरु बिरह ने निवास कियो है तहां करुणा कही परदुःख देखिकै न सहिसकै अरु विरह कही प्रीतम के बिछेप को दुःख सो रहा [१] ॥

३३७ शुकशारिकाजानकीज्याये । कनकपींजरनराखिपढ़ाये १
ब्याकुलकहहिंकहांवैदेही । सुनिधीरजपरिहरैनकेही * २
भयेबिकलखगमृगयहिभांती । मनुजदशाकैसेकहिजाती * ३
बधुसमेतजनकतबआये * * । प्रे लोचनजलछाये * ४
ाकधीरताभागी * । रहेकहावतपरमविरागी * ५
लीन्हलाइउरजनकजानकी * । मिटीमहामर्य्यादज्ञानकी * ६
समुझावतसबसचिवसयाने * । कीन्हविचारनअवसरजाने ७
बारहिंबारसुताउरलाई * * । सजिसुन्दरिपालकीमँगाई * ८
दो० प्रेम विवश परिवार सब जानि सुलगन नरेश ॥
कुवँरि चढ़ाईं पालकिन सुमिरे सिद्ध गणेश १

३३७ श्रीजनकीजी ने शुककही सुव. शारिका कही मैना सो जियाये हैं सोने के पिंजरान में राखि राखि पढ़ाये हैं (१) ते जानकीजी के चलत सन्ते कहतभये कि जानकी कहांहैं वैदेही कहांहैं मैथिली कहांहैं ऐसी विहंगमकी बाणी सुनिकै केहिकर धैर्य नहीं छूटिगयो है तात्पर्य्य सबका धैर्य छूटगयो है (२) जहां श्रीजानकीजी के बिछेपते खग मृग यहिभांति ते बिकलभये तहां मनुष्यनकी दशा कैसे कहीजाइ तिन खग मृगन को राजैं संगही पठायो है (३) तब बन्धु जे कुशध्वज तिन समेत जनकजी आवतेभये तहां रनिवास अरु कन्यन को दशादेखिकै प्रेमके उमंगते लोचनन में जल छाइरहा है (४) यद्यपि जनकजी परम वैराग्य बिषे बड़े धैर्यमान् हैं तदपि तेहिसमय में श्रीजानकीजी को देखिकै धैर्य भागिगया है तहां जो कोईकहै कि जनकजी परमवैराग्य मान्रहे तिनकर कन्याबिषे मोहकरिकै वैराग्य छूटिगयो यह बड़ा आश्चर्य है तहां यह श्रुतिमें प्रमाण है कि श्रीजानकीजी पराभक्तिकी मूर्तिहैं पराभक्ति कही श्रीरामचन्द्र के स्वरूपमें चितकी वृत्ति अखण्डलगी तब परमानन्द बिषे बाह्यांतरकै वृत्ति डूबिगई तहां

ज्ञानवैराग्य योग विज्ञान इत्यादिक यह पराभक्ति के साधन हैं सो जब सिद्धि प्राप्तभई तब सबसाधन छूटिजाते हैं ताते जनकजी की धैर्यता छूटिगई यहीरीति है इहां श्रुति प्रमाणहै) जनकस्यराज्ञः सद्मनिसीतोत्पन्नता.सर्वपरानन्दमूर्तिर्गायन्तिमुनयोपिदेवा .:कारणकार्यभ्यांस्वपरातथैवकारणकार्यैश्चभियंस्याविधाचौगौरी ऋसिवकर्त्रीमेवरामानन्दस्वरूपिणीजनकस्ययोगफलमिवभातिइत्यथर्वणे (५) तहां जानकीजी के देखतसन्ते वैराग्य जातरह्यो जब उरमें लगाइलीन्ह तब जनकजी के ज्ञानकी महामर्याद मिटिगई तहां पराभक्तिको साधन जो वैराग्य सो जातरहत है अरु जो पराभक्तिके प्राप्तिभई तब योग विज्ञान ज्ञान सबलय होइजाते हैं तहां (प्रमाण श्रीभगवद्गीतायां भगवद्वाक्यं) ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मा नशोचतिनकांक्षति ॥ समःसर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिंलभतेपरां (६) जब जनकजीकी विदेहते विदेहदशा मलिन देखा तब सयान जो सचिव हैं सो जनक को समुझावते भये कि हे महाराज अनवसर है अवसर जानिकै धीरयधरहु तब जनकजी बिचारिकै धीरर्य धरतभये (७) तब धैर्य्य धरिकै राजाजनकजी कन्यनको वारवार उर में लगावतेभये पुनि उरमें लगाइकै अतिप्रीतिते सुन्दर अड़ावनते जटित पालकी मँगावतेभये (८)दोहार्थ॥ राजाजनकजी ने सब परिवारको प्रेमके विवशदेखा अरु ब्राह्मणन कहा कि महाराज यहिसाइति लरिकनिन के विदाकरिवे की लग्न अच्छी है यह सुनिकै उठिकै हर्षते श्रीगणेशको सुमिरिकै कन्यनको पालकिनपर चढ़ावतेभये (९)॥

३३९ बहुबिधिभूपसुतासमुझाई। नारिधर्मकुलरीतिसिखाई * १
दासीदासदियेबहुतेरे * * । शुचिसेवकजेप्रियसियकेरे * २
सीयचलतब्याकुलपुरबासी। होहिंशकुनशुभमंगलराशी * ३
भूसुरसचिवसमेतसमाजा * । संगचलेपहुँचावनराजा * * ४
समयबिलोकिबाजनेबाजे * । रथगजबाजिवरातिनसाजे * ५
दशरथविप्रबोलिसबलीन्हे * । दानमानपरिपूरणकीन्हे * ६
चरणसरोजधूरिधरिशीशा * । मुदितमहीपतिपाइअशीशा ७
सुमिरिगजाननकीन्हपयाना । मंगलमूलशकुनभयेनाना * ८
दो० सुर प्रसून बर्षहिं हरषि करहिं अप्सरा गान ॥
चले अवधपति अवधकहँ मुदितबजाइनिशान १

३३९ बहुत प्रकार ते राजा कन्यनको समुझावते भये स्त्रीनके धर्म अरु कुलकी रीति सिखावते भये (१) अरु दासी दास बहुत दये जो पवित्र सेवक श्रीजानकीजीकेहैं ऐसे दासी दास दायज में दिये (२) श्रीजानकीजीके चलत संते पुरबासीलोग प्रेमते ब्याकुलभये परम मंगलकी राशि शुभ शकुन होतेभये (३) भूसुर तत्त्ववेत्ता वेदपरायण ऐसे ब्राह्मणन अरुअपर समाज समेत राजाजनक जी पहुंचाइबे को चले (४) तबसमय बिलोकिकै नानाप्रकारके बाजन बाजतभये अरु रथ गज बाजि जोहैं सोसंपर्ण

बराती सर्वोर्तेभये (५) तहां सम्पूर्ण ब्राह्मणनको दशरथ महाराज बोलाइ लीन्ह दानमान करिकै परिपूर्ण कीन्ह (६) तिन ब्राह्मणनके चरणनकी रज माथेपर धरतेभये तिन ब्राह्मणन आशीर्वाद दीन्ह (७) तब गजानन जो गणेशजी तिनको सुमिरिकै पयन करतभये तहां मंगलके मूल नानाप्रकार के शकुन होतभये (८) दोहार्थ ॥ तब देवता फूल बर्षतेहैं अप्सरा नृत्य गानकरती हैं अति हर्ष संयुक्त श्रीअवधपति श्रीअयोध्याको मुदित कही अति हर्षते निशान बजाइकै चले (१) ॥

३३९ नृपकरिविनयमहाजनफेरे । सादरसकलमाँगनेटेरे * * १
भूषणबसनबाजिगजदीन्हे । प्रेमपोषिठाढ़ेसबकीन्हे * * २
बारबारबिरदावलिभाषी * । चलेसकलरामहिंउरराखी * ३
बहुरिबहुरिकोशलपतिकहहीं । जनकप्रेमवशफिरानचहहीं ४
पुनिकहभूपतिबचनसुहाये । फिरियमहीपदूरिबड़िआये ५
राउबहोरिउतरिभयेठाढ़े * । प्रेमप्रबाहबिलोचनबाढ़े * * ६
तबविदेहबोलेकरजोरी * * । बचनसनेहसुधाजनुबोरी * *७
करौंकवनविधिविनयबड़ाई । महाराजमोहिंदीन्हबड़ाई ८

दो० कोशलपति समधी जनक सनमाने सबभाँति ॥
मिलनपरस्परविनयअतिप्रीतिनहृदयसमाति १

३३९ नृप जो दशरथ महाराजजी सो विनय करिकै महा महाजन तिनको फेरते भये तब आदर पूर्वक सब याचकन को बुलायो तब वे प्रसन्नता सहित आये (१) तब राजा अति हर्षते भूषण बस्त्र घोड़ा हाथी रथ रघुनाथजीकी बख्शीश देत भये ते याचक मोहके बश जाइ नहीं सके तब राजा दशरथ महाराज ने दानमान सन्मान ते याचकनको पोषण करिकै ठाढ़कीन्ह (२) तबते सब याचक माथनाइकै राजा की बिरदावली वर्णत श्रीरामचन्द्र को हृदय में राखिकै चलत भये (३) पुनि कोशलपति बरबार प्रेमते भरे कहते हैं कि हे बिदेहराजन् अब फिरिये परन्तु जनकजी प्रेमकेबशते फिरते नहीं (४) पुनि अवधपति अति सुन्दर वचन बोले हे महीपति अब फिरिये बड़ी दूरि आयेहौ (५) जब राजाजनक नहीं फिरहिं तबदशरथ महाराज रथते उतरिकैठाढ़े भये नेत्रनते प्रेमजलके प्रबाह चले (६) तब विदेह करजोरिकै वचन मानों स्नेहरूपी सुधाते सानिकै बोले (७) तब जनकजी कहते हैं कि हे महाराज आपको अति शोभित यश प्रताप कृपा तेहिकै विनय बड़ाई कहां तक करौं आपने हमको सब प्रकारते बड़ाई दीन्हहै (८) दोहार्थ ॥ हे भरद्वाज कोशलपति कहो दशरथ ने समधी जो जनकजी हैं तिनकर सब प्रकारते सन्मान कीन्ह पुनि परस्पर मिलत भये हृदय बिषे प्रीति उमँगि चली पुनि परस्पर यथार्थ विनय करते हैं (१) ॥

३४० मुनिमंडलिहिजनकशिरनावा । आशिर्वादसबनपावा

सादरपुनिभेंटेउजामाता *। रूपशीलगुणनिधिसबभ्राता २
जोरिपंकरुहपाणिसोहाये। बोलेवचनप्रेमजनुजाये * * *३
रामकरौंकेहिभांतिप्रशंसा। मुनिमहेशमनमानसहंसा * *४
करहिंयोगयोगीजेहिलागी। कोहमोहममतामदत्यागी * ५
व्यापकब्रह्मअलखअबिनाशी। चिदानंदनिर्गुणगुणराशी ६
मनसमेतजेहिजाननबानी। तरकिनसकहिंसकलअनुमानी ७
महिमानिगमनेतिकहिकहहीं। जोतिहुंकालएकरसअहहीं ८
दो० नयन बिषय मोकहँ भयउ सोसमस्तसुख मूल॥
सबहिं सुलभ जग जीव कहँ भये ईश अनुकूल १

३४० तब जनकजी मुनिन की मण्डली को पृथक् पृथक् अति प्रीतिते शिरनावते भये सब मुनि प्रसन्न ह्वैकै आशीर्वाद देतभये (१) पुनि जनकजीने जामाता जो श्रीरामचन्द्र तिनको आदर पूर्वक भेंट कहो मिले कैसेहैं रूपशील अरु गुणनिधि कहो गुणनके समुद्र हैं (२) पुनि जनकजी सुन्दर करकमल जोरिकै वचन बोले कैसो बाणीहै जनु प्रेमके उत्पन्न करिवे को जाय कहो जननो है (३) जनकजी कहते हैं कि हे श्रीरामचन्द्र मैं तुम्हारी केहि भांतिते प्रशंसा करौं तुम कैसेहौ कि मुनीश्वरन अरु महेशकर अन्तःकरण सो मानसर अरु हृदय कमल है तहां तुम हंस हौ (४) जेहिके निमित्त क्रोध मोह ममता मद त्यागिकै योगी योग समाधि करतेहैं ते श्रीरामचन्द्र तुमहौ (५) हेश्रीरामचन्द्र तुमहीं व्यापक ब्रह्म हौ अरु अलख हौ त्रैगुण्य जनित नेत्रादिक इन्द्रियनते अगोचर हौ अबिनाशी कहो नित्य एकरस अखण्ड हौ अरु चिदानन्द कहो सत्चित् आनन्द घनमूर्ति निर्गुण हौ निर्गुण कहो तीनिहूँ गुणन ते परेहौ अरु परमदिव्य गुणकी राशिहौ (६) अरु सत् कविजे हैं ते मन बाणीते नहीं जानि सकतेहैं किन्तु बाणी कहो सरस्वती ते अपने मनते नहीं जानि सकी हैं ते सत्कवि अरु सरस्वती अपने मनबाणीते अनुमान करि तर्कणा नाहीं करि सकत हैं तुम अतर्क्य हौ (७) अरु तुम्हारो महिमाकी मर्य्याद को वेद नेति नेति कहते हैं काहेते जो तीनिहूं कालमें एकरस रहते हैं तातेको कहि सकै (८) दोहार्थ ॥ ऐसे श्रीरामचन्द्र तुम जे ब्रह्मा शिव नारदादिक तिनको दुर्लभ हौ तेरामचन्द्र मेरे नयनन के विषय भये मेरे नयनन बिषे प्राप्त भये पर यहि योग्य मैं नहीं हौं जब आपु अनुग्रह कीन्ह तब मेरो भाग्य समस्त जागि आई तहां का मोरिही म भाग्य जागी है समस्त जीवन की भाग्य जागी है आपु परम अनुकूल भयहु (१)॥

३४१ सबहिभांतिमोहिंदीन्हबड़ाई।निजजनजानिलीन्हअपनाई १
होहिंसहसशतशारदशेशा *। करहिंकल्पभरिकोटिकलेशा * २
मोरभाग्यराउरगुणगाथा *। कहिनसिराहिंसुनहुरघुनाथा * * ३

* * । मनपरिहरैचरणोजनिभा * ५

* । पुरवाकामरामपरितोषे * * ६

वरविनयससुरसनमाने । पितुकौशिकवशिष्ठसमजाने ७

विनतीबहुरिभरतसों । ८

दो० मिले लषण रिपुसूदनहिं दीन्ह असीस महीश ॥
भये परस्परप्रेम वश फिरि फिरि नावहिं शीश १

३४१ जनकजी कहतेहैं कि हे रघुनन्दन आपुमोकहँ आपन जन जानिकै सब प्रकारते बड़ाई दीन्ह अरु अपनाइ लीन्ह (१) हे रघुनाथजी जो शत सहस कही सौहज़ार शारदा शेष होहिं अरु कोटिन कल्पभरि लेखाकरहिं (२) तहां मेरेभाग्य अरु आपके गुणानुवादका दूनोंमिलिकै लेखाकरहिं तो नहीं हे रघुनाथ जी आपके गुण नुवाद अरु मेरा भाग्य शारदहि अरु शेषहि न कहा तो मैं काकहौं (३) परमैं जो कछुकहतहौं सो एकबलते कौनबल है कि तुम थोरेस्नेहते रीझतेहौ (४) अब हे श्रीरामचन्द्र कर जोरिकै बारबार यहै बरमांगतहौं कि मोरमन तुम्हारे चरणनको भौरेकही धोखेहु न छांड़ै सर्वकालमें एक रस बनारहै (५) तहां जनकजी के वरबचन सुनिकै श्रीरामचन्द्रको प्रेमकरिकै परिपोषण होतभयो यद्यपि श्रीरामचन्द्रकामना करिकै परितोषैहैं तदपि बिदेहयोगेश्वर के प्रेमते अति परितोष न होतभयो किन्तुप्रेमभरे बिदेहके बचन सुनिकै परितोष करतेभये पुनि श्रीरामचन्द्र पूर्ण कामकरिकै जनकको परिपूर्ण करतेभये (६) तब श्रीरामचन्द्र वर बिनय करिकै जनकजीको दशरथ विश्वामित्र वशिष्ठजीको समजानिकै सन्मान करतेभये (७) बहुरि जनकजी भरत जीकै बिनय करिकै प्रेम समेत मिलिकै आशीर्वाद देतेभये (८) दोहार्थ ॥ पुनि राजा लक्ष्मण शत्रुहन को मिलिकै आशीर्वाद देतेभये पुनि परस्पर प्रेमके बश बारबार शीश नवावतेहैं काहेते दोऊ दिशि रामानन्यहैं तदपि भरत शत्रुहन बड़े जानिकै अधिकनम्र होते हैं (१) ॥

३४२ बारबारकरिविनयबड़ाई * * । रघुबरचलेसंगसबभाई * १

जनकगहे कौशिक पदजाई । चरणरेणुशिरनयननलाई २

सुनियमुनीशदरशफलतोरे । अगमनकछुप्रतीतिसनमोरे * ३

जोसुखसुयशलोकपतिचहहीं । करतमनोरथसकुचतअहहीं ४

सोसुखसुयशसुलभमोहिंस्वामी । सबसिधितवदरशनअनुगामी ५

कीन्हविनयपुनिपुनिशिरनाई । फिरेमहीशआशिषापाई ६

चलीबरातनिशानबजाई * । मुदितछोटबड़सबसमुदाई * ७

रामहिं   मिथिनारी । धायनयनकलहोहिंदुखारी *८

दो० बीच बीच बर बास करि मग लोगन सुख देत ॥
अवध समीप पुनीत दिन पहुँची आइ जनेत १

३४२ बारबार श्रीरामचन्द्र जनकजीकी बड़ाई करिकै भाइन संयुक्त चलतभये (१) तब जनकजी विश्वामित्रके पदगहिकै चरणरेणु नेत्र अरु उरमें लगावत भये (२) हे मुनीश तुम्हारे दर्शनते कोईफल अगम नहीं है सब सुगमहै यह मेरेमन में प्रीति है (३) जोनेसुखको लोकपाल चाहना करत हैं तेऊ सुखकर मनोरथ करत-ने संकोच करतेहैं कि वह परमानन्द सुखरूपको दुर्लभहै यहके अधिकारी अबहीं हमनहीं हैं (४) हे स्व भी संसुख अरु सुयश सुभ अनुगामीको केवल तुम्हारे दर्शन सुलभहै (५) राजा विश्वामित्र की पुनिपुनि विनय करतेहैं अरु चरणानमें शीशन-वतेहैं तब विश्वामित्र अति प्रेमते आशीर्वाद देतभये राजाफिरत भये (६) तबनि-शान बजाइ कै परम मुदित छोटेबड़े सब बराती चलतभये (७) जे नरनारि तेहिस-मयमें ठाढ़ेहैं ते सब श्रीरामचन्द्रको स्वरूप निरखिकै नयननकर फलपाइकै मूर्ति हृदय राखिकै चित्रवत् रहिगये बरात हर्षकै चलतभई (८) दोहार्थ ॥ जहां जहां बराती आवतकै टिकैहैं तहां तहां सुन्दरबास करत मगमें लोगनको सुखदेत अति पुनीतयोग दिन प्राप्त अयोध्याके समीप जनेत कहौ बरात पहुंची आइ पौषसुदी दशमीको मिलत जावत संते पहरदिन बीति गयो तब जनकपुरते बरात बिदाभई अरु तेहीपौषसुदी पूर्णमासी को अवधके समीप बरात प्राप्त भई पुनि माघवदी द्वितीया को श्रीरघुनाथ जीने मन्दिरमें प्रवेश कियोहै (१) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने बालकांडेजनकपुरनिवासपुनिपरस्पर मिलाप बरात श्रीअयोध्या गमनप्राप्तवर्णनोनामचतु:-पंचाशत्तमस्तरंग: ॥ ५४ ॥

पच पचासतरंगमें चालबरात सुखसार ।
रामचरणपद्मिमनचलीमनभृंगगकीधार ५५ ॥

३ हनेनिसानपनावबाजे । भेरिशंखध्वनिहयगजगाजे १
झांझबीणादुन्दुभीसुहाई * । सरसरागबाजहिंसहनाई * २
पुरजनआवतअकनिबराता । मुदितसकलपुलकावलिगाता ३
निजनिजसुन्दरसदनसँवारे * । हाटबाटचौहटपुरद्वारे * * ४
गलीसकलअरगजासिंचाई * । जहँतहँचौकेंचारुपुराई * ५
बनोबजारनजाइबखाना * । तोरणकेतुपताकबिताना * ६
सफलपूगिफलकदलिरसाला । रोपेबकुलकदम्बतमाला * ७
लगेसुभगतरुपरसतधरणी । मणिमयआलबालकलकरणी ८

बिबिध भांति

जब बराती श्रीअयोध्या के निकट पहुँचे तब निशान हने अरु पणवकहे ढोलैं बाजीं अरु भेरी बाजत भई अरु शंखध्वनि होत भई अरु हाथी घोड़ा गाड़ी भये (१) झांझ भेरी सहनाई इत्यादिक सुष्टु रागते अति शोभित बाजतेहैं एक अरु दुइ अंकको इन दूनों चौपाइन में भेरी कहा है तहां पुनरुक्ति न जानब कहे ते समाज दुइहैं (२) तहां पुरके संपूर्ण नरनारिन श्रवनन कहो सुना कि बरात आई तब सब मुदित भये अरु मुदित कहो अंग अंग पुलकि आयो है (३) आपन आपन सुंदर सदन सँवारत भये हाट कहो बाज़ार बाट कहो गली चौहट कहो चौमुखी बाज़ारको मध्य चौक अरु पुरके द्वार अरु आपन आपन द्वार अच्छे प्रकार ते सँवारत भये (४) अरु संपूर्ण गली अर्गजा इत्यादिक सुगन्धनते सिंचावते भये अरु चारु कहो सुन्दर चौकें पुरावते भये (५) पुनि बाज़ारैं अति सुन्दर बनीहैं बखानिबे योग्य नहीं हैं अरु जहां जहां जस चाही तोरण कहो बंदनवार अरु केतु पृथक् पृथक् अरु केतु इत्यादिक नवग्रह अरु पताका कहो छोटी छोटी झण्डी जरावनते जटित अरु बितान कहो मांड़वन यहँ सब बिचित्र रचना गृह गृह प्रति बिशेष होत भई (६) अरु फल संयुक्त सुपारी आम्र केला अरु बकुल कहो मौरसिरी कदम्ब तमाल इत्यादिक जहां जस चाही तहां तस रोपत भये (७) ते सुभग तरु फल फूल संयुक्त धरणी को परसते हैं अरु तिनके आल बाल कहो थाला मणिन मय बनेहैं अरु कल कहो सुन्दर पल्लव फल फूल करिकै शोभितहैं कल करणी कहो सबको आनन्द देतेहैं (८) दोहार्थ॥ तहां बिबिध भांतिके मंगलमय अरु हेम मणि मोतिनते रचित कलश गृह गृह बिषे सँवारत भये तहां पुरवासी जो इच्छा करते हैं सो रामचन्द्रकी कृपाते हाथ स्पर्शकरत सिद्धि ह्वैजात है तहां रघुवर की पुरी जो बनी है तेहिको देखिकै ब्रह्मादिक देवता सिहाते हैं (९)॥

भूपभवनतेहिअवसरसोहा *। रचनादेखिमदनमनमोहा १
हैं *। श्री
जनुउछाहसबसहजसुहाये *। तनुधरिधरिदशरथगृहआये ३
हेतुरामबैदेही * * *। कहहुलालसाहोइनकेही * ४
सुथसुथमिलिचलींसुआसिनि। निजछबिनिदरहिंमदनबिलासिनि५
सकलसुमंगलसजेआरती *। गावहिंजनुबहु　　　* ६
भूपतिभवनकुलाहलहोई *। जाइनबर
कौशल्यादिराममहतारी *। प्रेमबिबशतनुदशाबिसारी ८
दो० दिये दान बिप्रन बहुरि पूजि गणेश पुरारि॥

प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि १

॥३४४॥ हे पार्वती तेहि अवसर में भूपके भवन की शोभा देखिके काम मोहित ह्वै जात है (१) मंगलके सगुन जेहैं मनोहर अरु ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पदा जेहैं सुंदर [२] ते सब अरु जेते उत्साह उत्तम उत्तम हैं ते जनु सुंदर देह धरि धरि अपने सुख हेतु दशरथ के भवन को आवते भये [३] तहां तेहि अवसर में श्रीराम वैदेही के देखिबे हेतु ब्रह्मांड मंडल में ऐसो को है जेहिको देखिबेकी लालसा नहीं है सब के देखिबे की लालसा है ताते सब मूर्तिमान् ह्वै ह्वै साक्षात् देखिबेके हेतु आये हैं तहां यहि चारि अंककी चौपाई तेहिके भावते पाछे जो तीनि अंक की चौपाई है तेहि में जो जनुपद की उत्प्रेक्षा है तेहिकर निषेध होतहै यह गोसाईं के काव्यकी रचना इहां जानिबे को अति सूक्ष्म है [४] तहां राजमंदिर में यूथ यूथ सुवासिनी आवती भई कैसी सुवासिनी हैं जे अपनी छविके आगे मदन विलासिनि जो रति है ताको निदरती हैं [५] आरती इत्यादिक संपूर्ण मंगलके साज सजेहैं अरु जनु बहु वेष बनाइकै भारती कही सरस्वती गान करती हैं [६] तहां भूपतिके भवनमें कोलाहल कही मंगलमय शोर ह्वै रहा है तेहि समय कर सुख बर्णिबे योग्य नहीं है [७] कौशल्यादिक जो श्रीरामचन्द्र की माता हैं सो प्रेमके बिवश तनु की दशा भूलिगई [८] दोहार्थ ॥ अरु रानी गणेश महेश पार्वती को पूजिके विप्रन काहँ मन बांछित दान देत भई पुनि कैसो आनन्द भयोहै जैसे परम दरिद्री चारिउ पदार्थन को पावै [१] ॥

३४५ प्रेमप्रमोदबिबशसबमाता । चलहिंनचरणशिथिलभयगाता १
रामदरशहितअतिअनुरागीं । परछनसाजसजनसबलागीं २
बिबिधबिधानबाजनेबाजे । मंगलमुदितसुमित्रासाजे * * ३
हरददूबदधिपल्लवफूला * । पानपूंगिफलमंगलमूला * ४
अक्षतअंकुररोचनलाजा * । मंजुमंजरीतुलसिबिराजा * *५
छुहेपुरटघटसहजसुहाये * । मदनशकुनजनुनीड़बनाये * ६
सगुनसुगंधनजाइबखानी * । मंगलसकलसजहिंसबरानी ७
रचीआरतीबिबिधबिधाना । मुदितकरहिंकलमंगलगाना ८
दो० कनकथार भरिमंगलनि कर कमलन लियमात ॥
चलींमुदित परछनकरन पुलक प्रफुल्लितगात १

३४५ तहां प्रेमानन्द के बश सब मातनकेगात शिथिल ह्वै गयेहैं चरण नहीं चलि सकतेहैं (१) श्रीरामचन्द्रके दर्शनके हेतु अति अनुरागते परछन के साज साजती हैं (२) तहां बिबिध विधानके बाजन बाजनेलगे अति मुदित समेत सुमित्राजी मंगलसाजतीहैं (३) हर्दी दूब दधि ललित पल्लव फूल पान पूंगीफल सब मंगलकेमूल (४) अक्षत अरु अंकुर मूंगयव इत्यादिक रोचनकही रोरी किन्तु गोरोचन तिलकलाजाकही

लावा अरु मंजु कही कोमल मंजरी संयुक्त तुलसीदल (५) अरु सुवर्णके कलश छुहित कहीं रँगतीभई अतिसुन्दर मोतिन मणिनकी चित्रविचित्र कनी जमाइदीन्ह सोकलश मानों मदनरूपी पक्षीने नीड़कही आपनघर बनायोहै (६) अरु अनेक सुगन्ध सगुनमयसो बखानिबेमें नहीं आवैं यहिप्रकार के जो मंगलसजेहैं सो रानीसजत भई (७) तहां अनेक प्रकारते आरती रचिकै मुदितह्वैकै कलकही सुन्दरगान करतीहैं (८) कंचनके थारनमें मंगलमय पदार्थ अरु करकमलनमें मालालिहेहैं मुदित प्रफुल्लित माता पुलकावलीते परछनके हेतुचलीं (९)॥

३४६ धूपधूमनभमेचकभयऊ । आवणघनघमंडजनुदयऊ * १
सुरतरुसुमनमालसुरवर्षहिं । मनहुंबलाकअवलिमनकर्षहिं २
मंजुलमणिमयबंदनवारे * । मनहुपाकरिपुचापसँवारे * ३
प्रकटहिं दुरहिंअटनपरभामिनि। चारुचपलजनु दमकहिंदामिनि४
दुन्दुभिध्वनिघनगरजहिंघोरा । याचकचातकदादुरमोरा * ५
सुरसुगंधशुचिबर्षहिंवारी । सुखीसकललशिपुरनरनारी * ६
समयजानिगुरुआयसुदीन्हा। पुरप्रवेशरघुकुलमणिकीन्हा ७
सुमिरिशंभुगिरिजागणराजा । मुदितमहीपतिसहितसमाजा ८

दो० होहिं शकुन बर्षहिं सुमन सुर दुन्दुभी बजाइ ॥
बिबुध बधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ १

३४६ तहां धूपके धुवांकरिकै नभविषे श्यामता छायरहीहै मानों आवणके घन घमण्ड करिकै शोभितहैं (१) तहां सुरतरुके श्वेत फूलनके मालके माल देवता बर्षतेहैं सोई मानहुं बकुलनकी पँाति शोभितहै मनको आकर्षण करतिहै (२) पुनिराजमन्दिरविषे मंजुलकही निर्मल मुक्तामणिन के बन्दनवार जो शोभितहैं सो जनु पाकरिपु जो इन्द्रहै तेहिको चापकही धनुष उदयभयो है (३) अरु महलनपर स्त्रीजोहैं ते प्रकटतीं और दुरतीहैं ते चपल जनुदामिनि दमकती हैं (४) अरु दुन्दुभी इत्यादिक की ध्वनिजोहै सो जनु मधुरमेघ गर्जतेहैं अरु याचक जेहैं जयजयकार करिरहेहैं ते जनु चातक मोरहैं (५) अरु देवता अतर इत्यादिक सुगन्ध छिरकतेहैं सोई मानों मेघवर्षतेहैं अरु पुरके नरनारि सोई शस्यकही धान इत्यादिक हैं सो अति सुखीहोतेहैं (६) ऐसी शोभा मंगल पुरीमें छायरहीहै जब सुन्दर समय जानिकै वशिष्ठने आज्ञादीन्ह तब रघुकुल मणि राजा दशरथने पुरमें प्रवेशकीन्ह है (७) तहां सहित समाज मुदितमन शिव पार्वती अरु गणेशजी को सुमिरिकै चलेहैं (८) दोहार्थ॥ तेहि समयविषे मंगलमय सगुन होते हैं देवता फूल वर्षते हैं अरु दुन्दुभी बजावते हैं अरु अप्सरा किन्नरी मंगलमय नृत्यगान करतीहैं (९)॥

३४७ मागधसूतबंदिनटनागर । गावहिंयशतिहुंलोकउजागर १

जयध्वनिबिमलबेदबरबानी। दशदिशिसुनियसुमंगलखानी २
बिपुलबाजनेबाजनलागे ❋ ❋ । नभसुरनगरलोगअनुरागे ❋ ३
बनेबरातीबरणिनजाहीं ❋ । महामुदितमनसुखनसमाहीं ४
पुरबासीतबराउजुहारे ❋ ❋ । देखतरामहिंभयेसुखारे ❋ ❋ ५
करहिंनिछावरिमणिगणचीरा। बारिबिलोचनपुलकशरीरा ६
आरतिकरहिंमुदितपुरनारी । हर्षहिंनिरखिकुंवरबरचारी ७
शिबिकासुभगवहारउघारी। देखिदुलहिनिनहोहिंसुखारी ८

दो० यहि बिधि सबहिन देत सुख आये राजदुवार ॥
मुदित मातु परछन करहिं बधुन समेत कुमार १

३४७ मागध सूत वन्दीजन नटजे हैं नागरकाही प्रवीण ते सब दशरथ महाराजको यश तीनिहूं लोकमें उजागर सो गावते हैं (१) तहां जयजय ध्वनि अरु वेदध्वनि दशहू दिशामें सुमंगलकी खानि राजा सुनतेहैं (२) अरु विपुल बाजने बाजते हैं नभ विषे देवता अरु नगरके लोग ते सबअति अनुरागेहैं (३) अरु बराती सबबना-वते बनिरहेहैं वर्णे नहीं जातेहैं महामुदितते सुखनहीं समात हैं (४) पुरवासी जेहैं ते राजाको जोहारतभये अरु श्रीरामचन्द्रको देखिकै सुखीभये (५) मणि अरु वस्त्र इत्यादिक अनेकन पदार्थनको निछावरि करतेहैं अरु शरीर पुलकित आयोहै अरु लोचननमें जलभरि आयोहै (६) पुनि जे स्त्रीहैं ते मुदित ह्वैकै आरती करतीहैं चारोंकुंवर जे दूलह हैं तिनको निरखिकै हर्षित होतभईं (७) शिविका जो पालकी त्याहिकर पड़दा उघारिकै दुलहिनिनको देखिकै सुखीहोतीभईं (८) दोहार्थ ॥ यहिप्रकारते सबको सुखदेत संते राजद्वारको आये बधुनसहित चारोंकुमारनको मुदितह्वैकै माता परछनकरतीहैं १॥

३४८ करहिंआरतीबारहिंबारा ❋ । प्रेमप्रमोदकहैकोपारा ❋ १
भूषणमणिपटनानाजाती । करहिंनिछावरिअगणितभाँती २
बधुनसमेतदेखिसुतचारी ❋ । परमानन्दमगनमहतारी ❋ ❋ ३
पुनिपुनिसियारामछबिदेखी । मुदितसफलजगजीवनलेखी ४
सखीसीयमुखपुनिपुनिचाही । गानकरहिंनिजसुकृतसराही ५
बर्षहिंसुमनछणहिंछणदेवा । नाचहिंगावहिंलावहिंसेवा ६
देखिमनोहरचारिउजोरी ❋ । शारदउपमासकलढँढोरी ❋ ७
देतनबनैंनिपटलघुलागी ❋ । यकटकरहीरूपअनुरागी ❋ ८

दो० निगमनीति कुलरीति करि अर्घ्य पांवड़े देत ॥
बधुनसहितसुत परछिसब चलीं लेवाइ निकेत १

३४८ माता जेहैं ते बारबार आरती करतीहैं तेहिसमय प्रेमकरिकै जो प्रमोद भयोहै सोको कहिसकै (१) नानाजाति के अनेकपट अरु भूषणनकी निछावरि अनेक भांतिते करतीहैं (२) तहां बधुन समेत चारों पुत्रनको देखिकै सब माता परमानन्दते मग्नहैं (३) पुनिपुनि सीताराम की छबि देखिकै अति मुदित ते यहि जगत् में अपने जन्मको फल धन्य मानतीहैं (४) सखीजे हैं ते श्रीजानकीजी को अति चाहते मुख देखती हैं अरु अपने सुकृत सराहि सराहि मंगलगान करती हैं (५) अरु तहां तहां देवता फूलनकी बर्षा करतेहैं अरु नाचते गावते हैं अपनीसेवा जनावते हैं (६) तहां शारदा आपु अरु जो कविनकीरसनामें शारदा सो चारिउ मनोहर जोरी देखिकै ब्रह्मांड भरेमें उपमा ढँढोरीकही ढूंढ़तीभई (७) तहां सब उपमाओं को लघु जानिकै उपमा देत न बनै तब एकटक चारिउ भाइनको रूप निहारिकै रहिगई (८) दोहार्थ ॥ तब बशिष्ठजी करिकै निगमनीति अरु कुलरीति लोकरीति अतिहर्षते करिकै अर्घ्यदेत दिब्य बसन के पांवड़ेपरत बधुन समेत चारिउपुत्रनकै परछन करिकै सब माता निकेत कहो मंदिर को लेवाइ ले चलीं (९) ॥

तनमरुजनुहाय । जनुसमाजोनजहा

रघुबरकुंवरबैठारे * * । सादरपाँयपुनीतपखारे * २

* * । पूजेबरदुलहिनिमंगलनिधि ३

बारहिंबारआरतीकरहीं * । व्यजनचारुचामरशिरढुरहीं * ४

बस्तुअनेकनिछावरिहोहीं * । भरींप्रमोदमातुसबसोहीं * ५

पावापरमतत्त्वजनुयोगी * । अमियलह्यउजनुसंततरोगी ६

जन्मरंकजनुपारसपावा * । अंधहिलोचनलाभसुहावा * ७

मूकबदनजनुशारदछाई ** । मानहुंसमरशूरजयपाई * * ८

दो० यहि सुखते शत कोटि गुण पावहिं मातु अनन्द ॥
भाइन सहित बिवाहि घर आये रघुकुल चन्द १
लोकरीति जननी करहिं बर दुलहिनि सकुचाहिं ॥
मोद बिनोद बिलोकि बड़ रामसनहिं मुसुकाहिं २

३४९ तब चारिउकुंवर मंदिरको आवतभये तहां चारिसिंहासन सहजहीशोभा-यमान मानहुं मनोज अपने हाथन रघुनाथजीके हेतु बनावतभयो[१]तेहि सिंहासनपर चारिउकुंवर कुंवरिनको बैठाइकरि आदरते पुनीत पायँ पखारत भये [२] बेदविधिते धूपदीप नैबेद्य करिकै मंगलकेनिधि जेबर दुलहिनि तिनको पूजत भये [३] बारहिबार आरती करतीहैं अरु ब्यजन सुन्दर चमर शिरपरढुरतहैं सेवकलिहेहैं [४] अरु अनेकन बस्तुनकी निछावरि होतिहै तहां सबमाता प्रमोदभरी अति सोहती हैं [५] जैसे परम

सत्य कहूँ योगीपावे मानहुं संततकही निरंतरका कोईरोगी अमृतकोपावे [६] मानहुं जन्मको दरिद्री पारसपावै मानहुं आंधर नेत्रपावे [७] मानहुं गूंगा वाणीपावे मानहुं रणमें शूरजीतिपावे [८] दोहार्थ ॥ यहसुख जो कहिआये हैं तेहिते सौकोटिगुण सुख माता पावती हैं हेभरद्वाज रघुकुलचन्द्र जेश्रीरामचन्द्र हैं तेभाइन सहित ब्याहिकैघरको आये [१] पुनः दोहार्थ ॥ तहां लोकरीति जो माता करती हैं तबवर दुलहिनिसंकोचकर तेहैं तेहिसमयमें मोदकैविनोद कहो लीलातेहिको देखिकै श्रीरामचन्द्रबहुतमुसकातभयेश॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेविवाहपरमउत्सवत्रैलोक्यमंगलकारीअयोध्याप्राप्तिवर्णनन्नामपंचपंचाशतमस्तरंगः ॥ ५५ ॥

दो० षट्पंचास तरंग में नृपपूजन द्विज भूरि ॥
रामचरण दैदानबहु बंदि चरणसुखमूर ५६

३५० देवपितरपूजेबिधिनीके * । पूजेसकलबासनाजीके * १
सबहिबंदिमांगहिंबरदाना * । भाइनसहितरामकल्याना * २
अंतरहितसुरआशिषदेहीं * । मुदितमातुअंचलभरिलेहीं * ३
भूपतिबोलिबरातिनलीन्हा । यानबसनमणिभूषणदीन्हा ४
आयसुपाइराखिउररामहिं । मुदितगयेसबनिजनिजधामहिं ५
पुरनरनारिसकलपहिराये * । घरघरबाजनलागबधाये * ६
याचकजनयाचहिंजोइजोई । प्रमुदितराउदेहिंसोइसोई * ७
सेवकसकलबजनियांनाना * । पूरणकीन्हदानसनमाना ८
दो० देहिं अशीश जोहारि सब गावहिं गुण गण गाथ ॥
तब सुर भूसुर सहित गृह गमन कीन्ह नरनाथ १

३५० नानाप्रकारके विविध विधानते देवता अरु पितरन की पूजा कीन्ह अपने जीवकी जेती बासना रही तेतीपूजाकीन्ह (१) सब माता मिलि कै सब देवतन कहँ पूजिकै करजोरिकै मांगती हैं हे देवतहु भाइन बधुन संयुक्त श्रीरामचन्द्रकर कल्याण होइ (२) तब अन्तर्हित देवता आशीर्वाद देतेभये सोआशीर्वाद माता अंचलपसारिकै लैलेत भई (३) तब भूपति बरातिनको बोलाइकै रथ घोड़ा हाथी बस्तु देत भये (४) ते बराती राजा कै आज्ञा पाइकै अपने अपने धामको जातभये (५) पुनि दशरथ महाराजने पुरके नर नारिन को मनवांछित पहिरावनि दीन्ह अरु घर घर बधाई बाजत भई (६) अरु याचक लोग जो जो मांगते हैं राजामुदित मनते सोई सोई तिनको देते हैं (७) सकल सेवक अरु अनेकन बजनियां तिनकादानमान करिकै मनोरथ पूर्ण कीन्ह (८) दोहार्थ ॥ ते संपूर्ण पुरबासी जोहारि जोहारि आशीर्वाद देते हैं तब बशिष्ठ अरु ब्राह्मणन संयुक्त दूसरे मन्दिर को नर नाथ नेगमन कीन्ह (१) ॥

१ जोबशिष्टअनुशासनदीन्हा। लोकबेदबिधिसादरकीन्हा १

* * । सादरउठींभाग्यबड़जा * २

३

* * । * ४

बिधिकीन्हगाधिसुतपूजा। नाथमोहिंसमधन्यनदूजा * ५

कीन्हप्रशंसाभूपतिभूरी * *। रानिनसहितलीन्हपगधूरी ६

भीतरभवनदीन्हबरबासू * *। मनजोगवतरहनृपरनिवासू ७

पूजेगुरुपदकमलबहोरी * *। कीन्हबिनयउरप्रीतिनथोरी ८

दो० बधुन समेत कुमार सब रानिन सहित महीश॥
पुनि पुनि बंदत गुरुचरण देत अशीश मुनीश १

३५१ जो वशिष्ठ आज्ञा देतेहैं सो वेदविधिते ब्राह्मण करावते हैं माता सबकरती हैं (१) जब ब्राह्मणान की भीर सब रानिन देखी तब आपन बड़भाग्य जानि कै आदरते उठीं (२) सब रनिवास ब्राह्मणन के चरण धोइकै स्नान करावत भई तब सुन्दर वस्त्र देती भई सुन्दर आसनपर बैठाइकै धूपदीप करिकै सुन्दर पक्वान्न जेंवावत भई (३) पुनि जेंवाइकै अनेक दक्षिणा दीन्ह आदर करिकै पोषण कीन्ह तब ब्राह्मणान आशीर्बाद दीन्ह रानिनको संतोष भयो (४) पुनि रानी राजाने मिलिकै बिश्वामित्र कै पूजा कीन्ह सब प्रकारते हाथ जोरि कै कहते हैं कि हेनाथ आजु हमारी समान धन्य कोई नहींहै (५) तहां बिश्वामित्रकै प्रशंसा भूपति ने बहुत कीन्ह पुनि रानिन संयुक्त पगकी धूरि माथेपर चढ़ाई (६) विश्वामित्र को समाज संयुक्त भवन के भीतर वासदीन्ह अरु राजा रानी विश्वामित्र के मनको जोगवते हैं (७) पुनि बिविध बिधान अरु अति प्रीतिते गुरु वशिष्ठकै पूजा अरु बिनय कीन्ह [८] दोहार्थ॥ चारिउ कुमार वधुन संयुक्त अरु रानिन सहित राजा पुनि पुनि गुरुन के चरणारबिन्द बन्दत हैं अरु मुनि आशीर्बाद देते हैं [१]॥

३५२ बिनयकीन्हउरअतिअनुरागे। सुतसम्पदाराखिगुरुआगे १

नेगमांगिमुनिनायकलीन्हा। आशिर्बादबहुतबिधिदीन्हा २

उरधरिरामहिंसीयसमेता *। हरषिकीन्हगुरुगमननिकेता ३

बिप्रबधूसबभूपबोलाये * *। चीरचारुभूषणपहिराये * ४

बहुरिबोलायसुबासिनलीन्ही। रुचिबिचारिपहिरावरिदीन्ही ५

नेगीनेगयोगसबलेहीं * *। रुचिअनुरूपभूपसबदेहीं * ६

प्रियपाहुनेपूज्यजेजाने *। भूपतिभलीभांतिसनमाने ** ७

देवदेखिरघुबीरबिबाहू * । बरषिप्रसूनप्रशंसिउछाहू * * ८

दो० चले निशान बजाय सुर निज निज पुर सुख पाय ॥
कहत परस्पर राम यश प्रेम न हृदय समाय १

३५२ अरु अति अनुराग संयुक्त वशिष्ठजीके आगे चारिउ पुत्रन को सहित स-मस्त सम्पदा राखिके बिनय करत भये कि हे नाथ मुनीश सब तुम्हारे हैं [१] तब मुनिनायक जो वशिष्ठ हैं सो आपन नेगमात्र मांगि लेतभये पुनि बहुत विधिते आ-शीर्वाद दीन्ह [२] तब सीतारामकी मूर्ति हृदय में राखिके गृहको आवत भये [३] तब राजा बिप्रनकी बधुन को बोलावते भये सुंदर चीर अरु हेम मणिमय विभूषण मांगि में पहिरावत भये [४] बहुरिके राजा दशरथने सुवासिनिन को बोलाया तिनकी रुचि बिचारि बिचारि पहिरावरि दीन्ह [५] अरु नेगीजन जेहैं तिनको जैसो योग्य है तैसो ते लेते हैं तिनकी रुचि अनुरूप राजा देते हैं [६] जे प्रिया पाहुने पूज्यमान हैं तिन कहं राजा सब प्रकारते सन्मान करत भये [७] सर्व देवता श्रीरघुनाथजी को बिवाह देखिके फूलनकी वर्षा अरु उत्साह करिके प्रशंसा करत भये [८] दोहार्थ ॥ तब निशान बजायके देवता सुख पाइके परस्पर श्रीरामचन्द्रको यश कहत अपने अपने पुरको चले प्रेम हृदयमें नहीं समात है [१] ॥

३५३ सबबिधिसबहिंसमधिनरनाहू । रहाहृदयभरिपूरिउछाहू १
जहँरनिवासतहांपगुधारे * । सहितबधूटिनकुँवरनिहारे २
लियेगोदकरिमोदसमेता * । कोकहिसकैभयासुखजेता * ३
बधूसप्रेमगोदबैठारी * * । बारबारहियहरषिदुलारी * * ४
देखिसमाजमुदितरनिवासू । सबकेउरआनंदकियबासू * ५
कहाउभूपजिमिभयउबिबाहू । सुनिसुनिहर्षहोतसबकाहू ६
जनकराजगुणशीलबड़ाई * । प्रीतिरीतिसंपदासुहाई * ७
बहुबिधिभूपभाटजिमिबरणी । रानीसबप्रमुदितसुनिकरणी ८

दो० सुतन समेत नहाइ नृप बोलि बिप्र गुरु ज्ञाति ॥
भोजन कीन्ह अनेक बिधि घरीपांच गइराति १

३५३ तहां सबको सब बिधिते समधि कहो सम बुद्धिते आदर करत भये किंतु समधि कहो समधी जनक के समान सबते प्रीति करत भये [१] पुनिराजा जहां जनवास तहां पगु धारत भये तब राजा महल में जाइके सहित बधुन कुँवरन कहँ देखत भये [२] तब राजा प्रेम समेत लरिकन को गोद में लेत भये त्यहि समय में जितना सुख राजाको भयो सो सुख को कहिसकै [३] पुनि बधुनको प्रेम समेत गोदमें लेत भये हृदयमें हर्षिके बार बार दुलारत भये [४] यह समाज राजाके गोद में बधुन

को देखिकै रनिवास इत्यादिक सबके मनमें आनन्द आइ बास कीन्हेहैं [५] जेहि प्रकार बिवाह भयो सो राजा सबते कहत भये सो राजा की बाणी सुनिकै सबको परमहर्ष होत भयो (६) राजा जनक के शील गुण बड़ाई कही महत्व अरु प्रीति अरु रीति अरु बिभव ये सब अति शोभित हैं [७] सो राजा जनक की बड़ाई राजा दशरथ ने बारबार वर्णन कीन्ह जेहि प्रकार भाट वर्णन करैहैं तब रानी राजा जनककी करणी सुनिकै अति आनन्द भई [८] दोहार्थ ॥ तब पुत्रन समेत राजा स्नान करिकै दिव्यपट धारण करिकै पुत्रन को वस्त्र अलंकार धराइकै बिप्र अरु वशिष्ठ अरु सजातिनको बोलाइलीन्ह अनेक पदार्थ अनेक बिधि प्रीतिते भोजन करत भये पांचघरी राति बीतत भई [१] ॥

३। ानकरहिंबरभामिनि।भइ रयामिनि १

अँचै पा ।

रामहिंदेखिरजायसुपाई * ।

प्रेमप्रमोदबिनोदबड़ाई * * । * ४

कहिनसकहिंशतशारदशेषा । वेदबिरंचिमहेशगणेशा ** ५

सोमैंकहौंकवनबिधिबरणी । भूमिनागशिरधरैकि

नृपसबभांतिसबहिंसनमानी । कै ७

बधूलरिकनीपरघरआईं * । राखेहुपलकनयनकीनाईं ८

दो० लरिका श्रमित उनींद बश शयन करावह जाइ ॥

बिश्राम १

३५४ तहां मंगलगान बरभामिनी करती हैं सो रात्री सुखकी मूल होत भई[१] ऐसे सुखपूर्वक सबही प्रसाद पाइकै मुख प्रक्षालिकै पान लेत भये स्रग कही फूलन की माला अरु अतर आदिक सुगन्धन करिकै भूषित छबि छाय रहीहै [२] श्रीरामचन्द्रको देखिकै हृदय में धरिकै राजाकी रजाय पाइकै परस्पर प्रणाम करिकै निज निज भवन को जात भये [३] तहां प्रेम अरु प्रमोद कही हर्ष बिनोद कही आनन्दमय लीला अरु बड़ाई तेहि समय में समाजको मनोहरताई छाय रहीहै [४] सो सुख नहीं कहिसकैं जो शत शारदा अरु शतशेष चारिउवेद चारिउमुखते ब्रह्मा अरु महेश पांचों मुखते अरुसहित गणेश भाई षट्मुख सो नहीं कहिसकैं [५] सो श्रीगोसाईं तुलसीदासकहतेहैं कि मैं कौनो भांति बर्णौं भूमिके नाग जे फिरते हैं सो भूमिके भारको कैसे धरैं किन्तु भूमि नागकही कॅचुला सो भूमिके भारको कैसेधरै [६] तहां राजानेसबप्रकारते सबकर सन्मान कीन्ह पुनि मृदु बाणीते रनिवासको बोलाइ करि कहतभये [७] सुनहु ये बधूजेहैं लरिकनी ते मानहुं पराये घर आईहैं तिनको पलक नयन की नाईं राखहु [८] दोहार्थ ॥ हे रानिहु रात्रि बहुतगई लरिका श्रमितभये उनींदके वशमेहैं शयन करावहु जाइ असकहिकै रामचन्द्र

के चरणनमें चित्तको लगाइकै विश्रामके गृह विषेगये देखिये तो इहां वात्सल्य रस में सदा डूबिरहेहैं अरु इहां रामचरणने चित्तलाइ यह शांतरस कहा है तहां संपूर्ण शांत रसमें अरु वात्सल्य रसमें मग्न यह अति दुर्लभ है महाराज श्रीदशरथ ने केवलै शान्त रसके बाहर भीतर वात्सल्यरस पूर्णबना है आनमे नहीं बनैगा [१] ॥

३५५ भूपवचनसुनिसहजसुहाये। जटितकनकमणिपलँगडसाये १
सुभगसुरभिपयफेनुसमाना *। कोमललोलितसुपेदीनाना *
उपबर्हणबरवरणिनजाहीं *। स्रगसुगन्धमणिमंदिरमाहीं
रत्नदीपसुठिचारुचँदोवा * *। कहतनबनैजानुजिनजोवा * ४
सेजरुचिररचिरामउठाये * *। प्रेमसमेतपलँगपौढ़ाये * * ५
आज्ञापुनिभाइनकहँदीन्हे। निजनिजसेजशयनसबकीन्हे ६
देखिश्याममृदुमंजुलगाता। कहहिंसप्रेमवचनसबमाता * ७
मारगजातभयानकभारी। केहिविधितातताड़कामारी * ८
दो० घोरनिशाचर विकटभट समरगनै नहिंकाहु ॥
मारेसहितसहायकिमि खलमारीचसुबाहु १

३५५ भूपके वचन सहजही अतिशोभित सुनिकै कनक मणिन करिकै जटित जो पलँग सो डसावती भई [१] तेहि पलँगपर सुभग कही सुन्दर कामधेनु के पयफेनु के समान अति कोमल ललितकही मनोहर ऐसी सुपेदी बिछावती भई [२] तहां उपबर्हण जोहै तकिया बरकही श्रेष्ठ ते वर्णिबे योग्य नहीं सुपेदी तिनपर शोभित है अरु स्रग जो मोतिन अरु फूलनके मालमणि जहां तहां मंदिरनमें झूमतेहैं अरु अतर इत्यादिक सुगन्ध मणिनके शीशा कोई गोल कोई चौपहलू तिनमें सुगन्ध भरे ते सब अनेक झरोखन अरु ताखनमें धरे हैं अरु केते मणिजटित मंदिर विषे सुवर्ण के सूत्रन करिकै बँधे झूमतेहैं [३] अरु रत्नके दीपक तहां मणिमय महलमें तौ स्वयंप्रकाश हैं पर रत्नके दीपक भाव करिकै प्रकाशित है अरु चारु सुठि कही अति सुन्दर सुवर्ण मणि मोतिन करिकै जटित विचित्र चँदवा मन्दिरनमें तनेहैं सो कहतसंते नहींबनै जिन वहि समय विषे देखा सो जानैं [४] जब रनिवास चारु शय्या बनाइ करिकै रामचन्द्रको उठावती भई तब प्रेमसमेत पलँगपर पौढ़ावती भईं [५] पुनि तीनिउं भाइनको श्रीरघुनाथजी आज्ञा दीन्ह जाइ कि जाय आरामकरो तब तीनिउंभाई आयसु पाइकै दण्डवत् करिकै भिन्न भिन्न पलँगनपर शयन करतभये [६] तब श्रीरामचन्द्र कर श्याममृदुल निर्मलगात देखि देखि सबमाता प्रेममय वचन कहती हैं [७] कि हे तात राहविषे मुनीशकेसाथ जातसन्ते घोर ताड़का राक्षसीको केहिविधि मारा [८] दोहार्थ ॥ तहां मुनिके यज्ञविषे घोर जे निशाचर अति बिकट भट अरु समर में काहूको गनैंनहीं तिन मारीच सुबाहु इत्यादिक निश्चरनको कैसेमारा [१] ॥

मुनिप्रसादबलितातुतुम्हारी । ईशअनेककरिवरैंटारी * १
* । गुरुप्रसादसबविद्यापाई * * २
* । कीरतिरहीभुवनभरिपूरी * ३
। नृपसमाजमहँशिवधनुतोरा * ४
विश्वविजययशजानकिपाई । आयेभवनब्याहिसबभाई * ५
सकलअमानुषकर्मतुम्हारे । केवलकौशिककृपासुधारे * ६
आजुसुफलजगजन्महमारा । देखिताताविधुबदनतुम्हारा * ७
जेदिनगयेतुमहिंबिनुदेखे * । तेबिरंचिजनिपावहिंलेखे * ८

दो० रामप्रतोषीं मातु सब कहि बिनीत बरबैन ॥
सुमिरिशम्भु गुरुविप्रपद किये नींदबशनैन १

३५६ कौशल्याजी कहती हैं कि हे तात तुम्हारी अनेकन करिवरैं कहौ बहुत विस्तरै केवल मुनिकी कृपाते महादेवजी ने अनेक बिघ्न टारे [१] हे तात यह सब हमने सुना कि तुम दोऊ भाइन मुनीशके यज्ञकी रक्षाकीन्ह अरु गुरुनके प्रसादते सब विद्या प्राप्तभई [२] अरु तुम्हारे चरणकी धूरि स्पर्शहोतसंते पापमय मुनिपत्नी सो कृतार्थ होतिभई अरु कीर्ति चौदहौ भुवनमें पूरिरही है [३] अरु कमठकी पीठि अरु पविकहौ बज्र त्यहिते अति कठोर धनुष सो राजनकी समाजमें तुमतोरि डारेउ [४] अरु संपूर्ण विश्वमें विजय अरु यशको प्राप्तभयउ अरु श्रीजानकीजी परम मंगलमय मूर्त्ति तिनको पायहु अरु सबभाई आनन्दपूर्वक बिवाहिकै घरआयहु [५] हे तात तुम्हारे कर्त्तव्य अमानुष्य हैं मनुष्य के ऐसे कर्त्तव्य नहींहैं इहां कौशल्या के वचन में ध्वनि है कि तुम परमेश्वरहौ ताते अमानुष करणी कहा यह कौशल्याको वचन सुनि कै श्रीरामचन्द्र मुसुकाते हैं (६) पुनिकौशल्या जी कहती हैं कि हे तात तुम्हार विधु बदन देखिकै आजुहमार जन्मसुफल भयो (७) श्री कौशिल्याजी कहतीहैं कि हे तात जो दिनतुम्हें देखे बिनागये हैं सो बिरंचिलेखामें न पावै यहमैं तुमते बरमांगतिहौं तहां कौशल्याजी के बरमांगिबेको यह अभिप्राय है कि जबते तुम मुनीशके संगगयहु अरु आजुताईं येतेदिन ब्रह्माके लेखामें न आवैं तहां कौशल्याके बचनमें रघुनाथ जीने यह समझा कि जब ते कौशल्याजी को जन्मभयो है अरु जबते श्रीकौशल्या जीके चौथेपन बिषेहम जन्मलीन्ह हे इतने बीचमें कौशल्याजीने हमको नहीं देखा अरुजब हम चित्रकूट को जाहिंगे तब चौदह वर्षको बिक्षेपपरैगो ताते इतनेदिन सब जो हमारे देखेबिना कौशल्याजूकी उमरि ब्रह्मैलिखा है वह दिन हमारे देखेबिना कौश-ल्याको गयेहैं सो ब्रह्मालेखा में न पावै तब रघुनाथजीने कहा एवमस्तु ताते त्रेतामें दश हजारवर्ष की उमिरि शास्त्रन कहीहै तहां कौशल्याजूने नवहजार वर्ष दशरथमहा-राजके संगराज्य कीन्ह अरु ग्यारह हजार वर्ष रघुनाथजीके राज्यमें बिराजमानरही हैं

तेहि उपरान्त सहित दशरथ महाराज के पर विभूतिकी रघुनाथ औरौ मंगलाली भई याहि चौपाई में यह अभिप्राय है (८) दोहार्थ ॥ माताको वचन मुनिकै शुभमस्तु कहिकै श्रीरामचन्द्रने मातासे विनीत कही कोमल नीतिवान् वचन कहिकै परितोष कीन्ह तब शम्भु अरु बिप्रादिकनके पद सुमिरिकै नेत्रनको नींदकै वशकीन्ह नाम सोइगये (९)॥

३५७ उनिँदेबदनसोहसुठिलोना। मनहुँसांझसरसीरुहसोना * १
घरघरकरहिंजागरणनारी। देहिंपरस्परमंगलगारी * * २
पुरीविराजतिराजतिरजनी। रानीकहहिंविलोकहुसजनी * ३
सुंदरिवधुसासुलैसोई * *। फणिकन्हजनुशिरमणिउरगोई ४
प्रातपुनीतकालप्रभुजागे *। अरुणचूड़बरबोलनलागे * * ५
बंदीमागधगुणगणगाये *। पुरजनद्वारजोहारनआये * ६
बन्दिविप्रसुरगुरुपितुमाता। पाइअशीशमुदितसबभ्राता * ७
जननीसादरबदननिहारे *। भूपतिसंगद्वारपगुधारे * * * ८
दो० कीन्ह शौच सब सहज शुचि सरित पुनीत नहाइ ॥
प्रात क्रिया करि तातपहँ आये चारिउ भाइ १

३५७ तहां उनींदे बदन अतिलोने कही सुन्दर सोहत हैं मानहुं सांझकी सरसीरुहकही कमल सोनकही अरुण सांझकी समयको अरुण कमल कछुकमुंदो कछुक संकुचित तद्वत् उनींदाबदन शोभितहै [१] अरु घरघरप्रति तें इराचि विष स्त्रीजागरण करतीहैं अरु परस्पर मंगलगारी देतीहैं [२] अरु पुरीजोहै सो अति सुन्दर विराजतीहै अरु रात्री अति शोभितहै तेहि समयमें रनिवास संपूर्ण स्त्रीनते कहतीहैं कि हे सजनिहु देखो तो पुरीमें रात्रीकी शोभा अतिशय अकथनीयहै [३] हे पार्वती सुन्दरी बधुनको लैलै सासुसोवती भई जैसे फणिकजेहैं सर्प अपने शिरकी मणि अपने उरमें गोइकही छिपाइ रहैहैं तैसे बधुनको सब सासुगोदमेंलैकै सोईहैं [४] महामंगल होत संते रात्री बीतिगई अति पुनीत प्रातः समय होतभयो श्रीरघुनन्दन भाइन संयुक्त जागतभये जब अरुण चूड़ जो मुर्गा किन्तु अरुण चूड़कही सारसहंस को सो बोलनेलगे [५] बन्दीगण अरु मागध द्वारपर रघुनाथजीके गुणगावने लगे अरु पुरजन यथायोग्य जोहारिबे को आये हैं [६] तब चारिउ भाई प्रातउठकै विप्रसुरगुरु अरु मातापिता के पदनको बन्दना करतभये मंगलमय सबभ्राता आशीर्वाद पावते भये [७] तहां माता चारों भ्रातन के मुखकमल देखिकै आनन्द पावतीहैं तब राजाकेसंग द्वारको जातेभये [८] दोहार्थ ॥ श्रीरामचन्द्र चारिउ भाई सहजही परमपवित्र सदाएकरस नित्य ते लीला अनुकरण हेतु प्रातःशौच क्रिया पूर्वक श्रीसरयूस्नान अरु नेमकरिकै चारिउ भाई राजाके पास आवतभये [९]॥

३५८ भूपविलोकिलियेउरलाई । बैठेहर्षिरजायसुपाई * * १
देखिरामसबसभाजुड़ानी । लोचनलाभअवधिअनुमानी * २
पुनिवशिष्ठमुनिकौशिकआये । आसनसुभगमुनिनबैठाये * ३
सुतनसमेतपूजिपदलागे * । निरखिरामदोउगुरुअनुरागे * ४
कहहिंवशिष्ठधर्मइतिहासा । सुनहिंमहीपसहितरनिवासा ५
मुनिमनअगमगाधिसुतकरणी।मुदितवशिष्ठविपुलविधिवरणी ६
बोलेबामदेवसबसांची । कीरतिकलितलोकतिहुंमाची * ७
 [illegible]कउछाहू * ८

दो० मंगल मोद उछाह नित जाहिंदिवस यहि भांति ॥
अवधआनंदभरि ८

३५८ तब भूपने श्रीरघुनाथजी को देखिकै उठिकै उरमें लगाइलीन्ह पुनि राजा दशरथ उरमें लगाइकै बैठे तब राजाकै रजायसु पायकै राजाके समीप रघुनाथ जी बैठे [१] श्रीरामचन्द्र कार स्वरूप अति सुन्दर देखिकै सभा जुड़ाइ गई संपूर्ण सभा के चित्त की वृत्ति व्यवहार में रही सो मिटिके श्रीरामचन्द्र के स्वरूप में लगी ताते सब जुड़ाई कही शीतल भये अरु अनुमान कीन्ह कि लोचनन को लाभ के अवधि इनके दर्शनै हैं आगे कछु नहीं है (२) पुनि राज सभामें वशिष्ठ अरु विश्वामित्र आवत भये तब सभासमेत राजा उठिकै प्रणाम करिकै सुंदर आसन पर बैठावत भये (३) दोनों गुरुन को राजा बैठाइकै पुत्रन समेत षोड़श प्रकारते पूजन करिकै उनके पदमें लगावत भये तब श्री रामचन्द्र को देखिकै दोनों गुरुनके अनुराग होत भयो (४) यहि प्रकारते प्रतिदिन वशिष्ठजी धर्म इतिहास पुराण वेदबांचते हैं सो राजा रानी सुनते हैं (५) तहां गाधिसुत विश्वामित्र तिनकै करणी मुनिन के मनको अगम है सो वशिष्ठजी बार २ बर्णते भये (६) तब बामदेव मुनि बोले कि यह जो विश्वामित्र कै करणी वशिष्ठजी कहते हैं सो सब सत्यहै इनकी कीर्ति तीनिउ लोक में फैलिरही है (७) यह सुनिकै सबको आनन्द होत भयो अरु श्री रामचन्द्र अरु लक्ष्मण के उरमें अधिक उत्साह होतभयो (८) दोहार्थ ॥ तहँा जो दिन बीतते हैं सो मङ्गलमोद उत्साहमय सब श्रीअयोध्याजीमें उमँगिउमँगि प्रतिदिन अधिकातेहैं (१) ॥

३५९ सुदिनसाधिकरकंकणछोरे । मंगलमोदविनोदनथोरे * * १
नितनवसुखसुरदेखिसिहाहीं।अवधजन्मयाचहिंविधिपाहीं २
विश्वामित्रचलननितचहहीं । रामसप्रेमविनयबशरहहीं * ३
दिनदिनसौगुणभूपतिभाऊ । देखिसराहमहामुनिराऊ * * ४
मांगतबिदाराउअनुरागे * । सुतनसमेतठाढ़भयेआगे * * ५

नाथसकलसम्पदातुम्हारी । मैंसेवकसमेतसुतनारी ॥ ६
करबसदालरिकनपरछोहू । दर्शनदेतरहबमुनिमोहू ॥ ७
असकहिराउसहितसुतनारी । परेचरणभरिलोचनबारी ॥ ८
दीन्हअशीशऋषयबहुभांती । चलेनप्रीतिरीतिकहिजाती ॥ ९
रामसप्रेमसंगसबभाई ॥ । आयसुपाइफिरेपहुंचाई ॥ १०

दो० रामरूप भूपति भगति ब्याह उछाह अनन्द ॥
जात सराहत मनहिंमन मुदित गाधि कुलचन्द १

३५९ तब सुन्दर सुदिन साधिकै कंकण छोरत भये तहां मङ्गल अरु मोद विनोद कही आनन्दमय लीला सो थोरी नहीं है अमित होत भई है (१) नित्य नवीन नवीन सुख देखिकै देवता सिहाते हैं अरुबिधि ते मनावते हैं कि हे बिधि यही समय में श्री अयोध्या में हमारो जन्म होइ (२) तहां विश्वामित्र नित्य उठि चलाचाहते हैं परन्तु श्री रामचन्द्र की विनय प्रेमते रहि जातेहैं (३) तहां दिन दिन प्रति सौ सौ गुणभाव राजा विश्वामित्र कर करते हैं राजाकर भाव देखि देखि महामुनिवर बारबार सराहते हैं (४) अब विश्वामित्र विशेष बिदा मांगते हैं तब राजा अतिअनुरागपूर्वक सुतन समेत कर जोरिकै आगे ठाढ़े भये [५] तब राजाबोले कि हे नाथ यह सकल सम्पदा आपकी है अरु मैं पुत्रन अरु रानिन सहित आपकर सेवक हौं अरु सदा सेवक जाने रहब [६] अरु ये चारिउ पुत्र आपके लरिका हैं सदा छोह कहीं दया करत रहब अरु दर्शन मोहूंको देत रहब यह कृपा बनीरहै [७] तब विश्वामित्रकी विनय करिकै पुत्रन समेत राजा औ रानी विश्वामित्रके पायँन परत भये प्रेमते गद्गद नेत्रन में जलभरे मुखते बाणी नहीं आवै [८] तब ऋषय उठाइकै बहु प्रकारते आशीर्वाद देत भये पुनि बिदा होतभये तहां परस्पर प्रीतिकी रीति कछु कही नहीं जातीहै तब राजाने अनेक प्रकारते भेंटदीन्ह अरु अनेक प्रकारके भोजन के सरञ्जाम मञ्जिल के मञ्जिल पहुँचावते भये [९] तहां विश्वामित्र राजा को ठाढ़कीन्ह अरु अनेक मंत्रिन संयुक्त चारिउ भाई मुनिको पहुँचावै चले तब विश्वामित्र प्रेमते भरे बार बार रघुनाथ जी को फेरते हैं परन्तु रघुनाथजी प्रेमके बश नहीं फिरते हैं पुनि सुन्दर आशीर्वाद अरु आयसु पाइकै फिरते भये तहां माघकी शुक्ल पक्षकी पौर्णमासी को श्रीअयोध्या ते विश्वामित्र बिदा होतभये निज आश्रमको गये तब भाइन सहित श्रीरामचन्द्रजी भवन को आवत भये [१०] दोहार्थ ॥ तब विश्वामित्र श्री रामचन्द्र को स्वरूप हृदय में धरे सहित समाज चलिजाते हैं अरु भूपति कर भाव भक्ति अरु बिवाहके उत्सव को आनन्द मनमें सराहतगाधिकुलचन्द चले जाते हैं राजा गाधि के कुलके चन्द कहीं कुल भरे के तीनों ताप हरिकै कृतार्थ कीन्ह [१]॥

३६० बामदेवअरुकुलगुरुज्ञानी । बहुरिगाधिसुतकथाबखानी १

आयेब्याहिरामघरजबते । बसेअनन्दअवधसबतबते * ५
प्रभुबिबाहजसभयउउछाहू । सकहिंनबरणिगिराअहिनाहू ६
कबिकुलजीवनपावनजानी । रामसीययशमंगलखानी * ७
त्यहितेमैंकछुकहाबखानी । करनपुनीतहेतुनिजबानी * ८

न्द ॥

रापावनकरनकारण रामयशतुलसीकह्यो ॥

बकबनेलह्यो १

हीं २

जेसप्रेम गावहि ॥

१

सकलकलिकलुष

इतिनामप्रथमस्सोपानस्समाप्तः १ ॥

टी० तहां वामदेव मुनि जोहैं अरु रघुकुल गुरुज्ञानी वशिष्ठ जो हैं ते बहुरि कह्यो बारबार गाधिसुत जो बिश्वामित्र तिनकी कथा अति प्रीतिते बखानते हैं (१) गुरुन के मुखते बिश्वामित्रकर सुयश सुनिकै राजा अपने पुण्यको प्रभाव बहुत मानत भये (२) तब राजाकी रजाय पाइकै सबलोग अपने अपने घरको गये(३)हे पार्वती स्वर्ग पाताल मृत्युलोकादि तीनिहू लोकन बिषे जहां तहां रामचन्द्र के बिवाहको पवित्र सुयश छाइ रह्योहै (४) हे भरद्वाज श्रीअयोध्या अरु अयोध्या बासी येतौ सदैव आनन्दमय रहतेहैं पर श्रीरामचन्द्र जबते ब्याहिकै आयेहैं तबते आनन्द समेत बसेहैं (५) तहां श्रीरामचन्द्र के विवाहकर जैसो उत्साह भयोहै तैसो गिराकहो सरस्वती अरु शेषजी नहीं बरणिसकैं (६) श्रीगोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि यह जो श्रीरामचन्द्रकर चरित कविके कुलको जीवन अरु पावन कर्ताहै सो अपनी बाणी पवित्र करिबे के हेतु अरु मेरे कल्याण के हेतुहै (७) ताते अपनी मति के माफ़िक मैं जो तुलसीदास हौं सो श्रीरामचन्द्रकर चरित अपनी बाणी के पुनीत हेतु कहत भयों (८) छंदार्थ ॥ श्रीगोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि यह जो श्रीरामचन्द्रकर सुयश है उसे अपनी बाणीके पावन करिबेको कारण जानिकै मैं कह्यउँ है अरु श्रीरामचन्द्र को चरित तौ अपार समुद्र है बर्णन करिकै कौने कवि

पारपाव नामकेतु नहीं पाया [१] श्रीगोसाईं तुलसीदास कहतेहैं कि श्रीरामचन्द्र के जन्म अरु यज्ञोपवीत अरु विवाहका मंगलमय उत्साह जो गावते अरु सुनते हैं तेनर लोग श्रीवैदेही अरु रामचन्द्र के प्रसादते सदासुख पावहिंगे [२] सोरठार्थ ॥ श्रीरघुनंदन व श्रीजानकीजीको विवाह जे कोई प्रेम संयुक्त गावैं अरु सुनैं तिनको सर्वकाल में उत्साह है काहेते श्रीसीतारामकर यश महा मंगलमयको आयतन कही स्थानहै [१] ॥

मत्तसवैया कवित ॥

निगमागम पादपकल्प लसैं फल राम चरित्र सुधारस मय ।
तुलसी शुक के मुखते करिकै द्रव पीवत संत समाज सचय ॥
पुनि ब्रह्म कमण्डलु वेद दयो सरिता सुर रामकी कीरतिद्वय ।
तुलसी शुभगीरथ रामचरण भुवि जीय सबै जग पावन भय १
सब शास्त्रनको मत सारलियो जलदूध यथा गहि हंसगहय ॥
गिरिते जिमिमाणिक लेहिंभले मथिसिंधु अमीजिमि देवलहय ।
तिमि शास्त्र पुराण श्रुती सुमृती सुबिचारि विशेष विशेषणद्वय ।
सब रामचरण तुलसी लैकै रचि राम कथा मुद मंगल मय २
शुचि ज्ञान बिराग विवेकमयी शमतोष दया दमशील बसी ।
नवधा परप्रेम पराभगती सब संतन के हिय में हुलसी ॥
शुभ चारि पदारथ पूरि भये मद मोह नदी नदकी पुलसी ।
दृढ़ रामचरण अति प्रीति करै रघुबीर कथा वरणी तुलसी ३
सर संतन को मन हंस जहां मुकता गुण राम चुनै शुकसी ।
कवि कोविदको विश्रामथली सब शास्त्र सुमंगल मय मुखसी ॥
रघुवीर स्वरूप सदा दरशी सुखको सुखसी दुखको दुखसी ।
जगजालको राम चरण असिसी रघुवीर कथा वरणी तुलसी ४
सबकोमत एक करी तुलसी सियराम स्वरूप में आनि धरी ।
तेहि ग्रंथको अर्थ कियो मति जो यह सिंधु सुधारस पूरि भरी ॥
सरमानस राम चरित्र तहां गुण कीरति दिव्य उठै लहरी ।
सियराम समीपहिं बासकरै सोइ रामचरण अज्ञान करी ५

दोहा ॥ अवधपुरी पूरण भयो सुभग जानकी घाट ॥
रामचरणशुभतिलककृत संतसमाजकोठाट६
सम्वतअष्टादश सुभग सत्तरि अट्ठ सपाख ॥
रामचरण ऋतुराजतिथि पंचशुक्ल बैशाख ७

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडेश्रीसीताराम विवाहश्रीअयोध्याविश्रामपरमोत्साहपरमानंदत्रैलोक्य मंगलवर्णनंनामषट्पंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५६ ॥

इति बालकाण्डः समाप्तः ॥



घनाक्षरी ॥

तुलसीकृत मेघ स्वातियोग धर्मज्ञान शालिप्रेम नीरचातक मयूरचित्त मनहै । कामधेनु दिव्य सोपिदुग्धभाव प्रीतिस्वाद तोष पुष्टजीव बत्सदेव रामजनहै । धर्म्मिनको धर्म्मसिद्धि योगिनको योगसिद्धि ज्ञानिनको ज्ञानसिद्धि भक्तभक्तिधनहै । रामचरण श्रीमद्रामायण श्रीरामअयन रामनाम लीला श्रीरामसीयतनहै [१] क्षीरसिन्धुअवधकांड पूरभये भरतभाव शेषविज्ञान विष्णु रमारामनामहै । विरहक्कथाह स्वछरूप इन्दुप्रेम सुध रामरूप चिन्तामणि भक्तिधेनु कामहै । भरतकोयोग वैराग्य ज्ञानध्यानतप आदि गुण दिव्य भूरिजलचरनको धामहै । रामचरण शरणागत सीपमोती कृपाराम आरततरंगशोचउमगे सुदामहै (२) शरदनभ कांडयह पूर्णचन्द्र भरतभाव मुनगण चकोरकुमुद अंगअंग छामहै । वेदनको तत्त्वराम सर्व्वोपरि सर्व्वरस कारण और कारजपर कर्म धर्म्म धामहै । रामगुण प्रतापरूप नाम श्रीधामप्रेम भक्तसर्व जीवनकोदीन्हों अभिराम है । रामचरण रामको चरित्र परमदिव्य सुधापीवै सियराम भक्तहर्षिआठौयामहै [३]॥

दो० रामध्याहऐश्वर्यसुख चौदहभुवननपूरि ॥
रामचरणश्रीअवधमें प्रथमतरंगनिभूरि १

श्लोकः ॥ वामांकेचविभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके । भाले बालविधुर्गलेचगरलंयस्योरसिव्यालराट् ॥ सोऽयंभूतिविभूषणः सुरवरःसर्वाधिपस्सर्वदा । शर्व्वस्सर्वगतःशिवःशशिनिभः श्रीशंकरः पातुमाम् १ प्रसन्नतांयानगताभिषेकतस्तथानमम्लौवनवासदुःखतः ॥ सदाऽस्तुतन्मंजुलमंगलप्रदम् २

दोहा ॥ श्रीगुरुचरणसरोजरजनिजमनमुकुरसुधारि ॥
बरणौंरघुबरविमलयश जोदायकफलचारि १

प्रथम श्रीअयोध्याकांड विषे प्रथम शंकर भगवत श्रीरामानन्य मुनिभावनत श्रीराम-चन्द्र श्लोक्की ताको अर्थ श्रीशंकर जो हैं सर्व्व जीवनके कल्याणकर्ता ते मा पातु मेरे ऊपर रक्षाकरहु सहित पार्व्वती प्रसन्नहोहु कैसेहो तुम महादेव वामांगविषे विभातिकहो शोभितहैं भूधरसुता जेपार्व्वती जी अरु देवापगा जो श्रीगंगाजी सो शीशपर शोभितहैं अरु भालविषे बालचन्द्रमा शोभितहै ते दोउ सर्व्व जीवनके पापताप हर्राहैं अरु ग्रीवविषे गरल जो श्यामता सो शोभितहै जनु सर्व्वको दुःख हरिके आपगरे बांध्यो है पुनि ग्रीवविषे व्यालजोहै राट्कहो श्रेष्ठ सर्पराज सो शोभित है जनु सर्व्व जीवनको भयहरिके निर्भयकीनहै अरु अंगविषे विभूति भूषितहै सो सर्व्व जीवनको सुखकर्त्ता है सो महादेव कैसेहैं ब्रह्मादिक सर्व्व देवतनमें वरकहो श्रेष्ठहैं काहेते रामानन्य हैं अरु सर्वाधिपहैं सर्व्व जीवनके राजाहैं सर्व्वदा सर्व्व जीवनके पालकहैं अरु सर्वकहो षोड़-शौकला करिके सम्पूर्णहैं अरु सर्वगत कहो सर्वजीवन विषेगत कहो प्राप्तहैं शिवकहो कल्याण रूपहैं शशिनिभः कहो अति उज्ज्वल निर्मल अमृतमय शीतलमय प्रकाशमय ऐसो देहकी प्रभाहै ऐसे श्रीशंकर माम्पातु श्रीगोसाइँ तुलसीदासजी सो शंकरको नम-स्कार करिके श्रीअयोध्याकाण्ड प्रारम्भ करतेहैं काहेते कि श्रीशंकर यहि श्रीमद्रामाय-णके आचार्य हैं । (१) गोसाइँ कहतेहैं रघुनन्दनस्य सदामञ्जुल मङ्गलप्रद नाम मङ्गलके दाताहैं सो कैसेहैं रघुनन्दन मुखाम्बुज मुख नित्यप्रसन्न है मोको मङ्गल कराहिंगे पुनः कैसेहैं रघुनन्दन राजा दशरथ महाराज्याभिषेक देनेलगे तब लेशहू प्रसन्नता नहीं आई पुनि जब केकयी माताने बनवासदियो तब तनमन मुखविषे लेशहू मलीनता नहीं आई ऐसे श्रीरघुनन्दनजी मैं जो हौं रामचरण ताहूको मङ्गलदेहिं जाते श्रीअयोध्या-कांडको तिलक यथार्थ सिद्धिहोइ (२) दोहार्थ ॥ श्रीतुलसीदास अपने गुरुनको नमस्कार करतहैं श्रीगुरुजो हैं तिनकर जे कमलचरणहैं तिन चरणनकीरज त्यहिकरिके अपने मन मुकुरको निर्मल करिकै श्रीरघुवरको विशदयश वर्णौं जो चारिफल करदाताहै अरु यह रामायण श्रीरामचन्द्रको अयनहै ताते सर्वरस अरु नवधाभक्ति प्रेमापरा अरु रामस्वरूप की दाताहै ताको वर्णतहौं (१)॥

१ जबतेरामब्याहिघरआये * । नितनवमंगलमोदबधाये * १
भुवनचारिदशभूधरभारी * * । सुकृतमेघबर्षहिंसुखबारी * २
ऋधिसिधिसंपतिनदीसुहाई । उमँगिअवधअम्बुधिकहँआई ३
मणिगणपुरनरनारिसुजाती । शुचिअमोलसुन्दरसबभांती ४
कहिनजाइकछुनगरविभूती । जनुयतनीविरंचिकरतूती * ५
सबबिधिसबपुरलोगसुखारी । रामचन्द्रमुखचन्द्रनिहारी * ६

तुसबसखीसहेली । फलितबिलोकिमनोरथबेली ७

*। होहिंदेहि

दो० सबके उर

।७

१ हे पार्वती सदा महा मंगलमय श्रीअयोध्या में जबते श्रीरामचन्द्र बिवाह करिकै आये तबते नित्यही नवीन मंगल मोद बधाई बाजती हैं (१) हे भरद्वाज चौदही भुवन जेहैं सोई पर्वत हैं अरु चौदही भुवनके सुकृत सोई मेघ हैं अरु महा-सुख सोई जल है सो सुकृत रूप मेघ बर्षते हैं (२) तहां ऋद्धि कही नवनिद्धि अरु आठ सिद्धी सो भगवत् सम्बन्धिनी हैं अरु दश सिद्धी गुण सम्बन्धिनी हैं अरु पांच अल्पसिद्धी हैं सो नवो निद्धियां अरु ते इस सिद्धियां सोई नदीहैं ते सब सुखरूप जल ते भरी उमँगि उमँगि श्रीअयोध्या रूपी समुद्र में मिलत भई (३) अरु समुद्र में तो मुक्ता इत्यादिक अनेकन जातिनकी मणि होतीहैं अरु अवध समुद्र रूप तामें पुर के नर नारि मणिहैं अरु शुचि कहो पवित्र सोई मणि को प्रकाश है अरु अति सुन्दरता सोई अमोलता है (४) तहां नगरकी विभूति कछु कही नहीं जाइहै जनु बिरञ्चिकी यतनीही करतूति है (५) सब प्रकारते संपूर्ण लोग श्रीरामचन्द्र कर मुख चन्द्र देखि देखि सुखी हैं (६) तहां सब मातु सखी सहेली इत्यादिक अपने मनोरथ की कल्प-बेलिको फलित देखिकै मुदित हैं (७) अरु श्रीरामचन्द्र कर रूप गुण स्वभाव देखि सुनि सुनि राजा आनन्द होते हैं (८) दोहार्थ ॥ सम्पूर्ण अयोध्यावासी मंत्री इत्यादि-कन के यह अभिलाषा है अरु ते श्रीमहेश को मनावते हैं कि हे महेश आपु अछत कही राजा अपने आगे श्रीरामचन्द्र को युवराज पद देहिं (१)॥ इति श्रीरामचरित मानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने विमलश्रीअयोध्याकांडे श्रीरामचन्द्रविवाहश्रीअयोध्याबिषे प्राप्तिपरमैश्वर्यवर्णनंनामप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

दो० । महाराज दशरत्थ मन रामराज्य अभिषेक ॥
द्वितिय तरंग बिलोकिमैं रामचरण सुखएक १

२ अतिआनंदअवधपुरबासी । भ्रातनसहितदेखिसुखरासी * १
एकबारजानकीससेता *। बैठेप्रभुनिजरुचिरनिकेता * * २
भुजप्रलंबउरनयनविशाला । पीतबसनतनश्यामतमाला * ३
कोटिमनोजदेखिछबिसोहा । सीताकरचामरबरसोहा * ४
त्यहिअवसरमुनिनारदआये । सुरहितलागिबिरंचिपठाये * ५
तेजपुंजकरतलकरबीना * । हरिगुणगणगावतलयलीना ६
देखिरामसहसाउठिधाये *। करतदंडवतमुनिउरलाये ** ७
आदरनिजआसनबैठारे * । जनकसुतातबचरणपखारे * ८

तेहिचरणोदकभक्तनहिंपावा । जरापाअनहरिमीशाग्रव्हावा ९
सुनुमुनिविषयनिरतअज्ञानी । हमसारिखेदेहअभिमानी १०
तिनकहँसतसंगतिजबहोई * । करहिंकृपाजापरप्रभुसोई ११
ताकहँमुनिनाहिंनभवत्यागे । जेहिबिनुहेतुसन्तप्रियलागे १२
तातेनारदमैंबड़भागी * * * । यद्यपिगृहकुटुम्बअनुरागी १३
दो० सुनि प्रभु बचनमधुर प्रिय करि विचारि मुनिधीर ॥
परम कृपालु लोक हित कस न कहौ रघुबीर १
३ कहमुनितवमहिमारघुराया । मैंजानौंकछुतुम्हरीदाया * १
वचनकहेउप्राकृतकीनाईं । यामेंनहिंकछुघटेउगुसाईं * २
प्रभुयहतुमहिंसदाबनिआई । निजलघुताजनकेरिबड़ाई * ३
सहजस्वभावप्रशांतअनुरागी । नरतनधरेउदासहितलागी * ४
मायागुणगोज्ञानअतीता । अजितनामसोदासनजीता * ५
जेहिप्रभुसमअतिगायकोउनाहीं । व्यापकअजसमानसबनाहीं ६
उदरचराचरमेंलजोसोवा * । अस्तनपानलागिअधरोवा * ७
नामरूपबपुवर्णनभेदा * * । अविगतअकलनेतिकहवेदा ८
निर्म्मममुक्तिनिरामयजोई । दशरथसुतकहिगाइयसोई * ९
जपतपयोगयज्ञब्रतदाना * । विमलविरागज्ञानविज्ञाना १०
करहिंयत्नमुनिपावहिंकोई । देखप्रकटभक्तवशसोई * ११
हठवशशठबहुसाधनकरहीं । भक्तिहीनभवसिन्धुनतरहीं १२
दो० जानि सकहु तेजानहु निर्गुण सगुण स्वरूप ॥
मम हिय पंकज भृङ्गइव बसहु रामनर रूप १
४ ब्रह्मभवनमैंरहेउँकृपाला । गावततवगुणदीनदयाला * १
असइच्छाउपजीमनमाहीं । देखउँचरणबहुतदिननाहीं * २
यद्यपिप्रभुसर्वत्रसमाना * । सगुणरूपमोरेमनमाना * ३
अवधचलतविरंचिमोहिंजाना । कीन्हीविनयलागिममकाना ४
प्रभुजानतसबअन्तर्यामी । भक्तबछलविनतीयहस्वामी ५
जेहिहितलीनमनुजअवतारा । नाथताहिअबकरियसँभारा ६
सुनतबचनरघुपतिमुसुकाने । मुनिअजहूँविरंचिभयमाने * ७

। कछुोदनगयदेखिबहंआईं * ८

बारबारचरणनिशिरनाई * । ब्रह्मानन्दनहृदयनसमाई * ९

।रद । चलेकरतः १०

सबरघुपतिसीतहिंसमुझाई । पूर्वकथासबहेतुसुनाई * * ११

सुरहितलागिसोकरियउपाई । जाइयवनयहिकहिठकुराई १२

दो० जगसंभव अरुस्थिति प्रलय जाकी भृकुटि बिलास ॥

सो प्रभु यत्न बिचारत करहिंबिधिनिशिचरनास १

२-३-४ नारदकोप्रसंग तीनिदोहा पर्यन्त काहूकाहू प्रतिमें नहींहै क्षेपक कहतेहैं ताते तीनिउं दोहोंको अक्षरार्थहै इहां यही चौपाईको अर्थ करतेहैं नारद कहतेहैंकि हे रामचन्द्र तुम्हारनाम अरु तुम्हार रूप अरु तुम्हार वपु ये तीनों वर्ण कही अक्षरनके अर्थते अभेदहैं अरुवर्ण कही रंग अरु गुण सो तीनिउँ अभेद हैं वपुकर प्रकाश जेछटा ताको रूपकही अरु वपुजो शरीर तेहिविषे जो परमदिव्य समष्टिरूप गुणहै ताको नामकही काहेते अपने दिव्य गुणरूपक माधुर्यमें मुनिनके चित्तको रमावतेहौ तातेरामकही ऐसेनामरूप वपु अभेदहैं अविगतहैं अकथहैं नेति नेति वेदकहते हैं प्रमाण महारामायणे एक पंचाशत्सर्गे (श्लोकद्वौ) मुनिवेषधरंरामं नीलजीमूतसन्निभम् ॥ रमंतेयोपितोभूत्वारूपंदृष्ट्वामहर्षयः १ ॥ पुनि (श्रीरामतापिन्याम्) रमंतेयोगिनोऽनन्तेसत्यानन्देचिदात्मनि ॥ इतिरामपदेन्यासौपरंब्रह्माभिधीयते २ ॥

५ एकसमयसबसहितसमाजा । राजसभारघुराजविराजा * १

सकलसुकृतमूरतिनरनाहू । रामसुयशसुनिपरमउछाहू * २

नृपसबरहहिंकृपाअभिलाषे । लोकपरहहिंप्रीतिरुखराखे ३

त्रिभुवनतीनिकालजगमाहीं । भूरिभागदशरथसमनाहीं * ४

मंगलमूलरामसुतजासू * । जोकछुकहियथोरसबतासू * ५

रायसुभायमुकुरकरलीन्हा । बदनविलोकिमुकुटसमकीन्हा ६

श्रवणसमीपभयेशितकेशा । मनहुंजरठपनअसउपदेशा * ७

नृपयुवराजरामकहंदेहू * । जीवनजन्मलाभकिनलेहू * ८

दो० यहबिचारि उरआनि नृप सुदिन सुअवसर पाइ ॥

प्रेमपुलकि तनमुदित मन गुरुहि सुनायउ जाइ १

५ हे पार्वती एक समयविषे महाराज श्रीदशरथजी राजसभा विषे सहित समाज विराजमान हैं (१) तहां नरनाह सकल सुकृतकी मूर्तिहोहिं अरु श्रीरामचन्द्रके स्वभाव क्रिया गुणको यश सोसम्पूर्ण सुनिसुनि हृदयमें उत्साह होतहै (२

रथ महाराजहैं जिनकी चाहना सब राजा करतेहैं अरु लोकप कहो चौदहों लोकके पालक अरु लोक पाल ते सबके मन ऐसीतिरथ राजिसेकी इच्छा राखतेहैं (लोकनकेनाम) अतल १ बितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ तिन लोकन के अधिष्ठाता कहतेहैं महिके अर्द्ध तामें बलिनाम दानवहै १ पुनिताके अर्द्ध बतल तामें हाटकेश्वर महादेव हैं २ पुनिताके अर्द्ध सुतल तामेंबलि ३ पुनिताके अर्द्ध तलातल तामें मयदानव है ४ ताकेअर्द्ध महातल तामें अष्टकुली नागहै ५ पुनि ताके अर्द्ध रसातल तामें मणिपनाम दानवहै ६ पुनिताकेअर्द्ध पाताल तामेंबासुकी इत्यादिकहै ७ पुनि पृथ्वी शुरूऊर्ध्व (सप्तलोक ७) भूः १ भुवः २ स्वः ३ महः ४ जनः ५ तपः ६ सत्यलोक ७ अब लोकनके राजा कहतेहैं भूर्लोकके राजा नरराक्षस १ तेहिके ऊर्ध्व भुवः लोकके राजा सामान्य देवता और पितृनेहके ऊर्ध्वस्वर्ग तहां इन्द्र ३ ताकेऊर्ध्व महः लोक तहां काश्यप ४ ताकेऊर्ध्व जनलोक तहां मुनीश्वर मुख्य अगस्त्य हैं ५ ताके ऊर्ध्व तपः लोकतहां तपस्वी मुख्यनामश हैं ६ ताकेऊर्ध्व सत्यलोक तहांब्रह्मा ७ (पुनि अष्टदिक्पाल) पश्चिम वरुण वायव्य महत उत्तर कुबेर ईशानमें ईशपूर्वमें देवपति अग्निकोणमें अग्नि दक्षिणमें धर्मराज नैर्ऋत्यमें निर्ऋति नामदेवता इत्यादिक समस्त लोकपालश्रीदशरथ जीकी इच्छाकरतेहैं कि हमारे ऊपर सदाप्रीति कृपाकरत रहहिं (३) हे पार्वती तीनिकाल भूत भविष्य बर्तमान पुनितीनि लोक पाताल मृत्यु स्वर्ग ब्रह्मलोक पर्यंत इनसर्व जीवनविषे जीव कोटीमें आहिं अरु जे ईश्वर कोटीमें अहहिं ते सबदशरथकी समान भूरिभाग्य नहीं हैं (४) काहेते कि संपूर्ण मंगलकर मूल श्रीरामचन्द्र जिनको सनकादिक अरु नारद शुकदेव इत्यादिक परमहंस अरु ब्रह्मा शिवादिक ईश्वर ये सब एकरस जिनको ध्यावतेहैं तेप्रभुदशरथके पुत्र ताते जो कछुदशरथकी बड़ाई करिये सो सब थोरीहै (५) तहांराजा दशरथ एकसमय सभामें बैठेहैं त्यहि समयमें मुकुर कही सीसा करबिषे लेतभये बदन बिलोकिकै मुकुट समकरत भये नामसुधारत भये (६) अपने श्रवण समीप राजाने श्वेतकेशदेखे मानहुं जरठकही चौथपनको उपदेश करैहैं (७) यह उपदेश करैहैं कि हे राजन् युवराजपद श्रीरामचन्द्र को देहु अपने जन्म को फललेहु (८) दोहार्थ ॥ हे भरद्वाज तबराजा अपने मनमें बिचारिकै कि कोईसमय में सुन्दरवरो तिथि बार नक्षत्र योग लग्न सो पाइकै तनमें पुलकिकै मन मुदितते गुरुनको सुनाइये जाइ (९) ॥

छं० कहैभुआलसुनियमुनिनायक । भयेरामसर्बाबिधिसबलायक १

———————— पुरबासी । जेहमरेअरिमित्रउदासी * * २

सबहिरामप्रियजेहिबिधिमोही । प्रभुअशीषजनुतनुधरिसोही ३

बिप्रसहितपरिवारगोसाईं । करहिंछोहसबरौरेहिनाईं * ४

आयसुअनुसरहीं । तेजनुसकलविभववशकरहीं * ५

जगभयउनदूजा । सबपायउंरजपायंनपूजा * ६

अबअभिलाषएकमनमोरे । पूजिहिनाथअनुग्रहतोरे ॥
मुनिप्रसन्नलखिसहजसनेहू ॥ । कहेउनरेशरजायसुदेहू ॥ ८
० राजनराउर नामयश [illegible] अभिमत दातार
फलअनुगामी [illegible] मनअभिलाषु

॥ तब गुरुनको दण्डवत् करिकै राजा बोलतेभये हे मुनीश श्रीरामचन्द्र सब भांति सब लायक भये [१] सेवक सचिव औ सकल पुरबासी अरु मोरे अरिकहे बिरोधी जेहैं कुटिल राजादिक अरु मित्रजेहैं अरु उदासी कही तपस्वी विरक्तजेहैं [२] इत्यादिक-नको श्रीरामचन्द्र प्रियहैं जैसे मोको प्रियहैं हेप्रभु जनु आपुके आशीर्वादकी मूर्ति श्री रघुनन्दन जीहैं [३] हे गोसाईं ब्राह्मणजेहैं अरु हमारे परिवार सबरीतिहु की नाईं छोह करतेहैं [४] हे मुनीश अबजस आपुकी आज्ञा होइ तस मैं करौं काहेते जेनर गुरुनकी आज्ञाकरतेहैं तिनके लोक परलोकहुकी विभूति बशहोतीहै [५] काहेते मैं प्रत्यक्ष देखताहौं आपुके पदरज पूजेते मेरेसमान चैलोक्यमें कोई नहींहै काहेते कि मोको सर्वपदार्थ प्राप्तहैं [६] हे नाथ अबएक अभिलाषहै सो केवल तुम्हारे अनुग्रहते सब पूजिहि इहां तौंरेपद आनन्दार्थ है [७] तब राजाकी प्रसन्नता अरु सहज स्नेह देखिकै मुनिबोले कि हे राजन् जो अभिलाष होइ सो कहहु [८] दोहार्थ ॥ हे राजन् राउर कर नाम तत्त्वरूपहै दशरथ दशौदिशाहैं रथोंके अधीन सारथी ताके अधीन रथ सर्व संयुक्त रथ केवल सर्वदिशाहैं तहां तीनिहु लोकमें एकदशरथै ऐसे रथपर आरूढ़ भयेहैं जाते परमेश्वर पुरके अभिलाष को जो फलहै सो तुम्हारो अनुगामी कही सेवक है [१] ॥

॥ सबबिधिगुरुप्रसन्नजियजानी । बोलेउराउरहँसिमृदुबानी ॥
नाथरामकरियहुयुवराजू ॥ । कहि [illegible]

प्रभुप्रसादशिवसकलनिबाहीं । यहलालसाएकमनमाहीं ४
पुनिनसोचतनरहौकिजाऊ । जेहिनहोयपाछेपछिताऊ ॥ ५
सुनिमुनिदशरथवचनसुहाये । मंगलमूलमोदमनभाये ॥ ॥ ६
सुनुनृपजासुविमुखपछिताहीं । जासुभजनबिनुजरनिनजाहीं ७
भयउतुम्हारतनयसोइस्वामी । रामपुनीतप्रेमअनुगामी ॥ ८
दो० बेगि बिलम्ब न करियनृप साजिय सकल समाज ॥
सुदिन सुमंगल तबहि जब राम होहिं युवराज १

॥ तहां गुरुनको सब प्रकारते प्रसन्न जानिकै राजाहर्षिकै आनन्दसे बोलते भये [१] हे नाथ श्रीरामचन्द्रको युवराज करौ जो आपुकी प्रसन्नता होइ तौमैं सरंजामकरौं [२]

मेरे विद्यमान यह पद भव होइ सबलोग लोचनके फलतेहिं [३] आपकी प्रसादते महादेव सर्वानि बहिंहिं अरु निवाहेंगे सकयही लालसा मनविषे रहीहै सो कृपाकरिके पूर्णकरो [४] यह वासना पूर्णहोइ पुनि चाहौलनरहै चाहौजाय आति आरि पछितात्र नरहै [५] तब दशरथके मंगल मोदमय बचन सुनिके मन में बहुत आनन्द भयोहै [६] तब मुनीश बोले कि हे नृपजिनते विमुख भयेते जीव पछिताते हैं जिहिके भजन बिना जीवकी जरनिकहीं तीनिउं तापं नहीं जातीहैं [७] जो देव दानव मनुष्य इत्यादिक चराचरन को स्वामी सोई तुम्हारे पुत्रभयेहैं जैसे श्रीरामचन्द्र पुनीत प्रेमके अनुगामी है [८] दोहार्थ ॥ तब हर्षिकै श्रीवशिष्ठजू बोले हे नृप अब विलम्ब नकरो राज्याभिषेक के शीघ्र तइयारी करो शुभदिन गवाच्छ योगलग्न इत्यादिक तब सब मंगलहैं जब श्रीरामचन्द्र के राज्यको तुम विचार कीन किन्तु जब राजयपर बैठ लेंगे तहां जो कोई कहै कि वशिष्ठतो सर्वज्ञहैं श्रीरामचन्द्र को वनगमन जानतेहैं याहाते हर्षिकै ऐसोकहा है तहां जे जीव रामके सर्वज्ञहैं तिनको परमेश्वर विषे सर्वज्ञता नहींहै और सर्वविषे सर्वज्ञहैं तहां इतना संकेत वशिष्ठ कहिदेतेहैं कि राम राज्यहोई तबै मंगलहै पर जो परमेश्वर निर्विघ्न निवाहै तहां राजाको संकल्पगुरु आज्ञा श्रीरामचन्द्र राजा ह्वै चुके इस दोहाके अर्थ में (१) ॥

मुदितमहीपतिमन्दिरआये । सेवकसचिवसुमन्तबोलाये ॥ १
कहिजयजीवशीशतिननाये । भूपसुमंगलबचनसुनाये ॥ २
प्रमुदितमोहिंकहउगुरुआजू । रामहिंरायदेहुयुवराजू ॥ ३
जोपाँचहिंमतलागैनीका ॥ करहुहर्षिहियरामहिंटीका ४
मंत्रीमुदितसुनतप्रियबानी ॥ अभिमतबिरवपरेउजनुपानी ५
बिनतीसचिवकरहिंकरजोरी । जियहुजगतपतिबर्षकरोरी ६
जगमंगलभलकाजबिचारा । बेगियनाथनकरियअबारा ॥ ७
नृपहिंमोदसुनिसचिवसुभाषा । बढ़तबौरजनुलहीसुशाखा ८

दो० कहउ भूपमुनि राउजस इस इवइ आयसु होइ ॥
राम राज अभिषेक हित बेगि करिय स्वइ सोइ १

मुदित कही आनन्द ते महीप दशरथ महाराज मन्दिरमें आवत भये सेवकन को अरु सुमन्तादि सचिव कही मंत्रिन को बोलावत भये (१) ते जयजीव कहि के आशीर्बाद देतहैं जय जीव कही सर्व जीवन के पालन कर्ता हौ किन्तु तुम बहु दिन जियहु तुम्हारी जय सदा होइ अस कहिकै माथ नवावतभये तब मंगलमय राज बचन सुनावत भये [२] सुमन्त आजु आनन्दते गुरुन हमको आज्ञादीन्ह किहे राज श्री रामचन्द्रको युवराज पददेहु युवराज पदकही राजा आपु विद्यमान पुत्रको राज देइ [३] जो यह मत सबको नीकलागै तौ श्री रामचन्द्रको तिलकदेहु [४] राजा

वाणी मंत्रिन सुन्यो जनु अभिमत कहो वांछित विरवा ने उठत सन्ते अपने अनुकूल जलपायो इहां यह अभिप्राय है कि यह बासना आगे सुमन्तहु को उठीर है [५] कर जोरिकै सचिव बिनय कीन्ह हे जगत्पति तुम कोटिन वर्ष जीवहु कोटिन कहो सर्वकाल बनेरहौ [६] जो कार्य आपु विचार कीन्ह है सो त्रैलोक्य मङ्गल कारी है सो अब शीघ्र करिये [७] सबकै सुवाणी सुनिकै परमानन्द भयोहै जैसे सुष्टु वेलिको बौड़ा सुशाखा पाइकै वाढ़त है [८] दोहार्थ ॥ तब दशरथमहराज बोले कि हे सुमन्त मुनिराज श्री रामचन्द्रके अभिषेकहित जो जो आज्ञादेयँ सो वेगही सब करो [१] ॥

हर्षिमुनीशकह्यउमृदुबानी । आनहुसकलसुतीरथपानी ※ १
औषधमूलफूलफलनाना । कह्यउनामगणिमंगलनाना ※ २
चामरचर्म्मबसनबहुभांती । रोमपाटपटअगणितजाती ※ ३
मणिगणमंगलबस्तुअनेका । जोजगयोगभूपअभिषेका ※ ४
वेदविहितकहिसकलविधाना। कह्यउरचहुपुरविविधवितना ५
सफलरसालपुंगिफलकेरा । रोपहुवीथिनपुरचहुँफेरा ※ ※ ६
रचहुमंजुमणिचौकैंचारू । कह्यउबनावनबेगिबजारू ※ ※ ७
पूजहुगणपतिकुलगुरुदेवा । करहुविप्रकहुभूमिसुरसेवा ※ ८
दो० ध्वज पताक तोरण कलश सजहु तुरग रथ नाग ॥
सिरधरि मुनिवरबचनसब निजनिजकाजहिलाग १

तब वशिष्ठजी ने हर्षिकै कहा कि अभिषेकहित सर्व सुष्टुतीर्थनके जल मँगावो [१] औषध ओषधी मूल संयुक्त अरु नाना प्रकारके फूल फल अरु अपर मङ्गल के पदार्थ औषध कही उत्तम अन्न ओषधि कही वनस्पति इत्यादिक [२] चामर कहो चमर अरु चर्म्म कहो मृग सिंह चर्म्म अरु अनेक भांतिके बस्त्र अरु रोमपट दुशाला बनात इत्यादिक अरु नाना प्रकारके पाटके पट [३] अरु जहां तक अनेक जातिनकी मणि अरु जहां तक मङ्गल की बस्तु अनेक जो राज्याभिषेक के योग्य होहिं सो संपूर्ण मँगावहु [४] अरु बेदविहित अनेक विधि विधान की बस्तु मँगावहु अरु पुरविषे बिबिध प्रकारके बितान रचहु [५] अरु फल संयुक्त आंब सुपारी केरा नारियर गलिन में अरु पुरके चहुं पास आरोपण करहु [६] अरु मञ्जु मणिनके चौकैं रचहु अरु बजारनको रचना सुन्दरि करहु [७] गणेश कुल गुरु देवता गुरु कहो श्रेष्ठ तिनकहँ पूजहु अरु बहुत प्रकारते ब्राह्मणनकी सेवा करहु [८] दोहार्थ ॥ अरु ध्वजा पताका तोरण कलश अरु तुरंग रथ नाग कही हाथी ये संपूर्ण सजहु जाइ तब मुनिके वचन शीशपर धरिकै निज निज कार्य विषे लागत भये [१] ॥

जोहिमुनीशजोआयसुदीन्हा । सोजनुकाजप्रथमतेइँकीन्हा १

हर्षितहृदयदशरथपुरआई ॥ जनुग्रहदशादुसहदुखदाई ॥ ८

दो० नाम मंथरा मंदमति चेरि कैकयीकेरि ॥
अजसपेटारीताहिकरि गईगिरामतिफेरि ९

(९) शारदा जो है सो देवतनकी बिनती सुनकर ठाढ़ि पछितातिहै कि मैं अवध सरोज बनकी हिमराति भइउं (१) शारदाकी दशा देखिकै देवता कहतेहैं कि हे मातु तोरि खोरि कछुउ नहीं है (२) काहेते कि श्रीरघुनाथजी विस्मय हर्षते रहितहैं अरु तुम श्रीरघुनाथजी के स्वभावको जानतीहौ (३) हे मातु जीव जोहै कर्मके वश दुःख सुखको भागीहै अरु श्रीरामचन्द्र तो परमेश्वर हैं ताते देवतनके हेतु लागि श्री अयोध्या को जाहु (४) बारबार देवता शारदाके चरण गहिकै सकुचावतेभये तब शारदा संकोच के वश ह्वैकै देवतनकी मति पोचीकहौ तुच्छ जानिकै चलतभई (५) देखिये तौ देवतन को निवास तौ ऊंचहै करतूति बड़ी नीचि अरु पराई विभूति नहीं देखिसकते हैं (६) यह शारदा विचारकीन कि आगिलकाज कहौ यह कि श्रीरामचन्द्र बनको जाहिंगे तौ ब्राह्मणन सन्तनको कार्य्य होइगो ताते कुशल कहौ पण्डित कविजन मेरी चाहना कहौ सराहना करहिंगे (७) यह समुझिकै हृदय में हर्षिकै दशरथ पुरको आवत भई जनु कुपित ग्रहकी दशा दुःखदायी आइकै प्राप्तभई है (८) दोहार्थ ॥ हे भरद्वाज मंथरा नामे कैकेयीकी चेरी तेहिको अयश की पेटारी कहौ अयश को भाजन करिकै मति फेरिकै शारदा जातिभई (९) ॥

१६ दीखमंथरानगरबनावा ॥ ॥ मंजुलमंगलबाजबधावा ॥ ॥ १
पूछेसिलोगनकाहउछाहू ॥ रामतिलकसुनिभाउरदाहू ॥ २
करैबिचारकुबुद्धिकुचाली । होइअकाजकवनबिधिकाली ३
देखिलागिमधुकुटिलकिराती । जिमिगवँतकइलेउँकेहिभांती ४
भरतमातुपहँगइबिलखानी । काअनमनिहसिकहहँसिरानी ५
उतरुदेइनलेइउसासू ॥ नारिचरितकरिढारइआंसू ॥ ६
हँसिकहरानिगालबड़तोरे । दीनलखनसिखअसमनमोरे ॥ ७
तबहुंनबोलिचेरिबड़िपापिनि । छाड़इस्वासकारिजनुसांपिनि ८

दो० सभयरानिकह कहसिकिन कुशलराम महिपाल ॥
भरत लखन रिपुदवन सुनि भा कुबरी उरशाल १

१६ तब मंथरै महलपर चढ़िकै नगरको बनाव देख्यो कि मंगल मोद बधाई बाजतीहै (१) पुनि मंथरा बाहेर निकसिकै लोगनते पूछती भई है कि नगरमें आजुका उत्सव है तहां राम तिलक सुनिकै हृदय मों दाहहोतभयो (२) तब मंथरा कुबुद्धिनि बिचारति है कि काल्हि यहि तिलककी अकाज कवनी तरहते होइ (३) कैसे अकाज

चाहतीहै जैसे किराति माखिनका मधु लेबेको तकै है (४) तब बिलखाइ कही शोच करिकै कैकेयी के इहां भ्रांति भई तब बिहँसिकै रानी बोलती अरु पूंछतीभई कि तैं कस अनमनहसि (५) तब मंथरा उत्तर नहीं देती अरु उसासलेतीहै स्त्री चरित्र करिकै आंसू ढारती है (६) तब रानी हँसिकै कह्यो कि तोको गालढाढ़ी बहुत आवती है मेरे मनको अस समझि परतहै कि लक्ष्मणजू कछु शिक्षकही दण्डदीन है (७) हे पार्वती तबहुंन बोली चेरि बड़ि पापिनि श्वास छाड़ती है जैसे कारी सांपिनि (८) दोहार्थ ॥ तब भय संयुक्त रानी बोलती भई हे मंथरा तैं काहेकि कहनहीं तैं सत्यकहु श्रीराम चन्द्र अरु राजा अरु भरत शत्रुहन कुशलते हैं इतनी सुनिकै मंथरा के श्याल कहो दुःख होतभयो (१) ॥

१७ कतसिषदेइहमहिंकोउमाई। गालकरबकेहिकरबलपाई १
रामहिंछांड़िकुशलकेहिआजू। जिनहिंजनेशदेहिंयुवराजू २
भयोकौशलहिंविधिअतिदाहिन। देखतगर्वरहतउरनाहिन ३
देखहुकसनजाइसबसोभा *। जोअवलोकिमोरमनछोभा * ४
सोचतुम्हारे *। जानतिहौवशनाहहमारे * ५
हुतप्रियसेजतुराई *। लखहुनभूपकपटचतुराई * * ६
सुनिप्रियवचनमलिनमनजानी। झुकीरानिअबरहुअरगानी ७
पुनिअसकबहुंकहसिघरफोरी। तौधरिजीभकढ़ावौंतोरी * ८
दो० काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ॥
तियविशेषपुनिचेरिकहिभरतमातुमुसुकानि १

१७ इहां मंथरा कैकेयीके वचनपर उत्तर देती है अपनी उक्तिसे अपनी दीनता जनावती है जिसमें रानी भोसे फेरि बूझें इहां माईकही मंथराको जो मायाकरै ताको माईकही किन्तु माईकही कैकेयीको बड़ाईदैकै कहती है हमको कोई काहेको शिष देयकही दण्डदइगो अरु हमके केहिकर बलपाइकै गालाकही गालाढ़ी करब (१) हे रानी रामहिं छांड़िकै आजु और केहिकर कुशल है जिनको राजा काल्हि राज्यदेहिंगे (२) आजु कौशल्याजीको बिधाता दाहिन भयो है तिनके समानको है जिनके देखतही कोऊ काहूको गर्व नहीं रहत है (३) अरु तुम पुरकी जो सम्पूर्ण शोभा कसनाहीं देखती हौ जो अवलोकिकै मोरमन क्षोभित होत भयो है इहां क्षोभ कही मोहित भयो अरु सन्देह भयोहै [४] मंथरा कहतीहै कि हे रानी तुम्हारे पूत भरत सो तो विदेश में हैं अरु तुम्हारे तिनकी शोच नहीं है काहेते नाह जो राजा दशरथ हैं तिनको अपनी वश जानती हौ [५] अरु पियकी सेज विषे तुराई कही रजाई है अति सुन्दरि कोमल तेहिपर तुमको निद्रा बहुत पियारि है अरु भूपके कपट की चतुराई तुम नहीं जानती हौ [६] इहां मंथरा रानी को तो प्रियकहै है परतेहि

बाणीके भीतर अति प्रियहै अप्रिय बाणी सुनिकै कैकेयी झुकतभई हाथ चलाइबेको चेरी अरगाइ कै कह्यो सिमिटिकै चुप ह्वै रह्यो तहां जब राजाको कपटी कह्यो तब रानी विशेषते हाथचलाइबे को झुकी [७] पुनि कैकेयी बोली हे घरफोरी जो ऐसी बात फिरि कबहुं कहसि तौ धरिकै जीभ कढ़ाइ डारोंगी [८] दोहार्थ ॥ सो यह शास्त्र कहते हैं कि काने अरु खोरे कही कोई अंगके हीन जेहैं अरु कुबरे जेहैं कपट कुचाली के घर जेहैं अरु त्यहि विषे स्त्री अरु चेरी कही टहलुई सो तेहि विषे सब अवगुण हैं यतना कहिकै भरतकी माता मुसुकाती भई काहेते की अन्तष्करण में वाहिपर प्रीति है ऊपरते अनीति सुनिकै कह्योहै वाह्य मर्ष बाणी कही [१] ॥

नेहुंतोपरकोपनहोहीं २
* । तारकहापुरजोहिदिनहो
ज्येठस्वामिसेवकलघुभाई * । यहिदिनकरकुलरीतिसहाई ३
रामतिल २ । ऊँ मांगुमनभावतआली * ४
। हजसुभायपियारी * ५
मोपरकरहिंसनेहबिशेषी * मैंकरिप्रीतिपरीक्षादेखी * ६
जोविधिजन्मदेइकरिछोहू * । होहिंरामसियपूतपतोहू * ७
प्राणतेअधिकरामप्रियमो । तिनकेतिलकछोभकसतो ८
१० भरत शपथ तोहिं सत्य कहु परिहरि कपट दुराव ॥
हर्ष समय बिस्मय करसि कारण मोहिं सुनाव १

१८ तब कैकेयी बोली हे प्रिय बादिनी तैंतो मोको प्रिय कह्यो श्री रामचन्द्र के राज्याभिषेक की बार्त्ता कहै है तौ कि जामैं शिषकही रिसि आनिहुं है सो तैं कछु अनुचित कहै सो अपने मनमें शोच जनि मानसि तैंमोको बहुत प्रियहसि तोरे ऊपर मोरे सपनेहु कोप नहीं है [१] हे मंथरा जो तैं कहसि कि काल्हि श्री रामचन्द्रकर तिलक होइहि अह तोर कहा जो काल्हि पूरभयो तो सोई सुदिन सुमंगल दायक है [२] सुनु हे प्रिया हमारे रघुबंश कुलकी यही रीति है कि ज्येष्ठ पुत्र स्वामी है अरु छोटा सेवक है [३] हे आली जो काल्हि श्री रामचन्द्र को तिलक होइ तौ तोको मैं मन भावत बरदेउंगी [४] अरु श्री रामचन्द्रजू को तौ कौशल्याके समान सबमाता सहजहिं प्रियहैं [५] अरु सबते मोपर बिशेष स्नेह करते हैं मैं प्रीति करिकै परीक्षा लीनिहै [६] जो यहि जगत् में बिधाता छोह करिकै जन्म देइ तौ सीता राम ऐसे पूत पतोहू देइँ [७] हे मंथरा प्राणहुंते अधिक श्री रामचन्द्रजी मोको प्रियहैं तिनके तिलकको छोभ कहो सन्देह शोक तोको कसभयो है [८] दोहार्थ ॥ हे मंथरा तोको भरत की शपथ है तैंसत्य कहु इहां हर्ष के समय में तैं विस्मय करति है सो यहि क्रूर कारण तैं मोहिंको सुनाउ तहां कैकेयी भरतकी शपथ करावा है कि कपट

छोड़िकै कहु तहां मंथरा सब कपट कहाउ है कि यह महा भागवता पराध भयोहै तहां भरतजी श्री रामानुज तिनकर भक्त शत्रुहन तिनके दण्ड दियेते अपराध शांतभयो है अथवा भरत हेतुकपट कहाउहै तातेमान्तभयो यहदुइ न होते तौ कोजानैका होतो १॥

१९ एकहिबारआसासबपूजी । अबकछुकहबजीभकरिदूजी * १

फोरैयोगकपारअभागा । भलोकहतदुखरौरेहिलागा * * २

कहइझूठफुरिबातबनाई । तेप्रियतुमहिंकरुमैंमाई * * ३

हमहुंकहबअबठकुरसुहाती । नाहिंतोमौनरहबदिनराती * ४

करिकुरूपबिधिपरबशकीन्ही । बाचाशालहमैंतिन्हदीन्ही ५

कोउनृपहोइहमैंकाहानी । चेरिछांड़िनकहाउबरानी * * ६

जारैयोगस्वभावहमारा । अनभलदेखिनजाइतुम्हारा * * ७

तातेकछुकबातअनुसारी । क्षमबदेविबड़िचूकहमारी * * ८

दो० गूढ़कपट प्रियबचन सुनि तीय अधर बुधि रानि ॥
सुरमाया बश बैरिणी सुहृद जानि पतियानि १

१९ इहां सरस्वती की प्रेरणाते युक्ति करिकै अति उक्ति कहती है जामें रानीके कहे बचन मन्द परिजाइँ अरु मंथरा की बाणी में प्रतीति आवै हे रानी एक ही बार कहेते संपूर्ण आश पूरी भई काहेते कि तुम कहेउ कि जो तैं दूसरी बात कहिहै तौ जीभ कढ़ाइ डारिहौं ताते अब दूजीजीभ कहांपाऊं जाते तुमसे कहौं [१] अरुहे माई कपार फोरिबे योग्य है काहे ते जो रौरे को नीक कहत सो अनहित लागत है[२] अरु जेकोई झूंठ को फुर करिकै कहतेहैं अरु फुरको झूंठ करिकै कहते हैं सोतुमको प्रिय लागतेहैं अरु जो हमसांची कहतीहैं आपको हितकारकरिकै सोआपुको करू लागतीहै हेमाई [३] अबहमहूंठकुर स्वहाती कहब जामें तुम प्रसन्न होहु चाहेनीक होइ अरुचाहे बेकार होइ अरु कीतौ राति दिन मौन ह्वै रहब [४] अरु एक तौ बिधातैं हमको कुरूप दीन है पुनि परबश कियोहै ताते बाचाशाल कहो जामें अवर के वचन बाण समान सुने अरु सहिकै चुप ह्वै रहै तैसा सहतै बनैहै ऐसा बिधाता हमको कीनहै [५] ताते हमको का हानि है का लाभहै चाहै रामचन्द्र राजा होइँ अरु चाहै भरत राजा होहिं हम चेरि छांड़िकै रानी न कहाउब [६] ताते हम का करैं हमारो स्वभाव जारै योग्यहै काहेते तुम्हारा अनभल हमसे नहीं देखि जातहै इहां लोकोक्ति बाणीमें मर्म्मोक्ति बाणी कहिकै कपट सानिकै बृथा अर्थको सत्यार्थ सिद्धि करती है [७] हे रानी तुम्हार अनहित हमसे नहीं देखि जाइहै ताते तुम्हारे हितको कछुक अनुसार करिकै कहा है हे देवि ताते हमारी बड़ी चूक माफ करहु यामें यह अभिप्राय है कि आगे बहुत कहना है काहेते पाखण्डी जेहैं ते अपनी बात बढ़िकै कहते हैं जामें अगिला को बड़ी बात में प्रतीति परै यह अति छलोक्ति बाणी कहावैहै [८] ॥ दोहार्थ ॥ गूढ़ कपट बाणी

कही प्रिय वाणी में कपट छाया है जे कोई स्थूल बुद्धिहैं ते ऊपर की रंजित वाणी सुनिकै खुशी होतेहैं अरु इसकी वाणीमें अवांतर कपट सो परिणाम में दुःख देते हैं सो समुझिबे को महीन बुद्धि चाहिये यह गूढ़ोक्ति अलंकार है तहां कैकेयी मंथरा के कपट को तो समुझति नहीं है अरु ऊपरकी प्रियवाणी सीधी जानत भई काहेते कि स्त्री की जाति दुर्बुद्धी अरु सुर माया की प्रेरणा ताते बैरिनि रूप जो मंथरा ताको सुहृद मानिकै पतियाती भई [१] ॥

२० सादरपुनिपुनिपूछतओही * । सबरीगानमृगीजनुमोही * १

तसिमतिफिरीअहइजसिभावी । रहसीचेरिघातजनुफावी * २

तडेराऊं * * । धरेउमोरघर * * ३

सजिप्रतीतिबहुबिधिगढ़िछोली । अवधसाढ़सातीजनुबोली ४

रानी । रामहिंतुमप्रियसोफुरबानी ५

दिनसोअबबीते * * । समयफिरेरिपुहोहिंपिरीते ६

। बिनुजलजारिकरैसोइछारा ७

जरतुम्हारिचहसवतिउखारी । रूंधहुकरिउपायबरबारी * ८

दो० तुम्हें न सोच सोहाग बल निज जानहु राव ॥

२० तब कैकेयी मंथराते बार बार सहित आदरते पूछति भई जैसे शबरी कही किरातिनि तेहिके गानते मृगी मोहित होती है [१] हे पार्वती जस भवितव्यता रही तस कैकेयी की मति फिरत भई तब चेरी जो है मंथरा रहसि कही हर्षित होतिभई कही फाबी कही मंथराकै घात कैकेयी पर मारने को सही भई [२] इहां वाक्य छल करिकै कैकेयीको मारना चाहती है तब चेरि बोली तुम मोसों पूछति हौ अरु मैं कहतिकै डेरातिहों काहेते कि तुम मोर घरफोरी नाम धरेउ है [३] हे भरद्वाज अनेक छल गर्वित बचन बोलती भई जैसे कोई सुन्दरि मिठाईमें विष सानिकै खवावै तैसे मंथरा की बाणीहै कैकेयी पर तहां प्रतीति सजिकै अच्छी तरह गढ़िकै छोलिकै अवध के साढ़साती रूप बचन बोलती भई साढ़साती कही शनिश्चर को मूर्तिमान करति भई तहां जब शनिश्चर ग्रह जीवन पर आवतेही चढ़त हैं तब साढ़े सात वर्ष रहत हैं प्रथम नेत्रन पर पुनि उदर में पुनि दोऊ चरणन में तहां तीनि महीना उतरत छः महीना निर्बिघ्न रहत हैं अरु सातवर्ष दुःख रूप हैं तहां मंथरा के जनाये ते कैकेयी दुइ वरदान मांगैगी सो दूनों शनिश्चर शनैश्चरी हैं इहां मंथराकै बाणी चौदह बर्ष को शनिश्चर शनैश्चरी भई है ताते दूनों करिकै चौदह बर्ष को यह अयोध्या बिषे चढ़त भई अरु दूनोंको कारण मंथरा होत भई अयोध्याके नेत्रन ते श्रीरामजी ओट होत भये अरु अयोध्याके उदर ते निकसि गये अरु पद कही मर्यादको तहां श्री भ-

योध्याको मर्याद श्रीरामचन्द्र हैं ते धनको जारिहैं ऐसे कैकेयी के वचन धनैश्चर धनैश्वरी हैं मथरा कारण है ऐसो जो मंथरा है सो बोलती भई [४] हे रानी तुम जो कहा कि सीताराम मोको बहुत प्रिय हैं अरु तुम सीताराम के बहुत प्रियहौ सो सत्यहै फुरहै [५] सो जो तुम कहाउ सो प्रथमहि दिन जोरहैं सो बीत गयहैं हेरानी समय गयेते प्रियतम रिपु हुइजाते हैं [६] हे रानी तुम देखहु भानु जोहैं सो कमल के कुलको पोषण करत हैं अरु जब जल नहीं रहत तब वही सूर्य कमल को जारि डारते हैं तैसे तुम राजाको बहुत प्रियहौ पर जब रामचन्द्र राज्यपर बैठहिंगे तब कौशल्या करिकै राजा तुम्हारे बैरी हुइजाहिंगे [७] हे रानी तुम्हरी जो कौशल्या सवति है सो जड़ उखारा चाहती है सो तुम उपाय रूप बारी करहु नाम रूंधहु [८] दोहार्थ॥ अरु तुमको अपने सोहाग के बलते शोच नहीं है काहेते कि राजा को अपनी बश जानती हौ अरु राजा तो मुखके मीठेहैं पर मन के मलीन हैं अरु रौरे कर सहज स्वभाव है यह जो मैं कहा है सो तुम सत्य मानहुं [१] ॥

गँभीरराममह तारी * * । बीचपाइनिजकाजसँवारी * १
पठयेभूपभरतननिऔरे * * । राममातुमतज रे * * २
। सवति
रचिप्रपंचभूपहिंअपनाई । राम
सेवहिंसकलसवतिमोहिंनीके ।
आलतुम्हारकौशलहिमाई । कपटचतुरनहिंहोतजनाई * ६
यहि त । सबहिंरवहाइमोहिंसुठिनीका ७
निजफलबोहीं * ८
दो० रचिपचि कोटि कपट प्रबोध ॥
कहसि कथा शतसवतिकै जेहिबिधि बाढ़बिरोध १

२१ हे रानी श्रीरामचन्द्रकी माता बड़ी चतुर है अरु गम्भीर है यहबीच पायकै अपनी बातनमें कार्यको सँवारत भईहै (१) कौनबीच पायकै सँवारती भईहै कि राजा भरतको ननिऔरको पठावत भयोहै सो रामचन्द्रकी मातहिको मतहै यह रौरे नीको प्रकारते जानब (२) अरु राजाकी तुम्हारे ऊपर अतिप्रीति है सवतिकर यहस्वभाव है कि औरेके सुखनहीं देखिसकै है (३) कौशल्याजू बड़ीचतुरी हैं अनेक प्रपंच करिकै तब राजाको अपने वशकीन तब राजाने रामचन्द्र के तिलकहेतु लग्न धराईहै (४) यामें काहेतुहै कि जाते भरतकी माता राजाके बलते बहुत गर्वित है जब श्रीरामचन्द्र कर तिलकहोइ तब भरतकी माता हमारे बशहै जाइ हमारी सेवाकरै कौशल्याजू यह बिचारकीन राजाको अपने बशकियो है (५) तहां तुम्हार आदर राजाके जानिकै कौशल्याके शालहोतहै अरु परम चतुरहै ताते जनाई नहीं परत है (६) तुम जो कहाउ

कि हमारे कुलकीरीति है कि ज्येष्ठभ्राताको तिलकहोइ तहां जो सबको स्वहाल है तो हमको सुठिनीक है [७] तहां अ.निजिबात समुझिकै मोको दुःखहोत है ताते हे दैव जेहि कौशल्यैने कैकेयीको अनभल ताकाहै स उहैफल कौशल्या.को उलटिकैहोइ हे बिधाता तहां मन्थराके वचनमें आगे द्वैदिशि कलाइहो अभिप्रायहै यहकहतो है भरत कै राज्यहोइ जाते कैकेयीको सुख अरु कौशल्या को दु.खहोइ तहां द्वैदिशि दुःख भयोहै तहां कैकेयीके सम्मत में असहोत है [८]दोहार्थ ॥ हे प र्वती रचिकै पचिकै तर्कबढ़ाइ कोटिन कुटिलपन करिकै अपने बचनमें रानीको प्रवोध करतीभई पुनि सरस्वतीकी प्रेरणाते सेकरन सवतिन की कथा शास्त्र प्रमाण से कहतीभई जेहि प्रकरते बिरोध बाढ़ै [१]॥

* ।।।नपुनिमायपरबाइ * १

काpूछहु तुमअजहुंनजाना।निजहितअनहितपशुपहिंचाना २

।दिनसजतसमाजू * । तुमपाईसुधिमोसनआजू * ३

खाइयपहिरियराजतुम्हारे * । सत्यकहेनहिं दोषहमारे * ४

अ । तौबिधिदेइहिहमोहिसजाई * ५

रामहिं हि ... बयउ

रेखखँचायकहौंबलभाषी * । भामिनिभइउदूधकैमाखी * ७

जोसुतसहितकरहुसेवकाई * । तौघररहहुनआनउपाई * ८

दो० कद्रू बिनतहि दीन दुख तुमहिं कौशलादेव ॥
भरत बन्दिगृह सेइहहिं लखण रामके नेव १

२२ हे पार्वती भावीके बश मंथराके वचनमें प्रतीति आवतीभई तबरानी पूछि कै शपथ देवावतीभई [१] हे रानी तुमका पूंछतीहौ अजहूं नहीं जानतीहौ निजकहो आपन हित अनहित पशु पहिचानतेहैं [२] हे रानी देखौतौ राज्यका सरंजामसजत पन्द्रहदिन भयउहै अरु तुममोसों आजु सुधिपाईहै देखिये तौ देवमायाके बश मंथरा येतो गूढ़कहतीहै कि पन्द्रह दिन श्रीराम राज्यहेतु साज सजत भयो है अरु राजा ने एकहिदिन बिचारकीन है पर सरस्वती करिकै मंथराकी बाणी अर्थमय है कि पक्ष के भीतर एकदिनहै [३] उत्साहमें यह कहिबेको बड़ापाप है पर यहकहेते हमको पाप नहींहै काहेते कि तुम्हारे राज्यमें खाय पहिरि संपूर्ण सुखकियेहैं ताते सत्यकहेते हम को कुछदोष नहीं है [४] अरु जोहम कछु बनायकै कहतिहोब तौ हमको बिधाता सजाइदेइगो यहिब.तमें जितनो मंथरा छलकरि कपट अरु असत्यमय वचन कहिआई है तेहिकोफल विधाता जहरकै शत्रुहनके हाथन देइगो [५] अबमैं प्रणकरिकै कहतिहौं कि जो कालिह श्रीरामचन्द्र को तिलकभयो तौ तुमको बिपतिकाबीज बिधाता बोइचुक्योहै यहिमें वचन विपर्यय करिकै सरस्वती अर्थ करतीहैं न तो श्रीरामचन्द्रकर

तिलकहोहि अरु न भरत राज्यकरहिंगे अरु कैकेयीको विपतिकाबीज विशेष बोइगयो है [६] अब मैं तीनिरेख खिंचाइकै कहतिहौं हे भामिनि तुम दूधकी माखी भइउ है जैसे दूधमें माखीपरिकै मरिजाइ पर उसमाखीको निकारिकै दूधपान करिजाइ है तैसे तुम्हार बिगारहै अरु कौश याकीको यशहोइगो [७] अरु जो तुम सहित पुत्र कौशल्या जीकी दास्य टहलकरौ तौ अयोध्यामें परिरहौ नहीं तौ तुम्हारे रहिबेकः कछु उपाय नहींहै [८] दोहार्थ ॥ तहां जैसे कद्रू बनताको दुःखदीन है तैसेही कौशल्या तुमको दुःखदेहिंगी नेवकहीमंत्रको तातें यह तौ कौशल्यै मंत्रकीनहै कि श्रीरामचन्द्र राजाहोहिं अरु लक्ष्मणजी राज्यके अधिकारी होहिं अरु भरतजू बंदीमें रहें यह मंत्रकीनहैतहांकद्रू और विनता यहदूनों कश्यपकी स्त्रीहैं तहां कद्रू नागनकी माताहै अरुविनता गरुड़की माताहै तहां एकसमयमें कद्रूविनतातें बादभयो तहां कद्रूबोली कि देखौतौ चन्द्रमाश्याममहै अरु विनता बोली चन्द्रमातौ प्रमाणहु अरु प्रत्यक्षहूमें श्वेतहै तहां दूनोंमें ब द भयोहै कि जोहारै सो त्यहिकी दासीहोय तबकद्रू अपने पुत्रनको आज्ञादीन तब सर्पन जाइकै चन्द्रमाको आच्छादन कीन तब चन्द्रमा श्यामदेखि परोहै तबविनता हारिकै बहुत काल ताईं दासी टहल कीन तबकिसी कालमें गरुड़ अपनी मातासे पूंछतभये कि हेमातु हमतुमको दुःखित देखतेहैं तबमाता सम्पूर्ण प्रसंग कहिगई तब गरुड़ सर्पनको भक्षणकीनहै तबविनताको उद्धारहोतभयोहै तैसेकपट संयुक्त करिकै तुम्हारी कौशल्या की रीतिहोइ चाहतीहै किंतु सूर्यके घोड़ेविषे बादभयोहै रीतियहूहै (१) ॥ इतिश्रीराम चरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अयोध्याकाण्डे मन्थरावाक्यैतिप्रतिविज्ञकिकैकेयीप्रतिबर्णननामद्वितीयस्तरंगः २ ॥

दो० बचन मन्थरा कपट करि तृतिय तरंग विषाद ॥
राम चरण कैकयी प्रति नृपहठ युत संवाद ३

२३ केकयसुतासुनतकटुबानी। कहिनसकतिकछु
तनपसेवकदलीजिमिकांपी। ［illegible］ * २

कीन्हसिकठिनपढाइकुपाठू। जिमिनवमैंफिरउकठाकाठू ४
फिराकर्मप्रियलागिकुचाली। बकिहिसराहतिमानमरालीं ५
सुनुमंथराबातफुरितोरी *। दहिनिआंखिनितफरकेमोरी * ६
दिनप्रतिदेखौंरातिकुसपने *। कहौंनतोहिंमोहबशअपने * ७
काहकरौंसखिसूधसुभाऊ। दाहिनबामनजानौंकाऊ * ८
दो० अपने चलत न आजुलगि अनभल काहुक कीन ॥
कर्हिअघ एकहिबार म्वहिं दैवदुसह दुखदीन १

तब राजा केकयकी सुता कैकेयी मंथराकी कपट बाणी

डरिकै सुखाइ गई कछु कहिनहीं सकतीहै (१) तबकैकेयीके तनमें पसेवभयोहै औ तन कम्पित भयोहै जैसेपवनके बेगते कदली तरु कम्पितहोत है तबकुबरी अपने दांतन तर जीभ दाबती भई (२) जीभ दाबिकै यह कहती भई कि हाय हाय तुमकाहेको शोच करतीहौ तुम्हींको तोसुख होइगो अस कहिकै कोटिन कपटकी कहानी कहि कहि रानीको प्रबोध करतीभई(३) हेगरुड़ कोटिन कपटकर कुपाठपढ़ाइ कै पोढ़करिदीन्हासिजामें काहूको उपदेश न लागै जैसे एकठा काठ नहीं नवैहै (४) हे पार्वती कैकेयीके कुकर्म्मकी गति फिरि गईहै अरु कुचाल प्रियलागीहै मंथराको सराहतीहै जैसे मानसरकी हंसिनि को बकुली सराहै है (५) हेमंथरा तोरिबात फुरिहै काहेते आजुकै और दिनते मेरेदाहिन अंगसब फरकते हैं हे पार्वती कैकेयी सत्यकहै है काहेते कि असगुनको फल आगे प्रत्यक्ष है (६) अरु दिनप्रति रात्रि विषे कुस्वप्न देखतीहौं अपने मोहके वश मैंतोको नहींजना- योहै काहेते कि राजा मेरेवशहैं (७) हेसखी मैंकाकरौं मूध स्वभावते मोको दाहिन बाम नहीं समुझि परतीहै काहेते अब जानि परीहै (८) दोहार्थ ॥ हेसखी आजु ताईं आपन बूतचलत हम काहूको अनभल नहीं कीनहै को जाने अपने कौन अपराध ते आजुविधा- ता एकही बार दुसह दुःखदेतहै (९) ॥

२४ नैहरजन्मभरबबरुजाई * । जियतनकरबसवतिसेवकाई * १

अरिबशदैवजिआवैताही । मरनानीकतेहिजीवनचाही * २

दीनबचनकहैबहुबिधिरानी * । सुनिकुबरीतियमायाठानी ३

अस कस कहहु मानमनऊना । सुखसोहागतुमकहँदिनदूना ४

जेइंराउरअतिअनभलताका । सोइपाइहियहफलपरिपाका ५

जबतेकुमतिसुनामैंस्वामिनि । भूखनबासरनींदनयामिनि ६

पूछेउंगुनिनरेखतिनखांची । भरतभुवालहोहिंयहसांची ७

भामिनिकरहौंसोकहुउपाऊ । हैतुम्हरीसेवाबसराऊ * * ८

दो० परौं कूप तुवबचन पर सकौं पूत पति त्यागि ॥

कहसिमोरदुखदेखिबड़कसनकरबहितलागि २

तब कैकेयी बोली हे मंथरा बरु नैहरमें जन्म व्यतीत करब पर जियत तौ सवतिनकी सेवकाईन करब (१) काहेते कि अपने बैरीके वशहूकै जेहिको दैव जियावत है तोवहि जीवनते मरण भलाहै (२) हे भरद्वाज रानी कैकेयी अति दीनबचन बोलती भई तब कुबरी सुनिकै जैसो कछु स्त्रिनकी मायाहै सोठानी कहो दृढ़करिकै कहतभई (३) तबमंथरा छलमयबाणी बोधकरतीहै सो वाणी कैकेयी को यथार्थ लागतीहै हेरानी तुम अस समुझिकै कसमन में ऊनहो संदेहमानतीहौ तुमकोतो दिनदिन प्रतिदूनसुख सुहाग है (४) जेइँकौशल्या ने रावरकर अति अनहित ताक्यउहै सो वही यह फलको परिपाक कहो दृढ़ करिकै परिणाम में प्राप्त होइगो (५) हे स्वामिनि पक्ष दिन भयउ जबते

मैंने यह कुमति सुनी है तबते मोको न तौ दिन में भूंख लगै अरु नतौ रातिमें निद्रा आवै [६] हे रानी गुणी जेहैं ज्योतिषी तिनते मैं पूंछाहै तिन रेख कही लोक खिंचाइकै कहा है कि भरत राजा होहिंगे सो यह सत्यहै [७] हे भामिनि जो हमार कहा तुम करौ तौ हम उपाय बतावैं काहेते कि राजा तुम्हारी सेवा के बश हैं [८] दोहार्थ ॥ तब कैकेयी कहती है कि हे सखी तोरे बचन पर कूप मैं परौं अरु पूत पतिको त्यागि देउँ काहेते तैं मोरे परम हितकी बात कहति है अरु हमार बड़ा दुःख देखिकै कहति हसि तोर कहा बिशेषिकै हम कस न करब देखिये तौ मंथरा कर कहा सुनिकर कैकेयीने संकल्प कीन कि कूप परौं पूत पति त्यागि देउँ सो सत्य भयो है कैकेयी विधव पन कूपमें परी अरु पूत पतिको त्याग भयोहै [९] ॥

२५ कुबरीकरकबुलिकैकेयी * । कपटछुरीउरपाहनटेई * * १
लखैनरानिनिकटदुखकैसे * । चरइहरि [illegible]
सुनतबचनमृदुअंतकठोरी * । देतमनहुँमधुमाहुरघो [illegible] * * ३
[illegible] किनाहीं [illegible] । ४
दुइबरदानभूपसनथाती * * । मांगहुआजुजुड़ावहुछाती * ५
सुतहिराजरामहिंबनबासू * । देहुलेहुसबसवतिहुलासू * ६
भूपतिरामसपथजबकरई * । तबमांगेहुज्यांहिबचननटरई ७
। * ८

ात करि पातकिनि

हे पार्वती कैकेयी बलि भई है तेहिकर कच कही बार सो कूबरीने अपने हाथमें गह्यो है अरु कपट सोई छुरीहै उरपाहनमें टेवतीहै भरतकी राज्य हेतु कैकेयी की कामना देवतार्थ बलि चढ़ावा चाहती है तहां फल असिद्ध है अरु विधवपन स्त्रीको मरण है (१) तहां निकट आइकै रिपु प्राप्त भयोहै अरु रानी नहीं लखैहै कैसे जैसे बलि चढ़ाइबे को पशु आयो है ताको हरित तृण दारिद्य सो खायजायहै अपनी मृत्यु न जानै तैसे मंथराको वचन हरि तृणवत् है मंथरा अरि है कैकेयी बलि पशु है मंथरा के बचन में अन्तक्लेश है [२] तहां मंथरा को वचन सुनत सन्ते तौ कैकेयी को मृदु अरु मधुर है पर अन्तमें कठोर अरु दुःखदायी है कैसे जैसे बराबर मधु अरु माखन मिलेते बिष ह्वै जात है जो कोई खाइ तौ मरिजाय है तहां मंथराको बचन मधु है अरु भरत को राज्य सो माखन है तेहिको बचन कैकेयी ने सत्य मानि कै प्रतीति कियोहै सोई खाबहै किंतु मधु माखन सो दूनों बरोबरि दूनों वरदानहैं सो मंथरै दीन कैकेयी आपु खाती है अरु कैकेयी को मरण बिधवपन है सोई दशरथ महाराज को देइगी [३] तब चेरी जो है मंथरा सो कहती है कि हे भामिनि म्वहिंसे एकबार वचन

तुम कह्यउ रहै सो सुधिहै कि नाहींहै तहां भामिनि कही प्रिय वचन किंतु हे दशरथ भामिनि कही जो बे प्रयोजन कथिकरै [४] हे रानी जो राजै तुमको दूनों बरदान दीन है सो तुम्हारी थातीहै राजाके पास सो बरदान मांगिकै अपनो छाती जुड़ावहु देखिये तौ मंथराकी बाणी में विपर्य्यय अर्थ होत है कि दूनों बरदान मांगि कै छाती जुड़ावहु [५] एक बरदान यह मांगहु कि भरत को राज्य देहु अरु दूसर बरदान मांगिकै श्री रामचन्द्र को बनबास देहु अस बर मांगिकै सब तिन की मालिक तुम ह्वैजाहु हुलास कही आनंदते जो चाही सो देहु लेहु [६] पर हे रानी जब भूपति राम शपथ करहिं तब मांग्यहु जाते वचन न टरैं [७] अरु जो आजुकी राति भरिमें यह कार्य न भयो तौ आजु हू द्वै जाइहि यह मेरो वचन परम हित जानहु हृदयमें धरहु [८] दोहार्थ ॥ पातकिनि जो मंथरा है बरु कुघात करिकै रानीसे कहत भई कि तुम कोप गृहको जाहु अरु सजग ह्वैकै कार्यको सँवारेहु सहसा कही जल्दी न पतियाहु [१]

२६ कुबरिहिंरानिप्राणप्रियजानी । बारबारबड़िबुद्धिबखानी १
त्वहिंसमहितनमोरसंसारा * । बहेजातकहँभइसिअधारा २
। करौंतोहिंचखपूतरिआली ३
कैकेयी * ४
। * । भुइँभइकुमतिकैकयीकेरी * ५
पाइकपटजलअंकुरजामा * । बरदोऊदलफलपरिणामा * ६
कोपसमाजसाजसजिसोई * । राजकरतनिजकुमतिबिगोई ७
। * । यहकुचालककुजाननकोई ८

दो० प्रमुदित पुर नर नारि सब करहिं सुमंगल चार ॥
यक प्रविशहिं यक निरगमैं भोर भूप दरबार १

२६ तब रानी कैकेयीने कुबरी को प्राणहुते प्रिय जान्यहु है अरु बार बार बड़ि बुद्धि बखानती भई [१] तोरे समान हितकारी संसारमें मोको कोई नहींहै बहेजातसंते को मोको आधार भयसि है [२] हे आली जोमोर मनोरथ बिधाता काल्हि पूर्णकरिहि तौ तोको आंखोंकी पुतरी करोंगी देखिये तौ जब अभाग्य आइकै प्राप्त होतिहै तब बिकारमें हित प्रतीति होतीहै अरु हितमें अनहित प्रतीतिहोतीहै[३] तब हे पार्वती बहु प्रकार ते चेरीको आदर दैकै कैकेयी कोपभवनको जातीभई (४) हे गरुड़ कैकेयीकी कुमति भूमिभई अरु विपत्तिबीजभयोहैअरु मंथरा बर्षाऋतुभई (५) अरु चेरीके अन्तष्करण में कपट सोई जलहै अरु विपत्ति बीजको अंकुरहै सो अज्ञान औभरतकोराज्यहोई यह वासनाजो है अरु मंथरा करिकैकैकेयीके मुखतेजोदूनों बरदान निकसैंगे सोई दूनों दल हैं अरु कैकेयीजो अनेक दुर्वचन कहैगी सोई अनेक शाखाहैं अरु मंथराके अनेक कल्पित वचन कैकेयी धारण करिलीन्ह सोईपत्रहैं अरु सुखकी वासना सोई फूलहैं अरु परि-

ग्राममें अनेक दुःख सोई फलहैं (६) तहां कोपकर समाज सब साजिकै परिरही देखिये तौ राज्य करत है आपनि कुमतिते बिगोइकही राज्यकर सुख छूटिगयो है दुःखभयो है (७) राउर कही राजा के मन्दिरको किन्तु राउर राजाको कही तिनको नगर श्री अयोध्या तहां कोलाहल कही आनन्दका शोर ह्वै रहाहै नगर में राजा के अरु महल में यह कुचाल कोई नहीं जानत है (८) दोहार्थ ॥ श्रीअयोध्या के सब पुर नर नारि प्रमुदित मंगलगान करते हैं अरु द्वौ मिलिकै समाय नहीं सकैहैं ताते एकै एक भूपके दरबार में अनेकन प्रविशतेहैं अरु अनेकन निर्गमयकही निकसतेहैं भूप के द्वारमें महा मंगलमय भोर ह्वै रही है (९) ॥

२७ बालसखासुनिहियहरषाहीं । मिलिदशपांचरामपहँजाहीं १
प्रभुआदरहिंप्रेमपहिंचानी * । पूछहिंक्षेमकुशलमृदुबानी * २
फिरहिंभवनप्रियआयसुपाई । करतपरस्परराम बड़ाई * * ३
कोरघुबीरसरिसमसंसारा * * । शीलसनेहनिबाहनहारा * ४
जेहिजेहियोनिकर्मबशभ्रमहीं । तहँतहँईशदेवयहहमहीं ५
[illegible] ।[illegible] * ६
[illegible] । [illegible] * ७
[illegible] * * [illegible] * * ८

दो० सांझ समय सानंद नृप
गयउ[illegible]कैकय सनुबर[illegible]देहसनेह १

२७ यह सुनिकै कि भोर श्रीरघुनाथजीको तिलक होइहि तहां जे श्रीरघुनाथजी के बालहीपन के सखादास ते दशपांच मिलि मिलि श्रीरामचन्द्रजी के समीप जाते हैं [१] तब श्रीरामचन्द्रजी उनको प्रेम पहिंचानिकै यथार्थ आदर करते हैं अरु सबते कोमल वाणीते क्षेम कुशल पूछते हैं [२] प्रिय जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी प्रियबाणी आयसु पाइकै श्रीरामचन्द्रकै बड़ाई परस्पर करतसंते भवनको फिरते हैं [३] यहकहते हैं कि श्रीरघुबीरके सरिस यहि जगत् में शीलस्नेह को निबाहन हार को है [४] जहां जहां कर्म्म के वश हम जन्मैं तहां ईश हमको यही देहिं [५] हम सब सदा सेवकरहैं अरु सीतानाथ स्वामीरहैं हे ईश यहि और इहै निर्वाह देहु [६] यह लालसा लाभमें सब अयोध्यावासी मगनहैं केकयसुता कैकेयी त्यहि के हृदय में अतिदाह है [७] हे गरुड़ कुसंगति पाइकै कोनहीं नशात सबनशाय जातेहैं नीचकर्म्म लियेते कैसऊ चतुराईहोइ तो नाश ह्वैजातो है [श्लोकैक अध्यात्मे १] धीरोऽत्यंतदयान्वितोऽपिसुगुणाचारान्वितोवाथवा नीतिज्ञोविधिवाददेशिकपरो विद्याविवेकोथवा ॥ दुष्टानामतिपापभावितधिया संगंसदाचेद्भवेत्तद्बुद्ध्यापरिभावितोव्रजतिहेत्साम्यंक्रमेणस्फुटं [८] दोहार्थ ॥

हे गरुड़ संग्रामसमयमें आनन्द संयुक्त राजा कैकेयीके भवनमें जातभये मानहु निठुरता के समीप स्नेहदेह धरिकै जातभयो है [१] ॥

२८ कोपभवनसुनिसकुचेउराऊ *। भयवशआगेपरैनपाऊ * १
सुरपतिबसैबाहुबलजाके *। नरपतिसकलरहहिंरुखताके २
सोसुनितियरिसिगयोसुखाई। देखहुकामप्रतापबड़ाई * ३
शूलकुलिशअसिअँगवनिहारे। तेरतिनाथसुमनशरमारे * ४
सभयनरेशप्रियापहँगयऊ *। देखिदशादारुणदुखभयऊ ५
भूमिशयनपटमोटपुराना * *।
कुमतिहिकसकुवेषताफावी। अनअहिवातसूचजनुभावी * ७
जाइनिकटनृपकहमृदुबानी। प्राणप्रियाकेहिहेतुरिसानी * ८

छं० केहिहेतु रानि रिसानि परशतपाणि पतिहि [illegible] ई ॥
मानहुं सरोष भुअंग भामिनि विषम भांति निहारई १
दोउ बासना रसना दशन बर मर्म ठाहर देखई ॥
तुलसी नृपति भवतव्यता [illegible] ई २

सो० सुमुखि सुलोचनि पिकवचनि [illegible] राउ ॥
१

तब कैकेयीको कोपभवन में सुनिकै राजाको भयवशते आगे पाउँ नहीं परत [१] हे भरद्वाज देखिये तो ज्यहि श्रीदशरथ महाराज के बाहु बलते इन्द्र आसन पर सुजितहै अरु सर्वद्वीपन के राजा तिनको रुख लखते हैं [२] सो राजा स्त्रीको रिस सुनिकै सूखिगयो है देखो तो यह कामके प्रतापकै बड़ाई है [३] हे भरद्वाज यह बड़ा आश्चर्य है जो श्री दशरथ शूलकहौ शिव को त्रिशूल अरु कुलिश कहो इन्द्र का बज्र असि कहो यमराजको खड्ग किन्तु विष्णु की नन्दन खड्ग त्यहिके अँगव-निहारे त्यहि राजा को रतिनाथ सुमन शर मारेउ बेधिगयो है [४] तब राजा भयसंयुक्त कैकेयीके पास जातभये हैं कैकेयी कै दशा देखिकै राजा को दारुण दुःख भयो है [५] कैसेदेखा कैकेयी को भूमि में तो शयन है पुरान मोटपट पहिरे है अरु अङ्ग के अनेक हेम मणिमय भूषण सो उतारिकै फेंकिदियो है [६] हेपार्वती कुभाँति जो कैकेयी है तेहि को यह कुवेष फावी कहो कैसे अशोभित है जनु भावीजो है भवितव्यता अनअहिवातको सूचित कहो जनावती है [७] तब निकट जायकै राजा मृदुबाणी बोलते भये हे प्राणप्रिये क्यहि हेतु तें रिसानिहसि [८] छंदार्थ ॥ जब राजा दशरथ कैकेयी के तनपर हाथ परशते हैं तब झिझकारि देते है भामिनि जोहै कैकेयी मानहु सरोष भुवङ्गिनिहै सो विषमभांतिते निहारति है [१]

बरदानकी जो दुइ बासनाहैं सोई दुइ रसनाहैं अरु जो प्रकटकरिकै दूनों वर मांगेगी जामें अनेक क्लेश के कारण हैं सोई दशन हैं मंथराको वचन विष है राजाके डसिबे को बिषम ठौर देखती है मर्म ठौर कहो ज्यहि ठौर के काटेते नहीं जीवैहै कोटिन यत्न कोई करै श्री गोसाईं तुलसीदासजी कहते हैं कि यह कामकी कौतुकहै इहां विशेष भवितव्यता रामरजाय जानब [२]दोहार्थ॥ तब बार बार राजा कहते हैं कि हे गज-गामिनि हे सुमुखि हे सुलोचनि हे प्रियवचनि अपने कोपको कारण सुनाउ [१]॥

हिततोरप्रियाकेहिकीन्हा।केहिदुइशिरचहयमपुरलीन्हा १
कहुक्यहिरंकहिकरौंनरेशू *।कहुक्यहिनृपहिंनिकासौंदेशू २
सकौंतोरअरिअमरहुमारी * । कहाकीटबपुरेनरनारी * *३
* । मनतवआननचन्दचकोरू * ४
ासुतसरबसमोरे * । परिजनप्रजासकलबशतोरे ५
जोकछुकहौंकपटकरितोहीं । भामिनिरामशपथशतमोहीं ६
बिहँसि　　मनोहर ाता * ७
समुझिजियदेखू । बेगिप्रियापरिहरहिकुवेषू ८
दो० ।　　बड़ि बिहँसिउठी मतिमंद ॥
ातिन फंद १

२९ यह कामासक्त प्रिय वाणी है हे प्रिया तोर अनहित क्यइँ कीन्हहै क्यहि के दुइ शीश हैं जाको यमलोक चाहते हैं इहांशिर कही हमते अधिक हमार दूसर कौनहै [१]हेप्रिया कहु क्यहि रंकको नरेश करौं अरु कहुक्यहि नरेशको देशते निकासिकै क्यहि देशको पठाइ देउँ निकासि कही दूरिकरि देना पुनि सो कही सत्य संकल्प राजें कौन है सो द्वीप देहरी शब्द है पूर्वापर द्वौपद को सिद्ध करै है तहां यहि वाणीमें सरस्वती उलटिकै यह करती है कि कैकेयीके कहेते रंक तो नरेश नहीं किये राजा आपहि नरेशते रंकभयोहै काहेते श्रीरामचन्द्र धन सो बनकोजाहिंगे तातेराजा रंकहोहिंगे धनके दु:खते शरीर त्यागि देहिंगे अरु श्री रामचन्द्रको राजा राज्य देहो चुक्यो है सो राजा तो न भये अवधदेशते निकरिकै औरै देशको गये देखिये तो सकाम सत्य संकल्प उलटिकै राजाके माथे परेउ आइ ताते विवेकते संकल्प करी इहां तो केवल श्री राम रजाय है [२] हे प्रिये तोर अरि अमरहु मैं मारि सकतहौं अमर देवता अरु नर नारि बापुरे कीटको का बिसांति है तहां इहां मंथरा के कहेते कैकेयीके अरि अमर राजैभये काहेते कैकेयीके कहेते आपुही मरतभये अरु नर नारी अयोध्यावासी मेरेसरीखे भये[३] अरु तैं मोर स्वभाव जानती है बरोरु कही बरहै उर जेकर किन्तु बरोरु कही जो कोऊ टेढ़ बोलै ताको दण्डदाता अरु तोसों टेढ़ बोलै ताको विशेष मैं वरोरुहौं काहेते तोरे ऊपर मोरि अति प्रीति है तोर मुख चन्द्रहै चष चकोर हैं [४] हे प्रिया प्राण जो है

अरु मोरे सर्वस्व जोहै अथवा सुत मेरे सर्वस्व हैं अरु परिजन प्रजाजन प्रियजन इत्यादिक सकल तोरे वश हैं (५) देखिये तौ श्रीरघुनाथजीकी प्रेरणा ते बे प्रयोजन राजा यह शपथ करते हैं कि मैं तिनकी शतकही सो शपथ करतहौं (६) बिहँसि कही हँसिकै अपनी मनभावनी बात को मांगु और मनोहर गात को आभूषणों से सजु (७) हे प्रिये घरी कुघरी को समुझिकै कुबेष को त्यागि कै श्रृङ्गार करहु यह पदोंकी बात गर्भित है देखिये तौ राजा को कामने अच्छी तरह वश कियोहै (८) दोहार्थ ॥ हे पार्वती राजा कै बड़ीभारीशपथ सुनिकै मनमें गुनत भई अब यह शपथ टरनेवाली नहींहै तब मन्दमति कैकेयीबिहँसि कै अङ्ग में भूषण सजैलगी मानहु राजा मृग रूप ताको फँदाइकै मारिबे हेतु किरातिनि जाल सजति है तैसे भूषण कैकेयो साजती है (९) ॥

उ० पुनिकहराउसुहृदजियजानी। प्रेमपुलकिमृदुमंजुलबानी * १
भामिनिभयउतोरमनभावा *।बाजेगहगहअनँदबधावा * २
रामहिंदेउँकालिहयुबराजू *। सजहुसुलोचनिमंगलसाजू *३
दलकिउठ्यउसुनिहृदयकठोरा । जनुछुइगयोपाकबरतोरा ४
ऐसिउपीरबिहँसिउरगोई *।चोरनारिजिमिप्रकटनरोई ५

यद्यपिनीतिनिपुणनरनाहू । नारिचरितजलनिधिअवगाहू ७
कपटसनेहबढ़ाइबहोरी *। बोलीबिहँसिनयनमुखमोरी * ८
दो० मांगु मांगु पै कहहु पिय कबहुं न देहु न लेहु ॥
बरदान दुइ तेउ पावत सदेहु १

उ० तब राजैं जाना कि सुहृद है तब मृदुबाणीते प्रेमकरिकै बोलते भये (१) हे भामिनि अजु तोर मनभावा भयउ श्रीअयोध्या में गहगहे आनन्दमय बधाई बाजती हैं (२) हे सुलोचनि मंगल के साज सजहु कालिह मैं श्रीरामचन्द्र को युवराज पदवी देउँगो युवराज कही जो राजा अपने विद्यमान पुत्रको राज्य देइ है (३) यह सुनिकै कैकेयी को हृदय दलकि उठेउहै जैसे पाक बरतोर छुयेते शरीर दलकि उठैहै काहेते कि जो मन्थरै प्रथम कैकेयीते कहिराख्योहै सोई राजाके कहेते रामचन्द्र को युवराज पद सो सुनिकै कैकेयी को अधिक प्रतीति भई ताते हृदय दलकि उठेउ है (४) सो कैकेयी ऐसी पीर बिहँसि कै गोइ कही छपाइ डारेसि है कैसे जैसे ग्रामविषे चोर है और वहिको कोई जानत नहींहै अरु कतहुं चोरी किहिसि मारिगयो तब चोरकीनारी अपने बचाव खातिर प्रकट करिकै नहीं रोवती है पर भीतर क्लेशभरि रह्यो है तैसेही कैकेयी के हृदय में श्रीरामचन्द्रकै राज्य सुनिकै क्लेश भयो है अरु ऊपर से विहँसति है जाते राजा न जानहिं अपने बरदान मांगिबे को कार्य साधति है इहां कपटमय बिहँसब है (५) तहां कैकेयीके कपटकी चतुराई भूप नहीं लख्योहै काहेते कि मन्थरा जो

गुरुहै त्यहँ कुटिलपन कैकेयीकी मतिको पढ़ाइ दीनहै किन्तु कुटिलाईमय मन्थराकै मति तेहि गुरुकी पढ़ाई कैकेयी है ताते राजाने नहीं जान्यो है (६) यद्यपि राजनीति में निपुण हैं तदपि नारि कर चरित जो अगाध जलधि है तहां राजा कैसे जानैं (७) पुनि हे भरद्वाज कपटकर स्नेह बढ़ाइकै नयनमुख मोरिकै कटाक्ष करिकै प्रियवचन बोलति भई (८) दोहार्थ ॥ हे प्रिये मांगु मांगु तौ कहत हौ पर कबहुं न लेहु न देहु जोदेहु तौ दैकै सुखलेहु काहेते दाता दान दैकै सुख पुण्य लेतेहैं तहां तुम दुइचारबार कहा कि जो चाहौसो मांगहु तहां पूर्वहीं मोकोदुइवरदान देइको कहि राख्योहै सोऊ पावत के संदेह मोको देखि परतहै दोऊ बरदान सम्बरासुर के संग्राम विषे पायोहै किन्तु एक बार जब शनैश्चर दृष्टि दीन है यह इतिहास प्रसिद्धहै (९) ॥

३१ जान्यउमर्म्मराउहँसिकहई । तुमहिंकोहाबपरमप्रियअहई १
थातीराखिनमांग्यउकाऊ । बिसरिगयोम्बाहिंशुद्धस्वभाऊ २
दूह * । हू * ३
रघुकुलरीतिसदाचलिआई * । प्राणजाहिंबरुबचननजाई ४
नहिंअसत्यसमपातकपुंजा । गिरिसमहोहिंनकोटिकगुंजा ५
सत्यमूलसबसुकृतसुहाये * । वेदपुराणविदितबुधगाये * ६
त्यहिपररामशपथकरिआई । सुकृतसनेहअवधिरघुराई * ७
बातदृढ़ायकुमतिहँसिबोली । कपटविहंगकुलहजनुखोली ८
दो० भूपमनोरथ शुभबन सुखसुविहंग समाज ॥
भिल्लिनि जिमि छांड़नचहति बचन भयंकर बाज १

३१ तब राजा प्रीति संयुक्त हँसिकै बोले कि मैं तुम्हार मर्म्म जानत हौं तुमको कोहाब परम प्रियहै काहेते तुम कोहाइकै अपने विषे मोर अति प्रीति उपजावती हौ (१) हे प्रिये तुम दूनों बरदान तौ हमसे कबहूं नहीं मांग्यो थाती धरि राख्यो है अरु मोर स्वभाव शुद्ध भूलि गयो (२) हे प्रिया हमको झूठइ दोष न देहु दुइ बरदान के चारि मांगिलेहु [३] देखिये तौ दैवीमायाते राजा के स्वाभाविकै सत्यवाणी से वचन निकते हैं हे प्रिया हमारे रघुवंश कुलकी यह सहजही रीति है कि बरु प्राण जाइ पै बचन न जाइ[४]काहेते असत्यके समान और दूसरपाप नहींहै कैसे जैसे कोटन घुंघुची बटोरै तौका पर्वतों को समान होइँ तैसे असत्य कहा सो पापपर्वत है अरु अपर पाप गुञ्जाहै [५] सब सुकृतकर मूल सत्य वचन है यह वेद पुराणन में विदित है बुधगाइ गाइ कहते हैं [६] अरु हे प्रिये त्यहिपर मैं श्रीरामचन्द्रकी शपथ कीनिहै कैसेहैं रघुनाथजी सब सुकृत के अवधि कही मर्याद हैं [७] हे गरुड़ राजा को वचन स्वाभाविकै दृढ़जानिकै तब कैकेयी बोली तहां कैकेयी को वचन बाजहै द्वौवरदान बाजके नेत्र हैं अरु कपट बाजके कुलह हैं सो खोलैहै ऐसो वचन बोला चाहतीहै [८] दोहार्थ ॥ हे

भरद्वाज भूपकर मनोरथ सुन्दर बनहै अरु जो वह मनोरथ विषय में सुखको अनमोदन है सोई बिहंगहै अरु कैकेयी भिल्लिनिहै अरु भयंकर वचन बाज छोड़ा चाहतहै[८]॥

सुनहु । देहुएकबरभरतहिटीका * १
पुरवहुनाथ * २
तापसबेषबिसेषउदासी * * । चौदहबर्षरामबनबासी *
सुनिमृदुबचनभूपहियशोका।शशिकरछुवत ... कोकू ४
सहमिगयउनहिंकछुकहिश्रावा।जनुसचानबनभपटेउलावा ५
ननधरिमोचब ... नुश्राचन * ६
... । फरतकिरराजि ... मला ७
। दीन्हयासअचल ... नयी ८

दो०

योगसिद्धिफलसमयजिमि यतिहि अविद्यानाम १

हे प्राणपति मेरेजीवकी भावना सुनहु भरतको राज्यदेहु एक बरदान यहदेहु (१) पुनिकर जोरिकै दूसरबर मांगतिहौं हे नाथमोर मनोरथ पूर्णकरहु (२) पुनिकैकेयी बोली कि रामचन्द्र तापसका बेषधरिकै अरु विशेष उदासी उदासी कहो मुनिवेष बिरक्त ह्वैकै चौदहवर्ष बनसेवन करहिं कैकेयीके दुइ बरदान मांगिवेका कौन अभिप्रायहै बहुतहै तहां रघुनाथजी की प्रेरणाभई कैकेयीविषे दैवमायाके द्वारह्वैकै कैकेयी के मनमें आयोहै कि भरतजी राजाहोहिं तबमैं बहुतसुखी रहौंगी यह अभिप्राय प्रसिद्धहै अरु श्रीरामचन्द्र को बन जाइबेको मुनिवेषते यामें कौन प्रयोजन है कि जो यहां रहैंगे किन्तु कोई देश नगरमें रहैंगे तो कछु भरतको राज्यमें उपाधि करहिंगे ताते ग्रामरहित बनवास मांग्योहै अरु मुनिवेष क्योंकहा जातेराज्य की बासना न उठै अरु चौदह वर्षमें राज्यको बंधेज बँधैहै काहेते कि श्री अयोध्याकी राज्यगद्दी चौदहौभुवनकीहै ताते चौदहवर्ष श्रीरामचन्द्र जानकी लक्ष्मण बनमेंरहैंगे तबताई चौदहौ भुवनमें भरतकै राज्य अच्छीतरह होइगो इहां श्रीजानकी लक्ष्मणको तो बन नहींदीनहै तहां राज्यके उपाधिके सम्बन्ध मानिकै इनहूंके बनचलत संते कैकेयी मनमें सुखीभई है यह प्रसंग लौकिकोंमें प्रसिद्धहै पुनि परमार्थिक करिकै सरस्वती करिकै दूसर अर्थहै कि चतुर्दश वर्षमें चौदहौ भुवन सुखी होहिंगे (३) हे भरद्वाज कैकेयीके वचन इतने मृदुलहैं जो कहतीहै कि हे नाथ हे प्राणप्रिय हे धर्मधुरन्धर अरु ताके अवान्तर अग्नि इवहै जैसे पालाके अन्तर अग्निजारै है देखिये तौ धर्मसूरीपर चढ़ाइकै मारिहै सो सुनिकै राजाको शोचभयो है जैसे शशि जो चन्द्रमाहै तेहिकी किरणि स्पर्शकरत सन्ते कोकी कहो चकई चकवा बिकल ह्वैजातेहैं किन्तु कोककहो कोकनद कमल (४) हे भरद्वाज कैकेयीके वचन सुनतसन्ते राजा सहमिगयो है कछु कहिनहीं आवैहै जैसे

लगाइकै बटोरको कम्पन बानहै (५) तब राजा दूनोंहाथ माथेको बगलमें धरिकै माथ झुकाइकै दारुणज्ञ मूंदिकै जनु शोचतन धोरके शोचको करत राजा अपने अन्तःकरणमें यहशोच करतेहैं (६) कि देखिये तौ कालकीगति औरमनोरथ कल्प वृक्षरूप सो फूलत ही रामराज्य को आरम्भ करतसंते कैकेयी कही हथिनी रूप कैकेयीने समूल उखारि डार्यो है (७) कैकेयी अवधको उजारि दीन्हेसि अरु बिपति की अचल नेइँ दीन्हेसि (८) दोहार्थ ॥ देखियेतौ कौने अवसरमें का भयोहै नारिन्द्र निश्वासती सदैव अप्रमादहै पर आजुनै विशेषगयो जैसे यती जोहैं संन्यासी योगेश्वर योगसाधनसंते जब योगसिद्धिको समयभयो तब अविद्या प्राप्तभई योगभंग ह्वैगयो तहांदशरथ महाराज मनमें विचार करतेहैं कि तैसे हमको भयो स्त्रीके प्रसंगते रामराज्य को भंगभयो (१) ॥

इहिबिधि [illegible] राउमनहिंमनझाँखा । देखिकुभाँतिकुमतिमनमाखा १

भरतकिराउरपूतनहोहीं । आनेहुमोलबेसाहिकिमोहीं * २

जोसुनिसरअसलागतुम्हारे । काहेनबोलहुबचनसँभारे * ३

देहुउतरअनुकरहुकिनाहीं । सत्यसन्धतुम्हरघुकुलमाहीं * ४

देनकहेउअबजनिबरदेहू * । छाँड़हुसत्यजगअपजसलेहू

सत्यस [illegible] देना । [illegible] चबेना * ६

सिबिदधीचिबलिजोकछुभाषा । तनधनतजेउबचनपनराखा ७

अतिकटुबचनकहतिकैकेयी * । मानहुँलोनजरेपरदेयी * ८

दो० धर्म धुरन्धर धीरधरि नयन उघारेउ राउ ॥
सिरधुनिलीन्हिउसासअसि मारेसिमोहिंकुठाउ २

टी० यही प्रकारते समुझिकै राजा मनहीं मनमें झाँखतेहैं तब राजाकी कुभाँति देखिकै कैकेयीके जो कुमतिभई है तेहिकरिकै मषाइ उठीहै मषाइ कही क्रोध सञ्चरित भयोहै (१) तब कैकेयी बोलती भई कि वर मांगतेसंते तुमको दुःखभयो सो व्यङ्गका-रणकरिकै का भरत रौरेकेपुत्र न होहिं का मोलमिल्यउ है अरुका मोहूं को बेसाहि आन्योहै मैं व्याही नहींहौं (२) जो मोरे बरमांगत सुनतसंते तुम्हारेबाण असलागत भयोहै सो यह कैसाहै प्रथमहिं सँभारिकै वचनकाहे न बोल्यहु (३) अब पछिताव काहेको करतहौ यहिको उत्तर बरदान देहु अरु की नाहीं करिजाहु काहेते कि रघुबंश कुलके सत्यसन्ध कहो सत्य संकल्पहौ तिहिसे तुम अहुहौ देखियेतौ कैकेयी राजाको सत्यसन्ध कहिकै अपने बरदानको दृढ़करती है येती चतुराई सरस्वती करिकै जानब (४) हे राजन् बरदान देनेको कह्यउ तापर शोचनकरहु बर न देहु अपने वचनसत्य को छांड़िकै तुम अयशहि लेहु (५) अपने सत्यको सराहिकै बरदेइबेको कह्यउ अस तुम जान्यहुं कि मानहुं चबेना मांगिलेइहि चबेनाकहो लघु यह सब मर्मकी बातें

कहि कहि अपनी कार्यसिद्धि करैहै (६) हे राजन् काहेको शोचकरतेहौ तुम्हारो तौ महाराजनमें गिनतीहै तहां राजा शिवि अरु राजादधीचि अरु बलिने जो कछु कहाहै तिन सबोंने सत्यको नहींत्याग कीनहै अरु धनतन इत्यादिक सर्वस्वको त्याग कीनहै पर बचनको नहीं त्यागोहै यह इतिहास भागवतमें प्रसिद्धहै (७) हे पार्वती कैकेयी अति कटुबाणी कहतीहै यामेंप्रसिद्ध व्यंग्यहै मानहुं जरेपर लोन लगावती है (८) दोहार्थ तहां महाराज दशरथजी धीरके धुरन्धर धैर्य धरिके नेत्रउघारत भये तब शिरधुनिके उसासलीन यह बिचारकीन कि यहि पापिनि मोको कुदावँमारा है (१)॥

चौ० आगेदीखिजरतरिसभारी * । मनहुंरोषतरवारिउघारी * १

मूठिकुबुद्धिधारनिठुराई * * । ध [illegible] बरी२

[illegible]कराल सत्यकिजीवनलेइहिमोरा *

बोल्यउराउकठिनकरिछाती । बैनसबिनयताहिसोहाती ४

प्रियाबचनकसकहसिकुभांती । भीरुप्रतीतप्रीतिकरिहाती ५

मोरेभरतरामदुइआंखी * । सत्यकहौंकरिशंकरसाखी * ६

अवसिदूतमैंपठउबप्राता * । अइहैंबेगिसुनतदोउभ्राता * ७

सुदिनसोधिसबसाजबनाई । देहुँभरतकहँराजबजाई * * ८

दो० लोभ न रामहिं राजकर बहुत भरत पर प्रीति ॥
मैंबड़छोटबिचारिजिय करतरह्यउँनृपनीति २

३४ तब दशरथ महाराज कैकेयीको आगेठाढ़े रिसतेभरी जरती देखतभये मानहुं रोषतरवारि उघारिकै ठाढ़िभईहै (१) रोषरूपी तरवारिकी मूठि कैकेयीकी कुबुद्धि है और निठुरता धारहै अरु कुबरीकै कुबुद्धि स्वईसानहै तहां मन्थराकी कुबुद्धिको कैकेयी अपनेमनमें दृढ़करिकै धारण करतभई ताते कैकेयीकी निठुरता इहां धारण ह्वै गई है (२) तहां महीप यहलखत भये कि यह मोर जीवलेइहि कि मोर जीव सत्यलेइहि काहेते कराल कठोर कैकेयीकी कुबुद्धि अति निठुराई है (३) तब राजा कठिन छाती करिकै बोलतभये पर नम्रबाणी बिनय संयुक्त सो विनय कैकेयीको नहीं सोहाति है (४) हे प्रिया यह कुभांति वचन कस कहति है भीरुकही स्त्रीको हे भीरु मेरीप्रीति प्रतीति श्रीरामचन्द्र विषे सो तैं प्रतीति करिकै हते किन्तु मेरीप्रीति राज्याभिषेक विषे सो तैं हते किन्तु बामभीरु कही भयकी तोरजो दूनोंबरदान सो सर्व भय दायक हैं त्यहिविषे तैं प्रतीति मानिकै प्रतीतिकरिकै मोको हततभईसि पुनि सामान्य अर्थ करते हैं हे भीरु मोरि प्रीति प्रतीति जो त्वहिंबिषे रही सोतैं अपनी ओर से नाशकिये है तहां भीरुस्त्रीको (संज्ञाप्रमाण है श्लोकार्द्ध) भीरुमात्येचसमज्ञिवरर्ययद्दूरतारकं (५) हे प्रिया भरत औ श्रीरामचन्द्र मोरे दोउआंखि हैं मैं यह सत्यकहत हौं त्यहिकर शाखशंकर हैं (६) ताते अबतुम शांतहोहु अब प्रातःकाल बिषे मैं अवश्य करिकैदूत

पठाउब दूनों भाइनको बेगिकही शीघ्रहीमैं बोलाय पठवोंगी (७) तब सुदिन सोधिकै अरु संपूर्ण साजसाजिकै भरतको बनाइ कही विशेषि राज्य ऐश्वर्य बड़ाई देउंगो (८) दोहार्थ ॥ अरु श्रीरामचन्द्र को राज्यका लोभनहीं है भरत पर विशेष प्रीतिहै अरु मैं तो छोट बड़ बिचारिकै राजनीति करत रहेउँहै (१) ॥

रामसपथसतकहउँसुभाऊ । राममातुकछुकहेउनकाऊ १
मैंसबकीन्हतोहिंबिनपूँछे * । तातेपरेउमनोरथछूछे * * २
रिसपरिहरिअबमंगलसाजू * । कछुदिनगयेभरतयुवराजू * ३
एकहिबातमोहिंदुखलागा * । बरदूसरअसमंजसमाँगा * * ४
अजहूँहृदयजरततेहिआँचा । रिसपरिहासकिसाँचेहुसाँचा ५
कहुतजिरोषरामअपराधू * । सबकोउकहतरामसुठिसाधू ६
तुहूँसराहसिकरसिसनेहू * * । अबसुनिमोहिंभयउसंदेहू * ७
जासुस्वभावअरिहिअनुकूला । सोकिमिकरिहिमातुप्रतिकूला ८
दो० प्रियाहासरिसपरिहरहि मांगुबिचारिबिबेक ॥
जेहिंदेखौं अबनयनभरि भरतराजअभिषेक ॥

अरु जो तुम्हारे मनमें यह कछु भ्रम भयोहै कि कछु कौशल्या कर सम्मत होइगो सोमैं श्रीरामचन्द्रको शपथ करतहौं जो कौशल्या कर तिनकौ सम्मतहोइ (१) एक बातन्वहिं सों नहींबनी कि मैं प्रथमतोसे पूछिनहीं लीनहै ताते मोरमनोरथ छूंछ परिगयो है (२) अब जो यह मैं कहाहै सो रिसको छोड़िकै सत्यमानिकै संपूर्ण मंगल कर साजसाजु अरु आपनो मंगलसाजु अरु भरतके राज्यको मंगलसाजु कछुदिन गये भरत आइजाइँगे तब युवराजपद देउंगो (३) एकबात मैं मोको दुखलागतहै जो दूसर बरदान मांग्यउ है तामेंमोको असमंजस लागतहै (४) यह बरदान तुम मांग्यउ कि रामचन्द्र बनको जाहिं यह समुझिकै मेरीछाती जरतिहै यहमैं तोसों पूछतहौं कि कव-निरिसते यह परिहास कही मोर तिरस्कार करतिहसि कि और कवनिउं बातकोसांचो करतिहसि किन्तु कवनी बातमें रिसिआइ गइसिहै कि कवनिउँ बात करिकै ईर्षामनमें आईहै सो सब सांचीकहु (५) सबतो श्रीरामचन्द्र को परमसाधु कहतेहैं अरु तैं ईर्षा किहेहै सो क्रोधतजिकै श्रीरामचन्द्र कर अपराध कहु (६) अरु श्रीरामचन्द्र को सराहना तौ तुहूं करति रहसि है अरु बहुत स्नेह करति रहतिहै आजु कौन अपराध ते बन देबेको कहति हसि [७] जिन श्रीरामचन्द्रकर स्वभाव अरिहु को अनुकूल है तहां राजा कहते हैं कि हमारे जो अरि हैं राजा इत्यादिकतेऊ श्रीरामचन्द्र के स्वभाव की बड़ाई करते हैं किन्तु श्रीरामचन्द्रके अरि राक्षस दानव तिनहूं पर श्रीरामचन्द्रकर स्वभाव अनुकूल है काहेते कि तिन अरिन को बधिकै अन्तमें मोक्ष देतेहैं यह सहज स्वभाव है ते श्रीरामचन्द्र माताते कैसे प्रतिकूल होहिंगे यह अभिप्राय पदको अर्थहै [८]

३२

दोहार्थ ॥ हे प्रिया एक्य रसको परिहरिदेहु विचारिकै परमांगहु अविवेकको त्यागिदेहु जाते भरतका राज्याभिषेक नैनन भरि देखौं और जो वर मांगेहै तौनेको सिद्ध करौगे तौ `` नहीं रहैगे [१] ॥

३६ चौ० मिनबिनबारिबिहीनामनिबिनुफनिकाक्रोअदुखदीना २

अस्कहाहीं जीवनमोरामबिनुनाहीं * २

ाप्रवीना । जीवनरामदरसआधीना * ३

ामहुंअनलआहुतिघृतसई ४

हांनलागीहबाउबिनायाप ५

। मोहिंबहुतप्रपंचनसहाहीं * ६

िसबजगजाने * ७

ाभलताका । तसफलदेउँउन्हेंकरिसाका * ८

दो० हु

ानृपसमुाभा

अहो वर बिनावारिते मीन जियै अरु बिना मणिको सर्प दुःख दीन हुकै जियै [१] ताते मैं यह सहज स्वभाव करिकै कहत हौं अरु कछुक छल करिकै नहीं कहत हौं श्रीरामचन्द्र बिना मोर जीवन नहींहै मैं यह सत्य कहत हौं सत्यज्ञान [२] हे प्रिया प्रवीण हुकै समुझु मोर जीवन श्रीरामचन्द्रके दर्शन करिकै है [३] यह अति प्रिय सुन्दर वचन श्रीदशरथ महाराजके सुनिकै कैकेयी जरिउठीहै मानहुं अनलमें घृतकी आहुति परी है [४] तब कैकेयी हृदय में अति क्रोधित हुकै बोलती भई कि हे राजन् तुम अपनी चतुराई से कोटिन उपाय करो इहां तो रौरिकी माया नहीं लगैगी देखिये तो भगवत् माया ऐसी विपर्यय करैहै रानी अपनी अज्ञानता राजा विषे सिद्धि करैहै [५] कितौ यह वर देहु अरु कितौ नाहीं करिकै अयश लेहु मोको बहुत प्रपंच नहीं नीक लागत है [६] अरु रामचन्द्र साधुहैं अरु तुम साधुहौ अरु रामचन्द्रकी माता भलीहैं यह संपूर्ण जगत् में प्रकट है (७) अरु जस कौशल्याहि मोर भलकीन है तसमैं उनको परिपाकफल देउँगी जामें मेरी शाकारहै किन्तु कौशल्याके कर्तव्यकी शाकारहै शाकाकहौ साखीको किन्तु यशको (८) दोहार्थ ॥ हे राजन् श्रीरामचन्द्र प्रातःकाल होत संते बनको न जाहिंगे तो मोर तो मरण होइहि अरु रौरिको अयश होइगो हे नृप यह मन में समुझि देखौ ॥

३७ चौ० ाकिअसकहिकुटिलभईउठिठाढी । मानहुंरोषतरंगिनिबाढी * १

ई * * । भरीक्रोधजलजाइनजोई * २

ासकोटलहदधारा * । भवँरकूबरीवचनप्रचारा * ३

* । चलीबिपतिबारिधिअनुकूला * ४

सबकीनरेशजानातसबसांची । तियमिसुमीचशीशपरनाची * ५
गहिकरभूपनिकटबैठारी * । जनिदिनकरकुलहोसिकुठारी ६
मांगुमाथअबहींदेउँतोहीं । रामबिरहजनिमारसिमोहीं * ७
राखुरामकहँजेहितेहिभांती।नाहिंतोजरिहिजन्मभरिकाती ८
दो० देखीब्याधिअसाध्यनृप परेउधरणिधुनिमाथ

टी० हे भरद्वाज असकहिकै कुमतिमय जो कैकेयी है सो उठिकै ठाढ़ि होतभई है मानहुं रोषकी तरंगिनि कही नदीबाढ़ी है (१) सो नदी कैकेयी के पापरूपी पर्वत से प्रगटभई है त्यहिनदीमें कैकेयीका क्रोधरूप जलभरि रह्योहै सोईकही दरवा नहींजात है (२) अरु त्यहि नदीको कूलकही किनारे दोऊ बरदान हैं अरु कठिनजो है सोई कठिनधारा है अरु कुबरीका बचन प्रचार कही बिशेष कै भवँर उठती है (३) तहां त्यहि नदीके किनारे पर भूपरूप सोई तरु है ताको ढाहती है कही गिरावती है अरु बिपति रूपी बारिधि कही समुद्र बिशेषकै त्यहिके मिलिबे को चलीहै (४) तहां हे पार्वती यहि बातको नरेश सांची जानते भये हैं कि स्त्री के मिसु करिकै मोरी मृत्यु मोरे शीशपर नाचतीभईहै (५) तबकैकेयीको बांह धरिकै भूपअपने निकट बैठारतभये हैं यहकहतभयेहैं कि हे प्रिया सूर्य बंश चन्दन कर बन त्यहिके काटिबेको कुठारी न होसि कहामानु (६) राजा बोलते भये कि जो मांगसि तौमैं शीश उतारि देउँ अरु श्रीरामचन्द्र के बिरह से मोको न मारसि (७) श्री रामचन्द्र को तैं अयोध्या में राखु येनकेन कोई भांति करिकै राखु नतु जन्म भरि छाती जरैगी किन्तु मैंतो मरिजाऊं गो पर तोरी छाती जन्म भरि जरहगी (दोहार्थ)॥ हे गरुड़ तबराजा बहुत कष्ट करिकै थकि रहे कैकेयी नहीं मानैहै तब राजा असाध्य ब्याधि जानिकै अपने करते अपना माथ धुनिकै पृथ्वी बिषे गिरत भये परम आरत बचन कहते हैं हे राम राम हे रामरघुनाथ यह कहत गिरि परे हैं [१]॥

ब्याकुलराउ । करीशाकल्पतरु मनहुं निपाता १
कराठमरवमुखआवनबानी * । जनुपाठीनदीनबिनुपानी * २
हैकहु ी * । मनहुंपाकपरमाहुरदेई * ३
* । हैं * ५
* । होहिंकिसौमकुशलरीता
छांड़हुबाचाकिबोरजबरहू * । जनिअबलाइबकरुणाकरहू ७
तनतियतनयधामधनधरणी * । सत्यसंधकहँतृणसमबरणी ८

दीनदानफिरिमांगहुराजा * । परिहरिलोकवेदकीलाजा ९

दो० मर्म वचन सुनि राउ कह कछुक दोष नहिं तोर ॥
लागेउतोहिंपिशाचजिमि कालकहावत मोर १

तब राजा सब प्रकारते विकल होतभये अरु संपूर्ण गात शिथिल ह्वै जात भये मानहुं करिणि जो हथिनी है वह कल्प तरु निपात करत भई है [१] राजाको कंठसूखि जात भयो मानों पढ़िना मीन बिना जलके तैसे राजा होत भये हैं [२] हे गरुड़ पुनि कैकेयी अति कठोर बाणी बोलती भई मानहुं शरीर विषे कहूं मर्मस्थान में पाकिके माहुर को फाहा लगा वतीहै [३] तब कैकेयी कहती है कि हे प्रिये जो अन्तहु तुम्हें यह कर्तव्य रही तो वरमांगु वरमांगु बार बार यह कवने बलते कहेउ [४] हे भुवाल दुइ पदार्थ एकही बार नहीं होतेहैं ठठाइके हँसब अरु गाल को फुलाउब [५] दानी कहावै अरु कृपणता करै ये दोनों नहीं बनैं अरु राउत कहो शूर को संग्राम बिषे चढ़िके अरु क्षेमकुशल चाहै तो नहीं होत है किन्तु राउत कहो चौधरी को सो रौताई करिकै अरु यम दूतन ते क्षेमकुशल चाहै तहां क्षेमकुशल नहींहै तैसे तुम सत्यबादी कहावा चाहौ अरु अपने सुख की कुशल चाहो सो दूनों एक सङ्ग नहीं होते हैं [६] किती वचन को छांड़हु कि धीर्य धरहु अबला की नाईं करुणा न करहु [७] हे राजन् तुम तौ सत्यवादी पुरुषहौ अरु सत्य पुरुषन को तनतिय तनय अरु धन धाम धरणी यह तृण के समानहैं ताते तन तनय इत्यादिक का तुम काहेको शोच करतेहो तुम तौ सत्य बादी पुरुष हौ [८] तहां कैकेयी धर्मध्यारोपण करिकै राजा के शरीर बिषे बाण विधिगये वचन कहती है हे राजन् दानदैकै पुनि फेरि मांगतेहौ लोक अरु वेद की लज्जा को तुम त्यागि दीन तहां सरस्वती करिकै अर्थ सिद्धि होतहै कि श्री रामचन्द्र के बन गमनते लोक वेद मर्य्याद सिद्धि होइगी तिनको तुम राखा चाहतेहो [९] दोहार्थ ॥ तब यह मर्म वचन सुनिकै राजा बोलते भये अब जो तोरे मन मानै सो कहु तोको पाप रूपी पिशाच लाग्यो है अरु मेरो काल तेरे हृदय में प्रवेश करिकै यह वचन कहावत है ताते तोर दोष नहीं है (१) ॥

२९ चहततनभरतभूपपदभोरे * । बिधिवशकुमतिवसीउरतोरे * १
सोसबमोरपापपरिणामू । भयउकुठाहरजेहिंबिधिबामू * २
सुबशबसिहिफिरिअवधसुहाई । सबबिधिसुखदरामप्रभुताई ३
करिहैंसकलभाइसेवकाई * । होइहि ३७
* । नामिटिहिनजाइहिकाऊ ५
अबतोहिंनीकलागुकरुसोई । लोचनओटबैठुमुहगोई * * ६
जबलगिजियउँकहउँकरजोरी । तबलगिजनिकछुकहसिबहोरी ७
पुनिपछितैहसिअन्तअभागी * । मारसिगाइनाहरुलागी * ८

चौपाई

टीका ॥ हे पापिनि विधि कही कर्म्म के वश तोरे कुमति बसी है अरु भरत तौ राज्य पद को भोरे कही भूलिहूके नहीं चाहते हैं [१] तहां तोर दोष नहीं है मेरो कोई पूर्व जन्म को पाप उदय भयो है किन्तु परिणाम कही भविष्य पाप कछु होने रह्यो सो वर्तमान विषे उदय भयो है जैसी कही तैसी अनुकूल जो विधाता विपर्यय करिके कुठाहर बाम भयो है [२] हे पापिनि सुनु आगे स्ववश कही स्वेच्छित सब प्रकारते अयोध्या बसैगी आनन्द होइंगे श्री रामचन्द्र के प्रभुताई तीनिहूं लोकमें शोभित होइगी [३] अरु तीनिउं भाई सेवकाई करैंगे अरु तीनिहूं लोक में श्री रामचन्द्रकी बड़ाई होइगी यह मैं सत्य कहत हौं [४] पर तोर कलंक अरु मोर पछिताव यह दूनों तीनिहुं लोकमें अरु तीनिहुं काल में काऊ कही कबहूं नहीं मिटिहहिं [५] अब जो तोको नीकलागै सोकरुजाइ परतैं मेरे नेत्रनके ओट ह्वैकै बैठुजाइ अबतें मुख न देखाउ [६] हे अभागिनि अब मैं तोसे करजोरिकै कहत हौं कि जबलगि मैं जियों तब लगि जनि कछु कहसि [७] पुनि तैं बार बार पछितायगी अन्तविषे तैंनाहरू कहीनख चारि अङ्गुल के हेतु गऊ वध करतीहै किन्तु नाहरू कहीखेतके अंकुर एकग्रास गऊकहूंलियोहै त्यहि हेतु बधकरति है इहां राजा गऊहै अरुश्रीरामचन्द्रको राज्यकोसंकल्पमात्र भयोहै सोई अंकुर भयो अरु राजाकै वासना मुखते लेत संते कैकेयी किसानिनि जीव मारती है अरु भरत को राज्यको चाहना सोई खेतहै अरु तामें कैकेयी के सुखकी वासना सोई बीज सूखि जाइगो धर्मरूपी जलते हीनहै [८] दोहार्थ ॥ हे पार्वती (राजा कोटिप्रकार से कही परेहैं कि अभागिन तैं काहेको निदान करतिहसि तहां कैकेयी कपट की सयानि सो कछु कहती नहींहै मानहुं मशान जागती है [९]॥

हगावहालू * १

। * २

गुर।

। ४

। ५

पढ़हिंभाटगुणगावहिंगायक।सुनतनृपहिंजनुलागतसायक ६

मंगलसकलसोहाहिं नकैसे । सहगामिनिहिंबिभूषणजैसे ७

त्यहिनिशिनींदपरीनहिंकाहू । रामदरशलालसाउछाहू * ८

कहहिंउदयरविहोहिंविहाना। देखबनयननकृपानिधाना ९

।सियसंगा * * । टअनंगा १०

करतमनोरथरैनिसिरानी *। प्रातप्रकटजागेमुनिज्ञानी ११

दो० द्वार भीर सेवक सचिव कहैं उदित रवि देखि ॥

जागेअजहुंनअवधपति कारण कवन विशेषि १

४० हे भरद्वाज भुआल विकल ह्वैकै राम राम रटत हैं जैसे बिना पंखको विहंग विकल होतहै [१] तहां हृदय में मनावते हैं कि हे विधाता भोर न होइ श्रीरामचन्द्र को बन जाबेको कोई न कहै [२] हे रघुकुलके गुरु रवि तुम उदय न होउ नतु अयोध्या बिलोकिकै मोरे हृदय बिषे शूल होइहि [३] हे भरद्वाज भूपकी प्रीति श्रीरघुनाथ बिषे चाह कैकेयीकै कठिनाई यहि कालमें यह दूनौं विधातैं ने तौलि कै एकठाउं रच्यो है [४] हे पार्वती राजाको विलाप करत संते भोर होत भयोहै अरु राजमहल के दरवाजे पर वीणावेणु अरु शंखध्वनि नौबति बाजती है महा मंगल होत है असतौ सदा होत है पर राज्याभिषेक के समय कछु अधिक उत्सव है [५] तहां भाट विरदावली पढ़ते हैं अरु गुणी गण यशगान करते हैं यह सुनिकै राजा के हृदय विषे बाण सरीखे लागते हैं [६] तहां राजा दशरथ को यह मंगल नहीं स्वहात है कैसे जैसे सहगामिनि कही सती प्रियतम कर संगदेत संते तब वहिको बिभूषण अरु भोजन लेशहू नहीं स्वहात है [७] हे भरद्वाज त्यहि निशि बिषे काहूको नहीं नींद परीहै काहेते कि श्रीरामचन्द्र के राज्याभिषेक के दर्शनोत्सवकी सबको लालसा है [८] सब पुरबासियों के हृदय में राति भरि यह लालसा ह्वैरही है कि हे सूर्य तुम शीघ्र उदय होउ जाते श्रीरामचन्द्र के दर्शन उत्सव अति आनन्दते करैं नाम देखें [९] श्रीरामचन्द्रजी व श्रीजानकीजी को मङ्गल हो संग शत्रुंजय हाथीपर आरूढ़ देखैं कोटिन काम रतिकी छबि को हरत संते [१०] तहां ऐसे मनोरथ करत संते रात्रि व्यतीत भई भोर होत भयो है तब गुरु वशिष्ठ जी परमज्ञानवान् प्रातःकाल के समय विषे जागत भये हैं [११] दोहार्थ ॥ हे पार्वती द्वार विषे सचिव सेवक जेहैं ते सब कहते हैं कि सूर्योदय भयोहै अरु राजा आजु नहींजागे सोयह विशेष कौन कारण है यह बिचारिकै परस्पर कहते हैं [१] ॥

पछिलेपहरभूपनितजागा । आजुहमैंबड़अचरजलागा ॥ * १

* । * २

* । [illegible] थानकजातडेराहीं * ३

। [illegible] ४

* * । [illegible] * * ५

कहिजयजीवबैठशिरनाई *। देखिभूपगतिगयोसुखाई * ६

[illegible]पानहुकमलमलपारहरयउ ७

सचिवसभीतसकहिंनहिंपूंछी । बोलीअशुभभरीशुभछूंछी ८

राजहि

रामरामरटि ॥

४१ देखिये तौ राजा पिछले पहर नित्य जागते रहेहैं आजु अबहीं ताईं नहीं जागेहैं ताते यह बड़ा आश्चर्य है [१] तव अपर मन्त्रिन सुमन्त ते कहा कि राजा को जगावहु जाइ तब जो कछु राजा आज्ञा देहिं सो कार्य करो [२] तब सुमन्त राउर कहो मन्दिर जहां कैकेयी अरु राजा रहैं तहां को जात भये तहां मन्दिर भयानक लागैहै जातकै डरते हैं [३] मन्दिर मानहुं धाइकै खाइलीन चाहत है मानहुं बिपत्ति अरु विषाद दूनौं बास कीन्हेहैं विपत्ति कैकेयी हैं विषाद राजाहैं [४] ज्यहि द्वारपाल ते सुमन्त पूछते हैं सो उतर नहीं देतेहैं तब कैकेयीके भवनको सुमन्त जाते भये [५] तब सुमन्त जयजीव कहिकै दण्डवत् करिकै बैठत भये हैं राजाकै दशा देखिकै कछु कहा नहीं जातहै जय जीव कहो चिरंजीव अरु जय कहो सब प्रकारते जयमान सर्वोत्कृष्ट सर्वोपरि अरु जय जीव कहो सर्वोपरि जीवन कै जय कहो पालन कर्ता [६] शोकते विकल शरीरते बिवरण पृथ्वी में परे हैं मानहुं कमल मूल परिहरि दियो है [७] तहां सचिव सभीत कहो भय करिकै नाहीं पूछि सकतहै तब अशुभ ते भरी अरु शुभते छूंछी ऐसी जो कैकेयी है सो बोलती भई [८] दोहार्थ॥ हे सुमन्त राजा को रातिभरि नींद नहीं परीहै सो हेतु जगदीश ईश्वर जानै किन्तु जगदीश श्रीरामचन्द्रके हेतु समुझिपरतहै जानाजातहै काहेते कि राजाने राम राम रटिकै भोर कीनहै कछुयहि बात को राजैमर्मनहीं कह्योहै यहां कैकेयीसबकपटै करिकै कहती है [१]॥

हबोलाइ * । समाचारतबपूंछे आई ** १

। लखीकुचालकीनकछुरानी * २

सोकविकलमगपरैनपाऊ । रामहिंबोलिकहबकाराऊ * ३

। पूंछहिँसकलदेखिमनमारे * ४

। गयेउ का ५

रामसुमन्तहिआवतदेखा * । आदरकीनपितासमलेखा * ६

निरखिबदनकहिभूपरजाई । रघुकुलदीपहिचलेउलयवाई ७

रामकुभांतिसचिवसँगजाहीं । देखिलोगजहँतहँबिलखाहीं ८

दो० जाइ दीख रघुबंशमणि नरपति निपट कुसाज ॥

सहमिपरेउ लखिसिंहिनिहि मनहुं वृद्धगजराज १

४२ तब कैकेयी कहतीहै कि हे सुमन्त श्रीरामचन्द्र को बेगि कहो शीघ्र बोलावहु तब सम्पूर्ण समाचार पूंछेहु आइ [१] तब सुमन्त श्रीराजा को रुख जानिकै कौनं रुख जानिकै कि श्री रामचन्द्र को देखिकै हठ छोड़ि देइगी किन्तु मोरि विकलता देखिकै श्री रामचन्द्रजी रहि जाइँगे अरु मैं भरिनेत्रन देखोंगो किन्तु जब मलिकन

बोलाइ कहत सन्ते तब कुछ आपनी तरफते जानि परोहै यह जानिकै सुमन्त चलते भये यह बिचार, कि रानी कुछ कुचाल करत भई (२) शोचते बिकल हैं अरु मग विषे पांव नहीं परतहै अरु यह बिचार करतेहैं कि श्रीरामचन्द्रको बोलाइकै राजा का कहैंगे (३) तब धीरय्य धरिकै श्री राजा के दरवाजे पर जात भयेहैं अरु सम्पूर्ण मन मारे कहो शोच संयुक्त सुमन्त को देखिकै पूंछते हैं (४) तब सुमन्त सबकर समाधान करिकै जहां भानु कुल के टीका श्री रामचन्द्र तहां को जाते भये हैं (५) तब श्री रामचन्द्र सुमन्त को आवत देखिकै पिताकै समान आदर करत भयेहैं (६) तब सुमन्त श्री रामचन्द्रकर बदन देखिकै यह कहत भये हैं कि राजाकी रजाइ है आप चलिये तब श्री रामचन्द्रजी तुरन्तहि उठत भये तब रघुबंश कुलके दीप जो श्री रामचंद्र तिनको सुमन्त लेवाइ लैचलते भयेहैं (७) तहां श्रीरामचन्द्र सहज भूषण किये सुमन्त के संग जाते हैं सब लोग देखिकै जहां तहां बिलखाहीं कही दुःखित होतभये (८) दोहार्थ॥ तहां रघुबंशमणि श्री रामचन्द्र राजा को देखते भये जाइ निपट कुसाज संयुक्त जानहु वृद्ध गजराज सिंहिनि को देखिकै सहमि कहो डरिकै गिरिपरेउ है (९)॥

४३ सूखहिंअधरजरहिंसबअंगू । मनहुंदीनमणिहीनभुअंगू ॥ १
सरुषसमीपदेखिकैकेयी । मानहुंमीचघरीगनिलेई ॥ २
करुणामयमृदुरामस्वभाऊ । प्रथमदीखदुखसुनानकाऊ ॥ ३
। पूछामधुरबचनमहतारी ॥ ४
ख्वहिंकहुमातुतातदुखकारण।करिययत्नजेहिहोइनिवारण
सुनहुरामसबकारणयेहू ॥ । राजहिंतुमपरबहुतसनेहू ॥
देनकह्योमोहिंदुइबरदाना । मांगेउँजोकछुमोहिंसुहाना ७
सोसुनिभयोभूपउरशोचू ॥ । छांड़िनसकहिंतुम्हारसकोचू ८
दो० सुत सनेह इत बचन उत संकट परेउ नरेश ॥
करहु तो आयसु धरहु शिर मेटहुकठिन कलेश १

राजा के अधर सूखि गयेहैं अरु संपूर्ण अङ्ग जरि रह्यउ है मानहुं बिना मणिकी भुअङ्ग दीन ह्वै रह्यउ है (१) अरु श्री रामचन्द्र को रोष संयुक्त देखते भये हैं मानहुं मृत्यु साइति गिनती है (२) हे गरुड़ करुणा मय कोमल श्री रामचन्द्र कर स्वभाव है यह महा दुःख प्रथम देखा है अवर दुःख कबहूं सुन्यउ नाहीं कि काहै (३) तदपि श्री रामचन्द्र धीरय्य धरिकै समयको विचारिकैबोलतभये कि हे महतारी (४) हे मातुपिताके दुःखकर कारण कहहु सो यत्न करी जाते निवारण होइ (५) कैकेयी कहतीहै कि हे राम दुःखकर यह कारण हैकि राजाकर स्नेहतुम्हारे ऊपर बहुत है (६) आगे राजै मोको दुइ बरदान देइको कहेहैं सोजो मोरे मनमें माना सो वरदान मांगाहै [७] सो सुनिकै राजाके उरमें शोचहोतभयो है अब तुम्हार संकोचते नहींछांड़ि

सकते हैं [८] दोहार्थ ॥ तहां दुइ वरदान मैं मांग्यउँ है भरत को राज्य अरु तुम को बनगमन सो वर मोको राजै दीन है अब तुम्हारो तौ स्नेह अरु सत्य वचन दूनों राजा नहीं छांड़ि सकतेहैं ताते धर्म संकट है तहां जो राजाकर क्लेश मेटाचाहौ तौ राजा का वचन शीशपर धरि कै करहु कठिन क्लेशको मेटहु [१] ॥

४४ निधरकबैठिकहैकटु [illegible]नी । सुनतकठिनता[illegible]
कमानबचनसरनाना । मनहुँभूपमृदुलक्ष्यसमाना * * २
जनुकठोरपनसरेउधरीरा * । सिखइधनुर्विद्याबरबीरा * ३
सबप्रसंगरघुपतिहिसुनाई । बैठिमनहुँतनधरिनिठुराई * * ४
मनमुसुकाहिंभानुकुलभानू । रामसहजआनन्दनिधानू * ५
बोलेबचनबिगत[illegible] । [illegible]बिभूषणा * ६
सुनुजननीसोइसुतबड़भागी । जोपितुमातुबचनअनुरागी * ७
तनयमातुपितुपोषणहारा । दुर्लभजननिसकलसंसारा * * ८
दो० मुनिगणमिलन बिशेषबन सबहिभांति हितमोर ॥
तेहिपर पितु आयसु बहुरि सम्मत जननी तोर १

४४ हे भरद्वाज कैकेयी निधरक ह्वैकै कटुबाणी कहती है जो सुनिकै कठिनता अकुलाइ जातीहै [१] तहां कैकेयीकै जीभ सोई कमानहै अरु वचन वाणहैं अरु राजा लक्ष्यकही मृदुल निशाना है तिनमें मारती है [२] मानहुं उहै कठोरपन वीररूप धरिकै धनुष विद्या सीखत है [३] सब प्रसंग रघुपति को सुनावत भई मानहुं निठुराई तन धरिकै कहत है [४] भानुकुल के भानु जो श्रीरामचन्द्र सो मनमें मुसुकाते हैं कि देखिये तौ मेरो माया ऐसो प्रबल है यह जानि कै मुसुकाते भये हैं काहेते श्रीरामचन्द्र आनन्द के निधान कही स्थान हैं [५] तब श्रीरामचन्द्र समस्त दूषण रहित वचन बोले मृदुवचन अरु मञ्जुल कही निर्मल वचन जनुवाग जो सरस्वती त्यहि के विभूषण कही शृंगार वचन बोले किन्तु बाग कही बगीचा त्यहि के भूषण फूल अस वचन बोले किन्तु वाग सरस्वती के विभूषण श्रीरामचन्द्र ते वचन बोले [६] इहां श्रीरामचन्द्र वेदकी नीति कहिकै कैकेयी के वचन को सिद्धि करते हैं अरु राजा को अभिप्राय जनावते हैं कि हम विशेष वन गमन करैंगे तब श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे जननी सो सुत बड़भागी है जो माता पिताकी आज्ञानुकूल करै [७] हे जननी जो पुत्र माता पिताकर पोषण कही सेवाकरै सो ऐसो पुत्र संसार में दुर्लभ है सोई धन्य है [८] दोहार्थ ॥ तहां हे मातु वनविषे तौ मोको सब प्रकारते आनन्द है काहेते कि मुनि गणनकर शील औ मिलाप है अरु सत्संग है अरु हेमातु तोर सम्मत मिलिकै पिताकी आज्ञाहै ताते वन विषे सब प्रकारते मोर भलाहै [१] ॥

४५ भरतप्राणप्रियपावहिंराजू । बिधिसबबिधिमोहिंसम्मुखआजू १

काजा ॐ। ग्रथसगरागायकहिंम हसमाजा २
हिंरंडकल्पतरुत्यागी ॐ। परिहरिअमियलेहिंबिषमांगी ३
त्यउनपाइअससमयचुकाहीं । देखुबिचारिमातुमनमाहीं ४
अबमोकहँदुखएकबिसेषी। निपटबिकलनरनायकदेखी ५
थोरिहिबातपितहिदुखभारी । होतिप्रतीतिनमोहिंमहतारी ६
राउधीरगुणउदधिअगाधू । भामोहिंतेकछुबड़अपराधू ॐ ७
तातेमोहिंनकहतकछुराऊ। मोरिसपथतोहिंकहुसतिभाऊ ८

दो० सहजसरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करिजान ॥
चलै जोंक जिमि बक्रगति यद्यपि

४५ अरु भरतजी तो मोको प्राणहूते प्रियहैं तिनको राजा राज्य देहिं तो मोको परमसुख उत्पन्नहोइ जोअसहोइ तौ मैं जानौं कि विधातामोपरबहुत अनुकूलहै[१] हे मातु जो ऐसो परमकार्य पाइकै बनको न जाउँ तौ साधुन की समाज में मेरी गिनती मूढ़न में होइगी इहां श्रीरामचन्द्र कहते हैं जामें कैकेयी को आनन्द उत्पन्न होइ अरु अपनो ऐश्वर्य छिपावते हैं [२] हे मातु जे कोई प्राणी महामूर्ख हैं अरु कोई योगते कल्पतरुको प्राप्त भयो अरु त्यहिको त्यागिकै रेंड़को सेवन करते हैं अरु तिनको कोई योगते कोई अमृत देतहै सो अमृतको त्यागिकै बिषको मांगिलेते हैं[३] हे मातु तेऊ ऐसो समय पाइकै नहीं चूकते हैं जो समय मोको प्राप्त भयोहै हे मातुतैं अपने मनमें बिचारिकै देखु[४[यहि बात में तो मोको परम आनन्द होत भयो है पर एक दु:ख मोको राजाकी विकलता कोहै[५] हे माता मेरे बनजाबे की बात तौ राजा के अल्पहै अरु पिताको दु.खभारी मोको देखि परत है ताते प्रतीति नहीं होति है कि मेरे बनजावे को दु.खहै राजाको तहां दु:ख को कछु और मर्महै [६] श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे मातु राजा तो धीर शील शांति शूरता दया उदारता वैराग्य ज्ञान इत्यादिक गुणन के समुद्र हैं ताते कछु मोसे बड़ा अपराध भयोहै जाते राजा को इतना दु:खहै [७] मोर अपराध बहुत समुझि कै ताते राजा मोसे नहीं बोलते हैं यह अति युक्तिते बचन श्रीरामचन्द्र कहेहैं सो केवल कैकेयी के प्रसन्न हेतु मातु राजाके दु:खको कारणतैं सति भावते कहु[८] दोहार्थ ॥ हेपार्वती श्रीरघुनाथजीकी सहजहि सरल स्वभाव वाणी जोहै त्यहिको सुनिकै कुटिलमयमति जो कैकेयीहै सो देवमायाकी प्रेरणाते टेढ़वाणी जानती भईहै अरु तेहि सरलवाणी में कुटिल कपट भरी वाणी बोला चाहती है जैसे जलशुद्ध सरलहै पर त्यहिविषे जोंक वक्रकही टेढ़िही चलैहै तहां देखिये तो श्रीरामचन्द्र सबके नियन्ता अन्तर्यामी परमेश्वर सर्वज्ञ सर्व प्रेरक सर्व साक्षी तिन श्रीरामचन्द्र ते कपट चतुर वचन बोलती है यह बड़ा आश्चर्यहै तहां यह सब राम रजाय है [१] ॥

ॐ। बोलीकपटसनेहजनाई ॐ ॐ १

। । २

हताता *। जननीजनक

रामसत्यसबजोकछुकहहू *। तुमपितुमातुवचनरतअहहू * ४

सोई। चौ

दीन्हे।

लागहिंकुमुखवचनशुभकैसे। मगहगयादिकतीरथजैसे * ७

रामहिंमातुवचनसबभाये। जिमिसुरसरिगतिसलिलसुहाये ८

दो० गइ मुर्छा रामहि सुमिरि नृप फिरि करवट लीन॥

तब रानी जाना कि श्रीरामचन्द्र बन जावे को बहुत प्रसन्न हैं तब रानी हृदय में हर्षित भई आपन कार्य समुझि तब कपट सनेह बढ़ाइकै बोलती भई (१) हे राम मैं तुम्हारी शपथ करति हौं अरु भरत कै आन कहौ दोहाई करतिहौं राजाके दुःखको दूसर हेतु मैं नहीं जानती हौं (२) देखिये तौ कैकेयी ऐसी सुधिते भगवत् मायाके बश ह्वैकै श्रीरघुनाथजी ते कपटकी चतुराई करती है कि हे तात तुम अपराध योग्य नहींहौ काहेते तुम जननी जनक बंधु के सुखदाता हौ यह वाणीमें छल है कि तुम बनको जाहु तौ हम सुखी रहैंगे (३) हे श्रीरामचन्द्र तुम कहतेहौ सो सब सत्य कहतेहौ तुम्हारो सत्यसंकल्पहै अरु तुम माता पिताके अनुकूल हौ यामें यह ध्वनिहै कि तुम हमारो और पिताको वचन मानिकै वन को जाहु (४) हे तात मैं तुम्हारी बलिजाउँ पिताको बुझाइकै तुम कहहु जामें चौथेपन में अयश नहोइ इहांयहध्वनिहै कि राजासे कहवाइकै आपु बनको तुरत जाहु (५) हे तात तुम्हैं अस सुवन कहौ पुत्र जेहि सुकृतते तुम प्राप्तभयो है तेहि सुकृतको अरु तुम्हारो निरादर करना उचित नहींहै यह वाणी व्यंग्यहै कि तुम राजा ते यह कहहु कि हमको आज्ञा देहु हम बनको जाहिं तेहि वचनको राजा मानिकै आज्ञा देहिं इहां कैकेयी को वचन कैसेहै जैसे इन्द्रारुणि को फलहै देखत संते तौ सुंदरहै अरु भीतर कटु भरे हैं (६) तहां कैकेयी के कुमुख वचन श्रीरामचंद्र बिषे लागिकै शुभ ह्वैजाते हैं कैसे जैसे मगह रूपहै अरु वचन श्रीरामचन्द्र बिषे गया क्षेत्र रूपहै (७) माता के वचन श्रीरामचन्द्रको सब भावत हैं भावत कहौ शोभित भयेहैं कैसे जैसे अपर जल कर्मनाशा आदिक सुरसरि के मिलते शोभित होतहैं तैसे कैकेयीके वचन श्रीरामचन्द्र बिषे शोभित होतहैं (८) दोहार्थ॥ हे गरुड़ श्रीरामचंद्र को सुमिरत संते राजा की मूर्छा गई करवट लेतेभये तब सुमंत श्रीरामचंद्र कर आगमन कहिकै समय सम विनय कीन कि तुम धीरधर्म त्रिकालज्ञ ज्ञानभक्ति के समुद्रहौ हौ हे महाराज श्रीरामचंद्र आपुके समीप आये (१)॥

४७ तबनृपअकनिरामपगुधारे * । धरिधीरजतबनयनउघारे *१
सचिवसँभारिराउबैठारे * * । चरणपरतनृपरामनिहारे *२
लियेसनेहविकल उरलाई ।गइमणिमनहुंफणिकफिरिपाई ३
रामहिंचितेरह्यउनरनाहू * * । चलाविलोचनवारिप्रवाहू ४
शोकविवशकछुकहैनपारा । हृदयलगावत बारहिंबारा ५
विधिहिमनावराउमनमाहीं । जेहिरघुनाथनकाननजाहीं ६
सुमिरिमहेशहिकहैंनिहोरी । विनतीसुनहुसदाशिवमोरी ७
आशुतोषतुमअवढरदानी * । आरतहरहुदीनजनजानी * ८

दो० तुम प्रेरक सब के हृदय सो मति रामहिं देहु ॥
वचन मोर तजि रहहिं गृह परिहरि शीलसनेहु १

४७ तहां अकनि कही सुमंत के वचन सुनिकै राजा अंतष्करण में कछु सुखी भयउ तब राजा कर सब पाइकै सुमंत श्रीरामचंद्रसे बोलत भये हे रघुवंश मणि अब तुम राजाके समीप आवहु तब राजा धीर धरिकै नेत्र खोलत भये (१) तब सचिवराजा को उठाइकै सँभारिकै बैठारत भयो तब श्रीरामचंद्र पांयन परे तब राजा धीर धरिकै श्रीरामचंद्रको निहारत भये (२) श्रीरामचंद्र जी को राजा प्रीति समेत गोद में लेतभये जैसे गई मणि सर्प फिरिपावै है (३) तब राजा श्रीरामचंद्रको चितै रहे हैं अरु नेत्रन में जल के प्रवाह चले (४) तहां राजा शोकते कछु कहि नहीं सकते हैं श्रीरामचंद्रको बारबार हृदय में लगावतेहैं [५] तब राजा हृदयमें मनावतेहैं कि हमहेश हे विधाता श्रीरामचंद्र बनको न जाहिं [६] तब राजा महेश्वरको सुमिरिकै निहोरिकै कहते हैं कि हे सदाशिव मोरि विनती सुनहु [७] हे महादेव तुम अवढर दानी हौ कुअंक मेटिकै सुअंक करि देते हौ जेहिकै जौनि आशा है तेहि को तौनि तोषण कहोसदा पूर्ण करतेहौ दीनजन जानिकै अब हमार आरत हरहु [८]दोहार्थ॥ हे महादेव तुम सबके हृदयके प्रेरकहौ सो मति श्रीरामचन्द्र को देहु जाते मोरे वचनको त्यागिकै अरु मेरो शील स्नेह त्यागिकै घरमें रहिजाहिं (१)॥

४८ अयशहोउजगसुयशनशाऊ । नरकपरौंबरुसुरपुरजाऊ *१
सबदुखदुसहसहावहुमोहीं *। लोचनओटरामजनिहोहीं *२
असमनगुनतराउनहिंबोला *। पीपरपातसरिसमनडोला *३
रघुपतिपितहिप्रेमवशजानी। पुनिकछुकहीमातुअनुमानी ४
देशकालअवसरअनुसारी *। बोलेवचनविनीतविचारी *५
तातकहौंकछुकरौंढिठाई * अनुचितक्षमबजानिलरिकाई ६

।तिलघुबातलागिदुखपावा।।काहुनमोहिंकहिप्रथमजनावा ७

* ८

दो० मंगल समय सनेह बश शोच परिहरिय तात ॥
आयसु देइय हर्षिहिय कहि पुलके प्रभुगात १

४८ हे महादेव मैं तो श्रीरामचन्द्रको बनजावेको न कहब वरु जगत् में अयश होइ अरु परलोक जाइ सुरपुरजाउँ वरु नरकपरों पर श्रीरामचन्द्र वनको न जाहिं अरु जो मेरानाम लैकै कहतेहैं सो न मानहिं (१) महादेव वरु सब दुःख हमको सहावहु पर लोचनके ओट श्रीरामचन्द्र न होहिं (२) हे भरद्वाज अपने मनमें ऐसे गुनतेहैं कछु बोलते नहींहैं पर पीपरके पात सरिस मन डोलातेहैं (३) जब श्रीरामचन्द्रने पिताको प्रेमवश जाना तब विचार कीन कि कैकेयी पिताको फिरि कछु कटु बाणी कहैगी (४) तब देशकाल अवसर के अनुहारि श्रीरामचन्द्र जी बिनीत कही कोमल वाणी बोलते भये देशकही अयोध्या कालकही इसकालमें उपद्रव है अवसरकही ममताके अनुकूल वचन बोलतेभये (५) हे तात कछु ढिठाई करिकै कहतहों मेरी लरिकाईकर अनुचित क्षमाकरहु (६) हे तात अति लघुबात के निमित्त आपु इतना दुःख पावतेहो इतना मोको काहू प्रथमहिं जनाइकै न कहा (७) श्रीरामचन्द्र कहतेहैं कि हे गोसाईं आपुको हाल देखिकै मैं पूंछेउँ है सो माता मोसे कहतभई सो सुनिकै मोर संपूर्ण गात शीतल भयो है (८) दोहार्थ ॥ ततै हे तात यह तो मंगलको समय है आपु शोच काहे को करतेहौ शोच त्यागिदेहु हर्षिकै मोको आयसुदेहु यह कहिकै श्रीरामचन्द्र को गात पुलकि उठोहै (१)॥

४९ धन्यजन्मजगतीतलतासू। पितहिप्रमोदचरितसुनिजासू * १
चारिपदारथकरतलताके। प्रियपितुमातुप्राणसमजाके * २
आयसुपाइजन्मफलपाई *। ऐहौंबेगिहिहोउरजाई * * ३
बिदामातुसनआवौंमांगी। चलिहौंबहुरिबनहिपगलागी ४
असकहिरामगवनतबकीन्हा। भूपप्रेमवशउत्तरुनदीन्हा * ५
नगरब्यापिगइबातसुतीछी। छुअतचढ़ीजनुसबतनबीछी * ६
सुनिभयेबिकलसकलनरनारी। बेलिबिटपजनुदेखिदवारी ७
जोयहसुनैधुनैशिरसोई * * बड़बिषादनहिंधीरजहोई * * ८

दो० मुख सूखैं लोचन श्रवैं शोक न हृदय समाइ ॥
मानहुं करुणा कटकरस उतरी अवध बजाइ १

४९ हे तात वह पुत्र जगतके तलमें धन्यहै जो पिताकी आज्ञा मानिकै कार्य्य करै अरु पुत्रको कार्य्य देखिकै पिता प्रसन्न होइ सो पुत्र जगत् में धन्यहै (१) यह वेदको

आज्ञाहै कि त्यहि पुत्रको चारिउ पदार्थ करतलहैं जेहिपुत्रके माता पिता प्राणके समान प्रियहैं किन्तु जो पुत्र माता पिताकी आज्ञाकरै सो पुत्र माता पिताको प्राणकी समान प्रियहै (२) ताते मोको रजाइ होइ मैं आपुकी आयसु पालिकै जन्मका फल पाइकै कुशल संयुक्त वेगि आवौंगो आपु चिन्ता न करो (३) हे तात मैं मातासे बिदा मांगि आवौं बहुरि आपुकर चरण गहिकर तब बनको चलोंगो (४) हे गरुड़ असकहिकै तब श्रीरामचन्द्र गमनकीन राजाने प्रेमके बशते कछु उत्तर नहीं दीन (५) यहबात तत्क्षण नगरभरेमें व्यापिगई है जैसे बीछीके मारेते सबतन में पीड़ा व्यापि जातभई (६) तहां यह सुनिकै नरनारि सब विकल होतभये जनु बाल बिटप अरु बेलीदावा देखिकै आवते कुम्हिलाइ जातहै (७) जे जहां सुनतेहैं ते तहां माथ धुनतेहैं अरु महाविषादते धीर्य नहींहोत है (८) दोहार्थ ॥ सबके मुख तो सूखिजाते हैं अरु नेत्रनते जलस्रवत है अरु शोकनहीं हृदयमेंसमातहै मनहुं करुणारसकी कटक अयोध्यामें बजाइकैउतरीहै (९)॥

५० भलिबनाइबिधिबातबिगारी। सबमिलिदेइँकैकयिहिगारी १
[illegible]झिकापर्यऊ। छायभवनपरपावकधर्यऊ २
[illegible]चहदीखा। डारिसुधाबिषचाहतिचीखा ३
[illegible]अभागी ॥ भइरघुबंशबेणुबनआगी ॥ ४
[illegible]ताटा ॥ ॥ । सुखमहँशोकठाटधरिठाटा ५

[illegible]। सबबिधिश्रीरामश्यामधदुराऊ ७
[illegible]हिजाई। जानिनजाइनारिगतिभाई ८
दो० काह न [illegible]का न समुद्र समाइ ॥
[illegible]यहिजगकाल न खाइ१

हे गरुड़ समस्त पुरबासी कहतेहैं कि विधातैं तौभलीवात बनायोहै पर उपरान्त कैकेयी बिगारिदीनहै अस कहिकै कैकेयीको सबलोग गारीदेते हैं (१) देखिये तो यह कैकेयी पापिनीको का समुझिपर्यो है जो छाये भवनपर अग्निलगाइ दियोहै श्रीरामचन्द्र को राज्यहोत संते विघ्न करिदियो है (२) देखिये तो ऐसा कोई नहीं करैहै जो अपनोनेत्र काढ़िकै आपु देखाचाहै है अरु सुधात्यागि कै विषको भक्षण करै सो कैकेयी करतभई रामराज्य को विघ्न करिकै भरतको राज्य देखा चाहतीहै सो होने को नहीं है (३) कुटिल कठोरी कुबुद्धि करिकै अभागी यहिके समान कोई नहीं है भूतभविष्य वर्तमान तीनहूं कालमें कुटिल मन्थराके कुसंग करिकै अरु कुबुद्धि सरस्वतीकी प्रेरणाकरिकै अरु आपने भाग्यके संसर्ग करिकै ताते रघुवंशकुल वेणुकर बन तेहिते अग्निउत्पन्न होतीभई (४) देखियेतो पल्लवपर बैठिकै पेड़कोकाटै है अरु परम सुखविषे शोकको ठाट ठाटतहै (५) एकनते एक कहतेहैं यहिको तौ श्रीरामचन्द्रप्राण

हु ते प्यार करतरहेहैं अरु कैकेयीके प्राण श्रीरामचन्द्र रहेहैं तहां जो कैकेयी विरोध मान्योहै सो यह कारण नहीं समुझि पर्योहै (६) तहां स्त्री कर स्वभाव कवि सत्य कहतेहैं सब प्रकारते इनकर दुराव कपट अगम अगाधहै (७) बरु शीशाविषे आपनो प्रतिबिम्ब गहिजाइ पर नारिकर स्वभाव नहीं जाना जातहै यह कबि कहतेहैं (८) दोहार्थ ॥ यहि दोहामें काकोक्ति अलंकारहै (काहुन पावकजारिसक) पावक काह न जारि सकै सब जारिसकैहै महाप्रलयकी अग्निमें अरु पवन सहाय करताहै अरु प्रलय कालके समुद्रमें सब समाइसकैहै तैसे स्त्री मायारूप है सो उचित अनुचित सबकरि सकैहै जैसे सर्वकाल सर्वको खाइसकैहै तैसे नारि सब करिसकैहै यह वेद कहतेहैं ताते कैकेयी जोहै सो थोरहै (९)॥

।

एककहइँभलभूपनकीन्हा। बरबिचारिनहिंकुमतिहिदीन्हा २

। ज्ञानगुणगाजन ३

मेपरमितिपहिंचाने। नृपहिदो हसयाने *

।

***। एकउदासमौनह्वै रह**

कानमूंदिकररदगहिजीहा। एककहैंयहबातअलीहा * ७

सुकृतजाहिअसकहेतुम्हारे। रामभरतकहँप्राणपियारे * ८

दो० चन्द्र चुवै बरु अनल कण सुधाहोइ बिषतूल ॥

सपनेहुकबहुंनकरहिंकछु भरतरामप्रतिकूल ९

५१ देखिये तौ विधाताकी गति बड़ी विचित्रहै मंगल सुनायकै अमंगल सुनावत भयो मङ्गल देखायकै अमङ्गल देखावत भयो (१) एक कहते हैं कि राजा तौ बड़ा धर्मज्ञ नीतिमान्है पर यह भलो नहीं कियोहै काहेते यह कुमतिको बरदान विचारि कै नहीं दियोहै (२) ताते राजाहठिकै दुःखको भाजन भयो है राजाको ज्ञानगुणतो बनाहै काहेते कि आपने धर्मविषे आरूढ़हैं पर श्रीरामचन्द्र विषे सो धर्म छोड़िदेबेको कहा नहीं मानते सो राजै नहीं कौन जन अबलाके बशह्वैकै ज्ञान गुणजात रह्योहै (३) तहां एकैधर्म को परमिति मर्य्याद पहिंचानि कै यह कहतेहैं कि राजाको दूषण सयाने नहीं देहिंगे (४) एक कहतेहैं कि अपने सत्य धर्मको मर्य्यादविषे राजाशिविरहे तिन आपन शरीर अपने हाथते काटि काटिदियो धर्महेतु अरु राजादधीचि अपनो शरीर देवतनके निमित्त दैडारा अरु राजाहरिश्चन्द्र धर्मके निमित्तकरि डोमकाकाम कियोहै यह कथा भागवतविषे प्रसिद्धहै ऐसे एकएक सन बखानिकै कहतेहैं (५) एकै भरतकर सम्मत कहतेहैं अरु एकसुनिकै उदास ह्वैकै मौन ह्वै रहतेहैं (६) एकै कहतेहैं कानमूंदिकै अरु दांतमें जीभदाबिकै कि यह बात अलीहा कही मिथ्याहै (७)

यह कहैते तुम्हारो सुकृत जातहै काहेते कि भरतजी को श्रीरामचन्द्र प्राणहुते प्रियहैं अरु श्रीरामचन्द्रको भरत प्राणोप्रिय हैं (८) दोहार्थ ॥ बरु चन्द्रमा अग्निको कणस्रवै अरु सुधा विषहोइ पर भरता जु श्री रामचन्द्र ते प्रतिकूल न होहिंगे अरु प्रतिकूलता को मन वचन कर्म सपनेहु विषै कबहुं न करैगे (१) इति श्रीरामचरितमानसेसकल कलिकलुषविध्वंसने अयोध्याकाण्डे उमामहेश्वरसम्बादे अयोध्यावासीविषादवर्णननाम तृतीयस्तरंगः ३ ॥

दो० रामचरण चौथी लहरि कैकयिको उपदेश ।
रामचन्द्रगये मातुपहँ कारण कौन विदेश ४ ॥

। खाइदीनाखियजेहीं * १
राहुउरमिटाउछाहू * २
प्रवधकुलसान्यजठेरी * । जेप्रियपरमकैकयीकेरी * * ३
लगीदेनशिषशीलसराही * । ४
भरतनप्रियसोहिंप्राणसमाना ।
करहुरामपरसहजसनेहू * । रामआजुबनदहू *
कबहुनकिहेहुसवतिआरेसू । प्रीतिप्रतीतिजानसबदेसू * * ७
कौशल्याअबकाहविगारा । तुमजेहिलागिबजरपुरपारा * ८
दो० सियाकिपियसँगपरिहरिय लषणाकिरहिहैंधाम ॥
ज कि भूजब भरतपुर नृप कि जियहिं बिनुराम १
। होहू १
बराजू । काननकबनरामकरकाजू २
नाहिनरामराजकेभूखे * * । धर्म्मधुरीणाविषयरसरूखे * ३
हू * । नृपसनअसबरदूसरलेहू * * ४
रे । नाहिलागिहिकछुहाथतुम्हारे * ५
ोई । तं प्रकटजनावहुसोइ * * ६
। सुनिसोकहँलोगु ७
उठहुबेगिसोकरियउपाई । जिहिबिधिशोककलंकनशाई ८
शोककलंकजाइ उपायकरि कुलपालई ॥
हिं जातबन जनिबात दूसर चालई १
भानुबिनुदिनप्राणबिनुतनचंद्र बिनुजिमियामिनी ॥

राम १२ स।

प्रथम सूवा १

अवधहिंपुरनरनारी।देहिंकरबालिहिंकौसिकगारी ५

* * ६

हिंरागु * ७

छूटजानिबनगमनसुनिउरआनँ कान १

५२-५३-५४ आगे तीन दोहा भरि अक्षरार्थ जानब॥ दोहार्थ॥ तहां श्रीरामचन्द्रकर मन यहि समय में बन गमनहेतु ऐसो है जैसे बनमें नवीन गयन्द पकरि आवै अरु वहिके पद में अँहदू परै तहां कोई यत्नते अँहदू छूटिजाय तब वह बनको भागै तैसे श्रीरामचन्द्रकर राज्याभिषेक सोई अलान कहीं अँहदू बँधने हैं मानहुं कैकेयी छुड़ाइ दीनहैं श्रीरामचन्द्र प्रसन्न भये हैं (१) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेअयोध्याकांडेपुरलोगप्रियकैकेयीउपदेशवर्णनन्नामचतुर्थस्तरंगः ४॥

दो० राम मातु ढिग हर्ष अति पूछति मातु प्रसंग॥
रामचरण पुनि शोकवश अति हिय पंच तरंग ५

* १

दीन्हअशीषलाइउरलीन्हे। भूषणबसननिछावरिकीन्हे २

। ॥ ३

गाये

* ।

* । रकबनदयदल * ५

पुनिपुनिसादरबदननिहारी * । बोलीमधुरबचनमहतारी ६

री * । कबहिं लखनमुदमंगलकारी ७

ाई । जन्मलाभहितअवधिअघाई ८

दो० जेहिचाहत नरनारि सब अति आरत यहिभांति॥

तिमिचातक चातकतृषित वृष्टिशरद ऋतुस्वाति १

५५ रघुबंश कुलके तिलक श्रीरामचन्द्र दोऊ हाथ जोरिकै माता के चरणारविंद विषे नमस्कार करते भये (१) तब माता आशीर्व्वाद दैके हृदयमें लगाइके पट भूषण अनेक निछावरि कीन (२) माता बारबार मुख चुम्बतिहै अरु नेत्रन में जल भरिआवे गात पुलकित भयेहैं (३) प्रेमते गोद में लीनहै हृदय में लगावत संते स्तनन में पय श्रवत भयो (४) तहां माता के प्रमोद कही परमानन्द होत भयो सोकह्यो नहीं जातहै जनु रंकजो है सो कुबेरकी पदवीको प्राप्तभयो (५) पुनि पुनि कहीबार बार श्रीरामचन्द्र कर बदन निहारिकै मधुर बचन बोलती भई (६) हे तात कहहु मैं बलिजाउँ आपु की राज्याभिषेक मुद मङ्गलमय लग्नकी साइति कब होइहि (७) कैसी आपुको राज्यकी लग्नहै सुकृत शील सुखको सींव कही मर्यादा है अरु हमारेजन्मको परम लाभहै (८) दोहार्थ ॥ अति आरतते जिमिचातक चातकीतृषित हैशरद ऋतुस्वातीके जलहेतुहै(१)॥

५६ तातजाउँबलिबेगिनहाऊ * । जोमनभावमधुरकछुखाऊ १
पितुसमीपतबजायहुभैया * । भइबड़िबारजाइबलिमैया * २
। जनुसनेहसुरतरुकेफूला * ३
रसमकरन्दभरेश्रीमूला * । निरखिराममनभँवरनभूला ४
। ५
पितैंदीनमोहिंकाननराजू * । जहँसबभांतिमोरबड़काजू * ६
मुदितमनमाता * । जोहिमुदमंगलकाननजाता * ७
* । आनँदअंबुअनुग्रहतोरे * * ८

वर्ष चारिदश बिपिन बसि करि पितुबचन प्रमान ॥
आय पायँ पुनि देखिहौं मन जनि करसि मलान १

५६ ताते मैं बलिजाउँ स्नान करिकै जो कछु इच्छा आवै सो मधुर भोजन करो (१) हे भैया तब पिताके समीप जायहु बड़िदेर ह्वै गई है मैं बलिजाउँ (२) हेभरद्वाज माताके बचन अति अनुकूल श्रीरामचन्द्र सुनते भये जनु सनेह सुरतरु के फूल हैं (३) तहां तेहि फल विषे राज्यको सुखद जोहै सोई मकरन्द कही रस भरोहै संपूर्ण श्री को मूलहै तहां श्रीरामचन्द्रको मन मधुप है पर तेहिको लखिकै तेहि रसमें नहीं भूल्यो है (४) तहां श्रीरामचन्द्र धर्म्मके धुरीण धर्म्मकी गति अति सूक्ष्म तेहिको अच्छी तरह जानते हैं मातासे अति मृदुबाणी बोलते भये (५) हे मातु पितैं तो हमको बन को राज्य दीनहै तहां सब प्रकारते हमारी कार्य्यहै माताको अपने ईश्वरत्वकै संज्ञा जनाइ दीनहै (६) हे मातु अब मुदित मनते आयसु देहु अरु आशीर्व्वाद देहु जाते मोको बनजात संते मुद मंगल होइ (७) हे अम्ब सनेह के बश डरपसि जनि तेरी अनुग्रह ते मोको सब प्रकारते आनन्द है (८) दोहार्थ॥ हे मातु दशचारि चौदह बर्ष बन बास

करिकै मुनिन के दर्शन करिकै पिताके बचनको प्रमाण करिकै फिरि आपुके चरणारविंद देखिहौं आइ अपने मनमें म्लानि जनि करसि (१) ॥

५७ बचनबिनीतमुनतरघुबरके *। शरसमलगेमातुउरकरके * *१
सहमिसूखिसुनिशीतलबानी। जिमिजवासपरयउपावसपानी २
कहिनजाइकछुहृदयबिषादू। मनहुंमृगीसुनिकेहरिनादू ३
नयनसजलतनथरथरकांपी *। माजाखाइमीनजनुमापी * ४
धरिधीरजसुतबदननिहारी *। गदगदबचनकहतमहतारी ५
तातपितहितुमप्राणपियारे। देखिमुदितनितचरिततुम्हारे ६
राजयदेनकहँशुभदिनसाधा। कहेउजानबनकयहिअपराधा ७
तातसुनावहुमोहिंनिदानू *। कोदिनकरकुलभयोकृशानू ८
दो० निरखि रामरुख सचिव सुत कारण कह्यउ बुझाय ॥
सुनि प्रसंग रहिमूक जिमि दशा बरणि नहिंजाय १

५७ तहां कौशल्याजी बिनीत कही अति कोमल वाणी श्रीरामचन्द्र की सुनिकै माताके शरके समान लागेउ उर करकि उठेउ है (१) श्रीरामचन्द्र की शीतल वाणी सुनिकै सहमि कही सूखि गईहै जैसे जवासके ऊपर पावस कही प्रथम बर्षाको जलपरै (२) पुनि श्रीरामचन्द्र कै बाणी सुनिकै कौशल्याको कैसो दुःख भयो है जैसे कि हरि को नाद सुनिकै मृगी सूखि जाइहै (३) सो बाणी सुनिकै कौशल्याके नेत्रनमें जल भरि आयोहै अरु शरीर थर थराइकै कांपि उठेउ है माजा कही प्रथम बर्षाके जलको फेन सो खाइकै मीन जैसे मापि कही माति रहति है बिकल होइ जातेहैं (४) हे पार्वती धैर्य्य करिकै श्रीरामचन्द्र कर कमल बदन बिलोकिकै गद् गद् बचन माता बोलती भई (५) हे तात तुम तौ पिताके प्राणहुं ते प्रिय रहे हौ अरु तुम्हारा चरित राजा देखिकै बहुत आनन्द होत रहे हैं (६) ताते राजैं राज्य देबेको सुमंगल मय दिन साध्योहै सो कवने अपराध करिकै बन जाबे को कह्योहै (७) हे तात निदान कही विशेष दुःखको कारण सो मोको सुनावहु को सूर्यवंश चन्दन के बनको अग्नि भयो है (८) दोहार्थ ॥ तब श्रीरामचन्द्र कर रुख जानिकै सुमन्त को पुत्र सब कारण जो कैकेयी करिकै भयो सो श्रीकौशल्याजीसे कहत भयो यह प्रसंग सुनिकै रानीमूक ह्वै गई सो दुःखकी दशा नहीं वर्णिबे योग्य है (१) ॥

५८ राखिनसकहिंनकहिसकजाहू। दुहूंभांतिउरदारुणदाहू * १
लिखतसुधाकरलिखिगाराहू। बिधिगतिबामसदासबकाहू २
धर्म्मसनेहउभयमतिघेरी * *। भइगतिसांपछछूंदरिकेरी ३
राखौंसुत *। धर्म्मजाइअरुबन्धुबिरोधू * ४

कहौंजाइबनतौबड़िहानी * । संकट शोचबिबशभइरानी * ५
बहुरिसमुझितियधर्मसयानी । रामभरतदोउसुतसमजानी * ६
सरलस्वभावराममहतारी * । बोलीसमयसनेहबिचारी * * ७
तातजाउँबलिकीन्हेउनीका । पितुआयसुसबधर्मकटीका ८
दो० राज्यदेन कह दीन बन मोहिं न दुख लवलेश ॥
तुमबिन भरतहिंभूपतिहि प्रजहिंप्रचण्डकलेश १

५८ इहां रघुनाथजी की बिदामें कौशल्याजी के प्रसंग में आक्षेपा लंकारहै तामें द्वादश भेदहैं सो कहतेहैं आक्षेपकहो रोंकिबेको है गरुड़ श्रीरघुनाथजी अन्तर्यामी हैं जाते कौशल्याजीके हृदयको प्रसंग जानिकै थँभिजाहिं इहां संशयाक्षेपा लंकारहै नतौ श्रीकौशल्याजी राखिसकैं अरु नतौ जाइबेकोकहैं दोऊभांतिते उरविषे दारुणदाह उत्पन्न भयोहै (१) कौशल्या पश्चात्ताप करिकै कहती हैं कि देखिये तौ सुधाकर लिखत संते राहु लिखिगयो विधाताकै गति बड़ीबामहै सदा सबप्रकार राज्यहोबेको सो बनभयो (२) तहां धर्म स्नेहके बीचमें मति फँसिरही तहां सांप छछूंदरि कीसी गतिभईहै (३) अथ धर्माक्षेपा लंकार--तहां यहविचार अपने मनमें करतीहैं कि जो पुत्रकोराखौं तौ अनुरोध कहो द्वन्द्व विचारको राखते धर्मकै हानिहोत है किन्तु अनुरोध कहो विरोधको तहां बन्धु जो भरत तिन में विरोध होतहै (४) अरु जो बनको जाय कहौं तौ बड़ि हानि है ताते रानी संकटके बशह्वैकै शोचके विवश होतिभई (५) बहुरिकही पुनि स्त्रीको धर्मपातिव्रत नीत्ति समुझिकै श्रीरामचन्द्र अरु भरतको समजानिकै कछु धीरज धरती भईं तहां भरतको राज्य समुझिकै सन्तोष भयो है श्रीराम बनगमन को असन्तोष है (६) श्रीरामचन्द्रकी माताको अतिसरल स्वभावहै तेहि समयको स्नेह विचारिकै बोलती भईं (७) हे तात मैं बलिजाउँ ताते तुमनीक कीन्ह काहेते कि पिताकी आज्ञा सबभांतिते सर्वधर्मको तिलकहै (८) दोहार्थ ॥ इहां युक्ताक्षेप कहो श्रीकौशल्याजू कहतीहैं कि हे तात राजा आपुको राज्य देइको कहा अरु बनदीन तहां मोको तो लेशहू क्लेशनहीं है पर तुमबिना भरतजू अरु राजा अरु सम्पूर्ण प्रजा इनको प्रचण्ड क्लेशहै इहां कौशल्याजू युक्ति करिकै कहतीहैं कि श्रीरामचन्द्रजी भरतजी कर क्लेश अरु राजाको क्लेश अरु प्रजनके क्लेशनहीं सहिसकैंगे काहेते कि भरत औ राजा रामानन्य विरही हैं अरु श्रीरामचन्द्रजी अपना संकल्प छोड़ि देतेहैं अरु अपने निजजनकी रुचि राखते हैं अरु श्रीरामचन्द्र धर्मज्ञ नीतिमान् हैं प्रजापालक हैं ताते यह बिचारिकै रहिजाहिं (९) ॥

५९ जोकेवलपितुआयसुताता । तौजनिजाहुजानिबड़िमाता * १
जोपितुमातुकह्योबनजाना । तौकाननशतअवधसमाना * २
* । खगमृगचररामसरोरुहसेवी * * ३
बड़भागीबनअवधअभागी । जोरघुबंशतिलकतुमत्यागी * * ४

अंतहुउचितनृपहिबनबासू। बयबिलोकिहियहोतहरासू ॥ ५
जोसुतकहौंसंगमोहिलेहू ॥ । तुम्हरेहृदयहोइसंदेहू ॥ ६
पुत्रपरमप्रियतुमसबहीके । प्राणप्राणकेजीवनजीके ॥ ७
तेतुमकहहुमातुबनजाऊं ॥ । मैंसुनिबचनबैठिपछिताऊं ८

दो० यह बिचारि नहिं करौं हठ झूंठ सनेह बढ़ाइ ॥
मानिमातुकरनातबलि सुरतिबिसरिजनिजाइ १

५९ पुनि हे तात जो केवल पिताकी आज्ञा होइ तौमैंराजा की अर्द्धांगी हौं तौ मातोको बड़िजानिकै रहिजाहु (१) अरु जो राजा बनमें जाइको कह्यो अरु माता कैकेयी बन जाइको कह्यो तौ कानन शत अवध के समान है (२) हेतात वनके देवता सो तुम्हारे पिता इव अरु वनकी देवी सों माताइव रक्षा करहिंगी अरु वनके खगमृग जोहैं सो तुम्हारे चरणारविन्दों के सेवी होहिंगे (३, हे रघुवंश तिलक जो तुम अयोध्या को त्यागा तौ अयोध्या अभागी भई (४) तथापि नृपको चौथे पनमें बनवास उचित है अब तुम्हारी वहिक्रम अबहिं मध्यकिशोर है ताते वनगमन सुनिकै मोको हरास कहो क्लेश है (५) हे पुत्र जो कहो कि मोको संगलेहु तौ तुम्हारे हृदय में सन्देह होइगो (६) यहि चौपाईते आगे चौपाई जो कहते हैं तहां प्रेमालंकार है हे पुत्र तुम सबके प्राण प्रिय हौ औ प्राणहु के प्राणहौ औ जीवहु के जीवहौ तहां प्राणको प्राण अरु जीवको जीव अन्तर्य्यामी ब्रह्म सो तुम सबके अन्तर्यामी हौ इहां कौशल्याजी प्रेम करती हैं कि रघुनाथजी प्रेमके बशहैं मोर प्रेम देखिकै कदाचित् रहिजाहिं (७) हेलाल जेतुम सब जीवन के प्राणते तुम कहत हौ कि हम बनको जातेहैं यह सुनिकै मोको पश्चात्ताप आवत है मैं ठाढ़ि सुखिजाती हौं (८) दोहार्थ ॥ यह बिचारिकै मैं हठ नहीं करौं माताकर नात मानिकै मोरि सुरति नहीं बिसरै इहां कौशल्या जीकी बाणी में बहुत ब्यंग्याभिप्राय हैं एक कहत हौं कि प्राणके प्राण जीवके प्राण ब्रह्मते तुम नित्य एकरस सुन्दर चला चाहते हौ हम सबपुरीके जीव कैसे जीवहिंगे ताते प्रजनकी प्रेमके बशरहि जाहिं कहो मोर सुरति एकरस न बिसरै यह प्रेमाक्षेप कहो साभिप्राय बार हौं भेद जानब (१) ॥

६० देवपितरसबतुमहिं गोसाईं । राखहुनयनपलककीनाईं ॥ १
अवधिअम्बुप्रियपरिजनमीना । तुमकरुणाकरधर्म्मधुरीना २
असबिचारिसोइकरेउउपाई ।सबहि जियतजेहिभेटहुआई ३
जाहुसुखेनबनहिबलिजाऊं । करिअनाथजनपरिजनगाऊं ४
सबकरआजुसुकृतफलबीता । भयउकरालकालबिपरीता ५
बहुबिधिबिलपचरणलपटानी।परमअभागिनिआपुहिजानी ६

दारुणदुसहदाहउरव्यापा । बरणिनजाइबिलापकलापा ७
रामउठाइमातुउरलाई * । कहिमृदुवचनबहुरिसमुझाई * ८
दो० समाचार त्यहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ॥
जाइ सासु पद कमल युग बन्दि बैठि शिरनाइ १

६० आगे शिक्षालंकार अरु शान्तिरसहै हेतात सबके देव पितर तुमहीं हौ अरु जैसे नेत्र की पलक रक्षाकरै हैं तैसे आपकी रक्षा करब अरु सबकी रक्षा सदा करते हौ किन्तु श्रीकौशल्याजू कहती हैं कि मेरे देव पितर इष्ट तुम सबही हौ मैं तुमको पलक नयनकी नाईं राखति रही हौं किन्तु देव पितर तुमको पलक नयन सम राखहिं बन बिषे (१) हे करुणाकर धर्म्मधुरीण अवधि जो चौदह बर्षहै सो अम्बुकही जलहै अरु समस्त परिजन मीनहैं (२) हेतात ऐसे बिचारिकै सो उपाय करो जाते सबको जियत देखहु आइ जो चौदह बर्षते एको साइत बीतिहि तो सबके प्राण जायँगे (३) इहां बाक्याक्षेपहै हेतात मैं बलि जाउँ तुम सुखेन कही सुखहीते सम्पूर्णजन पुरजन गाउँ को अनाथकरिकै बनको जाहु (४) इहां आजु सबकर सुकृत फल बीतिजात भयो काहेते कुशल काल विपरीत होत भयोहै (५) इहां अधीराक्षेपा लंकार है हे पार्वती श्री कौशल्याजू बहुत बिधिते विलाप करिकै श्रीरघुनाथजीके चरणारविंद बिषे लपटि जात भई हैं अपना को परम अभागिनि जानती भई (६) दारुणदाह दुसह कही जो न सहाजाइ सो शरीरमें व्याप्त भयो है विलाप करती हैं कलाप कही दुःखकी बातैं कहि कहि (७) तब श्रीरामचन्द्र माताको उठाइकै उरमें लगावते भये मृदु वचन कहिकै समुझावतेभये (८) दोहार्थ ॥ त्यहि समय में श्रीरामचन्द्रकी बार्ता सुनिकै श्रीजानकी जी अकुलाय उठी हैं सासुके पदकमल में शिरनाइकै बैठती भई (१) ॥

६१ दीन्हअशीषसासुमृदुबानी । अतिसुकुमारिदेखिअकुलानी १
बैठिनमितमुखशोचतसीता । रूपराशिपतिप्रेमपुनीता * २
चलनचहतबनजीवननाथा । क्यहिसुकृतीसनहोइहिसाथा ३
कितनप्राणकीकेवलप्राणा । बिधिकरतबकछुजाइनजाना ४
चारुचरणनखलेखतिधरणी । नूपुरमुखरमधुरखबरणी * ५
मनहुप्रेमबसबिनतीकरहीं । हमहिंसीयपदजनिपरिहरहीं ६
मंजुबिलोचनमोचतिबारी । बोलीदेखिराममहतारी * * ७
तातसुनहुसियअतिसुकुमारी । सासुश्वशुरपरिजनहिंपियारी ८
दो० पिता जनक भूपालमणि श्वशुर भानुकुल भान ॥
पतिरबिकुलकैरवबिपिन बिधुगुण रूपनिधान १

६१ तब सासु मृदु बाणीते अशीषदीन अतिसुकुमारि देखिकै जानिकैअकुलाइउठीहैं

[१] श्रीजानकीजी रूपकी राशि अति पुनीत नमित मुख शोच करती हैं [२] अरु श्रीरामचन्द्रके पद विषे पुनीत प्रीति है तब श्रीजानकीजी कहती हैं कि ममजीवन नाथ श्रीरामचन्द्र बनको चलना चाहते हैं तहां क्यहि सुकृतते साथ होइहि [३] कितौ ये प्राण संगही जाहिंगे कि केवल प्राणै जाहिं तहां विधिकै कर्तव्य कछु जानि नहीं जा-तिहै इहां विधि श्रीरामचन्द्रको कही [४] तहां सुन्दर चरणके नखनते धरणी लिखती है शोचको संचारी होहै तहां नूपुरको शब्द मधुर मधुर होतहै तहां कवि नूपुर के मधुर रवको वर्णन करते हैं [५] मानहु प्रेमके बश बिनय करते हैं कि श्रीजानकीजीके चरण हमको न परिहरैं इहांमधुर शब्द जो कहाहै तहां मधुर वाणीते विनती होतिहै अरु जो कहा, कि हमहिं सीयपद जनि परिहरही इहां बनगमन विषे भूषणन को त्यागहै ताते अत्युक्तिफल उत्प्रेक्षा भावना करिकै कहाहै [६] कमल लोचन विषे मोचत कही श्रवत जल देखिकै कौशल्या जो बोलती भई [७] हे श्रीरामचन्द्रजी श्रीजानकीजी अति सुकुमारि है अरु सासु श्वशुर पुर परिजनको अति पियारि है [८] दोहार्थ ॥ कैसी हैं जानकीजी जिनके पिता जनक सम्पूर्ण भूपालन के मणिहैं अरु महा योगेश्वर विज्ञानी हैं जिनके सत्संग करिबेको याज्ञवल्क्यजी योगेश्वर शुकदेव इत्यादिक गये हैं अरु श्वशुर सूर्यवंश के सूर्यहैं जिनको इन्द्र अर्द्ध सिंहासन देतेहैं अरु पति आपु रविकुल सोईकैरव कही कुमुदिनीकै बन हैं त्यहि के प्रफुल्लित विमल पूर्णचन्द्र अरु रूप गुणके निधान कही स्थान ऐसे तुम पतिहौ [९] ॥

६२ मैंपुनिपुत्रबधूप्रियपाई * । रूपराशिगुणशीलसुहाई * * १

नयननपुतरिकरिप्रीतिबढाई । राख्यउँप्राणजानकीलाई * २

कल्पबेलिजिमिबहुविधिलाली । सींचिसनेहसुधाप्रतिपाली ३

फूलतफलतभयउविधिबामा । जानिनजाइकाहपरिणामा ४

पलँगपीठतजिगोदहिंडोरा । सियनदीनपगअवनिकठोरा * ५

जिवनमूरिजिमिजोगवतरहऊं । दीपबातिनहिंटारनकहऊं ६

सोसियचलनचहतिबनसाथा । आयसुकाहकहवरघुनाथा ७

चन्द्रकिरणरसरसिकचकोरी।रविरुखनयनसकैकिमिजोरी ८

दो० करिकेहरिनिशिचरचरहिं दुष्टजन्तुबनभूरि ॥

विषबाटिकाकिसोहसुत सुभगसजीवनमूरि १

६२ त्यहिजानकी जीको अतिप्रिय पुत्रबधू मैं पायोहै रूपकीराशि असगुण शीलकरिकै अति शोभित [१] जैसे नेत्रनकै प्रीति जानकीविषे त्यहिजानकी लागि प्राण राख्योंहैं किन्तु जानकीजीको प्राणकरिकै राख्योंहै इहां मरणाक्षेप जानब [२] जैसे कल्पबेलि अति ललित्य अमृतते सींचिकैपाले तैसे मैं स्नेह अमृतते जानकीको पालन करती [३] सो बेलिके जब फूलिबे फलिबे को समयभयो तब विधि बामभयो कोई बिघ्न

गयो यहिकालमें मोकोभयो है सो जाना नहीं जायहै परिणाम कहो आगे का होइगो [४] हेरघुनन्दन जानकीने पलंगकी पीठकही शय्या अरु हिंडे.रा अरु गोद सो त.जि अवनिकठोर त्यहिमें पगनहीं दियोहै इहां अति माधुर्य्यरस कहाहै [५] हे तात जीवनमूरि कीनाई मैं जानकीको ज्वगवत रह्यउंहै अरु दीपकैबाती टारनको नहीं कहाहै जीवनमूरि कहो ज्यहिमूरिके खायेते शरीरमें रोगदोष कबहूं नहींहोइ अरु अमर बना रहै [६] सो जानकी जी आपुके साथ बनको चला चाहतीहैं हे रघुनाथ सो का आज्ञा होतिहै [७] हे तात चन्द्रमाकी किरणकै रसिक जो चकोरीहै सो सूर्यकिरण को कैसे सहिसकैहै तैसे जानकी जो बनबिषे कैसे सहिसकैगी [८] दोह र्थ ॥ ज्यहि बनबिषे हाथी सिंह निशिचर इत्यादिक दुष्ट तामसो जीव अनेक बिचरतेहैं तहां श्री जानकीजी कैसे सुखी रहैंगी हे तात बिषकी बाटिका में सुभग सजीवनमूरि कैसे शोभित ह्वै है [९] ॥

६३ बनहितकोलकिरातकिशोरी । रचीबिरंचिबिषयरसभोरी * १
पाहनकृमिजिमिकठिनस्वभाऊ । तिनहिंकलेशन काननकाऊ २
कीतापसतियकाननयोगू * । जिनतपहेतुतजासबभोगू * ३
सियबनतातबसहिक्यहिभांती । चित्रलिखेकपिदेखिडेराती ४
सुरसरसुभगबनजबनचारी * । डाबरयोगकिहंसकुमारी * ५
असबिचारिजसआयसुहोई * । *
जोसियभवनरहैकहअंबा * । सोकहँबहुतहोइअवलम्बा * ७
सुनिरघुवीरमातुप्रियबानी । शीलसनेहसुधारससानी * ८
दो० कहिप्रियवचनविवेकमय कीनमातु परितोष ॥
लगेप्रबोधनजानकिहि प्रकटबिपिनगुणदोष १

६३ हे तात बनके हितकार हेतु कोलकिरातन की किशोरीहैं इनको विषय कोरस बिरञ्चि भोरेहू नहीं लिखाहै कदाचित् इनको बिषय होइ तौ जानिये ब्रह्मा भूलिकै लिख्योहै उनको बनै हितकारकहै [१] हे तात जो कहो कदाचित् पाहनकर कृमि होइ तो ताकोबनमें काऊ कहो कबहूं क्लेशनहीं होइहै तहां पाहनकही पर्वतनकेकृमि सर्प्प बिच्छू इत्यादिक काहेते इनके क.ठन स्वभावहैं तिनको पर्वतनमें क्लेश नहीं है तैसे किराति.निको बनमें क्लेश नहींहै अरु श्रीजानकी जी बनयोग्य नहींहैं [२] कि तो तपस्विन की स्त्री बनयोग्यहैं ज्यइँ तपहेतु सम्पूर्ण बिषयभोग त्यागकीनहै [३] त्यहि बन.विषे श्रीजानकी कैसे बसैंगी काहेते जे चित्रमें ब.नर लिखाहोइ सोदेखिकै डेरातीहैं ते बनमें कैसे बसहिंगी [४] हे तात देवतन कर मानसर त्यहिकी बिहरनहारी जो मराली सो जो कहूं एक डावरकही गड़हा तहां भैंसी जलको मलिनकर देतीहैं त्यहि में जो मरालीरहै सो कौनीप्रकार सुखीरहै तैसे श्रीजानकी जी उन जीवनमें कैसे सुखी

रहैंगी इहां यह सब मरणासेप जानब [५] हे तात अस बिच रिकै जैसो आज्ञाहोइ तैसो श्रीजानकी को मैं सिखापनदेउं [६] माता कहतीहैं कि जानकीजी घरमेंरहैं तो मोको बहुत अवलम्बहोइ [७] तब श्रीरघुनाथजी माताकी बाणी शील स्नेह सुधा मयरस सानी बाणी सुनतभये [८] दोहार्थ ॥ तब श्रीरामचन्द्रजी विवेकमय प्रियवचनकहिकै माताको परितोष कीन्ह पुनि श्रीजानकीजी कर प्रबोधकरते हैं बनकर गुण दोष कहिकै [१] इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अयोध्याकाण्डे श्रीकौशल्याबिरहवर्णनन्नामपञ्चमस्तरंगः ५ ॥

दो० रामचरण श्रीराम जी कृत सीतहि उपदेश ॥
षटतरंगमहँ दोषबन ज्यहिविधिगमनविदेश ६

४मातुसमीपकहतसकुचाहीं । बोलेसमयसमुझिमनमाहीं * १
राजकुमारिसिखावनसुनहू । आनभांतिनहिंमनमहँगुनहू * २
आपनमोरनीकजोचहहू * । वचनहमारमानिगृहरहहू * ३
आयसुमोरसासुसेवकाई * । सबविधिभामिनिभवनभलाई ४
यहितेअधिकधर्मनहिंदूजा । सादरसासुससुरपदपूजा * * ५
जबजबमातुकरहिसुधिमोरी । होइहिप्रेमविकलमतिभोरी ६
तबतबतुमकहिकथापुरानी । समुझायहुसुंदरिमृदुबानी * ७
कहौंस्वभावशपथशतमोहीं । सुमुखिमातुहितराखौंतोहीं ८
दो० गुरु श्रुति सम्मत धर्मफल पाइहि बिनहिं कलेश ॥
हठ वश सब संकट सहे गालव नहुष नरेश १

६४ हेभरद्वाज माताके समीप श्रीजानकीजीसे बहुतबात कहतसन्ते संकोच आवत है पर अपने मनमें समय समुझिकै बोलतेभये [१] हे राजकुमारि सिखावन सुनहु आनभांति अपने मनमें न विचार करहु [२] जो आपन अरु हमार नीकचाहहु तौ यह बिचारिकै गृहमें रहहु [३] हे भामिनि मोर सिखावन सुनहु अ.नभांति अपने मनमें न समुझौ मोरिआयसु सासुकै सेवकाई तुमको भवनमें रहते सब प्रकारते भलाई है [४] यहिते औरधर्म्म दूसर नहीं है सादर सासु ससुरके पदकै पूजाकरहु [५]जब जब माता मोरिसुधि करहिगी तब तब प्रेमकी विकलताते मति भोरि ह्वै जायगी [६] तब तब हसयानी तुम मृदुबाणीते सुन्दरिकथा सुनायहु जाते माताको बोधहोइ [७] हे सुमुखि मैं शत शपथ करिकै कहतहौं केवलमाताके हेतु राखतहौं यहसुभाय सत्य कहतहौं [८] दोहार्थ ॥ हे भामिनि गुरु जी श्रेष्ठहैं ते अरु श्रुतिजोहै इनकर सम्मत लैक जे कछुकरैं ते बिनाक्लेशहि उत्तम फलकी प्राप्ति होते हैं अरु जो इनकर सम्मत छोड़िकै हठकरैं तौ शठताई आवतिहै तब संकट होतहै जैसे हठकरिकै गाल- अरु राजानहुष संकटको तहां गालव मुनिने हठके बश कैसे संकटका

सहाहै कि गालव मुनि बिश्वामित्र के शिष्यरहैं मुनिने सम्पूर्ण विद्यापढ़ाई तब मुनिते गालव मुनिकह्यो कि हमते कुछ गुरुदक्षिणा मांगौ तब मुनिकह्यो कि जो तुम्हारिश्र-द्धाहोइ सो देहु तब गालव मुनिने कहा कि जो मांगौ सो देउं याही रीतिते तीनिबार हठकियोहै तब मुनि हठजानिकै कहा कि श्यामकर्ण घोड़ा आठसैलै आवहु तबगालव मुनि जहां तहां तीनि जगहते यत्नते बड़े क्लेशते कछु घोड़ेलै आये कछु न पाये सो मुनीशको दीन्ह ताते गुरुनकी अवज्ञाभई चारिसौ न मिले पर तथापि गुरुकृपालु हैं क्रोध न कीन ताते बहुत हठबड़ेनते न करौ पुनि राजानहुष भयेहैं ते बड़े सुकृतसे इंद्र पदवीको प्राप्तभये तब तुरन्त इन्द्राणीते भोगकी इच्छाकियो तब इन्द्राणी कहा कि ब्राह्मणको बाहन बनाइकै चढ़ौ उनकर तेजसहौ तब हमसन भोगकरहु तब राजै हठ करिकै सप्तर्षिनको बोलाइकै पालकीमें लगाइदियो त्यहिपर चढ़तभयो कामातुरताते यह कहतभयो कि सर्प्प २ कहो शीघ्रचलो तब अगस्त्यमुनि शापदीन तैं सर्प्पह्वै जाइ तब सर्प्प ह्वैकै पृथ्वीमें गिरत भयो यह प्रसंग महाभारत अरु भागवतमें प्रसिद्धहै [१]॥

६५ मैंपुनिकरिप्रमाणपितुबानी । बेगिफिरबसुनुसुमुखिसयानी १
दिवसजातनहिंलागिहिबारा । सुन्दरिसिखवनसुनहुहमारा २
जोहठकरहुप्रेमबशबामा * । तौतुमदुखपाउबपरिणामा * ३
काननकठिनभयंकरभारी । घोरघामहिमबारिबयारी * * ४
मगकुशकंटककांकरनाना । चलबपयादे [illegible]पदत्राना * ५
चरणकमलमृदुमंजुतुम्हारे । मारगअगमभू[illegible] * * ६
कन्दरखोहनदीनदनारे * । अगमअगाधनजाहिंनिहारे * ७
भालुबयाघ्रवृककेहरिनागा । करहिंनादसुनिधीरजभागा ८
दो० भूमिशयनबल्कल बसन अशन कंद फल मूल ॥
तेकिसदा सब दिन मिलहिं समयसमय अनुकूल १

६५ ताते हे भामिनि तुम हठ न करहु भवनमें रहहु अरु मैं पिताकी वाणीप्रमा-णकरिकै बेगकहो शीघ्रफिरौंगो [१] हे सुन्दरि दिवसजात बार न लागिहि हमार सिखावन सुनहु इहां निषिद्धाक्षेपालंकारहै [२] हे बामा जो प्रेमके वश हठकरिहौ तौ परिणाममें दुःखहोइहि [३] काहेते कि कानन कठिनघोर भयंकर है अरु ग्रीष्म ऋतुमें अतिघाम होतहै अरु घोर बयारिहै अरु वर्षाऋतु में बारिकहो अति जलकीवृष्टि है अरु हिमऋतुमें अति शीतपरैहै सो तुम कैसे सहौगी [४] अरु मगबिषे कुशकेडाभ हैं अनेक कण्टक अरु कङ्करीहैं अरु बिना पादत्राण पयादे चलब होइहि [५] अरु तुम्हारे चरण अति मृदुलहैं परन्तु भूमिधर पर्वतन करिकै मार्ग अगमहै [६] अरु कन्दर खोह नदी नद नारे अगम अरु अगाध हैं देखतकै भयहोत है [७] अरु भालु ब्याघ्र वृककहो भेड़हा केहरिकहो सिंह अरु नागकहो हाथी येते समस्त नादकरतेहैं बड़धीर-

मान् जोहैं तिनकर धीर्य नहींरहैहै [८] दोहार्थ ॥ अरु भूमिमें तौ शयन होइगो अरु वल्कलके बसन पहिरिबेमें आवैंगे अरु अशनकहो भोजन कन्द फल मूल तेऊका सदा सर्बदिन मिलैहैं पर समय समयके अनुकूल होहिंगे [९] ॥

६६नरअहाररजनीचरकरहीं * । कपटवेषबहुकोटिकधरहीं * १
लागेअतिपहारकरपानी । बिपिनबिपतिनहिंजाइबखानी २
ब्यालकरालबिहँगबनघोरा । निशिचरनिकरनारिनरचोरा ३
डरपहिंधीरगहनसुधिपाये । मृगलोचनितवभीरुसुभाये * ४
हंसगवनितुमनहिंबनयोगू । सुनिअपयशमोहिंदेइहिंलोगू ५
मानससलिलसुधाप्रतिपाली । जियइकिलवणपयोधिमराली ६
नवरसालबनविहरणशीला । जियइकिकोकिलविपिनकरीला ७
रहहुभवनअसहृदयविचारी । चन्द्रवदनिदुखकाननभारी ८
दो० सहजसुहृद गुरुस्वामिशिष जोनकरै हितमानि ॥
सोपछिताइ अघाइउर अवशि होइ हितहानि ९

अरु निश्चर मनुष्यनको खाइ लेतेहैं अनेक रूपभयानक धरतेहैं(१)अरु पहार को पानी लागत है तातें बिपिनकी बिपत्ति कछु कहिबे योग्य नहींहै (२) अरु ब्याल जो सर्प्प कराल हैं अरु विहंगजेहैं बड़े बड़े कराल काग गिद्ध इत्यादिक ते सब जीवत आदमी को खाइ जातेहैं अरु निश्चर निकर कहो बहुत हैं नारि नरके चोर सो वन में फिरते हैं (३) बड़े बड़े धीरवान् कि बिषमता सुनि डरपतेहैं अरु हे मृगलोचनि तुम्हार तौ भीरु कहो डरको स्वभाव है (४) हे हंस गवनि तुम बनयोग्य नहीं हो जो तुम हमारे संग बनको जाउगी तौ सबलोग मोको अयश देहिंगे (५) हेप्रिये मानसरको सलिल जो सुधाकेसम त्यहिकी पाली जो मरालीहै सो लोनके समुद्र में कैसे जियैगी (६) पुनि नवीन जो रसाल कहो अम्रकी बाटिका है त्यहिके बिहरनिहारि जोकि कोकिला है सो करील बनमें कैसे सुखी रहैगी (७) तैसो तुमहौ हे चन्द्रबदनी ऐसे बिचारिकै गृहमें रहहु काननमें बहुत दुःख हैं (८) दोहार्थ ॥ सुहृद कहो जो सहज सुभाय मित्र हैं अरु उपदेशक जो स्वामी हैं अरु गुरु जोहैं ये त्रैलोक परलोकहु के रक्षक हैं इनकर उपदेशजे मानि क सहज में नहीं करते ते हृदय में अघाइ कै पछिताते हैं अरु अवश्य कै हितकै हानि होइहै (९) ॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेअयोध्याकांडेरामोत्तरश्रीजानकीप्रतिवर्णनन्नामषष्ठस्तरंगः ६ ॥

दो० सियउत्तर प्रभु वचनको जानब सप्त तरंग ॥
रामचरणप्रभु हर्षलहि सीयलषणको संग ७

६७सुनिमृदुवचनमनोहरपियके । लोचननलिनभरेजलसियके १
शीतलशिषदाहकभइकैसे । चकइशरदचन्द्रनिशिजैसे * २

उत्तरुनआवबिकलबैदेही । तजनचहतस्वामिसनेही ३
बरबशरोकिबिलोचनबारी । धरिधीरजउरअवनिकुमारी * ४
लागिसासुपदकहकरजोरी । क्षमबदेविबड़िअविनयमोरी ५
दीन्हप्राणपतिम्बहिंशिषसोई । ज्यहिबिधिमोरपरमहितहोई ६
मैंपुनिसमुझिदीखमनमाहीं । पियबियोगसमदुखजगनाहीं ७
असकहिसियरघुपतिपदलागी । बोलीबचनप्रेमरसपागी * ८

दो० प्राणनाथ करुणायतन सुंदर सुखद सुजान ॥
तुमबिनु रघुकुल कुमुदबिधु सुरपुर नरक समान १

६७ तब हे पार्वती मनोहर वचन प्रियको सुनिकै श्रीजानकीजीके कमल नेत्रन में जलभरि आयो है [१] तहां शीतल उपदेश कैसे दुःखदायक भयोहै जैसे चकई को शरद ऋतु निशिके चन्द्रमाकी किरणि पाइकै दहति है तहां श्रीरामचन्द्र धर्मको मर्य्यादते उपदेश कीन्हहै पर प्रियतमके विरूपको उपदेश श्रीरामचंद्र श्रीमुखते कहैं तौ नहीं मानिबे योग्यहै याको प्रपन्य शरणागत कहो अरु आरत प्रपन्न कही इहां जानकी जी वनके हेतु आरत प्रपन्न शरणागत देखायो है [२] तब जानकी जी को विकल भये संते उत्तर न आवा यह विचार कीन्ह कि स्वामी जो स्नेही हैं सहज सो मोको तजा चाहते हैं [३] तब अवनिकुमारि जो हैं श्रीजानकीजी ते बरवश नेत्रनको जलरोंकि क धीरय धरिकै [४] सासु के पद लागिकै विनय करिकै यह कहती हैं कि हे देवि मोरि अविनय क्षमा करब [५] श्रीकौशल्याजीसे श्रीरघुनाथजीको सुनावती हैं कि मोको प्राण प्रियने शास्त्र मर्याद करिकै नीक शिष दीनहै जाते लोक में मोर परमहित होइ [६] पर मैं अपने मनमें समुझि देख्यों कि पियके वियोग समान जगमें और दुःखनाहीं है [७] अस कहिकै श्रीजानकीजी रघुनाथजीके पगमें परती भई प्रेमते रस पागे बचन बोलती भई [८] दोहार्थ ॥ हे प्राणनाथ करुणाके तुम आयतन सुंदर सुखदायक हौ अरु त्रिकालज्ञ सबके अंतःकरण के जानने हारे औ सुजान हौ रघुबंश कुल कुमुद है त्यहिके तुम बिधुहौ सो तुम्हें बिना सुरपुर जोहै सो नरक के समान है [१] ॥

६८ मातुपिताभगनीसुतभाई * । प्रियपरिवारसुहृदसुखदाई * १
सासुससुरगुरुसुजनसगाई * । सुतसुंदरसुशीलसुखदाई * * २
जहँलगिनाथनेहअरुनाते । पियबिनुतियतरणिहुतेताते ३
तनधनधामधरणिपुरराजू । पतिविहीनसबशोकसमाजू * ४
भोगरोगसमभूषणभारू * । यमयातनासरिससंसारू * * ५
प्राणनाथतुमबिनुजगमाहीं । मोकहँसुखदकतहुँकोउनाहीं ६
बिनुबारी । तैस्यइनाथपुरुषबिनुनारी * ७

नाथसकलसुखसाथतुम्हारे। शरदविमलविधुबदननिहारे ८

दो० खगमृग परिजन नगरबन बल्कल बिमल दुकूल॥

नाथ साथ सुर सदन सम पर्णशाल सुख मूल १

माता पिता भगनी सुत भाई अपर जो प्रिय परिवार है सो सब सहजही सुखदायीहैं [१] अरु सासु ससुर इहां गुरुकही बड़े को अरु सुजन अरु जहांतक सगे नातेहैं अरु सुत जोहै सुन्दर सुशील है सुखदाई है [२] हे नाथ जहांलगि नेह अरु नातेहैं ते पियबिना त्यहितियको तरणिकहो सूर्यहुते तातेहैं [३] हे नाथ तन धन धाम अरु धरणी अरु पुरकही सम्पूर्ण लोकन के राज्य येते समस्त पतिके विहीन शोक के समाजहैं यह श्रुति स्मृति कहैहै [४] अरु इन्द्रादिकनकर भोग जोहै सो सम्पूर्ण रोगके सरिस है अरु भूषण जे तनकेहैं ते भारके समानहैं अरु तुम्हें बिना यह संसार यमयातनाके सरिसहै देखिये तो इहां श्रीजानकीजी वैराग्यको अवधि देखाइकै श्रीरामचन्द्र के सम्मुख कहतीहैं सर्वजीवनको बिना श्रीरामचन्द्र चारिउ पदार्थ वृथाहैं [५] हे प्राणनाथ तुम्हें बिना यहि जगत्में मोको सुखदाता कोई नहीं है [६] हे नाथ जैसे बिना जीवकै देह अरु बिना जलकी नदी तैसे बिना पुरुषकै नारि है इहां यह अभिप्राय है कि सर्वजीवके प्रिय पति पुरुषनाथ श्रीरामचन्द्रही हैं सबजीव व ब्रह्मादिक देवता दानव मनुष्य पशु पक्षी इत्यादिक चराचर के नाथ ते श्रीरामचन्द्र के भजन बिना सबझूठे हैं हे नाथ जो पूर्व कहिआये हैं [७] हे नाथ तुम्हारे साथ सुखहै काहेते शरद्के विमल चन्द्र वदनको निहारि मुखछबिको पानकरिकै तीनिउं ताप नाश ह्वै जायँगी [८] दोहार्थ॥ हे नाथ आपुके साथ बनके खग मृग जेहैं तेई मोको परिजनहैं अरु बनजोहै सोई नगर है अरु पर्णकुटी इन्द्रके सदन समहै अरु वल्कल विमल दुकूल होहिंगे ये सब सुखके मूलहोहिंगे इहां श्रीजानकीजी यह देखावती हैं कि जो बनमें श्रीरघुनाथजीको भजन बनिपरै तो त्यहिके समान न इन्द्रलोक है न ब्रह्मलोक है अरु जो श्रीरामचन्द्र को भजन न बनै तो इन्द्रलोक अरु ब्रह्मलोक कंटकको बनहै [९]॥

६९ बनदेवीबनदेवउदारा **। करिहैंसासुससुरसमसारा ** १

कुशकिशलयसाथरीसोहाई। प्रभुसँगमंजुमनोजतुराई ** २

कंदमूलफलअमीअहारू। अवधिअवधशतसरिसपहारू * ३

क्षणक्षणप्रभुपदकमलविलोकी। रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी ४

बनदुखनाथकहेबहुतेरे * *। भयविषादपरितापघनेरे * ५

प्रभुवियोगलवलेशसमाना। सबमिलिहोहिंनकृपानिधाना ६

असजियजानिसुजानशिरोमनि। लेइयसंगमोहिंछांड़ियजनि ७

बिनतीबहुतकरौंकास्वामी। करुणामयअरुअंतर्यामी * ८

दो० राखिय अवध जो अवधिलगि रहतजानिये प्रान॥

दीनबन्धु सुन्दर सुखद शील सनेह निधान १

६९ अरु हे नाथ बनके देवी देव जे हैं ते सासु ससुर सम सारकही रक्षा करैंगे काहेते कि उदार कही दयालु हैं [१] कुश जे हैं किशलय कही कोमल पर्ण त्यहिके जो साथरी सो आपके संग मनोजकी तुराईकही रजाई समहै [२] अरु आपुके साथ कंद मूल फल अहार सुधाते सरसहैं अरु अवधि कही चौदह बर्षताईं शत अयोध्याके सरिस पहारहैं [३] क्षण क्षण प्रभुके पदकमल बिलोकिकै मैं प्रमुदित रहब जिमि दिवसमें कोकके संग कोकीरहैहै [४] बनके दुःख आपने बहुत कहा है भयबिषाद अरु परितापकही अति चिन्ताते हृदयजरै इनकारकै युक्त बनके दुःख आपकहे [५] तहां हे कृपानिधान तुम्हारे बिक्षेपके दुःखके समान येते दुःख लवलेशहू नहींहैं [६] हेनाथ सुजाननके शिरोमणि ऐसे जियमें जानिकै मोको संगलीजिये तजिये जनि [७] हेस्वामी मैं बहुत बिनती काकरौं तुम करुणामय अरु अन्तर्यामीहौ [८] दोहार्थ ॥ हे दीनबन्धु अवधि जोहै चौदहवर्ष तबताईं श्रीअयोध्यामें मोको राखतेहौ जो इतने दिनमें मोर प्राणरहते जानहु तो राखहु काहेते तुम अन्तर्यामीहौ अरु सुन्दर सुखदायकहौ दीनबन्धुहौ अरु शीलस्नेहके निधानकहो स्थानहौ आपु विचारिकै आज्ञादेहु [९] ॥

---

७० मोहिंमगचलतनहोइहिहारी।क्षणक्षणचरणसरोजनिहारी १

सबहिभांतिपियसेवाकरिहौं।मारगजनितसकलदुखहरिहौं २

पायँपखारिबैठितरुछाहीं । करिहौंबायुमुदितमनमाहीं * ३

श्रमकणसहितश्यामतनदेखे । कहदुखसमयप्राणपतिलेखे ४

समसहितरुतरपल्लवडासी । पायँपलोटिहिसबनिशिदासी ५

बारबारमृदुमूरतिजोही * । लागिहितातिबयारिनमोहीं * ६

कोप्रभुसँगमोहिंचितवनहारा। सिंहबधुहिजिमिशशकसियारा ७

मैंसुकुमारिनाथबनयोगू * । तुमहिंउचिततपमोकहँभोगू * ८

दो० ऐसे वचन कठोर सुनि जो न हृदय बिलगान ॥

तौ प्रभु बिषम बियोग दुख सहिहैं पामर प्रान १

७० मगचलत मोको हारि न होइहि काहेते कि क्षण क्षण तुम्हारे पद कमल निहारि निहारि इहां यह अभिप्रायहै कि संसारी जीवको संसारके मार्ग विषे चलतसन्ते श्रम कहो बन्धन न होइहि कबजब रघुनाथ जी के चरणारविन्द हृदय विषे अहर्निश एकोएक क्षणमें आवैं [१] हे प्रिय सब प्रकारसे आपुकी सेवा करिहौं मगते जनित कही उत्पन्न त्यहिके श्रम जो होइंगे तिनको हरिलेहौं [२] तहां तरु छाहीं में जब आपु बैठहुगे तब मैं पाँउ पखारिकै मुदित मनते बयारि करौंगी [३] अरु श्रमके कण सहित श्याम सुन्दर रूप प्राणपति को देखि देखि मोको कहां क्लेश है [४] अरु तरु के तर महिसम करिकै पल्लव डासिकै आपुको बैठाइकै सब प्रकारते दासी पाइँ

पलोटैगी (५) हे नाथ बार बार मृदुमूर्ति ओहि जोन्हिके मोंको ताति बयारि न लागिहि (६) प्रभु मोंको अ.पुके संग चितवन हार कोहै काहेते सिंह बधूको शशककहो सियार कैसे देखि सकैहै (७) हे नाथ आप कहा कि तुम सुकुमारिहौ बन योग्य नहीं हौ तहां मैं आपुते पूंछती हूं कि आपु बन योग्य हौ बिचारि लेहु अरु यह बात बेद अयोग्य करिकै कहते हैं कि आपु को तप अरु मोंको भोग उचित है नहीं है अयोग्य है (८) दोहार्थ ॥ तहां आपु मोंको रहिजाबेको कहा सो ऐसे कठोर बचन सुनत सन्ते जो हृदय बिलगाइ न गयो तो यह पामरप्राण कोजानै केतेदुःख सहैंगे(९)॥

*।
तु । शोचचलहुबनसाथा ३
बिषादकरअवसरआज *। बेगि हुबनगमनसमाजु *४
[illegible]।
**।
ोरी ७

दिनसुघरीतातकबहोइहि । जननीजिअतबदनविधुजोइहि ८
दो० बहुरिबच्छकहि लालकहि रघुपति रघुबर तात ॥
कबहि बोलाइ लगाइउर हरषि निरखिहौं गात १

७१ हे पार्वती अस कहिकै श्री जानकी जी अति बिकल भई देहकी सँभार नहीं रह्यो है (१) तब श्री जानकी जीकी दशा देखिकै श्री रघुनाथ जीने यह जाना कि जो हठ करिकै रखिहौं तो प्राणको न राखिहि (२) तब भानु कुलके नाथ श्री रघुनाथजी कहते भये कि शोचको तजिकै साथ चलौ (३) अब बिषाद को अवसर आजु नहीं है बेगि बनको तय्यारी करो (४) तब प्रिय वचन कहिकै प्रियको समुझाइकै माताके पद बन्दि कै आशीर्बाद पाइकै चलत भये देखिये तो श्री रामचन्द्रजी सर्वजीवन के सुहृद गुरु स्वामी हैं अरु श्री जानकी जी लक्ष्मण भरत शत्रुहन के प्रिय हैं ते श्री रामचन्द्र आपु श्री मुखते श्रुति स्मृति धर्म्म शास्त्र सब को धर्म सार श्री जानकी व लक्ष्मणजूको उपदेश कीन्ह है उन्होंने उत्तरदैकै नहीं मान्यो है तहां बिचार करिये इहां सर्व धर्मों पाय शून्य आरत प्रपन्न शरणागत जानिये यह जीवन को दुर्लभ है अरु जापर अतिकृपा होइ ताको आवै (५) तब श्री कौशल्याजी कहती हैं कि हे तात हे लाल सुख पूर्वक तुम जानकी संयुक्त बन को जाहु पर प्रजन के दुःख वेगि मेटयहु आइ अरु अति निठुर जो जननी मैं हौं सो बिसराइ जनिदेव (६) इहां उक्ति विषे आक्षेपा लंकार है हे बिधाता मोरिदशा कबहुं फिरिहि फेरि यह कबहूं मनोहर जोड़ी इन नेत्रन भरि देखौंगी (७) हे तात वह सुन्दर दिनघरी कब होइहि मैंजो निठुर जननीहौं सो कब आपुको बिधु